दिव्य आभा

दिव्य आभा

दिव्य आभा

दिव्य आभा

© गुरुजी

प्रथम संस्करण 5000, 2011

केवल निजी वितरण के लिए

Url : www.gurujimaharaj.com
www.gurujisangat.org

Typeset in W-C 905

Printed at _______________

प्रस्तावना

आशीर्वाद के इस ग्रन्थ का शुभारम्भ परम आदरणीय गुरुजी के आदेश पर हुआ था। जिन भक्तों को वह सुनाने अथवा लिखने के लिये कहते थे वह उन्हें शब्दों में पिरो कर गुरुजी को समर्पित कर देते थे। फिर वह उन्हें अपनी वेबसाईट (gurujimaharaj.com) और ग्रंथ के लिये आगे दे देते थे। यद्यपि उस समय इनके कारणों से हम अनभिज्ञ थे किन्तु अब वह स्पष्ट हैं। कठिन प्रयास के उपरान्त भी इस ग्रन्थ को उनके कमल चरणों में समर्पित नहीं किया जा सका – उनकी ऐसी अभिलाषा भी नहीं थी।

यह मात्र अनुपम और विशिष्ट संस्मरण नहीं हैं – यह दिव्य प्रेम के मार्ग पर आस्था और विश्वास सहित अग्रसर होने वाले प्रथम पग है। यह अमर आत्मा को उसका वास्तविक रूप दिखाने और उसमें परम प्रेम की ज्योति प्रज्ज्वलित करने की पुण्य गाथाएँ है। आशा करते हैं कि इनके पाठकों पर अनुयायियों की भांति कृपा वृष्टि होगी।

आभार

इस ग्रन्थ का यह रूप आदरणीय गुरुजी की पावन संगत के उन अनेक महानुभावों की निष्फल सेवा और सहयोग का फल है जिसके लिये हम सदा उनके आभारी रहेंगे। स्पष्टतया इनके योगदान के बिना इस ग्रन्थ का आपके हाथों में पहुंचना संभव नहीं था। जैसा सर्वविदित है, जीतू को यह कार्य स्वयं गुरुजी ने सौंपा था। अब तक मूल अंग्रेजी भाषा ''लाइट ऑफ डिविनिटी'' (Light of Divinity) के तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं जिन्हें साकार रूप देने में जीतू और अन्य भक्तों का अथक प्रयास रहा है। संगत के अनेक भक्तों का अनुरोध था कि ग्रन्थ अन्य भाषाओं में भी होना चाहिए। साथ ही मन में यह विचार भी उत्पन्न हुआ कि जन साधारण के लाभ के लिये गुरुजी के परम पावन और पुनीत विचारों का प्रसार अन्य भाषाओं मे होना आवश्यक है जिनसे अधिकांश जन समूह परिचित है। अतः ग्रन्थ का अनुवाद सर्वप्रथम सबसे अधिक बोली जाने वाली जनभाषा हिन्दी में करने का निश्चय किया गया। इसमें दो बातों का विशेष धयान रखा गया है। सर्वप्रथम यह कि इसकी रूपरेखा और विषय वस्तु ''लाइट ऑफ डिविनिटी'' के समान ही हो और भाषा सरल और शुद्ध हो; उसमें किसी अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग न हो। इस अनुवाद में यह प्रयास निरन्तर बना रहा है।

इस कार्य को यह रूप देने का श्रेय कर्नल दीपतेन्दु शेखर चटर्जी को जाता है। संकेत मात्र पर रघु राय (दिल्ली), शशि सुधीर (न्यू यॉर्क), श्रीमती सुदेशना दास (लन्दन) आदि ने अपने संग्रह में से गुरुजी के अनेक चित्र तुरन्त दिये किन्तु इनमें से कुछेक का चयन करना सरल नहीं था; फिर भी कर्नल चटर्जी और जीतू ने उनको सुनियोजित किया। इन सहयोगियों की अनुमति के बिना इन चित्रों की प्रतिकृति निषेध है।

जब भी आवश्यकता हुई है सुमीत जेथरा ने आगे बढ़ कर सेवा करी है। न केवल आदरणीय गुरुजी की प्रथम वेबसाइट का नियोजन उन्होंने संभाला हुआ है, गुरुजी के कुछ चित्र और बड़ा मंदिर के मार्गदर्शक चित्र उनकी ही भेंट हैं।

रमेश रानाडे ने बिना किसी व्यक्तिगत लाभ के, इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने का उत्तरदायित्व लिया है।

बूंद बूंद से सागर भरता है और अनेक सदस्य जिन्होंने परोक्ष में रह कर अपना योगदान दिया है, उन सबका भी आभार प्रकट करना आवश्यक है।

आशा करते हैं कि सब अनुयायियों पर गुरुकृपा सदा बनी रहेगी।

– अमिताभ शास्त्री

आदरणीय गुरुजी

पिता, परमेश्वर, सृष्टिकर्ता

कृपया हमारी यह विनम्र भेंट

स्वीकार करें

अव्वल अल्ला नूर उपाये,
कुदरत के सब बन्दे।
एक नूर से सब उपजाये
कौन भले कौन मंदे।।

विषय सूची

श्री गुरु स्मरण		21
श्रद्धा सुमन		24
गुरुजी कृत देवालय		34
सत्संग–सत्य का समावेश		40
जनसंपर्क अधिकारी को पुनः वाणी प्राप्ति	अचल पॉल	43
उनमें शिव ज्योत का वास है	न्यायाशधीश अमरबीर सिंह गिल	46
हृदय समीप–माँ सदृश प्रेम	डॉ. अनीता	53
अन्धकार नाशक	श्रीमती अनीता वर्मा	62
अपने सबसे प्रिय और आदरणीय गुरुजी के लिए	श्रीमती अनु मुंजाल	66
गुरु अनकम्पा–पूरे परिवार पर	अरविन्द सिंगला	69
सत्संग से उपचार	अरुण सहगल	78
मृत्युशय्या पर जीवनदान	अशोक ग्रोवर	80
मुझे मृत घोषित कर दिया था	अश्विनी शर्मा	83
परमपिता का संतानसुख आशीष	आकाश सेठी	88
विद्यालय से आइफल टावर तक: गुरुजी के संरक्षण में	श्रीमती आरती सिंगला	102
चिकित्सक द्वारा आस्था को नमन	डॉ. इंद्र मोहन भाटिया	110
ईश्वर दूत	एक भक्त	113

नम आकाश पर प्रज्ज्वलित सूर्य	एक भक्त	115
परमात्मा–हमारे बीच में	एक भक्त	120
मेरे अंधकार में ज्योत जलायी	एक भक्त	123
विवाह के छः वर्ष उपरान्त	एक भक्त	128
विवाह रक्षक गुरुजी	एक भक्त	130
माँ के आंसू पौंछे	कँवर लाल	133
सपरिवार गुरुजी के कमल चरणों में	जी पी सिंह	138
वास्तविक चमत्कार : गुरुजी के पथ पर	श्रीमती गायत्री सब्बरवाल	141
सर्वोपरि गुरुजी	गीतन संघेड़ा	143
18 वर्ष की वेदना: 18 दिन में समाप्त	गोपाल सेठी	147
दम्पति की मनोकामना पूर्ति	गौरव मरवाहा	150
आस्था का अमृत	श्रीमती गौरी सिंगला	152
गुरुकृपा	डॉ. चंद्र कांत पाण्डव	162
गुरुजी को एक सैनिक का अभिवादन	ले जन चन्द्र कैलाश कपूर	168
उनकी छत्रछाया में	बिग्रेडियर जे एस अलघ	178
हमारे युग के महापुरुष	जगदीश चन्द्र पाण्डेय	182
गुरुजी 100 किलोमीटर बिना ईंधन के कार ले गये	जगबीर सिंह ग्रेवाल	187
जीवन की पाठशाला में गुरु कृपा	श्रीमती जया कौशिक	190
पितृ रक्षक गुरुजी	जीतू	193
जागृति	श्रीमती जोगा चीमा	196
गुरुजी के आदेश से	श्रीमती ज्योति गुप्ता	201

कर्म बंधनों से मुक्ति	श्रीमती ज्योति वर्मा	203
पति के जीवन दाता	श्रीमती ज्योत्स्ना शौरी	208
दुर्घटनाग्रस्त होते हुए गुरुजी को स्मरण किया...	दीपक गुप्ता	212
गुरुजी संग चमत्कारी वर्ष	कर्नल दीप्तेन्दु शेखर चटर्जी	213
चरण स्पर्श पर्याप्त है	श्रीमती दीपा सिंह	227
‘‘मैं उसे स्वर्ग से वापस लाया हूँ’’	एन एल सप्रा	229
मुझे गुलाबों की सुगन्ध आयी	श्रीमती नंदिता चंदर	231
दीर्घकालिक केंसर का सफाया	नरेन्द्र तनेजा	235
जीवन मृत्यु के रचयिता	नरेन्द्र ढंड	238
यमदूतों से मुक्ति	नरेश खंडेलवाल	256
जन्मदिवस पर उपहार	नवीन और मीनू शर्मा	258
गुरुजी ने मेरा जीवन संजोया	श्रीमती निक्की मल्होत्रा	260
वास्तविक सम्पदा के स्वामी	नितिन जोशी	271
आशीर्वाद: जीवन के हर पल	श्रीमती नीरा ओबरॉय	275
सदा दानी पिता परमेश्वर	श्रीमती नीरू भारद्वाज	277
भक्त सदा भक्त रहता है	नूतन बेरी	287
श्रद्धा से अनुग्रह	श्रीमती परमिंदर कौर	291
प्रति पग रक्षा	पुनीत सिंह	294
प्रथम दर्शन में ही कामना पूर्ति	पुष्पल दास	296
परमात्मा द्वारा चिकित्सकों का उपचार	ब्रिगेडियर (डॉ.) पृथ्वी पाल सैनी	304

गुरुजी के शब्द सुनकर शोकावस्था से छुटकारा	पृथ्वीराज सिंह	312
''इक होर मुंडा लैना है?''	श्रीमती पूनम सेठी	314
प्रेम प्रवाह की पीड़ा में	श्रीमती पूर्णिमा अली	318
एक आशीष से गुर्दे का आकार बढ़ा	श्रीमती प्रोमिला मेहता	323
शोक संतप्त परिवार का उद्धार	प्रदीप सूद	327
कृपालु गुरुजी का आश्रय	विंग कमांडर बी लखनपाल	328
गुरुजी के शब्दों से 12 वर्षों के कष्टों से मुक्ति	बख्शीश सिंह	330
मुझे नव जीवन दान दिया	भगवान दास जेथरा	336
लेखपाल द्वारा गुरु आशीष की गणना	भारत भूषण चौधरी	342
आर्थिक चिंताओं से मुक्ति	भारत भूषण भाटिया	347
हमारे अस्तित्व का मूल	भावेश पाण्डेय	349
बड़े मंदिर में उपचार	मंजु गुप्ता	353
गुरुसेवा के मूल मन्त्र	डॉ. मदन मोहन बजाज	354
...गुरु बिन घोर अंध्यार	डॉ मनजीत तिवाना	360
उपचार की तरंग	मनमोहन कुकरेजा	372
नशे से मुक्ति	मुनीत जाखड़	374
दशक के बाद पुत्राशीष	श्रीमती मीनू शर्मा	377
मीरा के गुरुजी	श्रीमती मीरा कपूर	379
अमरीका से वापस लौटी दम्पति को गुरुजी का आधार	मीरा एवं अनिल जौहर	395

दिव्य आलिंगन	श्रीमती 'मीरा' मल्ही	400
गुरुजी महान हैं	मेजन जन मोहिंदर पाल सिंह संधू	408
गुरुजी के चित्र से अनुकम्पा	आर कृष्णास्वामी	414
नाविक का मार्ग दर्शन	रवि राय	418
जीवन के कर्ता	कमांडर राज कुमार शर्मा	425
प्रभु चरणों में कृपा	राजेन्द्र प्रसाद सिंगला	430
भक्त की हत्या अभियोग से मुक्ति	राजेन्द्र पाल सिंह रंधावा	443
मिर्चीला उपचार	राजेन्द्र सिंह कैंथ	446
शांति स्त्रोत का अनुयायी बना	राजेश कौशिक	450
सरकारी अधिकारी को न्याय	राम लखन सुधीर	452
आस्था की दृष्टि	श्रीमती ललित माथुर	456
नानक चिंता मत कर...	विजय कुमार पुष्कर्ण	464
चित्र से उपचार	वीरेन्द्र बौरी	475
मन और दृष्टि से सुदृढ़	श्रीमती शालिनी खेरा	477
एक ताकिया भरोसा तेरे चरणा दा	संजीव कश्यप	480
महापुरुष के चरणों में	संतोख सिंह	485
मेरे रक्षक	एस के चंदर	490
स्वप्न में शल्य क्रिया: हृदय रोग लुप्त	एस के बहल	492
विश्वास का घर	सचिन पाहवा	495
अपने हाथों से गुरुजी करते हैं स्वच्छ	सतीश कुमार लाम्बा	497
तथास्तु	श्रीमती सबीना	504

पूर्ण गुरु की खोज	मेजर (डा.) सावित्री आहूजा	511
गुरुजी ने मेरा भाग्य पुनः लिखा	श्रीमती सुक्खी	517
जब मैंने ईश्वर का द्वार जोर से खटखटाया	श्रीमती सुक्खी हेरिसन	521
जय गुरुजी!	सुमीत और छवि जेथरा	536
मोरे प्रभु तुम गुरु, पिता, माता...	कर्नल सुवर्ण जोशी	548
मेरा मुझमें कुछ नाहीं, जो कुछ है सो तेरा	कर्नल हरशरण सिंह तूर	555
दिशा दर्शन		561
गुरु वंदना		564
शब्दावली		566

श्री गुरु स्मरण

अनंत काल से हमारी मातृभूमि पर उन महापुरुषों की कृपा रही है जो इस पवित्र भूमि के कर्णधार हैं। इस देश का अस्तित्व इन महापुरुषों पर निर्भर रहा है जिन्होंने अपनी असीम शक्तियों से धर्म की रक्षा, विकास और मर्यादा बनाये रखने में सदा अपना योगदान दिया है। समस्त देशवासियों में श्रद्धा जागृत और सबको आलिंगन करने वाली अनूठी परम्पराओं का विकास करने के लिए हम सदा इनके आभारी रहेंगे।

प्रागैतिहासिक काल से, जब प्रतीकात्मक ढंग से पौराणिक कथाओं का प्रादुर्भाव हो रहा था, तबसे ईश्वर की यह अमर संतानें देश का प्रशिक्षण और मार्गदर्शन करती रही हैं। भारतवासियों ने भी अत्यंत संयमपूर्वक इनके सम्मुख बैठकर इनके प्रवचनों का लाभ उठाया है। उनको श्रवण करने के बाद सम्पूर्ण विश्व में, ''वसुधैव कुटुम्बकं'' की परंपरा निभाते हुए, उन श्रुतियों का निरापेक्ष प्रचार किया है।

भारत देश सदा से पुण्यात्माओं का प्रिय रहा है। इसका अनुपम सौन्दर्य इसकी नदियों, पर्वत श्रृंखलाओं, हिमाच्छादित शिखरों और विशाल मैदानों से परिपूर्ण है। यही इसकी रक्त कोशिकाएँ और भाग्य रेखायें हैं। देवी देवताओं ने भी आवश्यकतानुसार इसी पृथ्वी पर अवतरित होकर मानव के आह्वान का उत्तर दिया है।

हमारे युग में गुरुजी उसी परमात्मा का लौकिक रूप थे। वह एक महापुरुष थे। उनका मुख्य उद्देश्य यहाँ के निवासियों को भौतिकता की दलदल से बाहर निकालना, सही कर्मों का मार्गदर्शन कराना, उनके दुःखों को कम करना, मनुष्य को उसके वास्तविक रूप की पहचान कराना, स्नेह और प्रेम की भावना और आपसी भाईचारे का पाठ सिखाना था। वह अनुकूल वातावरण बनाकर मानव धर्म की पुनर्स्थापना करने के लिए आये थे।

गुरुजी का कथन था कि वह परम दिव्य ज्योति का अंश हैं। उनके लिए शरीर और व्यक्तिव का कोई अर्थ नहीं था, इस स्थूल शरीर की आवश्यकता मात्र भौतिक अस्तित्व के लिए है। वह तो खिले हुए पुष्प समान थे और सब भक्त उनसे दिव्य मधु प्राप्त करने के लिए मधुमक्खियों सदृश भिनभिनाते रहते थे। उनकी ओर आकर्षित होकर सब उनमें लीन हो जाते थे। उन्होंने सबको उसी प्रेम, त्याग और ज्ञान का पाठ दिया जो इस भारत की आधार शिलाएँ हैं।

गुरुजी जैसे महापुरुष के लिए शब्द सदा अपर्याप्त रहेंगे क्योंकि शब्दों से अनन्त का वर्णन करना असंभव है। मार्ग की दिशा से अवगत कराने वाले चिह्न स्वयं मार्ग न होकर केवल पथिक का मार्गदर्शन करते हैं। उनका प्रयोग तो उन उपकरणों के समान है जिनका उपयोग कर उन्हें त्याग दिया जाता है।

हम सब उनको केवल उस सर्वनाम से जानते थे जिसका संभवतः इस धर्म प्रधान देश में सर्वाधिक उपयोग होता है – ''गुरुजी''। यह शब्द अत्यंत गूढ़ अर्थ और शक्ति से परिपूर्ण है। यदि कोई भक्त कभी निडर होकर उनका नाम पूछ भी लेता था तो उनका उत्तर यही होता था कि उन जैसे महापुरुषों के कोई नाम नहीं होते। इस उक्ति के साथ ही वह अपने अस्तित्व को भी व्यक्त कर देते थे – ईश्वर के दूत, सृष्टि के रचयिता, ब्रह्माण्ड के नृप, नहीं... वह तो स्वयं परमात्मा थे। गुरु परमात्मा से अलग किसी को भी नहीं जानता; वास्तव में गुरु की ईश्वर से पृथक कोई पहचान हो ही नहीं सकती।

कहते हैं कि उन्होंने 31 मई 2007 को महासमाधि ग्रहण कर ली। हमारा इस वक्तव्य पर विश्वास करने का कारण यही है कि हम उनको भौतिक देह सहित मानव रूप में पहचानते थे और हमें उनसे अनुराग हो गया था।

किन्तु पलक झपकते ही उनकी वह काया समाप्त हो गयी। अपने द्वारा निभाई जा रही भूमिका पर उन्होंने स्वयं ही पटाक्षेप कर दिया। इसका कारण यही था कि वह अवतार थे – दिव्यता का मानव रूप। वह तो शिव, नानक और प्रेम के मूर्त रूप थे। यद्यपि ऐसा कभी नहीं था – वह तो एकोंकार थे और सदा रहेंगे।

वह आज भी हम सबके बीच विद्यमान हैं। वह सदा से हमारे पिता परमेश्वर रहे हैं और हमें उनकी बातें सुननी पड़ेगी – भारत ने तो सदा महापुरुषों की बातें गंभीरता से सुनी हैं।

ऐसा कहा जाता है, और यह सत्य भी प्रतीत होता है कि गुरु को सुनने मात्र से अभिज्ञान प्राप्ति हो जाती है। आप सबसे विनम्र निवेदन है कि इस पुस्तक के सत्संगों को ध्यान से पढ़िये और समझने का प्रयास कीजिये कि गुरुजी की क्या अभिलाषा रही है। उन्हीं के आदेशानुसार यह, उनकी प्रिय संतति द्वारा, उनको सप्रेम भेंट है।

श्रद्धा सुमन

कांच के एक ऐसे गगनचुम्बी पर्वत की कल्पना कीजिये, जो दर्पण समान है। उसमें कोई दाग धब्बा या अन्य कोई निशान नहीं है, वह एकदम साफ, स्वच्छ है और उसमें अद्वितीय प्रकाश का ओज है। अब इसके सामने आपको खड़ा कर दिया जाये। आप अपनी सांस रोक कर उस दर्पण को देख रहे हैं... यह आपके गुरुजी के प्रथम दर्शन होंगे। गुरुजी से आपकी भेंट तभी संभव है जब वह चाहेंगे और उन कुछ क्षणों में ही वह आपके अस्तित्व को पूर्ण रूप से भेद देंगे। आपके मिथ्या से भरे हुए अभिमान पूर्ण रूप से छिन्न-भिन्न हो जायेंगे, वह आपके भीतर आपकी आत्मा का अवलोकन कर लेंगे। यह सब होने के उपरान्त जब आप अपने स्वयं को उनके एकाकार में कल्पित करेंगे, तब आपको अपनी वास्तविकता का पूर्णाभास होगा और आप उनके भक्त बन जायेंगे।

यह कभी मत सोचिये कि अब आपकी उनसे भेंट नहीं होगी। भले ही उनका स्थूल शरीर समाप्त हो चुका है किन्तु यह अकल्पनीय है कि वह लुप्त हो चुके हैं और उनका अस्तित्व मिट चुका है।

अभी तो उनके दर्शन अनेक बार होंगे, कई बार उनसे पुनर्मिलन के अवसर आएंगे। गुरुजी अपने प्रिय शिष्यों को कहे गये वचन सदा निभाते रहेंगे - प्रेम के वह वचन जिनके साथ गुरुजी और उनके भक्त प्रलय तक एक साथ बंधे हुए हैं। परन्तु इसका पूरा लाभ अर्जित करने के लिए हमें अपने स्व को समझना आवश्यक है।

गुरु शब्द के दो अक्षर – ''गु'' अन्धकार का पर्याय है और ''रु'' प्रकाश का। अतः अन्धकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाने वाला गुरु कहलाया। हमारे देश की प्रथाओं के अनुसार गुरु को देव से भी उच्च वर्ग प्राप्त है। अध्यात्म की चरम सीमा पर प्राप्त होने वाले सच्चिदानंद को गुरु कृपा के बिना पाना असंभव है। गुरु के बिना आत्मा उस परम में लीन होकर परमात्मा का अंश कभी नहीं बन सकती है। गुरु तो ऐसा पथप्रदर्शक है जिसके बिना नये और अनुभवी, दोनों प्रकार के पर्वतारोही अपने शिखर तक पहुंचने की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। गुरु न तो वह मार्ग है, न ही वह बाधा है जिसे पार करना शिष्य के लिए आवश्यक है। वह तो स्वयं वह गंतव्य है, पर्वत का वह शिखर है जहाँ तक पहुँचने की आकांक्षा प्रत्येक प्राणी करता है। वह तो घने अन्धकार से ज्योति, अज्ञान से ज्ञान का मार्गदर्शन कराने वाले, उत्तर दिशा का आभास कराने वाले ध्रुव तारे के सदृश हैं। इस संसार के समस्त ग्रन्थ गुरु की व्याख्या और उनका वर्णन करने में सक्षम नहीं है। गुरु उस परम आनंद प्राप्ति का प्रशस्त मार्ग हैं।

सतगुरु, अर्थात् हमारे आदरणीय गुरुजी, वास्तव में वह दर्पण हैं जिसमें देख कर हम सर्वोच्च ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। गुरुजी के सामने आपको उनसे विसर्जित होती अपूर्व तेजोमयी आभा का साक्षात्कार होता है। आपको अनुभव होगा कि चाह कर भी आप उनकी ओर अपनी दृष्टि बांध कर नहीं रख सकते हैं। उनकी काया–ज्योति का प्रकाश अद्वितीय है और आप उनके सामने क्षीण पड़ जायेंगे। इसके विपरीत गुरुजी मात्र एक क्षण में आपके भीतर छिपी हुई पवित्रता के दर्शन कर लेंगे। जैसे किसी झील में कंकड़ फेंकने पर, उसके जल की सतह को छूते ही, उस केन्द्रबिन्दु से किनारे की ओर बढ़ते हुए संकेन्द्रित चक्र बनते हैं और वहां से उर्जा सब ओर फैलती है, उसी प्रकार गुरुजी से शक्ति विसर्जन होता है। किन्तु यह शक्ति उन्हीं भक्तों को मिल पाती है जिन्हें वह इसका अधिकारी समझते हैं। उनका कहा हुआ प्रत्येक शब्द आपके लिए ऐसा आदेश है जिसकी अवहेलना आप कदापि नहीं कर सकते हैं।

गुरुजी के प्रथम दर्शन मिलन की कोई सामान्य सामाजिक प्रक्रिया नहीं है। यह साक्षात्कार उस संघर्ष की भांति है जिसमें आप की हार सुनिश्चित है: आप अपने अहम् को अपने सामने ही नम्रता और श्रद्धा की अग्नि में भस्म होते देखेंगे। यह तो समस्त सृष्टि के कर्ता, सर्वोच्च, सर्वोपरि से मिलने की प्रस्तुति में पहला पग है। सतगुरु आपके सब रक्षा कवचों को भेद देंगे और पल भर में आपके सब अदृश्य रहस्यों को जान लेंगे। उनका विश्वास प्राप्त करने के लिए न ही मीठे वचनों की, न ही किसी अभिनय की आवश्यकता है । न ही आप उनसे कुछ छिपा सकते हैं, न ही कोई मिथ्या भाव रख सकते हैं। वह तो आपके अस्तित्व के कारण के ज्ञाता हैं और इस समय आपको अपनी कृपा का अधिकारी समझा है - इसी कारण उन्होंने आपको अपने पास बुलाया है।

उन्हें जनसाधारण के लिए अक्सर महत्त्वपूर्ण लगने वाले प्रश्न - उदाहरण के लिए - आप कौन हैं, कहाँ से आये हैं, आप क्या काम करते हैं, कैसे जीविकोपार्जन करते हैं, आपके मन में क्या भाव हैं या आप मानवीयता का कितना नाटक करते हैं - से कोई तात्पर्य नहीं है, क्योंकि इन सबका ज्ञान उन्हें पहले से ही है। वह तो सर्वज्ञाता हैं और आपके प्रत्येक भाव का ज्ञान रखते हैं। इस सत्य को स्वीकार कर लेना ही आपके लिए हितकर होगा। आपकी यह हामी ही आपके अग्रिम सम्बन्धों को स्थिर करने के लिए सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस हाँ के साथ ही आप गुरुजी के साथ ऐसे अटूट बंधन में बंध जाएंगे जिसे मृत्यु भी अलग नहीं कर सकती है। यह प्रथम समर्पण ही सर्वाधिक महत्त्व रखता है - यात्री की शेष यात्रा तो पहला कदम निकलने के पश्चात् पग प्रति पग स्वत: ही पूर्ण हो जाती है।

स्कन्द पुराण में वर्णित गुरु गीता में एक अत्यंत सर्वविदित श्लोक है:

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वर:।
गुरु साक्षात् पारब्रह्म, तस्मै श्री गुरवै नम:।।"

यद्यपि इस श्लोक से अधिकांश जनसमूह परिचित है, इसमें कुछ व्याख्या करने योग्य है। सर्वप्रथम इसमें गुरु को त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु

और महेश) से भी उच्च स्थान पर आसीन किया है क्योंकि वह गुरु तो अनादि और अंतहीन है। ''ब्रह्म'' शब्द की उत्पत्ति ''बृ'' धातु से हुई है, जिसका अर्थ ''विस्तृत, विकसित होना'' (बढ़ना, फैलना) होता है। यह ब्रह्म, ब्रह्मा या ब्राह्मण न हो कर वृहत ब्रह्मण है - और यह सदा बढ़ता, फैलता रहता है; उसका विकास कभी बंद नहीं होता। और गुरु - उनकी महिमा तो अपार, अपरम्पार है। इसीलिए यहाँ पर उनको ब्रह्म सदृश श्रेष्ठ स्थान दिया है। उनके सहस्र चक्षु, सहस्र अंग और सहस्र मुख हैं। वह ही जीवन का बीज, पौधा और वृक्ष पालक हैं। उनमें असीम ज्ञान है, किन्तु उनका ज्ञान किसी को नहीं है। ज्ञानी भी उनके स्वभाव से अनभिज्ञ हैं। गुरुजी तो भक्त को दर्पण के समक्ष, प्रतिबिम्ब बनकर, दर्शन देकर, उसको ज्ञान की प्राप्ति करा देते हैं। वह दृश्य ही दर्शन है, शेष तो वहां तक पहुंचने के निमित्त मात्र बन जाते हैं। उनके कोमल चरणों का स्पर्श करने के क्षण से ही गुरुजी अपने वास्तविक रूप का दर्शन करा देते हैं।

पुष्पांजलि श्रधा भाव से

शिष्य को गुरु की और ले जाने वाली कड़ियाँ बहुत अनोखी होती हैं। शिष्य सदा यहाँ-वहां हाथ-पैर मारता रहता है; उसे कोई मार्ग नहीं सूझता है। वह स्वयं आगे बढ़ने में असमर्थ है। किन्तु गुरु, भौतिक रूप में उसके समक्ष न होकर भी उसका मार्गदर्शन करते रहते हैं। गुरु, इस प्रकार उसके पथप्रदर्शक और गंतव्य दोनों ही हैं। यह कठिन पर्वतारोहण के समान है और गुरु पर विश्वास बनाये रख कर ही हम शिखर तक पहुंचने का सामर्थ्य प्राप्त कर सकते हैं।

इस संबंध में सबसे अधिक आवश्यकता विश्वास और श्रद्धा की है। यदि आप गुरु पर शंका करेंगे तो आप अपने पैर पर स्वयं कुल्हाड़ी मार लेंगे। आपकी यात्रा तो प्रारम्भ होने से पूर्व ही समाप्त हो जाएगी। भले ही शिष्य को, अपने गुरु के लिए, अपने मन में स्थिर विश्वास स्थापित करने में कठिनाई हो, गुरु इस कार्य में भी उसकी सहायता

करते हैं। गुरु को केन्द्र बिंदु मान कर, अनुयायी के लिए आवश्यक है कि वह अपनी समस्त शंकाएं मन से निकाल दे। गौमत बुद्ध ने भी कहा था, ''जिस प्रकार स्वर्ण को परखने के लिए उसे अग्नि में जलाया, काटा और रगड़ा जाता है, उसी प्रकार मुझे स्वीकार करने से पहले, मुझे अच्छी तरह से परख लो। मेरे लिए अपने मन में केवल आदर भाव रखकर मुझे स्वीकार करने की भूल न करो।''

प्रारम्भ में अपने गुरु, स्वामी राम कृष्ण परमहंस, के लिए भी युवा नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद) के मन में ऐसा ही संशय का भाव था। उनके गुरु ने एक बार उन्हें बताया था कि धन के लिए उनके मन में कभी कोई भाव उत्पन्न नहीं होता है, अपितु वेदना होती है। एक रात उस युवा ने उनके सिरहाने के नीचे एक सिक्का छिपा दिया। उस पूरी रात उनके गुरु को नींद नहीं आयी। विवेकानंद की इस छोटी सी परीक्षा ने उनके गुरु की सत्यता सिद्ध कर दी।

संशय की समाप्ति पर शिष्य अपने गुरु के पास आदर भाव से जा सकता है। अपने आध्यात्मिक प्रशिक्षक के साथ उसके सम्बन्ध और प्रगाढ़ हो जाते हैं। वह न केवल जीवन भर, मरणोपरांत भी गुरु के साथ निर्वाह करता है। ऐसे विश्वास और श्रद्धा की नींव पर ही भवन बन सकता है। अनुयायी को यह भी समझना आवश्यक है कि वह गुरु का ही आत्मिक प्रतिबिंब है। यह भी ध्यान रखने योग्य है कि गुरु अवसर आने पर अपने भक्त को अवश्य परखते हैं।

एक किम्वदंती है। सिंह परिवार का एक शावक अपने परिवार से अलग हो गया और भेड़ों के साथ रहने लगा। धीरे-धीरे उसका स्वभाव भी भेड़ों की भांति हो गया। वह दहाड़ लगाना भूल कर उनकी भांति मिमियाने का प्रयास करने लगा। एक दिन अचानक एक शेर यह देख कर चकित रह गया। उसने शावक को पकड़ कर झिंझोड़ा और दहाड़ कर बोला, ''तुम्हें क्या हुआ है? तुम भेड़ों की तरह व्यवहार क्यों कर रहे हो?''

उस शावक ने घबराते हुए उत्तर दिया कि उस शेर से अवश्य कोई

भूल हुई है, वह तो वास्तव में एक भेड़ ही है। इस पर वह शेर उसे खींच कर एक झील के पास ले गया और वहां उसने उसे उसका और अपना प्रतिबिंब दिखाया। तब जाकर उस शावक ने अपना वास्तविक रूप पहचाना।

गुरु का कार्य भी कुछ इसी प्रकार का होकर सरल नहीं होता। वह तो उन कृत्रिम स्तंभों को ही उखाड़ कर फेंक देते हैं जिन्हें उनके अनुयायी ने अपने सांसारिक जीवन का आधार बनाया हुआ है और उसे उसके यथार्थ से परिचय कराते हैं। हम हाड़ मांस के जीव-जन्तु नहीं हैं; हम तो उस परमात्मा का ही प्रतिबिंब हैं। आत्मा का परमात्मा में विलय ही हर आत्मा का अंतिम ध्येय है और हम इस लौकिक विश्व की मोह माया के जाल में फंस कर उस लक्ष्य को भूल गये हैं। हमें अपनी इन्द्रियों के वश में होकर चलने वाले पशु समान नहीं बनना है। प्रत्येक जन्म की भांति इस जन्म में भी हमारी आत्मा ने शरीर को धारण किया हुआ है, न कि शरीर ने आत्मा को आवरण पहनाया हुआ है।

गुरु के कमल चरण स्पर्श कर, उनकी पावन शरण में जाकर ही मूल परिवर्तन संभव है। मन में स्वाभिमान की समाप्ति होने पर ही वास्तविक ज्ञान का बोध होता है। गुरु तो असीमित, अपार विद्या का ऐसा भंडार है जो अपने अनगिनित भक्तों में आध्यात्मिक ज्योति प्रज्ज्वलित करने की क्षमता रखते हैं। उनके प्रेम स्पर्श मात्र से ही चित्त जागृत हो उठता है।

किन्तु इस अवस्था तक पहुँचने के लिए पहले अनेक प्रबन्ध करने आवश्यक हैं। हम इस और अनेक पूर्व जन्मों के मनोवैज्ञानिक और कार्मिक बंधनों से जकड़े हुए हैं। मन पर कर्म का प्रभाव अत्यंत गहरा होता है। इनसे निकलने के लिए मन और शरीर, दोनों को सुदृढ़ कर सही प्रकार से तैयार करना पड़ता है। जिस प्रकार भंवर में फँस कर तैराक डूब सकता है, वही स्थिति मनुष्य की होती है। यदि वह इसके लिए तैयार नहीं है तो वह यात्रा प्रारम्भ करते ही औंधे मुंह बल खा कर गिर जाएगा। अतः गुरु अनेक बार ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं जो

शिष्य को जीवन के अमूल्य पाठ पढ़ाती हैं। इस प्रकार अनुकूल प्रवृत्ति प्राप्त कर ही भक्त अपने गुरु के स्नेहाशीष सहित अग्रसर होता है।

जीवन में कोई भी बाधा आने पर गुरु की दया पूर्ण रूप से विदित होती है। अनेक अवसरों पर, शिष्य के आत्मिक विकास की बाधा को दूर करने के लिए, गुरु उसके कर्मों को अपने ऊपर अंतरित कर लेते हैं और इस प्रकार उसके वह कर्मफल नष्ट कर देते हैं। गुरु का अपने भक्तों के लिए व्यवहार तो इस प्रकार का है जैसे किसी विशाल बाधा को पार करने के लिए अभिभावक अपने छोटे बालक को अपने कन्धों पर बैठा लेते हैं। ऐसे महान गुरु का हम किन शब्दों में धन्यवाद कर सकते हैं? हम तो अति साधारण मानव हैं जो उनकी दया, कृपा और स्नेहाशीष के बदले में केवल थोड़ी सी श्रद्धा सहित आदर भाव अर्पण कर सकते हैं और उनके आदेशों का पालन करने का प्रयास कर सकते हैं।

तो भी कई अवसरों पर ऐसी परिस्थितियाँ आ जाती हैं जब हम अपने गुरु से अप्रसन्न हो जाते हैं। परन्तु गुरु तो गुरु हैं और हम साधारण नश्वर – उनके लिए हमारी उन्नति ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है और इस कारण वह अपने शिष्यों की मानसिक परिस्थिति को अनुकूल करने में कोई चूक नहीं करते। भले ही शिष्य उनके इस कठोर व्यवहार से अपनी कृत्रिम शक्तियों का ह्रास होते देख कर शिथिल पड़ जाये। गुरु तो उसका भला चाह रहे होते हैं; उन्हें इन सांसारिक बातों से कोई अंतर नहीं पड़ता है कि उनके द्वारा अपना अभिमान नष्ट होते जान कर उनका शिष्य कितना विचलित हो रहा है – वह उसे सुमार्ग पर आगे बढ़ाने की अपनी चेष्टा बनाये रखते हैं।

ऐसे जटिल क्षणों में, अपनी प्रवृत्ति परिवर्तन होते हुए जान कर, कई अवसरों पर भक्त क्षीण पड़ जाता है या मानसिक संतुलन खो बैठता है। किन्तु उसके लिए इतना आभास पर्याप्त है कि गुरु उसके लिए कितना अधिक प्रयास कर रहे हैं। गुरु की एकमात्र रुचि, स्वार्थ से बंधे हुए अन्य संबंधों के विपरीत, भक्त की प्रगति में होती है। उनका

भी एक स्वार्थ है – उसको परमात्मा की ओर ले जाने का। इसके लिए उन्हें कितने भी कठिन से कठिन कार्य करने हों – भक्त के कर्मों को समाप्त करना हो, उसे स्वास्थ्य लाभ देना हो या उसका कोई अन्य कार्य फलीभूत करना हो – यह सब तो गुरु के व्यक्तिगत विश्लेषण पर निर्भर है। मुख्य प्रक्रिया तो उस सच्चिदानंद प्राप्ति की है, जिसके लिए अन्य सब कारण बन जाते हैं।

गुरु अपने अनुयायियों को इस यात्रा के लिए सुदृढ़ करने में अत्याधिक शक्ति एवं समय का व्यय करते हैं। परम प्राप्ति की यह यात्रा कोई सरल कार्य नहीं है। न ही आत्मिक ज्ञान का बोध जीवन दर्शन का कोई सरल पाठ है, न ही यह कोई श्रृंगार है जिसे धारण कर आपका व्यक्तित्व इस समाज में और आकर्षक हो जाएगा; न ही यह ऐसे धार्मिक संस्कार हैं जिन्हें पूरा कर हम संतोष कर लें और ईश्वर प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा। यह ऐसी कोई यात्रा भी नहीं है जिस पर थोड़ी ही दूर चलकर आप रुक जायें और कह सकें कि आपने अपने जीवन का गंतव्य प्राप्त कर लिया है। एक बार गुरु का गुरुत्व स्वीकार कर लेने के पश्चात् आपको उसी मार्ग पर वहां तक चलते रहना होगा जहाँ तक वह आपको ले जायें।

उस परम ज्ञान की प्राप्ति के लिए गुरु ही एकमात्र साधन है। वह तो दिव्यत्व की सीढ़ियों पर चढ़ाने वाले पथ प्रदर्शक हैं। वह ही आत्मज्ञान का बोध कराते हैं। उनके पास प्रत्येक बाधा से निकलने की योजना है – भले ही भीड़ से बचकर निकलना हो या आपसी संबंध किस प्रकार के हों। यह बात गौण है कि वह आपसे हँस कर बात कर रहे हैं या गंभीरता से कोई महत्त्वपूर्ण विवरण सुन रहे हों। हर क्षण, आदि से अंत तक वह गुरु गुरु ही रहेंगे। उन्हें संतुष्ट कर, प्रसन्न कर ही भक्त अपने गंतव्य तक पहुंचने में सफल हो सकता है। आप कदापि गुरु का अनुकरण करने का प्रयास न करें। आदि शंकराचार्य से संबंधित एक रुचिकर घटना है। उनका एक शिष्य सदा उनके प्रत्येक भाव का अनुकरण करता था। एक तीर्थयात्रा में जब उन्होंने एक ग्राम में रुक कर

एक कृषक से मदिरा ग्रहण कर पी तो उस शिष्य ने भी अत्यंत उत्साहपूर्वक उनका अनुसरण किया। कुछ दूर जाने पर वेदज्ञ एक ऐसे स्थान पर रुके जहाँ लौह पिघलाया जा रहा था। उन्होंने वहां पर उपस्थित एक कर्मी से अनुग्रह कर पिघला हुआ लौह अपने हस्तकुंडल में स्वीकार किया और एक लम्बा घूँट लेकर पी गये। अब वह शिष्य सकते में आ गया – यह कार्य करने में वह असमर्थ था।

इसमें कोई संशय नहीं कि गुरु के आदेश का पालन मन, कर्म और वचन (मनसा, वाचा, कर्मणा) से करना आवश्यक है। फिर भी शिष्य अपने आप को, किसी भी परिस्थिति में, गुरु के स्थान पर आसीन होने की कल्पना न करे। इससे कहीं अधिक आनंद गुरु को प्रेमपूर्वक याद करने में हैं। इस प्रकार गुरु शिष्य के संबंधों को अत्यंत बल प्राप्ति होती है।

आध्यात्मिक रूप से गुरु के पास हमारे कृत्रिम अहम् को नष्ट करने के शस्त्र हैं किन्तु जब तक आप निर्भीक होकर अनावृत होने को तत्पर नहीं हैं गुरु की पूरी कृपा पाने में भी असमर्थ ही रहेंगे। आप यह भी मत कहिये कि आप उनका पूर्ण रूप से अनुगमन करते हैं। यह तो निश्चित है कि गुरु के समीप आने पर आप को निरंतर अपनी ऐसी अस्वभाविकता की अनुभूति होगी या ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी जिनसे आपके मन और अहम् को गहरी चोट पहुंचेगी। यह भी संभव है कि गुरु शरण में आने के पश्चात् उनकी कृपा, दया और आशीर्वाद के छोटे से छोटे लक्षण भी समाप्त हो जाएं। किन्तु यह सब अस्थायी चरण हैं। गुरु का बड़प्पन तो इसी में है कि वह हमें हमारी तत्कालीन अवस्था में स्वीकार कर लेते हैं – सब अवगुण सहित। हमारे सब दोषों को भी प्रेम से स्वीकार कर लेते हैं। अपनी शरण में किसी के भी आने के लिए कोई प्रतिबंध नहीं लगते हैं। सर्वरूपेण, परिपूर्ण, सच्चिदानंद में आसक्त उन्हें न किसी उपहार की आकांक्षा है, न किसी भौतिक वस्तु की कामना। उनकी दृष्टि सब पर एक समान है, वह कभी कोई पक्षपात या भेदभाव नहीं करते हैं। असीम आकाश की भांति किसी को भी स्पर्श

किये बिना वह सब भक्तों को अपना आलिंगन अर्पित करते हें। वह तो शाश्वत सत्य, शिव के साक्षी, सर्वज्ञाता हैं। अनंत को निरंतर देखती उनकी निर्भीक, स्थिर दृष्टि में प्रत्येक अनुयायी के मन में उत्पन्न हो रहे प्रत्येक भाव को समझने की शक्ति है।

गुरु सर्वोच्च है, उनकी समानता करना असंभव है। उनकी भव्यता, उनकी महिमा तो स्वर्ग लोक में निवास करने वाले देवी देवताओं से भी उच्च है। सूर्य, चंद्रमा, समस्त नक्षत्र और तारे तो उनके आवरण पर पड़ी हुई धूल के कणों की पपड़ी के समान हैं। पवित्र त्रिमूर्ति, असंख्य देवी देवता और ब्रह्माण्ड की समस्त शक्तियाँ – सब नतमस्तक हो, उनका चरण स्पर्श करते हुए उनके प्रत्येक आदेश का पालन करने को सदा तत्पर हैं।

गुरु स्वयं परमात्मा हैं। गुरु शिव है। शिवपुराण में एक उल्लेख आता है जहाँ ब्रह्मा शिव से निवेदन करते हैं कि सब प्राणियों को नश्वरता के आधीन रखा जाये। परन्तु शिव इसे अस्वीकार करते हुए कहते हैं कि जीवन मृत्यु के इस चक्र से प्राणियों को मुक्त रखने के लिए वह स्वयं अवतरित होंगे। क्या इसी कारण आदरणीय गुरुजी हमारे बीच में आये?

कितना आनंद है गुरुजी की चरण धूलि में!
गुरु करुणा तुम और मुझ पर बनी रहे,
उनकी कृपा वर्षा हम नासमझों पर रहे
उनकी उर्जा से प्रभारित हो
हम उनके चरणों में सदैव बसें।

गुरुजी कृत देवालय

दूर, राजधानी के कोलाहाल से दूर एक स्थान है जहाँ पर लोगों की आत्माएँ पुनः प्रसारित हो सकती हैं और उनके हृदय वहाँ के सौंदर्य में डूब जाते हैं। यहाँ पर वायु स्वच्छ है, दूब हरी है और आंखें चमकते हुए श्वेत संगमरमर भवन के ऊपर काली चट्टान से बने हुए विशाल लिंग से साक्षात्कार करती हैं। लिंग संदेश देता है कि यह स्थान शिव का आसन है। गगन की ओर उभरता हुआ लिंग शिव धर्म, साधु भाव और एक नयी धार्मिक चेतना की घोषणा करता है।

प्रवेश करते ही ज्ञान एवं प्रतिभा के धनी गणेश की लघु मूर्ति आगंतुक का स्वागत करती है। उसके थोड़ा आगे बाहर उद्यान में एक अति सुन्दर युवा शिव की प्रतिमा स्थापित है।

कर्पूर गौरम् करुणावतारं, संसार सारं भुजगेन्द्र हारं।

सदा वसन्तं हृदयारविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि।।

उनके विशाल, करुणा से पूरित, सुन्दर नयन खुले हुए हैं, मुख अर्ध मुस्कान से आनंदित है और एक हस्त आशीष देने के लिए उठा हुआ है। वह एक अति विशाल कमल पुष्प पर विराजमान हैं और उनके सिर के ऊपर शेषनाग की छत्रछाया है।

अंदर मंदिर में पीतल निर्मित महेश्वर इसी मुद्रा में विराजमान हैं। उल्लेखनीय है कि महायोगी शिव तपस्या नहीं कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत

होता है मानो अभी तपस्या समाप्त कर, एक पैर नीचे कर, अपने भक्तों की समस्याओं का समाधान करने के लिए तत्पर हैं। मुख्य कक्ष में ''ॐ नमः शिवाय'' सामने दीवार पर अलंकृत है। यह शिव और गुरुजी (दोनों एक ही हैं) का अपने उन भक्तों को आशीर्वाद का अविनाशी वचन है जिन्हें उन पर श्रद्धा और विश्वास है।

असंभव लिंग निर्माण

यह गूढ़ तथ्य कि यह स्थान वास्तव में त्रिकालदर्शी शंकर महादेव का ही है, निर्माणकाल के समय हुई विलक्षण घटनाओं से, निर्माण से सम्बन्धित और जो वहां पर सदा जाते रहते हैं, उन महानुभावों के अनुभवों से स्पष्ट हो जाता है।

मंदिर निर्माण के समय कार्य में अनेक बाधाएँ आयीं और, प्रत्येक अवसर पर, चमत्कारिक रूप से वह दूर भी हो गयीं। यह गुरुजी के निजी हस्तक्षेप के कारण ही संभव हुआ।

निर्माण प्रारम्भ होने से पूर्व इस भूमिखंड पर अनेक झाड़ियाँ, वृक्ष और विशाल शिलाखंड और पत्थर थे जिन्हें साफ करना और हटाना आवश्यक था। परन्तु हर झाड़ी और पत्थर के नीचे सर्प था। एक को हटाने पर और प्रकट हो जाते थे। यह देखकर वहां पर कार्य करने वाले कर्मी भाग गये। अडिग, निर्माण प्रभारी, रघुवीर नामक एक सिख भक्त - संयोग से जिनकी दृष्टि अति क्षीण थी (गुरुजी पर विश्वास रखने वाले श्रद्धालुओं के लिए एक और प्रसंग) - ने और कर्मी बुलाये। किन्तु इतने सांपों को देखकर वह भी भाग गये। अंततः रघुबीर ने गुरुजी को इस समस्या से अवगत कराया। गुरुजी ने मुस्कुरा कर रघुबीर को निर्देश दिया कि वह और कर्मी किराये पर लाये और आश्वासन दिया कि यह समस्या पुनः नहीं होगी। और ऐसा ही हुआ, अगली बार जब कर्मी आये तो उस खंड में एक भी सर्प नहीं था।

मंदिर का निर्माण कार्य वर्षा ऋतु में प्रारम्भ हुआ था। हर बार जब कंक्रीट डाला जाता तो वर्षा रुक जाती थी। निर्माण कार्य में लगे हुए

लोगों को शीघ्र ही विश्वास हो गया कि यह संयोग नहीं है। गुरुजी स्वयं कहा करते थे कि घटनाएं चयन से होती हैं, देवयोग से नहीं।

गुरुजी का आदेश था कि मंदिर का गुम्बद लिंग की आकृति में होगा। यह तभी संभव था जब उसको ठोस आधार दिया जाता। परन्तु गुरुजी इसके विरुद्ध थे। वास्तुविद का मानना था कि यह अव्यवहारिक है और उन्होंने इसका भरपूर विरोध किया। तथापि निर्माण गुरुजी के आदेशानुसार प्रारम्भ हुआ।

अब दिल्ली में एक ही राजगीर था जो यह कार्य करने में सक्षम था। परन्तु उसे ढूंढ़ना सरल नहीं था। रघुबीर ने उसको कैसे खोज निकाला, यह स्वयं में एक सत्संग है।

निर्माण करते हुए लिंग का निचला भाग बिना समस्या के बन गया किन्तु ऊपरी भाग में दरारें आ गयीं। रघुबीर को इस समस्या से अवगत किया गया। उन्होंने ठेकेदार को पुनः निर्माण करने को कहा, किन्तु फल वही रहा। अब समस्या निदान हेतु गुरुजी के समक्ष रखी गई तो उन्होंने उत्तर दिया कि उनको पुनः प्रयत्न करने को कहो; इस बार वह उसको आधार देंगे।

फलस्वरूप कार्य तीसरी बार पुनः प्रारम्भ किया गया – और इस बार ऊपरी वृत्ताकार भाग बिना किसी कठिनाई के, बिना किसी दरार या रुकावट के, पूर्ण हो गया। गुरुजी द्वारा दिये गये आधार से दोष समाप्त हो पाया, उसे आवश्यक शक्ति प्राप्त हुई और लिंग निर्माण संभव हुआ। यह वास्तव में अचरज की बात है कि गुरुजी की अलौकिक शक्ति किस प्रकार से इस संरचना को संभाले हुए है। निर्माण के समय शिवलिंग में हल्के भार और हल्के रंग की टाईल लगाई गयीं थी। बाद में इनको काली ग्रेनाईट से अंतरित कर दिया गया। तत्पश्चात् लिंग के मध्य से एक भारी भरकम फानूस (chandelier) भी टांग दिया गया। इस प्रकार न केवल एक असंभव रचना हुई, उस पर वजन भी डाल दिया गया। यह गुरुजी की कृपा ही है जिसके कारण लिंग अपने स्थान पर, इस विश्व के भौतिक नियमों के प्रतिकूल, आज भी स्थिर है।

चमत्कृत भूमि

मंदिर और उसके परिवेश के निर्माण के समय पूर्ण रूप से प्रत्यक्ष हो गया था (और अब भी है) कि इस स्थान पर त्रयम्बकं की कृपा है। अनौपचारिक दर्शक भी यहाँ के फूल पौधे और वृक्षों की विशिष्ट उपज देखकर अचम्भे में पड़े बिना नहीं रहते। एक महिला ने अपने कृषि भवन के लिए खरीदे हुए फूल के कुछ बीज जब यहाँ पर उगने के लिए डाले तो वह यह देखकर आश्चर्य चकित रह गई कि उनका आकार अपने यहाँ उगाए हुए फूलों से दुगना था।

एक बार गुरुजी से मंदिर की दूब पुनः बिछाने की आज्ञा ली गई। उन्होंने सहर्ष ही यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया किन्तु अधिक समय शेष नहीं था - मंदिर में एक आयोजन का समय बहुत निकट था। देवालय के माली ने तो अपना कार्य पूर्ण कर दिया था पर दूब बिछाने के बाद यह स्पष्ट हो गया कि यह निर्णय दो कारणों से अनुचित था। प्रथम, दूब को पूरी तरह से उगने के लिए अधिक समय की आवश्यकता थी। दूसरा, यह कि जिस प्रजाति की दूब डाली गई थी वह पहली कटाई से पूर्व पैर में चुभती है और उसके पश्चात् ही मलमल की तरह नरम होती है। समय के अभाव में यह दोनों असंभव प्रतीत हो रहे थे।

किन्तु कुछ ही दिनों में दूब की आश्चर्य चकित करने वाली वृद्धि को देखकर सब विस्मित रह गये। दूब की पहली कटाई आयोजन से काफी पूर्व करी गई और उपज इतनी अधिक थी कि आयोजन से पूर्व एक और कटाई की आवश्यकता पड़ गई। आयोजन के समय प्रांगण में दूब की उत्कृष्टता देखकर आंगतुक प्रशंसा किये बिना नहीं रहे। इस प्रसंग को सुन और देख कर दूब के विशेषज्ञ भी विश्वास नहीं कर पा रहे थे।

सर्वव्यापी गुरुजी

देवालय में यदा कदा कुछ आश्चर्यजनक घटनाएँ होती रही हैं जो

दैविक अलौकिक शक्ति की ओर संकेत देती है। मंदिर में दर्शकों ने अक्सर प्रांगण में शिव की प्रतिमा के भाव बदलते देखे हैं और वर्ष 2006 में होली के अवसर पर मुख्य सभागृह में पीतल की शिव प्रतिमा पर एक स्थान पर रंग लगा देखा गया।

यह सुनिश्चित है कि सर्वव्यापी गुरुजी की दृष्टि सदा मंदिर पर रहती है। एक अध्यापिका का वृत्तान्त वर्णनीय है। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर वह प्रातःकाल सवा छह बजे अपने विद्यालय जाने से पूर्व मंदिर गयीं। उस पवित्र दिन, केवल माली ने, उनको वहां पर अपने गुरु का अभिवादन करते हुए देखा। किन्तु यह अर्ध सत्य है – किसी और ने भी उनको वहां पर देखा था!

जब वह गुरुजी के दर्शन हेतु अगली बार एम्पाएर एस्टेट आयीं, तो गुरुजी ने उनको बुलाया और बोले कि वह गुरु पूर्णिमा के दिन सुबह सवा छह बजे मंदिर गईं थी। वह अपने ध्यान में उनको देख रहे थे।

श्रद्धा का पुनर्जागरण

स्पष्ट है कि यह 'बड़ा मंदिर' गुरुकृपा से स्थापत्य कला का अत्यंत उत्कृष्ट उदाहरण है जो भक्त को सौम्य और स्नेह भाव से अपनी ओर खींच लेता है। यह उनके अध्यात्म का पवित्र स्थान है, शिव और नानक का प्रिय स्थान। यहाँ पर ओंकार और ओ३म् एक हैं और सदा एक दूसरे का प्रतिबिम्ब बने रहेंगे। यह मंदिर, सृष्टि के रचयिता के प्रतीक बन कर मनुष्य की आत्मा का सदा स्वागत करेगा। यहाँ पर समस्त आगंतुकों पर उनके आशीष की वृष्टि होती है और निरंतर होती रहेगी। दिव्य आभा यहाँ पर और अधिक तीव्रता से सदा प्रज्ज्वलित रहकर अपना प्रकाश इस संसार में फैलाती रहेगी।

आने वाले युगों में मानव जाति इस पवित्र, पावन स्थल को धर्म के जन्मस्थान से पहचानेंगी। हमारे जीवन काल में बड़े मंदिर को सर्वोच्च सम्मान प्राप्त होगा और नवीन धार्मिक चेतना का उदय होगा। यहाँ पर आशीष पाने वाले समस्त भाग्यवान पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के द्वारा

पूर्ण विश्व में सद्भावना और शांति के युग का शुभारम्भ होगा। उल्लेखनीय है कि शिवलिंग का पुनरुत्थान हुआ है। उसका आरोहरण आने वाली मुक्ति की उद्घोषणा कर रहा है। नियति के क्रूर हाथों द्वारा पीड़ित, रोग एवं अज्ञान से मुक्त होंगे। व्याप्त पापों से बंधित और पराजित, नवीन शक्ति और साहस प्राप्त कर विजयी होंगे। केवल आस्था और निर्भयता की छोटी सी नौका, जिसकी पतवार मात्र सतगुरु के शब्द और कृपा हैं, से सहजता से उत्पीड़न के सागर को पार करने का सामर्थ्य मिलेगा।

पथिकों की ''ॐ नमः शिवाय, शिवजी सदा सहाय'' की पुकार से उनको विश्राम स्थल मिलेंगे। संकट और अत्यंत कठोर यातना काल में, देवस्थान में अंकित यह शब्द, गुरुजी के परिश्रम से उनके हृदयों और मन पर चिह्नित, उनकी हुंकार, मित्र, रक्षक, प्रेम और एकमात्र दिशा दर्शक होंगे।

अधर्म अपनी चरम सीमा पर पराजित होगा और भक्त सुरक्षित रहेंगे। भौतिक और मानसिक पीड़ाओं से ग्रस्त, अपने आप से ही संग्राम करती इस संस्कृति के योद्धाओं को यह शिवालय निर्वाण प्रदान करेगा। इस देवालय से प्रतिपादित होती, गुरुजी की करुणा, सबका निदान करेगी। कालान्तर में यह मंदिर उनका प्रभुत्व प्रमाणित करेगा। वायुमंडल उनके शब्द सर्वत्र फैलायेंगे और उनकी इच्छापूर्ति होगी। इस पृथ्वी पर यह देवालय सदा शिव की कृपा का चिह्न रहेगा।

सब आएं इस पवित्र स्थान पर शिव कृपा से,
मन में अंकित, हों सबकी अभिलाषाएं पूर्ण,
सतगुरु रखें, हमें सदा अपनी ही शरण में।

सत्संग – सत्य का समावेश

सत्संगी सदा अपने हृदय से सत्य बोलता है। सत्संग शब्दों में परिवर्तित वह रोमांचक यथार्थता है जो श्रोताओं और पाठकों, दोनों की, चेतना पूर्ण रूप से जागृत करने की असीमित क्षमता रखता है। सत्संग भक्ति का वह अंग है, जो इस देश में आदि काल से, धार्मिक परम्पराओं का सबसे आदरणीय और अभिन्न अंग रहा है। सत्संग में वक्ता अपना प्रवचन सब श्रोताओं के सम्मुख रखता है, या, जैसे यहाँ के प्रसंग में, अपने अनुभव लिखता है। प्राकृतिक संवेदना और ध्यान से पढ़े अथवा सुने हुए सत्संग से सबमें विश्वास की उत्पत्ति होती है। जिस प्रकार अणु विद्युत संचारित करते हैं, उसी प्रकार सत्संग से श्रद्धा एवं निष्ठा का प्रसार होता है।

सत्संग के यह अनुभव संशय और विश्वास के मध्य खड़े हुए जनसमूह के लिए हैं। सत्संग से, जैसा हमने गुरुजी से सीखा है, पाठक और लेखक दोनों को ही आशीष मिलता है। प्रत्येक व्यथित के जीवन में नये मोड़ के साथ आशा की ज्योति जलाने की संभावना रखता है। हर खंड में एक अनोखा अनुबंध, प्रतिज्ञा एवं सत्य का संसार है। गुरुजी की उपस्थिति से हम उनकी छाया में हैं; उनके प्रकाश की तीव्रता के सम्मुख ब्रह्माण्ड के समस्त सूर्यों का सम्मिलित तेज़ भी धूमिल है।

अनेक अवसरों पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी अस्थिर शंका पर श्रद्धा के खड्ग से संहार करता है। संशय और विश्वास, दोनों परस्पर विरोधी, हमारे चारों ओर व्याप्त वातावरण के स्थायी निवासी हैं। यहाँ पर हर सत्य प्रसंग दर्शाता है कि संशय के सागर में डूबी हुई आत्मा ने कैसे अपने स्वाभाविक रूप पर पुनः अपना अधिकार स्थापित किया – अविश्वास के अंधकार में लुप्त सत्य, श्रद्धा, भक्ति और आस्था का पुनर्जागरण होता है। इसी सच्चाई को हम ''गुरुजी'' से जानते हैं। औरों ने उन्हें अन्य अनेक नामों से भी पुकारा है; सब उतने ही प्रिय और प्रेममय हैं।

यह सत्संग आपको, जो संभवतः अभी भी सोच रहे हैं कि सत्य के भवसागर में छलांग लगाई जाये या नहीं, आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है – आगे बढ़ कर तेजी से कूद जाइए! प्रणव सदा आपके सदा हैं।

यह कथाएँ, पूरे विश्व में फैले हुए अनगिनत भक्तों पर हुए चमत्कार हैं। परन्तु चमत्कार क्या है? वह तो आत्मा से उत्पन्न हुआ सत्य है। आत्मा तो उस सत्य को सदा से पहचानती थी; इस भौतिक संसार की माया में वह डूब गयी और उस सत्य से भक्त अनभिज्ञ हो गये। यह चमत्कारिक सत्य सर्वप्रथम प्रेम और आस्था का प्रतीक है – तत्पश्चात् वह हमारे सामान्य जीवन में प्रतीत होने वाली अलौकिक घटनाएं हैं। इन कथाओं के पात्र – गुरुजी के असंख्य भक्त – अपने उन अनुभवों का वर्णन कर रहे हैं जिन्होंने उन्हें पूर्णतया पराजित, विह्वल और आतंकित किया; उनको आहत, निस्सहाय कर अपनी सीमाएं नापने पर विवश किया, भावना परीक्षण किया, रक्षा कवचों को क्षत-विक्षित कर दिया; किन्तु, इसी से उन्हें शक्ति, साहस और चिरस्थायी आशा की प्राप्ति हुई। वह सब उस असाधारण, उत्कृष्ट, दिव्य धारा में प्रवाहित हो कर अपनी आपबीती व्यक्त कर रहे हैं।

गुरुजी का आदेश प्रसारित करने वाले यह वृत्तांत ही हमारे वास्तविक मित्र हैं और उस आदेश का पालन करना नितांत आवश्यक है। इन सत्संगों में गुरुजी की उर्जा है; वह न केवल यह आभास देते

हैं कि गुरुजी ने अपनी अलौकिक शक्तियों से कैसे अपने भक्तों का भला कर उनका पोषण किया, इनमें वह उर्जा भी संग्रहीत है जिसका आनंद लेकर आप भी उसका लाभ उठा सकते हैं।

प्रत्येक सत्संग में, अपने भक्तों के लिए, गुरुजी के अपार स्नेह और वेदना के दर्शन होते हैं। अब समय आ गया है कि उनके भक्त उनके आदेशों का मन, वचन और कर्म (मनसा, वाचा, कर्मणा) से पालन करें और उन्हें कभी भी ना भूलें।

यह सत्संग कल्प वृक्ष की अगण्य पत्तियाँ हैं – प्रत्येक एक प्रेम गीत गाती हुई, श्रद्धा से परिपूर्ण। हर सत्संग में गुरुजी और उनके भक्त का परस्पर स्नेह प्रतिष्ठित है। आशा करते हैं कि यह अनुभव इन भक्त लेखकों की भांति आपके हृदय के तारों को भी हिला कर मन में अति सुरमय, मधुर, दिव्य संगीत भर देगा। क्या अनहद जैसी मिठास अन्यत्र कहीं मिल सकती है।

जन संपर्क अधिकारी को पुनः वाणी प्राप्ति

दिसंबर 1999 की शीत ऋतु मेरे लिए एक अति भयानक समाचार ले कर आयी थी। धीरे–धीरे मेरी आवाज कम होती जा रही थी और थोड़े से शब्दों के उच्चारण के लिए भी मुझे विशेष प्रयास करना पड़ रहा था। कर्ण, नासिका और कंठ विशेषज्ञ से मिलने के पश्चात् यह लग रहा था कि दिल्ली की यह शीत ऋतु और धुंध निरानंद होते हुए और भी प्रतिकूल होने वाली थी।

विस्तृत जांच पड़ताल के पश्चात् विशेषज्ञों ने शल्य क्रिया का परामर्श दिया जो सर गंगाराम चिकित्सालय में करी गयी। मेरी बाओप्सी का परिणाम आने पर हमारी आशंका की पुष्टि हो गयी। कंठ में मेरी सूजन असाध्य, प्राणघातक कर्कट रोग बन चुका था।

जब मेरी वाणी विकृत होने लगी, उसके मात्र दो मास पश्चात् मैं जैसे नर्क में पहुंच गया था और इसका कारण समझ पाने में असमर्थ था।

मैं सिगरेट, मद्य, तम्बाकू या पान का सेवन नहीं करता था। पर ईश्वर ही पालक हैं।

अपनी शल्य क्रिया के पश्चात्, तीन सप्ताह के विश्राम काल में, जिसमें मुझे कुछ भी बोलने की मनाही थी, मैं गुरुजी की शरण में रहा। मैं और मेरी पत्नी, हम दोनों गुरुजी के पास, मेरी दुर्दशा की अवस्था में पहुंचे थे। किन्तु उससे पहले एक और परीक्षा देनी थी। चिकित्सालय से आने के बाद, पांचवे दिन मेरी गुरुजी के पास जाने की अटूट अभिलाषा जागृत हुई।

संयोग से उस दिन अत्याधिक वर्षा हो रही थी। मेरे परिवार के सदस्यों ने मुझे किसी और दिन जाने की सलाह दी; पर मैं नहीं माना – मेरा मन पक्का हो चुका था। मेरे अंदर उसी दिन जाने की आवाज उठ रही थी।

एम्पाएर एस्टेट से गुरुजी के स्थान तक चलते हुए एक अद्‌भुत सुख का आभास हुआ। गुरुजी अपने रंगीन, लम्बे लबादे में अपने स्थान पर आसीन थे। हमारा परिचय करवा कर हमें राजसिक रक्तिम कालीन पर आसन ग्रहण करने को कहा गया। गुरबानी के पवित्र शबद वातावरण में रस घोल कर उसे और मधुमय कर रहे थे। एक स्नेहमय किन्तु ओजस्वी उर्जा पूरे कमरे में फैली हुई थी। कुछ समय पश्चात् चाय प्रसाद वितरित हुआ।

उसके एकदम बाद गुरुजी ने हमें बुलाया और मेरी घबरायी हुई पत्नी को कहा ''*जा, तेरे हज्बेंड नु पचास फीसदी ठीक कर दित्ता, टेस्ट फिर करा ले।*'' उस समय यह विश्वास करना सरल नहीं था कि वह असाध्य रोग ठीक हो गया था। पर हमने गुरुजी की सलाह मानी। बाओप्सी की शेष चार स्लाइड में से दो एम्स में दीं और दो मुंबई स्थित टाटा संस्थान में भेजीं। एक सप्ताह पश्चात् परिणाम आने पर हम पुनः एम्पाएर एस्टेट गये। हमारे प्रवेश करते ही गुरुजी मुस्कुराए और बोले, ''*क्यों डॉक्टर कन्फ्यूज हो गये?*'' यह तथ्य था। दोनों संस्थानों से आये निष्कर्षों ने मुझे स्वस्थ घोषित किया था। प्रथम चमत्कार हो चुका था।

उसके पश्चात् चिकित्सकों ने रोग लक्षण प्रयोगशाला के निर्णयों की अवहेलना न कर उपचार पूरा कराने को कहा। मैंने निश्चित कर लिया था कि अब कोई भी उपचार गुरुजी के कथनानुसार ही होगा। आगे यह हुआ – गुरुजी ने मुझे मिर्चों से भरा हुआ लंगर खाने को कहा। चिकित्सकों के अनुसार, जिन्होंने मुझे केवल उबला हुआ खाना खाने के निर्देश दिए थे, मिर्चें निषिद्ध थीं। गुरुजी ने मुझसे उच्चारण भी करवाया और घोषित कर दिया कि मैं पूर्णतया स्वस्थ हूँ।

गुरुजी के परामर्श पर मैं विकिरण चिकित्सा करवाता रहा परन्तु मुझ पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ा। मुझे कभी कोई उबकाई नहीं हुई; मेरा हिमोग्लोबिन सदा सामान्य से ऊपर रहा। एकमात्र औषधि, यदि इसे ऐसा कह सकें तो, गुरुजी द्वारा अभिमंत्रित ताम्र लोटे में जल भर कर पीने की रही। इस क्रिया में पूरी रात्रि जल भर कर रखने के पश्चात् प्रातःकाल आधा पी कर शेष से स्नान करना था। इस अति साधारण क्रिया पद्धति से मैं पूर्ण स्वस्थ हो गया। नव जीवन के लिए मेरा ऐसा चमत्कारिक परिवर्तन रहा है। यह सिद्ध करने के लिए मेरी दो बेटियाँ और पत्नी हैं – धन्य हैं गुरुजी!

–अचल पॉल, दिल्ली

उनमें शिव ज्योत का वास है

मैं गुरुजी के संपर्क में 1986 में आया। उनके भीतर शिव ज्योति का वास है। शिव की भांति गुरुजी मानवता के लिए प्रेम एवं करुणा का प्रतीक हैं। गुरुजी के समक्ष आस्था से आये हुए प्रत्येक व्यक्ति का कल्याण होता है।

पूजनीय गुरुजी अपने अनुयायियों को परमात्मा का संदेश देते हैं। उनके अनुसार ईश्वर एक है, मनुष्य की जाति, रंग भेद, धर्म आदि का कोई महत्त्व नहीं है, सब एक समान हैं, सब उसी एक देव परिवार के सदस्य हैं। वह मानवता से प्रेम और जरूरतमंद की सहायता करने का संदेश देते हैं। उनमें दिव्य शक्तियां हैं और वह सर्वज्ञाता हैं। उन्हें भूत, वर्तमान और भविष्य – सबका ज्ञान है। उन्होंने ईश्वर सदृश चमत्कार किये हैं और मरणासन्न रोगियों को असाध्य रोगों से मुक्त किया है।

सर्वत्र कृपा

मुझे अनेक बार गुरुकृपा का सौभाग्य मिला है। 1987 में मेरी पत्नी को अंदरूनी सूजन हो गयी थी। असाध्यता रोकने के लिए चिकित्सकों ने तुरन्त शल्य क्रिया का सुझाव दिया। हम शल्य क्रिया की सफलता के लिए गुरुजी के पास पहुंचे और उन्हें रोग एवं चिकित्सकों के परमार्श के बारे में बताया। गुरुजी ने उसे अमृत देकर कहा कि शल्य क्रिया की कोई आवश्यकता नहीं है। गुरुजी में निष्ठा होने के कारण हमने शल्य क्रिया नहीं करवायी। दो वर्ष के उपरान्त एक दिन मेरी पत्नी को बहुत पेट दर्द हुआ। चंडीगढ़ के सर्वोत्तम चिकित्सालय द्वारा परीक्षण में सूजन का कोई प्रमाण नहीं था; वह केवल उदरशूल था।

गुरुजी - दो स्थानों पर एक साथ

1992 में मेरी माँ बहुत बीमार हो गयीं और चेतना खो बैठीं थीं। 95 वर्ष की आयु में उनके जीवित रहने की संभावना बहुत कम थी। 28 फरवरी को जब मैं अपनी मां के कष्टों को नहीं देख पा रहा था, मैंने मन ही मन गुरुजी से, जो उस समय जालंधर में थे, आकर उनको शांति देने के लिए प्रार्थना करी। उस समय सांझ के 6:30 बज रहे थे। मेरी प्रार्थना करने के कुछ ही क्षण बाद गुरुजी ने सामने के द्वार से, जो अंदर से बंद था, प्रवेश किया। हम उनको देखकर आश्चर्यचकित थे। गुरुजी ने मेरी पत्नी को एक ग्लास में जल लाने को कहा जिसे उन्होंने अभिमंत्रित किया। उन्होंने माँ को दो चम्मच जल पिलाने को कहा और बताया कि वह अर्ध रात्रि में दो बजे तक जीवित रहेंगी। गुरुजी फिर दस मिनट तक बाहर नहीं आने का निर्देश देकर चले गये।

उस अंतराल के बाद हमने बाहर आकर पुलिस द्वारा नियुक्त पहरेदार से गुरुजी के बारे में पूछा तो उसने अनभिज्ञता व्यक्त करी; उसके अनुसार कोई भी अंदर नहीं गया था। मैंने तुरन्त जालंधर फोन किया तो मुझे बताया गया कि वह तो उस समय जालंधर में संगत में

बैठे हुए थे। उसके बाद हमने माँ को जल पिलाया और गुरुजी के कहे अनुसार रात को दो बजे उन्हें मोक्ष प्राप्ति हुई। अतः गुरुजी एक ही समय दो स्थानों पर थे – जालंधर में संगत में, और हमारे घर पर।

शिव दर्शन

मेरी पुत्री भी गुरुजी की भक्त है। 1998 में गुरुजी चंडीगढ़ के सेक्टर 33 में रहते थे। जब मेरी बेटी गुरुजी से प्रार्थना करती थी तब वह शिव दर्शन की कामना करती थी। एक दिन प्रातः उठने पर अपने कक्ष में गुरुजी के सब चित्र शिव रूप में परिवर्तित हुए देख कर वह चकित रह गयी। अतिथि कक्ष में प्रवेश करने पर उसने कालीन पर शिव को गुरुजी के चित्र के निकट बैठे हुए देखा।

उस समय उसने हमें दर्शन होने के समाचार नहीं सुनाये। संध्या को हम गुरुजी के दर्शन के लिए गये। गुरुजी के निकट जाने पर उसे गुरुजी की मुखाकृति के चारों ओर अद्वितीय प्रकाश दिखायी दिया और वह उसकी प्रबलता सहन नहीं कर पायी। यह देखकर वह मंत्रमुग्ध हो गयी और जोर जोर से रोने लगी। उसने गुरुजी में शिव का अनुभव किया था। हमने गुरुजी से उसकी इस अवस्था का कारण पूछा। उन्होंने उत्तर दिया कि वह शिव दर्शन के लिए प्रार्थना करती रही थी, अतः उन्होंने उसकी मनोकामना पूर्ण करी थी।

उपचारात्मक जल

28 अप्रैल 1998 को स्नानकक्ष में गिरने के कारण मेरी तीन पसलियाँ टूट गयीं। मुझे चिकित्सालय में प्रविष्ट करवाया गया। 15 मई को मुझे लखनऊ के पी जी आई में भेजा गया। पराश्रव्य चित्रण और ई सी जी परीक्षण के परिणामों से मेरे हृदय को क्षति होने का प्रमाण सामने आया – हृदय पर छाया बनी हुई थी। 29 मई को मैंने डॉ. महेश चन्द्र, किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज में हृदय रोग के विभागाध्यक्ष, से परामर्श लिया तो पुनः वही परीक्षण कर उन्होंने भी वही निष्कर्ष सुनाया। 2 जून

को मैं गुरुजी के दर्शन हेतु दिल्ली आया। मैंने उनको चिकित्सकों के निर्णय से अवगत किया तो उन्होंने एक ग्लास जल मंगा कर मुझे अपनी कमीज के बटन खोलने को कहा। उन्होंने ग्लास के जल से मेरे वक्ष स्थल पर छीटें मारे और मुझे स्वस्थ घोषित कर दिया। साथ ही उन्होंने पुनः परीक्षण करवाने का निर्देश भी दिया।

एक दिन के बाद डॉ. कर्लेपिया, दिल्ली में सेना रेफरेल और रिसर्च चिकित्सालय के विभागाध्यक्ष, ने मेरा परीक्षण किया। उन्होंने भी वही परीक्षण दोबारा करे और मुझे स्वस्थ घोषित कर दिया – मेरा हृदय ठीक से कार्य कर रहा था और उस पर कोई छाया नहीं थी। पिछले परिणाम देख कर वह अचंभित हो गये और कहने लगे कि 29 मई और 3 जून की मध्यावधि में केवल किसी चमत्कार से ही ऐसा हो सकता है, अन्यथा हृदय की अवस्था में ऐसा सुधार असंभव है। लखनऊ लौटने पर मैंने वह परिणाम चिकित्सकों को दिखाये तो उनका भी वही निर्णय था। उन्होंने कहा कि चिकित्सा से यह परिवर्तन संभव नहीं है। उस समय से मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ। ऐसी है गुरुजी की दिव्य शक्ति!

कठिन समझौते

चंडीगढ़ के सेक्टर 35 में अपने साले के साथ एक साझा भूखंड था। 1998 में, उसकी आधारशिला रखने के लिए मैंने गुरुजी को आमंत्रित किया। उस स्थल पर आने के बाद गुरुजी आधारशिला नहीं रखना चाह रहे थे पर मेरे आग्रह पर उन्होंने ऐसा कर दिया। गुरुजी ने फिर अचानक एक स्वर्ण मुद्रा प्रकट कर मुझे दी और कहा कि यद्यपि मुझे इससे लाभ होगा, साले के साथ आपसी सम्बन्ध कटु हो जाएंगे।

भवन निर्माण प्रारम्भ होने के कुछ ही दिन बाद उसका काम रुक गया और एक वर्ष बीतने पर ही पुनः आरम्भ हो पाया। भवन निर्माण पूर्ण होने पर हमारे सम्बन्ध बिगड़ गये और हमने आपस में बातचीत बंद कर दी। भवन के किराये से मुझे अपने हिस्से के पचास हज़ार रुपये मिले परन्तु हमारे आपसी संबंधों में दरार होने के कारण उसे फिर

किराये पर नहीं चढ़ा सके। गुरुजी के उस कथन की सत्यता चार वर्ष बाद सिद्ध हुई। अत्यंत कठिनाई से मैं अपना भाग बेच पाया पर मुझे लाभ अवश्य मिला।

ईंधन बिना यात्राएँ

1989 में मैं पटियाला में जनपद न्यायाधीश था। गुरुजी जालंधर से हमारे पास रहने के लिए आये। उनकी वापसी यात्रा के लिए मैंने अपनी निजी कार के साथ अपने वाहन चालक को भेज दिया। कार में पेट्रोल भरवाने के बाद मैंने उसे आकस्मिक स्थिति में पेट्रोल खरीदने के लिए 300 रुपये और दिये।

वापस आने पर वह मार्ग में हुए चमत्कार को बताने के लिए उत्सुक था। उसने बताया कि उसने उन पैसों से पेट्रोल खरीद कर कार में डाल दिया था। एक दिन जब गाड़ी में पेट्रोल नहीं था, तो गुरुजी ने उसे कार चलाने को कहा। जब उसने बताया कि पेट्रोल नहीं है और उसके पास पैसे भी नहीं हैं तो भी गुरुजी ने उसे गाड़ी चलाने को कहा। उसने आज्ञा का पालन किया और गाड़ी चलायी तो उसकी सुई पेट्रोल भरा हुआ दिखा रही थी। वह विश्वास नहीं कर पाया कि गाड़ी बिना पेट्रोल के चल रही है। अगले पांच दिन, जब तक वह गुरुजी के साथ रहा और जब भी वह उसमें बैठते, गाड़ी वैसे ही चलती रही। अंतिम दिन गुरुजी ने सौ के तीन नोट प्रकट कर के उसे दिये और कहा कि यह पेट्रोल खरीदने के लिए दिये गये थे। वाहन चालक, करम सिंह, यह लिखने के समय, पटियाला में जनपद न्यायाधीश के कार्यालय में सेवारत था।

कामनापूर्ति

1987 में मैं रोपड़ में सेवारत था। एक दिन समाचार पत्र में मैंने श्रीमती इंदिरा गांधी का चित्र देखा जिसमें उन्होनें रुद्राक्ष की माला पहनी हुई थी। मैं सोचने लगा – क्या गुरुजी मुझे प्रसाद में एक रुद्राक्ष दे सकते हैं?

दो मास के बाद मैं गुरुजी के दर्शन के लिए जालंधर गया। वह संगत में थे। उन्होंने प्रश्न किया कि मुझे उनसे क्या चाहिए। मैंने उत्तर दिया कि मुझे केवल उनका आशीर्वाद पर्याप्त है। उन्होंने मुझे हाथ बढ़ाने को कहा और मेरे ऐसा करने पर उसमें एक रुद्राक्ष रख दिया। उन्होंने फिर प्रश्न किया कि क्या मुझे यही चाहिए था। उन्होंने दो माह पहले की मनोकामना पूर्ण कर दी थी। तबसे वह रुद्राक्ष मेरे पास ही है। गुरुजी से अकथित कामना भी पूर्ण हो जाती है।

पुत्र रक्षा

1999 में मेरे पुत्र को एक मोटरसाईकिल दुर्घटना में बहुत गहन चोटें आयीं थी। उसे चंडीगढ़ स्थित मेरे मकान के पहरेदार उठाकर घर तक लाये थे। मैं उस समय लखनऊ में था। वह चिकित्सालय नहीं गया। उसने केवल गुरुजी का चित्र अपने पास रखा और दूध में हल्दी और घी डाल कर पी लिया।

अगले दिन प्रातः उठने पर उसे पता चला कि उसकी चोटें गंभीर थीं: उसके कान से रक्त प्रवाह हुआ था, उसकी गर्दन और मुंह इतना सूज गये थे कि उसे पहचान पाना भी कठिन था। दुर्घटना रात को 11 बजे के आसपास हुई थी और उसे अगले दिन दोपहर के आसपास चिकित्सालय ले जाया गया। चिकित्सक चकित थे कि इतनी देर तक, बिना उपचार के, वह जीवित कैसे रहा है। उसे तुरन्त आकस्मिक कक्ष में ले गये और परीक्षण करने पर पता लगा कि उसके मस्तिष्क में रक्तस्त्राव था और सिर पर दरार आ गयी थी। सौभाग्यवश अंदर की चोट का रक्त प्रवाह कान से हो गया था।

चिकित्सक तुरन्त शल्यक्रिया करवाने को कह रहे थे पर उसने अगले दिन दोपहर तक हमारे लखनऊ से लौटने की प्रतीक्षा करी। मार्ग में मैंने गुरुजी से संपर्क स्थापित कर उनको दुर्घटना के बारे में बताया तो उन्होंने अपने आशीर्वाद का आश्वासन दिया। इस अवधि में मेरे पुत्र की निकटता से देखरेख होती रही। गुरुजी की कृपा से उसे शल्य क्रिया

की आवश्यकता नहीं हुई किन्तु उसके मुख पर पक्षाघात हो गया। गुरुजी ने एक अभिमंत्रित लोटा भेजा और उसका जल उसको देने को कहा। उसको जल देते ही उसमें सुधार होने लगा। चिकित्सकों का विस्मित करने के लिए उसका लकवा दो दिन में ही ठीक हो गया। मेरे बेटे को चिकित्सालय से घर भेज दिया गया और कुछ ही दिन में वह पूर्ण स्वस्थ हो गया। बाद में किये गये परिक्षणों में उसके सिर पर कोई दरार या मस्तिष्क की चोट दिखायी नहीं दी। मेरा बेटा उस समय से बिल्कुल स्वस्थ है। गुरुजी की उपचार शक्ति अद्वितीय है।

उन्होंने मेरे पुत्र को शिव रूप में दर्शन देकर भी उसे आशीर्वाद दिया है।

गुरुजी ने इस प्रकार के अनेक चमत्कार किये हैं और जरूरतमंदों के लिए करते रहते हैं। वह सबसे एक समान प्रेम करते हैं। उनकी करुणा अपार है। जिसको उनमें आस्था है वह अपना जीवन पवित्र कर सकता है। यदि हमें उनमें निष्ठा है तो वह हमें चिंतामुक्त कर देते हैं। गुरुजी को कोई लौकिक आवश्यकता नहीं है। नैवेध को वह अस्वीकार कर देते हैं। उन्हें कोई चाहत भी नहीं है। वह इस पृथ्वी पर हमारे दु:ख दूर करने आये हैं। आइये, गुरुजी में विश्वास कर उनके आशीर्वाद ग्रहण करें।

– न्यायाधीश अमरबीर सिंह गिल, चंडीगढ़

हृदय समीप – माँ सदृश प्रेम

मेरे परिवार में गुरुजी के प्रथम दर्शन से अब तक बहुत कुछ हो चुका है। उससे पहले मेरे जीवन में अभूतपूर्व अशांति थी। मेरे पिता अचेतनावस्था में डेढ़ मास से चिकित्सालय में थे। स्वयं चिकित्सक होने के कारण मुझे, जो समस्याएं उत्पन्न हो सकती थीं, उनका आभास था। अत: मैं कभी उनके पास से उठने का साहस नहीं जुटा पाती थी।

एक दिन मैं इतनी निराश और निरुत्साहित हो गयी कि जीवन से और जूझने की शक्ति मानो गंवा बैठी: सब कुछ उलट पुलट लग रहा था, आर्थिक स्थिति डांवाडोल थी, और पिता को प्रति मिनट जीवित रखने की चेष्टा अति कठिन लग रही थी। मेरी बहन और भाई भी सब प्रयास कर रहे थे। कोई भी प्रयत्न सफल नहीं हो पा रहा था। मैं पूरी तरह से निराश हो गयी थी। आँसू रोके हुए मैं सोच रही थी कि प्रभु क्यों नहीं आकर मेरे परिवार और हम सबकी सहायता करते हैं? मैंने उनमें सदा हृदय से विश्वास और प्रेम किया था। फिर क्यों वह हमारी पुकार नहीं सुनते हैं?

मेरे लिए किसी ऐसे व्यक्ति से मिलना नितांत आवश्यक था जो मेरे बिना कुछ कहे मेरे समस्त दु:ख समझ सके; जो हमें अपने आश्रय में ले सके; जो मुझे इतनी शक्ति दे सके कि मैं वास्तविकता का सामना कर सकूँ और जब भी मैं कठिनाई में होऊं तो मुझे वहाँ से निकाल सके।

एक रात मैं सो नहीं पा रही थी। प्रातः तीन बजे के आसपास मेरे भाई शिव ने अचानक कमरे में प्रवेश किया और हमें कुछ प्रसाद दिया। शिव ने कहा कि वह गुरुजी के यहाँ गया था और वहाँ पर कुछ सुने हुए चमत्कारों का वर्णन किया। उसके बाद मुझे गहरी नींद आ गयी।

अगले दिन मेरे पति और मैंने गुरुजी के दर्शन करने का निश्चय किया। तब भी मुझे यह पता नहीं था कि जब तक वह स्वयं नियत नहीं करें उनके दर्शन नहीं हो पाते हैं। मेरी कल्पना में हम किसी वृक्ष के नीचे बैठे हुए लम्बी दाढ़ी वाले बाबा से मिलेंगे पर उनसे मिलकर मुझे अति आश्चर्य हुआ। एक ऐसी तीव्र दिव्य ज्योति वाले महानुभाव थे जो छोटे बालक की भांति मुस्कुराते थे और जिनकी आंखें आपको भेद देने की क्षमता रखती थीं; वह आपको अंदर तक छू जाते थे।

उनसे मिलकर मैं भाव विभोर हो गयी। उनकी सुगन्ध इतनी तीक्ष्ण थी, मानो उनके सब ओर गुलाब का अर्क बिखरा हुआ हो। उन्होंने हमें अपने समीप बिठाया और सुरक्षित होने का आभास दिया। किसी अज्ञात कारण से उसी समय मेरा पूरा मानसिक तनाव समाप्त हो गया। उन्होंने यह सांत्वना दी कि सब ठीक हो जाएगा।

अगले दिन ही मैं अपने जुड़वाँ पुत्रों को, जो उस समय चार वर्ष के थे, गुरुजी के पास ले गयी। मार्ग में मैंने उन्हें समझाया कि वहाँ पर गुरुजी को प्रणाम करना है किन्तु मेरे ज्येष्ठ पुत्र, दक्ष, ने भोलेपन से उत्तर दिया कि वह केवल शिवजी के चरण स्पर्श करेगा। जब मैंने आगे बढ़कर गुरुजी के चरण स्पर्श किये, ध्रुव ने मेरा साथ दिया पर दक्ष अपने स्थान पर खड़ा रहा। मुझे अत्यंत बुरा प्रतीत हुआ कि दक्ष चरण स्पर्श नहीं कर रहा। अचानक मैं क्या देखती हूँ कि दक्ष ने गुरुजी के पास जाकर उनके कमल चरणों को स्पर्श किया। बाद में मैंने उसे चिढ़ाते हुए पूछा कि उसने चरण स्पर्श क्यों किया? उसने अपने भोलेपन से उत्तर दिया कि उसने तो शिवजी के चरणों को स्पर्श किया था। इस प्रकार, सब को परोक्ष में रखते हुए, गुरुजी ने दक्ष को अपने वास्तविक दर्शन करा दिये थे!

उसके पश्चात् क्रमशः परिस्थितियाँ सुधरने लगीं। गुरुजी के आशीष से मेरे पिता के उपचार के लिए सहायता हर दिशा से आयी। मेरे पति को भी अपना मनपसंद कार्य मिल गया।

''तुम्हारे बच्चे को कुछ नहीं होगा''

वर्ष 2000 में दक्ष को अपच के साथ ज्वर और वजन घटने की शिकायत हो गयी। उसके शरीर की गांठें सूज गयीं थीं। चिकित्सकों ने उसे प्रतिजैविक दवाओं से स्वस्थ करने का विफल प्रयास किया। एक सोमवार को हम उसे सर गंगाराम चिकित्सालय के वरिष्ट विशेषज्ञ से परीक्षण करवाने ले गये। मैं भयभीत थी; दक्ष के सब लक्षण कर्कट रोग के थे। चिकित्सक के कक्ष की ओर जाते हुए मैं गुरुजी के चित्र को अपने से जकड़े हुए थी। चलते हुए मैं गुरुजी से प्रार्थना और आग्रह कर रही थी। मुझे ज्ञात था कि वह चाहें तो दक्ष को एक क्षण में ठीक कर सकते हैं। कक्ष में घुसते ही उनकी सुगन्ध आ गयी। मुझे याद था कि यदि उन्हें सत्य मन से स्मरण किया जाये तो वह तुरन्त सहायता करते हैं। वह गुलाब के पुष्पों की महक उनके वहाँ होने का संदेश था।

चिकित्सक ने दक्ष का परीक्षण कर निराशाजनक रूप से मुझे देखा। उनके अनुसार प्लीहा और यकृत दोनों बहुत बड़े हुए हुए थे, जो असाध्यता की ओर संकेत दे रहे थे।

चिकित्सक ने मुझ से भी वह अंग स्पर्श करवाये, जिससे मुझे उनकी क्षति का ज्ञान हो सके। उन्होंने तत्काल पराध्वनिक चित्रण की सलाह दी जिससे रोग के विस्तार का अनुमान लग सके। मेरी आंखों में आंसू भर गये। मैं उत्सुकता से गुरुजी से इस कठिनाई से निकालने के लिए प्रार्थना कर रही थी। मैंने उनके इतने चमत्कारों के बारे में सुना था और विश्वास था कि वह मेरे बेटे को पुनः स्वस्थ कर सकते हैं। प्रयोगशाला तक चालीस मिनट की यात्रा में हमारे साथ रही गुरुजी की सुगन्ध, यह संकेत करती रही कि सब ठीक हो जाएगा।

वहाँ पर जब परीक्षण चल रहा था, मेरे बेटे और मुझे, हम दोनों

को गुरुजी की सुगन्ध आती रही। अंततः गुरुजी की कृपा से परीक्षण में कुछ नहीं निकला। यकृत और प्लीहा दोनों सामान्य थे – लक्षण बदल चुके थे। गुरुजी ने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर मेरे पुत्र को नवजीवन प्रदान किया था।

शाम को जब हम गुरुजी के पास पहुंचे तो प्रवेश करते हुए मैं उनको उस दिन के घटनाक्रम के बारे में बताने का विचार कर रही थी। उसी समय गुरुजी ने नटखट मुस्कुराहट से स्वयं ही पूछ लिया कि क्या रोग निकला। मैं भावविह्वल हो गयी। उनको पहले ही उस दिन की सब घटनाओं का ज्ञान था और फिर भी उन्होंने हमारी उत्सुकता को शांत करने का अवसर दिया था।

मैंने उनको बताया कि चिकित्सक को कर्कट रोग होने का अंदेशा था। मेरी आंखों से पानी निकलने वाला था जब उन्होंने कहा कि मैं चिंता न करूं, मेरे पुत्र को कुछ नहीं होगा। मैंने उनसे प्रश्न किया कि क्या शेष परीक्षण कराने आवश्यक हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि चूंकि मैं स्वयं चिकित्सक हूँ, मेरी चिंता परीक्षण करवाए बिना शांत नहीं होगी; यदि चाहूँ तो शेष परीक्षण करवा सकती हूँ। मेरे तार्किक मन के किसी कोने में छिपी हुई जिज्ञासा को शांत करने के लिए मैंने सब परीक्षण करवाए – सब सामान्य आये।

अंत में गाँठ की बाओप्सी हुई जो अब जुड़नी आरम्भ हो गयी थी। जो गाँठ निकाली गयी थी उसमें बदलाव दृष्टिगोचर था। मैं दुविधा में थी। यह कैसे संभव था? गुरुजी ने तो कहा था कि सब कुछ ठीक हो जाएगा फिर ऐसा क्यों हो रहा है? सब प्रकार के विचार मेरे मन में आ रहे थे। मैं हताश थी।

उसी दिन मुझे संगत में सप्ताह में एक बार ही आने को कहा गया। मैं असमंजस में थी कि गुरुजी ने ऐसा क्यों किया? अगले सप्ताह जब बाओप्सी का परिणाम आया तो सब कुछ सामान्य था। चिकित्सक यह विश्वास नहीं कर पा रहे थे, उन्होंने इसे चमत्कार ही कहा। परन्तु

हमें पता था कि यह कैसे हुआ है। गुरुजी ने मेरे पुत्र को आशीष दिया था; यह तो होना ही था।

कुछ सप्ताह पश्चात् गुरुजी ने मात्र इतना ही कहा, "*जा, तेरे मुंडे नु ठीक कर दित्ता*"। उस दिन से दक्ष का ज्वर समाप्त हो गया, उसकी भूख ठीक हो गयी, गाँठ कम हो गयी और सब लक्षण भी मिट गये। गुरुजी धन्य हैं कि सब ठीक हो गया। उसे कभी कोई औषधि नहीं दी गयी क्योंकि कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सका था। गुरुजी के साथ हर क्षण चमत्कार है जो जीवन को और मधुर बनाता है। वह आपका हाथ पकड़ कर सही मार्ग दर्शन कराते हैं। वह आपकी हर आपदा से रक्षा कर, अपने हृदय से लगाकर रखते हैं जैसे एक माँ अपने शिशु को बचाती है। जब आप अपने मार्ग से भटक जाते हैं वह हल्के से अंकुश लगा कर वापस सही मार्ग पर लाते हैं। वह आपकी हर बात, हर सांस सुनते हैं और ईश्वर में विश्वास करने की प्रेरणा जागृत करते हैं - गुरुजी ऐसे हैं। निरहंकार भाव से वह सदा आप पर और आपके संपर्क में आने वालों पर सदा अपनी दृष्टि बनाए रखते हैं, सबको अपना आशीष देते जाते हैं। उनमें कोई घमंड, अहम् या चाहत नहीं है। वह सदा सहायता करने को तत्पर है। वह अज्ञेय हैं। उनके दर्शन के लिए आये सहस्रों भक्तों में कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता है। प्रत्येक को यही लगता है कि वह केवल उनके साथ हैं। वह सबको इस संसार में रहने का सही मार्ग बताते हैं। जब हम कोई भूल करते हैं वह चुपचाप हमारे दुष्कर्म अपने पर ले लेते हैं और हमारे कष्ट सहन कर जाते हैं। उनके सदृश कोई नहीं है, न हुआ है और न ही होगा।

कुछ वर्ष पूर्व मेरी माँ को हिमोग्लोबिन कम होने के कारण चिकित्सालय में प्रविष्ट करना पड़ा था। चिकित्सकों के अनुसार उन्हें रक्त देने की आवश्यकता थी। जैसे ही हमने गुरुजी को यह बात बतायी, उन्होंने मुस्कुरा कर उनको अनुमंत्रित कर दिया। अगले दिन माँ सब परीक्षण ठीक होने के कारण घर वापस आ गयीं।

श्वेत वस्त्रों में कल्याणकारी

मेरी मौसी, जो कभी गुरुजी से नहीं मिली, एक दिन अचेतनावस्था में चली गयी और उन्हें चिकित्सालय में प्रविष्ट कराना पड़ा। चूंकि उनका रक्तचाप अति उच्च था, चिकित्सक को संदेह था कि उनके मस्तिष्क में रक्तस्त्राव हुआ है। गुरुजी उस समय दिल्ली में नहीं थे। मैंने उनके चित्र के समक्ष खड़े होकर उनसे उपचार के लिए विनती करी। उस समय उनका केट स्केन हो रहा था। प्रार्थना करते ही उस कक्ष में गुरुजी की सुगन्ध भर गयी और उसका परिणाम सामान्य आया। मैं रात को अपनी मौसी को सोता हुआ छोड़कर घर वापस आ गयी। प्रातःकाल उनके पास पहुंचने पर सुखद विस्मय हुआ - वह सचेतन अवस्था में अपने बिस्तर पर बैठी हुई थीं।

उन्होंने बताया कि रात को श्वेत वस्त्रों में कोई आया था और उसने उन्हें उठने को कहा। मुझे एकदम पता लग गया कि गुरुजी आये होंगे। आज भी वह बिल्कुल स्वस्थ हैं और हमें कभी यह पता नहीं लग पाया कि वह उस अवस्था में क्यों पहुंची - सब परिणाम सामान्य निकले थे।

गुरुजी तीन मास के पश्चात् जालंधर से लौटे तो जैसे ही उनके चरण स्पर्श करने के लिए झुकी तो उन्होंने कहा, "*मौसी नु भी ठीक करा लित्ता*"। मैं चकित थी। वह यहाँ पर नहीं थे और किसी को मौसी की बीमारी के बारे में पता नहीं था। पर वह तो सर्वज्ञाता हैं, यह मुझे पता होना चाहिए था। आश्चर्य की बात है कि गुरुजी आपके बारे में, संसार के किसी भी कोने में, आप कहीं भी हों, सब जानते हैं। समय और स्थान उनके लिए कोई अर्थ नहीं रखते हैं। काल और अंतर उनके लिए अर्थहीन है।

कुछ वर्ष पूर्व ज्वर, पीठ दर्द और सांस की कठिनाई के कारण मुझे चिकित्सालय में प्रविष्ट होना पड़ा। कई प्रकार की औषधियों से लाभ न होने पर शुक्रवार के दिन विशेषज्ञ ने केट स्केन करने का

निश्चय किया। विकिरण विशेषज्ञ ने स्केन देख कर कहा कि वह असामान्य था और भीतर जो भी पदार्थ है उसका विस्तार फेफड़ों तक हो गया है; उसका और विश्लेषण करने की आवश्यकता है। उस दिन मैं वहां पर अकेली थी और गुरुजी को याद करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकती थी। मैंने पूरे दिन उनसे प्रार्थना करी।

उस दिन संध्या को मैं गुरुजी के पास गयी। अचानक उन्होंने मेरी ओर देख कर मेरे बारे में पूछा। मैंने उनको अपनी अवस्था के बारे में बताया कि मैं चिकित्सालय में हूँ; मुझे सांस लेने में कठिनाई है और सोमवार की रात को रोग की अत्याधिक पीड़ा के कारण चिकित्सकों को बुलाना पड़ा। मैंने उनको स्केन के निष्कर्ष से भी अवगत कराया और मुझे ठीक करने की विनती करी। मुस्कुरा कर वह बोले कि उन्होंने मुझे पुनः स्वस्थ कर दिया है। मैं अपने आंसू नहीं रोक पायी; उन्होंने मुझे ठीक करने में एक पल भी नहीं लगाया और मेरे सब रोग समाप्त कर दिये। यद्यपि पिछले चार-पांच दिन से मुझे नींद नहीं आ रही थी उस रात मैं बिना किसी औषधि के आराम से सो पायी। रात को जब चिकित्सकों ने मुझे बिना किसी उपकरण के सोते हुए देखा तो वह आश्चर्यचकित हो कर वापस चले गये।। उन्हें कैसे पता होगा कि सबसे परम शक्ति अपना कार्य कर रही थी। अगले दिन प्रातः मैं वहाँ से अवकाश प्राप्त कर घर आ गयी और तीन वर्ष पहले के उस दिन के बाद कभी किसी रोग से पीड़ित नहीं हुई।

कुछ समय पूर्व मेरे पति, जो स्वयं चिकित्सक हैं, कोई एक सप्ताह तक प्रातःकालीन वेदना से पीड़ित रहे। उनके हृदय विश्लेषण में बदलाव थे। हमने उन्हें चिकित्सालय में भरती कराना चाहा पर वह यह कह कर घर वापस आ गये कि गुरुजी के परामर्श के बिना वह कोई कदम नहीं उठाएंगे।

अगले दिन मैं उन्हें एक और हृदयरोग विशेषज्ञ के पास ले गयी जिन्होंने तुरन्त कुछ और परीक्षण कराने का परामर्श दिया क्योंकि प्रथम विश्लेषण में बदलाव स्पष्ट और काफी अधिक थे। भयभीत होकर हम

उसी समय गुरुजी के पास भागे, यह जानते हुए भी कि उस समय गुरुजी से मिलना संभव नहीं होगा। वहां पहुंचने पर हमें अत्यंत आश्चर्य हुआ जब तुरन्त उनके दर्शन हो गये और वह बोले कि अब अरुण को ठीक कराने आये हो।

भावविभोर होकर मैंने उनको पूरी बात बतायी तो उन्होंने अपना हाथ हिला कर आश्वासन देते हुए कहा कि कुछ भी नहीं है और अरुण ठीक हो जाएगा। उन्होंने अरुण को फिर से चिकित्सक के पास न जाकर अपने कार्यालय जाने का परामर्श दिया। गुरुजी ने रोज कनक का सत् खाने और व्हिस्की के दो पेग भी पीने को कहा।

कुछ सप्ताहोपरांत गुरुजी ने अरुण को कहा कि उन्होंने उसका हृदय ठीक कर दिया हैं अन्यथा उसकी शल्य चिकित्सा करवानी पड़ती। गुरुजी की कृपा से अरुण अब बिलकुल स्वस्थ हैं। संगत का यह सुखी परिवार देने के लिए हम गुरुजी के अति कृतज्ञ हैं। प्रार्थना है कि वह सदा अपनी दृष्टि हमारे ऊपर बनाये रखें।

गुरुजी की दया मेरी बहन पर भी रही है। एक बार उसकी बिमारी के समय रोग विश्लेषण में गाँठ की कुछ जटिल समस्या का निष्कर्ष निकला। हमारी व्यथा सुन कर गुरुजी ने उसको आशीष देते हुए कहा कि उसे कुछ नहीं हुआ है और सब ठीक हो जाएगा। अगले दिन प्रातः प्रयोगशाला से संदेश आया कि नमूने में कुछ गलती हो गयी; मेरी बहन तो बिल्कुल ठीक है।

ऐसा भी नहीं है कि मात्र मेरे परिवार को गुरुजी का प्रेम मिला है। मेरे पड़ोस में रहने वाले श्री सेठी को गंभीर रूप से अग्नाशयकोप हो गया था और उनके ठीक होने के आसार बहुत कम थे। गुरुजी ने उनको भी आशीर्वाद दिया और कुछ ही दिनों में वह गंभीर रोग से मुक्ति पाकर वापस घर आ गये और अब अपने कार्य पर भी जा रहे हैं।

एक बार मानसिंह नाम का एक व्यक्ति अपने भाई का चित्र लेकर गुरुजी के पास आया और, यद्यपि किसी ने गुरुजी को उसके बारे में बताया नहीं था, गुरुजी उसे पहचान गये। उसका भाई गंभीर रूप से

मस्तिष्क ज्वर से पीड़ित था। वह श्वास यंत्रों पर था और उसका डायलिसिस भी होता रहा था। गुरुजी ने उसको भी अपना आशीर्वाद दिया और उसके भाई को देखने चिकित्सालय भी गये। चिकित्सकों ने उसके पुनः स्वस्थ होने की आशा छोड़ दी थी पर अगले दो सप्ताह में वह वहां से अवकाश प्राप्त कर घर वापस आ गया। उसके परिवार के सदस्य उसे पुनर्जीवित करने के लिए अब भी गुरुजी को अविराम धन्यवाद देते रहते हैं।

तुम्हारे साथ सदा से

मेरे जुड़वाँ बच्चे सदा इस बात पर झगड़ते रहते थे कि कौन बड़ा है। एक दिन गुरुजी ने बड़े की ओर ऊँगली दिखायी और बोले कि वह छः मिनट के अंतर से बड़ा है। मैं यह सुन कर आश्चर्यचकित थी क्योंकि जन्म के समय कुछ जटिलता के कारण चिकित्सक छोटे वाले का समय नहीं देख पाये थे। मैं सोच रही थी कि उनको इसका ज्ञान कैसे था। तभी उन्होंने मेरी ओर मुड़ कर कहा कि उन्होंने ही इनके लिए मुझे आशीर्वाद दिया था और इसी कारण उन्हें यह पता है।

यह बात तब की है जब मैं उनसे मिली भी नहीं थी, मैं उन्हें ''गुरुजी'' से जानती भी नहीं थी, उनका अपने जीवन में कभी आभास भी नहीं हुआ था। प्रत्यक्ष रूप से वह मुझे कालांतर से जानते थे और अपनी दृष्टि हम पर बनाये हुए थे। अचम्भे की बात नहीं है कि गुरु के पास हर दिन चमत्कार होता है। सदा से अपना प्रेम न्यौछावर करते रहने के लिए हम गुरुजी के अति आभारी हैं।

– डॉ. अनीता, दिल्ली

अन्धकार नाशक

हममें से अधिकांश मोक्ष मार्ग पर चलने की आकांक्षा रखते हैं। हम अपनी कल्पना से या इधर–उधर से सुन पढ़ कर आध्यात्मिकता के बारे में गलत विचारों का ताना बाना बुन लेते हैं। हमारे विचारों में आध्यात्मिकता का अर्थ हिमालय की किसी गुफा में रहना या फिर देश की लंबाई और चौड़ाई नापना है। हम इससे अनभिज्ञ रहते हैं कि कोई भी अध्यात्म का मार्ग तो केवल गुरु के कमल चरणों में शीश झुका कर ही पूर्ण हो सकता है। वही हमें इस संसार के मोह माया के जाल से निकाल कर अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर कर सकते हैं।

गुरु का अर्थ ही अन्धकार को नष्ट करने वाला है। हम तो अज्ञान के अन्धकार में भटक रहे हैं; केवल गुरु में इतनी शक्ति है कि वह हमें वहाँ से निकालें। गुरु परमात्मा है। उनकी उपस्थिति उन्नति के पथ पर अग्रसर कराने के लिए पर्याप्त है। उनके सहयोग से ही तो हम अपने आत्म को प्रकाशमान कर सकते हैं। जीवन में उनके सहयोग से ही आध्यात्मिक ज्ञान संभव है।

हमारे धर्मग्रन्थ गुरु चेले के उदाहरणों से भरपूर हैं। हमारे वह समस्त महापुरुष जिन्हें हमने भगवान सदृश माना है, उन सबने मर्त्य रूप

में इस पृथ्वी पर अवतरित होकर गुरु से शिक्षा ग्रहण करी थी। कृष्ण संदीपन के चरणों में बैठे तो राम ने वशिष्ठ से उपदेश ग्रहण किया। यीशु ने जॉन से जोर्डन नदी के तट पर दीक्षा ली और, देवताओं के गुरु वृहस्पति को कौन नहीं जानता?

हमारा सौभाग्य है कि हमारी गुरु की खोज में हमें गुरुजी का आशीर्वाद मिला है। वह दिव्यता के मानवीय प्रतिबिंब हैं। वह सर्वत्र, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान हैं।

उदारता की बौछार

1991 में मेरे घुटनों में अभूतपूर्व पीड़ा होती थी। वेदना इतनी अधिक होती थी कि दर्दनाशक औषधियाँ लेने के बाद भी मैं रात भर सो नहीं पाती थी। मैंने एलोपेथी, होम्योपैथी और घरेलू उपचार, सब कर लिए किन्तु व्यथा बनी रही। जब मैंने गुरुजी को इससे अवगत कराया तो उन्होंने रसोई से एक चम्मच मंगा कर मेरे घुटनों पर रख कर एक मन्त्र का उच्चारण किया। उसी समय दर्द समाप्त हो गया और उसके बाद वह कभी लौट कर नहीं आया। मैं अब भी अपने घर की चौथी मंजिल तक सीढ़ियाँ चढ़ती हूँ और प्रतिदिन दो घंटे घूमने भी जाती हूँ।

कोलकाता में मुझे मियादी ज्वर के पश्चात् हल्का ज्वर रहने लगा। उस डेढ़ माह में मैंने सब परीक्षण करवा लिए और कई तरह की औषधियाँ भी लीं पर कोई लाभ नहीं हुआ। मेरा विवरण सुन कर गुरुजी ने जैसे ही पान के पत्ते मेरे ऊपर रखे, ज्वर लोप हो गया।

अपने दिल्ली स्थानान्तरण के समाचार सुनकर मैं लावण्य प्रतिष्ठान खोलना चाह रही थी क्योंकि मैंने इसका और बाल संवारने का प्रशिक्षण प्राप्त किया था और पहले एक ऐसे स्थान पर कार्यरत रह चुकी थी। पर गुरुजी ने इसकी अनुमति नहीं दी। उन्होंने कहा कि इससे मुझे दमा हो जाएगा।

कालांतर में मुझे वास्तव में दमा हो गया। एक दिन मेरी अवस्था इतनी गंभीर हो गयी कि मैं अपने जीवन के लिए जूझ रही थी। मुझे सांस लेने में अत्यंत कठिनाई हो रही थी और मुझे प्रतीत हो रहा था कि

यह मेरे जीवन का अन्त है। मुझे अति शीघ्र चिकित्सालय ले जाया गया। पूरे मार्ग मैं गुरुजी का चित्र अपने हृदय से लगाकर उनसे अपने जीवन रक्षा के लिए प्रार्थना करती रही। तत्काल मुझे प्राणवायु और कुछ इंजेक्शन दिये गये। बाद में चिकित्सक ने बताया कि दो मिनट की देरी भी मेरे लिए घातक सिद्ध हो सकती थी।

बाद में जब मैं गुरुजी के पास गयी तो मेरे बोलने से पहले ही उन्होंने कहा कि उन्होंने मुझे दलदल से निकाला है। यह सत्य वचन थे। बाद में जब मैंने उन्हें श्वासयंत्र और प्रबल औषधियों से मुक्त कराने की बात बार-बार करी तो उन्होंने डांट कर कहा कि उन्हें स्मरण न कराया जाये, उन्हें मेरी समस्या के बारे में ज्ञान है।

एक मास व्यतीत होने पर मुझे अचानक आभास हुआ कि मुझे दमा नहीं था। इसका अर्थ यह था कि मुझे श्वासयंत्र की आवश्यकता नहीं थी। यात्रा पर जाते हुए सुरक्षा के लिए मैं अब भी श्वासयंत्र खरीद कर ले जाती हूँ और घर वापस आने पर उसी नवीन अवस्था में उसे दूकान पर वापस कर देती हूँ। दमा अब पूर्णतः समाप्त हो चुका है।

एक बार संगत में गुरुजी ने एक भक्त के सिर पर अपने हाथ रख दिए तो वहां से गुलाब के पुष्प झड़ने लगे। गुरुजी ने वही एक महिला के सिर पर किया तो वहाँ पर भी यही हुआ। उस महिला ने अपने दुपट्टे में वह गुलाब एकत्रित कर लिये। वह अति सुन्दर चमत्कार था।

मेरे जन्म दिवस पर गुरुजी ने पूरी संगत के सामने मुझे अपने दोनों हाथ आगे करने को कहा। अचानक मेरे हाथों में ऊपर से एक साड़ी आकर गिर गयी। गुरुजी ने कहा कि उसे मैं स्वच्छ स्थान पर रखूँ और कभी नहीं पहनूं। उस साड़ी में से आज दस वर्ष पश्चात् भी गुरुजी की वह विशिष्ट सुगन्ध आती है।

गुरुजी ने कुछ वर्ष पूर्व कहा था कि मेरी बेटी का विवाह एक अति शालीन व्यक्ति से होगा। मेरे बिना किसी प्रयत्न के मेरी बेटी का विवाह ऐसे ही घर में हुआ और गुरुजी की कृपा से वह आज दो बच्चों की माँ है।

गुरुजी प्रसाद वितरण कर सबको आशीष देते हैं। मैंने कई बार उनको, स्वयं अपने खाली हाथों में से, किसी बर्तन में से नहीं, शुद्ध घी का प्रसाद प्रकट कर वितरित करते हुए देखा है। एक बार इसी प्रकार एक भक्त को उन्होंने कड़ा प्रसाद दिया था। कई बार उन्होंने इसी भांति खाली हाथों में से अपनी सुगन्ध से भरे लड्डू निकाल कर वितरित किये हैं।

सबको मेरा परामर्श यही है: अनेक कम गहरे कुँए मत खोदिये। इनका जल या तो खारा होगा या यह जल्दी सूख जाएंगे। एक गहरा कुआँ खोदिये जिसका जल आप जीवन भर ग्रहण कर सकें। अध्यात्म ज्ञान एक गुरु से प्राप्त करने का प्रयास कीजिए; उस ज्ञान के गूढ़ अर्थों को समझिये। कुछ वर्षों तक उनके चरणों मे बैठिये। यहाँ वहाँ घूम कर, उत्सुकतावश कई लोगों के मध्य बैठ कर आप, थोड़े ही समय में, अपनी आस्था खो सकते हैं। केवल एक गुरु के वचनों का पालन कीजिये। अनेकों के पास जाने से आप हैरान हो जायेंगे। आप किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो सकते हैं। स्मरणीय है, कि एक चिकित्सक से आपको निर्धारित औषधि मिलती है, दो से परामर्श और तीन से दाह संस्कार की विधि।

एक गुरु आपको हनुमान जप करने को कहेंगे; दूसरे कहेंगे कि राम नाम जपो। यदि तीसरे के पास गये तो वह प्रतिदिन पूजा करने का परामर्श देंगे। आप इन्हीं बातों में उलझ कर रह जाऐंगे। एक गुरु के चरणों में बैठ कर उनके निर्देशों का पालन कीजिए। सबको सुनिये पर अनुसरण एक का ही कीजिए। सबको आदर दीजिए पर आस्था एक में ही उचित है। उससे ज्ञान संग्रहीत कीजिये और उनके कहे आचरण का ही पालन कीजिए। इस प्रकार आप शीघ्र ही आध्यात्मिकता के कठिन मार्ग पर अग्रसर हो सकेंगे।

– श्रीमती अनीता वर्मा, नोएडा

अपने सबसे प्रिय एवं आदरणीय गुरुजी के लिए

मैं उस दिन का धन्यवाद करती हूँ जिस दिन गुरुजी मेरे जीवन में पधारे। अब मेरा जीवन परिवर्तित हो चुका है और ऐसा प्रतीत होता है कि शनैः शनैः सब कठिनाईयाँ भी समाप्त हो चुकी हैं। इसका कारण मात्र गुरुजी हैं जो स्वयं सर्वशक्तिमान ईश्वर हैं।

एक मित्र से उनके बारे में सुनकर, नवम्बर 2005 में, मैं गुरुजी के पास आयी थी। इस समय मुझ पर अनेक समस्याओं को बोझ था – वित्तीय, पारिवारिक और कई छोटी–छोटी निरर्थक सी लगने वाली चिंताएं जिनके कारण मानसिक तनाव और खिँचाव सदा बने रहते हैं। कुछ भी ठीक नहीं था। मानसिक संतोष का सरासर अभाव था।

मैंनें गुरुजी के पास जाना प्रारम्भ कर दिया। जिस दिन उन्होंने पहली बार मुझ से बात करी मेरा जीवन सार्थक हो गया। गुरुजी के प्रथम दर्शन के दो माह उपरान्त, मेरे पिता को एक दिन अचानक

चिकित्सालय में प्रविष्ट कराना पड़ा। उन्हें श्वस्नक ज्वर था और उनका रोग इतना गंभीर था कि उन्हें जीवनरक्षक उपकरणें पर रखने की आवश्यकता थी। चिकित्सकों के अनुसार उनके जीवित रहने की आशा मात्र दस प्रतिशत ही थी। उस दिन गुरुजी के मंदिर में जाकर मैंने मन ही मन प्रार्थना की थी। प्रार्थना करते हुए मुझे ऐसा लगा कि गुरुजी मेरे साथ चिकित्सालय गये, मेरे पिता के सब उपकरण निकाल दिये और उन्हें स्वस्थ होने का आशीर्वाद दिया।

शीघ्र ही गुरुजी के प्रश्न करने पर मैंने उन्हें अपने पिता की पीड़ा से अवगत किया। अगले दिन ही चिकित्सालय जाने पर, अपने पिता को बिल्कुल ठीक अवस्था में देखकर मैं चकित रह गयी। उनके सब जीवन रक्षक उपकरण निकाले जा चुके थे। गुरुजी ने मेरे पिता को स्वस्थ कर उन्हें नया जीवन दान दिया था।

इस घटना के बाद मुझे गुरुजी के चमत्कारों का और अधिक आभास होने लगा। मुझे शीघ्र ही ज्ञात हो गया कि वह सर्वविद्यमान हैं और मन के भीतर, गहरी से गहरी, छिपी हुई कामनाओं का ध्यान रखते हैं। मेरे पति का उदाहरण है। उनके वित्तीय सौदे अटके हुए थे और हमें अनेक आर्थिक समस्याएँ हो रही थीं। कुछ समय में ही सब सौदे स्वतः ही हल हो गये और आर्थिक चिंताएँ भी समाप्त हो गईं।

मेरी बेटी का स्वास्थ्य चिंता का विषय बना हुआ था। उसे मूत्राशय रोग की पुनरावृत्ति होती रहती थी। गुरुजी ने उसे ताम्र लोटे से आशीष दिया और उसका जल ग्रहण कर उसने रोगमुक्ति प्राप्त करी।

मेरे घुटनों में इतनी अधिक पीड़ा रहती थी कि सीढ़ियाँ नहीं चढ़ी जाती थी। उनके दैवीय प्रभाव से वह भी समाप्त हो गया।

मेरी एक घनिष्ट सम्बन्धी ने भी उनकी कृपा का अनुभव किया है। वह ब्रिटेन में अपने पति के साथ रहती थी। किन्तु ससुराल के कुछ सदस्यों के कारण उसकी अपने पति के साथ अनबन थी। अंत में वह अपना घर छोड़कर वापस भारत आ गयी। उसने अपने पति से सम्बन्ध

विच्छेद करने का मन बना लिया था। किन्तु गुरुजी की दया से यह अनहोनी घटना होते होते बच गयी और उनका दाम्पत्य माधुर्य पुनर्स्थापित हो गया। वास्तव में, उसके पहले दर्शन के समय ही, गुरुजी ने उसको उसके नाम से संबोधित किया – यह इस बात का सूचक है कि गुरुजी का अलौकिक प्रेम किस हद तक है। किस प्रकार से गुरुजी हमारे गूढ़तम प्रश्नों का उत्तर देते हैं और हमारे मन की समस्त भावनाओं का ज्ञान रखते हैं।

हमारे जीवन में गुरुजी के प्रवेश के बाद सब कुछ सामान्य हो गया है। हमारे कुछ अच्छे कर्मों के कारण ही गुरुजी हमारे जीवन में प्रविष्ट हुए हैं। अपने चारों तरफ हम सदा उनके रक्षा कवचों का अनुभव कर सकते हैं। वह आकस्मिक विपदाओं और आपदाओं से सदा हमारी रक्षा करते हैं। उनके कारण ही अनेक समस्याएँ स्वतः ही हल हो जाती हैं। वाह्य स्त्रोतों द्वारा उत्पन्न विघ्न स्वयं समाप्त हो जाते हैं।

और तो और, मेरी छवि, दृष्टिकोण एवं प्रवृत्ति पूर्णतः परिवर्तित हो चुके है। मुझे जीवन में गुरुजी के आने के पश्चात् पूर्ण शांति की प्राप्ति हुई है।

अपने आश्रय में रखने के लिए हम कृपालु गुरुजी का हृदय और आत्मा से धन्यवाद करते हैं। चूंकि यह जीवन उनके बिना असंभव है, हम अति आभारी हैं – हमारा अस्तित्व, यह लघु जीवन उनके बिना अर्थहीन है। उनकी कोई समानता संभव नहीं है।

गुरुजी मानव शरीर रूप में परमात्मा हैं। इस जगत में हमारे कल्याण और सर्वोच्च हित के लिए ही उन्होंने यह रूप धारण किया है।

– श्रीमती अनु मुंजाल

गुरु अनुकम्पा – सम्पूर्ण परिवार पर

इस ग्रह पर सबसे कठिन कार्य गुरुजी के साथ अपने अनुभवों को शब्दों में पिरोना है। उनको देखने या मिलने का कोई पर्याय नहीं है। उसके पश्चात् ही आपको अनुभव होता है कि वह कौन हैं और उनमें कितनी अभूतपूर्व प्रतिभाएं हैं। परन्तु उनके दर्शन सरल नहीं हैं – वह तो उनके नियत करने पर ही संभव हैं। अनेक बार उनके दर्शन करने की बनी बनाई योजनाएँ सफल नहीं हो पाती हैं। इसके विपरीत, यदि वह चाहें तो, वह आपको कहीं से भी बुला लेते हैं। मुझे दोनों ही अनुभव हुए हैं।

गुरुजी का भक्त बनने के कुछ दिन उपरान्त ही मैंने अपनी अनुभूतियों का अपने उन मित्रों से उल्लेख किया जिनके साथ मैं प्रतिदिन 18–20 घंटे बिताया करता था। उन सबको यह सुन कर बहुत अचम्भा हुआ और उन्होंने गुरुजी से मिलने की आकांक्षा व्यक्त करी। उनकी इच्छा के अनुरूप और मेरी उनको गुरुजी के दर्शन कराने की चाहत किसी न किसी कारणवश छः माह तक टलती रही। वह दर्शन करने में असमर्थ रहे। अंततः जब यह संभव हुआ तो अपने जीवन के हर पृष्ट पर गुरुजी की दया पाकर वह अति कृतार्थ हुए।

अंततोगत्वा, गुरुजी ही अपने पास बुलाते हैं। इसे एक दिन गुरुजी

ने परोक्ष में कर दिखाया। मैं बाहर, जहाँ पर वाहन खड़े किए जाते थे, अपने एक मित्र की प्रतीक्षा कर रहा था। एक कार वहीं पर आकर धीमी हुई और, यह सोचकर कि मेरा मित्र इसी कार में है मैंने उसे एक खाली स्थान का मार्ग दिखाया। तब मैंने देखा कि उसमें मेरा मित्र न होकर एक नव दम्पति यात्रा कर रहे थे। उन्होंने शालीनता से प्रश्न किया कि क्या यही नशा रेंस्तरा के लिए कारें खड़ी करने का स्थान है। मैंने क्षमायाचना करते हुए उन्हें बताया कि वह स्थान तो इसी मार्ग पर कुछ और दूरी पर है। यह स्थान संगत की कारें खड़ी करने के लिए है और मैं वास्तव में अपने एक मित्र की प्रतीक्षा कर रहा था। इस संवाद के पश्चात् वह दोनों अपने मार्ग पर आगे चले गये।

थोड़ी देर में ही वह दोनों वापस आये और उन्होंने जानना चाहा कि क्या वह गुरुजी के दर्शन कर सकते हैं। मैं भौंचक्का रह गया। यह नव दम्पति अपनी सुनियोजित संध्या, एक आमोद प्रमोद के स्थान पर न बिता कर, एक गुरु के मंदिर में व्यतीत करना चाहते हैं जिनके बारे में अभी कुछ मिनट पहले ही सुना था। उन्होंने गुरुजी के दर्शन का लाभ उठाया और बहुत संतुष्ट होकर गये। गुरुजी किस प्रकार से अपने भक्तों को अपने पास बुलाते हैं?

गुरुजी के संरक्षण में

जबसे मैंने गुरुजी के पास आना प्रारम्भ किया, हर दर्शन एक विशेष आनंद होता है। उनके यहाँ पर बिताया हुआ समय उस दिन और जीवन का सबसे रोमांचक काल होता है। गुरुजी बहुत कुछ देते हैं; उस लम्बी सूची में उनका संरक्षण भी है। गुरुजी की छाया में प्राप्त सुरक्षा अनुपम है। यह मेरे कई अनुभवों से सिद्ध होता है।

हमें गुरुजी के पास आते हुए कुछ मास ही हुए थे जब मुझे एक दिन अत्याधिक ज्वर हो गया। यद्यपि मैं औषधि कम ही लेता हूँ, उस दिन मुझे एक अति प्रबल औषधि लेनी पड़ी। परन्तु न उससे लाभ हुआ, न ही माथे पर गीला कपड़ा रखने से। मेरी माँ ने तब मुझे अपने

पास रखने के लिए गुरुजी का एक चित्र दिया। उस चित्र को रखते ही मेरा ज्वर कम हो गया और तापमान सामान्य स्तर पर पहुंच गया। गुरुजी के चित्र ने मुझे तुरन्त लाभ पहुँचाया था।

एक बार महाविद्यालय में मुझे अचानक ही तीव्र पेट दर्द आरम्भ हो गया। उसके साथ ही मुझे उल्टी भी हुई और जी मितलाना भी आरम्भ हो गया। जब तक मेरे मित्र मुझे लेकर घर पहुंचे मेरे पिता गुरुजी के यहाँ जा चुके थे। मेरे दो मित्रों ने मेरे पिता के वापस आने तक रुकने का निर्णय लिया और मेरी लगातार बिगड़ती स्थिति देखकर उन्होंने मेरे पिता को फोन किया। चूँकि एक घंटे तक उनकी प्रतीक्षा करना उपयुक्त नहीं लगा वह मुझे पास के एक चिकित्सालय में ले गये। मेरा परीक्षण करने के बाद चिकित्सक ने मुझे दो इंजेक्शन और कुछ औषधियाँ देकर घर जाकर विश्राम करने को कहा। किन्तु उससे मुझे कोई लाभ नहीं हुआ। उधर मेरे पिता ने गुरुजी को मेरी स्थिति से अवगत किया और शीघ्र जाने की आज्ञा ली। गुरुजी ने उन्हें एक ग्लास जल में निम्बू का रस डाल कर मुझे पिलाने को कहा। मैंने वैसा ही किया। मेरे माता-पिता के घर पहुँचने तक मैं ठीक हो चुका था।

कुछ वर्ष के उपरान्त मुझे पुनः ज्वर ने घेर लिया। जब दो दिन तक शाम को तापमान 104° तक चढ़ने लगा, मुझे चिकित्सक को दिखाना आवश्यक हो गया। एक चिकित्सक ने कुछ औषधियाँ दी; उनसे लाभ न होने पर कुछ परीक्षण भी करवाए पर उनका परिणाम अनिर्णीत रहा। एक अन्य चिकित्सक ने औषधियों में परिवर्तन किया पर उससे भी कोई सुधार नहीं हुआ। अंततः एक सप्ताह बाद मेरे पिता ने गुरुजी को बताया तो उन्होंने कुछ अभिमंत्रित हरी मिर्चें दीं। उनका सेवन करते ही कुछ घंटों में ज्वर, जो औषधियों से नहीं उतर रहा था, मिट गया। गुरुजी की दया के अतिरिक्त और किसी से यह संभव नहीं था।

वाहन में रक्षा

गुरुजी को सबके भूत और वर्तमान का ज्ञान है। हमारी दृष्टि तो

परिसीमित है और आगे क्या होने वाला है उसका हमें ज्ञान नहीं है। पर एक बार गुरुजी की शरण में आने के पश्चात् और अपना जीवन उनको समर्पित करने के पश्चात् वह हमारे भविष्य का भी ध्यान रखते हैं।

एक बार गुरुजी ने मेरे पिता को बताया कि मेरी माँ और मेरे ऊपर संकट आने की संभावना है। गुरुजी को कुछ आभास हुआ होगा और वह उससे बचाव के लिए उपाय कर रहे होंगे।

अगले दिन अपराह्न को मैं अपनी कार में बाज़ार जा रहा था जो कोई दो किलोमीटर दूर था। मार्ग में एक ही बड़ा चौराहा था। उसे पार करते हुए, मेरे बायीं ओर से आती हुई एक मोटर साईकल ने जोर से कार को मारा। कार को ऐसा झटका लगा कि वह फिसल कर मार्ग के बीच में बने हुए विभाजक पर जा टकरायी। मेरे ऊपर कांच के छोटे-छोटे टुकड़े टूट कर बिखरे हुए थे। मैंने जब सामने के कांच को देखा तो वह साबुत था; फिर मुझे आभास हुआ कि वह टुकड़े खिड़की के टूटने से बिखरे थे। मैं उतर कर मोटर साईकल के पास गया तो उपस्थित भीड़ मेरे साथ सांत्वना कर रही थी – यद्यपि मैं बड़ी गाड़ी चला रहा था!

मैंने चालक के नंबर लिए। उसके कुछ मित्र आकर उसे ले गये। मैंने भी आगे जाने का निर्णय लिया। मुझे लग रहा था कि कार शुरु नहीं होगी पर पहली ही बार चाबी घुमाने से वह चालू हो गयी। मैंने बाजार जाकर अपना कार्य पूरा किया। जब घर पहुँच कर मैंने स्नान किया तो देखा कि मुझे एक खरोंच तक नहीं आयी थी। गुरुजी की दया से कांच के टुकड़ों से मुझे कहीं कोई चोट नहीं आयी थी।

उस संध्या को जब हम एक संबंधी की कार में गुरुजी के पास पहुंचे तो गुरुजी ने मेरे पिता को कहा कि वह चिंता न करें, केवल कार ही क्षतिग्रस्त हुई है और यह ध्यान देने योग्य है कि बेटे को कोई खरोंच तक नहीं लगी है। कार को देखकर कोई यह विश्वास नहीं कर सकता था कि उसके चालक को कोई चोट नहीं लगी है। कार को बहुत अधिक नुकसान हुआ था – उसका पूरा बांया हिस्सा बदलना पड़ा और

उसको ठीक होने में एक सप्ताह का समय लग गया। केवल गुरुजी ही मुझे यह शत प्रतिशत सुरक्षा दे सकते थे।

शीत ऋतु में एक संध्या को गुरुजी के यहाँ जाते हुए, जब मैं कार चला रहा था, अचानक ब्रेकों ने काम करना बंद कर दिया। यदि यह नोएडा से दिल्ली जाते हुए व्यस्त यातायात में हुआ होता तो निश्चित ही घातक होता। पर यह घटना एक लाल बत्ती पर हुई जब कार बहुत धीमे थी। आधे मार्ग तक आ जाने के बाद हम न तो वापस जाकर कोई और व्यवस्था करने की स्थिति में थे, न ही आगे बढ़ सकते थे। उस समय शाम के 7:30 बज रहे होंगे, अन्धेरा हो गया था और ठंडा मौसम होने के कारण किसी मेकेनिक के मिलने की आशा भी बहुत कम थी।

परन्तु हमें एक मिस्त्री मिल गया जो घर जाने वाला था और उसने सहायता भी करी। कार की बैटरी से बत्ती लगाकर वह कोई आधा घंटे तक दोष ढूंढने का विफल प्रयास करता रहा। अंत में मेरी बहन, आरती, ने गुरुजी से विनती करी जिससे हमें उनके दर्शन में और देर नहीं हो। ठीक उसी समय कार के दोष का पता लग गया। शीघ्र ही कार ठीक हो गयी और हम गुरुजी के दर्शन की राह पर चल पड़े।

जब हमने गुरुजी के दर्शन के लिए जाना आरम्भ किया था तब मैं कार चलाना सीख रहा था, पर कभी भी नोएडा की सीमा को पार नहीं किया था। अतः मेरे पिता दोनों दिशाओं में कार चलाते थे। यह नोएडा और दिल्ली के यातयात में एक दिशा में 20 किलोमीटर से अधिक का मार्ग था। उनको एक बार कार्यवश चंडीगढ़ जाना पड़ा और हमारे पास उनके वापस आने तक गुरुजी के पास जाने का कोई विकल्प नहीं था। मैं हिचक रहा था, पर माँ और बहन के प्रोत्साहन पर जब मैंने पिता से अगले दिन गुरुजी के पास कार में जाने की आज्ञा माँगी तो उन्होंने तुरन्त हामी भर दी। अगले दिन जब मैं माँ और बहन के साथ कार निकाल रहा था तो हमें, जहाँ बहन बैठी हुई थी, अचानक गुरुजी की उपस्थिति का आभास हुआ।

उस दिन जब तक मैं कार चलाता रहा गुरुजी की उपस्थिति बनी रही; लौटते हुए भी यही हुआ। जैसे ही कार को घर पर खड़ा किया उनकी सुगन्ध लुप्त हो गई। गुरुजी अपने भक्तों का इतना ध्यान रखते हैं। उनके पास जाते हुए उनकी उपस्थिति न केवल उनकी दया और स्नेह के सूचक थे, उन्होंने हमारी रक्षा भी करी और मेरा उत्साहवर्धन भी किया।

महाविद्यालय में प्रवेश

जब हमने गुरुजी के पास आना आरम्भ किया मैं दसवीं कक्षा में था। मैंने बारहवीं कक्षा विज्ञान विषयों के साथ करी थी। विचार यह था कि एक वर्ष मैं यांत्रिकी विद्यालयों की प्रवेश परीक्षाओं के लिए अध्ययन करूंगा। साथ ही मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय स्नातक पाठ्यक्रम में भी प्रवेश पा लिया। उसी समय मैंने कुछ परीक्षाओं में, अनुभव हेतु, बिना पढ़े प्रयत्न भी किया। परिणाम इस स्तर के नहीं थे कि मुझे नोएडा या आसपास के विद्यालयों में प्रवेश मिल सके। मैं घर से दूर रह कर नहीं पढ़ना चाहता था। कुछ विद्यालयों में संपर्क स्थापित करने पर उन्होनें प्रवासी भारतीय छात्रों वाले स्थान लेने का सुझाव दिया जिनके लिए अत्याधिक व्यय होता। अतः मैंने एक साल अध्ययन कर तैयारी करने का निश्चय किया।

कुछ माह व्यतीत हो गये। चूंकि कुछ स्थान अभी भी रिक्त थे, उत्तर प्रदेश के छात्रों के लिए विशेष प्रवेश परीक्षाएं हुईं परन्तु इसमें भी वही प्रवासी भारतीय छात्रों वाली कथा दोहराई जा रही थी।

एक दिन गुरुजी ने मेरे पिता को बुलाया और कहा कि तुम्हारे पुत्र को प्रवेश मिल गया है, प्रसन्न रहो। मेरे पिता को इस कथन का अर्थ समझ में न आने पर भी उन्होंने गुरुजी का धन्यवाद किया और घर आ गये। अगले दिन मेरे पिता ने मेरे विद्यालय से घर लौटने पर मुझ से पूछा कि क्या मैं ग्रेटर नोएडा में एक यांत्रिकी महाविद्यालय में पढ़ना चाहूँगा। उस दिन तिथि 14 नवम्बर थी और प्रवेश 10 नवम्बर को बंद हो चुके थे। भावविभोर होकर मैंनें तुरन्त हामी भर दी।

मैं अपने पिता के साथ उस महाविद्यालय के कार्यालय में गया और समस्त कागज़-पत्र दिए। मुझे अगले दिन से कक्षाओं में आने के लिए कहा गया। वापस घर आते हुए मेरे पिता ने पूरा वृत्तांत सुनाया। कैसे प्रातः उनके एक मित्र ने उन्हें फोन कर के तुरन्त महाविद्यालय के कार्यालय में बुलाया। जब मेरे पिता वहाँ गये तो उनसे एक प्रपत्र भरवा कर गुजरी हुई तिथि का चेक देने को कहा गया। कुल राशि मात्र चौबीस हज़ार रूपये थी जिसमें से 19000 फीस के थे और शेष लौटायी जाने वाली सुरक्षा राशि के लिए थे। उस स्थान पर सबसे कम व्यय था और हमें घर से बुला कर प्रवेश दिया गया था। तब मेरे पिता को गुरुजी के कथन का अर्थ समझ आया। ऐसी है गुरुजी की माया!

मित्रों पर गुरुजी की अनुकम्पा

प्रत्येक व्यक्ति, जो गुरुजी के पास आता है उसे गुरुजी की अनुकम्पा किसी रूप में अवश्य प्राप्त होती है। आशीष, योगेश और मुकेश मेरे अच्छे मित्र हो गये थे। कुछ प्रारंभिक बाधाओं के पश्चात् उनको गुरुजी के दर्शन हुए, उनके कमल चरणों में स्थान मिला और कुछ अदभुत अनुभूतियाँ हुईं।

हमारे महाविद्यालय में छमाही सत्र होते थे। अनुत्तीर्ण होने पर एक वर्ष के अंतराल पर पुनः उस सत्र की परीक्षा दे सकते थे। परन्तु यदि उत्तीर्ण होने के लिए 10 अंकों तक की आवश्यकता होती थी, वह दे दिये जाते थे। योगेश के 11 नंबर कम थे, अतः नियमानुसार उसे एक वर्ष की हानि होती। एक माह उसे बहुत परेशान रहना पड़ा क्योंकि उसे अगली कक्षा में आने की अनुमति नहीं मिली। एक दिन उसने गुरुजी से सहायता के लिए प्रार्थना करी और ऐसा करते करते सो गया। जब वह सो कर उठा तो वह अपने स्वप्न को लेकर प्रसन्नचित, पर असमंजस में था। उस समय उसने हमें कुछ नहीं बताया।

अगले दिन समाचार पत्रों में विश्वविद्यालय परिषद् की बैठक में हुए निर्णय का वर्णन छपा हुआ था जिसमें उन्होंने सब छात्रों को चार वर्ष

में एक बार 15 नंबर देने का निश्चय लिया था। इस प्रकार योगेश का वह एक वर्ष बच गया और तब उसने उस स्वप्न की चर्चा करी।

स्वप्न में उसकी माँ उसे गुरुजी के पास ले गयीं और योगेश की अशांति से अवगत किया। गुरुजी ने उनको चिंतामुक्त रहने को कहा। यह स्वप्न परिषद् की बैठक से कुछ देर पहले ही आया था। उसके पश्चात् बैठक में निर्णय निश्चित ही गुरुजी के हस्तक्षेप से लिया गया होगा।

प्रति सत्र में परीक्षाओं से पूर्व हम गुरुजी के दर्शन की अभिलाषा रखते थे। मैं अपने परिवार के कारण उनके दर्शन सरलता से कर लेता था। परन्तु मेरे मित्रों को उनके दर्शन के लिए विशेष प्रयास करना पड़ता था। आशीष पर गुरुजी के दर्शन से विशेष प्रभाव होता था। दर्शन के उपरान्त वह अपने सब विषयों में उत्तीर्ण हो जाता था; यदि दर्शन नहीं हो पाते थे तो वह एक या उससे अधिक विषयों में रह जाता था और उनमें पुनः परीक्षा देनी पड़ती थी।

गुरुजी की कृपा से विद्यालय से निकलते ही मुकेश हनीवेल नामक एक अति प्रसिद्ध कंपनी में कार्यरत हो गया। वहां पर उसका प्रशिक्षण काल एक वर्ष का था। उस अंतराल के बाद वह अति उत्सुकता से अपने स्थायीकरण की प्रतीक्षा कर रहा था। परन्तु जब दो माह उपरान्त भी यह नहीं हुआ तो वह गुरुजी के पास 14 अप्रैल 2005 को आया। उसने गुरुजी के दर्शन कर प्रसाद लिया और चला गया। अगले कार्य दिवस 16 अप्रैल को उसे अपने स्थायी होने की सूचना प्राप्त हो गयी। वास्तव में गुरुजी अपने आशीर्वाद से सब संभव कर देते हैं!

मेरे अंकों का पुनरावलोकन

मुझे तीसरे अर्धवार्षिक सत्र में एक विषय में 30 अंकों के स्थान पर केवल 19 अंक मिले थे। यह चौंकाने वाली घटना थी क्योंकि परीक्षा के उपरान्त जब मैंने अपने अंक जोड़े थे तो मुझे सरलता से उत्तीर्ण हो जाना चाहिए था। यह मैंने अपने अभिभावकों को बतायी और साथ में

यह भी कहा कि यदि इस समय मेरे केवल 19 अंक आये हैं तो संभवतः मैं इस विषय में कभी भी उत्तीर्ण न हो पाऊं।

मेरे पिता ने जब यह बात गुरुजी को बतायी तो उन्होंने पुनः निरीक्षण का आवेदन करने की सलाह दी। अगले दिन मैंने वही किया। उसके अगले दिन विद्यालय में किसी विद्यार्थी के अंकों के बदले जाने की सूचना थी। मैं तुरन्त उस महाध्यापिका के पास गया तो मेरा नाम सुनकर उन्होंने कहा कि अब मेरे अंक बदल कर 53 हो गये थे। अति प्रसन्न होकर मैंने पुनः निरीक्षण का आवेदन वापस ले लिया और गुरुजी का हार्दिक धन्यवाद किया। बाद में हमें पता लगा कि संपूर्ण राज्य में, जहाँ 120 के आसपास महाविद्यालय हैं और प्रत्येक में कई सौ विद्यार्थी हैं, केवल पांच विद्यार्थियों के अंक परिवर्तित हुए थे और सबके ऊपर की और संशोधित नहीं हुए थे। गुरुकृपा से मैं अत्यंत भाग्यशाली था!

मेरे इन थोड़े से अनुभवों से गुरुजी की असीम क्षमता और निस्वार्थ भाव से अपने अनुयायियों को सदा आश्रय देने की परंपरा दृष्टिगोचर होती है। जब भी कोई भक्त अपनी व्यथा में गुरुजी से प्रार्थना करता है गुरुजी सदा उसकी सहायता करते हैं। मूल सार यही है कि यह जीवन गुरुजी को समर्पित कर दें। वह तो प्रेम और स्नेह के अंतहीन स्त्रोत हैं। प्रार्थना करता हूँ कि उनकी हितकारी दृष्टि सदा हम पर बनी रहे और वह हमें सदा अपने चरणों में स्थान देते रहें।

"ॐ नमः शिवाय, शिवजी सदा सहाय।"

– अरविन्द सिंगला, गुड़गाँव

सत्संग से उपचार

सत्संग का अर्थ सत्य सुसंगत होता है। सारांश में लाभकारी श्रवण भी कहा जा सकता है। गुरुजी के सत्संग में प्रत्येक भक्त सत्संगी है जिसमें दुखियों को सन्देश देने की क्षमता है। यह चकित करने वाली घटनाएँ नहीं है; यहाँ पर श्रोताओं को लगता है कि सुना जा रहा प्रवचन उनकी ही आपबीती है। यह एक ऐसे ही सत्संग की कथा है।

श्री अरुण सहगल सिर में खून के थक्के के कारण चिकित्सालय में प्रविष्ट हुए थे। उन्होंने कभी गुरुजी के दर्शन नहीं किये थे। एक भक्त जो सहगल को जानते थे उनसे मिलने पहुंचे और वार्तालाप में उन्होंने गुरुजी का वर्णन करना आरम्भ कर दिया। यह स्वयं में एक सत्संग था।

सहगल द्वारा सत्संग सुनने के पश्चात् चिकित्सकों ने देखा कि वह खून का थक्का मस्तिष्क के अकर्मण्य क्षेत्र में चला गया है। यह चमत्कार सुनने के बाद उस भक्त ने सहगल को बताया कि उन पर गुरुजी की कृपा हुई है और अब उनको चिंता करने का कोई कारण नहीं है। तथापि रोगी ने इसकी उपेक्षा करी और समझा कि यह गुरुकृपा नहीं अपितु संयोग है।

अगले दिन ही चिंतित चिकित्सक ने सहगल को बताया कि मस्तिष्क को जाती हुई एक नस में बहुत अधिक खून के थक्के हैं और तुरन्त गंभीर परीक्षण करने की आवश्यकता है। उन्होंने चिकित्सा पद्धति का वर्णन करते हुए बताया कि वह बहुत संकटपूर्ण होगी।

रोगी और उनका परिवार उस समय व्यग्र हो गये और गुरुजी से सहायता के लिए विनती करने लगे। चिकित्सालय से अवकाश प्राप्त करने के बाद उन्होंने परिवार सहित गुरुजी के पास आना प्रारंभ कर दिया। तीन चार बार गुरुजी के यहाँ आने के पश्चात् गुरुजी ने सहगल को लंगर खाने को कहा। उसके पश्चात् गुरुजी ने उनको स्वस्थ घोषित कर दिया।

गुरुजी के वचनों की सत्यता तब सिद्ध हुई जब सहगल ने पुनः अपने सब परीक्षण करवाये और उसके नकारात्मक परिणाम निकले।

– अरुण सहगल, दिल्ली द्वारा कथित

मृत्युशय्या पर जीवन दान

एक परिवार पिछले 45 वर्षों से राधा स्वामी का अनुयायी था। उनमें से एक, अशोक ग्रोवर, गुरुजी के भक्त थे। उन्हें जब अपने संबंधी का फोन आया कि उनके पिता मृत्यु शय्या पर हैं तो वह तुरन्त घर गये।

उनके पिता को लगातार हिचकियाँ आ रही थीं और चिकित्सकों ने और कुछ कर पाने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी थी। अशोक गुरुजी को पूरे मार्ग याद करते हुए, उनको दिल्ली के अपोलो चिकित्सालय ले गये और उनको गहन सेवा केन्द्र में प्रविष्ट किया गया। उनके पिता का रक्त मधु 700 पहुंच गया था, आंतों ने कार्य करना बंद कर दिया था और हिचकियाँ उनकी भांति धीमी हो रही थीं। चिकित्सकों ने आशा छोड़ कर उन्हें घर ले जाने का परामर्श दिया।

उसी समय अशोक को आभास हुआ कि अब उनके पिता स्वस्थ हैं और चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। अशोक को एक

आवश्यक कार्य से जाना था। अतः वह, गुरुजी की आज्ञानुसार, बिना किसी सेवक के, अपने पिता को चिकित्सालय में छोड़कर चले गये।

अगले दो दिन अशोक अति व्यस्त रहे और उन्हें चिकित्सालय से संपर्क करने का भी समय नहीं मिला। जब वह वापस आये तो उन्होंने अपने पिता को रोते हुए देखा। उनके मन में विचार आया कि उनके पिता उन्हें अकेला छोड़ने के कारण दुखी थे। पर उन्हें अचम्भा तब हुआ जब उनके पिता ने पूछा कि क्या वह गुरुजी के पास गये थे।

उनके पिता ने बताया कि कैसे अशोक के जाते ही उनके पिता को गुरुजी की सुगन्ध द्वारा उनकी उपस्थिति का आभास हुआ था और गुरुजी ने कहा, *''होर वाई राधासोवामिया, कि हाल ने तेरे?''* पिता ने कहा कि उन्होंने बाबाजी (राधा स्वामियों के प्रमुख) से अपने को बचाने के लिए विनती करी थी, पर गुरुजी ने आकर उनकी रक्षा करी।

गुरुजी ने उन्हें परीक्षण पुनः करवाने की सलाह दी। यह कार्यवाही दो दिन तक चली। इस अवधि में उनके पिता को गुरुजी की सुगन्ध आती रही। परिणाम आने पर चिकित्सकों को विश्वास नहीं हुआ और अपनी पद्धतियों पर संदेह करने लगे। उनके अनुसार उनके पिता को कोई रोग नहीं था। उन्होंने एक इंसुलिन इंजेक्शन की सलाह दी पर अशोक के पिता ने मना करते हुए कहा कि अब उन्हें औषधियों पर विश्वास नहीं रहा और अब सबसे बड़े चिकित्सक (गुरुजी) के परामर्श से ही उपचार कराएंगे।

एक सप्ताह पश्चात् अशोक के पिता गुरुजी के पास आये, तो गुरुजी ने वही शब्द कहे, *''होर वाई राधासोवामिया, कि हाल ने तेरे?''* फिर गुरुजी ने उन्हें बताया कि उन्होंने उन्हें नवजीवन प्रदान किया थ। यह देखकर कि गुरुजी ने कैसे परिवार प्रमुख की रक्षा करी थी, परिवार के सब सदस्यों ने गुरुजी के पास आना आरम्भ कर दिया और यह अनुभव किया कि वह स्वयं ईश्वर के संरक्षण में हैं।

भक्त के उद्योग की रक्षा

गुरुजी ने एक बार अशोक को आदेश दिया कि वह अपना कारखाना बंद कर यंत्र, औज़ार आदि सब कुछ बेच दें। अशोक को पता था कि गुरुजी के इस आदेश का पालन करना होगा।

अगले 15 दिन अशोक इसमें ही व्यस्त रहे। मशीनें खरीदे हुए दामों पर बिकीं और शेष सब समान भी हानिरहित दामों पर बिके। किसी को समझ में नहीं आया कि गुरुजी ने अपने भक्त को अपना व्यापार बंद करने का आदेश क्यों दिया। तीन सप्ताह के बाद वह व्यापार पुरातन घोषित कर दिया गया और कई लोगों को भारी घाटा उठाना पड़ा। पर अशोक बच गये थे.... उन्हें स्वंय परमात्मा ने बचाया था।

गुरुजी के आदेश का पालन करने में सदा लाभ ही रहेगा क्योंकि वह कभी अपने अनुयायी के भले के अतिरिक्त कुछ नहीं कहेंगे।

दस वर्षीया की इच्छापूर्ति

एक दिन अशोक की दस वर्षीया पुत्री गुरुजी के दर्शन करना चाह रही थी। अशोक स्वयं बड़े मंदिर के आयोजन में व्यस्त थे। उन्होंने एक भक्त से अपनी बेटी को 'बड़ा मंदिर' लाने का निवेदन किया। वह बड़ा मंदिर आयी पर एम्पाएर एस्टेट जाने का हठ करती रही। उसे वहां ले जाने वाला कोई नहीं मिला। पूरी रात्रि वह रो रोकर गुरुजी से उनके दर्शन के लिए प्रार्थना करती रही। अगले दिन प्रातःकाल, सब चकित रह गये जब गुरुजी स्वयं बड़े मंदिर पहुंच गये। जब अशोक ने उनको बताया कि उनकी बेटी रात को उन्हें याद कर रही थी, गुरुजी मुस्कुरा कर बोले कि इसी कारण वह उससे मिलने वहां आये हैं।

गुरुजी की दया से उनकी बेटी अपनी कक्षा में प्रथम आयी और तब से सदा एक प्रतिभाशाली बच्ची रही है।

– अशोक ग्रोवर, दिल्ली द्वारा कथित

मुझे मृत घोषित कर दिया था

गुरुजी से मिलने के बाद मैंने नर्क से स्वर्ग तक की दिव्य यात्रा करी है। मेरी समस्याएँ मेरे विवाह के तुरन्त बाद ही प्रारम्भ हो गयीं थी। मेरी पत्नी, गीता को कष्टदायक अस्थमा रहता था, वह रात रात भर सो नहीं पाती थी और घबरायी रहती थी। क्योंकि उसकी माँ भी अस्थमा से पीड़ित रहती थीं, अतः उसे पता था कि इस रोग की पीड़ा कैसे रूप धारण कर सकती है।

जैसे यह कम नहीं था मेरी बेटी तानिया को भी दमा हो गया। पूरा परिवार परेशान रहता था। उनकी औषधियों के लिए मैं बाज़ार के चक्कर काटता रहता था। उनका आहार बहुत ही संतुलित रहता था। वह अति क्षीण हो गये थे और उनके शरीर और मुख का रंग काला पड़ गया था।

फिर इस दास को गुरुजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। केवल गुरुजी को ही हमारी नारकीय जीवन का ज्ञान था। वह असंभव को संभव सकते थे। इस प्रकार गुरुजी के मात्र ''*कल्याण कर दित्ता*'' कहने से गीता और तानिया दोनों स्वस्थ हो गये। किसी ने मेरे से पूछा

कि किसी के *'कल्याण कर दित्ता'* कहने मात्र से कोई असाध्य रोग से कैसे मुक्ति प्राप्त कर सकता है। वास्तव में मनुष्य के लिए यह संभव नहीं है। पर गुरुजी तो स्वयं ईश्वर हैं और ईश्वर वह कर सकता है जो सामान्यतः सबके लिए संभव नहीं है। गुरुजी के आशीष सर्व फलदायी हैं। अपनी पत्नी और पुत्री के स्वस्थ होने के पश्चात् मुझे लगा कि मैं स्वर्ग में हूँ।

थोड़े दिनों बाद मुझे गुरुजी की सहायता की आवश्यकता पड़ी। 5 अगस्त 2004 की रात्रि को मेरी छाती में पीड़ा होने लगी। चिकित्सक के पास जाने पर उसने प्राथमिक चिकित्सा देकर मुझे घर लौट कर पूर्ण विश्राम करने को कहा। प्रातःकाल उठने के आधे घंटे बाद वेदना पुनः आरम्भ हो गयी; उसके साथ ही बायीं भुजा में भी पीड़ा थी – सब लक्षण हृदय रोग के थे। चिकित्सक ने पुनः प्राथमिक उपचार करके मुझे लुधियाना के हीरो हार्ट सेंटर में ई सी जी करवाने के लिए भेज दिया।

मैंने अपने एक मित्र से मुझे गुरुजी के पास ले जाने की विनती करी। अगले दिन, 6 अगस्त को, उन्होंने मुझे गुरुजी का चित्र दिया। मेरी वेदना तुरन्त समाप्त हो गयी। 7 अगस्त को चिकित्सकों ने परीक्षण करने पर देखा कि मेरे हृदय की दो घमनियां बंद थी और उन पर शल्य चिकित्सा करी। उसी दिन संध्या को मेरी हृदय गति रुक गयी। मुझे मृत घोषित कर दिया गया।

तथापि चिकित्सकों की इस घोषणा के बाद मुझे पुनः चेतना आ गयी! मुझे यह ज्ञान नहीं है कि कितना समय बीत गया था। चिकित्सकों को झटका तब लगा जब मैंने उनके मेरे नाम और पते से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दिये। यह देख कर कि मैं उनके प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ वह मुझे तुरन्त शल्य कक्ष में ले गये।

उन्होंने स्वीकार किया कि मैंने उन्हें अत्यंत भयभीत कर दिया था। मुझे पता है कि मैं आज गुरुजी के कारण जीवित हूँ। मृत होने के पश्चात् केवल ईश्वर नव जीवन प्रदान कर सकते हैं। अतः गुरुजी ईश्वर हैं।

शीघ्र ही चिकित्सकों ने पूछा कि मैं चिकित्सालय में क्या कर रहा हूँ, क्या मुझे घर नहीं जाना? निश्चित ही मुझे जाने की उत्सुकता थी। संगत के दो सदस्य और मित्र, श्री नरेन्द्र और उनकी पत्नी, मुझे दिल्ली से मिलने आये। उस समय तक मैं काफी स्वस्थ था और घर आ गया था। दो सप्ताह के बाद मैं गुरुजी को अपना आभार प्रकट करने दिल्ली गया।

गुरुजी के यहाँ मैंने चिकित्सकों के खान पान के परामर्श की अवज्ञा कर लंगर ग्रहण किया। मैंने टिक्कियाँ और गोल गप्पे प्रसाद के रूप में खाये। अब मैं पूर्णतया संतुष्ट और स्वस्थ हूँ। मैं गुरुजी की कृपा से ही लिख पा रहा हूँ।

गुरुजी से मिलने के पश्चात् मुझे प्रतीत होता है कि मुझे इस संसार में सब कुछ प्राप्त हो गया है। मैं अति प्रसन्न और चिंता मुक्त हूँ।

गुरुजी ने मुझे अपने अनेक अन्य रूपों मे भी दर्शन दिये हैं। अनेकों बार उन्होंने ऐसे असंभव दृश्यों के दर्शन कराये हैं जो सामान्यतः नहीं दिखते। एक दिन जब मैं गुरुजी के पास बैठा था तो गुरुजी मेरे सिर से मेरे शरीर मे प्रवेश कर गये। मैंने सोचा कि थोड़ी देर में वह बाहर आ जायेंगे पर ऐसा नहीं हुआ। जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया, मैंने देखा कि वह बाहर आये और उन्होंने शिव रूप धारण कर लिया। माँ गँगा ने उनके केशों से निकल कर मेरे शरीर में प्रवेश किया। उसके पश्चात् उनके शरीर से शेषनाग ने निकल कर इस दास के कपाल से प्रवेश किया। शेषनाग ने ॐ और ॐ नमः शिवाय मेरे पूरे शरीर पर लिख दिया। शेषनाग ने मेरे शरीर से स्टेंट भी निकाल कर बाहर फेंक दिए। अब वह मेरे शरीर और हृदय की देखभाल करते हैं।

गुरुजी ने मुझे बताया कि शेषनाग सदा मेरे शरीर में रहेंगे। फिर उन्होंने एक चाकू निकाल कर मेरा त्रिनेत्र बनाया और वहां पर बैठ गये। मेरे पैर काट कर नए पैर लगाये, जिन पर ॐ नमः शिवाय अंकित था और कहा कि यह वहीं जायेंगे जहाँ पर सब ठीक रहेगा। फिर उन्होंने

मेरे चक्षु निकाल कर वहाँ पर मयूर पंख से ॐ लिखा और कहा कि यह केवल अच्छा देखेंगे, बुरा नहीं।

गुरुजी सदा मेरे साथ रहते हैं। हम अपने परिवार के सदस्यों और मित्रों को छोड़ सकते हैं पर गुरुजी हमारे साथ रहते हैं। वह हमारी समस्त चिंताएँ दूर कर हमें आंनद प्रदान करते हैं। गुरुजी इस जीवन में मेरे सब कुछ हैं; मेरे पिता, माता और मित्र। मैं उनके बिना नहीं रह सकता। मैं स्वयं अपने आप को, अपने बच्चों को उनके चरणों में समर्पित करता हूँ। मैंने जब भी चाहा है गुरुजी ने मुझे शिवरूप में दर्शन दिए हैं और उनसे माँ गँगा ने मेरे सिर में प्रवेश किया है।

एक बार गुरुजी ने शिव रूप में मेरे ऊपर त्रिशूल फेंका जिसने मेरे शरीर को भेद कर उसके सब ओर एक त्रिकोण बना दिया। गुरुजी ने कहा कि वह सदा मेरे साथ रहेगा। कुछ अंतराल बाद गुरुजी ने मेरा हृदय निकाल कर एक नया हृदय दिया और कहा कि अब कभी कोई समस्या नहीं होगी।

पिछले वर्ष, 17 मई 2006 को, मुझे स्वप्न आया कि दो यमदूत श्वेत वस्त्रों में मेरे पास आये। वह कह रहे थे कि मेरा समय समाप्त हो गया है और साथ चलने के लिए कहा। तुरन्त गुरुजी प्रकट हुए और उन्होंने यमदूतों को कहा कि मैं उनके साथ नहीं जा रहा हूँ। यमदूतों ने गुरुजी को कहा कि वह मुझे ले जाने आये हैं। गुरुजी ने उनको कहा कि यद्यपि मेरा समय समाप्त हो चुका है मैं अभी पृथ्वीलोक पर और रहूंगा। उन्होंने उन्हें जाने को कहा और वह चले गये – मेरे बिना!

मैं उठा और समय देखा तो रात्रि के 1:45 बज रहे थे। मेरा हृदय पेंच की भांति कसा हुआ था। गुरुजी ने पुनः मेरी जीवन रक्षा करी थी और मैंने उनका धन्यवाद किया। उन्होंने मुझे बार बार जीवन प्रदान किया है। मेरी उनसे विनती है कि वह सौ जन्मों तक मुझे अपने कमल चरणों में स्थान दें और मैं उनकी अभिलाषा के अनुसार कार्यरत रहूँ। मैं अपने आपको उन्हें सुपुर्द करता हूँ।

मुझे उनके साथ अपनी अनुभूतियाँ का अधिक ज्ञान नहीं है। जब भी मैं उनकी ओर देखता हूँ मुझे आकाश से उनके दिव्यरूप पर गुलाब की पंखुड़ियाँ गिरती हुई दिखायी देती हैं। मैं उनकी दया से नर्क से स्वर्ग तक गया हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि मैं उनकी आशा के अनुरूप कार्य करता रहूँ और, किसी भी कारण से, कभी भी विचलित नहीं होऊं।

- अश्विनी शर्मा, चंडीगढ़

परम पिता का संतान सुख आशीष

सर्वप्रथम जून 1998 में मुझे गुरुजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे मामाजी, गुरुजी द्वारा अपने हृदय रोग के चमत्कारी निवारण के सम्बन्ध में उनके बारे में चर्चा करते रहे थे। मेरे मामाजी को उनके हृदय रोग विशेषज्ञ ने अति शीघ्र बायपास शल्य क्रिया का सुझाव दिया था। अपने आप को मानसिक रूप से तत्पर कर वह गुरुजी का अशीर्वाद लेने गये। गुरुजी ने अपने पास बिठाकर उनको अपने पाँव दबाने को कहा। फिर उनसे उनके स्वास्थ्य के बारे में प्रश्न किया। मामाजी ने उन्हें उत्तर दिया और प्रस्थान करने की आज्ञा मांगते हुए उनसे होने वाली शल्य क्रिया की सफलता के लिए कृपा बनाए रखने का आग्रह किया। गुरुजी बोले कि उन्होंने उनका बायपास कर दिया है। यह मामाजी जैसे श्रद्धालु के लिए विश्वास करना कठिन था, पर उन्हें प्रसन्नता थी कि गुरुजी ने उन्हें धन्य कर दिया था।

अगले दिन प्रातः मामाजी प्रवेश पूर्व परीक्षणों के लिए चिकित्सालय गये। परिणाम के अनुसार उनका हृदय ठीक से कार्य कर रहा था। हृदय रोग विशेषज्ञ के निष्कर्ष के अनुसार उनकी अच्छी निद्रा के कारण परिणाम सही थे। उन्होंने मामाजी को एक अन्य प्रयोगशाला से परीक्षण कराने को कहा। पुनः जब वही फल आये तो चिकित्सक अचम्भे में पड़

गये। तब मामाजी ने पूर्व रात गुरुजी का प्रसंग सुनाया तो चिकित्सक को गुरुजी के दिव्य हस्तक्षेप पर चुप्पी साधने के अतिरिक्त कोई और स्पष्टीकरण नहीं सूझा।

यद्यपि अब मुझे गुरुजी के प्रभाव के बारे में ज्ञान था, उन दिनों श्रीनगर में रहने के कारण उनके दर्शन नहीं कर पाया। मैं दिल्ली थोड़े समय के लिए कार्यवश ही आता था। सौभाग्य से अगली बार जब मैं दिल्ली आया तो मामाजी ने शुभ समाचार दिया कि गुरुजी दिल्ली में ही हैं और हम उनसे मिल सकते हैं। उसी संध्या को हम एम्पाएर एस्टेट गये। हमारे पहुंचने तक बहुत देर हो गयी थी। लंगर का अंतिम चक्र चल रहा था और गुरुजी कुछ देर के लिए अपने कक्ष में चले गये थे। हम लंगर समाप्त करने के बाद संगत में बैठे थे जब गुरुजी अपने कक्ष से बाहर आये। गुरुजी के प्रथम दर्शन, काला कुरता धारण किये सभागृह में प्रभावशाली, निरहंकारी और मनोहर चाल से चलते हुए, आज भी मेरे मनस पटल पर अंकित हैं। उन्होंने मामाजी को पहचान लिया और हम नवागन्तुकों को देखकर हमारे पास आये। उन्होंने मामाजी को हमारा परिचय कराने को कहा और महरौली गुड़गांव मार्ग पर ''दि रैंच'' नामक एक कृषि भवन में अपने जन्म दिवस पर आने को कह कर हमें प्रस्थान करने की आज्ञा दे दी।

प्रथम दिवस और परीक्षा काल

संयोग से, अगले दिन दिल्ली में अपने कार्यालय पहुँचने पर, मुझे अस्थायी काल के लिए वापस श्रीनगर जाने को कहा गया। वहाँ पर कार्यरत एक नवीन अधिकारी से कुछ चूक हो गयी थी और एक ग्राहक ने उच्च क्षेत्रीय कार्यालय में असंतोष प्रकट किया था। गुरुजी से उनके जन्मदिवस के अवसर पर उनके दर्शन न हो पाने की निराशा के साथ मैं श्रीनगर लौट गया। मुझे सौंपे गये कार्य में सफल होने का विश्वास था, क्योंकि मुझे गुरुजी के दर्शन और आशीष, दोनों प्राप्त हो चुके थे। मुझे ज्ञात था कि सब कुछ गुरुजी की इच्छानुसार ही होगा। कठिन

परिस्थितियों में मैं श्रीनगर और अवंतीपुर के कार्य संभालता रहा। वह ग्राहक अत्याधिक अपेक्षा रखता था और अपने अभियोग सिद्ध करने के लिए हमसे बहुत कार्य करवाता था। संभवतः इससे पूर्व मैं यह कार्य न कर पाता, पर इस बार अंतर था। मेरे पास एक आश्रय था और कठिन काल में मैं उनको याद करता था।

अन्ततः, एक मास के उपरान्त उस ग्राहक ने मुझे अपने कार्यालय में बुलाया। उसने मेरे समक्ष ही क्षेत्रीय कार्यालय में फोन किया और मेरे द्वारा दी गई उच्च स्तरीय सेवाओं की अति प्रशंसा करी। उसने अपना अभियोग भी वापस ले लिया और मुझे प्रशंसा पत्र भी दिया। मुझे पता था कि इसका कर्ता कौन है।

गुरुजी के पुनः दर्शन होने की उत्सुकता सहित मैं दिल्ली वापस आ गया। मेरे परिवार के सदस्य गुरुजी के जन्मदिवस आयोजन पर गये थे और नियमित रूप से एम्पाएर एस्टेट भी जाते रहे थे। उन्होंने गुरुजी के जन्मदिवस के अवसर पर उपस्थित सहस्रों श्रद्धालु और उन भक्तों के बारे में बताया जिनकी गुरुजी ने सहायता करी थी। मैंने सोचा, ''क्या वह हमें संतान सुख का आशीष देंगे?'' विवाह के सात वर्ष बीतने पर भी हम संतान सुख से वंचित थे। चिकित्सक, प्रार्थना और उपाय – सब असफल रहे थे। मेरे मामाजी ने गुरुजी का आशीर्वाद लेने का सुझाव दिया। उन्होंने अपने एक ठेकेदार मित्र का प्रसंग भी बताया।

''त्वानु बच्चे लभेंगे, भज्ज जा''

मामाजी के उन मित्र को विवाह के सोलह वर्ष उपरान्त भी कोई संतान न होने पर गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था। गुरुजी ने उन्हें बोला, ''*पुत्तर वी दित्ते, धी वी दित्ती। होर इसी साल।*'' यह अविश्वसनीय प्रतीत हो रहा था, किन्तु गुरुजी के सत्य वचनानुसार, उनकी पत्नी ने 31 दिसंबर को एक साथ तीन बच्चों को जन्म दिया – दो पुत्र और एक कन्या। ''गुरुजी के आशीर्वाद से सब कुछ संभव है... पर हमें उनका आशीर्वाद कब मिलेगा?'' मैं उत्सुक था। हम गुरुजी के यहाँ निरंतर जाते

रहे पर उन्होंने कभी हमसे बात नहीं करी। अन्य महानुभावों ने गुरुजी पर विश्वास बनाये रखने का सुझाव दिया –''वह अनुकूल समय आने पर बात करेंगे। उनके पास जाकर अपनी समस्या मत बताओ।''

एक दिन जब हम लंगर के पश्चात् संगत में बैठे हुए थे, गुरुजी ने मुझे अपने पास आने का इशारा किया। क्या वास्तव में मुझे बुला रहे थे? संगत ने आवश्वस्त किया कि मुझे ही बुलाया है। मन में अनगिनत विचार समेटे, किन्तु बोलने का साहस जुटाने के कठिन प्रयास सहित, मैं उनके पास पहुंचा, ''*एथे क्यों आया वे?*'' ''गुरुजी, कोई बच्चे नहीं है।'' बस, इतना ही बोलने का साहस जुटा कर मैंने उत्तर दिया। अनासक्त भाव से वह बोले, ''*त्वानु बच्चे लभेंगे, भज्ज जा*''। कुछ सोचे बिना ही मैं बोल पड़ा, ''गुरुजी, मैं भागने के लिए नहीं आया हूँ।'' गुरुजी मुझे देखकर बोले, ''*चंगा, अठवें दिन आता रहीं*''। इस बात ने मुझे अति विस्मित कर दिया। गुरुजी को कैसे पता कि हर आठवें दिन आना ही मेरे लिए सुविधाजनक हैं। उस समय मैं आठ दिन के पाली चक्र में कार्यरत था – दो दिन प्रातः दो दिन अपराह्न, दो दिन रात्रि और फिर दो दिन अवकाश। इस प्रकार पहले अवकाश को ही सत्संग में आना सुविधाजनक था।

हमने गुरुजी के दर्शन के लिए हर आठवें दिन जाना प्रारम्भ कर दिया। संगत के अनुमंत्रित भाग्यवान सदस्य अपने अनुभव सुनाते थे। इससे हमें भी आश्वासन मिलता था कि गुरुकृपा से हमारी मनोकामना भी पूर्ण होगी – पर कब? हम स्वयं से प्रश्न करते रहते थे। अन्य समस्याएँ हल हो रहीं थीं।

मेरी पत्नी का कार्य स्थायी हो गया था। अपने साक्षात्कार से पूर्व उसने गुरुजी से आशीष प्राप्त किया और 42 प्रत्याशियों में वह अकेली चुनी गयी थी। हमारी आर्थिक परिस्थितियों में भी सुधार हो रहा था।

हम दोनों संतानोत्पत्ति निष्फलता का उपचार करा रहे थे, परन्तु सफलता हाथ नहीं लग रही थी। यद्यपि चिकित्सिका को आशा नहीं थी. तद्यपि उन्होंने गर्भाशय में वीर्यारोपण का सुझाव दिया था। उन्होंने कहा

कि यदि यह भी असफल रहा तो फिर बाह्य प्रत्यारोपण कर गर्भाशय में बिठाने का प्रयास करा जाएगा, किन्तु वह अधिक मूल्यवान होगा। उन्हीं दिनों मुझे अपने उच्च कार्यालय से समाचार मिला कि मुझे अधि- शासी एम बी ए की प्रवेश परीक्षा देने के लिए चुना गया है। जून 2000 में प्रारम्भ होने वाले इस प्रोग्राम की अवधि एक वर्ष थी। मैं दुविधा में था। मेरी पत्नी परीक्षा देने के विरुद्ध थी। मैंने उसे गुरुजी पर यह निर्णय छोड़ने को कहा। उसके अनुसार मेरे चुने जाने पर उपचार वर्ष भर बंद करना पड़ेगा। गुरुजी के अगले दर्शन के अवसर पर साहस बटोर कर मैंने सुझाव माँगा। गुरुजी ने उत्तर दिया कि ऐसे अवसर जीवन में बार बार नहीं आते और मुझे जाना चाहिए। यह बात सुनकर मेरी पत्नी उदास हो गयी।

मैंने परीक्षा दी। सफल अभ्यार्थियों की सूची आने से पूर्व, कई चर्चाएँ होती थी। यह सुनकर कि मेरा नाम उन चर्चाओं में नहीं था, मेरी पत्नी चिंतामुक्त हुई।

इसी समय चिकित्सिका ने 2 जून 2000 को, अंतिम बार, पुनः पिछली प्रक्रिया दोहराने का निर्णय किया। उन्हें इस बार भी कम आशा थी, उन्होंने कहा कि अगली बार दूसरी प्रक्रिया करेंगे। मैंने अपने कार्यालय में समाचार दिया मैं विलम्ब से पहुंचूंगा। इधर चिकित्सालय में प्रथम नमूने और परीक्षणों के बाद मुझे एक और नमूना देने को कहा गया। जब मैंने अपने कार्यालय में बताया कि विलम्ब अधिक होगा और बहुत अधिक होने पर नहीं आऊँगा तो उस अधिकारी ने निर्देश दिया कि भले ही कितनी देर हो जाये, मुझे वहां अवश्य पहुँचना है। यहाँ पर कार्य समाप्त होने पर और अपनी पत्नी के सुरक्षित घर पहुँचने का प्रबन्ध कर, जब मैं अपने कार्यालय पहुंचा तो मुझे एम बी ए में अपने चयन का समाचार मिला। स्वीकृति देने के लिए तीन दिन का समय था। अगले दिन जब हम गुरुजी के दर्शन के लिए गये और मैंने यह समाचार गुरुजी को दिया (मेरा भ्रम, जैसे कोई सर्वज्ञाता को कोई नवीन समाचार दे सकता है!), तो मुस्करा कर वह बोले, *''फिर ते कल्याण हो गया''*।' मैंने सोचा, ''मैंने तो गुरुजी को अपने चयन की बात बतायी है और वह

कह रहे हैं कि मैं धन्य हो गया। यह तो प्रत्यक्ष ही है।'' उस समय गुरुजी के तात्पर्य से हम अनभिज्ञ थे। इस रहस्योद्घाटन के लिए अभी कुछ और दिन का समय शेष था।

मैंने गुड़गाँव में एम बी ए संस्था में प्रवेश कर लिया। प्रथम सत्र के बाद मैं घर गया। उसी संध्या को हम दर्शन के लिए गये। लौटते हुए मेरी पत्नी ने गर्भ परीक्षण उपकरण खरीदने को कहा। गुरुजी के कथन का रहस्य अगले दिन प्रातः उजागर हुआ जब मेरी पत्नी ने अपना गर्भवती होने का समाचार दिया। गुरुजी की कृपा से कठिन परिस्थितियों में की गयी अंतिम चेष्टा सफल हुई थी। हम दोनों हर्ष से विह्वल और कृतज्ञ थे। चक्षुओं में अश्रु भरे हम दोनों बहुत देर तक गुरुजी के चित्र का चुम्बन लेते रहे। उसी शाम को हम गुरुजी के पास गये और उनके चरण कमल छू कर जैसे ही उन्हें यह सूचना देने के लिए मैंने अपना मुख खोलना चाहा (एक बार पुनः सर्वज्ञाता को बताने की भूल), उन्होंने मुझे चुप रहने का संकेत दिया और बोले, ''*मैंनु पता है*''।

मेरी अनुपस्थिति होते हुए भी मेरी पत्नी का गर्भकाल सहजतापूर्वक बीत गया। उसी अवधि में उसे महाविद्यालय परिसर में ही घर मिल गया जिससे प्रतिदिन यात्रा करने के कष्ट से भी मुक्ति मिल गयी। उसने 31 जनवरी 2001 को पुत्र को जन्म दिया। शिशु के 40 दिन पूर्ण होने पर हम उसे गुरुजी का आशीर्वाद दिलाने उनके पास ले गये। उस दिन आज्ञा लेते समय गुरुजी मेरी पत्नी को बोले, ''*पूनम आंटी, होर मुंडा लैना है?*'' मेरी पत्नी को एकाएक अत्याधिक अचम्भा हुआ पर वह कुछ नहीं बोली। उसके बाद गुरुजी हर दर्शन के समय मेरी पत्नी से यह पूछते रहे। वह कभी उत्तर तो नहीं देती थी पर अचरज सदा रहता था कि इतने छोटे शिशु के साथ कैसे पुनः उस पूरी प्रक्रिया को दोहरा पाएंगे। उसके अनुसार गुरुजी परिहास कर रहे थे।

जून 2001 में मेरा एम बी ए पूरा होने पर, मेरा स्थानान्तरण राजबंध (पश्चिम बंगाल में दुर्गापुर के निकट) हो गया। छोटे शिशु एवं दिल्ली में अन्य उत्तरदायित्वों के कारण मेरे लिए इस समय बाहर जाना असंभव

था। मैंने अपने कार्यालय में अपने वरिष्ट अधिकारियों से अनेक अनुनय विनय करी पर कोई सहायता करने को उद्यत नहीं था। सबकी उदासीनता देख कर अंत में मैंने दिल्ली में अपने परिवार के लिए सब प्रबन्ध कर, जाने का मन बना लिया था। उस संध्या को हम गुरुजी के दर्शन के लिए गये। उसी दिन सबसे वरिष्ठ अधिकारी, जिनको मैंने स्थानांतरण रोकने की विनती करी थी, ने मना कर दिया था। उस दिन भी गुरुजी ने मेरी पत्नी को देख कर अपना वही प्रश्न दोहराया, *''पूनम आंटी, होर मुंडा लैना है?''* मेरी पत्नी ने तत्काल उत्तर दिया, ''यदि मेरे पति विस्थापित होकर चले गये तो मुझे पुत्र कहाँ से मिलेगा।'' गुरुजी मुस्कुरा कर बोले कि यह तो वास्तव में तकनीकी समस्या है वह मेरा स्थानान्तरण रद्द कर देंगे। हम उनके कमल चरण स्पर्श कर घर आ गये। दो दिन के पश्चात् मेरे एक वरिष्ठ अधिकारी ने फोन किया और बोले, ''तुम अपनी समस्याओं के कारण न जाने की बात करते रहे हो। तुम एक आवेदन पत्र लिखकर मुझे भेज क्यों नहीं देते? मैं देखता हूँ कि क्या हो सकता है।'' मुझे उनके मन में इस विचार की उत्पत्ति के कारण का पता था। उसके पश्चात् गुरुजी के जन्मदिवस, 7 जुलाई 2001 से मैंने पुनः कार्यालय में काम प्रारम्भ कर दिया। तब मैं दिल्ली दो वर्ष और रहा।

गुरुजी उसके बाद भी मेरी पत्नी से निरंतर वही प्रश्न करते रहे। अप्रैल 2002 में एक दिन मेरी पत्नी ने उत्तर दिया, ''जैसी आपकी इच्छा।'' अगले दिन ही गर्भ परीक्षण के सफल परिणाम निकले। इस बार यह बिना किसी चिकित्सा पद्धति के संभव हुआ था। गर्भकाल की अवधि में एक बार मेरी पत्नी ने मुझसे कहा कि इस बार कन्या होनी चाहिए और गुरुजी से इस बारे में निवेदन करेगी। अगले दर्शन के समय वह गुरुजी के चरण स्पर्श करते समय कहने ही वाली थी कि गुरुजी पहले बोले, *''पहली वार मुंडया, ते दूजी वार वी मुंडया''*। उसे अपना उत्तर मिल गया था और उसने 01 दिसंबर 2002 को पुनः पुत्र को जन्म दिया। गुरुजी ने दूसरे पुत्र का नामकरण इशुक किया।

हमारी दूसरी संतोनोत्पत्ति के बाद एक दिन गुरुजी ने मेरी पत्नी से प्रश्न किया कि क्या वह पी एच डी करने का विचार कर रही है। उसने उत्तर दिया कि दो बच्चों के साथ पठन–पाठन का कार्य अति कठिन है। गुरुजी ने अपना सुझाव दोहराया और बोले, *''पता है, पी एच डी दा कि मतलब होंदा है – पागल होने दा डर''*।

इस सुझाव का कारण हमें देर में तब जाकर स्पष्ट हुआ जब मेरा स्थानान्तरण मुंबई हो गया। मेरी पत्नी मेरे साथ पी एच डी आरम्भ कर लंबा अवकाश लेने की अवस्था में ही मेरे साथ रह सकती थी। अपने अंतरण पत्र लेकर मैं गुरुजी का आशीष लेने गया और उन्हें अपने स्थानान्तरण के बारे में बताया। उन्होंने मुझे जाने की आज्ञा दे दी। प्रथम वर्ष मैं मुंबई में अकेला रहा। इस अवधि में कुछ बार हम गुरुजी के दर्शन के लिए आये। एक ऐसे ही अवसर पर गुरुजी ने कहा कि मैं अपने परिवार को साथ ले जाऊं, नहीं तो वह एक और पुत्र दे देंगे। हमें सन्देश मिल गया और पत्नी ने पी एच डी के लिए आवेदन दे दिया। गुरुजी की दया से बहुत कम समयावधि में सब औपचारिकताएँ भी पूर्ण हो गईं। फलस्वरूप मेरा परिवार मुंबई आ गया।

यहाँ पर यह बताना अनुपयुक्त नहीं होगा कि मेरे पिता के एक मित्र, जो एक निपुण ज्योतिषी भी हैं, ने मुझे बताया था कि मेरी पहली संतान 41 वर्ष की आयु में होगी। उनकी भविष्यवाणी के अनुसार मुझे दो कन्याओं के बाद ही पुत्र होगा। इनसे ज्योतिष में संभवतः कभी गलती नहीं हुई थी। मैंने जब उनसे प्रश्न किया कि कैसे गुरुजी के आशीर्वाद से हमें पहली संतान 37 वर्ष की आयु में हुई और दूसरी 39 वर्ष की, तो वह कैसे चूक कर गये। उन्होंने उत्तर दिया कि ईश्वर द्वारा लिखा हुआ भाग्य ही ज्योतिष से पता लगता है; किन्तु गुरुजी जैसे महापुरुष, जो मानव रूप में ही परम पिता हैं; भाग्य पुनः लिखने की क्षमता रखते हैं। अतः इसमें कोई शंका नहीं होनी चाहिए कि हमारे प्रारब्ध कर्म को बदलने वाले स्वयं भगवान के अतिरिक्त कोई और नहीं हो सकते।

दुर्घटना से रक्षा

सितम्बर 1999 में हम अपने वाहन में शिमला गये थे। अपनी दिवास्वप्न की आदत के कारण मैं कभी भी अच्छा चालक नहीं रहा हूँ। शिमला से लौटते हुए हमने रात चंडीगढ़ में बितायी। अगले दिन प्रातः हमें चंडीगढ़ से निकलने में देर हो गयी थी और यह बात मुझे नहीं भा रही थी, अतः मैं कार आवश्यकता से अधिक तीव्र गति से चला रहा था।

अम्बाला और करनाल के मध्य यातायात अवरोध था। हमारे आगे एक माटी प्रवर्तक जा रहा था और हमारे पीछे भी बहुत गाड़ियाँ थीं। मैं आगे जाने को आतुर था परन्तु प्रवर्तक के विशाल आकार के कारण आगे की दृष्टि अवरुद्ध थी और मार्ग के दूसरी तरफ का भाग निर्माण कार्य के लिए बंद था। अतः दोनों ओर का यातायात इसी तरफ से आ रहा था। मेरी पत्नी मेरे साथ ही अपने नेत्र बंद कर, अपने छोटे से वॉकमैन पर शबद सुनती हुई आगे बैठी हुई थी।

वह प्रवर्तक अत्यंत धीमी गति से जा रहा था। काफी देर उसके पीछे धीमी गति में चलते रहने के कारण मैं अपना संयम खो बैठा और मैंने अपनी कार की गति बढ़ा कर उससे आगे निकलने की चेष्टा करी। जैसे ही मैं उसके समानांतर पहुंचा, मुझे सामने से आता हुआ यातायात दिखाई दिया। सामने से अत्यंत तीव्र गति से एक और प्रवर्तक हमारी दिशा में भागा चला आ रहा था। उसमें और हमारी कार में कुछ मीटर की दूरी शेष थी और दोनों प्रवर्तकों के आगे के हिस्से में कुछ इंचों का ही अंतर था।

कार के आते हुए प्रवर्तक से चीथड़े उड़ते हुए के विचार और दोनों के कर्मचारियों का चिल्लाना सुन कर मेरे शरीर में कंपकंपी छूट गयी। मेरी पत्नी ने अपनी आंखें खोलीं, मुझे देखा और हम दोनों को गुरुजी को याद करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं सूझा। एकदम मुझे अपनी दाहिनी और के मार्ग में बने हुए विभाजक में एक टूटी हुई दीवार

दिखायी दी और मैनें अपनी कार तेजी से उस दिशा में घुमा दी। गुरुजी के अतिरिक्त और कौन हमें इस प्रकार से जीवन दान दे सकता था?

फरवरी 2000 में, मैं रात्रि से प्रातः तक की पाली में विमानपतन पर कार्यरत था। उस समय मैं एक बोईंग 707, जिसमें ईंधन भरना था, देखने गया। मैंने देखा कि एक भू यंत्रविद वायुयान का पल्ला खुला छोड़कर उस पर कार्यरत था। हमारे कर्मचारी एक किनारे खड़े हुए उसका कार्य समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रश्न करने पर उसने उत्तर दिया कि अभी बहुत कार्य शेष था और वह अकेला ही था। इंजन के पल्ले को सुरक्षित रखने वाली भुजा भी काम नहीं कर रही थी और उसे वह सीढ़ी पर टिका कर रखे हुआ था। मैंने उसकी बात सुन कर उससे ईंधन भरवाने का कार्य प्रांरभ करवा कर अपना कार्य करते रहने की विनती करी। उसने मान लिया और कहा कि हम ईंधन भरक यंत्र पर पहुंचे और वह भी शीघ्र वहाँ पहुँच जाएगा।

जैसे ही मैं वहाँ पर मुड़ा, उसने मेरे से अदृष्ट सीढ़ी पर अपनी मुद्रा बदली और उसी समय वह सीढ़ी पर अटका कर रखा हुए पल्ला नीचे गिरने लगा। मेरी दृष्टि अत्यंत तीव्र गति से गिरते हुए पल्ले पर पड़ी और मैंने तुरन्त गुरुजी को याद किया। पल्ला जोर से मेरे मस्तक पर आ कर लगा और वहाँ से रक्त स्त्राव होने लगा।

मैं चेतन अवस्था में था। मुझे विमानपतन पर चिकित्सक के पास ले जाया गया तो उसने कहा कि ईश्वर ने मेरी रक्षा की है; एक सेंटीमीटर भी ऊपर या नीचे चोट लगने पर वह घातक होती। इस बार भी मुझे पता था कि कौन से ईश्वर ने मेरी रक्षा की है।

जलमग्न मुंबई में

26 जुलाई 2005 को, जब मुंबई जल प्लावित हुई मैं कार्यालय में था। कुछ कर्मचारी रेल सुविधाओं के अस्त-व्यस्त होने के भय से पहले निकल गये थे। चूंकि मुझे कार्य समाप्त करना था, मैं प्रतिदिन की भांति

बाहर निकला। उस समय तक जो कर्मचारी पहले निकले थे लौटने लगे क्योंकि रेल सेवाएँ बंद हो चुकी थीं।

उस दिन मैंने कार से यात्रा करी थीं। मैं दुविधा में था कि रुकूँ या घर पहुंचने का प्रयास करूँ? उसी समय एक सहकर्मी ने कहा कि उनका पुत्र अपने विद्यालय, जो घर के मार्ग में था, में रुका हुआ है और उसे लेना है। यह बात सुनकर मैंने निर्णय ले लिया। मैंने गुरुजी को याद किया और हम उस विद्यालय के लिए निकल पड़े। जैसे ही हमने बाहर निकलने का प्रयास किया, कार्यालय के एक बंद द्वार के सामने एक कार दुरावस्था में रुकी हुई थी। हम दूसरे द्वार से बाहर निकले। सब मार्ग जलमग्न थे और वाहन चलाना बहुत कठिन हो रहा था। पूरी राह जल और अवरुद्ध यातायात की चुनौतियों का सामना करते हुए हम दो घंटे में उस विद्यालय तक पहुंच सके।

क्योंकि विद्यालय की बसें बंद थीं, सब विद्यार्थियों को वहीं पर रात्रि में रोकने की योजना बनायी जा चुकी थी। चूंकि मेरे सहकर्मी का पुत्र अपने सहपाठियों के साथ प्रसन्न था और हमारा घर तक पहुंचना अनिश्चित था, उन्होंने उसके वहीं पर रहने का अनुमोदन कर दिया। हम दोनों ने घर पहुंचने के प्रयास का निश्चय किया और चल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर जल स्तर इतना बढ़ गया कि हमारा घर पहुंचना या कार्यालय तक लौटना असंभव था। अतः मैंने उसी ऊँचे स्थान पर जहाँ पर अपने सहकर्मी के विद्यालय में जाने पर कार खड़ी करी थी, कार खड़ी कर रात वहीं पर गुजारने का निश्चय किया। मैंने घर पर समाचार दे दिया कि घर पहुंचना संभव नहीं है।

हमने रात्रि कार में ही बितायी। अगले दिन जैसे जैसे जलस्तर कम होता गया मैं धीमे-धीमे कार चला कर शाम तक घर पहुंचा। घर पहुंचने पर पता लगा कि वहां पर सब कारें पानी में डूब कर ऐसी अवस्था में हो गई थीं कि अत्याधिक धन व्यय करने पर ही उनका जीर्णोद्धार संभव था। यही दशा कार्यालय में खड़ी हुई कारों की भी हुई थी।

समाचारों में इस घटना की चर्चा करते हुए यह भी बताया गया कि

अधिक जलस्तर और यातयात रुके होने के कारण, कई को राह में रात के लिए रुक कर अपने वाहनों में सोना पड़ा। जल के और बढ़ने पर जो अपनी कारों के द्वार या खिड़कियाँ खोल कर बाहर नहीं आ सके उनकी मृत्यु हो गयी। परन्तु न मुझे, न ही कार को कोई हानि हुई। यह सब इस कारण कि चलने से पहले मैंने गुरुजी को याद कर लिया था। केवल गुरुजी की कृपा मुझे उस रात बचा सकती थी और वह बनी रही।

महासमाधि के बाद भी उनकी कृपा है

फरवरी 2007 में, जब मैं दिल्ली आया था, गुरुजी के दर्शन के लिए गया था। जब मैं उनसे आज्ञा लेने के लिए झुका, वह बोले, "*तू दिल्ली वापस आ गया है?*" मैंने उत्तर दिया, "नहीं गुरुजी, हल्ले ते बॉम्बे ही हूँ।" गुरुजी ने एक और भक्त की ओर इशारा किया कि वह उससे पूछ रहे थे। पर यह मेरे लिए संदेश था; मैं समझ गया था कि गुरुजी किस प्रकार अपने भक्तों की इच्छा पूर्ति करते हैं। मार्च 2007 के अंत तक दिल्ली के लिए स्थानान्तरण आदेश आ गये। एक मास पश्चात् मैंने दिल्ली कार्यालय में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया और 26 मई को मेरा परिवार भी दिल्ली आ गया। सौभाग्य से एक दिन पश्चात् उनके दर्शन भी हो गये।

31 मई को उनके शरीर छोड़ने के निर्णय को सुनकर मैं ध्वस्त हो गया। बड़े मंदिर से लौटते हुए मेरे मन में अनेक विचार उभर रहे थे - ऐसे कई अवसर थे जब गुरुजी ने हमें धन्य किया था और अनेक अवसरों पर हमें वह दिया था जिसके हम योग्य नहीं थे। अब क्या होगा? अब कौन हमारा ध्यान रखेगा? यद्यपि इन प्रश्नों का मेरे पास कोई उत्तर नहीं था; किन्तु जिन्होंने सदा हमारी आवश्यकताओं, शंकाओं और प्रार्थनाओं का उत्तर दिया था, उनके पास इसका भी समाधान है, यह मुझे कुछ दिनों में पता लगने वाला था।

वर्ष 2005 से मैं अंतर्निगम उद्यम प्रतियोगिता (Inter-Corpo-

rate Business Competition) में भाग लेता रहा था। इस वर्ष 2007 में, क्षेत्रीय प्रतियोगिता दिल्ली में 1–2 जून को आयोजित थी।

गुरुजी की महासमाधि के उपरान्त, मुझे लगा कि अपना सर्वस्व देना संभव नहीं होगा। मैंने अपने साथियों को फोन पर कहा कि मैं अत्याधिक क्षीण हो रहा हूँ और वह मेरे ऊपर निर्भर न रहें। मेरे एक साथी ने मुझे सांत्वना दी – गुरु अपने शिष्यों को कभी नहीं छोड़ते, शरीर त्यागने के बाद भी नहीं। शोकसंतप्त होने के कारण मैंने उस पर विश्वास नहीं किया।

जैसे तैसे हमारा दल पहले चार दौर पार कर गया। अंतिम चक्र में हमने कुछ विपत्तिपूर्ण निर्णय लिए, जिससे हम अंतिम निर्णायक चरण में प्रवेश कर सकें। परिणाम घोषित हुए तो उनमें हमारा नाम नहीं था। मैंने अपनी जेब से गुरुजी का चित्र निकाला और कह पड़ा, ''अब यही होना था। आपके रहते हुए बात कुछ और ही थी।'' जैसे मैं गुरुजी का मुस्कुराहट भरा मुख देख रहा था, मेरे एक साथी ने आकर बताया कि हमारे उत्तर कम्प्यूटर में ठीक से नहीं डाले गये हैं। हमने आयोजकों को जाकर उनकी अशुद्धि बतायी। संशोधन के पश्चात् हम अंतिम चरण में पहुंच गये। उसके बाद सफलता हमारे साथ बनी रही। 6 जून 2007 को राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हम द्वितीय स्थान पर रहे और तत्पश्चात् सितम्बर में आयोजित एशिया – पेसिफिक प्रतियोगिता में भी द्वितीय स्थान प्राप्त किया। गुरुजी ने हमें बता दिया था कि उनकी दया अब भी उनकी संगत के साथ हैं।

हम अपने दोनों बच्चों को अच्छे विद्यालय में प्रवेश कराने को उत्सुक थे। यद्यपि हम विभिन्न सूत्रों के द्वारा प्रयास कर रहे थे पर उसमें कोई सफलता नहीं मिल रही थी। अंत में मैंने गुरुजी से प्रश्न किया, ''आपने दो पुत्र दिये है। तो इनको अच्छे विद्यालय में प्रवेश क्यों नहीं दिला देते?'' इसका उत्तर मुझे अतिशीघ्र मिला। दोनों बच्चों को दिल्ली के सबसे अच्छे विद्यालयों में से एक में, बिना किसी दान या राजनैतिक सूत्र के, प्रवेश मिल गया।

जब हम दिल्ली पहुंचे तो हमारे पास कोई ऐसा निवास नहीं था जहाँ से मेरी पत्नी और मैं अपने काम–काज और दोनों बच्चों, जो अब 6 और 4 वर्ष के थे, की देखभाल कर सकें। इस समस्या का एकमात्र समाधान यही था कि मेरी पत्नी को महाविद्यालय परिसर में ही घर मिल जाये। पर कोई भी निवासी सेवानिवृत होने वाला नहीं था और वहाँ पर घर वरीयता के आधार पर मिलते थे। इस बार भी हमारी इच्छानुसार चमत्कार हुआ। एक शिक्षक, जिनके पुत्र को अपने विद्यालय से दूर होने के कारण कठिनाई का सामना करना पड़ता था, ने अपना घर खाली कर दिया। आश्चर्यजनक रूप से वरीयता में उच्च आवेदकों में से किसी ने उस घर के लिए आवेदन नहीं दिया। अतः मेरी पत्नी को वह घर मिल गया। गुरुजी के अन्यथा और कौन संगत के सदस्यों की सुविधानुसार ऐसे चमत्कार कर सकता है?

मैंने परम पिता गुरुजी के साथ अपने अनुभवों को बहुत सारांश में लिखा है। मैं यह हार्दिक कृतज्ञता और आदर से यहीं समाप्त करता हूँ। ॐ श्री गुरु देवाय नमः। प्रार्थना है कि गुरुजी सदा हमारे और सब भक्तों पर सुख, सौभाग्य और सुबुद्धि की वृष्टि करते रहें और हम सदा उनके भक्त होने के योग्य बने रहें। जय गुरुजी!

–आकाश सेठी, दिल्ली

विद्यालय से आइफल टावर तक – गुरुजी के संरक्षण में

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरु साक्षात् पारब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

गुरुजी से मिलने से पूर्व ईश्वर की दया और उसके प्राणी प्रेम में मेरा विश्वास सदा अस्थिर रहा था। गुरुकृपा का शब्दों में वर्णन करना अति दुसाध्य कार्य है। जिस भांति परमात्मा प्रार्थनाओं का फल देते हैं, उसी प्रकार गुरुजी के सत्संगों में वक्ता और श्रोता दोनों को वरदान और असीम आनंद प्राप्त होता है। मैंने सुना है ईश्वर हमारे कर्मानुसार परिणाम देते हैं। किन्तु मैंने गुरुजी को, अपनी दिव्य ज्वाला में, हमारे दुष्कर्मों को जलाते हुए देखा है। फलस्वरूप, हम उस जीवन से उभर सकें हैं, जो उनके कोमल चरण स्पर्श कर कृतज्ञ हुए बिना जीना पड़ता।

गुरुजी के प्रथम दर्शन के समय मैं ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती थी। यद्यपि मेरा जन्म पंजाब में हुआ था, उस समय हम नोएडा में रहते थे और मुझे पंजाबी भाषा का ज्ञान बिलकुल नहीं था। अतः मुझे शबद या गुरुजी का कथन बिलकुल समझ नहीं आते थे। निःसंदेह, प्रथम दर्शन पर मुझे कितना अच्छा प्रतीत हुआ, यह वर्णन करना बहुत कठिन है।

मेरे प्रभु के शब्द – मेरी वाणी में

अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर मुझे स्वागत भाषण देना था। यद्यपि मैं यह सदा से करती आयी थी, इस बार मुख्य अतिथि अति वरिष्ट अधिकारी थे। मेरे उपसंहार पर सब उपस्थित गणों ने तालियों की गड़गड़ाहट से मेरी प्रशंसा करी। मंच से उतरते ही सबने मेरी सराहना करी और बधाई के पुल बांध दिए। शिक्षकों और सहपाठियों ने, अचरज भरे चेहरों से, मुझे बताया कि भाषण देते हुए मुझ में परिवर्तन स्पष्ट झलक रहा था। उससे भी अधिक अचम्भा तब हुआ जब मुख्य अतिथि का भाषण मेरे कहे हुए पर आधारित था। अंत में उन्होंने मेरे उपसंहार को महत्त्व देकर उससे ही अपना भाषण समाप्त किया। सबको यह आश्चर्यजनक प्रतीत हुआ पर मुझे पता था कि गुरुजी की कृपा से ही यह संभव हो सका। वास्तव में, जैसे ही मैंने अपना भाषण प्रारंभ किया, मुझमें एक अद्‌भुत उर्जा का संचार होने लगा और मैं अपने शब्दों में उत्तेजना भर सकी।

इसके अतिरिक्त मैंने, अपने विद्यालय में, अनेक बार गुरुजी की पुष्पों भरी सुगन्ध का अनुभव किया है।

कक्षा 12 में सहायता

बारहवीं कक्षा में पहुंचने पर अध्ययन का महत्त्व अधिक हो गया था। एक दिन प्रसाद देते समय गुरुजी ने मेरे विषय पूछे। मैंने उन्हें बताया कि मैं वाणिज्य की विद्यार्थी हूँ, तो उन्होंने अर्थशास्त्र पर प्रश्न कर दिये। उन्होंने मेरे से ऋण नियंत्रण (Credit Control) पर प्रश्न पूछा तो उत्तर पता होने पर भी मैं बुद्धि शून्य हो गयी।

यद्यपि उस समय मुझे समझ नहीं आया, आने वाले समय में मुझे पता लगा कि गुरुजी ने क्या किया था। गुरुजी की चेतावनी से मैं इस विषय पर विशेष ध्यान देने लगी। इसके बाद जो हुआ उसके लिए मैं तत्पर थी। वर्ष के उत्तरार्ध में हमारी अर्थशास्त्र की अध्यापिका चली गयी

और यह विषय स्वयं पढ़ना पड़ा। गुरुजी की सावधानी से मैं सतर्क हो गयी थी और बिना किसी कठिनाई के मैंने इस विषय में 97% अंक प्राप्त किये।

जैसे जैसे मेरी परीक्षाएँ समीप आ रही थीं, गुरुजी के पास दर्शन के लिए जाना कम हो गया (अंशतः उनके निर्देश थे कि मैं पढ़ाई पर ध्यान दूँ)। 13 जनवरी, उत्तर भारत में लोहड़ी के दिन, मैं अपने माता–पिता और भाई के साथ गुरुजी के दर्शन के लिए गयी थी। परीक्षाएँ समाप्त होने से पूर्व यह अंतिम दर्शन होने की संभावना थी। गुरुजी उस दिन स्वयं प्रसाद वितरित कर रहे थे और जब तक मेरी बारी आयी तो वह टॉफी दे रहे थे। प्रसाद वहीं पर समाप्त करना है, ऐसा गुरुजी का आदेश था, किन्तु टॉफियाँ अपवाद थीं। सो मैंने थोड़ा सा प्रसाद वहीं पर खा लिया और शेष अपने पास रख लिया।

मैं गुरुजी के पास आज्ञा लेने पहुँची और उनके कमल चरणों को स्पर्श करने झुकी। जब मैं उठ रही थी तो गुरुजी ने अपना एक चित्र निकाला और मुझे दिया (यद्यपि मैंने उनके पास कोई लिफाफा नहीं देखा था)। मैं अति हर्षित हो गयी क्योंकि गुरुजी का चित्र तो अमूल्य है। गुरुजी ने उस रात क्या किया था उन घटनाओं पर घर लौटते हुए चिंतन करने का अवसर मिला। उनके चित्र को अपने हाथों में पकड़े हुए मुझे आभास हुआ कि उसमें गुरुजी की सुगन्ध आ रही है और यह परीक्षाएं समाप्त होने तक रही। मैं यह चित्र अपने साथ परीक्षा भवन में ले जाती थी। अंतिम परीक्षा समाप्त होते ही उसमें सुगन्ध आनी बंद हो गयी, मानो गुरुजी ने अपने चित्र में परीक्षाओं के लिए ही विशेष धारा प्रवाहित करी थी।

उस रात घर पहुंचने पर जब मैंने बची हुई टॉफियाँ गिनी तो कुल बारह थीं – प्रत्येक परीक्षा के लिए दो। गुरुजी के चित्र और इन टॉफियों के साथ मैंने अपनी परीक्षाएँ पूर्ण करी। बहुत अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होकर दिल्ली के ही सबसे अच्छे महाविद्यालयों में से एक में प्रवेश पाने में सफल रही।

प्रेमः आइस क्रीम और सबसे मनोहर जन्मदिन

एक दिन गुरुजी ने कुछ भक्तों के साथ गुड़गाँव के एक होटल में जाने की योजना बनायी और मुझे भी साथ आने को कहा। कुछ ही देर में हम सब ब्रिस्टल होटल पहुँच गये। गुरुजी का पूरा ध्यान मुझ पर केन्द्रित था क्योंकि मैं सबसे छोटी थी। गुरुजी ने तीव्र गति से होटल का चक्कर काटा और फिर बैठ कर सबके लिए शीतल पेय मंगवाए। उसके साथ ही कुछ खाने का आहार आया और बाद में आइस क्रीम भी आयी। हमने अविस्मरणीय समय व्यतीत किया। निकलते हुए, कारों में चढ़ने के समय, गुरुजी ने विशेष रूप से मेरी पूछताछ की और यह ध्यान रखा कि मैं सही प्रकार से उनके स्थान तक पहुंच सकूं। गुरुजी ने अपने निवास पहुंचने पर मेरे अनुभव के बारे में पूछा। वह तो अति निराला ही रहा था। गुरुजी ने मेरे से यह भी पूछा कि क्या मैंने आइस क्रीम खायी थी? गले में कष्ट होने के कारण मैंने नहीं खायी थी। गुरुजी ने कहा कि आइस क्रीम खाने से मेरा गला ठीक हो जाता। कालान्तर में मुझे पता लगा कि गुरुजी ने मेरे गले का कष्ट समाप्त कर दिया था! उस दिन के पश्चात्, मेरा गला जो हर वर्ष एक बार अवश्य खराब होता था, कभी खराब नहीं हुआ।

गुरुजी के उत्कृष्ट संरक्षण और प्रेम की विशेष झलक एक दिन और प्रकट हुई। हम संगत में शबद सुन रहे थे और गुरुजी द्वारा प्रसाद वितरण की प्रतीक्षा कर रहे थे। गुरुजी के आदेश पर प्रसाद लाकर उनके पास रख दिया गया। उस दिन गुरुजी ने, जिस ओर मैं बैठी थी, उधर से प्रसाद बांटना आरम्भ किया। प्रसाद लेने के लिए सबसे पहले मैं ही थी। जैसे ही मैं प्रसाद लेने के लिए उनके पास पहुंची, उन्होंने पंजाबी में यह कह कर कि मैं अपने जन्म दिवस का पूर्ण आनंद लूं, विस्मित कर दिया। संगत में किसी को मेरे जन्म दिवस के बारे में पता नहीं था मेरे परिवार के किसी भी सदस्य ने उनको बताया नहीं था। वह मेरा सबसे मनमोहक जन्मदिवस रहा है।

गुरुजी असंभव करते हुए

दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक में उत्तीर्ण होने के बाद मैं कुछ नहीं कर रही थी। गुरुजी ने मुझे सिम्बिओसिस, एक प्रमुख संस्था से, पत्राचार द्वारा एम बी ए करने के निर्देश दिए। मैं अंतिम समय में प्रपत्र भर कर प्रवेश पाने में सफल रही। परीक्षाओं के लिए मैंने दक्षिण दिल्ली केन्द्र अपना प्रथम विकल्प दिया था। किन्तु दुर्भाग्य से मुझे दिल्ली के दूसरे छोर पर केन्द्र मिला। मेरे पिता ने अंतरण के लिए आवेदन दिया पर पुणे से उत्तर मिला कि एक बार केन्द्र निर्धारित होने पर उसे बदलना संभव नहीं है।

प्रतिदिन परीक्षाओं के कारण मेरा एक दिशा में 45 किलोमीटर यात्रा करना संभव नहीं था। अतः निर्णय लिया गया कि मैं अपने दादा दादी के पास रहूँ जो उस केन्द्र से 10–15 किलोमीटर दूर रहते थे। नोएडा में उनके पास रहने से मेरा गुरुजी के पास जाना असंभव था। किसी प्रकार से मैंने पहली परीक्षा तो दे दी, किन्तु मैं इतनी दुःखी थी कि मेरा मन शेष परीक्षाओं को छोड़ने का बन रहा था। मैं रोयी और गुरुजी द्वारा किसी प्रकार से इस स्थिति से निकालने की प्रतिक्षा में रही। उसके पश्चात् जो हुआ उसकी कल्पना भी नहीं की थी।

अगले दिन जब सब परीक्षा में मग्न थे, एक अधिकारी ने आकर घोषणा की कि क्या कोई परीक्षार्थी अपना केंद्र बदलने को इच्छुक है – और उनकी सूची में दक्षिण दिल्ली केंद्र का नाम भी था। मैं तो उछल पड़ी और तुरन्त अपना नाम लिखवा दिया। परीक्षा के अंत में उस अधिकारी के पास जाने पर उसने बताया कि अधिक परीक्षार्थियों के कारण इस केंद्र पर स्थान की कमी थी और मेरा आवेदन स्वीकार हो गया था। अब मैं परीक्षाएं होते हुए भी गुरुजी के दर्शन कर सकती थी। गुरुजी के अन्यथा और कौन ऐसा कर सकता था? गुरुजी की शक्तिओं को समझ पाना हमारी बुद्धि के वश की बात नहीं है – उनके कार्य तो तर्क को भी मात देते हैं।

एक बार गुरुजी की संगत में भूकंप आ गया। पहले तो सब बैठे रहे पर जब वह कुछ देर तक आता रहा तो कुछ हलचल आरम्भ हो गयी। यह देख कर अटल बैठे गुरुजी ने अपने मोड़ कर रखे हुए दोनों पैर पृथ्वी पर रख दिये – कम्पन तुरन्त बंद हो गये।

एक दिन गुरुजी कुछ अनुयायियों के साथ, जिनमें मैं भी थी, बड़े मंदिर गये थे। मुख्य द्वार पर निर्माणकार्य प्रगति पर था और सुविधा के लिए ईंटों पर एक लकड़ी का फट्टा रख दिया गया था। हमने फट्टे पर चल कर प्रवेश किया किन्तु गुरुजी ने गीले सीमेंट पर चल कर प्रवेश किया। हम यह देख कर अति अचंभित हुए कि उनके चलने के कोई चिह्न शेष नहीं थे, किन्तु जब हमने उसी स्थान पर बहुत हल्के से ऊँगली लगायी तो उसके भी निशान बन रहे थे।

पंद्रह दिन में विवाह

एक बार गुरुजी की शरण में आने पर वह हमारी सब चिंताओं और कष्टों का निवारण करते हैं। चूँकि हमारा ज्ञान हमारे अनुभवों और वर्तमान परिस्थितियों तक ही सीमित है, हमें स्वयं की आवश्यकताओं को समझने की सामर्थ्य भी सीमित है। इसके विपरीत गुरुजी को उनका पूरा ध्यान है और उसके लिए वह प्रावधान भी कर देते हैं। गुरुजी ने मेरे विवाह का भी प्रबन्ध किया हुआ था और मेरी माँ को छः वर्ष पूर्व ही बता दिया था कि यह घटना कब घटेगी, पर उसकी गति सबके लिए अति तीव्र थी।

अप्रैल के आरम्भ में गुरुजी ने मेरे पिता से पूछा क्या किसी प्रस्ताव पर विचार हो रहा है? मेरे पिता ने उत्तर दिया कि एक प्रस्ताव आया अवश्य है किन्तु उस पर गंभीरता से विचार नहीं हुआ क्योंकि अभी मेरे विवाह के बारे में सोचा नहीं जा रहा है। गुरुजी ने कहा कि उस पर विचार किया जाये। मेरे पिता ने तब इस बारे में परिवार में चर्चा करी।

मेरे होने वाले वर स्वीडन में रहते थे और 16 अप्रैल को एक मास के लिए भारत आ रहे थे। यह निश्चित हुआ कि दोनों परिवार 17 अप्रैल

को मिलेंगे। उस दिन जब हमारी पहली भेंट हुई तो कुछ ही देर में पूरा वातावरण उल्लासित हो गया।

सब व्यवस्थाएं उसी समय तय हो गयी और थोड़ी ही देर में हमारे बीच अंगूठी का आदान प्रदान भी हो गया। एकाध दिन में विवाह की तिथि भी निश्चित हो गयी – उसी मास की 30 तारीख! विवाह के सब प्रबन्ध अति तत्परता से किये गये और निश्चित तिथि को मेरा पाणिग्रहण भी हो गया।

यद्यपि गुरुजी विवाह में उपस्थित नहीं थे किन्तु उनकी भावना सबमें दृष्टिगोचर थी। सबने विवाह स्थल में सजावट, वातावरण, भोजन आदि व्यवस्थाओं की भूरि भूरि प्रशंसा करी – हर व्यवस्था में गुरुजी की कृपा ही झलक रही थी।

गुरुजी के साथ आइफल टावर पर

मेरे पति की मई के मध्य में वापस लौटने की योजना थी क्योंकि उन्हें उतना ही अवकाश मिला था। 15 दिन में मेरे लिए पार-पत्र और वीसा दोनों मिलना नितांत कठिन था। यथाशीघ्र स्वीडन के दूतावास को आवेदन किया गया परन्तु उन्होंने बताया कि सब आवेदन स्वीकृति के लिए स्वीडन भेजे जाते हैं और उसके पश्चात् यहाँ से वीसा दिया जाता है। अतः मेरे पति, सुशील, को अकेले ही स्वीडन लौटना पड़ा – उनके लिए अपनी यात्रा और स्थगित करना संभव नहीं था। प्रतीक्षा में एक मास व्यतीत हो गया। स्वीडन में उन्होंने भी दूतावास में शीघ्रता करने के लिए निवेदन किया। जून के आरम्भ में ऐसा लगा कि वीसा एक सप्ताह में मिल जाएगा। मेरी यात्रा के टिकट 16 जून के लिए ले लिए गये और उल्टी गिनती प्रारम्भ हो गई। 16 जून को दूतावास जाने पर ऐसा लग रहा था कि हमारा वहाँ जाना निरर्थक रहा। वहाँ पर बताया कि अभी भी उत्तर की प्रतीक्षा है। मैं निराश हो गयी क्योंकि इसका अर्थ था – एक सप्ताह का विलम्ब। मैंने यह सूचना अपने पिता को दी और कुछ देर में पुनः प्रयास किया। वहाँ के अधिकारी ने जब मुझे मेरा वीसा दिया

तो अति अचम्भा हुआ। अति प्रसन्न होकर मैंने यह सूचना अपने पिता को दी। आश्चर्य की बात थी कि उन्हें कोई अचरज नहीं हुआ।

बाद में मेरे पिता ने मुझे बताया कि गुरुजी ने, मेरी सूचना आने से 15-20 मिनट पहले ही, उन्हें वीसा मिलने की बात से अवगत करा दिया था। मैं समझ गयी कि उस दिन गुरुजी के हस्तक्षेप के बिना वीसा मिलना असंभव था। गुरुजी वास्तव में असीमित प्रेम के स्त्रोत हैं और उनमें विलक्षण प्रतिभाएं हैं। उन्हें कोई भौतिक अवरोध रोक नहीं सकते। वह त्रिकालदर्शी हैं और अपने अनुयायियों की पुकार पर सब सीमाएं पार कर सकते हैं।

स्वीडन से एक सप्ताहांत हमने पेरिस में बिताने का निर्णय लिया। वहाँ पर, जब मैं आइफल टावर की पहली मंजिल पर थी मुझे अचानक गुरुजी की सुगन्ध का आभास हुआ। फोन पर मेरे पिता के साथ हुई अगली वार्ता में उन्होंने बताया कि गुरुजी मेरे बारे में पूछ रहे थे, उन्होंने इस वार्तालाप की तिथि और समय भी बताया। थोड़ा गणित करने पर पता लगा कि जब उन्होंने मेरे पिता से मेरे बारे में पूछा था उस समय मैं आइफल टावर की पहली मंजिल पर ही थी।

गुरुजी के साथ मेरे अनुभवों का वर्णन एक गूंगी महिला द्वारा मिठास के वर्णन सदृश है। वह मेरे लिए क्या हैं और मेरे जीवन में उनका क्या अर्थ है यह शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए संभव नहीं है। मैं गुरुजी से प्रार्थना करती हूँ कि जैसे आप हमारे संबंधों के इन स्वर्णिम वर्षों में दया करते आये हैं उसी प्रकार सदा हमारा हाथ थामे रहिए। कहते हैं कि पारस लौह धातु को छूने मात्र से उसे स्वर्ण में परिवर्तित कर देता है पर गुरुजी तो पत्थर को हीरे में बदल देते हैं - केवल पूर्ण विश्वास और श्रद्धा बने रहने चाहिए।

- श्रीमती आरती सिंगला, स्टॉकहोम, स्वीडन

चिकित्सक द्वारा आस्था को नमन

डॉ. इंद्र मोहन भाटिया अमृतसर के एक समृद्ध व्यापारिक परिवार से हैं। उनके पिता, जो अनेक बार अमृतसर नगर महापालिका के महापौर रह चुके हैं, निम्न वर्ग की सेवा में लगे रहते थे। उनके पुत्र को भी यही चाव रहा है। इसी पैतृक परम्परा के कारण उन्होंने चिकित्सक बनने का निर्णय लिया। राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय, अमृतसर से 1962 में एम बी बी एस की परीक्षा उतीर्ण करने के चार वर्ष उपरान्त, 30 वर्ष की आयु में, उन्होंने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान से शल्य चिकित्सा का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम पूर्ण किया। उनकी विशेषता दृष्टि सम्बन्धी अभिघात रोगों में थी और अब वह इस विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

स्वाभाविक है कि चिकित्सक ने अपने व्यवसाय से सम्बंधित विज्ञान को गहराई से अपनाया है। आधुनिक युग के इस ज्ञान की पद्धतियों में उनकी अटूट आस्था रही है। 2002 में कुछ ऐसा घटना हुई जिसने उनके समस्त ज्ञान को पूरी तरह से झिंझोड़ कर रख दिया। वह अपनी पुत्रवधू के साथ गुरुजी के दर्शन के लिए आये। उन्हीं के शब्दों में उस अवसर के अनुभव:

"हम पूरी तरह से अपरिचित थे। सबको चाय बांटी गयी। मैंने उसे ग्रहण कर लिया किन्तु मेरी बहू ने उसे अस्वीकार दिया। गुरुजी ने यह देख कर उसे कहा कि यह चाय नहीं, अपितु उसकी औषधि है; उसे पुत्रोत्पत्ति होगी जिसके कारण वह उनके पास आयी थी। मेरी बहू के विवाह को चार वर्ष हो गये थे और सर्वोत्तम चिकित्सकों ने बता दिया था कि उसका गर्भवती होना असंभव नहीं तो अत्यंत कठिन है। इससे वह अति व्याकुल थी। हम अचंभित रह गये क्योंकि इसके बारे में संगत में किसी को ज्ञान नहीं था। एक मास के बाद वह गर्भवती हुई और उसने एक प्यारे से पुत्र को जन्म दिया। मेरे समस्त चिकित्सक मित्र, जिनको उसकी समस्या का पता था, आश्चर्यचकित रह गये।"

चिकित्सक की विज्ञान के समस्त नियमों पर बनी हुई आस्था डगमगा गयी। वह कहते हैं कि गुरुजी के इस सन्दर्भ को वह समझ पाने या उसका विश्लेषण करने में असमर्थ थे।

अभी वह इसकी वैज्ञानिक विवेचना में ही लगे थे जब गुरुजी की एक अन्य अनुनय हुई। उनकी बहू की सत्तर वर्षीय दादी, जो मधुमेह की रोगी थीं, पीठ दर्द से पीड़ित हो गयीं और उनकी टांगों के निचले भाग में पक्षाघात होने लगा। वह सरलता से चल फिर नहीं पा रहीं थीं। उनकी संस्था के स्नायु चिकित्सकों ने परीक्षण किये और पूर्ण लकवे से बचाने के लिए शल्य क्रिया का परामर्श दिया।

"जब मैं उन्हें गुरुजी के पास लाया उनकी शल्य क्रिया की तिथि निश्चित हो चुकी थी", वह अपने शब्दों में वर्णन करते हैं, "चलते हुए

मैंने गुरुजी से उनकी शल्य क्रिया की सफलता के लिए विनती करी। उन्होंने मुझे देखते हुए पूछा कि कैसी शल्य क्रिया, उन्होंने प्रसाद ग्रहण कर लिया है और अब वह स्वस्थ हो जाएँगी। अतः हमने शल्य क्रिया को स्थगित कर दिया और वह स्वस्थ होने लगीं जिसमें कुछ ही सप्ताह लगे।''

डॉ. भाटिया कहते हैं कि आने वाले वर्षों में उन्होंने अनेक मरणासन्न रोगी स्वस्थ होते हुए देखे हैं। गुरुकृपा से विकट हृदय और अन्य असाध्य रोगी ठीक हुए हैं। गुरुजी को बताये बिना भी चमत्कार हुए हैं। डॉ. भाटिया का विश्वास है कि गुरुजी की कृपा का पात्र बनने के लिए पूर्ण आस्था, धैर्य और समर्पण करने की क्षमता होना आवश्यक है। उनके व्यक्तित्व का पूर्ण परिवर्तन गुरुजी का उनको सबसे बड़ा उपहार रहा है। ''मेरे जीवन में अब पूर्ण शांति है'', डॉ. भाटिया कहते हैं, ''उन्होंने मुझे ईश्वर के अस्तित्व में पूर्ण विश्वास और शरण दी है।''

–डॉ. इंद्र मोहन भाटिया, एम बी बी एस, डी एम एस, एम एस, गुड़गाँव

ईश्वर दूत

किसी भी स्पष्ट कारण के अभाव में जब महाविद्यालय में पढ़ रहा मेरा पुत्र शोकसंतप्त हुआ तो मुझे अत्यंत दुःख हुआ। मैं ध्वस्त हो गयी थी। यद्यपि हमने कई विशेषज्ञों की राय ली, मुझे गुरुजी की याद आयी, जिनके बारे में मैंने अपनी बेटी से सुना था।

मेरी बेटी की एक मित्र का परिवार गुरुजी के पास जाते थे। मित्र की माँ ने गुरुजी से परिचय कराने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। उन्होंने बार बार यह आश्वासन भी दिया कि सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा और मेरे पुत्र का वर्ष भी नष्ट नहीं होगा; गुरुजी सब सही कर देंगे। मैं तो अपने पुत्र को स्वस्थ देखना चाहती थी, महाविद्यालय में एक वर्ष का नुक्सान तो कोई विशेष बात नहीं थी।

पहले दर्शन के समय गुरुजी अत्यंत उदार और ध्यान रखने वाले प्रतीत हुए। एक बार उन्होंने सब कुछ ठीक होने की बात कही तो मैं निश्चिन्त हो गयी। गुरुजी की कृपा से मेरे पुत्र ने शनैः शनैः प्रगति करनी प्रारम्भ कर दी। चिकित्सक के परामर्श के विरुद्ध मेरे पुत्र ने आधी परीक्षाएँ नियत कार्यक्रम के अनुसार दीं। उसके पश्चात् महाविद्यालय के अधिकारियों ने उसे एक मास के उपरान्त शेष परीक्षाएँ देने की आज्ञा भी दे दी। फलस्वरूप वह सब में अच्छे नंबर लेकर उत्तीर्ण हुआ।

परमात्मा और गुरुजी की कृपा से मेरा पुत्र एक माह में पूर्ण रूप से रोग निवृत हो गया। अब वह आनंदपूर्वक अपने छात्रावास में रह कर अच्छी तरह से अध्ययन कर रहा है। उसका शोकसंतप्त मानसिक रूप एक बुरे स्वप्न की भांति लगता है।

गुरुजी से मिलने के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि पूरे परिवार को उनका स्नेह प्राप्त हुआ है। हमें उनकी छाया में सुरक्षा का आभास होता है। मैं गुरुजी की दया के लिए सदा उनकी कृतज्ञ रहूंगी। वह वास्तव में ईश्वर दूत हैं।

–एक भक्त

नम आकाश पर प्रज्ज्वलित सूर्य

अपने गुरु की महानता का वर्णन करने की मुझमें सामर्थ्य नहीं है, क्योंकि मात्र शब्द उनकी अद्वितीय दिव्यता के लिए अपर्याप्त है। तथापि उनकी आज्ञा से, आदर और प्रेम से भरे कुछ शब्दों में, उन्होंने अपनी कृपा से हमें कैसे धन्य करा है, यह अनुभव आपके साथ बाँट रही हूँ।

जीवन के अस्तित्व का मार्ग मोक्ष प्राप्ति की कामना के समान है। जो अपने जीवन की बागडोर अपने गुरु को समर्पित कर देते हैं उनके लिए यह सरल हो जाता है। वास्तव में हम मार्गदर्शक न होकर केवल अनुयायी हैं।

मेरा जन्म एक जट सिख परिवार में हुआ था। मेरे परिवार में आनंद, सुख, समृद्धि, शिक्षा और अनुशासन – किसी का अभाव नहीं

था। अपने बचपन से मैं अपने दादा से बहुत प्रभावित रही हूँ, जो सदा धर्म और ईश्वर में विश्वास रखते आये हैं। शनैः शनैः एक गुरु की महिमा प्राप्त करने का विचार मेरे मन में बस गया।

मेरा विवाह भी एक जट सिख परिवार में हुआ। मेरे पति तीन कन्याओं के बाद परिवार में आये थे। इस कारण उन्हें अत्याधिक स्नेह प्राप्त हुआ और उनकी आदतें बिगड़ गईं। उनकी सब मांगे पूरी कर दी जाती थीं। मद्यपान उनकी सबसे बड़ी समस्या थी, जिसके कारण वह परिवार की उपेक्षा करते थे और स्वयं कोई उत्तरदायित्व उठाने को तैयार नहीं थे।

हर लड़की का स्वप्न सुखी दाम्पत्य जीवन होता है और मैं कोई अपवाद नहीं थी। पर जब परिवार का पालक ही नशे में डूबा रहे किसी के वश में कुछ नहीं रहता, रोज की छोटी मोटी समस्याएँ भी अजेय लगती हैं। कन्धों पर परिवार का बोझ और मेरी दुखी अवस्था ने शीघ्र ही मेरा जीवन नर्क बना दिया।

उन्हीं दिनों मेरे दादा घर आये। मेरे अन्दर ठहरा हुआ दुःखों का बाँध मानों टूट गया और उन्हें विश्वास हो गया कि मेरी सहायता होनी चाहिए। मैंने भीगी आँखों से उन्हें बताया कि मुझे पूर्ण गुरु की आवश्यकता है। हम अपने नश्वर शरीर और मन के लगातार प्रयत्नों से भी गुरु के पास नहीं पहुँच सकते जब तक हम उनके निर्देशित मार्ग पर चलने को तत्पर नहीं हैं। ऐसी अवस्था आने पर गुरु स्वयं हमें अपने समीप बुलाने का सहज मार्ग निकाल लेते हैं।

थोड़े समय के बाद मेरी माँ मुझे गुरुजी के पास ले गयीं। गुरुजी के यहाँ पहुँचते ही मुझे गुलाब पुष्पों की सुगन्ध आयी। उन्हें देख कर मेरी आँखों में पानी भर गया। अगले कुछ घंटों, जब तक मैं वहाँ पर बैठी रही, मेरी आँखों से निरंतर अश्रु प्रवाहित होते रहे। उस पहले दर्शन के बाद जब भी मेरी गुरुजी से भेंट होती थी मैं अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पाती थी। हर दर्शन के समय मुझे शांति की प्राप्ति

होती थी पर क्यों? यह मेरी तुच्छ बुद्धि की समझ में कभी नहीं आया। संभवतः मेरे आँसू मेरी अंतरात्मा को स्वच्छ कर रहे थे।

इस बीच मेरे पति ने और अधिक मद्यपान करना शुरू कर दिया। वह अपने उत्तरदायित्व को बिलकुल भूल कर पैसे जल की भांति बहाने लगे। मैंने उनको गुरुजी के बारे में बता कर उनके पास चलने को कहा। पर उन्होंने मेरा परिहास करते हुए कहा कि ऐसे गुरु तो सैकड़ों मिल जाते हैं और मुझे रूढ़िवादी की उपाधि से विभूषित कर दिया। साथ ही मेरा गुरुजी के दर्शन करने का भी अनुमोदन नहीं किया।

नवम्बर 1999 के आसपास उनका संयुक्त राष्ट्र की ओर से लेबनान स्थानान्तरण हो गया। वहां पर उनकी नशे की आदत बढ़ कर और गंभीर हो गयी और उसी समय उनको यकृत सूत्र रोग से पीड़ित घोषित किया गया। मेरे ऊपर तो दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। चिकित्सक के अनुसार उनके यकृत ने काम करना बंद कर दिया था और बता दिया कि अगले दो वर्षों में उन्हें नए यकृत की आवश्यकता पड़ेगी।

इतने कम समय में किसी दाता को ढूँढना असंभव था। ऐसा दानी मिलने पर भी उसका व्यय अत्याधिक होता और शल्य चिकित्सा के परिणाम सफल होने की संभावना भी अति कम थी। चिकित्सक ने उन्हें कह दिया था कि मद्य की एक बूँद भी उनके लिए घातक सिद्ध हो सकती है। इस बीच मेरे अभिभावक गुरुजी के पास जाकर उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना करते रहे।

चिकित्सालय से अवकाश प्राप्त कर हम दिल्ली वापस आ गये। मेरे आग्रह पर वह गुरुजी के पास आये पर एक कोने में बैठ कर यही शिकायत करते रहे कि कितनी थकान है और मैंने ही आने की जिद्द करी थी। उस दिन जब मैं गुरुजी के पास पहुँची तो मैं आवेश में कुछ बोल नहीं पायी। मेरी माँ और मैंने गुरुजी से उनको बचाने की विनती करी। गुरुजी ने उत्तर दिया कि वह तो नास्तिक है, वह उसकी सहायता कैसे कर सकते हैं।

उसके बाद मैं गुरुजी के पास अकेली ही जाती रही क्योंकि मेरे पति साथ आने को तत्पर नहीं थे। एक रात गुरुजी के यहाँ से वापस आने पर मैं गहरी नींद में सो रही थी जब अचानक जोर से मेरे कमरे में वायु का झोंका आया। भय के कारण मैं बिस्तरे में उठ कर बैठ गयी और आँखें बंद कर प्रार्थना करने लगी। मुझे अँधेरे को चीरते श्वेत प्रकाश का आभास हुआ जो मेरे मस्तक तक आ रहा था। उस श्वेत प्रकाश के मध्य में गुरुजी की आकृति थी। उन्होंने कहा कि वह अब मेरे पति को ठीक करेंगे। अगले 15-20 मिनट तक शल्य कक्षों के समान गंध आती रही। उसके बाद जब सब साफ हो गया तो गुरुजी ने कहा कि उन्होंने मेरे पति को स्वस्थ कर दिया है। उसके बाद मैं सो गयी।

उस दिन को बीते हुए छः वर्ष बीत गये हैं परन्तु मेरे पति ने अपने नशे की आदत बनाये रखी है। मेरे परिवार वाले और मैं विस्मित हैं कि चिकित्सकों के कथन के विपरीत उनका स्वास्थ्य बना हुआ है, और गुरुजी कैसे उनकी दिन रात देखभाल कर रहे हैं। मेरे पति भी गुरुजी द्वारा दिये गये जीवनदान के लिए उनके आभारी हैं।

इस संसार के समस्त ग्रंथों के अनुसार मनुष्य के जन्म से पूर्व ही उसकी मृत्यु की तिथि का निर्धारण हो जाता है और कोई भी उसे एक श्वास अधिक या एक कम नहीं कर सकता है। किन्तु उसके कर्मों को समाप्त करने का सामर्थ्य केवल सर्वोच्च सृजनकर्ता के पास है। एकमात्र गुरुजी ही ब्रह्माण्ड के संचालक हैं, वह सर्व श्रेष्ठ शक्ति हैं, जिन्होंने मेरे जीवन की गाथा को पुनः लिखा है।

मैं और मेरे परिवारवालों ने अनेक बार गुरुजी से सहायता की पुकार लगायी है और यह अनुभव किया है कि अचानक ही सब कुछ ठीक हो गया है - जैसे किसी ने कोई जादुई छड़ी घुमा दी हो।

एक बार मुझे गुरुजी के पास अपनी आधा दर्जन से अधिक सहेलियों को ले जाने का संयोग प्राप्त हुआ। उनसे मैं गुरुजी के गुणों का

वर्णन करती आयी थी। अपनी संकीर्ण विचारधारा के अनुसार मैंने उनसे गुरुजी से कुछ नहीं मांगने का निवेदन किया था – यद्यपि यह मेरे आचरण के प्रतिकूल था। गुरुजी के चरण स्पर्श करते समय उन्होंने मेरे मन के भाव पढ़ते हुए बताया कि उन सबने उनसे कुछ न कुछ विनती करी थी। उन्होंने सबकी मनोकामना पूर्ण कर दी थी।

उनके पास से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता है – व्यापारी को समृद्धि, रोगी को स्वास्थ्य लाभ, विद्यार्थी को विद्या आदि। कुछ को उनके आशीष का आभास हो जाता है, शेष अनभिज्ञ रहते हैं। उनके स्नेह की कोई सीमा नहीं है। आस्तिक या नास्तिक सबको उनकी दया प्राप्त होती है। उनकी कोई मांग नहीं है, वह कोई आश्वासन नहीं लेते पर उनकी दिव्य अभिभूति धीरे धीरे आपको परिवर्तित कर देती है।

प्रतिदिन याचक अपने दुःख लेकर उनके दर्शन के लिए आते हैं और उनकी कृपा उन पर मेघों से ढके हुए नम आकाश को चीर कर चमकते हुए सूर्य की भांति बरसती है।

–एक भक्त

परमात्मा – हमारे बीच में

एक समय था जब मंदिर, तीर्थस्थल, मूर्तिपूजा, रीति रिवाज और ज्योतिष, शुभ-अशुभ लक्षण आदि सब बातें अत्यंत महत्त्वपूर्ण लगती थीं। किन्तु गुरुजी से मिलने के बाद यह सब अर्थहीन हो गया है।

अपने अनुभवों का वर्णन करने से पूर्व मैं सबको बताना चाहती हूँ कि गुरुजी के यहाँ होने से हम सब कितने अनुग्रहीत हैं। गुरुजी कोई जादूगर, पुरोहित या स्वामी नहीं हैं। वह तो साक्षात् परमेश्वर हैं जो हमारे बीच में ही बैठकर हमारे जीवन को सरल और मधुर बना रहे हैं। मेरे अनुभव इसी विश्वास और आस्था को सुदृढ़ कर रहे हैं।

भक्त के रूप में, उनसे मिलने के पहले दिन ही गुरुजी में मेरी श्रद्धा जागृत हो गयी थी। उनके आशीर्वाद से ही नवम्बर 2000 में मेरा पाणिग्रहण हुआ। विवाह के कुछ दिन बाद ही गुरुजी मुझसे कहने लगे कि वह मुझे पुत्र देंगे।

गुरुजी की इस पुनरोक्ति, ''*इक मुंडा लै ले*'', पर मेरे पति और मैंने कभी अधिक ध्यान नहीं दिया किन्तु नवम्बर 2000 से जुलाई 2003 तक वह यही दोहराते रहे।

7 जुलाई को, गुरुजी के जन्मदिवस के पावन अवसर पर, बड़े मंदिर में विशाल आयोजन था, जहाँ पर प्रातः 3.30 बजे तक हम सबने उनके दैवीय सान्निध्य का आनंद लिया। इसी समय गुरुजी ने मुझे बुलाया और कहा कि उन्होंने मुझे और मेरे पति को आशीष दिया है। हमने उनसे अनुमति ली और चल पड़े – पुनः इस बात पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

एक सप्ताह के पश्चात्, 13 जुलाई 2003 को गुरु पूर्णिमा के अवसर पर, मैं अपनी सास के साथ गुरुजी के दर्शन के लिए गयी थी। गुरुजी कभी किसी से कोई गोपनीयता नहीं रखते, वह प्रत्येक से ऐसे बात करते हैं कि आसपास के लोग पूरा वार्तालाप सुन सकते हैं। परन्तु उस दिन जब मैंने उनसे आज्ञा लेने के लिए उनके चरण स्पर्श किये, उन्होंने मुझे पास आने का इशारा किया और धीमे से बोले कि मैं गर्भवती हूँ पर यह बात किसी को न बताऊँ।

किन्तु मैंने इस कथन की अवहेलना करी। मैंने यह समाचार अपने पति को दिया। उन्होंने इसे अनसुना कर दिया और बोले कि मैं गुरुजी पर कुछ अधिक ही विश्वास करती हूँ। तत्पश्चात् गर्भपरीक्षण का निर्णय आने तक मैंने प्रतीक्षा करी। 1 अगस्त को मेरे गर्भवती होने का परिणाम आया और गुरुजी की बात सत्य सिद्ध हुई।

विचारणीय है कि मनुष्य होने के कारण हम अपना संयम खो बैठते हैं और स्वयं अपनी नजरों में गिर जाते हैं। गुरुजी से कुछ आशा कर तुरन्त उसकी पूर्ति होने की आकांक्षा करते हैं। परन्तु मेरी स्थिति देखिये। तीन लम्बे वर्षों तक गुरुजी मुझे संतान सुख का आशीष दोहराते रहे। इस बीच एक बार भी मैंने यह प्रश्न नहीं किया, न ही यह बात कभी मन में उभरी कि इतने लम्बे अंतराल तक, उनकी पुनरोक्ति के बावजूद यह क्यों नहीं हो रहा है? हम केवल रुकावट देख सकते हैं; गुरुजी तो उस रुकावट का समाधान निकालते हैं। वह जानते हैं कि फल प्राप्ति के लिए कब उचित समय है और उसे कैसे पूर्ण किया जाये।

किसी भी पुरोहित, सन्यासी या जादूगर में जीवनदान देने की क्षमता नहीं है। किन्तु गुरुजी ने यही किया। विश्वास कीजिये कि मुझे पुत्र ही उत्पन्न हुआ।

अंत में यही कहूंगी कि मुझमें और मेरे पति में चिकित्सा बिना संतानोत्पत्ति संभव नहीं थी। किन्तु गुरुजी ने यह सहजता से कर दिया।

प्रत्येक भक्त को शत प्रतिशत आस्था के साथ शबद का मात्र एक शब्द या पंक्ति कई दिन, सप्ताह, मास या वर्षों तक एक ही कारण के लिए दोहराना पड़ सकता है; बार बार बंद द्वार पर दस्तक देनी पड़ सकती है जिससे वह कभी तो खुले – और वह खुलता अवश्य है।

– एक भक्त

मेरे अन्धकार में ज्योत जलायी

मनुष्य के जीवन में कुछ ऐसी घटनाएं होती हैं जिनको सहते हुए यही कहा जा सकता है कि संभवत: ईश्वर की यही इच्छा थी।

मुझे नवजीवन प्रदान करने के लिए मैं सदा गुरुजी की आभारी रहूंगी। गत घटनाओं का अवलोकन करते हुए अब मैं उनका बोध कर सकती हूँ, पर उस समय कारण मेरी समझ से बाहर थे। दुर्भाग्य मेरी नस नस में भरा हुआ था, मुझे अत्याधिक पीड़ा थी। मेरे जीवन का हर अंग भौतिक और मानसिक व्यथा से परितप्त था। यद्यपि गुरुजी ने आकाशदीप बन कर मेरे जीवन में प्रवेश किया था, मुझे अपने अन्धकार और निराशा के अतिरिक्त कुछ दृष्टिगोचर नहीं था।

ब्रिटेन के मेनचेस्टर शहर में जन्म लेकर मैं जन्मजात अस्थमा, विसर्प और हृदय में छिद्र जैसे रोगों से पीड़ित थी। मेरा बचपन मेरे अभिभावकों और स्वयं मेरे लिए अति कष्टदायी रहा था। तथापि स्वास्थ्य के सुकर्मों के कारण मेरी जीवशक्ति अपराजेय थी और मुझे अपने साथियों से अधिक सहन करना पड़ता था। अपने क्लेशों के कारण मुझे बचपन में ही छोटे-मोटे दु:खों का सामना करना आ गया था। मुझे अपने दस वर्ष पूरे होने की शंका थी पर भाग्य ने साथ दिया।

दूसरी ओर मेरे माता पिता सदा संदिग्ध अवस्था में रहते थे क्योंकि हृदयरोग विशेषज्ञ ने मेरे बारे में भयभीत करने वाला चित्रण किया था। स्वस्थ और प्रसन्न रहकर, जीवन के सब आनंद उठाते हुए मैंने अपनी किशोरावस्था के वर्ष बिताये।

बाईस वर्ष की आयु में विवाह के उपरान्त मैं दिल्ली आ गयी। दुर्भाग्यवश दु:खों के घनघोर बादल पुन: मेरे जीवन में आ गये। हर बदलते मौसम के साथ मेरा दमा अति कष्टदायी हो जाता था। हर बार मुझे चिकित्सालय में प्रविष्ट करा कर इंजेक्शन दिये जाते थे।

दमे से बचने के अपने सब प्रयत्न विफल होते देख कर मैं हताश हो गयी। 1997 में मुझे दमे का सबसे कठोर, जानलेवा आक्रमण हुआ और अंतत: मैंने हार मान ली। मुझे याद है कि मैं अपने हृदय में प्रार्थना कर रही थी कि यह अंतिम हो क्योंकि मैं और सहन नहीं कर सकती थी। उन्हीं दिनों मुझे पूर्ण शरीर पर भयंकर त्वचा रोग हो गया। बाओप्सी से पता लगा कि वह कर्कट रोग है। चूँकि इससे मेरे परिवार को आघात पहुंचता यह समाचार मैंने उनको नहीं दिया। मेरे जीने की समस्त आशा समाप्त हो चली थी, मेरा आगे का मार्ग बंद हो चुका था।

अचानक उस अँधेरी रात्रि में गुरुजी ने अपनी दिव्यज्योत प्रज्ज्वलित करी। हर बार उनके पहले दर्शन की बातें याद करते हुए मुझे अपने मन में उठी सब भावनाएं याद आ जाती हैं। सौभाग्य से उस दिन वह अकेले बैठे हुए थे जब मैं अपनी एक मित्र, जिसने उनसे मिलने का आग्रह

किया था, के साथ उनके यहाँ पहुंची। उनकी उपस्थिति में मैं भाव-विह्वल हो गयी। उस समय मुझे जीवन भर भटकते हुए शिशु की भांति लगा जिसे अन्त में अपनी माँ का आश्रय और सुरक्षा मिल गयी हो। उन्होंने उसी समय मुझे अपना संरक्षण प्रदान किया। यथार्थ में मैंने पहली बार पवित्र प्रेम का अनुभव किया था; उसमें न कोई प्रतिबन्ध था, न ही कोई अन्य चाहत। मुझे घर के सदस्य की भांति उन्होंने प्रतिदिन संगत में आने को कहा। मौसम चाहे जैसा भी हो मैं संगत में पहुँच कर उनके अनगिनत भक्तों में बैठ जाती थी।

उन दिनों मुझे असहनीय वेदना रहती थी; मेरी त्वचा से रक्त और पीप का स्त्राव बना रहता था। मानसिक रूप से विचलित होने के कारण मुझे समूह में घुटन भी होती थी।

जैसे जैसे समय बीतता गया गुरुजी ने दया कर मेरा आंतरिक परिवर्तन आरम्भ कर दिया। मेरे मन से द्वेष और वैर के भाव समाप्त हो गये और मैंने अपनी इस दशा से समझौता करना सीख लिया। क्योंकि अब मैंने उसे स्वीकार कर लिया था मैं उस अवस्था में भी संतुष्ट थी - रोग समाप्त हो जाएंगे, ऐसा विश्वास मुझे नहीं था।

मात्र गुरुजी का साथ और उनकी ऊर्जा को ग्रहण कर मेरी अन्त:शक्ति बढ़ गयी। मुझे इससे अधिक आशा भी नहीं थी। मुझे शांति मिल गयी थी। उनके सान्निध्य में डूबते हुए मुझे आत्मिक जागरण का आभास होने लगा। मुझे उनसे ऐसा प्रेम प्राप्त होता था जिसका मैंने पहले कभी आनंद नहीं लिया था। उनका प्रेम ऐसा पवित्र और पावन था जिसका कहीं कोई पर्याय नहीं मिल सकता। बिना किसी नागा के, हर संध्या को, मैं उनकी ओर प्राकृतिक सहजता से खींची चली जाती थी।

उस महत्त्वपूर्ण दिन उन्होंने सामने अपने पास बुलाया और पंजाबी में कहा, जिससे मैं अनभिज्ञ थी, कि उन्होंने मुझे नींबू की भांति निचोड़ दिया है और अब वह मेरा रोग दूर करेंगे। यह देखने के लिए मैं उनकी कृपा के योग्य हूँ अथवा नहीं, उन्होंने मेरे धैर्य का परीक्षण कर लिया था।

उस दिन हृदय में आशा और उमंग भरे हुए मैं घर पहुँची। पिछले कुछ महीनों में, जब मेरी त्वचा तप्त रहती थी, मैं अपना प्रतिबिम्ब देखने से कतराती थी। शीशे में अपना दयनीय चेहरा देखना मेरे लिए असंभव था।

जीवन में मोड़ तब आया जब गुरुजी ने अपना शाश्वत वरदान देकर मुझे शीशे में देखने का साहस करने को कहा। मुझे साहस की अति आवश्यकता थी – मेरा चेहरा थोड़ा भिन्न तो अवश्य था। किन्तु कुछ सप्ताह बीतने पर, मुझे अंतर का पता लगने लगा। एक नयी मैं, अपने आप से अपरिचित। मैं गुरुजी की कृपा से परास्त हो गयी थी। मैं उनकी रोग समाप्ति की क्षमता की कायल हो गयी थी। उनके लिए मेरे प्रेम और आदर भाव और अधिक प्रबल हो गये।

मौसम बदल कर आते गये पर मुझे फिर कभी अस्थमा नहीं हुआ। मैं दिल्ली की प्रदूषित वायु में किसी भी अन्य नागरिक के समान श्वास लेती रही। गुरुजी ने मुझे नवजीवन प्रदान किया था और यह भी बताया कि उनके हस्तक्षेप के बिना मेरा और जीना असंभव था। उसी वर्ष के शुरु में मैं एक ज्योतिषी से भी मिली थी जिसने मेरी अल्पायु की भविष्यवाणी करी थी।

मुझ में हुए परिवर्तन को शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए अत्यंत चुनौती भरा कार्य है। मैं इतना तो कह ही सकती हूँ कि उन्होंने मुझे केवल भौतिक ही नहीं, अपितु आंतरिक रूप से भी परिवर्तित कर दिया था। एक लम्बे अंतराल के पश्चात्, शब्दों को अभिव्यक्ति दें तो, मुझे अपनी त्वचा में अपना शरीर अच्छा लगने लगा।

गुरुजी यदा कदा अपने भक्तों का परीक्षण करते रहते हैं। मानव अपनी स्वार्थी प्रकृति के कारण कामना पूर्ण होने पर पिछली बातें भूल जाता है, पर गुरुजी की कृपा तो जन्म जन्मान्तर, सदा बनी रहती है। यह इस सन्दर्भ से स्पष्ट हो जायेगा।

गुरुजी ने मुझे अपने चित्र के समक्ष प्रतिदिन एक मोमबत्ती जलाने

को कहा था। एक दिन, मेरे विस्मय से, आधी डिबिया समाप्त होने के बाद भी वह नहीं जली। आवेश में आकर मैं स्नानागार में चली गयी, बाहर आयी तो देखा कि मोमबत्ती जल रही थी। मैं चकित रह गयी।

उसी सांझ को गुरुजी को धन्यवाद प्रकट करने के लिए मैं उनके दर्शन के लिए गयी, यद्यपि वह मेरा जाने का निर्दिष्ट दिन नहीं था। मैं जैसे ही उनके चरण स्पर्श करने के लिए झुकी उन्होंने धीमे से अपनी दयालु आवाज में प्रश्न किया कि अंत में मोमबत्ती जली या नहीं। तब मुझे आभास हुआ कि मैं उनसे दूर हो रही थी, वह तो सदा मेरे साथ थे। मैं उनकी हार्दिक आभारी हूँ और हर क्षण उनकी कृतज्ञ रह कर जीवन व्यतीत करना चाहूंगी।

–एक भक्त

विवाह के छः वर्ष उपरान्त

यद्यपि हमारे विवाह को कुछ समय हो चला था, हमारी कोई संतान नहीं थी। मेरे पति अपनी चिकित्सा अवश्य करवा रहे थे, पर हमें प्रथम प्रगति, जनवरी 1994 में, गुरुजी से मिलने के उपरान्त ही दृष्टिगोचर हुई। मेरे पति की अवस्था में 20 प्रतिशत का अंतर आया।

कुछ अंतराल के पश्चात् गुरुजी ने हमें संतान होने का आशीर्वाद दिया पर यह भी कहा कि मेरी गर्भाशय की नलियों में समस्या उत्पन्न होगी। परीक्षण करने पर सब परिणाम सामान्य आये।

अगले वर्ष मैं गर्भवती हो गयी। गुरुजी के कथन के सन्दर्भ में मैंने चिकित्सकों से निवेदन कर सब परीक्षण करवाये। पराध्वनिक विशेषज्ञ ने गर्भाशय में कोई असामान्यता नहीं देखी। कुछ दिन उपरान्त उन्होंने पाया कि बच्चे के विकास की गति अति धीमी है और डी एन सी का परामर्श दिया। इसके दस दिन बाद मेरे उदर में अत्याधिक दर्द के कारण जब मुझे अपनी चिकित्सिका के पास ले जाया गया तो परीक्षण में पता लगा कि भ्रूण नली में बढ़ रहा था। एक नली फट चुकी थी और दूसरी में छेद हो गया था।

फिर गुरुजी की कृपा से 2000 मैं पुनः गर्भवती हुई – विवाह के छः वर्ष बाद – और एक सुन्दर बच्ची को जन्म दिया। मेरी पीड़ा प्रातः 5 बजे आरम्भ हुई और अपराह्न तक पूर्ण पीड़ा में होने पर भी बच्ची सीधी नहीं हुई थी। यह शल्य क्रिया करवाने की परिस्थिति उत्पन्न हो गयी थी; यह भी पता लगा कि गर्भनाल रज्जु शिशु के गले में फंसा हुआ था। गुरुजी से प्रश्न करने पर उन्होंने प्रतीक्षा करने को कहा। रात्रि 9 बजे शिशु ने पलटी ली और मुझे सामान्य प्रसव हुआ। गुरुजी की कृपा से सब अच्छा हो गया। यह चमत्कार केवल गुरुजी कर सकते थे और इसके लिए मैं उनकी हार्दिक आभारी हूँ।

–एक भक्त

विवाह रक्षक गुरुजी

मैं गुरुजी को जितना भी धन्यवाद दूँ वह कम है। हम गुरुजी के पास अपने व्यापार संबंधी समस्या लेकर पहुंचे थे और उन्होंने हमें तुरन्त अपनी शरण प्रदान करी। परन्तु अभी उससे भी बड़ी परीक्षा शेष थी।

मेरे विवाह को 35 वर्ष बीत चुके थे। हमारे एक पुत्र और एक कन्या हैं – दोनों विवाहित, और घर में एक पोती भी है। कहते हैं किसी को भी जीवन में सब सुख प्राप्त नहीं होते... मेरे पति की आदतों में बहुत सुधार संभव था। वह जीवन को आनंदपूर्वक जीना चाहकर भी परिवार के किसी उत्तरदायित्व को लेने को तैयार नहीं थे। और जब वह मद्यपान करते थे मुझे भय लगता था – वह आक्रामक और अत्याचारी हो जाते थे।

गुरुजी की दया से मेरे बच्चे सदा मेरा आधार रहे हैं। मैं गुरुजी के पास आकर उनसे अपनी पुत्री के लिए संतान की कामना करती थी। अपितु गुरुजी पहले मेरे परिवार का वातावरण स्वच्छ करना चाह रहे थे। संतान सुख देना तो उनके लिए कोई समस्या नहीं थी।

एक दिन मैं गुरुजी के दर्शन के बाद घर पहुँची तो मेरे पति वहां पर नहीं थे। मुझे कोई चिंता नहीं हुई क्योंकि वह गोल्फ खेलते हैं और सप्ताह में चार दिन देर से आते थे। बासठ वर्ष की आयु में भी उन्हें अपने मित्रों के साथ मद्यपान कर भोजन करने की आदत थी। मैंने क्रोध और प्रेम के दोनों मार्ग अपना कर देख लिए थे पर कभी सफलता हाथ नहीं लगी थी। मैं कभी उनका विरोध नहीं कर सकी क्योंकि फिर वह अपना हाथ उठाने लगते थे। मुझे अत्यंत भय लगता था।

अक्सर रात को उनके घर में प्रवेश करते समय, किसी भी हंगामे की आशंका से, मैं सोने का बहाना करती थी। उस रात मैंने अपने सिरहाने की बत्ती बंद करी ही होगी कि मुझे गुरुजी की आवाज का आभास हुआ जैसे उन्होंने कहा कि मालूम करो तुम्हारे पति कहाँ हैं। मैंने बत्ती पुनः जलाकर उनसे अपने मोबाईल पर संपर्क स्थापित करने का प्रयास किया। गुरुजी की दया से उनका मोबाईल काम कर रहा था और मैंने उनको एक स्त्री से बात करते हुए सुना। मेरे पति एक और स्त्री के साथ थे – ऐसा लगा कि वह उनकी प्रेमिका थी। मैं स्तब्ध रह गयी।

मुझे पता था कि जब वह युवा थे वह लड़कियों के साथ घूमा करते थे। जब भी मैंने आशंका जतायी थी उन्होंने कहा कि एड्स के कारण वह ऐसा करने की सोच भी नहीं सकते। चूँकि मेरे पति अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखते थे और इतने आत्मविश्वास के साथ बोलते थे कि मुझे उन पर कभी शंका नहीं हुई।

अतः इस प्रेम सम्बन्ध से मुझे बहुत आघात पहुंचा। मैंने अपनी बुद्धि पर नियंत्रण रखते हुए अपनी पुत्रवधू को भी फोन पर हो रही बात सुनवाई। मुझे पता था कि इसमें प्रमाण की आवश्यकता होगी, अन्यथा वह मुझ पर अत्याचार करेंगे। मेरा बेटा उस समय दिल्ली से बाहर था।

गुरुजी, मैं क्षमा प्रार्थी हूँ कि उस दिन उनके वापस आने पर मैंने उनको मारा और घर से निकाल दिया। वह नशे में इतने धुत्त थे कि उन्हें पता ही नहीं लगा कि क्या हो रहा है। उन्हें दस दिन तक घर से बाहर

रखा गया – बीच बीच में वह आकर क्षमा मांगते रहे। उनमें अभूतपूर्व अहंकार रहा है और कभी शर्मिंदगी प्रकट नहीं करते थे।

इस घटना के दो माह उपरान्त उनमें बहुत परिवर्तन दिखायी दिया। मुझे 35 वर्ष तक कष्ट देने के बाद वह भले मानुस हो गये। आज वह मुझसे, अपने बच्चों और पौत्री से अति प्रेम करते हैं। यदि आजकल वह कभी नशा करते भी हैं तो बहुत रोकर क्षमा याचना करते हुए कहते हैं कि वह अच्छे इंसान हैं और उन्होंने मुझे बहुत कष्ट दिये हैं।

गुरुजी की कृपा से मैं सब कुछ भूल गयी हूँ। मेरे पति और मेरा आगाढ़ प्रेम नव विवाहित दम्पति सा है।

गुरुजी उन सब कष्ट सहने वाली महिलाओं को अपनी कृपा से धन्य करें। मैं सबसे गुरुजी के चरणों में आने का निदेवदन करती हूँ। वह साक्षात् भगवान हैं। मैं उनसे अथाह प्रेम करती हूँ।

– एक भक्त

माँ के आंसू पौंछे

1998 में लाल परिवार का सब कुछ बदल गया। दिल्ली छावनी क्षेत्र में उनके बड़े पुत्र की दुर्घटना में मौत हो गयी थी और श्री कँवर लाल की पत्नी इस मानसिक आघात से बहुत विचलित हो गयी थीं।

फिर परिवार के एक मित्र, श्री प्रेम सिंह, सिंगापुर में भारत के भूतपूर्व राजदूत, अचानक एक दिन उन्हें मिले। स्वाभाविक रूप से उन्होंने परिवार के बारे में पूछा तो उन्हें इस अनहोनी घटना की सूचना भी दी गयी। लाल परिवार से अनभिज्ञ, प्रेम सिंह गुरुजी के अनुयायी थे और उन्होंने उन्हें गुरुजी से मिलने की सलाह दी।

कँवर एम्पाएर एस्टेट में एक दिन सुबह पहुंचे और उन्होंने राजदूत का परिचय पत्र दिखाकर गुरुजी से मिलने की इच्छा व्यक्त करी। द्वार पर ही एक भक्त, सुदामा, ने उनको रोका और कहा कि यह गुरुजी से मिलने का समय नहीं है और वह शाम को आयें। कँवर ने पुनः आग्रह कर सुदामा को वह कार्ड गुरुजी को दिखाने को कहा। पर सुदामा अप्रभावित रहे और व्यथित पिता को बोले कि गुरुजी की संगत शाम को होती है, उसमें अनेकों राजदूत आते हैं, अतः वह भी शाम को ही आयें। कँवर वापस चले गये और उन्होंने अपने मित्र से बात करी तो उन्होंने

भी शाम को जाने को कहा। संध्या को कँवर को उनके मित्र, प्रेम सिंह, एम्पाएर एस्टेट के बाहर प्रतीक्षा करते हुए मिले और वह दोनों अन्दर गये। गुरुजी ने कँवर को अपनी व्यथा व्यक्त करने का अवसर दिया। पत्नी के उपचार के लिए उन्होंने अभिमंत्रित ताम्र लोटे से जल ग्रहण करने को कहा। फिर, जैसे सदा होता आया है, वह जल ग्रहण कर कँवर की पत्नी 15 दिन में ही स्वास्थ्य की राह पर चल पड़ीं। उन्होंने रोना बंद कर दिया, उनका निम्न रक्तचाप सामान्य हो गया और उन्हें स्वस्थ प्रतीत होने लगा।

मई 2000 में परिवार ने गुरुजी के पास आना आरम्भ कर दिया।

परिवार कुछ दिनों के लिए मनाली गया था। जब वह वापस दिल्ली आये तो कँवर को पता लगा कि उन्हें स्थानांतरित कर नया कार्य सौंप दिया गया है। अब उन्हें अंतर्राष्ट्रीय विमान पतन छोड़ कर 15 जुलाई से नई दिल्ली में सीमा शुल्क भवन में बैठना पड़ेगा। सतगुरु के पास जाने पर उन्हें पुनः छुट्टी पर जाने का सुझाव दिया गया। यह घटना 24 जून 2000 की है। उस समय तक कँवर के मन में गुरुजी के लिए पूर्ण विश्वास जागृत नहीं हुआ था – ऐसा वह अब कहते हैं। उनकी अवहेलना करते हुए कँवर ने कार्यालय जाना आरम्भ कर दिया। उसी सप्ताह सीमा शुल्क विभाग के 48 अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही आरम्भ कर दी गयी। कँवर भी उनमें से एक थे। यदि उन्होंने गुरुजी का कहा माना होता तो उनका नाम नहीं आता।

कँवर ने यह समस्या पुनः गुरुजी के समक्ष व्यक्त करी तो सर्वज्ञाता ने उन्हें चिंतामुक्त रहने के लिए कह कर एक और समस्या की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया: उनकी बेटी का विवाह। कँवर को संतोष तो नहीं हुआ पर तथ्यों से स्पष्ट होता है कि उनकी चिंता निराधार थी। 48 नामांकित अधिकारियों में से 33 के विरुद्ध कार्यवाही हुई। सूची क्रम में कँवर और उनके नीचे के समस्त अधिकारियों का नाम नहीं लिया गया। तत्पश्चात् उन 33 अधिकारियों पर अभियोग लगाते समय भी कँवर का नाम कहीं नहीं था।

विवाह के लिए गुरुजी मध्यस्थ बने

गुरुजी के कहने पर कँवर ने अपनी बेटी के लिए वर ढूंढना आरम्भ कर दिया। भारतीय तेल निगम के एक यांत्रिक इस सम्बन्ध के लिए उचित लगे थे और परम्पराओं के अनुसार अपने माता पिता के साथ उनके यहाँ आ रहे थे। उस अति महत्त्वपूर्ण भेंट से पूर्व, गुरुजी ने, कँवर को बुलाकर वर के पिता को सफेद रसगुल्ला खिलाने को कहा।

लड़के के माता पिता के लिए अति सुन्दर भोजन परोसा गया। उसके बाद पहले कँवर, फिर उनकी पत्नी और अंत में उनके पुत्र ने वर के पिता को रसगुल्ले प्रस्तुत किये। पर हर बार, जिसके कारण सतगुरु को ही ज्ञात होंगे, उन्होंने मना कर दिया। कँवर के परिवार को अब तक गुरुजी के तौर-तरीकों से पता लग गया कि कुछ बात अवश्य है। जब वह शाम को गुरुजी के दर्शन के लिए एम्पाएर एस्टेट आये तो गुरुजी ने संक्षेप में कहा कि गुलाब के पुष्प में भी कांटे होते हैं। परिवार समझ गया कि वह लड़का उचित नहीं था और उस ओर से भी मनाही आ गयी।

कुछ समय बाद एक और सुयोग्य लगता हुआ वर मिला - दिल्ली में कार्यरत एक न्यायिक मजिस्ट्रेट। वह घर पर कँवर की बेटी से आकर मिला और वहां से जाने के बाद, कँवर को फोन पर कहा कि उसे यह सम्बन्ध स्वीकार है। साथ ही उसने अपने माता पिता की स्वीकृति भी लेने को कहा। लाल परिवार उसके माता पिता को मिलने उसके मूल स्थान भी गये। पर उनसे कोई उत्तर नहीं आया। एक दिन गुरुजी ने कँवर को फोन किया और अचानक ही पूछा कि दिल्ली में सबसे अच्छी चाट कहाँ मिलती है। कँवर ने उत्तर दिया कि उनकी जानकारी में सबसे अच्छी चाट शाहजहाँ मार्ग पर संघ लोक सेवा आयोग के भवन के कोने पर मिलती है। गुरुजी ने उन्हें वहां शाम 6:30 बजे पहुंचने के लिए कहा।

6:30 बजे गुरुजी वहां कुछ अनुयायियों के साथ पहुँच गये। चाट

के आने पर गुरुजी ने एक प्लेट कँवर को देते हुए बेटी का विवाह निश्चित होने पर बधाई दी। उपस्थित अनुयायियों ने भी ऐसा ही किया। कँवर को समझ नहीं आ रहा था कि क्या हो रहा है। क्योंकि केवल उन्हें पता था कि लड़के वालों से पिछले दो माह से कोई उत्तर नहीं आया था। किन्तु शीघ्र ही वह समाचार भी आ गया। सदा की भांति गुरुजी के शब्द सत्य सिद्ध हुए।

दामाद पर उपकार

कँवर के दामाद विभागीय परीक्षा में एक को छोड़ कर सब विषयों में उत्तीर्ण हो गये थे। यह उन्हें विचित्र लग रहा था। कँवर ने इसका उल्लेख गुरुजी से किया। सतगुरु ने उत्तर दिया कि उसे तो सब विषयों में उत्तीर्ण हो जाना चाहिए था और हो जाएगा। कँवर को लगा कि गुरुजी संभवतः किसी की ओर संकेत कर रहे हैं जिसने उनके दामाद की उन्नति में बाधा डाली है। शीघ्र ही उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के पूरे समुदाय ने उनके दामाद की परीक्षा की समालोचना करी। उनकी कार्यशैली और वार्षिक गोपनीय रिपोर्टों के आधार पर उनके पक्ष में निर्णय लिया और उत्तीर्ण घोषित कर दिया।

पुत्र रक्षा

कँवर के पुत्र रोहित को गुड़गाँव से बाहर सोहना - पलवल मार्ग पर स्थित एपीजे यांत्रिक महाविद्यालय में प्रवेश मिलने के बाद वहां के छात्रावास में स्थान नहीं मिल रहा था। अपने एक पुत्र को दुर्घटना में खोने के बाद कँवर उसे प्रतिदिन 65 किलोमीटर दूर की यात्रा कराने में हिचक रहे थे पर गुरुजी ने आश्वासन दिया। फिर जैसे नियति थी, एक दिन जिस गाड़ी में वह यात्रा कर रहा था, एक ट्रक से दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। वाहन चालक एक आँख खो बैठा और अन्य सब छात्र भी घायल हुए। पर रोहित को, जैसे गुरुजी की इच्छा थी, एक खरोंच भी नहीं आयी।

कँवर जब उस शाम को संगत में पहुंचे तो गुरुजी ने कहा कि उन्होंने उनके पुत्र की रक्षा करी थी। गुरुजी की कृपा उसके बाद भी उस पर बनी रही। वह अपने तृतीय वर्ष में प्रवेश नहीं पा रहा था क्योंकि उसका प्रथम वर्ष के प्रथम सत्र का एक विषय शेष था। जब गुरुजी को इस बारे में पता लगा तो उन्होंने कहा कि उसे प्रवेश मिल जाएगा।

फिर जैसे विधाता की इच्छा थी, एपीजे ने अपने नियम बदल दिये। अब यदि विद्यार्थी 20 में से 18 विषयों में उत्तीर्ण हो तो वह तृतीय वर्ष में प्रवेश कर सकते थे। इस प्रकार रोहित तृतीय वर्ष में प्रवेश कर सका। यह वास्तव में गुरु कृपा ही थी, क्योंकि अगले वर्ष एपीजे ने पुनः पुराना नियम घोषित कर दिया। स्पष्ट है कि नियमों को सतगुरु की अभिलाषानुसार बदलना पड़ता है।

शल्य क्रिया बिना उपचार

कँवर की सास की दिल्ली के सर गंगाराम चिकित्सालय में शल्यक्रिया होनी थी क्योंकि उनके दायें घुटने में बहुत पीड़ा थी। परन्तु गुरुजी ने उसके लिए मना कर दिया; साथ ही यह निर्देश भी दिया कि उनको चिकित्सालय के आसपास भी नहीं ले जाना है। सतगुरु ने पुनः अभिमंत्रित ताम्र लोटे का उपचार करवाया जिससे चमत्कार हुआ। उनके घुटने की वेदना एक माह में समाप्त हो गयी और वह उसे पहले जैसे हिला डुला भी सकती थीं।

– कँवर लाल, दिल्ली द्वारा कथित

सपरिवार गुरुजी के कमल चरणों में

हम गुरुजी के पास फरवरी 1999 से आते रहे हैं। हमने गुरुजी की प्रतिभाओं और कृपा के बारे में बहुत सुना था किन्तु जब उनके दर्शन हुए तो वह हमारी आशा से कहीं अधिक थीं।

सबसे पहले मेरी पत्नी लाभान्वित हुई। वह पेट के निचले भाग और पीठ में किसी ऐसे रोग से ग्रस्त थी जिसका निदान नहीं हो पा रहा था और उसकी वेदना बढ़ती जा रही थी। उसने गुरुजी से प्रार्थना करी जिससे वह उनके दर्शनों के लिए आ सके। एक दिन उनके समक्ष बैठे हुए उसे अपने शरीर में उस रोग ग्रस्त स्थान पर सिरहन का आभास हुआ। उस दिन के उपरान्त अब तक उसे कभी कोई पीड़ा नहीं हुई है।

मेरे बच्चों को भी गुरुकृपा का सौभाग्य मिला है। मेरी बेटी पढ़ाई में अच्छी नहीं थी और दसवीं कक्षा में वह द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुई थी। पर बारहवीं कक्षा में गुरुजी उसके साथ थे और उसे उसमें उत्तम

अंक प्राप्त हुए। इन्द्रप्रस्थ महाविद्यालय में कानून के पञ्च वर्षीय पाठ्यक्रम की प्रवेश परीक्षा में भी उसे अति उच्च स्थान प्राप्त हुआ। अध्ययन के अंतिम वर्ष में उसने अपना प्रशिक्षण एक अति विशिष्ट कानून संस्था के साथ किया और अब वह अति उत्तम स्थान पर कार्यरत है।

मेरे पुत्र की समस्या भिन्न प्रकार की थी। वह उग्र स्वभाव का था और किसी का कहना नहीं मानता था। उसका अध्ययन में मन नहीं लगता था और हम सब उसके बारे में चिंतित रहते थे। गुरुजी ने उसे एक अभिमंत्रित चांदी का कड़ा पहनने को कहा। शीघ्र ही उसमें अभूतपूर्व परिवर्तन दिखायी दिया और वह ठीक से अध्ययन करने लगा। गुरुजी की दया से अब वह एक इलेक्ट्रोनिक यांत्रिक है और एक प्रसिद्ध संस्था के साथ कार्यरत है। वह हम सबसे प्रेम करता है और गुरुजी का चित्र सदा अपने साथ रखता है।

एक बार अपने मित्रों के साथ जाते हुए कार दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। कार तो बेकार हो गयी पर गुरुकृपा से कार में सब सवार सुरक्षित रहे।

गुरुजी ने मेरी भी सहायता करी है। अक्टूबर 2003 में, जब मैं सार्वजनिक निर्माण विभाग से सेवानिवृत्त होने को था तो मुझे मिलने वाले भत्तों में अड़चन उत्पन्न हो गयी। मेरे विरुद्ध झूठे आरोप लगा दिए गये। किन्तु गुरुजी की कृपा से सब समस्याएं दूर हो गयीं और आरोप भी वापस ले लिए गये। अब मैं दिल्ली में एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था के साथ कार्यरत हूँ।

गुरुजी की दया की कोई सीमा नहीं है – केवल पूर्ण आस्था होनी चाहिए।

गुरु नानक के दर्शन

एक बार गुरुजी एक विवाह समारोह में चंड़ीगढ़ गये थे और हम उनके साथ थे। उन्होंने हमें स्वर्गीय श्री गिल के घर जाने का आदेश

दिया। उनका घर गुरुजी के मंदिर की भांति सजा हुआ था। गुरुजी के जीवनाकार चित्र और मंदिर के प्रतिरूप में सजे भवन में दिव्यता झलक रही थी। वहीं पर गुरुजी के एक चित्र को देखते हुए उनके मस्तक में गुरु नानक का चेहरा दिखायी दिया। हमें पता लगा कि गुरुजी वहां पर कुछ घंटे रहे थे। पूरे वातावरण में गुरुजी की सुगन्ध आ रही थी।

एक अन्य अवसर पर, जब मेरी पत्नी गुरुजी के समक्ष ध्यान मुद्रा में थी तो उसे गुरुजी के हाथ में पकड़े हुए ग्लास में सर्प दिखायी दिया। आज भी हम उन्हें अपने आस पास अनुभव कर सकते हैं जैसे वह हमें अपना आशीष और सुरक्षा दे रहे हों। उनकी शरण में आये हुए भक्तों की बढ़ती हुई संख्या देखकर अति प्रसन्नता होती है।

–जी पी सिंह, दिल्ली

वास्तविक चमत्कार : गुरुजी के पथ पर

कौन कह सकता है कि उसने ईश्वर के दर्शन किये हैं? मैं कह सकती हूँ। गुरुजी मेरे परमेश्वर हैं। मुझे प्रतीत होने लगा है कि कोई देवता मेरे गुरु सदृश नहीं है। वह महान हैं, उनके जैसा न कोई कभी हुआ है और न ही कभी होगा। किसी को उन्हें अपने कष्ट बताने की आवश्यकता नहीं है। वह सब जानते हैं। एक बार उनके पथ पर अग्रसर होने के पश्चात् कर्म स्वयं होने लगते हैं। आपको उनमें मात्र विश्वास करना है, आस्था रखनी है और कभी कुछ मांगना नहीं है।

मेरे पुत्र उद्धव को डेढ़ वर्ष की आयु से अस्थमा रहा था। जब मैंने गुरुजी को बताना चाहा तो उन्होंने मुझे रोक दिया और कहा कि ऐसे मैं स्वयं अपना अहित करूंगी। यह कथन उनका आदेश था, मैं चुप हो गयी।

इसके ढाई वर्ष बाद गुरुजी हमारे घर एक विवाह के अवसर पर आये और उन्होंने उद्धव को एक ग्लास जल पीने के लिए दिया। मेरे पुत्र को गुरुजी का आशीष मिल गया था। उस जल को पीने के बाद उसे कभी अस्थमा का दौरा नहीं पड़ा। उसमें अभूतपूर्व सुधार हुआ। उसकी लम्बाई बढ़ गयी, उसका वजन भी बढ़ा और अब वह एक सक्रिय बालक है।

मेरे पति को भी दमा था। जब वह गुरुजी से पहली बार मिले तो गुरुजी ने कहा कि वह अत्यंत अन्धविश्वासी हैं। उनके इस कथन के साथ ही उनकी आधी समस्याएँ तो तुरन्त ही समाप्त हो गयीं। गुरुजी ने उनको ताम्र लोटे से जल पीने को कहा और शीघ्र ही उनके अस्थमा की भी इति हो गयी।

मुझे भी गुरु कृपा प्राप्त हुई। मेरी आँख में एक पुटक था और चिकित्सक ने उसे साधारण शल्य क्रिया से निकालने का सुझाव दिया था। मैं भयभीत थी। एक वृहस्पतिवार को गुरुजी मुझे बहुत ध्यान से देख रहे थे। मुझे पता था कि उनके इस प्रकार देखने का कारण होगा। अगले दिन प्रातः मेरी आँख बिल्कुल सामान्य थी। गुरुजी अपनी दृष्टि से उसी प्रकार के चमत्कार कर देते हैं, जिस प्रकार शब्दों से।

पांच वर्ष पूर्व मेरे ससुर को हृदय का दौरा पड़ा था। उन्हें मलेर कोटला के हृदय रोग संस्थान ले जाया गया जहाँ उनकी एंजियोप्लास्टी होनी थी। गुरुजी ने कहा, "*कल्याण हो गया*" और उसके बाद सब ठीक हो गया। जब वह वहां से निवृत होकर घर लौट रहे थे, तो हृदय रोग विशेषज्ञ ने बताया कि उनके हृदय की अग्रिम स्नायु क्षतिग्रस्त है और उसमें कोई सुधार संभव नहीं है।

घर लौटते हुए जब हमने गुरुजी के दर्शन किये तो उन्होंने उन्हें शुद्ध देशी घी से बना हुआ हलुवा खाने को दिया। इसके उपरान्त मेरे ससुर अपना सामान्य कार्य करने लगे। औषधि के रूप में गुरुजी ने उन्हें प्रतिदिन व्हिस्की के दो पेग पीते रहने को कहा।

तीन माह के उपरान्त जब उनका टी एम टी परीक्षण हुआ तो चिकित्सकों ने देखा कि उस मृत घोषित स्नायु में रक्त प्रवाह हो रहा था। यह अनुभव गुरुजी के क्रियात्मक रूप को साकार करते हैं। वह सब कुछ करने की क्षमता रखते हैं। उनके शब्दकोष में कुछ भी असंभव नहीं है - केवल श्रद्धा, निष्ठा और धैर्य की आवश्यकता है।

- श्रीमती गायत्री सब्बरवाल, गुड़गाँव

सर्वोपरि गुरुजी

निःसंदेह मैं कुछ चमत्कारिक और ईश्वरीय संस्मरणों का वर्णन करना चाहती हूँ। मैं उन कुछ भाग्यवानों में हूँ, जो प्रभु की उपस्थिति और कृपा पाकर धनी और कृतज्ञ हुए हैं। इस प्रभु को हम गुरुजी के नाम से जानते हैं। गुरुजी – उनके बारे में मैं क्या कहूं? वह तो सर्वोपरि हैं, वह सर्वोच्च हैं। उन्हें प्रतिदिन स्मरण करना चाहिए।

जन्म से मुझे गुरुजी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। सुख दुःख में वह सदा मुझे और मेरे परिवार को आधार देते रहे हैं। उन्होंने हमें बताये बिना ही, हमें हमारे कष्ट और कुकर्म, ज्ञात या अज्ञात, दोनों से मुक्त किया है। आज आपके सम्मुख उस दयावान के साथ अपनी आपबीती बाँट कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

पान के पत्तों से पुटक की चिकित्सा

मुझे अब तक वह दिन याद है जब मैंने अपने जीवन की सबसे

अधिक पीड़ा का अनुभव किया था। मैं 15 वर्ष की थी और हम जालंधर में रहते थे। स्नान करते हुए अचानक मुझे अपने पेट के निचले हिस्से में अत्याधिक दर्द हुआ। वेदना इतनी अधिक थी कि मैं खड़ी भी नहीं हो पा रही थी। मैं वहीं स्नानकक्ष में लेट गयी थी और अपनी माँ को पुकार रही थी। स्वाभाविक रूप से सबको तुरन्त गुरुजी की याद आयी जो उन दिनों पंचकूला में थे और वहीं पर संगत करते थे। हम उसी दिन पंचकूला के लिए चल पड़े। चंडीगढ़ पहुंच कर गुरुजी के पास जाने से पूर्व हमने पी जी आई और कुछ अन्य निजी केन्द्रों में परीक्षण करवाना उचित समझा।

परिणाम आने पर हम चकित रह गये। मेरे गर्भाशय में एक पुटक फूट गया था; उससे विषैला पदार्थ निकल कर शरीर में फैल रहा था। यदि उसे निकाला नहीं जाता तो वह प्राणघातक सिद्ध होता। चिकित्सकों ने तुरन्त शल्य क्रिया कराने को कहा तो हमने मना कर दिया। उसी संध्या को हम गुरुजी के पास पहुंचे और उनको स्थिति से अवगत किया। उन्होंने अपनी सर्व प्रसिद्ध मुस्कान देते हुए चिंता मुक्त होने को कहा। उन दिनों वह पान के पत्तों को अभिमंत्रित कर रोग के स्थान पर रख देते थे। यह गुरुजी की शल्य क्रिया थी। मुझे लिटा कर उन्होंने वैसा ही किया और 10 –15 मिनट विश्राम करने को कहा। उसके पश्चात् उन्होंने मुझे अगले दिन पुनः परीक्षण करवाने को कहा।

उनमें विश्वास और आस्था बनाये रखते हुए मैंने वैसा ही किया। यद्यपि मुझे परिणामों का ज्ञान था, चिकित्सकों के अवाक चेहरों को देखकर मुझे अपने ईश्वर, गुरुजी पर पूर्ण विश्वास हो गया। परीक्षण में 20 घंटे पूर्व दिखे हुए पुटक या विषैले पदार्थ का कोई चिह्न नहीं था।

प्रसन्नता के साथ होने वाले अचम्भे को हम रोक नहीं पा रहे थे। चिकित्सक भी गुरुजी के बारे में जानने के लिए उतने ही उत्सुक थे जितना हम उनको बताने के लिए। उसके उपरान्त उन चिकित्सकों की आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत हुई।

उस दिन शाम को मैं फिर उनके पास गयी। जैसा सर्व विदित है

उनको कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं थी; उन्हें इसका ज्ञान पहले से ही था। उन्हें अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं थे, पर वह यह नहीं चाहते। उन्हें केवल हमारा प्रेम और निःस्वार्थ आस्था चाहिए, जिसके साथ हम परम आनंद की कठिन यात्रा पर अग्रसर होते रहें।

मेरी दादी का हृदय रोग

1989 में जब मैं छोटी ही थी मेरी दादी को हृदय का दौरा पड़ा था। वह सी एम सी, लुधियाना के चिकित्सालय में प्रविष्ट थीं। कई चिकित्सकों से सलाह करने के बाद उन सबका एक ही निर्णय था – उनकी स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ रही थी और कोई उपचार संभव नहीं था। उनकी नाड़ी 160 – 190 के बीच में रहती थी, उनके फेफड़ों में पानी भरा हुआ था और उनकी छाती फूल गयी थी। वह अर्ध चेतन अवस्था में थीं।

गुरुजी उन दिनों जालंधर में संगत किया करते थे। चिकित्सकों के प्रतिकूल निर्णय सुन कर मेरे पिता ने मुक्तिदाता से बात करने का निर्णय लिया। जैसे मेरे पिता चिकित्सालय से बाहर जा रहे थे, गुरुजी ने प्रवेश किया। ऐसा लगा जैसे वह अचानक ही आ गये हों। उनके आते ही हम आश्वस्त हो गए कि सब ठीक हो जाएगा। दादी के पास जाकर उन्होंने उनकी नाड़ी को अपने हाथ में लिया। उन्होंने क्या किया, इसका ज्ञान तो उन्हीं को है पर उसकी गति घट कर 90 हो गयी। वहीं पर गुरुजी ने कुछ देर तक पाठ किया और फिर वह चले गये। शनैः शनैः हमारे सामने ही दादी की चेतना लौट आई और वह सामान्य हो गयीं। 18 वर्ष पूर्व के उस दिन से दादी की नाड़ी की गति अब तक 90 ही है।

एक बार फिर चिकित्सक विश्वास नहीं कर पा रहे थे। यह जान कर कि गुरुजी सदा हमारे साथ हैं हम भावविभोर थे। गुरुकृपा से आज भी मेरी दादी स्वस्थ और प्रसन्नचित हैं।

अपने अनुभवों का वर्णन कर मैं अत्यंत भाग्यशाली हूँ। हमारी जीवन यात्रा बहुत छोटी है और इस में ही हम बड़े बड़े दुष्कर्म करने को तत्पर हो जाते हैं। प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मों के फल तो भुगतने ही पड़ेंगे।

अपनी आध्यात्मिक यात्रा कभी भी प्रारम्भ करी जा सकती है। हम उसे अभी, इसी क्षण शुरू कर सकते हैं और अपने जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं। गुरुजी सच्चे भक्त की सहायता करने को सदैव उद्यत हैं। हम उस शाश्वत आनंद का मीठा अमृत कभी भी ग्रहण कर सकते हैं, क्योंकि हमारे परमात्मा, हमारे गुरु सदा हमारे साथ हैं। उन्होंने मुझे उस अनंत सत्य अवस्था को ग्रहण करने के लिए जागृत किया है और स्वयं उस मार्ग पर ले जा रहे हैं। उनसे प्रेम करने का अर्थ परमात्मा से प्रेम करने सदृश है और उनका आशीष ग्रहण करने की भांति है।

– गीतन संघेड़ा, जालंधर

18 वर्ष की वेदना: 18 दिन में समाप्त

मेरी पत्नी 18 वर्ष से रोग ग्रस्त थी। 1982 में उसके शरीर की गांठें उभर आयी थीं जिनमें तपेदिक रोग के कीटाणु थे। अति क्षीण काया और तीव्र औषधियों के कारण उसे विभिन्न प्रकार के रोग होने लगे - उदर का नासूर, पित्ताशय की पथरी, अंत्र वृद्धि, कर्ण अर्बुद, गर्भाशय के रोग आदि।

हमने हर प्रकार की चिकित्सा कर ली - एलोपेथी, होम्योपेथी, आयुर्वेदिक, यूनानी - यहाँ तक कि रेकी भी। परन्तु सब प्रयास विफल रहे, उसके शरीर पर नये रोग प्रकट होते रहे। 1987 और 1999 की अवधि में उसकी पांच बड़ी शल्य क्रियाएँ हुईं। उसकी भूख समाप्त हो चुकी थी और वह कभी पूरा भोजन नहीं कर पाती थी। उसकी श्रवण शक्ति आधी रह गयी थी। ऊपर से ज्योतिषियों की भविष्यवाणी के अनुसार उसका जीवन इतना ही था। परिवार में सब निराश थे, आशा की कोई किरण दिखायी नहीं दे रही थी। ऐसे समय में गुरुजी के रूप में ईश्वरीय कृपा प्राप्त हुई। उनके बारे में हमें एक पारिवारिक मित्र ने बताया और 20 फरवरी 2000 को उनके प्रथम दर्शन हुए। संगत के उस पहले दिन ही शांति की प्राप्ति हुई और हम आश्वस्त हुए।

चिकित्सकों के अनुसार मेरी पत्नी को किसी भी प्रकार के तेल की चुटकी भर मात्रा से अधिक और मसाले वाला भोजन निषिद्ध था। उसे आठ बजे से पूर्व भोजन करना होता था। संगत में गुरुजी ने, नौ बजे उसे मुट्ठी भर शुद्ध घी से बना हुआ कड़ा प्रसाद दिया और एक घंटे के उपरान्त हमने लंगर किया, जिसमें मसालेदार भोजन था। घर लौटने पर हम सोच रहे थे कि होने वाली यातना को वह कैसे सह पायेगी – घर पर सात बजे भोजन करने पर भी वह व्याकुल रहती थी और आधी रात तक उसे नींद नहीं आती थी। परन्तु उस दिन, 20 फरवरी को, घर पहुँच कर वह मानो घोड़े बेच कर सो गयी। उस दिन से वह बिना किसी परेशानी के सामान्य भोजन करती आ रही है।

मार्च के प्रथम सप्ताह में, महा शिवरात्रि को, हम पहली बार बड़े मंदिर गये। गुरुजी का आशीर्वाद, उनका प्रसाद और लंगर करते ही उसके सब रोग विलीन हो गये। उसे शरीर में एक अद्भुत स्फूर्ति और ताजगी का अनुभव हुआ। कुछ दिन पश्चात् हम फिर चकित हुए जब उसने कहा कि टी वी का स्वर बहुत अधिक है। यह वही थी जिसे अपनी कमजोर श्रवण शक्ति के कारण फोन की घंटी भी सुनायी नहीं देती थी।

18 वर्ष की वेदना 18 दिन में समाप्त हो गयी थी। कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि गुरुजी को कृपा करने के लिए अतिरिक्त समय की आवश्यकता है। वह तो सदा वृष्टि कर रहे हैं, हम योग्य होने पर ही उसे ग्रहण कर सकते हैं। इन महापुरुष के पलक झपकते ही सृष्टि की रचना अथवा इति हो जाती है। अनगिनत आत्माएं शरीर रूप लेती हैं और त्याग देती हैं। हम तो केवल इतना ही कह सकते हैं – ''तुम सम सर नहीं दयाल, मोहे सम सर पापी।''

जिह्वा पर जिप

मेरी पत्नी की दूसरी शल्य चिकित्सा के उपरान्त मैंने उससे परिहास किया था कि वह अपने शरीर पर जिप लगवा ले क्योंकि

चिकित्सक सदा शल्य क्रिया का सुझाव देते रहते हैं। एक दिन संगत में जब मैं अपने संस्मरणों का वर्णन कर रहा था, गुरुजी ने मुझे यह बात भी बताने को कहा। उन्होंने उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जिन्हें मैंने अपनी पत्नी से अपनी आपसी वार्ता में दस वर्ष पूर्व किया था।

गुरुजी की सर्वज्ञता कभी कभी अचानक प्रकट होती है। मेरी बड़ी बहन जब दूसरी बार गुरुजी के दर्शन कर रही थी तो उन्होंने कहा कि वह उनकी अत्यंत पुरानी भक्त है। मैं सोच रहा था कि यह कैसे संभव है। उसी समय मुझे आभास हुआ कि वह बचपन से शिव को पूजती रही है और प्रत्येक सोमवार को व्रत रखती आयी है। यह एक अति महत्त्वपूर्ण क्षण था: गुरुजी ने अपनी वास्तविकता बतायी थी।

गुरुजी की शरण में यह जीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हो चुका है। गुरुजी ने सब भविष्यवाणियों को असत्य सिद्ध कर दिया है और मेरी पत्नी को नव जीवन प्रदान किया है। मुझे प्रतीत होता है कि हम कबीर से भी अधिक भाग्यशाली हैं – वह तो गुरु और गोविन्द, दोनों में से एक के चरण स्पर्श करने की दुविधा में थे। हमारे लिए तो गुरु ही गोविन्द हैं।

यह संगत स्वयं प्रभु के चरणों में बैठ कर अत्यंत गौरवान्वित है। यह हमारा सौभाग्य है कि वह हमें अपने दर्शन, कृपा, स्नेह, निर्देशन और लंगर करने का अवसर प्रदान कर रहे हैं। विनती है कि सबको उनके क्लेशों और कष्टों से मुक्ति मिले। आइये हम सब मिल कर प्रार्थना करें:

मेहरां वाले सैंया राखीं चरना दे कोल,
राखीं चरना दे कोल सानु चरना दे कोल।

–गोपाल सेठी, दिल्ली

दम्पति की मनोकामना पूर्ति

गौरव मारवाहा दिल्ली के सदर बाजार में व्यवसाय करते थे परन्तु उसमें कठिनाईयाँ आ रही थीं। उनके एक घनिष्ठ सम्बन्धी ने उनको गुरुजी के दर्शन करने का सुझाव दिया। वह अपनी पत्नी के साथ मोटर साईकल पर गुरुजी के पास आये। उनकी पत्नी, मोटर साईकल के पीछे बैठे हुए, गुरुजी से प्रार्थना करती थी कि उनको और आरामदायक वाहन मिल जाये।

शीघ्र ही उनका व्यवसाय चल पड़ा और एक मास में ही उस दम्पति ने कार ले ली। उन्हें लगा कि उनका भाग्य पलट गया। एक पुराने अनुयायी ने इसमें गुरुजी का हस्तक्षेप होने की बात करी तो उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया। गौरव की पत्नी ने सोचा कि वह तभी मानेगी जब गुरुजी उसको पहचान जाएंगे। जब वह अगली बार संगत में आये तो गुरुजी ने ऐसे ही वार्तालाप करते हुए कहा कि देखो जनकपुरी से कितने मुसलमान आ रहे हैं। फिर उन्होंने अपना वक्तव्य बदला और बोले कि वह यमुना पार के मुसलमानों की बात कर रहे हैं। गौरव की पत्नी जनकपुरी में रहती थी और गुरुजी के इस कथन के कुछ सप्ताह पश्चात् उन्होंने यमुना पार क्षेत्र में घर ले लिया। वह गर्भवती भी हो गयी।

दिन गुजरते गये और महिला गर्भ परीक्षण के लिए गयी। विशेषज्ञों ने गर्भ सम्बंधित समस्याओं से अवगत कराया और गर्भपात कराने का परामर्श दिया। भक्तों ने दम्पति को बताया कि वह गुरुजी पर आस्था बनाये रखें तो कोई अप्रिय घटना नहीं होगी। वह गुरुजी के पास आते रहे और अंततः उन्हें एक कन्या की प्राप्ति हुई।

2005 में गुरुजी ने अपने जन्मदिवस के अवसर पर गौरव की पत्नी को बुलाया और कहा कि वह बहुत मोटी हो गयी है। वह मुस्कुरा कर चली गयी। गुरुजी के इस कथन के एक मास में ही बिना कोई व्यायाम किये या भोजन पर प्रतिबन्ध करे हुए उसका वजन 15 किलो कम हो गया। दम्पति की पहली धारणा कि उन्होंने कार अकस्मात् ली थी गलत था। गुरुजी स्वयं कहते हैं कि संयोग से कुछ नहीं होता, चुनाव से ही कामना की पूर्ति संभव है; और ईश्वर होने के कारण गुरुजी चयन करते हैं।

–गौरव मारवाहा, दिल्ली द्वारा कथित

आस्था का अमृत

गुरुकृपा का वर्णन करने के लिए यदि मुझे एक लाख जिह्वाएँ भी दी जाएँ तो वह अपर्याप्त होंगी। उनकी अनुकम्पा, प्रेम और संरक्षण के सन्दर्भ, सब की गणना करना असंभव है। प्रथम दर्शन के अवसर से अब तक मैं उनके बारे में उनसे सीख रही हूँ। आज भी, किसी पर गुरुकृपा का सन्दर्भ सुन कर यही प्रतीत होता है कि उनके समक्ष हम सब बालक हैं, सीख रहे हैं।

नवोदय

यह घटना अगस्त 1998 की है। एक दिन मेरे पति अपने कार्यालय से पहले वापस आ गये और बोले कि वह अपने मित्र विंग कमांडर चोपड़ा के साथ गुरुजी के पास जा रहे हैं। उस समय वह किसी संत, सन्यासी या महात्मा पर विश्वास नहीं करते थे, अतः उनका यह निर्णय सुन कर विस्मय हुआ। संध्या को छह बजे जाकर वह अर्ध रात्रि के पश्चात् वापस आये। उनके लौटने पर मैं पूरा विवरण सुनने को उत्सुक

थी। अतः घर आने के बाद जब वह बैठ गये, मैंने उन पर प्रश्नों की बौछार कर दी। क्या गुरुजी उपदेश देते हैं, भविष्य बताते हैं अथवा जीवन की दुविधाओं को दूर करने के लिए रत्न या मन्त्र देते हैं? मेरे पति का उत्तर मेरी आशा के प्रतिकूल था। थोड़े से शब्दों में उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि गुरुजी ऐसा कुछ नहीं करते हैं, उनके यहाँ पर गुरबानी के शबद बजते हैं।

उसके बाद हम सोने लगे और मैंने अपने पति का यह अनुभव एक बीती हुई घटना समझा। मेरा विचार था कि अगले दिन उन्हें पिछली संध्या की बात याद भी नहीं रहेगी। मेरे अचम्भे की कल्पना कीजिये जब मेरे पति ने मुझे अपने कार्यालय से फोन पर कहा कि वह गुरुजी के यहाँ जा रहे हैं और उन्हें आने में देर हो जायेगी। जब वह पिछली रात्रि की भांति देर से आये तो मैंने उनसे एक प्रश्न किया कि ऐसी कौन सी शक्ति है जो आपको वहां ले गयी। उनका उत्तर सरल था, ''वहां पर जो मुझे मिला उसे शब्दों में वर्णन करना कठिन है, उसको केवल अनुभव कर सकते हैं।'' उत्सुकतावश अगले दिन मैंने सपरिवार वहां जाने का निर्णय ले लिया।

गुरुजी के द्वार पर

मेरे पति के तीसरे दर्शन के अवसर पर पूरा परिवार उनके साथ गया। गुरुजी के स्थान से 20 – 30 मीटर दूर से ही तीव्र सुगन्ध आने लगी। जब हमने उस कक्ष में प्रवेश किया, जहाँ गुरुजी बैठे थे, वह सुगन्ध चारों ओर थी। पहली बात जो मेरे मन में आयी कि इन सज्जन ने इतना तेज और अधिक इत्र लगाया हुआ है कि वह सुगन्ध पूरे कमरे में फैल रही है, निश्चित रूप से यह कोई बने ठने, दिखावटी गुरु हैं। मेरे पति के वर्णन करने पर भी, गुरुजी के प्रथम दर्शन मेरे मानसिक चित्रण से बिलकुल भिन्न था।

किन्तु अभी अकल्पनीय होना शेष था। जैसे ही गुरुजी के चरण स्पर्श कर के मैं उठ रही थी, गुरुजी बोले कि गुड़गाँव के संत की भक्त

अंततः आ ही गयी। इस कथन के साथ ही उन्होंने मुझे बता दिया कि उनका मेरे बारे में कितना ज्ञान है। हमारे परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त किसी और को गुड़गाँव वाले संत का पता नहीं था।

श्रद्धा की चुसकीः चाय प्रसाद

गुरुजी के यहाँ चाय पहला और कभी अंतिम पेय होता है। बचपन से मुझे चाय से घृणा रही है। यदि मैं चाय किसी भी रूप में लेती थी तो मेरे मुख में घाव हो जाते थे। मेरे बैठते ही एक सज्जन चाय बांटते हुए आये। मैं दुविधा में थी कि प्रसाद को मना कैसे करूँ? अचानक मैंने देखा कि वह आगे निकल गये। मुझे संतोष हुआ कि न तो मुझे प्रसाद को मना करना पड़ा, न ही चाय पीनी पड़ी। इस विचार के मन में आते ही विपरीत विचार भी उठा कि इस चाय रूपी प्रसाद को ग्रहण न कर मैं गुरु कृपा से वंचित हो रही हूँ। यह सब मेरे मन में हो रहा था पर बाहर ऐसा हो रहा था जैसे मैं बोल रही हूँ। एकदम वह सज्जन पीछे मुड़े और मुझे चाय प्रस्तुत करी। मैं चकित थी; यह ऐसा था जैसे वह मेरे मन में उठ रहे द्वन्द का उत्तर दे रहे हों। मैंने चाय का ग्लास उठाया और परिवार के सदस्यों के विरोध के प्रतिकूल उस ग्लास से चाय पी ली – बचपन से चाय न पीने वाले के लिए एक महत्त्वपूर्ण कर्म। उस दिन अगले कुछ घंटों में, जब तक गुरुजी के यहाँ रहे, मैंने चाय के दो या तीन ग्लास और पिये।

हम गुरुजी के यहाँ रात्रि एक बजे तक रहे। अगले दिन सुबह उठने पर मेरा मुख घाव से भरा होना चाहिए था और उसमें अति वेदना होनी चाहिए थी। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ – मेरा मुख स्वच्छ था और किसी घाव के निशान नहीं थे। सब चकित थे।

आज भी चाय या तो मैं केवल गुरुजी के यहाँ पी सकती हूँ या तब, जब वह मेरे आस पास विद्यमान हों। परन्तु यदि मैं चाय घर पर या कहीं भी और पीऊँ तो मेरे मुंह में घाव हो जाते हैं। इससे गुरुजी की ऊर्जा का आभास होता है, एक जन साधारण पेय को प्रसाद के रूप में

देना, जिसमें रोग और कठिनाईयों को बाहर फेंकने की शक्ति हो। उनके यहाँ मिली हुई कोई भी वस्तु कभी हानि नहीं कर सकती।

चाय पीना आरम्भ करने के उपरान्त हमारे परिवार में और चमत्कार होने वाले थे। सुगन्ध, जिसे मैं गुरुजी का इत्र समझ रही थी, हमारे मुख्य कक्ष में फैलने लगा। हम उसे घर में पाकर मुग्ध हो गये। कुछ समझ नहीं पाने के कारण जब तक वह रही हम अति आनंदित रहे। बाद में पता लगा कि यह तो गुरुजी की स्वाभाविक सुगन्ध है और, जहाँ भी हो उनकी उपस्थिति का आभास देती है। गुरुजी की शरण में आने वाले दिन चमत्कारी रहे।

सर्वशक्तिमान गुरुजी

जीवन में सुख और दुःख एक दूसरे के पर्याय हैं। सुख के समय आप सगे सम्बन्धियों से घिरे रहते हैं पर दुःख के समय केवल गुरुजी आपकी सहायता कर सकते हैं। अन्य व्यक्ति चाह कर भी सहारा नहीं दे पाते क्योंकि अक्सर परिस्थितियों को संभालने में वह उतने ही असमर्थ रहते हैं जितने स्वयं आप। केवल गुरुजी का निस्वार्थ समर्थन आपके साथ रहता है। अपने किये कर्मों के अच्छे और बुरे फल तो भुगतने ही पड़ते हैं। परन्तु गुरुजी के समक्ष प्रकृति भी निसहाय हो जाती है। गुरुजी के किसी भी अनुयायी के प्रतिकूल फल को या तो वे नष्ट कर देते हैं या उसकी मात्रा कम कर देते हैं। इसको साकार करने के लिए गुरुजी अपने भक्तों के कष्ट अपने पर अंतरित कर लेते हैं।

मैंने अनुभव किया है कि कष्ट और पीड़ा दूर करने के लिए गुरुजी विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग करते हैं।

एक बार संगत में बैठे हुए मुझे सिर में तीव्र वेदना हो रही थी। यह इतनी अधिक थी कि मैं कुछ भी खाने, पीने या सोचने में असमर्थ थी। अचानक गुरुजी ने मुझे बुलाया और कहा कि उनके सिर में बहुत दर्द है और मुझे कुछ देर के लिए अपना माथा दबाने को कहा। यह करने के बाद मैं अपने स्थान पर वापस आकर बैठ गयी और अचानक

मुझे लगा कि मेरा सिर दर्द लुप्त हो गया है। अपना सिर दबाने को कह कर उन्होंने मेरी पीड़ा समाप्त कर दी थी।

एक बार मुझे ज्वर ने घेर लिया था और वह कई दिन तक रहा। परीक्षणों और औषधियों के उपरान्त भी वह नहीं उतरा। फिर दो सप्ताह तक तीव्र औषधियों के सेवन से वह कम तो हुआ पर पुनः वापस आ गया। मेरे ज्वर का रूप अनोखा हो गया। दिन के समय तापमान सामान्य रह कर शाम को बढ़ जाता था। चार सप्ताह तक ऐसा ही होता रहा। चिकित्सक कुछ नहीं कर पा रहे थे क्योंकि परीक्षणों के परिणाम अनिर्णायक थे।

फिर एक दिन गुरुजी ने मेरे पति से इतने दिन संगत में मेरी अनुपस्थिति का कारण पूछा। गुरुजी को उत्तर देने पर उन्होंने पांच मिर्चों के प्रयोग की एक विधि बतायी और उसके सेवन मात्र से मेरा एक माह से अधिक अवधि से चला आ रहा ज्वर समाप्त हो गया। शनैः शनैः मैं पुनः स्वस्थ हो गयी।

मैं गुरुजी को एक बार और ज्वर से निकालने के लिए आभारी हूँ। यद्यपि मुझे हल्का ज्वर था, मैंने परिवार के साथ बड़े मंदिर जाने की योजना बनायी। परन्तु बड़े मंदिर पहुंचते पहुंचते मेरा ज्वर अत्याधिक बढ़ गया और मेरे लिए उठ पाना संभव नहीं था। उस दिन अचानक गुरुजी वहाँ आ गये और मेरे पति और संगत के एक अन्य सदस्य को ताजा नींबू के घोल बना कर पिलाने को कहा। ज्वर ऐसे लुप्त हुआ जैसे कभी था ही नहीं। किसी के बताये बिना गुरुजी को मेरी अवस्था का ज्ञान था और उन्होंने तुरन्त उपचार किया। ऐसा निस्वार्थ आलंबन और देखभाल और कोई नहीं दे सकता है।

शब्द मात्र से

गुरुजी द्वारा प्रयोग करने वाली वस्तुएं केवल सांत्वना के लिए होती हैं। ऐसा अक्सर देखा गया है कि वास्तव में गुरुजी को अलौकिक क्रियाओं के लिए इनकी आवश्यकता ही नहीं है। गुरुजी की शक्ति मात्र

ही भक्त की समस्त समस्याओं का हल है। भौतिक वस्तुओं के प्रयोग से भक्त को केवल यह आभास होता है कि उसकी ओर गुरुजी का सम्पूर्ण ध्यान है।

मेरे पैर के अंगूठे पर किसी कीड़े ने काट लिया था। फलस्वरूप वह सूज गया था और उसमें बहुत दर्द था। जब चिकित्सक द्वारा दी गयी एक मलहम से कोई लाभ नहीं हुआ तो उसने एक साधारण शल्य क्रिया करने का सुझाव दिया। अचानक उसी दिन, मेरे पति के बताये बिना, गुरुजी ने मेरे पैर का हाल पूछा और वह पर्याप्त था। पैर की वेदना कम हो गयी और उसमें बहुत लाभ हुआ। कुछ ही समय में उसके सब चिह्न मिट गये। ऐसी है गुरुजी की क्षमता।

इससे भी अधिक अचम्भा हमें तब हुआ जब गुरुजी ने मुझे मधुमेह से मुक्त कर दिया। 1999-2000 में पता लगा कि मुझे यह रोग है। मधुमेह के बारे में सर्वविदित है कि इसकी कोई चिकित्सा नहीं है, इसको केवल सीमाबंधित किया जा सकता है। किन्तु गुरुजी ने मुझे इस रोग से ही मुक्त कर दिया। कुछ ही मास में, बिना औषधियों के, केवल गुरुजी की कृपा से मुझे इस रोग से मुक्ति मिल गयी।

गुरुजी के सादे ढंग से कहे गये शब्दों का अर्थ भी अति गूढ़ होता है। वास्तव में वह ब्रह्म के लिए आदेश होते हैं और यदि उनके शब्दों का पालन नहीं किया जाये तो फल अप्रिय हो सकता है।

जब हमने गुरुजी के पास आना आरम्भ किया तो गुरुजी ने मेरे पति को सप्ताह में तीन बार, सोम, बुध और शुक्र को आने को कहा। हमने उनके निर्देशों का पालन अवश्य किया किन्तु कम दिनों की पूर्ति करने के लिए घर से शीघ्र निकलना आरम्भ किया। एक दिन जब हम छः बजे ही पहुँच गये तो गुरुजी ने सत्संग के निर्धारित समय आठ बजे आने को कहा। आश्चर्यजनक रूप से उसके पश्चात् ऐसा होने लगा कि हम वहां आठ बजे ही पहुँच पाते थे। एक बार हम घर से साँय साढ़े छः बजे ही निकल पड़े परन्तु उस दिन वह 25 किलोमीटर का मार्ग इतना व्यस्त मिला कि हम आठ बजे ही पहुँच पाये। अचम्भे की बात

है कि घर से साढ़े सात बजे निकलने पर भी हम आठ बजे पहुँच जाते थे।

लंगर से कृपा

हमारी मनोवृत्ति अनेक बार हमें ऐसे अनुभव करा देती है जो बाद में मूर्खतापूर्ण कर्म लगते हैं। एक बार मैंने ऐसा उपवास रखा हुआ था जिसमें अन्न निषेध था। उस दिन मैं मात्र फलाहार ले सकती थी। जब हम गुरुजी की संगत में पहुंचे तो मैंने निश्चय किया कि मैं लंगर नहीं करूंगी क्योंकि उसमें रोटी होती हैं; मुझे आशा थी कि कोई इस पर ध्यान नहीं देगा। उस दिन 200 से अधिक श्रद्धालु थे और लंगर के छः चक्र हुए थे। परन्तु गुरुजी को इसका ज्ञान हो गया था और उन्होंने मुझे अंतिम चक्र में लंगर खाने को कहा। व्रत के नियम की अवहेलना नहीं करने की इच्छा से मैं प्रथम तल पर जाकर बैठ गयी। उन दिनों एम्पाएर एस्टेट में संगत नीचे होती थी और लंगर प्रथम तल पर दिया जाता था। मैंने निश्चय किया था कि एक कोने में बैठी रहूंगी और लंगर की समाप्ति पर नीचे आ जाऊँगी। इस प्रकार मैंने दो अपराध किये थे– प्रथम, गुरुजी के निर्देश की अवहेलना करने का और दूसरा, उनको धोखा देने का प्रयास।

नीचे आने पर गुरुजी ने मुझे घूर कर देखा और किसी को संगत में बांटने के लिए मिठाई लाने का आदेश दिया। उन्होंने प्रसाद बांटना आरम्भ किया और मेरी बारी आने पर मुझे दूसरों की अपेक्षा दुगनी मात्रा दी, जैसे लंगर न खाने के कारण वह मुझे उतना ही फल देना चाहते हैं। घर पहुँच कर जब मैंने पूरे घटनाक्रम का पुनरावलोकन किया तो मुझे अपनी भूल का आभास हुआ। गुरुजी का सन्देश स्पष्ट था – लंगर करना आवश्यक है। लंगर की अवमानना करने से गुरुजी की कृपा अधूरी है। बाद में मैंने यह जाना कि प्रसाद गुरुजी के आशीर्वाद का माध्यम है – उसके भातिक स्वरूप का कोई अर्थ नहीं है, किन्तु जब भी वह मिले उसे दोनों हथों से श्रद्धापूर्वक तुरन्त ग्रहण करना चाहिए, जिससे यह अवसर निकल नहीं जाये।

गुरुजी - ट्रक और हमारी कार के बीच में

मैं और मेरे पति नोएडा से अपनी कार में संगत के लिए आ रहे थे। एक चौराहे पर आवागमन इतना अधिक था कि तीसरी बार लाल बत्ती हो गयी। हम उस समय सबसे आगे थे तो जैसे ही वह हरी हुई मेरे पति ने कार तेजी से आगे बढ़ा दी। हमारे सामने एक उच्च आकार का ट्रक आगे बढ़ा किन्तु तुरन्त ही एक साईकल सवार के गिर जाने के कारण रुक गया। मेरे पति के पास इतना अवसर नहीं था कि वह रुक सकें और दुर्घटना निश्चित थी। अचानक मैंने कार के सामने गुरुजी को देखा और मैं चिल्लाई ''गुरुजी''।

हमें होश में आने में कुछ समय लगा। थोड़ी देर पश्चात् जब हमने कार रोक कर उसका निरीक्षण किया तो देखा कि कार ट्रक के नीचे से निकल गयी थी और उसको कोई भी क्षति नहीं हुई थी। कार का पिछला हिस्सा ट्रक के विशाल पहिये से कुछ ही इंच दूर था। हमें आभास हुआ कि गुरुजी क्यों प्रकट हुए थे: यदि वह नहीं आते तो दुर्घटना निश्चित थी।

इससे भी अधिक आश्चर्य उस समय हुआ जब मेरे पति यह संस्मरण संगत की एक सदस्या को सुना रहे थे। उन्होंने गुरुजी के प्रकट होने की बात कही होगी जब उसने उनसे प्रश्न किया कि क्या कार नीले रंग की मारूती 800 थी। मेरे पति के मानने पर उसने बताया कि उसने यह पूरा घटनाक्रम स्वप्न में देखा था - गुरुजी के ट्रक और कार के बीच में आने की घटना भी। उसकी स्वप्न की घटना सुन कर हम अचंभित रह गये।

सर्वविदित

एक बार गुरुजी ने मुझे एक सज्जन को बुलाने को कहा। क्योंकि मैं उनको जानती नहीं थी उन्होंने उनका विवरण देते हुए कहा कि वह मोटे हैं और एक स्तम्भ के पीछे बैठे हैं - वह गुरुजी के स्थान से दृष्टिगोचर नहीं था। जाते हुए मैं सोच रही थी कि मात्र इन दो सूत्रों से

उनका पता कैसे लगेगा। वहां पहुँचने पर मुझे एक ही मोटे सज्जन मिले जिनको मैंने गुरुजी का सन्देश दे दिया। इससे स्पष्ट होता है कि गुरुजी की दृष्टि कहाँ तक जा सकती है।

यदि गुरुजी चाहें तो वह आपका भूत बता सकते हैं; वर्तमान में, इस समय पृथ्वी पर कहाँ क्या हो रहा है और भविष्य में क्या होगा – इन सबका वृत्तांत दे सकते है।

जब मेरे बच्चे, एक पुत्र एवं एक पुत्री स्कूल में ही थे, गुरुजी ने एक दिन बातों बातों में कह दिया था कि वह सीमेंस में कार्यरत होंगे। उस समय इस कथन पर विश्वास करना कठिन था परन्तु छः वर्ष पश्चात् ऐसा ही हुआ। इसी प्रकार गुरुजी ने 2000 में मुझे बताया कि मेरी बेटी का विवाह 2005 में होगा और उसका विवाह वास्तव में 30 अप्रैल 2005 को हुआ।

शिव लोक के अनुभव

गुरुजी द्वारा निर्मित बड़ा मंदिर विशेष स्थल है। राजधानी के एक छोर पर, यहाँ के पवित्र पावन वातावरण में विश्व की सब समस्याएँ भूल जाते हैं। यहाँ पर मैं गुरुजी की अनुपस्थिति में भी, चाहे कितनी चाय पी सकती हूँ। यह मंदिर में उपस्थित अदृष्ट शक्ति का एक अति सूक्ष्म सूचक है। भले ही किसी को यहाँ पर अपने अनुभव पर विश्वास नहीं हो, मुझे यहाँ पर सदा एक अलौकिक शक्ति की उपस्थिति का आभास होता है।

एक बार मैं अपने परिवार सहित बड़े मंदिर गयी। सामान्यतः वहाँ पहुँच कर हमारे परिवार का प्रत्येक सदस्य स्वेच्छा से मंदिर मे घूमता है। उस दिन, दोपहर से थोड़ा पहले वहां पहुँच कर मैं गुरुजी के कक्ष की स्वच्छता देखने गयी। उस कक्ष में शिव की एक अति सुन्दर प्रतिमा है जिसमें वह आशीर्वाद देने की मुद्रा में आसीन हैं। हम उस प्रतिमा को सदा देखते आये थे। उस दिन जब मैंने वह प्रतिमा देखी तो मेरे अन्दर सिरहन दौड़ गयी। प्रतिमा का मुख 60^0 दाहिने को मुड़ा हुआ था। मैंने

मंदिर में सब उपस्थित लोगों को यह दिखलाया और यह देख कर सब मेरी तरह ही अचंभित हुए। आश्चर्यजनक रूप से जैसे जैसे दिन बीतता गया, मुख अपनी सामान्य आकृति में आता गया और शाम होते होते उसने पुनः सामने की मुद्रा ले ली थी।

2006 की होली भी सदा स्मरण रहेगी। उस दिन प्रातः जब हम मंदिर में पहुंचे तो प्रत्येक ने कोई सेवा करनी आरम्भ कर दी। मैं अपनी पड़ोसन संगीता के साथ हॉल में स्थित शिव प्रतिमा को चमकाने में लग गयी। प्रतिमा को साफ करने के लिए ब्रासो रगड़ने के पश्चात्, संगीता को उसे एक अन्य कपड़े से चमकाना था। मैं ऊपरी भाग साफ़ कर चुकी थी और उस पर अंतिम सफाई करनी शेष थी। संगीता ने सफाई आरम्भ ही करी थी जब उसने मुझे दिखाया कि शिव के गले में लिपटे हुए नाग के बीच में रंग लगा हुआ है। क्योंकि मैं उस भाग को साफ़ कर चुकी थी मैंने उसे पुनः ध्यान से देखा – वहाँ पर रंग वास्तव में था। मैंने मंदिर में सब उपस्थित लोगों को इस चमत्कार का दर्शन करने के लिए बुलाया। उस दिन मंदिर में दर्शन करने वाले प्रत्येक भक्त ने समय समय पर रंग का बदलता रूप देखा।

यह सब प्रसंग गुरुजी की अभूतपूर्व प्रतिभा के संकेत मात्र हैं। किन्तु वास्तव में वह इन सबसे सीमित नहीं हैं। उनकी अपार क्षमता हम साधारण मानव के लिए समझ पाना सहज नहीं है। हाथ जोड़, नत मस्तक होकर मैं आभार प्रकट करती हूँ और उनसे विनम्र निवेदन करती हूँ कि पूरी संगत पर सदा अपनी कृपा बनाए रखें।

श्रीमती गौरी सिंगला, गुडगाँव

गुरु कृपा

मत को भ्रम भूले संसार,
गुरु बिना नहीं कोई उतरस पार।
गुरु नानक

बुधवार, 12 अक्टूबर 2005 को सुबह सुबह ही मेरे सहकर्मी डॉ. खिलनानी, एम्स में औषधि विभाग के अध्यक्ष, का फोन आया कि उस दिन शाम को 5:30 बजे उनके घर में सत्संग का आयोजन है जिसमें गुरुजी आ रहे हैं। उन्होंने मुझे पत्नी सहित आने का आग्रह किया।

''क्या आप महाध्यापक की पदोनात्ति का उत्सव मना रहे हो? यह गुरुजी कौन हैं? उनका नाम क्या है? वह कहाँ से आ रहे हैं?'' मैंने उन पर प्रश्नों की झड़ी लगा दी। उन्होंने केवल इतना उत्तर दिया, ''उनका नाम गुरुजी है। आप जब शाम को उनको मिलोगे तो स्वयं ही जान लेना। धैर्य रखो।''

सामान्यत: मेरी पत्नी स्मिता साधु संतों में कोई विश्वास नहीं रखती थी। इस बार जब मैंने यह बात उसको बतायी तो उसका उत्तर पहले से भिन्न था, ''संभव है इस बार कुछ अंतर हो। चल कर देखेंगे।''

कुछ देर बाद मैंने अपने परिचित रश्मि और पंकज सिंह को फोन किया। मैं रश्मिजी को पिछले 35 वर्ष से जानता हूँ और उनके विवाह के पश्चात् पंकजजी को। मैं उनसे पंकजजी के पिता, भूतपूर्व प्रधान मंत्री, श्री चन्द्र शेखर, जिनको मैं स्वयं पिताजी कह कर संबोधित करता था, के स्वास्थ्य के बारे में जानना चाह रहा था।

उन्होंने कहा कि वह एम्स के एक निजी कक्ष में परीक्षणों के लिए प्रविष्ट हैं। यह सुनते ही मैं सीधे उनके पास गया। वार्तालाप करते हुए उन्होंने गुरुजी से पहले दर्शन के संस्मरण सुनाये। उन्होंने यह भी बताया कि वह नियमित एमपाएर एस्टेट में स्थित गुरुजी के छोटे मंदिर में जाते रहें हैं, कैसे गुरुजी ने उनके जीवन का दृष्टिकोण ही परिवर्तित कर दिया है और कैसे उनकी दया से पिताजी का स्वास्थ्य सुधर रहा है।

''क्या आप डॉ. खिलनानी का जानते हें?'' रश्मिजी ने पूछा। मैंने उनसे इस प्रश्न का कारण जानना चाहा क्योंकि उनका नाम अभी तक अपनी बातचीत में नहीं उभरा था। रश्मिजी ने उत्तर दिया, ''आज शाम को उनके यहाँ सत्संग है और हमें गुरुजी को उनके घर लाना है।'' मैंने आतुर हो कर प्रश्न किया कि यह गुरुजी कौन हैं और उनका नाम क्या है। रश्मिजी ने मुझे धैर्य रख कर शाम को स्वयं ही सब जान लेने को कहा।

मैं यह प्रसंग इतने विस्तार में इसीलिए सुना रहा हूँ कि कार्य समय आने पर ही पूर्ण होते हैं। जब तक गुरुजी नियत न करें उनके दर्शन संभव नहीं हैं। इसी कारण दो मित्रों से गुरुजी के बारे में सुन कर यही सन्देश मिला कि आकर दर्शन और आशीर्वाद ग्रहण करो। यह सम्पूर्ण संगत गुरुजी के दर्शन, कृपा और दया से धन्य है। इस जीवन काल में यह सुअवसर देने के लिए हम गुरुजी के अत्यंत आभारी हैं।

मैंने घर आकर स्मिता को जब इस घटनाचक्र के बारे में बताया तो मेरी भांति उसकी भी उत्सुकता बढ़ गयी। हम अपने घर में रुक न सके और ठीक पाँच बजे डा. खिलनानी के घर पहुँच गये। वहां पर हम पहले पहुँचने वालों में थे। थोड़ी देर में रश्मिजी और पंकजजी रंगीन

वस्त्र धारण किये हुए एक अति सुन्दर युवक को लेकर आये। वह तेजी से चलते हुए अन्दर आये और उन्हें एक अति शोभनीय कुर्सी पर आसीन किया गया।

हमने अनुमान लगाया कि यही गुरुजी होंगे। जैसे हम उनके निकट पहुंचे रश्मिजी ने मेरा और स्मिता का परिचय करवाया। गुरुजी मुझे देख कर तुरन्त बोले, *''डॉक्टर, तुस्सी बाहर जाओ''*। मैंने स्मिता के कान में फुसफुसा कर कहा कि चलो चलते हैं, यह हमें इधर नहीं चाहते और हम कक्ष से बाहर जाने लगे। रश्मिजी ने तुरन्त हमको वापस बुलाकर गुरुजी के कथन का अर्थ बताया: वह हमें भारत से बाहर विदेश में देख रहे हैं। विदेश में हमारा भविष्य अति उज्ज्वल है। चिंता मुक्त, शांत भाव से हम गुरुजी के चरणों में बैठ गये।

वहां पर 250 - 300 सत्संगी आये होंगे। उनमें से अनेक पहली बार आये थे और अधिकतर मेरे सहकर्मी थे। गुरुजी के आदेश पर पुराने अनुयायी अपने अनुभव बता रहे थे। विषयों की कोई कमी नहीं थी - बच्चों की शिक्षा, विवाह, गर्भ धारण, अस्थमा, हृदय रोग, स्नायु और कर्कट रोग जैसे असाध्य रोगों से चमत्कारिक निवारण इत्यादि। साधारण रूप से कोई भी इन पर विश्वास नहीं करता परन्तु यह तो रोगियों और उनके परिवारों के निजी अनुभव थे। सबके स्वास्थ्य में सुधार आया था। बीच में कभी-कभी गुरुजी बोलते थे कि इसका भौतिक रूप देखो, कष्ट कैसे घट रहें हैं।

उस दिन से गुरुजी के साथ हमारा संपर्क बन गया। अब हर दिन एक नये आविष्कार का दिन होता है - आत्मबोध और आत्मज्ञान का दिन। हम जब भी दिल्ली में होते हैं हम छोटे मंदिर में प्रति वृहस्पतिवार और रविवार को आते रहते हैं। मुझे अपने कार्य के सन्दर्भ में अक्सर यात्राएं करनी पड़ती हैं पर दिल्ली में होने पर मानो कोई चुम्बकीय शक्ति हमें इस स्थान पर खींच लाती है। भीतर से उत्कंठा होती है और इससे पहले कि हम कुछ सोचें हम उनके दर्शन हेतु जा रहे होते हैं।

चिकित्सक का उपचार

मैंने अप्रैल 2006 के अंत में बीती हुई शीत ऋतु में कुछ अंतर देखा। मैंने स्मिता को बताया कि इस बार मैंने किसी औषधि या श्वास यंत्र का प्रयोग नहीं किया। मेरे परिवार में दीर्घ काल से अस्थमा चला आ रहा है और मुझे सदा श्वास यंत्र की आवश्यकता रहती थी; एक या दो बार निश्चित रूप से मेरी छाती पक जाती थी और दस दिन तक मुझे प्रतिजैविक औषधियों का सेवन करना पड़ता था। लेकिन गत शीत ऋतु में मैंने इनका प्रयोग ही नहीं किया था।

जब मैंने गुरुजी को इस बारे में बताया तो उन्होंने उत्तर दिया कि मुझे उनकी कृपा प्राप्त हुई है और अब मुझे कभी दमा नहीं होगा। न तो मैंने गुरुजी को इस बारे में बताया था न ही उनसे इसके लिए मन ही मन प्रार्थना करी थी। मैं अति अचंभित हुआ। हमारे जीवन में इतना अंतर आया कि हम गुरुजी के दर्शन के लिए एम्पाएर एस्टेट प्रति वृहस्पतिवार और रविवार को आने लगे।

उनकी कृपा हमारे ऊपर बनी रही है। हमारी बेटी ऋजुता अमरीका में पढ़ रही थी। ह्यूस्टन स्थित राईस वि श्वविद्यालय से संज्ञानात्मक स्नायुविज्ञान और संज्ञानात्मक मनोविज्ञान में उसका स्नातक का पाठ्यक्रम पूरा होने वाला था। यद्यपि उसे वहीं पर शोध करने की अनुमति मिल गयी थी वह वहां पर और अध्ययन नहीं करना चाहती थी। वह अपना शोध एम आई टी या स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय जैसी विख्यात संस्थाओं से करना चाह रही थी। अभिभावक होने के नाते हमें लगता था कि उसकी यह अभिलाषा अव्यवहारिक है। न केवल उसके वीसा की समस्या थी, उसके पास इन संस्थाओं में प्रवेश के लिए समय भी कम था। स्मिता, उसकी माँ चिंतित थी।

एक बार जब गुरुजी ने ऋजुता के बारे में पूछा तो मैंने स्मिता की चिंता के बारे में बताया। गुरुजी ने तुरन्त चिंता छोड़ने को कहा और आश्वासन दिया कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। उन्होंने पूछा कि मैं

अगली बार अमरीका कब जा रहा हूँ। उसके स्नातक अधिवेशन में उपस्थित होने के लिए मैंने मई 2006 में जाने की योजना बनायी हुई थी। उसके बाद हमें यह देखने का अवसर मिला कि गुरुजी के आशीर्वाद प्राप्त होने के पश्चात् कैसे एक के बाद एक घटनाएं अनावृत होती जाती हैं और सब ठीक होता जाता है। ऋजुता अब बोस्टन स्थित एम आई टी के मस्तिष्क और संज्ञानात्मक विज्ञान विभाग से शोध कर रही है।

गुरुजी के पास आने के पश्चात् हम श्रद्धालुओं द्वारा कथित वृत्तान्त और अपने अनुभव समझने का प्रयास कर रहे हैं। हम गुरुजी के साथ क्या अनुभव करते हैं? संगत को सुनाये गये प्रसंगों की ऊर्जा, अपने को उसी पात्र मे ढालने की प्रक्रिया, प्रतिदिन ग्रहण किया हुआ लंगर रूपी प्रसाद, गुरुजी द्वारा सबको दिया हुआ आशीष... सब अनुभवों में अपने अन्दर एक नवीन शक्ति, क्षमता आदि। संगत में पहुँचने पर चाहे कोई कितना भी थका हुआ हो वह यहाँ से चलने पर अपने भीतर एक नवीन ऊर्जा प्रसारित होने का अनुभव करता है और भले ही कितनी भी देर हो जाये वह रात्रि के उस काल में भी सुबह की भांति तरोताज़ा अनुभव करता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि गुरुजी के यहाँ सब समान हैं - धनवान या निर्धन, प्रधानमन्त्री या चपरासी, पुरुष या नारी, शहरी या ग्रामीण, भारतीय या विदेशी - यहाँ पर कोई रीति रिवाज नहीं हैं। किसी भी सत्संगी से पूर्ण आत्मसमर्पण के अतिरिक्त कोई आशा नहीं की जाती। गुरुजी में निष्ठा और फल की आशा किये बिना विश्वास को ही तो आस्था कहते है।

गुरुजी हमें सर्वश्रेष्ठ मनुष्य बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। यहाँ आने के उपरान्त हमारा मिथ्या रूपी अभिमान समाप्त हो रहा है। हमारी प्रवृत्ति में भी परिवर्तन हो रहा है। हम उन्हीं घटनाओं को एक नये दृष्टिकोण से देखते हैं और मन को शांति प्राप्त होती है - अपनी आवश्यकताओं और लोभ का भेद समझते हैं। गुरुजी ने सुकर्म करने के विवेक का विकास किया है। हम गुरुजी के अनुयायी होने से धन्य हैं। हमने यह भी जाना है, ''हमारे जीवन की मान्यताओं को बांटने से उनका मूल्य

अधिक हो जाता है।'' विनीत होकर हमने अपने अनुभव अपने मित्रों और सहकर्मियों से बांटे हैं। हमारी जीवन यात्रा चल रही है और इसके लिए हमारे ऊपर गुरु कृपा है – उसके लिए हम उनके अति आभारी हैं।

–डा. चंद्र कांत पांडव, नोएडा

गुरुजी को एक सैनिक का अभिवादन

पैंतीस वर्ष से अधिक समय तक सेना में कार्यरत रहने के कारण मैं सदा इसमें विश्वास करता था कि "एक सच्चा सैनिक परिस्थितिवश जीवित रहता है, चयन से प्रेम करता है और व्यवसाय के कारण मारता है।"

अपने जीवन की संध्याकाल में ही मुझे यह आभास हुआ कि मानवीय बुद्धि और भौतिक ज्ञान से आगे दिव्यता का अपार संसार है। आध्यात्मिकता के इन नये किन्तु रोचक क्षेत्रों का अनुभव मेरे लिए एक सुदूर स्वप्न था। पर मार्च 1999 के द्वितीय अर्ध में मेरे जीवन का मार्ग बदल गया। गुरुजी के कमल चरणों में, मेरे घर से कुछ ही दूरी पर, हिमालय की गुफाओं में घोर तपस्या किये बिना ही, मुझे अकल्पनीय दिव्यता का स्वरूप प्राप्त हुआ।

मैंने गुरुजी के बारे में अपने एक घनिष्ठ मित्र, ले जन (सेवानिवृत) काहलों से सुना था। गुरुजी की दया से उनकी पत्नी का गठिया रोग समाप्त हो गया था। आश्चर्यजनक रूप से, आदि शक्ति, श्री गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे चार पांच वर्ष के उपरान्त ही प्राप्त हुआ। सेना के ही एक अधिकारी, मार्च 1999 के अंत में, मुझे गुरुजी के पास ले गये। तब से मेरे जीवन के अनेक क्षेत्रों मे परिवर्तन आया है। गुरुजी के प्रथम दर्शन के पश्चात् मेरा परिवार तेजोमय गुरुजी के संरक्षण में भाग्यवान रहा है।

मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूँ कि गुरुजी शिव के अवतार हैं, जिनके पास, विशेष रूप से इस कलयुग में, विधाता द्वारा सब नश्वरों के समस्त कष्टों का निवारण करने का उत्कृष्ट कोष है। यह समझ लेना चाहिए कि गुरुजी न केवल इस ग्रह के कठिन से कठिन, असाध्य रोगों को समाप्त करने की अद्वितीय क्षमता और अद्‌भुत शक्ति रखते है अपितु शिव की भांति वह वैद्यनाथ हैं। रोग का नाम लेते ही वह उसका उपचार अपनी अनोखी पद्धति से करते है; उनके कमल चरणों में समर्पण करते ही यह कार्य स्वयं ही आरम्भ हो जाता है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, पूरे भारत और विश्व में उनके लाखों अनुयायी इसका प्रमाण दे सकते हैं।

मेरी सेवानिवृति के बाद अनेक अवसरों पर मुझे उनके स्पर्श मात्र से ही आशीष प्राप्त हुआ है; उस समय भी जब जीवन की सर्वाधिक सच्चाई, मृत्यु, मुख खोले मेरे सामने खड़ी थी।

मधुमेह रोग से ग्रस्त मेरी पत्नी, सुशीला को भी गुरु कृपा प्राप्त हुई है। गुरुजी ने उसके दर्शन के प्रथम दिन ही उसे हाथ भर कर लड्‌डू और मिठाई का प्रसाद दिया और उसके मधु की मात्रा घट कर केवल 107 रह गयी। प्रायः भोजन करने से पूर्व उसकी मधु की मात्रा 200 से अधिक रहती थी। इस बार जब परीक्षणों में उसमें मधु की घटती हुई मात्रा के परिणाम आये तो मुझे सहसा अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। गुरुजी के दिव्य आशीष का यह प्रत्यक्ष प्रमाण था।

सितम्बर 2002 में मेरे वक्षस्थल में बहुत पीड़ा हुई और मुझे बायपास शल्य क्रिया करवाने का परामर्श दिया गया। दिल्ली स्थित रेफरेल और रिसर्च चिकित्सालय से मैं सीधा गुरुजी के पास गया। उन्होंने कहा यद्यपि मुझे स्टेंट की आवश्यकता नहीं है, दूरदर्शिता से मुझे शल्य क्रिया एस्कॉर्ट मे करवानी चाहिए। उन्होंने मुझे एक ताम्र लोटा लाने को कहा जिसे उन्होंने अपने हाथों से अभिमंत्रित किया। उन्होंने मुझे और मेरी पत्नी को उसमें से प्रतिदिन प्रातः खाली पेट जल पीने को कहा। उस दिन से हम दोनों उसमें से जल पीते आ रहे हैं। कठिन प्रतीत होने वाले हृदय रोग की चिंता से मैं मुक्त हो चुका हूँ।

भक्तों की सुनामी से रक्षा

मैं एक अन्य अविस्मरणीय सन्दर्भ की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। 2004 के शीतकाल में गुरुजी ने जालंधर जाने से पूर्व सेवानिवृत सैनिकों को आशीर्वाद देने की आकांक्षा व्यक्त करी। मैंने गुरुजी को बताया कि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में बहुत अधिक सेवानिवृत सैनिक नहीं होंगे तो क्या उस अवसर पर सेवारत सैनिकों, जो राष्ट्र के अमूल्य मानव संसाधन हैं, को भी बुला लिया जाये। सदा की भांति, उदार हृदय गुरुजी ने हामी भर कर कहा कि तिथि और स्थान के बारे में वह बाद में बताएँगे। कुछ दिनों के पश्चात् जब मैंने गुरुजी से पुनः इसका उल्लेख किया तो उन्होंने मुझे, श्री प्रेम सिंह, सिंगापुर में भारत के भूतपूर्व राजदूत, के साथ छतरपुर मंदिर के निकट एक स्थान का निरीक्षण करने को कहा। हम गुरुजी के एक अन्य अनुयायी, श्री क्लेर, के विस्तृत फार्म हाउस पर रात्रि में 11 बजे गये। वह अति उपयुक्त स्थान था – प्रेम सिंह और मैंने वापस आकर गुरुजी को समारोह के लिए पूर्ण योग्य स्थान बताया।

गुरुजी ने मुझे स्पष्ट कर दिया था कि मैं अपना ध्यान केवल सेवारत और सेवानिवृत सैनिकों पर केन्द्रित रखूँ। समारोह रविवार, 26 दिसंबर 2004, को होना था। कई भक्तों ने बाहर थाईलैंड, मलयेशिया,

बैंगकॉक, कुआला लम्पुर, अंडमान और निकोबार, गोवा आदि रमणीय समुद्र तटों पर छुट्टी के लिए जाने की योजना बनायी हुई थी। फलस्वरूप कई भक्तों ने गुरुजी से समारोह में न आने की आज्ञा मांगी परन्तु गुरुजी ने सबको बिना कोई बहाना किये आने का निर्देश दिया। चूँकि गुरुजी के कथन सबके लिए निर्विवाद आज्ञा हैं, भक्तों ने अपनी योजनाएं रद्द या स्थगित कर दीं। इस प्रकार उस समारोह में सैनिकों के साथ अन्य अनेक असैनिक अनुयायी भी आये।

सर्व विदित है कि उसी दिन एशिया महाद्वीप के दक्षिण तटों पर सुनामी की विनाश लीला हुई थी – अधिकतर यह वह स्थान थे जहाँ भक्तों ने बड़ा दिन और नव वर्ष की छुट्टियाँ मनाने की योजनाएं बनायी थी। इन प्रकार गुरुजी ने अनेक भक्तों के जीवनों की रक्षा की और उनको नव जीवन दान दिया।

गुरुजी अपने भक्तों को प्राकृतिक आपदाओं से बचाने और आशीष देने के लिए अनोखे मार्ग अपनाते हैं। गुरुजी अपने भक्तों का वह अभेद्य कवच हैं जो उनकी बड़ी से बड़ी विपदाओं से रक्षा करता है। उनके पास रक्षा प्रदान करने वाले की शक्ति और संवेदना है; वह परम आनन्द के दाता हैं जो उस दयालु ईश्वर के अन्यथा और कोई नहीं हो सकता।

तीन गुरुमंत्रः धर्म का सार

एक दिन रात्रि को दो बजे के आस-पास, जब कुछ अनुयायियों के समक्ष मैंने उनसे जाने की आज्ञा मांगी तो उन्होंने मुझसे प्रश्न किया कि मुझे ईश्वर और धर्म के बारे मे क्या पता हैं। जब मैं अपने उत्तर से उनको संतुष्ट नहीं कर पाया तो वह जोर से हँसे और मुझे जनरल साहब संबोधित करते हुए बोले कि यदि मुझे धर्म के बारे में नहीं पता तो चिंता न करूं। यद्यपि गुरुजी कभी प्रवचन नहीं देते, फिर भी, उसी समय उन्होंने धाराप्रवाह भाषा में कुरान, बाइबल, भगवद् गीता और गुरु ग्रन्थ से धार्मिक पद और श्लोक अति प्रमाणिकता और प्रेम से सुनाये।

उनके मुख से शब्दों का उच्चारण ऐसी शुद्धता और पवित्रता से हो रहा था जैसे गँगा अपने स्त्रोत, शिव की जटाओं से प्रवाहित होती है। हम सब अति नम्रता और शांति से विस्मित खड़े थे। समाप्त करने के थोड़ी देर के पश्चात् गुरुजी ने प्रश्न किया कि अपने आध्यात्मिक ज्ञान के असीमित कोष से जो उन्होंने अभी बांटा है उससे हम सब क्या समझे। जब हमने अपने कंधे हिलाते हुए अपनी बेबसी प्रकट करी तो वह पुनः हँसे और धीरे-धीरे उन्होंने प्रभावपूर्ण ढंग से, बल देते हुए तीन स्वर्णिम, दिव्य मन्त्र दिए जो आनंदमय आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने के प्रयास में हमारे पथप्रदर्शक और आस्था के सूचक बन गये हैं। उनके प्रवचन का सार तीन नियमों पर केन्द्रित था जिन्हें मानव धर्म का आधार कहा जा सकता हैं। उन्होंने कहा:

1. *सब धर्म एक हैं। सब भगवान एक है। सब धर्म प्रेम, दया और मनुष्यों के प्रति सेवा भाव का उपदेश देते हैं।*
2. *जाति, रंग, भेद, धर्म, निष्ठा आदि का ध्यान न रखते हुए हर समय, हर स्थान पर सबकी सहायता करो। यदि किसी कारणवश ऐसा नहीं कर पाओ तो उसकी हानि भी नहीं करो।*
3. *इस भौतिक संसार की माया, बाह्य आमोद-प्रमोद, स्वप्न और इच्छाओं से अपने को मुक्त करो। प्रतिदिन अपने व्यस्त कार्यक्रमों मे से थोड़ा सा समय निकल कर, समाधि में बैठ कर जीवन में निपुणता प्राप्त करने के लिए और आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर होने के लिए ध्यान करो।*

सारांश में उन्होंने सुझाव दिया कि अपना कुछ ध्यान, ऊर्जा और समय उस दिव्य परमात्मा को प्राप्त करने के लिए उसकी ओर केन्द्रित करो।

उस रात मुझे अपने जीवन का सबसे बड़ा पाठ मिला और ''मानवता की सेवा ही प्रभु की सेवा है'' उक्ति में मेरे विश्वास को और बल मिला।

"जनरल कपूर, न्यू लाइफ...गो"

2005 में, एक दिन जब मैं डी एल एफ, गुडगाँव में अपनी पत्नी के साथ प्रातः भ्रमण के लिए निकला था तो एक मदहोश सांड ने मेरे वक्षस्थल पर अपने सींग मार दिये। मैं कुछ घंटे बेहोश रहा। जब मेरी चेतना लौटी तो मैं रेफेरल और रिसर्च चिकित्सालय के गहन सेवा केंद्र में लेटा हुआ था। मेरी पत्नी और कुछ सम्बन्धी मेरी शय्या के किनारे थे। मुझे लगा कि मेरा अंतिम समय आ गया है। शाम को मेरी पत्नी और बेटी गुरुजी के पास गये। पूरा सन्दर्भ सुन कर और कुछ समय तक चुप रहने के बाद उन्होंने मेरी पत्नी को प्रसाद दिया जो मैंने अगले दिन चिकित्सालय में खाया। फिर मेरी पत्नी ने मुझे गुरुजी का चित्र देकर उसे तकिये के नीचे रख दिया। अर्ध चेतनावस्था में रहते हुए, बीच बीच में, जब भी मुझे होश आता तो मैं गुरुजी को याद करता था। उन्हीं की कृपा से मुझे, शीघ्र ही, घर जाकर दो सप्ताह तक पूर्ण विश्राम करने की आज्ञा मिल गयी। परन्तु उसी दिन शाम को मैं गुरुजी के पास चला गया। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और बोले, "*जनरल कपूर, न्यू लाइफ. .गो*"। घर लौटते हुए मैंने अपनी पत्नी को कहा कि गुरुकृपा से मुझे कुछ नहीं होगा।

इस घटना का वर्णन करते हुए मुझे एक अन्य प्रसंग याद आ रहा है जब मार्च 1999 में मैंने पहली बार उनके दर्शन किये थे। बैठने के कुछ ही देर के बाद उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और प्रश्न किया कि मैं उनके बारे में कब से जानता हूँ। मैंने उत्तर दिया कि 1995 से। उन्होंने शरारती मुस्कान देते हुए पूछा कि मैं उस समय क्यों नहीं आया। मैं निरुत्तर था और मुझे कुछ कहना सूझ नहीं रहा था। गुरुजी ने जब चमकती आँखों से मेरी ओर देखा तो मैं बोला कि यही मेरी नियति रही होगी। गुरुजी फिर बोले कि यदि मैं उस समय आया होता तो संभवतः मुझे अधिक लाभ अवश्य मिलता किन्तु जीवन की उस अवस्था में वह समय उचित नहीं था।

मुझे पाठ मिला कि गुरु कृपा उचित समय आने पर ही मिल सकती है, जो हमारे पूर्व और वर्तमान जन्मों के कर्मों पर निर्भर करता है। उनके पास आकर देवत्व के द्वार खुल जाते हैं।

एक दिन, दिसम्बर 2005 में, संगत के पश्चात् मैं गंभीर रूप से बीमार हो गया और श्वस्नक ज्वर होने की अवस्था में मुझे आर आर चिकित्सालय ले जाया गया। मेरे सिर और पूरे शरीर में अति तीव्र वेदना हो रही था। ज्वर 104^0 तक पहुँच गया था और किसी भी प्रकार की औषधियों से उतरने का नाम नहीं ले रहा था। यद्यपि चिकित्सालय के उप कमांडेंट मेरे मित्र थे और मेरा वहां के गहन सेवा केन्द्र में बहुत ध्यान रखा जा रहा था, यह ज्वर अजेय शत्रु सिद्ध हो रहा था।

एक बार पुनः मैंने गुरुजी से, जो सदा मुझे विपत्तियों और वेदना से मुक्त करते आये हैं, विनती करी। मुझे याद है कि चिकित्सालय में, जब मैं इस ज्वर से लाभान्वित हो रहा था, रक्षा विभाग के कुछ अधिकारियों और अन्य अनुयायियों ने, गुरुजी के कहने पर, उनको गुड़गाँव में सम्मानित करने के लिए, दिसंबर 2005 के एक रविवार को समारोह का आयोजन किया था।

सैनिक चिकित्सालय मे एक निमोनिया के लाभान्वित होते हुए रोगी को, जिसका जीवन रक्षक यंत्रों के माध्यम से उपचार हो रहा हो, बाहर निकलना अत्यंत कठिन है। क्योंकि मैं गुरुजी के दर्शन करने को उत्सुक था, मैंने चिकित्सकों से, जिद्दी बच्चे की भांति, समारोह में कुछ घंटो के लिए बाहर जाने के लिए, विनती करी और समारोह के उपरान्त वापस आने का वचन दिया।

मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब मुझे, सम्पूर्ण संगत की ओर से, गुरुजी को पुष्पमाला पहनाने को कहा गया। उसके बाद मैं उनके प्रेम में डूब गया जब गुरुजी ने मुझे अपने ग्लास से पीने के लिए नारियल का जल दिया। मैं अपने को संभाल नहीं पाया और मेरी आँखों से अश्रुधारा बह निकली। मैंने उस ग्लास को अपने मस्तक से स्पर्श किया

और उसका पूरा जल, जो गुरुजी पी रहे थे, पी गया। मैंने अपनी प्यासी आत्मा की अनंत प्यास बुझा दी। इससे पहले मैंने, कभी भी, उस जल से स्वादिष्ट कुछ नहीं चखा था; मेरे लिए वह उनके अपार स्नेह का अमृत था। सम्मान स्वरूप मैं उनको केवल अपने भावविह्वल मनोभावों का हार भेंट कर सकता था। कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैं आशा से कहीं अधिक शीघ्रता से स्वस्थ हुआ और अपने सब कार्य सामान्य रूप से करने लगा। इन सब चमत्कारों ने सिद्ध कर दिया है कि गुरुजी एकमात्र परम सत्य हैं। वह अपने अनुयायियों से केवल सम्पूर्ण समर्पण की आशा करते हैं। सम्पूर्ण समर्पण का अर्थ है सम्पूर्ण निवारण और असम्पूर्ण समर्पण का अर्थ है असम्पूर्ण निवारण।

गुरुजी ने मेरी पुत्रियों पूजा और आरती को भी आशीर्वाद दिया है। उन्होंने मेरी बड़ी बेटी पूजा के लिए एक सुयोग्य वर भी बताया था जिससे विवाह कर वह सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही है। उन्होंने मेरी पत्नी को अमरीका घूम कर आने को कहा यद्यपि वह उस समय मात्र स्वप्न था। हमने कहा कि आरती तो घाना में है। किन्तु उन्होंने जोर डाला कि हम अमरीका यात्रा पर जाएँ। कुछ ही दिनों में आरती ने फोन पर बताया कि वह गर्भावस्था में है और वह सब शीघ्र ही न्यूयॉर्क जा रहे है, जहाँ उसके पति को एक नया काम मिल गया है। बिना किसी हिचकिचाहट के मैंने उनको वहां जाने को कहा और यह भी बताया कि उसकी माँ समय पर वहां आ जायेगी। गुरुजी के आशीर्वाद से हम तीन बार अमरीका गये और वहां पर अत्यंत मनोरम समय व्यतीत किया।

अपनी पहली अमरीका यात्रा पर, अकस्मात् मेरी पत्नी को मधुमेह के कारण चिकित्सालय में प्रविष्ट करना पड़ा था। मैं अपनी पत्नी को शीघ्र स्वस्थ करने के लिए गुरुजी से विनती करने गया। मेरी बात सुनकर उन्होंने मुस्कुरा कर मुझे चिंतामुक्त रहने को कहा और यह भी बताया कि वह शीघ्र ही घर आ जायेगी। उनकी दया से दो दिन के पश्चात् ही वह घर आ गयी।

कमल चरणों में

गुरुजी की पवित्र अनुकम्पा से अंधे देख सकते हैं, लंगड़े नृत्य कर सकते हैं, जननशक्तिहीन को संतान हो सकती है, मानसिक और शारीरिक रोगियों की मुस्कान लौट आती है और वह पुनः जीवन का आनंद उठाना आरम्भ कर देते है। उन्होंने अपने अनुयायियों को एड्स, केंसर और हृदय के रोगों से मुक्त किया है। चिकित्सालयों में जीवन रक्षा उपकरणों पर रह रहे रोगियों को नव जीवन प्राप्त हुआ है। इस कलयुग में शिव अवतार के अन्यथा कोई और शक्ति सादी सी चाय और लंगर के रूप में प्रसाद से अपने भक्तों का भला नहीं कर सकती। उनके भक्त अत्यंत विश्वास से अपनी समस्त समस्याओं से मुक्त होने के लिए यह प्रसाद संगत में ग्रहण करते हैं और सत्संग सुनते हैं।

मेरे जैसे सैनिक के लिए पीड़ित, विकलांग, जरूरतमंद, वंचित और योग्य, परन्तु अक्षम, विलक्षण किन्तु भयभीत की सहायता का ब्रह्मास्त्र उनको गुरुजी के मंदिर का द्वार दिखाना है। निवारण की निर्मल, स्वच्छ और दिव्य आशीर्वाद की तरंगें गुरुजी के कमल चरणों से परम शांति के अथाह सागर, धीरता, आनंद और ज्ञान के दीपक की नदी का रूप ले कर प्रवाहित होती है।

हमारे सुकर्म और अनदेखे भविष्य के कारण हम आदरणीय गुरुजी की पवित्र अनुकम्पा प्राप्त कर सकते हैं। या तो आप अपने आप को प्रेम के आनंदमय सागर में डुबो सकते है अथवा अपने पिछले और इस जन्म के कर्मों के आधार पर गुरुकृपा से मोक्ष प्राप्ति कर सकते हैं। केवल पूर्ण आत्मसमर्पण करने मात्र से इस विशाल सागर में डुबकी लगाकर प्रत्येक जन्म में गुरुजी की छत्रछाया का अनुभव कर सकते हैं। आज मेरा पूरा संसार गुरुजी के इर्द-गिर्द ही घूमता है, जो न केवल परमात्मा हैं, अपितु मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में समस्त बाधाओं को दूर करने वाले अभिभावक हैं। मेरे जैसे नश्वर के लिए उनकी स्फूर्तिदायक सुगन्ध और उनकी उपस्थिति प्रेरणा के स्त्रोत हैं। पूजनीय गुरुजी सर्वशक्तिशाली,

सर्वज्ञाता और सर्वत्र विद्यमान हैं। उन्हें अपने सब भक्तों के भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञान है। वह परमात्मा की भांति अपने समस्त अनुयायियों की धार्मिक उन्नति और दिव्य आनंद की प्राप्ति में सहायता करते हैं। उनके चमत्कार उन्हीं के लिए होते हैं जो उसमें विश्वास रखते हैं।

भवसागर पार करने के लिए अच्छे कर्मों से स्फुटित होती सकारात्मक किरणें और सादर गुरुजी में अविचल आस्था बनाये रखने की आवश्यकता है। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है मेरे जैसे सैनिक और योद्धा बनने का अविरल प्रयास, जो निर्वाण के अनजान क्षेत्रों से होकर जाते हुए कठिन मार्ग पर आ रही समस्त बाधाओं का सामना करने का साहस दे।

अत्यंत नम्रता से मैं परम पूजनीय आदरणीय गुरुजी के कमल चरणों में नमन और उनका अभिवादन करता हूँ।

- ले जन (सेवा निवृत) चन्द्र कैलाश कपूर, पी वी एस एम, ऐ वी एसएम, गुड़गाँव

उनकी छत्रछाया में

हम गुरुजी की शरण में अगस्त 1998 में पहुंचे। यद्यपि मैं 1975 से 1984 तक जालंधर में सेवारत रहा था और हम उनके मंदिर के निकट ही रहते थे किन्तु गुरुजी ने हमें 1998 में अपनी दया का पात्र चुना। उस वर्ष से अब तक कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

1998 मे हम दुबई में रह रहे अपने एकमात्र पुत्र का विवाह कर रहे थे। गुरुजी ने मुझे उसका और वधू के चित्र लाने को कहा और उन्होंने दोनों को अपना आशीष दिया।

मेरे पुत्र का विवाह मार्च 1999 में संपन्न हुआ। ऐसा लगा कि गुरुजी का रक्षा आवरण सब आयोजनों पर बना हुआ था। मैंने उससे पूर्व ही नोएडा में अपना मकान बनवाया था और धन की कमी थी। पर गुरुजी की कृपा से सब आयोजन बहुत अच्छी प्रकार से संपन्न हुए। स्वागत समारोह दिल्ली के ताज होटल में हुआ था। उस अवसर पर चित्र लेने वाले सज्जन ने प्रभावित होकर कहा कि वह दिल्ली में 500 से अधिक विवाह आयोजनों में कार्य कर चुके है और प्रत्येक पंजाबी

विवाह में शराब के बाद झगड़े अवश्य होते हैं पर यहाँ पर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

वसंत कॉन्टिनेंटल होटल में एक अन्य समारोह के बाद हमारे अतिथियों को नोएडा ला रही बस खराब हो गयी। महिलायों ने भारी गहने पहने हुए थे और आधी रात बीत चुकी थी पर सब सुरक्षित घर पहुँच गये। केवल सर्व विद्यमान गुरुजी ही उन्हें घर तक पहुँचा सकते थे।

पूर्ण परिवार को अमरीका के दस वर्षीय वीसा

मेरा पुत्र दूरसंचार यांत्रिक है पर वह दुबई में सुखी नहीं था। यदा कदा मैं गुरुजी से इसका उल्लेख करता तो वह चिंता करने को मना करते थे। मेरा पुत्र और उसकी पत्नी जनवरी 2000 में भारत आ रहे थे। दस जनवरी को गुरुजी की संगत में जाते हुए मैं परिवार के चारों सदस्यों के चार भरे हुए वीसा पत्र जेब में रख कर ले गया। मैंने गुरुजी को कहा कि मेरा पुत्र और उसकी पत्नी अर्ध रात्रि को दुबई से आ रहे हैं और अगले दिन प्रातः हम सब साक्षात्कार के लिए अमरीकी दूतावास जा रहे हैं। गुरुजी ने केवल कहा, "*तेरा कल्याण कर दित्ता।*"

वीसा मिलने की पद्धति भी पेचीदा थी। दूतावास के बाहर औपचारिकताएं पूर्ण होने के बाद, अन्दर पहले एक वरिष्ट सलाहकार प्रारम्भिक जांच करने के पश्चात् एक साक्षात्कार कर्ता के पास भेजते थे। पंक्ति में मैं सबसे आगे था; मेरे पीछे मेरी पत्नी, फिर पुत्र और उसकी पत्नी थे। मेरी बारी आने पर मैंने चारों पारपत्र दे दिए। मेरे से प्रश्न किया गया कि क्या मैं श्री जे एस अलघ हूँ। मैंने उत्तर दिया कि मैं ब्रिगेडियर अलघ हूँ। उन्होंने फिर प्रश्न किया कि क्या मेरे पीछे मेरी मित्र खड़ी हुई है; मैंने कहा कि वह मेरी पत्नी हैं। जिस प्रकार से वह अधिकारी बात कर रहे थे, ऐसा लगा कि स्वयं गुरुजी वहां पर बैठे हुए है। क्या मुझे दस वर्ष का वीसा चाहिए; उन्होंने फिर प्रश्न किया। जब मैंने उनसे पूछा कि क्या वह हम चारों को दस वर्ष का वीसा देंगे, तो उनका उत्तर हाँ में था। उन्होंने मुझे पहले नंबर की खिड़की पर जाने को कहा जहाँ

दस वर्ष के वीसा मिलते थे। मेरे यांत्रिक पुत्र के लिए वह असंभव था। पर हम सबको दस वर्ष के वीसा मिले। उस दिन जब हम गुरुजी के पास पहुंचे तो उन्होंने कहा, *"हो गया कम?"* हमने उनके चरण स्पर्श किये: यह चमत्कार ही था।

अमरीका में कार दुर्घटना

जुलाई 2004 में मेरा पुत्र अपनी पत्नी और हमारे पोते के साथ अमरीका में रहने गये – उसे वहां पर काम मिल गया था। उन दिनों वह लॉस एंजेलिस में रहते थे। सितम्बर में मेरी पत्नी भी कुछ दिन के लिए उनके पास रहने चली गयी। गुरुजी के कथनानुसार मेरी पत्नी उनका एक चित्र सदा कार मे रखती थी। उस माह मैं बड़े मंदिर में सत्संग के लिए गया था और जब वहां से लौटा तो मेरे कपड़ों से गुरुजी की सुगन्ध आ रही थी। कपड़े उतारने पर भी उस सुगन्ध की तीव्रता बनी रही। प्रात: सोकर उठने पर नियम के अनुसार मैंने अपनी पत्नी को फोन किया तो बेटे ने फोन पर बताया कि उनके साथ बहुत भयंकर कार दुर्घटना हुई थी। एक चौराहे पर उनकी कार से एक दूसरी कार टकराई थी पर वह सब सुरक्षित रहे। कार बेकार हो गयी थी। मेरी पत्नी ने बताया कि हमारा पोता जो कार के पिछले भाग में शिशु सीट पर बंधा हुआ था उछल कर उसकी गोद में आ गिरा था। वह उसके साथ पीछे ही बैठी हुई थी। मेरी पत्नी ने भय के कारण बहुत देर तक अपनी आँखे नहीं खोलीं। अंतत: जब खोलीं तो वह मुस्कुरा कर उसकी ओर देख रहा था। सब को सुरक्षित पाकर उसने गुरुजी को धन्यवाद दिया। अगली बार एम्पाएर एस्टेट में गुरुजी के दर्शन के लिए पहुँचने पर मैंने गुरुजी को पूरी घटना बतायी तो उन्होंने मुस्करा कर मुझे बैठने को कहा। उन्हें इसका पूर्वाभास था।

दुर्घटना से बचाव

मई 2006 में एक मित्र के यहाँ भोजन करने के पश्चात् घर वापस

आते हुए जब मैं सड़क के दूसरी ओर घूमने के लिए पूरा मोड़ (यू) ले रहा था तभी तेजी से आ रही एक गाड़ी से टक्कर होते होते बची। वह कार 150 किलोमीटर की गति से आ रही होगी। मैंने तुरन्त ब्रेक लगायी और अंतिम क्षण पर वह कार झटके से मुड़ती हुई आगे निकल गयी – जैसे कोई रक्षा कर रहा हो। यदि मैंने पूरा मोड़ ले लिया होता तो वह हमें पीछे या किनारे से आकर मारती। मैंने गुरुजी का धन्यवाद किया। गुरुजी के चमत्कार होते रहते हैं। उनकी छत्रछाया सदा मेरे परिवार पर बनी हुई है।

– ब्रिगेडियर (सेवा निवृत) जे एस अलघ, नोएडा

हमारे युग के महापुरुष

असित गिरी समं स्यात, कज्जलं सिन्धु पात्रे,

सुरतरुवर शाखा, पत्र मूर्वी।

लिखति यदि गृहीत्वा, शारदा सर्व कालम्,

तदपि तव गुणानामीश! पारं ना याति।

हे शिव! यदि जीवन भर कल्प वृक्ष की कलम से, मेरु पर्वत की दवात में सागर रूपी स्याही भर कर, और सम्पूर्ण पृथ्वी को कागज की भांति प्रयोग कर आपके गुण लिखें, तो भी सरस्वती माँ असफल ही रहेंगी।

वास्तव में गुरु-गुणों का वर्णन करना असंभव है - गुरुजी स्वयं शिव हैं। तथापि जिसने भी गुरुजी के दर्शन किए हैं, थोड़े से समय के लिए ही सही, उसने वह आवरण देखा है जिसके पीछे गुरुजी की सरलता से प्रसन्न होने वाली छवि छिपी हुई है। मुझे अपने गुरु के बारे में अपने सम्बन्धी, कर्नल (सेवा निवृत) जोशी से ज्ञात हुआ और उनके दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करने की अभिलाषा मन में जागृत हुई। चूँकि उस समय मैं पारिवारिक समस्याओं के समाधान मे लगा हुआ था और दिल्ली नहीं आ सकता था, मैंने कर्नल जोशी को गुरुजी को बताने के लिए यह लिखाः

'इब्ने आदम दुआ करे कोई
मेरे गम की दवा करे कोई'

मेरा सन्देश गुरुजी तक पहुँचा ही होगा कि मुझे उनके दर्शन और उनके आशीष का सुअवसर प्राप्त हो गया। उनके कमल चरण स्पर्श करते हुए ऐसा लगा जैसे वह कह रहे हों:

''मम दरसन फल परम अनूपा
जीव पाव निज सहज सरूपा''

यह महापुरुषों की कसौटी है: उनके सान्निध्य में साधारण मानव का मन भी उस आनंद सिन्धु में गोते लगाने लगता है, जिसकी प्राप्ति के लिए बड़े-बड़े तपस्वी अनेक जन्मों तक प्रयास करते रहते हैं। गुरुजी अन्तर्यामी है और, मेरा मानना है कि वह बिना कुछ व्यक्त किये ही मन की चाहत पूरी कर देते हैं। एक चेतावनी है: हमारी इच्छापूर्ति तभी संभव है जब वह हितकारी हो। ऋषियों ने भगवत नाम को कल्पवृक्ष समान कहा है पर गुरुजी और कल्पवृक्ष में अंतर है - कल्पवृक्ष से सब आकांक्षाएं पूर्ण होती हैं, गुरुजी केवल लाभान्वित करने वाली आशाएं पूर्ण करते हैं। श्रीमत् भागवत व अन्य ग्रन्थों में महापुरुष के जिन लक्षणों का वर्णन किया गया है, गुरुजी के व्यवहार एवं वाणी में वह शत प्रतिशत पाये जाते हैं।

यह भी महत्त्वपूर्ण है कि गुरुजी का जन्म पंजाब में हुआ। प्राचीन काल में पंजाब को सारस्वत प्रदेश कहा जाता था। न केवल महर्षि व्यास, जिन्होंने वेदों की व्याख्या करी, पुराणों को संकलित किया, महाभारत और ब्रह्म सूत्रों की रचना करी, उनके जैसे ही अन्य महान ऋषियों ने इस धरती को सदा धन्य किया है। ईश्वर की इस महान और प्राचीन परंपरा की पावन धरती पर ही, कल युग में गुरु नानक देव और श्रीचंद जैसे महानुभावों ने जन्म लेकर न केवल नव जन चेतना जागृत करी अपितु उत्पीड़ित मानवता का मार्ग दर्शन और कल्याण किया। अब गुरुजी भी वही कर रहे है - यह मेरा विश्वास है।

इस संसार में अनेक आदरणीय उपदेशक और प्रचारक हैं। किन्तु मात्र विद्या को प्रसारित करने के लिए प्रभावशाली शब्दों से दिये गये उपदेशों से मानवता का लाभ नहीं होता हैं। केवल प्रकाश का वर्णन करने से अँधेरा दूर नहीं होता हैं – इस बात का कोई महत्त्व नहीं है कि इसके लिए सूर्य या लालटेन का वर्णन किया जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि जिसमें इस ज्ञान का दीपक प्रज्ज्वलित हो चुका है, वह संवेदना सहित अध्यात्म की ज्योत जला कर, मानव के अन्दर की छिपी हुई ज्योत उजागर करने का प्रयास करे। गुरुजी का व्यक्तित्त्व ऐसा ही है। अपनी प्रतिभाओं से वह, न केवल अपने अनुयायियों के मार्ग में आने वाले संकट से सावधान कर देते हैं, वरन् उसकी यात्रा भी निष्कंटक कर देते हैं। महात्मा तुलसीदास कहते हैं कि गुरुजी जैसे महापुरुष ईश्वर से भी उच्च हैं। वह लिखते हैं:

''मेरे मन प्रभु अस बिस्वासा, राम ते अधिक राम कर दासा''

क्योंकि,

''राम सिन्धु घन सज्जन धीरा, चन्दन तरु हरि संत समीरा''

जैसे हमारी प्यास बुझाने के लिए मेघ वर्षा करते हैं और वायु चन्दन वृक्ष की शीतलता फैलाती है, उसी प्रकार से महापुरुषों के माध्यम से हम ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। राम भी संत नारद को बताते हैं कि श्रुति से महापरुषों के गुणों की व्याख्या असंभव है।

श्रद्धेय गुरुजी सच खंड वासी हैं। यह सच खंड क्या है और कहाँ है? इसका ज्ञान केवल उसको होता है जिसे गुरुजी की कृपा प्राप्त हुई हो।

''अतिसय कृपा जाहि पर होई; पाँव देई एही मारग सोई।
संत विसुद्ध मिलहिं प्रभु ताही, चितवंहि राम कृपा करि जाही।''

कहते हैं कि निराकार ईश्वर सच खंड में निवास करते हैं। दयावान परमात्मा समय समय पर, अपने महापुरुषों को, जीवों को उनके

दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों से मुक्त कर उनका पथ प्रदर्शन कराने के लिए भेजते हैं। महापुरुष जीव को क्रम से, धर्म खंड, ज्ञान खंड, शरम खंड और करम (कृपा) खंड से ले जाते हुए सच खंड में ईश्वर के निवास पर ले जाते हैं। अंत में यात्रा यहीं पर समाप्त होती है। जीव अपने कष्टों से सदा के लिए मुक्त होकर परमानन्द को प्राप्त करता है।

पूजनीय गुरुजी पहले अपने भक्त की समस्याओं की इति कर उसे कर्म योग के मार्ग पर ले जाते हैं। यह यात्रा का पहला भाग है – धर्म खंड। भक्त, तन और मन से स्वस्थ हो कर, लौकिक और पारलौकिक विषयों पर चिंतन कर पाता है। वह इस संसार की सच्चाई और स्वयं अपने जीवन की क्षणिकता को पहचान लेता है। यह ज्ञान खंड है।

अपनी अल्पज्ञता और स्वाभिमान का उसे भान होता है। वह लज्जित होता है। अविराम विचार से वह प्रभु की महानता और अपने अस्तित्व को पहचान लेता है। वह सोचता है कि यह जीवन, जो प्रभु ने सर्वानन्द प्राप्ति के लिए प्रदान किया था, व्यर्थ व्यतीत हो रहा है। जब परमात्मा से मिलने की उत्कंठा अत्याधिक हो जाती है, वह शरम खंड में पहुँच जाता है। इस यात्रा का शिखर तब आता है जब उसे प्रभु कृपा प्राप्ति का आभास होता है; उसके सारे संशय समाप्त हो जाते हैं और मन आनंद सागर में गोते लगाने लगता है। यह करम खंड का क्षेत्र है।

दीप्तिमान परम कृपा के आनंद में डूबे हुए जीव के लिए सच खंड के द्वार खुल जाते हैं। कोई इस यात्रा पर अकेले नहीं चल सकता। शिव समान व्यक्ति के लिए भी जीवन सागर को पार करना कठिन है। ज्ञान के भण्डार ब्रह्मा को भी, परमानन्द की प्राप्ति के लिए, गुरु या महापुरुष के पास जाना पड़ता है और गुरु की कृपा दृष्टि तुरन्त उन्हें वहाँ पहुँचा देती है। गुरुजी इस युग के ऐसे ही महापुरुष हैं और मैं उनके कमल चरणों की वंदना करता हूँ।

आपके कमल चरण को समर्पित

हे भगवन्! शिव! गुणगान करता हूँ आपके कमल चरणों का,
आश्रय हैं आप हमारे,
आपके कमल चरण बांधते हैं हमें आपसे
लौकिक माया को भेद कर
भक्तों को भेंट करें उनकी आशाएं
कल्प वृक्ष की भांति

हे भगवन्! शिव! गुणगान करता हूँ आपके कमल चरण का
शिव, ब्रह्मा और स्वर्ग के समस्त देव
नतमस्तक होते हैं आपके कमल चरणों में
हे सबसे प्यारे गुरु, ढूंढता है जो आसरा
मिलता है उसे सहारा
आपके चरण, सबसे प्यारे प्रभु
कुचल दें सब बाधाएं
और भव सागर से पार करें
हे भगवन्! हे शिव! गुणगान करता हूँ आपके कमल चरणों का

–जगदीश चन्द्र पाण्डेय, नैनीताल

गुरुजी 100 किलोमीटर बिना ईंधन के कार ले गये

श्री ग्रेवाल पंजाब कृषि विश्वविद्यालय में अपनी ससुराल में थे जब गुरुजी अपने कुछ अनुयायियों के साथ वहां पहुंचे। लंगर करते हुए बहुत रात हो गयी थी।

श्री ग्रेवाल को गुरुजी को जालंधर में उनके मंदिर तक पहुंचाना था। श्री ग्रेवाल की मारुति 800 गाड़ी में वह दोनों चल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर श्री ग्रेवाल को आभास हुआ कि गाड़ी में पेट्रोल समाप्त होने वाला है। वह चिंतित हो गये। उन्हें पता था कि इस समय कोई पेट्रोल पम्प खुला नहीं होगा। यह नव्वे का दशक था जब पंजाब में आतंकवाद फैला हुआ था और दूकानें जल्दी बंद हो जाती थीं। श्री ग्रेवाल को यह भी पता था कि देर रात में पुलिस और आतंकवादी, दोनों घूमते रहते थे।

उनके साथ बैठे हुए गुरुजी ने उनके मन की बात पढ़ते हुए उनको चिंतामुक्त रहने के लिए कहा। श्री ग्रेवाल को याद है कि गुरुजी ने कहा था कि वह चिंता क्यों कर रहे हैं, उनके पास वहां तक पहुँचने के लिए पर्याप्त ईंधन है और वह गाड़ी चलाते रहें। वह कार चलाते रहे किन्तु उन्हें पता था कि देर सबेर पेट्रोल समाप्त हो जाएगा।

लुधियाना – जालंधर राजमार्ग पर मध्य दूरी पर स्थित गोराया

पहुँचने पर श्री ग्रेवाल के मन को पुनः उन्हीं चिंताओं ने घेर लिया। गुरुजी तुरन्त बोले कि वह व्यर्थ शंका कर रहे हैं; वह केवल विश्वास के साथ चलते रहें, पेट्रोल पर्याप्त है। उनके कहने पर श्री ग्रेवाल को अचानक आभास हुआ कि उस गाड़ी मे चार किलोमीटर से अधिक का पेट्रोल नहीं था और वह 40 किलोमीटर आ चुके थे। तब उन्हें विश्वास हुआ कि उनकी कार पेट्रोल से नहीं अपितु दिव्य शक्ति से चल रही है। शीघ्र ही वह जालंधर में गुरुजी के मंदिर पर पहुँच गये। गुरुजी जब उतरे तो उन्होंने कहा कि वह गाड़ी को बिना पेट्रोल के ले आये हैं, प्रातः होते ही वह पेट्रोल भरवा लें - उसके बाद कार बिना पेट्रोल के नहीं चलेगी।

श्री ग्रेवाल कहते है कि दिव्य ऊर्जा के इस अद्‌भुत अनुभव के पश्चात् उन्होंने अपने आप को गुरुजी को समर्पित कर दिया। उन्हें विश्वास हो गया कि गुरुजी कोई साधारण पंडित या संत न होकर अति असाधारण हैं: वास्तव में वह सतगुरु है।

60 वर्ष उपरान्त राजस्थान के कूप में जल भरा

गुरुजी की दया अपरम्पार है। वह करुणा के अपार सागर हैं जिसकी कोई समानता नहीं की जा सकती है। जयपुर में लाखों ने गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त किया था। 1994 में गुरुजी वहाँ गये थे और ब्रिगेडियर (अब सेवा निवृत जनरल) मोहन सिंह के यहाँ महीने भर तक रहे थे। उनके दर्शन के लिए सैंकड़ों लोग आते थे दर्शनार्थी राजस्थान के पृथक-पृथक ग्रामों से अपनी पत्नियों, बच्चों आदि के साथ बैलगाड़ियों, तांगों और अन्य नाना प्रकार की सवारियों में अपनी समस्याओं और चिंताओं को लेकर आये थे। गुरुजी अपनी संवेदनशील दृष्टि, ताम्र लोटे इत्यादि से उनको आशीष देते रहे। उनके अनुयायी, जिसमें श्री ग्रेवाल भी थे, दुभाषिये का काम कर रहे थे।

उनको याद है कि किस प्रकार से एक पंचायत के सदस्य ने उनके पास आकर विनती करी कि क्या गुरुजी उनके गाँव में पिछले 60 वर्ष से एक सूखे कुँए में फिर से जल भर सकते हैं?

तीन दिन के बाद उनको विनती का उत्तर प्राप्त हो गया। ग्रामवासी जयपुर की सड़कों पर शोर शराबे के साथ, ढोल बजाते हुए और ''गुरु बाबा, जल आ गया'' चिल्लाते हुए आये। गुरुजी ने आनंदित ग्रामवासियों को कभी भी उसका जल न बेचने का निर्देश दिया। अन्य सभी दर्शनार्थी भी लाभान्वित हुए - भले ही वह रोग या मानसिक चिंता से ग्रस्त हों या फिर पारिवारिक समस्या हो। केवल आम जनता को ही लाभ नहीं मिला; महाराजा भवानी सिंह को चार कन्धों पर उठा कर लाया गया। कुछ ही दिनों के बाद वह स्वस्थ होकर चलने लगे।

हीरे और पुष्प

कभी-कभी किसी भक्त का मनोरथ होता है कि गुरुजी, शिव के अवतार, जो आशुतोष के समान सरलता से प्रसन्न हो जाते हैं, कोई कामना पूर्ण करें। ऐसा ही कुछ श्री ग्रेवाल की पत्नी, श्रीमती रिम्पल के साथ हुआ। गुरुजी संगरूर में संगत कर रहे थे। अचानक उन्होंने श्रीमती रिम्पल को अपने पास बुलाया और अपने हाथ में प्रकट हुए दो हीरे उनको दिये। वह ब्रिटेन की मुद्रा पाउंड में लिपटे हुए थे। आज बारह वर्ष बाद भी उनमें से गुलाब की सुगन्ध आती है - गुरुजी के होने का प्रमाण।

अन्य अवसरों पर भी गुरुजी विशेष कृपा करते हैं। नव वर्ष की पूर्व संध्या पर श्री ग्रेवाल की सुसराल में गुरुजी की संगत हो रही थी। अचानक उनके ससुर पर पुष्पों की पंखुड़ियाँ बरसने लगीं और कुछ देर तक ऐसे हो बरसती रहीं। दस मिनट के उपरान्त, एक अन्य महिला अनुयायी, श्रीमती बरदान पर ऐसा ही हुआ। यह चमत्कार भक्तों पर गुरुजी का प्रेम दर्शाते हैं। श्री ग्रेवाल कहते हैं कि गुरुजी अपने भक्त से कोई मांग नहीं करते। वह तो आपके कर्म अपने ऊपर अंतरित कर आपको मुक्त कर देते हैं। वह केवल प्रेम और आस्था चाहते हैं।

-जगबीर सिंह ग्रेवाल, गुड़गाँव द्वारा कथित

जीवन की पाठशाला में गुरु कृपा

गुरुजी की संगत में पहली बार जाने का अवसर मुझे अपने इक्कीसवें जन्म दिवस पर मिला। मेरे पिता, कमांडर शर्मा दर्शन के लिए जाते रहे थे पर मेरी माँ और मेरी दो बहनें कभी नहीं गयीं थी। पता नहीं क्यों उस दिन मेरे अन्दर गुरुजी के दर्शन करने की अभिलाषा जागृत हुई।

मैं सदा से सामान्य छात्रा रही हूँ। बारहवीं कक्षा में 64% अंक लेकर मुझे दिल्ली विश्वविद्यालय के किसी अच्छे महाविद्यालय मे प्रवेश नहीं मिला तो मेरे पिता ने मुझे इग्नू के बी सी ए पाठ्यक्रम में प्रवेश दिला दिया। मुझे पता नहीं था कि वहां पर बी सी ए और एम सी ए पाठ्यक्रमों में केवल 3% विद्यार्थी पहली बार में उत्तीर्ण हो पाते हैं। गुरुकृपा से, सामान्य विद्यार्थी होते हुए भी, मैंने न केवल बी सी ए, अपितु एम सी ए भी पहले प्रयास में पूरा कर लिया। जैसे यह कम था मैंने स्नातक अध्ययन भी पूरा किया और स्नातकोत्तर अध्ययन करते हुए डेढ़ वर्ष का सोफ्टवेयर डेवेलपर का अनुभव भी प्राप्त किया। यह कौन सोच सकता था कि मेरे जैसी लड़की कैसे इतना एक साथ कर सकती है? गुरुजी की कृपा से ही मैं यह सब करने में समर्थ हुई।

शीघ्र ही पूरे परिवार ने गुरुजी के दर्शन के लिए जाना आरम्भ कर दिया। एम सी ए करने के उपरान्त मुझे एक नयी नौकरी की आवश्यकता थी। मेरी परीक्षाओं के बाद हम सब गुरुजी के दर्शन के लिए गये। वहां पर मेरी माँ ने गुरुजी से मेरे लिए दस हज़ार रूपये की नौकरी के लिए प्रार्थना करी। मुझे पता नहीं कि माँ ने वह अंक क्यों चुना। परन्तु जब मुझे नौकरी मिली तो मुझे दस हज़ार रूपये का ही वेतन दिया गया। जब मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने इतने के लिए ही क्यों प्रार्थना करी, तो उन्होंने उत्तर दिया कि वही अंक उस समय उनके मन मे आया था अतः उन्होंने उतने के लिए ही प्रार्थना करी। दिसंबर 2001 में मेरी परीक्षाएं समाप्त होने के शीघ्र बाद ही 5 जनवरी को मुझे नयी नौकरी मिल गयी।

जब मैं साक्षात्कार के लिए प्रबन्धक के समक्ष पहुँची तो उन्हें आभास हुआ कि उस कार्य के लिए मुझमें योग्यता नहीं है। वह इस दुविधा में थे कि योग्यता न होते हुए मुझे कैसे बुलाया गया। किन्तु उन्होंने मुझे एक अन्य रिक्त पद के लिए प्रश्न पूछे और मुझे वहां नौकरी मिल गयी। इसके बाद मैं कुछ दिन तक माँ को छेड़ती रही कि केवल दस हज़ार के लिए ही क्यों प्रार्थना करी।

मेरे 23 वर्ष पूरे होने पर मेरे परिवार वालों के मन में आया कि मेरा विवाह कर देना चाहिए। मेरे माता पिता वैवाहिक विज्ञापन देखने लगे। मेरे सम्बन्ध के लिए माता पिता को एक परिवार उपयुक्त लगा और उन्होंने सप्ताहांत मे वहाँ जाने का निर्णय लिया। वहीं से एक और विवरण भी आया था; क्योंकि यह अधूरा सा था इसीलिए मेरे माता पिता का वहाँ जाने का विचार नहीं था। परन्तु जब वह घर से निकलने वाले थे तो उस परिवार से लड़के के पिता ने फोन किया। चूँकि वह फरीदाबाद जा ही रहे थे उन्होंने दूसरे घर (मेरी ससुराल) भी जाने का निर्णय ले लिया। उसके उपरान्त गुरुजी की कृपा से सब कुछ कुशलपूर्वक संपन्न हुआ।

2004 में एक रात्रि के अंतिम प्रहर में मुझे गुरुजी का स्वप्न आया

जिसमें उन्होंने कहा कि दो वर्ष के पश्चात् हम विदेश जाएंगे। उस समय तक विदेश जाने का विचार तक मेरे मन में नहीं आया था और ऐसा लगता नहीं था कि वहां जाकर हम आनंदपूर्वक रह पांएगे। किन्तु दो वर्ष उपरान्त परिस्थितियाँ भिन्न थीं। मैं चकित हूँ कि इस समय घटती हुई घटनाएँ देख कर मैं प्रसन्न थी। हमारी जर्मनी जाने की योजना सितम्बर 2006 में साकार हुई – गुरुजी के स्वप्न के ठीक दो वर्ष बाद!

इसके अलावा और भी अनेक अनुभव हैं। जर्मनी में नौकरी के लिए मेरा फोन पर साक्षात्कार हो रहा था। यद्यपि वह अच्छा नहीं हुआ था उसके तुरन्त बाद मुझे गुरुजी की विशिष्ट सुगन्ध आयी। सन्देश स्पष्ट था: चिंता की कोई आवश्यकता नहीं है, वह मुझ पर और मेरे प्रियजनों पर अपना स्नेह बनाए हुए हैं।

–श्रीमती जया कौशिक, म्यूनिख, जर्मनी

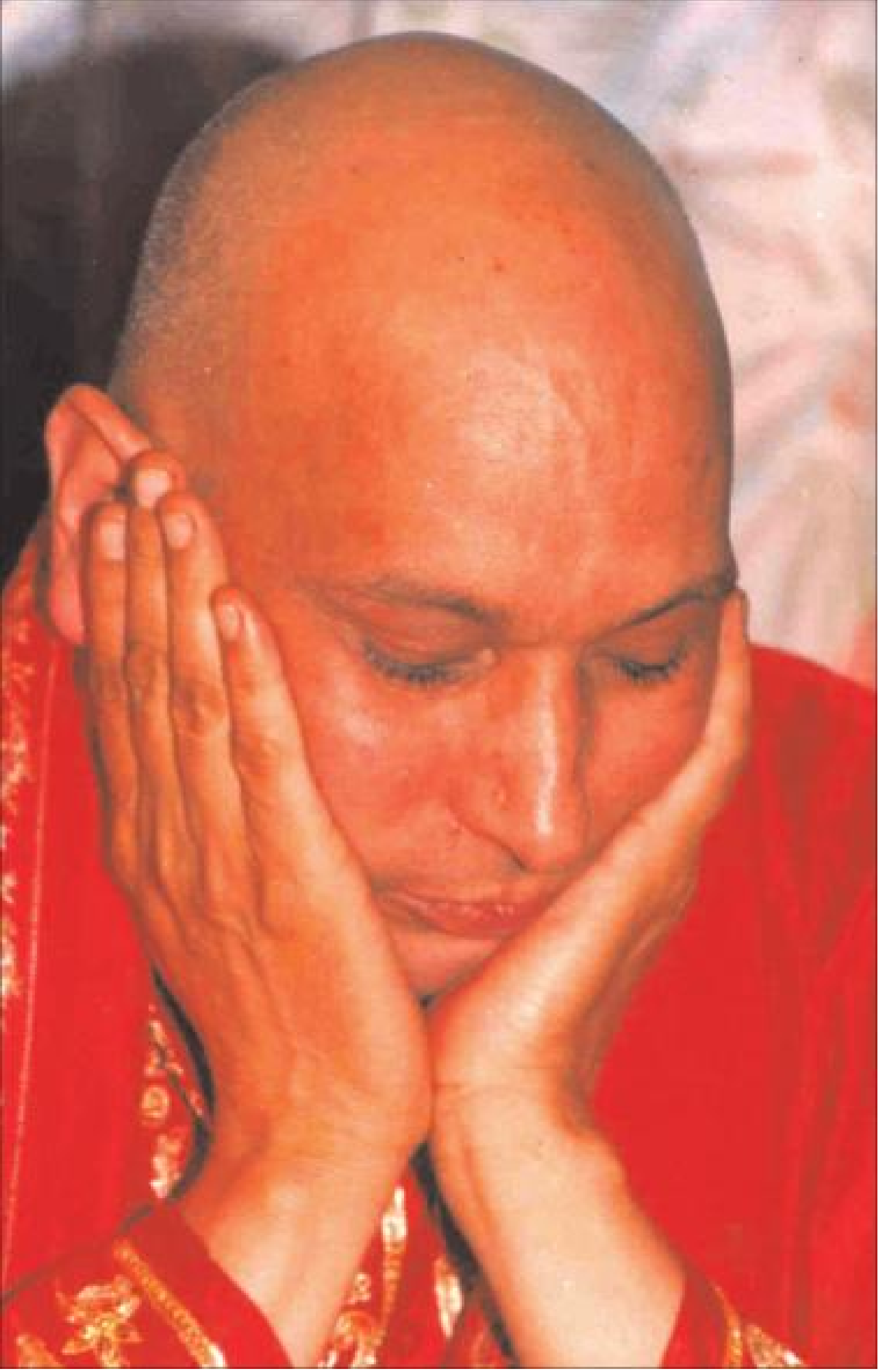

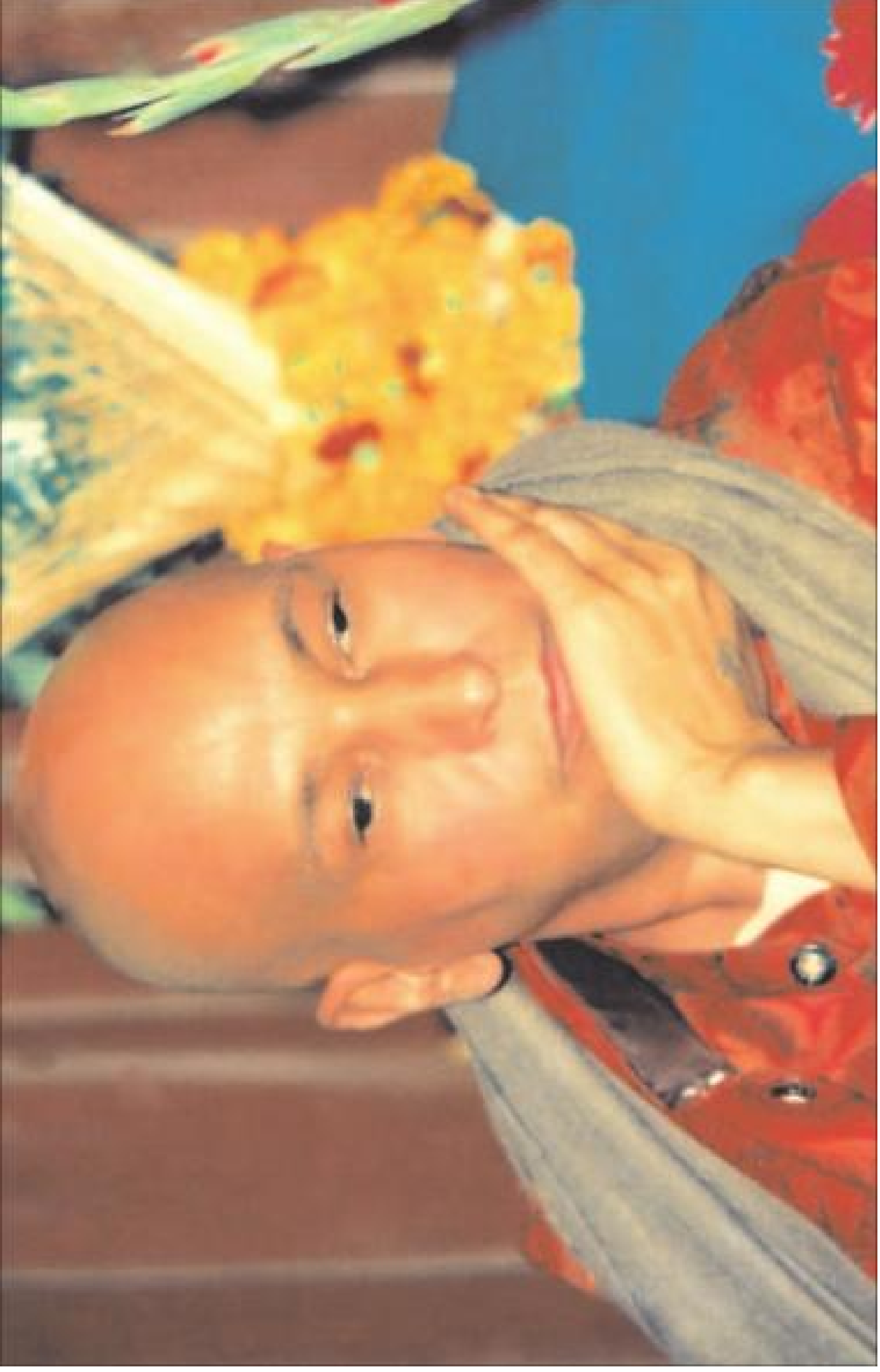

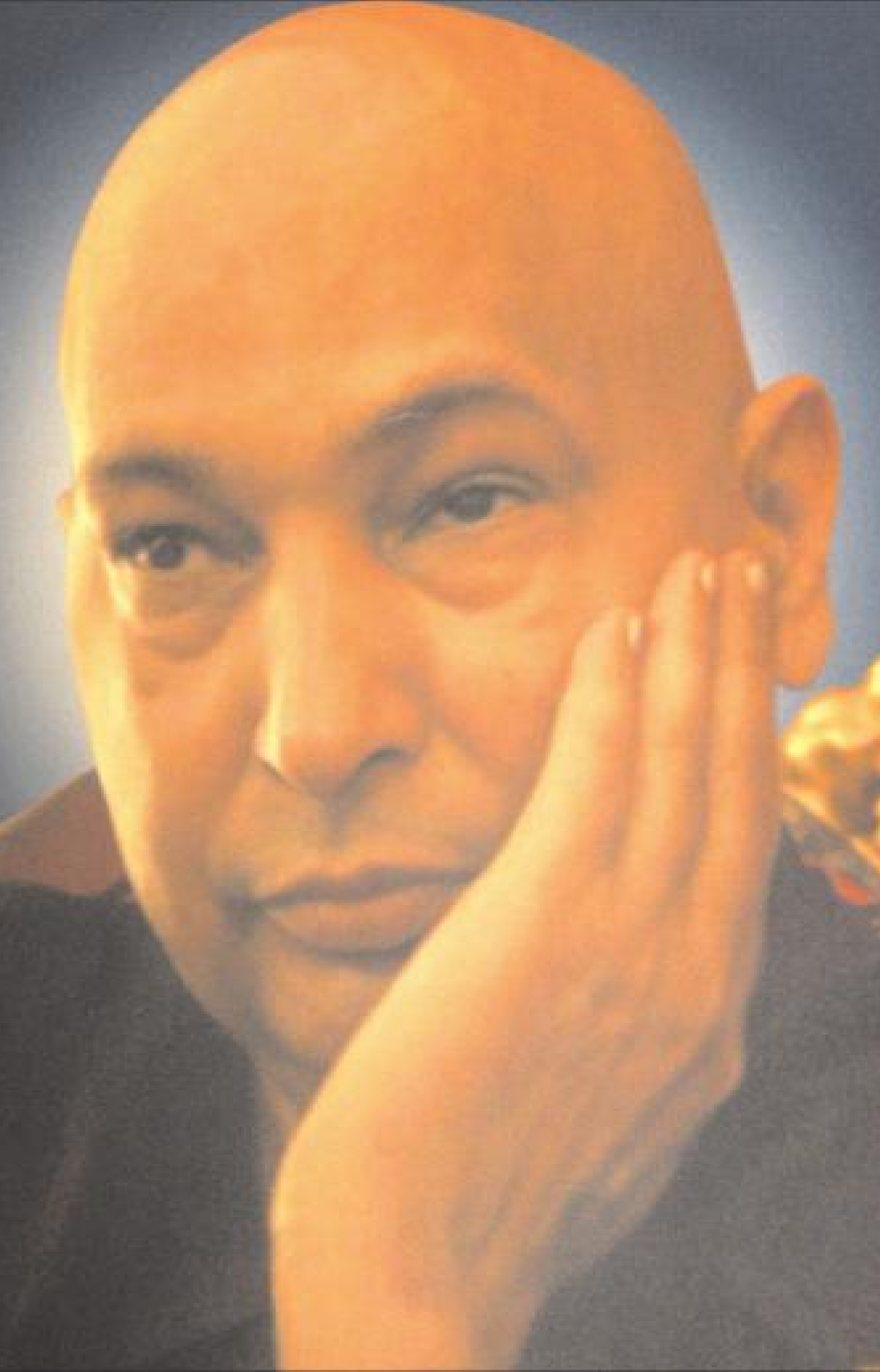

पितृ रक्षक गुरुजी

वर्ष 2006 में, होली से दो दिन पूर्व, देर रात्रि में अपनी बहन से फोन पर वार्ता होते ही मैं अपने पिता की शय्या के पास पहुंचा। अति उच्च रक्त चाप के कारण उनको कुमाऊँ की तराई में स्थित हल्द्वानी शहर के एक चिकित्सालय में गहन सेवा केंद्र मे प्रविष्ट कराया गया था।

मेरी बहन से फोन पर समाचार मिलने के तुरन्त बाद मेरी पत्नी और मुझे समझ आया कि गुरुजी इसकी चेतावनी पहले से ही देते रहे थे। फरवरी 2006 मे शिवरात्रि से पूर्व, शीतकाल में, जब मेरे पिता भीमताल से गुड़गाँव हमारे साथ रहने आये थे, तो गुरुजी ने उनके बारे में पूछा था। गुरुजी जानना चाहते थे कि क्या वह शिवरात्रि से पहले ही घर वापस चले गये हैं, जो सत्य था। गुरुजी ने एक अन्य भक्त, मेरे मामाजी, कर्नल (सेवा निवृत) जोशी के द्वारा सन्देश भी दिया था कि मेरे पिता मेरे पास रहने के लिए आ जाएँ। गुरुजी के सदा भविष्यसूचक कथन को हमने अनसुना कर दिया था।

अत: मेरे पिता उस उच्च रक्तचाप के दौरे से बच नहीं पाये। जब यह अनहोनी हुई वह हल्द्वानी से वापस भीमताल अपने घर जा रहे थे। वह जीवन बीमा निगम से सेवानिवृत हुए थे और हल्द्वानी में उस संस्था द्वारा आयोजित एक समारोह में भाग लेने आये थे।

दौरे का आवेग बहुत अधिक था और यदि गुरुकृपा नहीं होती तो प्राणघातक हो सकता था। रक्त चाप के बढ़ने से मेरे पिता की नक्सीर फूट गयी थी और इस प्रकार रक्त धमनियों पर उसका प्रभाव कम हो गया। यदि ऐसा नहीं हुआ होता तो संभवत: घातक हृदय का दौरा पड़ता या पक्षाघात हो जाता।

आई सी यु में मुझे पश्चाताप करते हुए पिता मिले। उन्हें गुरुजी का कथन न मानने पर अपनी भूल का आभास हो रहा था। परन्तु गुरुजी की ही दया से वह एक रात्रि चिकित्सालय में बिताकर घर आ गये। हल्द्वानी में ही एक सप्ताह स्वास्थ लाभ करने के पश्चात् हम सब गुड़गाँव आये। वहीं पर स्वास्थ्य लाभ करते हुए मेरे पिता ने मुझे कहा कि गुरुजी उन्हें बड़े मंदिर में कुछ समय व्यतीत करने दें।

मुझे अपने पिता के रक्त चाप की अत्याधिक चिंता थी – वह कम नहीं हो रहा था। यह चिंता व्यर्थ ही थी क्योंकि हम सब गुरुजी की शरण में थे। दयावान, रक्षक, पिता समान, गुरुजी हमारे कष्ट दूर करने मे लग गये। सर्वप्रथम, उन्होंने मेरे पिता को, उनकी अव्यक्त कामना के अनुसार, बड़े मंदिर जाने दिया। फिर मेरे पिता को एक ताम्र लोटा लाने को कहा जिसे अभिमंत्रित कर उन्होंने उसका जल पीने को कहा। मेरे पिता ने गुरुजी की सब बातें मानी: वह मंदिर गये, उन्होंने जल ग्रहण किया और पेट भर कर लंगर भी खाया।

यह चिकित्सक के निर्देशों के विपरीत था। उन्हें हल्का, लवण रहित भोजन खाना था। निश्चित रूप से, गुरुजी का लंगर इस प्रकार का नहीं होता। मेरे पिता को पूर्ण शय्या विश्राम का भी निर्देश था पर वह बड़े मंदिर में बैसाखी समारोह के आयोजन में लगे रहे।

गुड़गाँव आने के तीन सप्ताह उपरान्त हम चमत्कृत हो रहे थे। उस मायावी अभिमंत्रित लोटे से जल ग्रहण करने के कुछ दिन बाद ही उनके स्वास्थ्य में अभूतपूर्व सुधार आया। उनका रक्त चाप भी कम हो गया।

गुरुजी के आशीर्वाद से न केवल रक्त चाप कम हुआ, उससे चिकित्सक की दी हुई औषधियाँ भी व्यर्थ हो गयीं। चिकित्सा विज्ञान को पुनः आस्था और विश्वास के रहस्यों ने आह्वान किया था। मेरे पिता के लिए गुरुजी जीवन रक्षक सिद्ध हुए हैं। मेरी पत्नी और मुझे गुरुजी की दया और कृपा के इतने अधिक सुअवसर प्राप्त हुए हैं कि उनका हृदय से आभार प्रकट करने के लिए हमारे पास शब्द नहीं हैं। यदि वह अनुमति दें, तो हम यह जीवन उनके कमल चरणों मे व्यतीत करना चाहेंगे। गुरुजी को सदा हमारा सादर प्रणाम।

–जीतू, गुड़गाँव

जागृति

जे सौ चंद उगे, सूरज चढ़े हज़ार,
इत्थे चानन हुंदियां गुरु बिन घोर अंध्यार।।
– श्री गुरु ग्रन्थ साहिब

1995 में मेरे भाई ने गुरुजी से मेरा परिचय करवाया। पहली बार मैं उनके चरण स्पर्श कर ही रही थी कि उन्होंने मुझे जतिंदर कह कर संबोधित किया। मैं चकित रह गयी क्योंकि यह मेरा औपचारिक नाम होते हुए भी कोई मुझे इससे नहीं पुकारता है। सब मुझे मेरे छोटे नाम जोगा से संबोधित करते हैं और मेरा यह औपचारिक नाम केवल मेरे घनिष्ठ परिवार वालों को ही पता है।

मैंने इसे संयोग समझ कर टाल दिया। जब मैं अगली बार गुरुजी से मिलने गयी तो मुझे विश्वास था कि तर्क सिद्ध हो जाएगा। मैं योग मुद्रा में अपने चक्षु बंद कर गुरुजी के सामने बैठी थी। अचानक मुझे प्रतीत हुआ कि मैं पृथ्वी से ऊपर उठ कर वायु में तैर रही हूँ। स्वत: मेरे दोनों हाथ पृथ्वी को छूने के लिए किनारे आगये और मुझे एक झटका लगा। जब मैंने गुरुजी को देखा तो वह मुस्कुरा रहे थे। मुझे आभास हुआ कि उन्होंने ही विश्वास जागृत करने के लिए यह किया था। आज तक मुझे वह वायु में तैरना याद है।

तीन वर्ष की आयु से मुझे अस्थमा रहा था और पिछले तीस वर्षों से मैं प्रतिदिन, रोग की अवस्था के अनुरूप, विभिन्न मात्रा में, 5 से 30 मिलीग्राम तक स्टिरोइड की गोलियां खाती आयी थी। फलस्वरूप समस्याएँ हो गयीं थीं; मेरी पाचन क्रिया अति क्षीण थी और उदर रोग एवं अन्य सम्बंधित रोग उत्पन्न हो गये थे। अस्थमा और स्पोंदियोलोसिस के लिए अक्सर चिकित्सालय में समय व्यतीत करना पड़ता था।

गुरुजी की संगत में आने के उपरान्त धीरे-धीरे मेरे सब रोग और तनाव समाप्त हो गये। प्रत्येक संगत में आकर मुझे और अधिक शांति मिलती थी। कुछ ही दिनों में, गुरुकृपा से, मैं अपने आप को सामान्य अनुभव करने लगी और रोग का उपचार बिना किसी औषधियों या तप के हुआ। केवल लंगर और आस्था से मैं स्वस्थ हो रही थी।

कुछ वर्ष पूर्व मेरे पति ने अपने अभिलेखन केन्द्र के लिए कीमती स्विस मशीनें लीं थीं। व्यवसाय में अड़चनें थीं और मशीनों की अति आवश्यकता थी। पर व्यवसायिक ध्वनि केन्द्र के लिए उन्हें आयात करने में बहुत अधिक और जटिल नियम थे – अतः कठिनाइयाँ मुंह पसारे खड़ीं थी। फिर अचानक ही उस विदेशी कंपनी से कोई सज्जन आये और उन्होंने मेरे पति से मिलकर थोड़े से वार्तालाप के बाद आयात करने में सहायता कर दी। हम उनको जानते नहीं थे; ऐसा लगा जैसे उन्हें हमारे पास भेजा गया हो। व्यवसाय में उत्पन्न कठिनाइयों को दूर करने के लिए हम गुरुजी के आभारी हैं।

संगीत के स्वर

एक अवसर पर एक प्रसिद्ध पंजाबी गायिका गुरुजी की संगत में गाने के लिए आ रही थी। गुरुजी ने मेरे पति को उनका कार्यक्रम अभिलेखित करने को कहा। उस स्थल पर संगीतकार के यंत्र पहले ही लगे हुए थे। जब मेरे पति ने गुरुजी को इस बारे में बताया तो उन्होंने उन्हें संगत में बैठ कर संध्या का आनंद लेने को कहा।

तीन घंटे का कार्यक्रम होने के पश्चात् गुरुजी ने अभिलेखित किये हुए गाने बजाने को कहा, पर कोई ध्वनि नहीं आयी। आधे घंटे तक यंत्रों से उलझने के बाद ध्वनि यंत्रविद ने बताया कि कोई गाना अभिलेखित नहीं हुआ था। गुरुजी ने मुस्कुरा कर मेरे पति की ओर देखा और कहा कि गायिका के अगले कार्यक्रम में वह अभिलेखन का कार्य संभालेंगे। गुरुकृपा से संगीत का वह टेप, जो मेरे पति ने अभिलेखित किया था, प्रत्येक संगत में बजाया जाता है।

उपचारात्मक स्पर्श

यद्यपि गुरुजी अपनी कृपा देने के लिए विभिन्न पद्धतियाँ अपनाते हैं, आवश्यक यह है कि उनके कथन पर पूर्ण रूप से पालन किया जाये। मेरी भाभी के प्रसंग से यह स्पष्ट हो जाएगा। वह आठ वर्ष की आयु से अधसीसी रोग से ग्रस्त थी। एक बार गुरुजी की संगत में उसे यह पीड़ा प्रारम्भ हो गयी। लंगर होने के समय गुरुजी ने उसे दो चपातियाँ दीं। उसने वह साहस करके खा ली। उसके बाद गुरुजी ने उसे दो चपातियाँ और दी। उसमें से उसने एक ही खायी और दूसरी अपने बैग में छिपा ली। शीघ्र ही उसका दर्द कम होने लगा। जब वह अगली बार गुरुजी के पास आयी तो उसने गुरुजी से कहा कि उसकी पीड़ा प्रायः समाप्त हो चुकी है, केवल 10% शेष है। गुरुजी हंस कर बोले कि यदि उसने चौथी चपाती भी खायी होती तो उसका रोग भी समाप्त हो गया होता। वह अचंभित रह गयी क्योंकि किसी को पता नहीं था कि उसने चपाती छिपायी थी।

मेरे पिता प्रशासनिक सेवा से निवृत हुए हैं और गुरुजी के परम भक्त हैं। एक दिन वह मेरे भाई के साथ संगत में गये। गुरुजी ने मेरे भाई को बाजार से 51 रूपये के पान के पत्ते लाने को कहा। फिर गुरुजी ने वह पान के पत्ते मेरे पिता के उदर पर रखे और कहा कि उन्होंने उनकी शल्य क्रिया कर दी है। मेरे पिता अचंभित थे क्योंकि वह अपने आप को बिलकुल स्वस्थ समझ रहे थे। कुछ दिन पश्चात् मेरे पिता के

मूत्र में रक्त आया और उन्हें चिकित्सालय में प्रविष्ट कराना पड़ा। चिकित्सकों ने पित्त के कर्कट रोग का परिणाम निकल कर उनकी शल्य क्रिया कर दी। स्पष्ट था कि गुरुजी ने उनको आशीष दिया था। यदि गुरुजी ने वह प्रक्रिया नहीं करी होती तो उनके इस रोग का कभी पता नहीं लगता। गुरुजी ने इस प्रकार से उनके रोग का पता लगने से पूर्व ही उसका उपचार कर दिया था।

एक अन्य अवसर पर गुरुजी ने एक ऐसे व्यक्ति, जो उनसे कभी मिले नहीं थे, का उपचार कर हमें भावविह्वल कर दिया।

हमे कुत्तों से प्रेम है; अतः हमारे घर में पशु चिकित्सक आते रहते थे। एक दिन जब वह घर आये तो चिंतित लगे। उनके ससुर तृतीय श्रेणी के कर्कट रोग से पीड़ित थे; वह और उनकी पत्नी उनसे मिलने चिकित्सालय जा रहे थे। मैं बाहर अपने पति की प्रतीक्षा करती हुई उनकी पत्नी से मिली। यद्यपि न इससे पहले उसने गुरुजी के बारे में सुना था न ही उनको जानती थी, मैंने उसे गुरुजी का एक छोटा चित्र दिया। वह अपने पिता के लिए कुछ भी करने को तैयार थी। उन्होंने वह संभवतः अपने पिता की कमीज की जेब में या तकिये के नीचे रख दिया, जैसा मैंने उनको कहा था। उस रात्रि उनके पिता की अवस्था बिगड़ी पर अगले दिन उसमें आश्चर्यजनक सुधार आया और चार दिन में वह चिकित्सालय से घर आ गये। ऐसा लगा कि किसी ने उनके रोग को खींच कर बाहर निकाल दिया था क्योंकि उनकी पीठ में एक गड्ढा सा बन गया था। हमारी खुशी का ठिकाना नहीं रहा जब वह संगत में आये। उनके ससुर ने जब मुझे धन्यवाद दिया तो मैंने उन्हें गुरुजी का धन्यवाद करने को कहा।

मेरे अमरीकी बच्चे

पाठशाला में पढ़ते हुए मेरे बच्चों को गुरुजी अमरीकी कह कर पुकारते थे। हमें इसका कारण समझ नहीं आता था। बच्चों के मन में विदेश जाने की न तो कोई रुचि थी न ही कोई योजना। परन्तु वह तो

भविष्य देखते हैं। आज मेरा बड़ा पुत्र कनाडा में है और छोटे को केलिफोर्निया की एक शिक्षा संस्था में प्रवेश मिला है। गुरुजी ने मेरे बच्चों के अध्ययन मे भी सहायता करी। उनकी दया से मेरे छोटे बेटे को कंप्यूटर विज्ञान परीक्षा में राज्य में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

आज के युग में धोखा, संदेह और नकारात्मकता बहुत अधिक है। रोग हर स्थान पर हैं। गुरुजी से मिल कर मैं भाग्यशाली हूँ; उन्होंने जीवन के कष्ट और समस्याएँ दूर कर विश्वास, स्वास्थ्य और अध्यात्म दिया है। इससे हम जीव और परम की अति सुन्दर विधियों को समझ पाये हैं। गुरुजी के अद्‌भुत भाव से प्रत्येक अनुयायी को उनके समक्ष विशिष्ट होने का आभास होता है और प्रत्येक दिन उनकी कृपाओं से परिपूर्ण होता है।

–श्रीमती जोगा चीमा, चंडीगढ़

गुरुजी के आदेश से

मैं किसी ऐसे गुप्त रोग से पीड़ित थी जिसका उपचार नहीं हो पा रहा था। सब प्रसिद्ध चिकित्सालयों – इन्द्रप्रस्थ, अपोलो, मेक्स, एम्स आदि में मेरे अनेक परीक्षण हो चुके थे किन्तु किसी रोग का प्रमाण नहीं मिल रहा था।

मैंने लगातार गुरुजी के पास आना प्रारम्भ कर दिया। गुरुजी ने मुझे बड़े मंदिर में सेवा करने को कहा। मैने उनकी आज्ञा का पालन किया। चार-पांच दिन पश्चात् जब मैं चिकित्सक के पास गयी तो रोग का निदान हो गया। वह एक गंभीर प्रकार का रक्त संक्रमण था; चिकित्सक ने मुझे चेतावनी दी कि उपचार लम्बा और पीड़ादायक होगा। परन्तु गुरुजी को यह स्वीकार नहीं था कि उनके भक्त को इतने कष्ट उठाने पड़ें। मुझे चिकित्सालय में प्रविष्ट कर के उपचार प्रारम्भ किया गया परन्तु चार दिन के पश्चात् ही मुझे वहां से मुक्ति भी मिल गयी। मुझे औषधियाँ लेने को कहा गया। अब मैं स्वस्थ सानंद हूँ।

ऐसी कृपा असाधारण नहीं है। जब भी गुरुजी कुछ निर्देश दें तो उसका अक्षरशः पालन हो – उसका तर्क नहीं ढूंढना चाहिए। उनका आदेश भक्त के लिए उनका आशीर्वाद है और वह उसके लाभ के लिए है। गुरुजी को धन, उपहार या प्रसन्न करने वाले भाव पसंद नहीं हैं। वह केवल सच्चे प्रेम से प्रसन्न होते हैं। ऐसा प्रेम जिसमें कोई आशा न हो, कोई प्रतिबन्ध नहीं हो, कोई शर्त न हो और जो गुरुजी का कहा स्वीकार करे। विश्व में कहीं भी, हर समय, वह सदा साथ हैं और सच्चे प्रेम का प्रतिदान करते हैं। उनको केवल प्रेम से स्मरण करने की आवश्यकता है।

–श्रीमती ज्योति गुप्ता, दिल्ली

कर्म बंधनों से मुक्ति

ज्योति वर्मा के सास और ससुर दोनों को रक्त कैंसर होने का निदान हुआ था। इस समाचार के पश्चात् ज्योति वर्मा और उसके पति देहरादून में अपना कारखाना और पेट्रोल पम्प बेच कर दिल्ली आ गये थे।

देहरादून की तुलना में दिल्ली में रहना अधिक महंगा था। वर्मा परिवार में उनके दो बच्चों के अलावा उनके माता-पिता भी थे। उन्हें लगता था कि यहाँ पर वह कभी भी सुख और समृद्ध जीवन व्यतीत नहीं कर पायेंगे। उन्हें प्रतीत होता था कि कर्मों के बंधनों में जकड़े हुए वह सब किसी अंतहीन, अँधेरी गुफा में फंसे हुए, बिना किसी दिशा के चक्कर काट रहे हैं। कर्मों के चक्र उन्हें घुमा रहे थे। नव जीवन पुनः आरम्भ करने के लिए उन्होंने किसी अन्य छोटे शहर में रहने का निश्चय कर लिया था। यहाँ तक कि देहरादून से आने के बाद उन्होंने अपना सामान भी नहीं खोला था।

फिर एक मित्र के कहने पर, जिसकी बेटी के विवाह में वह गये थे, वह गुरुजी के पास पहुंचे। अगले दिन वह एम्पाएर एस्टेट आये और उन्होंने घंटों बैठ कर गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

उनकी आर्थिक चिंताएँ इतनी अधिक थीं कि गुरुजी के यहाँ आते हुए ज्योति ने अपने पति को कहा कि प्रतिदिन ५०० रूपये का पेट्रोल व्यय कर गुरुजी के पास आने का तात्पर्य समझ नहीं आ रहा था। वर्मा परिवार गाज़ियाबाद से एम्पाएर एस्टेट आते थे जिसकी दूरी कम नहीं है। उन दिनों सातों दिन संगत होती थी और वह वहाँ पर जैसे खिंचे चले आते थे। उन्हें अचानक आश्चर्य हुआ जब सब व्यथाएं धीरे-धीरे दूर होने लगीं - गुरुजी के निर्देशन में कर्मों की कसी हुई रस्सियाँ ढीली हो रहीं थीं।

शीघ्र ही उन्होंने बेक्स्टर हेल्थकेयर नामक कंपनी का मानव रक्त से निर्मित, शिरा द्वारा दिया जाने वाला एक विशेष तरल पदार्थ आयात कर बेचना आरम्भ कर दिया। उनकी कंपनी जो कभी छह से दस हज़ार से अधिक शीशियाँ प्रतिवर्ष नहीं बेच पाती थी आज उनकी मांग पूरी नहीं कर पाती है। वर्मा परिवार की आर्थिक चिंताएं दूर हो गयी थीं। उनका रुका हुआ धन भी वापस आ गया था। अपनी कठिनाईयाँ व्यक्त करने से पूर्व ही वर्मा परिवार को गुरुकृपा का आभास हो गया था। गुरुजी के पास जाते हुए वह दोनों यही वाद विवाद करते रहते थे कि गुरुजी को अपने कष्टों के बारे में बताया जाये या नहीं। परन्तु गुरुजी ने उनके कहे बिना ही उनकी यह पहेली हल कर दी थी।

इस बीच में ज्योति वर्मा के ससुर के स्वास्थ्य में भी परिवर्तन आया। एक दिन कीमोथेरेपी करते हुए उन्हें मृत घोषित कर दिया गया था। उनकी जेब में सदा गुरुजी का चित्र रहता था; उन्हें न केवल नव जीवन मिला वह रोग मुक्त भी हो गये। उसके बाद उन्होंने कभी केंसर का उपचार नहीं करवाया।

अपने अनूठे तरीके से गुरुजी ने उनके पति की भी जीवन रक्षा करी। एक बार उन्होंने संगत से आज्ञा लेते समय उनके पति को बैठने को कहा। पांच मिनट के उपरान्त उन्होंने जाने की आज्ञा भी दे दी। किसी को समझ नहीं आया कि गुरुजी ने ऐसा क्यों किया। पर वर्मा परिवार को शीघ्र ही इसका कारण पता चल गया। मार्ग में उन्होंने कुछ

ही देर पहले हुई एक भयंकर दुर्घटना देखी। यदि गुरुजी ने उनका निकलना नहीं रोका होता तो उनका भी संभवतः यही परिणाम होना था।

गुरुजी की कृपा ज्योति के सम्बन्धियों पर भी हुई है। शरीर के मेरुदंड में एक चक्र के हिलने से उनके पति शय्या पर थे। डेढ़ माह तक गुरुजी ने उनके बारे में पूछा भी नहीं; फिर, अचानक एक दिन उन्होंने उन्हें हल्दी वाला दूध पिलाने को कहा। उसे पीकर वह स्वस्थ हो गये।

ज्योति के एक घनिष्ठ सम्बन्धी, जो लखनऊ स्थित हिन्दुस्तान ऐरोनौटिक लिमिटेड में एक वरिष्ठ अधिकारी थे, की विचित्र समस्या थी। उनकी अपने वरिष्ठ अधिकारी से अनबन थी और उस अधिकारी ने उनकी पदोन्नति रोकी हुई थी। उन्होंने मन ही मन पद त्यागने का निश्चय कर लिया था। परन्तु गुरुजी की दया से उनकी पदोन्नति हुई और हैदराबाद स्थानान्तरण हो गया। चेन्नई में अपने साक्षात्कार के उपरान्त उन्होंने स्वयं कहा था कि उनकी पदोन्नति असंभव है। आज वह भी प्रसन्न हैं और कुछ बड़े विभागों का कार्य संभाले हुए हैं।

गुरुजी के संरक्षण में

गुरुजी अपने भक्तों को प्रतिकूल परिस्थितियों से भी बचाते हैं। वर्माजी के कारखाने में १८-२० फुट गहरे एक विशाल भूमिगत जलाशय का निर्माण हो रहा था जिसमें २०-२५ श्रमिक काम कर रहे थे। अचानक उसमें एक बड़ा पत्थर गिरा और सब श्रमिक खतरे को भांपते हुए बाहर आ गये। जैसे ही अंतिम मजदूर बाहर निकला, उसकी १८ फुट ऊँची और ६५ फुट लम्बी दीवार ढह गयी। किसी को चोट नहीं आई, यहाँ तक कि एक शिशु की जान भी बच गयी। क्या यह गुरुजी की दया के अन्यथा संभव था?

एक और सन्दर्भ... ज्योति की बहन के विवाह को सात वर्ष हो गये थे और वह उदरशूल से पीड़ित थी। उसका उपचार हो चुका था,

यहाँ तक कि शल्य क्रिया भी हुई थी। परन्तु रोग वैसा ही बना हुआ था। उसके परिवार वाले ज्योतिषियों और तांत्रिकों के चक्कर लगा चुके थे जिन्होंने कुछ असफल उपाय किये थे। ज्योति ने जब गुरुजी को इस बारे में बताया तो उन्होंने उसे अभिमंत्रित ताम्र लोटे से जल पीने को कहा। गुरुजी के निर्देश का पालन कर के वह स्वस्थ हो गयी।

खोया हुआ बेटा घर लौट आया

ज्योति के घर में काम करने वाली का ११ वर्षीय बेटा खो गया था। वह दिल्ली एक माह पूर्व ही गाँव से आये थे और यहाँ के बारे में कुछ भी पता नहीं था। उसको ढूँढने के सब प्रयास निष्फल रहे थे; उसके पास उसका कोई चित्र भी नहीं था। घबराई माँ ने ज्योति से निवेदन किया तो ज्योति ने गुरुजी से प्रार्थना कर एक माँ की सहायता करने की विनती करी। उसी शाम को उसका बेटा वापस आ गया। उसने बताया कि ऐसा लगा जैसे कोई उसे उसके घर के सामने छोड़ गया है।

किशोर पुत्र की निगरानी

गुरुजी ने ज्योति के पुत्र को छात्रावास में रहने के लिए कहा। यह उसके लिए पहला अवसर था जब वह घर से दूर अकेला रह रहा था और अक्सर उदास हो जाता था। एक दिन उसके सब मित्र उसे छोड़ कर अपनी महिला मित्रों के साथ समय व्यतीत करने चले गये। वह मन ही मन दुखी होता रहा कि उसकी कोई ऐसी मित्र नहीं है; इसमें कोई हानि तो नहीं है, केवल समय व्यतीत करने का अच्छा तरीका है। यह सोचते हुए वह सो गया। अचानक गुरुजी उसके स्वप्न में आये और उन्होंने उसे डांटा। भयभीत, पसीने में भीगा हुआ, वह जागा तो दो बजे थे। उठ कर गुरुजी से प्रार्थना करने के पश्चात् ही उसे ठीक से नींद आयी। उसने जब यह प्रसंग ज्योति को बताया तो वह आश्वस्त हुई कि गुरुजी पुत्र का ध्यान रख रहे हैं।

ज्योति कहती है कि गुरुजी की शरण में आने के बाद कुछ सोचने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन – किन्तु – परन्तु के बारे में भूल कर अपने मन से समर्पित करना ही पर्याप्त है। हम उनके पास दीर्घकालिक रोगी की भांति आते हैं और वह सब समस्याएँ, कष्ट और अहित दूर कर देते हैं। गुरुजी की पद्धतियों को समझना संभव नहीं है। उनके आशीर्वाद अक्सर अप्रत्यक्ष होते हैं। हम अपनी मानवीय प्रकृति के कारण अपनी समस्याएँ बोलने को बाध्य होते हैं। जब उनको अंतिम आश्रय मानकर आये हैं तो तुरन्त हल मिलने की बात सोचना सही नहीं है। केवल आस्था और समर्पण के भाव उनसे मेल करवाते हैं और उससे ही भविष्य उज्ज्वल होता है। कहावत है, ''जितना गुड़ डालोगे, उतना ही मीठा फल पाओगे।'' भक्तों को इतनी ऊर्जा मिलती है कि कोई उनको हानि नहीं पहुंचा सकता है।

– श्रीमती ज्योति वर्मा, गाज़ियाबाद द्वारा कथित

पति के जीवन दाता

गुरुजी से 2000 में मिलने के बाद, मैं अपने आप को अत्यंत भाग्यशाली और सम्मानित मानती आयी हूँ। उस समय से, हर प्रकार से, गुरुजी ने हमारे समस्त परिवार पर अपनी दया दृष्टि बनायी हुई है। मेरे पति दीपक अपने भाई अरुण के साथ गुरुजी को ऐसे दिन मिले जो संगत का नहीं था।

अरुण को एक ऐसी समस्या थी जिसका हल तुरन्त चाहिए था। उसके घर में किसी काम करने वाले की बेटी की गाँव में दुर्घटना हो गयी थी और चिकित्सकों ने अंगच्छेद की सलाह दी थी। गुरुजी घर पर ही थे और वह दोनों उनके दर्शन करने में सौभाग्यशाली रहे थे। उनकी दया से उसका पैर बच गया। जब वह वहां पर थे, गुरुजी ने दीपक को मुझे उनके पास लाने के लिए कहा। पहले तो मैं उनके पास जाने के लिए अनिच्छुक थी। यद्यपि मेरी धार्मिक प्रवृत्ति है, मैं ''नश्वर ईश्वर'' में विश्वास नहीं रखती थी। तत्पश्चात् मेरे मन में आया कि उन्होंने मेरी देवरानी के कंप वात रोग में उसकी सहायता करी थी, अतः ऐसे व्यवहार से असभ्यता होगी।

मुझे देखते ही गुरुजी ने कहा, *''कैलाश खन्ना दी कुड़ी''* और मैं आश्चर्यचकित थी क्योंकि किसी भी तरह उन्हें मेरे स्वर्गीय पिता का नाम पता नहीं होना चाहिए था। उन्होंने मुझे अपना एक चित्र देकर संगत में आते रहने के लिए कहा। वह चित्र मैंने अपने पूजा स्थल पर रख दिया। अगले दिन प्रातः उठने पर मैंने देखा कि वह गिरा हुआ था और सिन्दूर की डिबिया के समीप सिन्दूर की एक ढेरी बनी हुई थी, तथापि वह डिबिया सीधी ही थी। पूजा के कमरे में कोई प्रवेश नहीं कर सकता था, मैं उलझन में थी। बाद में सोचने पर विचार आया कि गुरुजी ही घर आए होंगे।

बुनने की सिलाईयाँ निकली

एक अवसर पर गुरुजी ने हमें तीव्र मनोव्यथा से बचाया। हमारे छोटे बेटे विनायक का विवाह हो रहा था। महिला संगीत के दिन सुबह से ही दूर-दूर से सम्बन्धी आने लगे थे। अचानक मुझे अपने पति की चीख सुनाई दी। उनकी बीमार माँ अचानक मरणासन्न हो गयीं थीं। पहले मैंने भाग कर गुरुजी के चित्र के सामने उनको स्वस्थ करने के लिए प्रार्थना करी। फिर जैसे ही मैं उनके कमरे में गयी तो माँ ने करवट ली और उठ कर बैठ गयीं। उनका स्वास्थ्य इतना अच्छा हो गया कि वह विवाह के समस्त कार्यक्रमों में भाग ले सकीं जैसी उनकी हार्दिक इच्छा रही थी।

एक अन्य अवसर पर गुरुजी ने हमारे ऊपर दया करी - और इसके लिए हम उनके अति आभारी हैं - उन्होंने हमें जुड़वाँ पोते दिये। मेरे बड़े पुत्र राजनाथ और उसकी पत्नी मोइरा के विवाह को पांच वर्ष हो चले थे और यद्यपि हम पोता ही चाहते थे, उन दोनों को कोई जल्दी नहीं थी। दोनों अमरीका में कार्यरत थे, जहाँ पर कोई पारिवारिक सहारा नहीं होता और उनके पास अपने निजी कार्यों के कारण समय की कमी रहती थी। मुझे भय था कि वह संतान के लिए प्रयास ही न करें। एक दिन हमने गुरुजी से प्रश्न किया कि उनके संतान कब होगी। काफी देर

तक उनके चित्र देखने के बाद गुरुजी ने उनको दर्शन के लिए लाने को कहा। सौभाग्य से यह अवसर शीघ्र ही आ गया जब वह विनायक के विवाह के लिए भारत आये।

विवाह के समारोहों में एक हवन का भी आयोजन था। मोइरा ने मुझे बताया कि वह अपने मासिक के कारण उसमें भाग नहीं ले पायेगी। विवाह के बाद वह अमरीका वापस चले गये और कुछ ही दिन के बाद उत्तेजित मोइरा ने वहां से मुझे फोन पर कहा कि मैं अपनी सिलाइयों से बुनना आरम्भ कर दूं क्योंकि मैं दादी बनने वाली हूँ।

मुझे सुखद अचम्भा हुआ क्योंकि कुछ ही दिनों पूर्व इसके कोई आसार नहीं थे। मैंने जब गुरुजी को हार्दिक धन्यवाद दिया तो उन्होंने कहा कि उन्होंने उसे जुड़वाँ दिये हैं। पराध्वनिक चित्रण के बाद मोइरा ने इसकी भी पुष्टि कर दी।

पति पर कृपा वृष्टि

मेरे पति दीपक के पैर में एक घाव था जो बढ़ते-बढ़ते सड़ने को होने लगा था और उनको चिकित्सालय में रहना पड़ रहा था। उपचार से वह ठीक होने लगा और अपने टखने में पट्टी बांधे हुए वह घर आ गये। अगले दिन प्रातः उठने पर देखा कि बिस्तरे पर बिछी हुई चादर ताज़े रक्त में सनी हुई थी। पट्टी बिलकुल साफ थी। चिकित्सक ने भी यह देखने के लिए कि कहीं और से रक्तस्राव न हुआ हो, परीक्षण किया पर सब ठीक निकला। परन्तु हमें ज्ञात हो गया कि गुरुजी ने पैर में से शेष विषैले रक्त को बाहर निकाला था।

गुरुजी ने मेरे पति को नया हृदय देकर जीवन दान भी दिया है। दीपक की दो धमनियां ९०% बंद थीं। गुरुजी को यह पूर्व ज्ञान हो गया था और उन्होंने मुझे एक विशेष दिन आने के लिए कहा था। उस दिन व्यस्त होने के कारण मैंने अगले दिन जाने का विचार कर लिया। परन्तु गुरुजी को मिलने से पूर्व, दीपक की छाती में बहुत पीड़ा हुई और उन्हें

एस्कॉर्ट में प्रविष्ट कराकर उनकी आकस्मिक शल्य क्रिया करनी पड़ी। उनकी एंजियोप्लास्टी हुई और उनके हृदय में तीन स्टेंट लगाये गये। चिकित्सालय में प्रतीक्षा करते हुए मेरे पुत्र, उसकी पत्नी और मुझे गुरुजी की सुगन्ध आयी। जैसे ही दीपक शल्य क्रिया के पश्चात् बाहर आये उनको सुगन्ध आयी पर मुझे नहीं आयी। संभवतः गुरुजी उस दिन मुझे न आने के लिए डांट रहे थे। यदि मैं गयी होती तो दीपक इस कटु अनुभव से बच जाते। मैंने गुरुजी को धन्यवाद दिया और वचन दिया कि पुनः ऐसी पुनरावृत्ति नहीं होगी।

यद्यपि गुरुजी ने अनेक अवसरों पर हमारे जीवन को रसमय बनाया है, यह थोड़े से ही अनुभव हैं। मैं प्रतिदिन उनसे मार्गदर्शन और परिवार को बचाने के लिए विनती करती हूँ। मैं उनकी अत्यंत आभारी हूँ और मुझे विश्वास है कि वह अवश्य सुनेंगे। मैंने कई बार उनसे प्रश्न किया है कि सबके लिए इतना करने के पश्चात् आपकी क्या अभिलाषा है? वह मुस्कुरा कर उत्तर देते हैं कि केवल पूरी आस्था।

– श्रीमती ज्योत्स्ना शौरी, दिल्ली

दुर्घटनाग्रस्त होते हुए गुरुजी को स्मरण किया...

२००४ में जब श्री दीपक गुप्ता बड़े मंदिर में एक आयोजन की व्यवस्था में कार्यरत थे, उनको एक अन्य भक्त का फोन आया। वह उसको एक थैला देना भूल गये थे। अब उन्हें वह दस किलोमीटर दूर छतरपुर मंदिर मोड़ पर जाकर देना था। थैला देना अति आवश्यक था।

घनघोर वर्षा हो रही थी, सड़क गीली थी और दीपक १०० किलोमीटर प्रति घंटे की गति से जा रहे थे। छतरपुर मंदिर से ३-४ किलोमीटर पहले, एक मोड़ पर अचानक उन्होंने देखा कि एक टेम्पो ने मार्ग अवरुद्ध किया हुआ है। न तो उनके पास रुकने की दूरी थी न ही समय - दुर्घटना निश्चित थी। उन्होंने ब्रेक पर पैर लगाया, अपनी आँखें बंद कीं और टक्कर से पूर्व गुरुजी को स्मरण किया...धम...धम...धम...धना...धन... और उन्होंने अपने नेत्र खोले। उनकी कार न्यूट्रल गीयर में थी और उसका इंजन बंद था। टेम्पो का चालक उनको घूर रहा था। टेम्पो के दोनों ओर कार निकलने के लिए स्थान नहीं था।

दीपक विस्मित थे। थैला देने के बाद वह बड़े मंदिर लौट आये। उन्होंने किसी को कार को देखने के लिए कहा क्योंकि उन्होंने टक्कर की ध्वनि सुनी थी। अचम्भे की बात थी कि कार क्षतिग्रस्त नहीं हुई थी और उस पर दुर्घटना के कोई चिह्न भी नहीं थे।

यह चमत्कार ही था कि वह सुरक्षित रहे।

- दीपक गुप्ता, नोएडा द्वारा कथित

गुरुजी संग चमत्कारी वर्ष

नवम्बर 1984 में गुरुजी के संपर्क में आने के पश्चात् मैं अपने आपको अति सौभाग्यशाली मानता हूँ। इस अंतराल में अब तक अनेक बार मुझे और मेरे मित्रों व परिचितों को गुरुजी का आशीष मिला है। मैं उनमें से कुछ संस्मरणों का विवरण यहाँ पर कर रहा हूँ। गुरुजी को जब मैं पहली बार मिला तो एक स्कूटर दुर्घटना में मेरी पत्नी के बाएं कंधे का अस्थिबंध टूट गया था। पता लगा कि चंडीगढ़ में एक महापुरुष रह रहे हैं जिनके पास पी जी आई जैसे विख्यात संस्थान के चिकित्सक अपने असाध्य रोगियों को भेजते रहे हैं। हम उनके पास पहुँचे। उस समय से अब तक का 22 वर्ष का समय हमने उस महापुरुष के चरणों में बिताया है।

जब हम उनके पास प्रातः चार बजे पहुंचे तो उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथों में ले लिया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे शरीर में अमृत प्रवाह हो रहा है। गुरुजी ने मुझे बताया कि मैंने एक मुखी रुद्राक्ष धारण किया हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि उस पर एक शिवलिंग बना हुआ है, जिसका मैंने विरोध किया। उनके कहने पर मैंने उन्हें वह रुद्राक्ष

दिखाया। उन्होंने वह रुद्राक्ष अपने हाथ में लेकर उसे गंभीरता से देखने की मुद्रा बनायी और फिर मुझे उस पर शिवलिंग देखने को कहा। वास्तव में वहां एक शिवलिंग था जो उस पर आज तक है।

मेरे लिए रुद्राक्ष उपचार...

दो वर्ष से मैं आंत्रशूल से पीड़ित था। इसमें बहुत दस्त होते हैं। गुरुजी ने मुझे पीने के लिए अमृत दिया और फिर घर जाने को कहा। उस दिन मैं अपने कार्यालय नहीं जा सका क्योंकि उस दिन मुझे 24 बार शौच जाना पड़ा। शाम को जब गुरुजी ने फोन करके मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछा तो मैंने उनको बताया कि मेरी स्थिति अत्यंत असहनीय है। उन्होंने उसका प्रतिकूल दृष्टिकोण लेते हुए कहा कि यह अच्छे चिह्न हैं, रोग शरीर से बाहर निकल रहा है।

अगले दिन प्रातः मुझे लगा कि मैं स्वस्थ हूँ और यह मैंने गुरुजी को बताया। उन्होंने कहा कि अभी रोग शेष है, वह अगले दिन ही ठीक होगा और अपने पास बुलाया। जब मैं उनके पास पहुंचा तो उन्होंने अपने रुद्राक्ष और एक चम्मच से मेरी नाभि को छुआ। छूते ही ऐसा प्रतीत हुआ कि मुझे बिजली का तीव्र झटका लगा है और मैं गिर गया। उन्होंने मुस्कुरा कर कहा कि अब रोग से मुक्ति हुई है। उस बिजली के झटके के बाद वह रोग मुझे आज तक नहीं हुआ है।

...और मेरी पत्नी की चिकित्सा हुई

मेरी पत्नी, बबली, का उपचार करने के लिए गुरुजी एक शनिवार की संध्या को हमारे घर पहुंचे। उनके निर्देशानुसार साबुत उड़द की दाल की तीन रोटियां बनाई गयीं। आधी रोटी को शौचालय में डाल कर जल प्रवाहित कर दिया गया। शेष ढाई रोटियों को उन्होंने बबली के कंधे पर रख का कुछ उच्चारण किया और मेरे हाथ में दे कर बोले कि यह एक काले कुत्ते को खिला दूं। मैं भौंचक्का था। रात्रि के नौ बजे, एक साफ स्वच्छ छावनी क्षेत्र में आवारा कुत्ता, वह भी काला, मिल पाना अति

कठिन है। मैंने अपनी शंका गुरुजी को जतायी। गुरुजी ने अपने शांत स्वर में मुझे नीचे बाहर जाने को कहा। मैं अचंभित हुआ जब नीचे जीने में ही मुझे एक काला कुत्ता मिल गया। उसी समय बबली का रोग भी समाप्त हो गया।

एक दिन जब गुरुजी हमारे घर आये तो घर पर अनेक अतिथि थे। मेरी पत्नी ने बीच में एक बादाम का कटोरा रखा हुआ था। अचानक गुरुजी ने अपनी मुट्ठी भरकर बादाम उठाये और सब अतिथियों को लो "*अखरोट खाओ, पिस्ता खाओ, किशमिश खाओ...*" कहते हुए बाँट दिये। विस्मय की वह बात थी कि जिन फलों का नाम ले रहे थे बादाम उन्हीं में परिवर्तित हो गये थे।

अक्षमता का निदान

मेरे एक जवान, नायक आनंदन, को बाधा दौड़ में पीठ पर गहरी चोट लग गयी थी। जवान का उपचार तो हुआ था पर उस चोट के कारण वह सेना के सब कार्य करने में अक्षम्य हो गया था। उसे सैन्य सेवा से निवृत कर घर भेजा जा रहा था। मैं उसे प्रातः चार बजे गुरुजी के पास ले गया और उनसे उसे स्वस्थ करने के लिए प्रार्थना करी। गुरुजी ने मुझसे प्रश्न किया कि यदि उन्होंने उसे रोग मुक्त किया तो उसके कर्म कौन समाप्त करेगा और इस अवस्था में वह अगले जन्म विकलांग रूप में जन्म लेगा। मैं विस्मित अवश्य था पर मैंने गुरुजी से प्रार्थना करी कि वह अपने तप से उसके कर्म नष्ट कर दें। गुरुजी मुस्कुराये और उन्होंने आनंदन को लेटने को कहा। फिर उन्होंने उसे छू कर एक अति भयानक मुद्रा बना ली जैसे वह किसी को डांट फटकार रहे हैं। नीचे लेटा हुआ आनंदन बच्चे की भांति धीरे-धीरे सिसक कर रो रहा था और मैं आश्चर्यचकित था। फिर उन्होंने आनंदन को उठ कर अपने शरीर पर से सब पट्टियाँ उतारने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि उसे स्वस्थ होने में समय लगेगा और तीसरे दिन उसे पुनः लेकर आऊँ।

अगले दिन प्रातः जब मैं पी.टी. के लिए जा रहा था तो मैंने आनंदन को अपनी बैरक के बाहर दंड लगाते हुए देखा, जैसे वह अपना शक्ति प्रदर्शन कर रहा है। मैंने उसे रुकने के लिए कहा तो वह बोला कि अब उसे कोई दर्द नहीं है और लग रहा है कि वह रोग मुक्त हो गया है। मैंने उसे गुरुजी के अगले दर्शन तक यह बातें गोपनीय रखने के लिए कहा।

तीसरे दिन जब हम गुरुजी के पास गये तो उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और आनंदन की ओर ऊंगली करते हुए कहा कि वह शनि के प्रकोप से बाहर आया है। आनंदन का रंग साफ हो गया था और उसका वजन 13–14 किलो घट गया था। गुरुजी ने फिर आनंदन से प्रश्न किया कि उनके छूने के बाद क्या हुआ। आनंदन ने बताया कि तब से वह सोया नहीं है। गुरुजी ने तुरन्त एक चाय के चम्मच से उसकी बाल्यग्रंथी को छुआ। उन्होंने फिर मुझे निर्देश दिया कि आनंदन को बैरक में पहुंचा कर उसे सोने दूं। गुरुजी के स्थान से बाहर निकलते ही उसका सिर मेरे कंधे पर टिका और वह सो गया। वाहन चालक की सहायता से हम उसे बैरक तक ले कर आये और उसे उसके बिस्तर में लिटा दिया। आनंदन तीन दिन तक सोता रहा और पूर्णतया रोग मुक्त हो गया। तदुपरांत चिकित्सकों ने जब उसके परीक्षण किये तो उसे स्वस्थ देख कर वह आश्चर्यचकित रह गये। अब उनके पास उसे सब सैन्य सेवाओं के लिए योग्य घोषित करने के अन्यथा कोई और विकल्प नहीं था।

मृत पत्नी से संपर्क

कर्नल डी आर पी चौधरी विधुर थे और चंडीमंदिर में हमारे घर के सामने रहते थे। एक दिन गुरुजी उनके घर गये और एक चित्र को देख कर उसके बारे में पूछा। कर्नल चौधरी ने कहा कि वह उनकी मृत पत्नी का है जिसे भाग्य ने उनसे सदा–सदा के लिए दूर कर दिया है।

गुरुजी बोले कि वह तो यहीं पर है और क्या वह देखना चाहेंगे। हम असमंजस में थे। फिर उन्होंने अपना एक हाथ उठाया और हिलाया।

अचानक वह चित्र हिलने लगा, फिर वह मेज जिस पर चित्र रखा हुआ था। उसके बाद एक-एक करके उस कमरे की सब वस्तुएँ - अलमारी, बिस्तर, सब कुछ, केवल भूमि को छोड़ कर। फिर धीरे-धीरे सब शांत हो गया। गुरुजी पुनः बोले कि वह उन्हें और अपने पुत्र को छोड़ कर कहीं नहीं जा सकती, वह तो इधर ही है।

''उसे मारने की आवश्यकता नहीं है''

एक शाम को गुरुजी हमारे घर पर आये थे। उस संगत में आस पास के कई लोग भी आये हुए थे। कर्नल चौधरी मेरे से अकेले में बात करना चाह रहे थे। दूसरे कमरे में जाने पर बोले कि उन्होंने अपने पुत्र टिलतू को जब गुरुजी के पास आकर आशीर्वाद लेने के लिए कहा तो उसने उत्तर दिया कि संतों के पास जाने की आयु तो उनकी है, वह तो संगीत सुनना चाहता है। इस बात पर कर्नल चौधरी को क्रोध आ गया और उन्होंने उसे चांटा मार दिया था। वह चाह रहे थे कि मैं जाकर उसे समझाऊँ। मैंने उत्तर दिया कि स्थिति को थोड़ा शांत होने देते हैं, उसके बाद मैं उसे समझाऊँगा। उसके बाद हम गुरुजी के चरणों में आकर बैठ गये जैसे कुछ हुआ ही न हो।

गुरुजी ने कर्नल चौधरी की ओर देखा और बोले कि अब पुत्र बड़ा हो गया है, उसे मारने की क्या आवश्यकता थी। उसी क्षण टिलतू ने कमरे में प्रवेश कर के गुरुजी के चरण स्पर्श किये।

बौद्धिक क्रीड़ाएं

पहले गुरुजी अमृत बांटा करते थे। प्रत्येक भक्त को एक ग्लास मिलता था और मैं अपने भाग का एक ग्लास पी चुका था। उस दिन मैं गुरुजी के निकट बैठा हुआ था। अचानक मेरे मन में विचार उत्पन्न हुआ कि यदि गुरुजी मुझे एक ग्लास और दें तो निश्चित हो जाएगा कि वह मेरे मन की बात पढ़ रहे हैं। उस समय गुरुजी किसी और को ग्लास दे रहे थे। वह रुके और उन्होंने वह ग्लास मुझे थमा दिया। पंद्रह

मिनट उपरान्त मैंने संयोग सोच कर यह विचार मन से त्याग दिया। अब मेरे मन में आया कि यदि वह मुझे तीसरा ग्लास दें तो मुझे विश्वास हो जाएगा कि वह मेरे मन के भाव जान सकते हैं। वह उसी समय रुके और मेरी ओर देख कर बोले कि लो, यह ग्लास तुम स्वयं ही पियो।

पहले गुरुजी को कोई स्पर्श नहीं कर सकता था। भक्त दूर से ही प्रणाम करते थे। एक बार जब मैं उनके पास बैठा हुआ था मेरे मन में विचार आया कि मैं उनसे मिलकर अति भाग्यशाली हूँ पर कितना अच्छा हो यदि गुरुजी मुझे अपने चरण स्पर्श करने दें। उन्होंने उसी क्षण मेरी ओर देखा। अगले दिन दोपहर को वह हमारे घर आये और बिस्तरे पर लेटने की इच्छा प्रकट करी। प्रसन्नतापूर्वक मैं उनको अंदर शयनकक्ष में ले गया। उन्होंने लेट कर प्रश्न किया कि क्या घर में घी होगा। मेरे हामी भरने पर उन्होंने मुझे उससे अपने पैर की मालिश करने को कहा। उस समय तक मैं पिछले दिन की मनोकामना को भूल चुका था। आधा घंटे बाद उन्होंने पूछा कि क्या वह जा सकते हैं। तब मुझे आभास हुआ कि वह केवल मेरी इच्छा पूर्ति करने आये थे।

42 वर्ष में 20/20 की दृष्टि

उस समय मैं 42 वर्ष के आस पास होऊंगा जब मुझे निकट की वस्तुएँ धुंधली दिखने लगीं। मैंने गुरुजी से अपनी दृष्टि ठीक करने का निवेदन किया तो वह बोले कि यह तो आयु के साथ होता ही है। पर मैंने पुनः उनसे अपनी दृष्टि ठीक करने का आग्रह किया।

मुस्कुरा कर उन्होंने मुझे लेटने के लिए कहा। उन्होंने मेरी आँख के पास पहले माचिस की तीली जलायी और फिर एक चाय के चम्मच में जल लेकर मंत्रोच्चारण करते हुए वह मेरी आँख में डाल दिया। तुरन्त ही मुझे सब साफ दिखाई देने लगा। उन्होंने कहा कि अब दो वर्ष तक मुझे कोई कठिनाई नहीं होगी पर उसके बाद प्रकृति अपना कार्य पुनः आरम्भ कर देगी। उसके बाद मेरा स्थानान्तरण गुवाहाटी हो गया था। एक दिन फिर मुझे निकट का धुंधला दिखने लगा। मैंने वह डायरी जिसमें

गुरुजी द्वारा उपचार की तिथि लिखी हुई थी खोल कर देखी तो वह ठीक दो वर्ष पूर्व की थी।

संभाषण जो मेरे रिश्तेदार ने नहीं दिया

जब हम चंडीमंदिर में रहते थे, एक दिन मेरे साढ़ू ने, जो समूह के सामने बोलने से कतराते थे, रांची से फोन किया कि हम गुरुजी से निवेदन कर के उनके द्वारा सैन्य अधिकारियों को दिये जाने वाले भाषण को रद्द करवा दें। हम उनका चित्र लेकर गुरुजी के पास प्रातः 4 बजे पहुंचे। गुरुजी के कमरे में प्रवेश करते ही उन्होंने मुस्कुरा कर कहा कि क्या मुझे अपने साढ़ू का फोन आया है, वह कायर, उसे क्या चाहिए। जब हमने उन्हें समस्या बतायी तो उन्होंने हमें बैठने को कहा और अपने अन्य कार्य करने लगे।

समय बीत रहा था तो हमने उनसे पुनः कुछ करने की विनती करी पर उन्होंने हमें प्रतीक्षा करने को कहा। अचानक 8:05 पर उन्होंने उसका चित्र माँगा और उस पर अपनी ऊँगलियाँ फेरने के बाद कहा कि उन्होंने समस्या को अंतरित कर दिया है और अब वह भाषण एक ऐसा व्यक्ति देगा जो हिन्दू नहीं है। उस शाम को मेरे साढ़ू ने फोन पर बताया कि संभाषण अब एक मुस्लिम अधिकारी देगा। जब हमने उनसे पूछा कि यह निर्णय कब लिया गया तो उसने कहा कि प्रातः 8:05 पर।

उपचारः नजले से असामान्य रोगों का

मेरा सेवादार छुट्टी गया था। मुझे एक अन्य सेवादार मिला जिसका यौन परिवर्तन आरम्भ हो चुका था। मेरे सूबेदार मेजर और मैं, दोनों चिंतित थे। अब वह कैसे सेना में कार्यरत रहेगा और जवानों की बैरक में कैसे रहेगा? एक दिन जब गुरुजी मेरे घर आये तो मैंने इस लड़के को ठीक करने के लिए विनती करी। गुरुजी ने प्रश्न किया कि मैं कहाँ से ऐसे रोगी लेकर आता हूँ। मैंने उत्तर दिया कि गुरुजी यह तो उसका भाग्य है और उसे ठीक होना है इसीलिए वह मेरे पास है। गुरुजी ने उसकी पीठ पर एक चम्मच रखा और वह ठीक हो गया।

एक दिन मुझे ज्वर हो रहा था और मैं धूप में लेटा हुआ था। दोपहर को तीन बजे गुरुजी हमारे घर आये और उन्होंने मेरे स्वास्थ्य के बारे में प्रश्न किया। मुझे सिरदर्द, ज्वर और मुंह में गन्दा स्वाद था; साथ में नाक भी बह रहा था। उन्होंने मेरी पत्नी को एक डॉक्टर को बुलाने को कहा। तुरन्त कर्नल चौधरी ताप नापने का यंत्र (Thermometer) लेकर आये। उन्होंने मेरा ताप 103° नापा। गुरुजी के प्रश्न करने पर उन्हें बताया कि औषधियों से 48 घंटे में मैं ठीक हो सकता हूँ अन्यथा तीन दिन लगेंगे।

गुरुजी ने फिर मेरी पत्नी को एक चम्मच, थोड़ा सा नमक और जल लाने को कहा। उन्होंने उस चम्मच में थोड़ा सा नमक और जल मिलाया और कुछ मंत्रोच्चारण कर के मेरी नाक में डाल दिया.., मुझे लगा कि मेरे अन्दर का सब कुछ बाहर निकल आयेगा। मैं बाथरूम भागा और मेरी नाक से बहुत सा तरल निकला; मैं अपना मुंह धो कर आधा मिनट के बाद बाहर आया। गुरुजी ने डॉक्टर को पुनः मेरा ताप नापने को कहा – वह 97.5° था। गुरुजी ने पूछा कि अब मुझे कोई बहती नाक, सिरदर्द या मुंह में गंदा स्वाद है? अब तो मेरा उपचार हो गया था, अतः मैंने नकारात्मक उत्तर दिया।

गुलाब से स्पर्शित

जनवरी 1985 के मध्य में गुरुजी ने कहा कि वह मेरी पत्नी, बबली के जन्म दिवस 25 जनवरी की शाम को हमारे घर आयेंगे। उस दिन हमारे घर पर अनेक अतिथि आये। कुछ महिलाएं अपने शॉल गुरुजी को सुगन्धित करने के लिए दे रहीं थीं। गुरुजी उसको एक बार पहन कर कह रहे थे कि यह एक सप्ताह तक सुगन्धित रहेगा, यह 15 दिन, यह एक मास आदि आदि। मैंने उनको एक फौजी कम्बल देकर पूछा कि वह कितने दिन सुगन्धित रहेगा। गुरुजी ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया, एक वर्ष और वैसा ही हुआ।

देहरादून में गुरुकृपा

मैं देहरादून में था और पिछले तीन वर्ष से गुरुजी से कोई संपर्क नहीं था। अचानक एक रात को मेरे कान में अत्याधिक दर्द हुआ और मेरे कान के पर्दे फट गये। अगले दिन प्रातः जब मैं कर्ण, नासिका और कंठ विशेषज्ञ के पास गया तो परीक्षण कर के उन्होंने कहा कि मेरे दोनों कान क्षतिग्रस्त हो चुके हैं। क्योंकि मैं सुन नहीं सकता था उन्होंने यह मुझे लिख कर बताया। उन्होंने कहा कि सेना के चिकित्सक कान के नये पर्दे लगाने के लिए शल्य चिकित्सा कर सकते हैं पर इनकी सफलता केवल 5% ही होती है। अतः मुझे मानसिक रूप से सेना से निवृत होकर घर जाने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

उसी शाम एक सिख सज्जन हमारे घर आये और उन्होंने कहा कि गुरुजी ने जालंधर से मेरे लिए अमृत भेजा है। उन्होंने यह भी बताया कि उनको पता है कि मुझे अब सुनायी नहीं देता है। तीन चार दिन अमृत पीने के बाद मेरे कान के पर्दे पुनः ठीक हो गये और मेरी श्रवण शक्ति लौट आयी। डॉक्टर अचम्भे में थे कि यह कैसे संभव हुआ।

मैं देहरादून में ही था जब मुझे 1988 में सरकार से कार ऋण प्राप्त हुआ। मैं असमंजस में था कि कार कहाँ से लूँ – देहरादून, दिल्ली या कलकत्ता? एक दिन मुझे दिल्ली से कर्नल (अब ब्रिगेडियर) चौधरी का फोन आया कि गुरुजी तूफान की भांति उनके कार्यालय में आये थे और उन्होंने कहा कि चटर्जी देहरादून में हैं और कार लेने के बारे में चिंतित हैं। उसको बोलो कि कार उसके लिए चंडीगढ़ में प्रतीक्षा कर रही है। इतना कह कर वह बाहर निकल गये। ब्रिगेडियर चौधरी उनके पीछे भागे पर बाहर लम्बे बरामदे में गुरुजी कहीं नहीं थे। यह सोचकर कि गुरुजी संभवतः दिल्ली आये होंगे और वह उनके दर्शन कर सकें, उन्होंने जालंधर में गुरुजी के निवास पर फोन किया। उत्तर देने वाले सज्जन ने कहा कि गुरुजी कहीं नहीं गये और वह उनके सामने बैठ कर मुस्कुरा रहे हैं।

मैंने चंडीगढ़ से ही कार ली और 2006 में बिकने तक बहुत अच्छी तरह चली।

13 वर्ष के अंतराल के बाद गुरुजी के दर्शन

सेना से सेवा निवृत होकर 1998 में मैं अहमदाबाद में था। पिछले तेरह वर्षों से गुरुजी के साथ कोई संपर्क नहीं रहा था। जून 1998 में मुझे अनिद्रा रोग ने घेर लिया। मेरी पत्नी ने परामर्श दिया कि गुरुजी को ढूँढ कर मैं उनकी शरण में जाऊं। काफी पूछताछ के बाद पता लगा कि गुरुजी चंडीगढ़ से जालंधर, जालंधर से पंचकूला और वहां से दिल्ली चले गये थे। मुझे उनका दिल्ली का पता मिल गया।

हमारे पड़ोसी, श्री कृत भाई भी गुरुजी से मिलने के लिए उत्सुक थे। अतः हम दोनों ने 10 जुलाई की राजधानी एक्सप्रेस में दो बर्थ आरक्षित करा लीं। 9 जुलाई को मैंने दिल्ली में गुरुजी के निवास पर हमारे आने का समाचार देने के लिए फोन किया। फोन का उत्तर देने वाले सज्जन ने पूछा कि क्या मैं अहमदाबाद से कर्नल चटर्जी बोल रहा हूँ? मेरे सहमत होने पर उन्होंने बताया कि आज गुरु पूर्णिमा के कारण गुरुजी पाठ में हैं पर उन्होंने बताया था कि शाम को सात बजे मैं अहमदाबाद से फोन करूँगा। गुरुजी को मेरे आने के बारे में ज्ञान था और उन्होंने मुझे 11 जुलाई को शाम 6 बजे आने को कहा है। स्वाभाविक है कि कृत भाई अचम्भे में थे।

दिल्ली जाते हुए यह जान कर कि मैं सो नहीं पाऊंगा मैंने अपने साथ इतिहास की एक मोटी पुस्तक रख ली थी। यह सोच कर गुरुजी तो अपने ही हैं, मैंने तीन बजे उसके पास जाने का निर्णय ले लिया। जब हम चार बजे सुल्तानपुर पहुंचे तो एक अनोखी घटना घटी। हमें एम्पाएर एस्टेट नहीं मिल पाया। कुछ देर घूमने के पश्चात् मुझे समस्या समझ में आ गयी। गुरुजी ने हमें छः बजे आने को कहा था और हम वहाँ चार बजे ही पहुँच गये थे। मैंने कृत भाई को बताया कि मुझे समस्या पता लग गयी है और अब उसका समाधान मिल जाएगा। मैं

कार से उतरा और मैंने गुरुजी से प्रार्थना करी – जो हो गया सो घट गया, अब वह हमें अपने पास बुला लें। एकदम एक बालक दौड़ता हुआ आया और उसने पूछा कि हमारी कार कहीं जा नहीं रही है, हमें कहाँ जाना है। फिर उसने हमें एम्पाएर एस्टेट का मुख्य द्वार दिखाया – एकदम मुख्य मार्ग पर, कैसे दिखायी नहीं दिया था?

घर पहुँचने पर गुरुजी ने मेरा आलिंगन किया और बोले कि मैं इतने वर्षों के बाद उनके पास आया हूँ, 21 दिन से सोया नहीं हूँ – आज सोऊंगा और लंगर ग्रहण करके जाऊं। लंगर के बाद हम अपने होटल में वापस आ गये और मैं वह इतिहास की पुस्तक पढ़ने लगा। शीघ्र ही मुझे लगा कि साथ वाले कमरे में कोई अगरबत्ती जला रहा है। थोड़ी ही देर में पूरे कमरे में एक अद्भुत सुगन्ध फैल गयी और मुझे निद्रा आ गयी। अगले दिन मैं फिर गुरुजी के पास आया और उनके पैर दबाते हुए मैंने कहा, ''गुरुजी, पहले आपके चारों और तीव्र सुगन्ध रहती थी, अब वह बहुत ही हल्की है।'' गुरुजी बोले कि पिछले दिन जब वह मुझे सुलाने आये थे क्या मैंने उसका आनंद नहीं लिया था। मेरा अनिद्रा का रोग समाप्त हो गया था।

उसके बाद नवम्बर 1999 में जब मैं अहमदाबाद से उनसे मिलने दिल्ली आया था तो उन्होंने कहा कि मैं उनके पास आ जाऊँगा। सीमेंस में अपने साक्षात्कार से एक दिन पहले मैं गुरुजी से मिला और उनको इसका समाचार दिया। वह बोले कि मेरा चयन हो चुका है और उन्होंने मेरी आय भी बता दी। मुझे उतना ही प्राप्त हुआ।

लंगर और प्रसाद से चिकित्सा

2006 में कुछ मास से मेरी दाहिने हाथ की अंगूठी वाली ऊंगली मुड़ नहीं रही थी। चिकित्सकों के अनुसार अस्थिरज्जू सूख गया था और उसका कोई उपचार सम्भव नहीं था। उन्होंने मुझे दर्द नाशक औषधियाँ लेने का परामर्श दिया। जब मैंने इस बारे में गुरुजी को बताया तो उन्होंने मुझे अपनी सब अंगूठियाँ उतारने को कहा। अगले दिन से उसमें वेदना

समाप्त हो गयी पर बाएँ हाथ की वही ऊंगली दर्द करने लगी। कुछ दिनों के पश्चात् जब मैंने गुरुजी को बताया तो उन्होंने मुझे गरम जल में ऊंगली डालने को कहा। यह सोचकर कि इससे उपचार नहीं हो पायेगा मैंने उनसे पुनः निवेदन किया। उन्होंने मुझे लंगर खाने को कहा। तीन दिन लंगर खाने के बाद उस ऊंगली में कोई कष्ट नहीं बचा।

2000 में एक दिन प्रातः उठने पर मुझे आभास हुआ कि मेरे बाएँ हाथ में कोई अनुभूति नहीं है और मैं उसे हिला नहीं सकता था। मुझे पक्षाघात हो गया था। उस शाम को संगत में जब गुरुजी प्रसाद बाँट रहे थे मैंने उनसे इस बात की चर्चा करी। उन्होंने मुझे प्रसाद दिया और थोड़ा जोर से बोले कि मैं उसे बाहर जाकर खा लूँ। प्रसाद ग्रहण करते ही मेरे हाथ में सिहरन हुई। उन्होंने मुझे पुनः प्रसाद दिया – मैंने वह भी खाया। अब मैं अपने हाथ की ऊँगलियाँ हिला सकता था। गुरुजी ने फिर से मुझे तीसरी बार प्रसाद दिया और उसे लेने के पंद्रह मिनट उपरान्त मेरा हाथ बिलकुल पहले की भांति हिलने डुलने लगा।

बाल झड़ने का उपचार

मेरी पत्नी के सिर के बाल सामने से झड़ने लगे थे। हम तीन वर्ष तक, उस गंजेपन को रोकने के सब प्रयास विफल रहे थे – ऐलो वेरा के शैम्पू, आर्निका प्लस, शहनाज़ हुसैन आदि। जब मैं दिल्ली आया, मैंने गुरुजी को समस्या से अवगत कराया। सुनते ही वह बोले, *''बबली आंटी,''* फिर हवा मे अपना हाथ हिलाया और कहा, *''हट गया, कुछ समय लगेगा।''* एक सप्ताह में ही नये बाल आने लगे और शीघ्र ही उसका उपचार हो गया था।

2003 में मुझे मूत्र रोग समस्याएँ होने लगीं। अंत में चिकित्सकों ने पुरस्थ ग्रन्थि की शल्य क्रिया का उपचार बताया। गुरुजी की संगत में मैंने मन ही मन उनसे प्रार्थना करी। तुरन्त उन्होंने अपना दाँया हाथ अपने सिर के ऊपर उठाया और एक मुद्रा बनायी; साथ ही अपने अंगूठे और तर्जनी को आपस में मला। मुझे लगा कि उन्होंने मेरे लिए कुछ किया

था परन्तु मन में संशय था। मैंने मन में ही निवेदन किया कि यदि यह मेरे लिये है, तो गुरुजी, कृपया मेरी ओर देखिए। उन्होंने ऐसा ही किया और मुझे संतोष हो गया। अगले दिन मैं स्वस्थ था।

कोलकाता में वर्षा

अप्रैल 2007 के अंत में, मुझे कोलकाता जाना था। लंगर के उपरान्त मैं गुरुजी से आज्ञा लेकर, मेरे प्रवास की अवधि में कोलकाता को वातानुकूल रखने के लिए विनती करना चाह रहा था। किन्तु मेरे कुछ कहने से पूर्व वह मुझे डांटते हुए बोले, *''अपना कम छड़ मेरे कोल आजा।''* मैं कुछ नहीं कह सका। बाद में उन्होंने गायत्री को बताया कि उन्होंने मेरे लिये कोलकाता में वर्षा भेजी है। शुक्रवार की शाम को जब मैं राजधानी एक्सप्रेस गाड़ी में चढ़ा और मैंने कोलकाता में अपने संबंधी को फोन किया तो वह बोले कि वहां पर मूसलाधार वर्षा हो रही है। मैं कोलकाता नौ दिन रहा और उस अवधि में या तो बादल छाए रहे या वर्षा होती रही। दिल्ली वापस आने पर गुरुजी ने मुस्कुरा कर मुझसे प्रश्न किया, *'कलकत्ते मीह सीगा?'* मैंने उत्तर दिया, "आपने मेरे को इतनी जोर से डांट दिया कि मैं आपको बोल नहीं पाया था। लेकिन आपने दया कर के मेरे मन की बात सुन ली।'' वह बोले, *''जा, ऐश कर।''*

दिव्य उपहार

एक बार चंडीगढ़ में, एक महिला को, जो मुख्यमंत्री की घनिष्ठ संबंधी थी, गुरुजी ने अपना हाथ उठा कर एक कर्णफूल प्रकट कर के दिया। उस महिला ने कहा कि वह एक बाली का क्या करेगी। गुरुजी ने अपना हाथ पुनः उठा कर एक और प्रकट कर दे दिया। वह महिला फिर भी असंतुष्ट रही और बोली कि दोनों की बनावट में अंतर है। गुरुजी ने उत्तर दिया कि शिवजी ने जो देना था, दे दिया; वह और कुछ नहीं कर सकते हैं।

एक बार लंगर के उपरान्त, जब एम्पाएर एस्टेट में संगत में बहुत कम भक्त बचे थे, हम सब गुरुजी के आसपास बैठ गये। उन्होंने हरमिंदर सिंह, सीमेंस के निर्देशक, से पूछा क्या उन्होंने मेरे संस्मरण सुने हैं। उनके नकारात्मक उत्तर पर मुझे अपने संस्मरण सुनाने को कहा गया। अचानक ही, थोड़ी देर में गुरुजी की मुद्रा स्थिर होकर अति कठोर हो गयी और मुख लाल हो गया। फिर एकदम उन्होंने अपना एक हाथ उठाया और उसमें एक डमरू जैसी वस्तु प्रकट हुई। उन्होंने वह मेनका गांधी के हाथ में दिया और स्वयं मूर्ति सदृश अचल होकर नमस्कार मुद्रा बना ली। कुछ समय पश्चात् वह बोले, *''देखें, शिवजी ने क्या दिया है।''* उस डमरू को तोड़ने पर उसमें से खोए का प्रसाद निकला। सबको बांटने के बाद भी कुछ बच गया। वह उन्होंने मेनका को दिया और बोले कि उसे फ्रिज में नहीं रखना है, वह कभी खराब नहीं होगा।

– कर्नल (सेवानिवृत) दीप्तेन्दु शेखर चटर्जी, गुड़गाँव

चरण स्पर्श पर्याप्त है

चंडीगढ़ के मुख्य पर्यवेक्षक, श्री गिल ने हमें गुरुजी के पास फरवरी 1999 में दर्शन हेतु भेजा। मैं तुरन्त गुरुजी द्वारा अनुग्रहित हुई। मेरे पेट और पैर में भयंकर वेदना थी। औषधियों का कोई प्रभाव नहीं हो रहा था: मुझे बहुत कष्ट था। गुरुजी के चरण स्पर्श करते ही मेरे शरीर में उपचारात्मक प्रवाह हुआ। उनके हाथों से प्रसाद ग्रहण कर मेरा रोग विलीन हो गया। शीघ्र ही मैं उनके निर्देशानुसार प्रति पखवाड़े उनके दर्शन करने में समर्थ थी।

मेरा पुत्र गुरुजी के प्रति आक्रामक और अवज्ञाकारी था। उसे मैं गुरुजी के पास लेकर आयी। उनके ही आशीष से वह परिवर्तित हुआ और फिर उसे सदा उनके आशीर्वाद की प्रतीक्षा रहने लगी। उसकी दुर्घटना के समय कार तो क्षतिग्रस्त हुई पर गुरुकृपा से वह बच गया।

एक बार गुरुजी के निर्देश पर हम चंडीगढ़ एक विवाह में गये। वहां गुरुजी ने हमें श्री गिल के घर जाने के लिए कहा, जहाँ वह उसी दिन कुछ देर के लिए ठहरे थे। वह कक्ष उनकी सुगन्ध से भरा हुआ था और हमने जी भर कर उनके चित्र द्वारा उनके दर्शन किये। गुरुजी के मस्तक पर गुरु नानक देव की मुखाकृति स्पष्ट दिखाई दी। एक अन्य अवसर पर मुझे गुरुजी के ग्लास में शिव के नाग देवता दिखाई दिये।

सेवानिवृति के कष्ट

2001 में मेरे पति को उनके कार्यालय में उनके कनिष्ठ और वरिष्ठ अधिकारी व्यथित कर रहे थे। शीघ्र ही गुरुजी की दया से वह सब अधिकारी स्थानांतरित हो गये।

2003 में जब वह सेवा से निवृत होने वाले थे, पुनः कष्ट बढ़ गये। उनके कुछ सहकर्मी उनको चैन से सेवानिवृत नहीं होने दे रहे थे। उन पर झूठे आक्षेप लगा दिये थे। इसके कारण वह अत्याधिक दु:खी थे। पेंशन और अन्य अनेक भत्तों का मिलना भी संदेहास्पद हो गया था। उन्होंने गुरुजी से प्रार्थना करी। कुछ ही दिन में सब आरोप हटा दिये गये और उनको समस्त लाभ प्राप्त हुए।

संतान पर कृपा

मेरी बेटी पढ़ने में कमजोर थी और आगे पढ़ना नहीं चाह रही थी। किन्तु गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद उसने कानून का पाठ्यक्रम आरम्भ किया और प्रथम वर्ष में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुई। मेरा पुत्र इलेक्ट्रोनिक अभियंता है और उसकी पत्नी एक कंप्यूटर कंपनी में कार्यरत है। वहां पर कार्य शुरू करते ही गुरुजी की दया से वह प्रशिक्षण के लिए अमरीका गया और उसे दस वर्ष का वीसा भी मिल गया।

हमारे परिवार पर गुरुजी की कृपा बनी हुई है। यदि हम गुरुजी के पास नहीं आ पाते हैं तो वह हमें स्वप्न में दर्शन देते हैं।

– श्रीमती दीपा सिंह, दिल्ली

''मैं उसे स्वर्ग से वापस लाया हूँ''

कई वर्षों से मेरी पत्नी वातरोग और जोड़ों के दर्द से पीड़ित थी। छः वर्ष तक उसने एम्स और उसके पश्चात् होम्योपेथी का उपचार करवाया था पर कोई लाभ नहीं हुआ था। जोड़ों के दर्द के कारण वह चल भी नहीं पाती थी, बैठने और उठने में भी सहायता की आवश्यकता होती थी।

मई 1998 में हमारी बेटी ने गुरुजी के बारे में बताया और एक ताम्र लोटे के साथ उनके आशीष के लिए आने को कहा। अगले दिन हमें पहली बार गुरुजी के दर्शन हुए और हमने अपना आदर प्रकट किया। गुरुजी ने ताम्र लोटे को अभिमंत्रित किया। मेरी पत्नी को रात को उसमें जल भर कर रखने के पश्चात् सुबह उसमें से आधा जल पीना था और शेष से स्नान करना था। कुछ समय में ही उसकी स्थिति में सुधार आया। समय के साथ उसके जोड़ों की वेदना भी कम हुई। गुरु कृपा से वह अब चल, बैठ और उठ पाती है।

अप्रैल 2005 में गुरुजी ने पुनः उसकी रक्षा करी। सीताराम भारतीय चिकित्सालय में नियमानुसार होने वाले परीक्षण में उसका रक्त चाप

अति उच्च पाया गया – 230/120। कुछ समय तक उसको देखरेख में रखा गया और लगातार औषधि सेवन करते रहने को कहा गया। दो सप्ताह उपरान्त उसे श्वसन शोथ का दौरा पड़ा। क्योंकि उसे श्वास लेने में कठिनाई थी, उसे नेबुलाइज़र का प्रयोग करने को कहा गया।

एक दोपहर को उसकी अवस्था अचानक बहुत कष्टप्रद हो गयी और उसे सांस लेने में कठिनाई हो रही थी। जब तक नेबुलाइज़र लगाते, वह चेतना शून्य हो गयी। थोड़ी देर में उसे होश आया परन्तु वह व्याकुल थी और उसने कहा कि उसे कुछ ठीक नहीं लग रहा है। थोड़ी देर में शांति का आभास होने पर वह सो गयी। देर रात्रि में बेटी का फोन आया कि गुरुजी ने कहा है कि माँ की अवस्था शोचनीय है और सुबह उन्हें अशलोक चिकित्सालय में प्रविष्ट करायें। अतः वैसा ही किया गया। गुरुकृपा से सब सुचारू रूप से चला और दो सप्ताह में स्वास्थ्य लाभ कर वह घर आ गयी।

पूर्ण स्वास्थ्य लाभ होने पर हम गुरुजी के दर्शन के लिए गये। श्रीमती मेहता नामक एक भक्त ने मेरी पत्नी से उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। हम गुरुजी के पास ही बैठे हुए थे और गुरुजी ने श्रीमती मेहता से कहा कि वह उसे स्वर्ग से वापस लाये हैं। हमें तुरन्त आभास हुआ कि वह ईश्वर के अवतार हैं। गुरुजी ने पूरे परिवार को अपना आशीर्वाद दिया है। हमारे पुत्र और पुत्री, दोनों उनके अनुयायी हैं और जीवन में बहुत अच्छा कर रहे हैं। हमारा पूरा परिवार गुरुजी की दया के लिए उनका अत्यंत आभारी है।

– एन एल सप्रा, दिल्ली

मुझे गुलाबों की सुगन्ध आयी

अपने परिवार के एक घनिष्ट मित्र के माध्यम से मैं गुरुजी से 2004 में मिली। पहली बार मंदिर जाते हुए मुझे पता नहीं था कि वहां पर क्या होगा। एक हॉल में बहुत से भक्त बैठे हुए थे, गुरुजी के बहुत बड़े-बड़े चित्र थे और गुरुजी स्वयं एक आसन पर विराजमान थे। मैंने भी जाकर गुरुजी के चरण स्पर्श किये और फिर एक दीवार के साथ जाकर बैठ गयी। हर बार जब मैं गुरुजी को देखती थी, मुझे लगता था कि उनकी दृष्टि मुझ पर ही केन्द्रित है। मैं अपने नेत्र बंद कर सुन्दर भजनों के रस में डूब गयी। एक दो बार मैंने अपनी आँखें खोलने का प्रयास किया पर नहीं कर पायी। अचानक कुछ अनूठा हुआ - मुझे गुलाब के फूलों की तीव्र सुगन्ध आयी। यह अर्क या अगरबत्ती से नहीं थी क्योंकि वहां पर वह वस्तुएँ नहीं थीं। यह तो ताज़े गुलाबों की अति मनमोहक सुगन्ध थी जो सब ओर से लहरों की भांति आ रही थी और मैं उसमें डूब रही थी। मैंने अपनी आँखें खोलीं और देखा कि गुलाब तो कहीं नहीं थे, केवल कुछ कृत्रिम पुष्प रखे हुए थे। मैंने गुरुजी की ओर देखा तो वह मुझे देख रहे थे। वह बोले, *''हुन दस प्रक्टिकल अए के सी?''* और मैं उसका विश्लेषण नहीं कर पायी। भला मैं उनसे कैसे प्रश्न करती?

मुझे गुरुजी के पास इसीलिए लाया गया था क्योंकि चिकित्सकों ने मेरे मस्तिष्क में गुलमे का निदान किया था। वह मेरी दृष्टि की नस के ऊपर था और अधिक बढ़ने पर मैं दृष्टिहीन हो सकती थी। मुझे अति तीव्र औषधियाँ दी जा रही थीं – प्रतिदिन तीन ब्रोमोक्रोपितन। इसके कारण मैं अत्यंत व्याकुल रहती थी। कार्यरत होते हुए मैं अपना कार्य ठीक से नहीं कर पाती थी।

मैं गुरुजी के पास जाकर, शांति से बैठ कर प्रार्थना करती थी। मैं आशा करती थी कि शल्य क्रिया करवा कर गुलमे को निकलवा दूं और औषधियाँ बंद कर दूं। गुरुजी ने मेरी विनती सुन ली। औषधियों का सेवन करते हुए भी वह गुलमा बढ़ता जा रहा था। अक्टूबर 2004 में मेरी शल्य क्रिया हुई। उन्होंने मुझसे तिथि, चिकित्सालय और चिकित्सक का नाम पूछा और बोले कि उनका आशीर्वाद मेरे साथ है और मुझे कुछ नहीं होगा। मुझे भी पता था कि अब कुछ असामान्य नहीं हो सकता है। यह एक अत्यंत जटिल शल्य क्रिया थी पर मैं प्रसन्न थी। मुझे पता था कि गुरुजी मेरे साथ हैं। मेरा स्वास्थ्य लाभ अनुमान से कहीं अधिक तीव्र गति से हुआ और कीमोथेरेपी, जो सामान्यतः दो मास के उपरान्त शुरू करनी थी, तीन सप्ताह के बाद ही आरम्भ कर दी गयी! किसी को विश्वास नहीं हो रहा था।

चिकित्सालय से बाहर आते ही मैं गुरुजी को धन्यवाद करने गयी तो उन्होंने मुझे नये जीवन पर बधाई दी। मुझे पता था कि उन्होंने मुझे नव जीवन प्रदान किया है। विकिरण चिकित्सा होते हुए भी मेरे ऊपर कोई दुष्प्रभाव नहीं हुआ। मैं अन्य रोगियों को स्ट्रेचर और पहिये वाली कुर्सियों पर बाहर आते हुए देखती थी। इसके विपरीत उन दिनों प्रातः मैं अपने कार्यालय का काम करने के बाद चिकित्सालय जाती थी और उसके उपरान्त बाज़ार में घूमती थी; मैं सामान्य जीवन व्यतीत कर रही थी। सब गुरुजी की कृपा का फल था। जिन दिनों मैं अपोलो चिकित्सालय में अपनी विकिरण चिकित्सा के लिए जा रही थी, गुरुजी ने अनेक अन्य उन रोगियों पर भी अपनी दया वृष्टि करी जिनके संपर्क

में मैं आयी थी। मुझे एक नौ वर्षीय बच्चे का सन्दर्भ याद है जिसके मस्तिष्क में गुलमा था। उसके अभिभावकों को चिकित्सा कुछ दिनों तक रोकनी पड़ी क्योंकि उसके निर्धन पिता, जो कहीं दूर सरकारी नौकरी कर रहे थे, अवकाश लेकर आये थे। उसकी चिकित्सा में समय लग रहा था और जितना अधिक समय लगता उतना ही उनको धन का अभाव होता।

मेरे पास गुरुजी का एक लाकेट था – मै अपने साथ सदा गुरुजी का चित्र रखती हूँ। मैंने उसकी माँ को वह लाकेट उसकी आँखों पर प्रतिदिन रखने के लिए कहा। मुझे विश्वास था कि गुरुजी उसकी सहायता अवश्य करेंगे। एक सप्ताह के बाद वह मुझे पुनः मिले। वह बालक कीमोथेरेपी के लिए वापस आ गया था और अधिक स्वस्थ दिख रहा था। उसकी माँ ने कहा कि जबसे उसने वह लाकेट उसके ऊपर प्रतिदिन प्रातः रखना आरम्भ किया वह अच्छा होने लगा है और चिकित्सक भी उसका स्वास्थ्य लाभ देखकर अचंभित हैं।

जब मेरा बेटा ढाई वर्ष का था (मेरी चिकित्सा के तुरन्त बाद), हमें पता लगा कि शौच करते हुए उसमें रक्त भी आ रहा है। परीक्षण करवाये गये। उसके बाद हमें बताया गया कि उसके मलाशय की शल्य क्रिया होगी जिसमें ४५ मिनट से एक घंटे तक का समय लगेगा। बाहर प्रतीक्षा करते हुए मैं गुरुजी से यही विनती करती रही कि वह अन्दर जय के साथ रहें। उस प्रक्रिया में तीन घंटे लग गये। जब चिकित्सकों ने हमें अन्दर बुलाया तो वह चिंतित थे। इतनी देर लगने का कारण उनको मिली दूषित फुंसियाँ थीं जिनकी बाओप्सी करवानी थी।

उन चार दिनों में मैं अत्यंत व्याकुल रही। मैं गुरुजी से हर समय उनकी कृपा के लिए ही प्रार्थना करती रही। गुरुजी ने जय को आशीर्वाद दिया। परिणामों में कुछ विशेष नहीं निकला, केवल साधारण संक्रमण, जो एक सप्ताह की औषधि से चला गया। हम उस घटना को अब भूल गये हैं।

गुरुजी ने सदा मेरी कामनाएँ पूर्ण करी हैं – भले ही वह भौतिक हों या स्वास्थ्य सम्बंधित। गुरुजी के पास जाने पर उनको पता चल जाता है कि हमें किस वस्तु की आवश्यकता है, हम उसके प्रति अनभिज्ञ रहते हैं – वह दोनों प्रदान करते हैं। उनको कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है।

मैं उनके बारे में पूरे दिन बैठ कर लिख सकती हूँ कि उन्होंने हमारे लिए कितना कुछ किया है। पर जैसा वह स्वयं कहते हैं, *''शॉर्ट में सुनायीं''*। हम सब पर दया करने के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद।

– श्रीमती नंदिता चंदर, गुड़गाँव

दीर्घकालिक केंसर का सफाया

गुरु मेरी पूजा, गुरु गोविन्द, गुरु मेरा पारब्रह्म, गुरु भगवन्त...

फरवरी 2005 में चिकित्सकों ने मेरी पत्नी के गर्भाशय में केंसर का निदान किया था। रोग बहुत फैल चुका था और प्राणघातक कोशाणु फेंफड़ों के पास तक पहुँच गये थे। हमने सब चिकित्सकों को दिखाया किन्तु शल्यक्रिया के अन्यथा कोई और उपाय नहीं था। अंततः अनीता की शल्य क्रिया बम्बई चिकित्सालय में हुई। उसके पश्चात् प्रति तीन सप्ताह के अंतराल में छः बार कीमोथेरेपी होनी थी।

उसी समय, ईश्वर दूत की भांति, मेरी बहन और उसके पति, जो गुरुजी के अनुयायी थे, हमारे घर आये। उन्होंने हमें गुरुजी के बारे में बताया और उनका आशीर्वाद लेने की सलाह दी। अगले वृहस्पतिवार को हम गुरुजी के दर्शन के लिए गये।

हमने हॉल में प्रवेश किया ही था कि गुरुजी ने मेरी पत्नी से बात करी। उन्होंने उसे उसके नाम और घर में प्यार वाले नाम से संबोधित

किया, *''अनीता... लखनऊ वाली बबली आंटी।''* हमें एकदम आश्चर्य हुआ और अनीता में विश्वास और साहस का प्रादुर्भाव हुआ। उसे प्रतीत हुआ कि उसकी सब समस्याएँ समाप्त हो गयी हैं और गुरुकृपा उस पर सदैव बनी रहेगी। गुरुजी ने अनीता को एक ताम्र लोटा लाने को कहा जिसे उन्होंने अभिमंत्रित किया। अनीता प्रतिदिन उसका जल पीती थी। केंसर का उपचार सरल नहीं है: कीमोथेरेपी और उसके दुष्प्रभाव - बालों का झड़ना, जी मिचलाना और उदासी आदि अत्याधिक होते है। उसके बाल झड़ने की प्रक्रिया से, उससे अधिक, उसके परिवार वाले अधिक चिंतित थे। कीमोथेरेपी होते हुए उसने अपना धैर्य और साहस बनाये रखा। यह सब गुरुकृपा के कारण हुआ। गुरुजी भी उसे ढाढ़स देते रहते थे - उन्होंने तो उसे कह दिया कि वह स्वस्थ है और प्रतिदिन एकाध पेग व्हिस्की भी पी सकती है।

इन्हीं दिनों गुरुजी ने बताया कि हमारे पुत्र का प्रेम विवाह होगा और ऐसा ही हुआ - उसने अपनी पसंद की कन्या के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा तो वह सहर्ष मान गयी। उन दोनों को हम गुरुजी के पास लाये और उनका आशीर्वाद दिलवाया।

अनीता को केंसर हुए अब तीन वर्ष हो गये हैं। उसमें अब उस रोग के कोई लक्षण नहीं हैं और वह पुनः पहले की भांति मिलनसार और हँसमुख है। गुरुजी ने उस पर दया कर के उसे स्वस्थ घोषित कर दिया है। समस्त परिवार के सदस्य, मित्रगण और, उसके चिकित्सक भी, उसे स्वस्थ देख कर, गुरुजी द्वारा दिये गये नव जीवन में आनंद उठाते हुए देखकर अति प्रसन्न हैं।

गुरुजी का हमारे जीवन में आगमन कितने उचित समय पर हुआ। अनीता के केंसर का निदान हुए सात महीने ही हुए थे कि मेरे हृदय की तीन धमनियां बंद मिलीं। गुरुजी ने मेरी चिकित्सा अपनी विधि से करी। यद्यपि मैं उनके पास अपनी एंजियोग्राफी के उपरान्त गया था, उन्होंने मुझे तुरन्त शल्य क्रिया करवाने से मना कर दिया। मेरे कुछ बोलने से पहले ही उन्होंने पूछा कि क्या मैंने परीक्षण करवाया है। मेरे हाँ कहने

पर उन्होंने मुझे थेलियम परीक्षण भी करवाने को कहा। उसका सकारात्मक परिणाम आने पर मैं अत्यंत निराश हुआ। परिणाम के पश्चात् उन्होंने मुझे शल्य क्रिया करवाने को कहा। मेरे विचार से वह उचित समय की प्रतीक्षा में थे – मेरे मधुमेह के कारण उस समय विपदा की संभावना अधिक रही होगी। उस अंतराल में अनीता लगातार गुरुजी के दर्शन के लिए जाती रही। उन्होंने मुझे भी आशीष दिया और मेरे वापस आने पर बोले कि उन्होंने हम दोनों को नव जीवन दान दिया था। यह कदाचित् सत्य भी है।

अनीता बिलकुल स्वस्थ है, मेरे पुत्र का विवाह उसकी इच्छा से हुआ है और दोनों प्रसन्न हैं; मैं भी पहले जैसा जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। क्या गुरुजी और उनकी दिव्य कृपा के अन्यथा यह संभव था? गुरुजी अनीता को कहते थे कि वह स्वस्थ है और जीवन का आनंद उठा सकती है।

उनके आशीर्वाद से अब हम दोनों में अधिक आत्मविश्वास, सुख–शांति और उल्लास है। हमें सदा उनकी उपस्थिति का आभास रहता है। हमारे लिए वह परमेश्वर हैं। निष्कपट आस्था के साथ उनके पास पहुंचे प्रत्येक मनुष्य को उनकी दिव्य कृपा की प्राप्ति होती है।

– नरेन्द्र तनेजा, दिल्ली

जीवन मृत्यु के रचयिता

श्रद्धालु की निजी नियति में गुरुजी का हस्तक्षेप – जहाँ पर वह भक्त को उन विपदाओं से बचाते हैं, जिनका उसे ज्ञान नहीं हो, और यह करने के लिए उसके कर्मों का निवारण – समझना सरल नहीं है। साथ ही उसके बुरे कर्मों को समाप्त करने में सर्वशक्तिशाली के कृत्य, जीवन और मृत्यु पर उनका अधिकार सिद्ध करते हैं।

दुष्ट आत्मा बनाम गुरु ऊर्जा

नरेन्द्र ढ़ंड, अब अहमदाबाद स्थित जनरल इलेक्ट्रिक में कार्यरत, के परिवार को एक विचित्र समस्या थी। उनकी पत्नी के शरीर में एक शक्तिशाली, दुष्ट आत्मा ने प्रवेश कर लिया था। उनकी माँ पटियाला में नव वर्ष के अवसर पर गुरुजी से मिलीं और उनका एक चित्र लेकर घर आयीं।

परिवार ने पंचकूला में गुरुजी से भेंट करनी चाही किन्तु यह संभव नहीं हो सका। वह मनसा देवी चले गये। महिलाओं का सरलता से हर बात पर विश्वास करने के लिए नरेन्द्र ने उन पर व्यंग्य कसा कि हर ईंट के पीछे दो गुरु मिल जायेंगे। अंततः, परिवार को चंडीगढ़ में,

शिवरात्रि के अवसर पर गुरु दर्शन के का सौभाग्य प्राप्त हुआ। नरेन्द्र ने अनेक सत्संग सुने और गुरुजी को यह भी कहते हुए सुना कि जो भी श्रद्धा से आया है वह उसके घर अवश्य जायेंगे। अगले दिन प्रातः ४:३० बजे यह शब्द सत्य सिद्ध हुए जब उनके शयन कक्ष का द्वार खुला और नरेन्द्र ने गुरुजी की छाया देखी। गुरुजी ने घर पर अपने आने के प्रमाण भी छोड़े। घर की सफाई करते समय दम्पति को कुछ स्वर्ण के अति महीन तार मिले। उनको यह पता नहीं था कि यह क्या है परन्तु अगले बीस दिन तक घर में वह उन्हें उठाते रहे। यह वही तार थे जो गुरुजी के वस्त्रों में सज्जित बेल-बूटों में लगते हैं।

नरेन्द्र ने गुरुजी से मिलने का निश्चय किया और एक शनिवार को उनसे मिलने चंडीगढ़ गये। उन्होंने गुरुजी से अपनी पत्नी की समस्या का उल्लेख किया तो गुरुजी ने कहा कि उन्हें आशीर्वाद मिल गया है। नरेन्द्र निराश हो गये। वह सोच रहे थे कि गुरुजी ने उनसे उनकी समस्या के बारे में क्यों नहीं पूछा या उनसे और अधिक बात क्यों नहीं करी। उस समय तक वह गुरुजी द्वारा उच्चारित शब्दों की पूरी शक्ति से अनभिज्ञ थेः उनके कथन सत्य वचन हैं, भले ही कितने भी अनौपचारिक रूप से किसी की समस्या का निवारण करने के लिए कहे गये हों।

नरेन्द्र फिर गुरुजी के जन्म स्थान डुगरी ग्राम गये। वहाँ से वह, यादगार के लिए, गुरुजी के घर से एक ईंट ले आये। उस ईंट को धोकर उन्होंने अपने घर में पूजा स्थान पर रख दिया। उसी रात्रि को उन्हें एक स्वप्न आया। उन्होंने देखा कि वह नारी आत्मा, जो उनकी पत्नी के शरीर में थी, ने अब उनके शरीर में प्रवेश कर लिया। उनके मुख से वह बोली कि उसे कभी भी वश में नहीं किया जा सकता था किन्तु घर में रखी हुई वह ईंट इतनी शक्तिशाली है कि अब वह यहाँ पर और एक पल भी नहीं रह सकती है और वह इसी समय यह घर छोड़ कर जा रही है। परिवार की समस्या हल हो गयी थी - गुरुजी के घर से लायी हुई उस ईंट के कारण। वह एक ईंट नरेन्द्र के उस परिहास, कि हर ईंट के पीछे दो गुरु मिल जाते हैं, का मुंहतोड़ उत्तर भी था।

अथाह प्रयत्न करने पर भी, अगले दिन, नरेन्द्र को वह पूरा स्वप्न याद नहीं रहा था। किन्तु गुरुजी ने उसके मन की सभी शंकाएं यह कह कर दूर कर दी कि उन्हें एक ईंट के माध्यम से कृपा हुई थी। फिर गुरुजी ने सदा की भांति, थोड़े से वाक्यों में गुरु की प्रकृति का रहस्योद्घाटन यह कह कर किया – *''गुरु को कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं है। गुरु को इस स्तर तक मत गिराओ। गुरु को तुम्हारी समस्या का आभास है और वह उसका हल निकाल लेंगे।''* बार-बार गुरुजी के यह शब्द सत्य सिद्ध हुए हैं।

नरेन्द्र की बेटी का उद्धार

जनवरी 1998 में नरेन्द्र अपने भतीजे की पहली लोहड़ी पर होने वाले समारोह के लिए कुछ उपले लाने डुगरी गये। वह गुरुजी की माँ से मिले, जिन्होंने उन्हें एक बोरी उपले ले जाने के लिए कहा किन्तु वह अपनी कार में केवल पांच उपले ले कर वापस आ गये।

तीन दिन के पश्चात् माताजी गुरुजी के पास दिल्ली में थीं। गुरुजी ने उनसे प्रश्न किया कि क्या कोई उपले लेने आया था। माँ को नरेन्द्र का नाम पता नहीं होने के कारण उन्होंने कहा कि चश्मा पहने हुए एक युवक आया था और वह कुछ उपले अपनी कार में रख कर ले गया था। जब गुरुजी ने पूछा कि क्या बोरी भर कर उपले दिए थे तो माँ ने नकारात्मक उत्तर दिया। फिर गुरुजी जैसे अपने आप से बात करते हुए बोलने लगे कि होगा या नहीं होगा। यह उन्होंने दो बार दोहराया। फिर वह बोले कि जब होगा वह देख लेंगे।

शीघ्र ही नरेन्द्र की पत्नी गर्भवती हो गयी। उसके आठवें मास में नरेन्द्र ने नवजात शिशु को लपेटने के लिए गुरुजी से उनके वस्त्रों के लिए अनुग्रह किया। गुरुजी ने मना कर दिया। शल्य क्रिया के द्वारा नरेन्द्र की पत्नी ने एक कन्या को जन्म दिया। जन्म के दिन ही उसके फेंफड़ों में संक्रमण हो गया। नरेन्द्र ने जब गुरुजी को बताया तो उन्होंने कहा कि सब ठीक हो जाएगा। किन्तु तीसरे दिन उस नवजात शिशु की मृत्यु हो गयी।

नरेन्द्र की पत्नी के टांकों में पस भर गया। 21 दिन में वह पस पेट में एक थैली के रूप में एकत्रित हो गया। नरेन्द्र की पत्नी अत्यंत दुखी थी। उसने गुरुजी को उनके चित्र के सामने उनको भला बुरा कहा। विलाप करते हुए उसने कहा कि वह अपना बच्चा पहले ही खो चुकी थी और अब उसे यह समस्या हो गयी थी। उस रात्रि में उसे अपना उत्तर मिल गया। गुरुजी ने उसे स्वप्न में दर्शन देकर उसे 21 दिन तक एक आरती करने को कहा। उन्होंने एक उपाय भी बताया। फिर उन्होंने कहा कि उसके उदर में वह थैली जन्म दिवस के 42 दिन बाद लुप्त हो जायेगी। शोक संतप्त माँ ने गुरुजी के कथन का अनुसरण किया। उसने वह आरती 21 दिन तक करी। आश्चर्यजनक रूप से उस दिन के पश्चात् उसे उस आरती के शब्द याद ही नहीं रहे! शीघ्र ही उसके टांकों के निकट ही एक छिद्र हो गया जिसमें से पूरा पस बह कर निकल गया। परन्तु नरेन्द्र का दुःख अब तक बना हुआ था। एक दिन वह अपने घर में दिया जलाते हुए रोने लगे।

उस रात्रि गुरुजी ने नरेन्द्र को स्वप्न में दर्शन दिये। वह उसे उस स्थान पर ले गये जहाँ नरेन्द्र ने अपने नवजात शिशु को दफनाया था। उन्होंने उसे वहां खोदने के लिए कहा। फिर उन्होंने उस शिशु को उनके हाथ में रखने के लिए कहा – जो अचानक बहुत बड़ा प्रतीत हुआ। फिर गुरुजी ने दूसरे हाथ से उसके ऊपर जल छिड़का तो वह रो पड़ी।

फिर उन्होंने नरेन्द्र से दो बार पूछा कि क्या उन्हें यह कन्या चाहिए। स्तब्ध नरेन्द्र कुछ कह नहीं सके। गुरुजी ने उन्हें बताया कि यदि उस समय वह उनकी माँ के कहे अनुसार उपलों की पूरी बोरी ले जाते तो यह घटनाएं नहीं होतीं। इस शिशु ने जन्म ही नहीं लिया होता। गुरुजी ने समझाया कि नवजात शिशु के जीवित रहने से माता-पिता में से एक की मौत निश्चित थी। उस स्वप्न में, जो जागृत अवस्था से अधिक सत्य था, नरेन्द्र ने कन्या को अस्वीकार कर दिया। गुरुजी ने फिर उस कन्या को मोक्ष दिया। नरेन्द्र ने उस कन्या के शरीर से एक प्रकाश किरण

निकल कर गुरुजी के कमल चरणों में जाती हुई देखी। गुरुजी ने कहा कि उसे वह मुक्ति प्राप्त हुई है जो तपस्वी सहस्त्र वर्षों की तपस्या के बाद भी प्राप्त नहीं कर पाते। उस शमशान घाट में, गुरु कृपा से, एक आत्मा को मुक्ति प्राप्त हुई थी।

... और पुत्र को आयु वृद्धि

अक्षय अत्यंत विलक्षण बालक था। तीन वर्ष की आयु तक उसके शरीर और मूत्र से गुरुजी की सुगन्ध आती थी। एक दिन उसके पिता, नरेन्द्र ने उसकी जन्म पत्री एक ज्योतिषी को दिखायी तो उन्होंने कहा कि उसकी आयु केवल आठ वर्ष तक ही है। दुखी माँ ने नरेन्द्र को गुरुजी से प्रार्थना करने के लिए कहा। दिसंबर 2001 में गुरुजी जालंधर में थे। नरेन्द्र ने वहां जाकर गुरुजी को ज्योतिषी के कथन से अवगत कराया तो उन्होंने मात्र इतना उत्तर दिया कि ज्योतिषी लोगों को गलत मार्ग पर ले जाते हैं।

कुछ दिन पश्चात् एक भक्त ने जालंधर में ही एक समारोह का आयोजन किया था। गुरुजी ने नरेन्द्र को आने के लिए कहा तो उन्होंने चंडीगढ़ में एक अधिवेशन होने के कारण अपनी असमर्थता व्यक्त करी। गुरुजी के अनुरोध पर नरेन्द्र रात्रि दस बजे चंडीगढ़ से जालंधर पहुंचे। गुरुजी उस समय प्रसाद वितरण कर रहे थे; उन्होंने नरेन्द्र को भी प्रसाद दिया। फिर नरेन्द्र ने लंगर किया और उसके उपरान्त गुरुजी के सथ हॉल में बैठ गये। सतगुरु ने पुनः प्रसाद बांटा और नरेन्द्र को देते हुए बोले कि उन्होंने उसके पुत्र की आयु वृद्धि कर दी है। नरेन्द्र को गुरुजी का कथन याद है - *केवल रब ही यह कर सकता है और वह उसके सामने है।*

जब अक्षय का पाठशाला जाने का समय आया तो उसके अभिभावकों ने तीन स्थान पर प्रवेश पत्र भरे थे। दो ने बहुत अधिक राशि दान के रूप में मांगी तो उनके बारे में सोच विचार ही बंद करना पड़ा। एक स्वप्न में गुरुजी ने अक्षय की जेब में उनका चित्र रखने का

निर्देश दिया और कहा कि ऐसे उसका प्रवेश हो जाएगा। तीसरे स्कूल में बच्चे के साक्षात्कार के दिन, यद्यपि उसके माता–पिता गुरुजी का चित्र लेकर भेजने को उत्सुक नहीं थे, उन्होंने उसकी जेब में एक चित्र रख ही दिया। उसके पिता चिंतित थे: 5000 में से केवल 250 चुने जाने थे। परन्तु अक्षय का विश्वास अटल रहा। परिणाम आने पर वह चकित हो गये – प्रवेश सूची में उसका नाम पांचवें स्थान पर था और उनको कोई अतिरिक्त पैसा भी नहीं देना पड़ा था।

मृत्यु पथ से बचाव

जनवरी 1998 में तीन साधु नरेन्द्र के घर आये। उनमें से एक भविष्यवाणी करने लगे और नरेन्द्र की माँ को बताया कि उनके बड़े पुत्र की अब तक मृत्यु हो जानी चाहिए थी। यह सुन कर माँ ने नरेन्द्र की पत्नी को बाहर बुलाया। संत ने कहा कि उसकी बड़ी हुई आयु उन महापुरुष के कारण हैं जिन पर वह आस्था रखते हैं। फिर उस घुमक्कड़ ज्योतिषी ने कहा कि नरेन्द्र की मृत्यु 30 जनवरी को हो जायेगी। यदि उस संत को कपड़े दिये जाएं तो वह इस विपदा को दूर कर देंगे। नरेन्द्र की पत्नी चिंतित हो गयी और उसने नरेन्द्र को गुरुजी के पास भेज दिया क्योंकि वह तिथि निकट ही थी। 30 जनवरी को नरेन्द्र गुरुजी के साथ थे।

उस रात को नरेन्द्र की पत्नी ने स्वप्न में देखा कि गुरुजी और माँ काली एक साथ हैं और गुरुजी काली को दंपति को आशीर्वाद देने को कह रहे हैं। माँ के हाथ में एक चांदी की छड़ है। उन्होंने दंपति को अपने हाथ आगे करने को कहा। नरेन्द्र के ऐसा करने पर माँ ने उनके हाथ पर छड़ से वार किया। नरेन्द्र की पत्नी ने भयभीत होकर मना कर दिया और हाथ आगे नहीं बढ़ाया। गुरुजी ने कहा कि छड़ के उस वार से नरेन्द्र के बुरे कर्म नष्ट हो गये थे।

उन्होंने नरेन्द्र की पत्नी को यह भी बताया कि वह दृश्य काल्पनिक न होकर वास्तविक है। उसी समय नरेन्द्र की पत्नी जग

गयी। उसने देखा कि उनके पूजा स्थान में रखे हुए गुरुजी के चित्र में लाल कपड़े काले हो गये थे, काली माँ के समान। पांच मिनट के पश्चात् कपड़े पुनः लाल हो गये।

मृत्यु के चिह्न मिटाये

लुधियाना में उनके पैतृक घर के द्वार पर दो हाथ चिह्नित थे। नरेन्द्र की पत्नी को कुछ अंदेशा था और उसने अपनी सास को दर्शन के लिए नैना देवी के मंदिर भेज दिया। जब वह वहां पर नहीं थीं, नरेन्द्र की पत्नी घर साफ करने और उन निशानों को मिटाने में लग गयी। उसने उन चिह्नों को अपने हाथ से मिटाने का प्रयत्न किया। रात तक उस हाथ में अत्यंत वेदना और सूजन आ गयी थी। चार दिनों में बायें अंग में पक्षाघात हो गया। चिकित्सकों ने औषधियाँ आरम्भ करवा कर कुछ व्यायाम करने को कहा। नरेन्द्र जालंधर में कार्यरत थे। पत्नी के समाचार सुन कर वह घर आना चाह रहे थे।

किन्तु पत्नी ने उन्हे फोन कर चिंतामुक्त रहने के लिए कहा। सदा की भांति गुरुजी ने उसको रोग मुक्त किया था। उसने बताया कि वह अपना दुखड़ा गुरुजी के चित्र के सामने व्यक्त कर रही थी कि अचानक गुरुजी प्रकट हो गये। अपने इस प्रकार प्रकट होने के अचम्भे के शांत होने के बाद वह दम्पति के बिस्तरे पर बैठ गये। उन्होंने बताया कि उन चिह्नों का अर्थ सास की निश्चित मृत्यु थी जो उन्होंने मात्र हाथों के लकवे में परिवर्तित कर दिया था।

गुरुजी ने अपने भक्त के हाथ मले और फिर उन्हें हिलाने को कहा। जब वह नहीं कर सकी तो उन्होंने प्रक्रिया दोहरायी। इस बार वह हाथ को हिला सकी। लकवा लोप हो गया था। गुरुजी ने सलाह दी कि वह अपनी सास से उनके चित्र पर जल डलवाए और इस जल से उन चिह्नों पर छींटे मारे जाएँ। छींटे मारते ही वह भूरे से लाल रंग के हो गये। गुरुजी बोले कि उन्हें आशीष मिला है।

नैनीताल का निमंत्रण

जून 2002 में गुरुजी की संगत के साथ नैनीताल जाने की योजना बन रही थी। नरेन्द्र की पत्नी सोच रही थीं कि गुरुजी उनको साथ चलने के लिए कहेंगे या नहीं। नरेन्द्र ने कहा कि न तो वह उनके पुराने अनुयायी हैं न ही धनवान हैं, तो गुरुजी उनको संभवतः आने के लिए न कहें। शीघ्र ही पता लगने वाला था कि उनका सोचना कितना गलत है। गुरुजी की संगत में कोई भेदभाव नहीं होता और उन जैसी तेजस्वी विभूति के सम्मुख सब दीन हैं। वह दाता हैं, और शेष सब, कोई भी लौकिक प्रतिष्ठा होते हुए, मात्र भिक्षु हैं।

दो तीन दिन में ही गुरुजी ने नरेन्द्र को दिल्ली बुलाया। दिल्ली पहुँच कर, लंगर खाने के उपरान्त, गुरुजी ने उन्हें नैनीताल आने का निमंत्रण दिया। जब नरेन्द्र घर वापस पहुंचे तो उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि गुरुजी ने केवल औपचारिकता के लिए उन्हें आमंत्रित किया होगा। पर जाने से तीन दिन पूर्व, गुरुजी ने उन्हें बुलाया और साथ में ऊनी वस्त्र भी लाने के लिए कहा। गुरुजी ने नरेन्द्र के समस्त भ्रम दूर कर दिये थे। नरेन्द्र कहते हैं कि उनको आपके जीवन के बारे में सब ज्ञान है; आप क्या करते हैं और क्या सोचते हैं।

नैनीताल में गुरुजी ने नरेन्द्र को डिप्लोमा अथवा डिग्री पाठ्यक्रम करने के लिए कहा। नरेन्द्र ने कहा कि एक दशक के बाद यह करना अत्यंत कठिन होगा। परन्तु गुरुजी ने उसे बलपूर्वक यह करने का आदेश दिया। नरेन्द्र ने डिप्लोमा पाठ्यक्रम करना आरम्भ किया पर उसे पूरा करने की शंका के साथ। परीक्षाओं में नरेन्द्र ने गुरुजी से सहायता मांगी। गुरुकृपा से उन्होंने यह दो वर्ष में ही पूर्ण कर लिया और गुरुजी को समाचार देने गये। गुरुजी सोच रहे थे कि नरेन्द्र उन्हें यह बताने का कष्ट क्यों कर रहा है – उन्होंने कहा कि परीक्षाएं तो उन्होंने ही लिखी थीं और सफल रहे थे। गुरुजी की दया से नरेन्द्र ने एम बी ए कर लिया था।

सबको आशीर्वाद

गुरुजी सबको अपना आश्रय प्रदान करते हैं। उन्हें भक्त के भूतकाल से कोई अभिप्राय नहीं है। उन्हें पावन, पवित्र विचारों की भी कोई आवश्यकता नहीं है; ईमानदारी से किया हुआ स्वावलोकन अधिक लाभप्रद होगा। सतगुरु सदाचारी और दुराचारी, अच्छे और बुरे, धनवान और निर्धन में कोई भेदभाव नहीं करते। उनकी छत्रछाया में परिवार, मित्र, सम्बन्धी आदि सब आकर उनकी कृपा के पात्र बनते हैं। पर सतगुरु के साथ एकाकार होने के लिए स्वाभिमान को समाप्त कर उनको समर्पण करना अनिवार्य है। फिर गुरुजी अपने भक्त के जीवन पथ को ही सहज कर देते हैं और उसके बुरे कर्मों को, जैसा उन्हें उचित लगे, निष्फल कर देते हैं।

नरेन्द्र के भाई, सुनील शिव के परम भक्त हैं और दोनों भाई अमरनाथ यात्रा एक साथ कर चुके हैं। 2005 के जून मास में सुनील फिर से अमरनाथ यात्रा पर गये थे। एक स्थान पर भूस्खलन हो रहा था और ऊपर पहाड़ों से बड़े-बड़े पत्थर गिरते आ रहे थे। बस एक गहरी खाई के किनारे रुकी हुई थी। सुनील ने गुरुजी को याद किया, उनका चित्र निकाल कर उसके ऊपर जल डाला और उस जल को उस दिशा में छिड़क दिया जिधर से पत्थर गिर रहे थे। भूस्खलन बंद हो गया और सब यात्रियों को नव जीवन मिला।

उसके पश्चात् जब सुनील गुरुजी के दर्शन के लिए दिल्ली गये तो गुरुजी ने उन्हें संगत को यह नया अनुभव सुनाने को कहा; उनके जीवन की रक्षा करने के लिए गुरुजी ने अन्य अनेक यात्रियों को जीवन दान दिया था।

यह पहला अवसर नहीं था जब गुरुजी ने सुनील को जीवन दान दिया था। वर्ष 2000 में सुनील के एपेंडिक्स की शल्य क्रिया हुई थी पर उसके पश्चात् सुनील को मूत्र नहीं आ रहा था – यह गंभीर था। इससे सम्बंधित उदर शूल उनसे सहा नहीं जा रहा था। चिकित्सकों के अनुसार

उनकी इस कठिनाई का मूल उनकी मानसिकता थी और उन्होंने वेलियम गोलियां खाने को कहा – किन्तु स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ।

जब सुनील चंडीगढ़ में गुरुजी के पास गये तो उन्होंने 17 ग्लास चाय पिलायी और दो लंगर कराये। जैसे ही सुनील जाने को तत्पर हुए, गुरुजी ने एक कप चाय और पीने को कहा। सुनील पहले ही इतना तरल लेने के पश्चात् और लेने की स्थिति में नहीं थे, अतः गुरुजी ने वह चाय अपने सामने ही पीने के लिए कहा। वह बोले कि अब सब ठीक हो जाएगा। बाहर जाते ही सुनील ने मूत्र किया – कोई दस मिनट तक। उस दिन से उन्हें वह समस्या पुनः नहीं हुई है। गुरुजी द्वारा अभिमंत्रित चाय ने वह किया जो चिकित्सकों की औषधियाँ नहीं कर पायीं थीं।

1997 में, एक सम्बन्धी की बेटी, मधु अस्वस्थ हो गयी। उसे कुछ स्नायु सम्बंधित समस्या थी और उसको उदर का पक्षाघात हो गया था। वह गुरुजी की अनुयायी थी और चिकित्सा के लिए जाने से पूर्व उसने गुरुजी के दर्शन करने चाहे। उसे चंडीगढ़ लाया गया और बाहर एक खिड़की के पास बिठाया जहाँ से वह गुरुजी को देख सके। मधु ने रोते हुए प्रसाद के लिए प्रार्थना करी। गुरुजी ने उसकी आस्था की परीक्षा लेने के लिए उसको सबसे अंत में प्रसाद दिया। उन्होंने उसको पटियाला के राजेंद्र चिकित्सालय में प्रविष्ट कराने को कहा।

दो सप्ताह वहां रह कर उसके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। चिकित्सालय से निकल कर वह पुनः गुरुजी के दर्शन के लिए आयी। उसके शरीर में एक बोतल लगी हुई थी जो गुरुजी ने निकलवा दी। चिकित्सक आश्चर्यचकित थे। उनके अन्य रोगियों को कोई लाभ नहीं हुआ था किन्तु वह तीन सप्ताह के उपचार के पश्चात् स्वास्थ हो गयी थी। सतगुरु के दर्शन ने पुनः दिव्य चिकित्सा का कार्य किया था।

गुरुजी की महिमा एक अन्य सम्बन्धी पर भी हुई। जब गुरुजी

चंडीगढ़ में रहते थें, लंगर मलेर कोटला से आता था। कुछ परिवारों को लंगर बनाने का कार्य दिया गया था। नरेन्द्र की मामी गुरुजी के पास कुछ चपातियाँ बनाकर भेजना चाहती थीं। इस मनोरथ को व्यक्त करने के अगले दिन ही एक भिखारी उनके घर आया और उसने भोजन माँगा किन्तु उन्होंने मना कर दिया। भिखारी ने कहा कि पिछली रात को तो वह लंगर की बात कर रही थीं पर अब चाय भी नहीं दे सकती हैं। उनको इसका तात्पर्य फिर भी समझ नहीं आया पर वह उसके लिए चाय और दो लड्डू ले आयीं। भिखारी ने उनसे कुछ भी मांगने के लिए कहा; उसके इस कथन को भी समझ पाने में असमर्थ वह बोलीं कि उनके पास गुरुजी का दिया हुआ सब कुछ है। भिखारी ने तुरन्त *''कल्याण होगा''* कहा।

मामीजी भिखारी को शांति से खाने देने के लिए छोड़कर घर के अन्दर चली गयीं। थोड़ी देर बाद उन्होनें देखा कि वह भिखारी चला गया था और ग्लास वहीं पर रखा हुआ था। भिखारी के अचानक अदृश्य होने से - सामान्यत: वह पैसे मांगे बिना नहीं जाते हैं - उनको आभास हुआ कि गुरुजी ही उस वेश में आये होंगे।

नास्तिक पर कृपा

जनवरी 2004 में गुरुजी के पिताजी की अवस्था बिगड़ गयी और नरेन्द्र को उनकी देखभाल करने के लिए उनके पास भेजा गया। उन्हें मलेर कोटला के सार्वजनिक चिकित्सालय में दिखाया गया। उनके चिकित्सक, डॉ. गुरविंदर को गुरुजी के विषय में बताया गया पर उन्होंने इसमें कोई रुचि प्रकट नहीं करी।

गुरुजी ने नरेन्द्र को डॉ. गुरविंदर के साथ एक घंटे का सत्संग करने के लिए कहा पर चिकित्सक ने मना कर दिया। गुरुजी ने फिर नरेन्द्र को चिकित्सक से समय नियुक्त कर मिलने के लिए बोला। नरेन्द्र की बातें सुन कर भी चिकित्सक ने अलौकिक पर विश्वास करने से बिलकुल मना कर दिया और कहा कि सबका उत्तर विज्ञान के द्वारा

दिया जा सकता है। फिर भी गुरुजी चिकित्सक को अपने मार्ग पर लाने को दृढ़ संकल्प थे। उन्होंने नरेन्द्र को चिकित्सक को दिल्ली आने का निमंत्रण देने के लिए कहा। डॉ. गुरविंदर ने मना कर दिया, पर जैसे विधि की इच्छा, उन्हें दिल्ली में आयोजित एक समारोह के लिए आना पड़ा।

डॉ. गुरविंदर दो दिन गुरुजी की संगत में आये। अगले दिन जब गुरुजी ने उन्हें वापस भेजा तो उन्होंने कहा कि वह मलेर कोटला पांच घंटे में पहुँच जायेंगे यद्यपि दिल्ली से वहां तक सात-आठ घंटे का मार्ग है। गुरुजी के कथनानुसार जब यात्रा में पांच घंटे ही लगे तो उनको बहुत अचम्भा हुआ।

दिल्ली में गुरुजी ने नरेन्द्र को चिकित्सक से संपर्क स्थापित कर उनसे उनकी बेटी की कुशल क्षेम पूछने को कहा। जब नरेन्द्र ने गुरुजी से कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि वह मानसिक रोग से पीड़ित है। नरेन्द्र ने गुरुजी की इच्छा का अनुसरण किया। चिकित्सक ने पूछा कि वह उनकी बेटी के बारे में जानने को क्यों उत्सुक हैं। नरेन्द्र ने जब गुरुजी की बात बतायी तो चिकित्सक ने माना कि दिल्ली में गुरुजी की संगत से आने के पश्चात् उसमें 85% सुधार है। यद्यपि चिकित्सक अलौकिक में विश्वास नहीं करते थे फिर भी उनकी बेटी स्वस्थ होने के मार्ग पर थी। अगले सप्ताह वह फिर गुरुजी के दर्शन के लिए दिल्ली आये। शीघ्र ही उनकी बेटी पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गयी।

नरेन्द्र को गुरुजी से मिलने के पश्चात् कुछ अभूतपूर्व आध्यात्मिक अनुभव भी हुए हैं। उनमें उन्हें न केवल गुरुजी के अलौकिक रूप के दर्शन हुए, उनकी धार्मिक प्रवृत्तियों में भी परिवर्तन हुआ है। स्पष्ट है कि ऐसे अनुभव करवा कर सतगुरु अपने भक्त को अध्यात्म रत्न देकर उसे सही राह पर लाने की चेष्टा करते हैं।

अमरनाथः ''मैं ही शिव हूँ''

नरेन्द्र बचपन से शिव के भक्त रहे हैं। वह माला जपने और

अमरनाथ, जहाँ पर बर्फ का शिवलिंग है, जाना पसंद करते थे। गुरुजी से मिलने के पश्चात् वह अपने भाई, सुनील के साथ पुनः उस पवित्र स्थान पर गये।

जब वह दोनों गुफा के अन्दर जाने के लिए पंक्ति में खड़े हुए थे, नरेन्द्र को दिवास्वप्न होने लगा। गुरुजी की संगत का पूरा दृश्य उसकी आँखों के सामने होता हुआ गुजर गया। चाय प्रसाद आये हुए भक्तों में बांटा जाता; हॉल में गूंजती हुई शबद कीर्तन की मधुर वाणी और पेट भर कर लंगर; भक्तों द्वारा सुनाये हुए सत्संग जिनमें वह अपने निजी जीवन में हुए चमत्कारों का वर्णन करते; देर शाम को पंजाबी गानों, पुराने संगीत या गज़लों से वातावरण भर जाता। यह सब याद करते हुए नरेन्द्र के मन में प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि गुरुजी कौन हैं।

उसके मन में यह प्रश्न आने की देर थी कि शिवलिंग से उसके ऊपर की दिशा में किरणें निकलीं और वह उसके ऊपर एक फुट के वृत्त में फैल गयीं। उसमें नरेन्द्र को शिव के दर्शन हुए, जिन्होंने गुरुजी की छवि बना ली और पुनः शिव की आकृति में आ गये। नरेन्द्र के कान में एक ध्वनि गूंजी, *''मैं शिव हूँ; मैं सब कुछ हूँ''*। पूरी गुफा में गुरुजी की गूंज फैल गयी, जिसका आनंद नरेन्द्र के छोटे भाई, सुनील ने भी उठाया। उसी दिन, उनके लुधियाना वाले घर में, उसकी पत्नी को एक स्वप्न आया। उसने गुरुजी को, हाथ में त्रिशूल लिए, नंदी पर बैठे हुए देखा। केवल तीन माह तक गुरुजी के पास जाने के पश्चात् सर्वकर्ता, गुरुजी ने भक्त को अपने वास्तविक रूप से परिचित करा दिया था – शिव।

गुरुजी ने एक अन्य अवसर पर अपना परिचय दिया। नरेन्द्र परिवार सहित समराला के निकट शिवलिंग के दर्शन करने गये थे। नरेन्द्र की पत्नी ने उन्हें सोमवार को वहां दूध आदि अन्य सामग्री ले जाकर वहां पूजा करने के लिए कहा। नरेन्द्र ने मना करते हुए कहा कि गुरुजी ही शिव और शिवलिंग हैं।

उसी रात को उसकी पत्नी ने एक स्वप्न देखा। वह एम्पाएर एस्टेट में गुरुजी के सम्मुख बैठी हैं। उसने गुरुजी को एक पत्र दिया। वह एकदम उठे और अन्दर चले गये और अपना एक चित्र लेकर आये। वह चित्र अति सुन्दर था, किन्तु उस पर से गुरुजी एकदम लुप्त हो गये और उस पर ॐ की आकृति दृष्टिगोचर हुई। फिर उसमें से एक शिवलिंग निकला। उसने गुरुजी से इस बारे में प्रश्न किया तो गुरुजी ने चित्र को पुनः देखने के लिए कहा। उसने देखा कि शिवलिंग में गुरुजी विराजमान हैं। उसे अभी भी सब अस्पष्ट था। अतः जब उसने गुरुजी से पुनः प्रश्न किया तो वह बोले कि उनके पास आने के बाद उसे कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। गुरुजी ने उसे बताया कि उनके समक्ष आने के पश्चात् अन्यथा कहीं नहीं जाना चाहिए क्योंकि वह ही रब हैं।

तुम्हारी हृदय गति रुक जायेगी...

एक बार गुरुजी लेट कर पाठ कर रहे थे और सब भक्त उनको घेर कर उनकी सेवा में लग्न थे। एक भक्त, जो उनके कमल चरण बहुत देर से दबा रहा था, थक गया और उसने अपना कार्य नरेन्द्र को सौंप दिया। नरेन्द्र प्रसन्न होकर गुरुजी के पैर दबाने लगे। उन्होंने गुरुजी के पैरों को हाथ ही लगाया था कि उन्हें अपना परिचय देने के लिए कहा गया। उन्होंने अपना नाम बताया तो गुरुजी ने जोर लगा कर पैर दबाने को कहा। थोड़ी देर बाद उन्होंने अपने तलुए और जोर से दबाने के लिए कहा क्योंकि उनमें अत्याधिक पीड़ा हो रही थी।

दस मिनट के पश्चात्, सतगुरु ने पुनः, नरेन्द्र को अपनी पूरी शक्ति लगाकर तलुए दबाने को कहा। उन्होंने वैसा ही किया। गुरुजी के पैर के अंगूठे से अमृत प्रवाह होने लगा जैसे गाय दूध देती है। गुरुजी के पैर के आसपास एक फुट तक का क्षेत्र उससे गीला हो गया। गुरुजी ने नरेन्द्र को कहा कि अब देखो गुरु कौन है; उनका पूर्ण शरीर अमृत से भरा हुआ है। इसी प्रकार जब नरेन्द्र ने गुरुजी को उनका वास्तविक रूप दिखाने के लिए विनती करी तो उन्होंने नम्रतापूर्वक मना कर दिया।

उन्होंने उसे समझाया कि वह 14000 वाट के तार के समान हैं और उनके भक्त जीरो वाट के बल्ब। वह बोले कि अगर उन्हें छुआ गया तो छूनेवाला नष्ट हो जाएगा। वह शिव हैं। उसके हृदय की धड़कन रुक जाएगी। समय आने पर वह उन्हें दर्शन करने की क्षमता देंगे।

माला टूट गयी

यदा कदा गुरुजी भक्त के निजी धार्मिक व्यवहार पर अपनी राय व्यक्त कर देते थे, पर ऐसे अवसर बहुत ही कम होते थे। माला को कुछ भी बताने को वह मना करते थे क्योंकि ऐसे मनुष्य स्वाभिमानी हो जाता है। परन्तु नरेन्द्र इस प्रथा को अपने बचपन से करते आ रहे थे।

एक दिन जब वह ऐसा अपने घर के पूजा कक्ष में कर रहे थे, वह समाधि में चले गये और बड़े मंदिर पहुँच गये। वहां पर वह हॉल में बैठे हुए थे और माला उनके सामने रखी हुई थी। गुरुजी अपने आसन पर आसीन थे और शिव मूर्ति के स्थान पर स्वयं शिव मानव रूप ग्रहण कर विराजमान थे।

शिव के हाथ से एक किरण निकल कर उनकी माला पर पड़ी। उसी प्रकार से एक किरण गुरुजी के हाथ से माला पर आयी। जैसे ही दोनों किरणें माला पर पड़ीं वह टूट गयी। उसी क्षण नरेन्द्र की चेतना लौटी और उन्होंने देखा कि उनकी माला वास्तव में टूटी हुई थी। उस दिन से नरेन्द्र ने माला को कुछ भी बताना बंद कर दिया है। वह अब गुरुजी के कथन पर विश्वास करते हैं कि प्रार्थना कभी भी करी जा सकती है। प्रभु को याद करने के लिए न ही कोई माला, न ही कोई उपयुक्त समय चाहिए। ईश्वर को खाते, पीते, घूमते, भोजन बनाते हुए, लेटे हुए या कोई भी कार्य करते हुए, कभी भी याद कर सकते हैं और उसको धन्यवाद दे सकते हैं।

यथार्थ में, समाधि की सफलता, भक्त और ईश्वर के सम्बन्ध का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यदि उन दोनों का सम्बन्ध अटल और अटूट है तो वह कहीं भी कभी भी, किसी भी अवस्था या किसी भी वातावरण में तुरन्त

स्थापित हो जाएगा; भले ही उस समय कानों को चुभने वाला संगीत गूँज रहा हो।

बड़ा मंदिर: जहाँ पर गंगा के दर्शन होंगे

एक अवसर पर गुरुजी ने नरेन्द्र और उनके परिवार को कुछ दिन के लिए बड़े मंदिर में रहने के लिए कहा। वहां रहते हुए एक दिन नरेन्द्र और एक अन्य अनुयायी हॉल में रखी हुई शिव प्रतिमा को साफ कर रहे थे। अचानक नरेन्द्र ने उस मूर्ति के चरणों से अमृत निकलता हुआ देखा। उन्होंने उसे कपड़े से साफ किया पर वह स्थान पुनः गीला हो गया। नरेन्द्र के साथ जो अनुयायी थे उन्होंने कहा कि ऐसा संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि नरेन्द्र ने उस स्थान पर ब्रासो नहीं लगाया होगा। जब उन्होंने स्वयं उसे साफ करने का प्रयास किया तो तुरन्त ही वहां फिर अमृत प्रवाह हुआ। यह देख कर वह भी अचरज में पड़ गये।

नरेन्द्र पहली बार बड़े मंदिर में दिसंबर 1998 में गये थे। गुरुजी ने स्वयं उन्हें और अन्य अनुयायियों को उसका भ्रमण करा के दर्शन कराये। अचानक समूह ने देखा कि आधा लिंग गीला है और वह सोच रहे थे कि यह कैसे संभव है। उनके ऐसा सोचते ही गुरुजी तुरन्त बोले कि उस पर अमृत वृष्टि हो रही है।

उन्होंने भविष्यवाणी करी कि एक दिन गंगा नदी स्वयं आकर इस लिंग को दुग्ध स्नान करायेगी। यह लिंग भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों से भी प्रमुख होगा और जिनकी अभिलाषाएं कहीं और पूर्ण नहीं हो सकेंगी यहाँ होंगी। गुरुजी के इस कथन के एक सप्ताह पश्चात्, एक अन्य अनुयायी, श्री सिंगला ने स्वप्न देखा कि गंगा इस लिंग को अपने जल से स्नान करा रही है।

राधा-कृष्ण के दर्शन

2006 में नरेन्द्र का परिवार मथुरा, कृष्ण भक्तों के पावन स्थल पर तीर्थ यात्रा के लिए जाना चाह रहा था। किन्तु अथक प्रयास करने पर

भी उनकी योजनाएं क्रियान्वित होने से रह जाती थीं। अप्रैल 2006 तक ऐसा ही चलता रहा। इसी समय परिवार बैसाखी के अवसर पर बड़े मंदिर में आया। गुरुजी ने नरेन्द्र की पत्नी को स्वप्न में दर्शन दिये और उसको अपने कमल चरण दबाने के लिए कहा।

उनके पैर दबाते हुए, सतगुरु के चरणों में से एक कृष्ण की मूर्ति प्रकट हुई। उन्होंने उसे वह उनके पेट पर रखने के लिए कहा। जब उसने ऐसा किया तो वह पेट के अन्दर जाकर अंतर्ध्यान हो गयी।

फिर गुरुजी अपने कक्ष में गये और नरेन्द्र की पत्नी ने देखा कि वह एक मंदिर में परिवर्तित हो गया है। वहां पर राधा–कृष्ण का एक विशाल चित्र था। वह भक्त, जो वृन्दावन जाकर कृष्ण की प्रतिमा देखना चाह रही थी, ने यह देख कर गुरुजी से स्पष्टीकरण माँगा। गुरुजी ने प्रश्न में उत्तर दिया कि क्या उसे दर्शन हुए; वृन्दावन जाने की कोई आवश्यकता नहीं है – सब कुछ इधर ही है।

नरेन्द्र एक अन्य घटना का वर्णन करते हैं जिसमें गुरुजी ने अपनी वास्तविकता प्रकट करी थी। एक स्वप्न में नरेन्द्र को एक हॉल में ले जाया जाता है। गुरुजी उसे बुलाकर तीन बार उसके कान खींचते हैं और फिर मस्तक के मध्य के स्थान को तीन बार छू कर कहते हैं, *''कल्याण हो गया।''*

कुछ दिन के पश्चात् नरेन्द्र ने देखा कि गुरुजी के लॉकेट पर, जिसे वह सदा पहने रहते हैं, ॐ और शेषनाग की छवि अंकित है। यह अभी भी नरेन्द्र के लॉकेट पर देखी जा सकती है। नरेन्द्र ने इसका उल्लेख गुरुजी से किया तो वह बोले कि केवल भगवान यह कर सकते हैं। कोई और अपने को ईश्वर कह सकता है? वह ही परमात्मा हैं।

और यथार्थ में विधाता वही हैं। उनका रूप रहस्यात्मक और आश्चर्यजनक है। नरेन्द्र उनसे उनकी जूतियाँ प्राप्त करने की घटना का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि वह तीन आकार की हैं – छः, सात और आठ – और गुरुजी उन तीनों को पहना करते थे। कई अन्य अनुयायियों

ने भी गुरुजी के विभिन्न रूपों को देखा है। ऐसा केवल वही कर सकता है जिसने भौतिक पर विजय प्राप्त कर ली हो, जो माया से उच्च है, प्रकृति जिसके चरणों में निवास करती हो, जो उसका स्वामी हो, जो शिव है, जिसका कोई आदि, मध्य या अंत नहीं है, जिसने काल (समय) से पूर्व जन्म लिया हो और जिसने गुरुजी के रूप में मानव जाति का कल्याण करने के लिए अवतार लिया हो। वह प्रेम सहित अपने भक्तों का संरक्षण करते हैं; उन्हें कभी भी अयोग्य होने का आभास नहीं होने देते और सदा अपने भीतर छिपी हुई दिव्यता को खोजने की प्रेरणा देते हैं।

– नरेन्द्र ढंड, अहमदाबाद द्वारा कथित

यमदूतों से मुक्ति

श्री नरेश खंडेलवाल की पत्नी, जो तीस वर्ष से कुछ अधिक की रही होंगी, को ज्वर हो गया था। पता लगा कि उसे डेंगू ज्वर था और उसके गुर्दे प्रभवित हुए थे। गुड़गाँव में चिकित्सकों ने उसका उपचार करने से मना कर दिया था क्योंकि उसके बिंबाणु की मात्रा केवल 10000 थी। जैसे यह अपर्याप्त था, मंगलवार को एक रक्त वाहिनी फट गयी और रक्त प्रवाह को रोक पाने में असमर्थ चिकित्सकों ने उसे चिकित्सालय से मुक्त कर दिया। फिर उसे नोएडा के मेक्स चिकित्सालय में प्रविष्ट कराया गया।

नरेश के भ्राता गुरुजी के भक्त थे। यह घटनाएं देख कर वह और उनकी पत्नी अत्यंत उद्विग्न हुए और उन्होंने गुरुजी के एक अन्य अनुयायी को फोन किया और पूछा कि क्या वह उस दिन, मंगलवार को ही गुरुजी के दर्शन कर उनको समस्या से अवगत करा सकते हैं। उन्हें बताया गया कि गुरुजी तो स्वयं ईश्वर हैं; वह अपनी शरण में आये हुए किसी को भी कष्ट नहीं होने देंगे।

इस अवधि में मेक्स के चिकित्सकों ने भी हाथ खड़े कर दिये। वृहस्पतिवार को नरेश गुरुजी के पास गये। जैसे वह गुरुजी के चरण स्पर्श कर रहे थे, वह अपने को रोक नहीं पाये और उन्होंने गुरुजी को बता दिया कि उनकी पत्नी डेंगू से पीड़ित है। गुरुजी का उत्तर स्वयं में सांत्वना देने वाला था, *''डेंगू ...डेंगू कि होंदा है? चल, जा कुछ नहीं होया उसनू।''*

नरेश जैसे ही चिकित्सालय वापस पहुंचे, उनकी पत्नी के बिंबाणु की संख्या प्रत्येक परीक्षण में ऊपर बढ़नी आरम्भ हो गयी – 12000 से 30000, 50000, 100000, 150000 आदि। गुरुजी के आशीर्वाद से उसके शरीर में उपचार की प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो गयी थी।

चिकित्सालय में ही एक रात को वह चीखती हुई उठी। उसके आसपास सबने पूछा कि क्या हुआ। उसने स्वप्न देखा था कि तीन काले मनुष्य उसको खींच कर ले जा रहे थे और वह बचाने के लिए पुकार रही थी। किन्तु उसके सब ओर खड़े हुए समूह में से कोई कुछ नहीं कर पा रहा था। फिर उसने गुरुजी को पुकारा। वह आये, यमदूत चले गये और वह बच गयी। यह स्वप्न उसने दो बार देखा और उसे प्रतीत होने लगा कि उसे गुरुजी ने ही जीवन दान दिया है। केवल वह ही ऐसा कर सकते हैं। एक सप्ताह में उसे चिकित्सालय से मुक्ति मिल गयी और फिर उसके गुर्दे ठीक करने के लिए उसे डायालिसिस पर डाला गया। आज वह माँ, पत्नी और बेटी – तीनों की भूमिका निभा रही है। गुरुजी ने यमदूतों को वापस भेज दिया था। क्या कोई और ऐसा कर सकता है?

– नरेश खंडेलवाल, गुड़गाँव द्वारा कथित

जन्मदिवस पर उपहार

यह लिखते हुए मेरे नेत्र जलप्रवाह से धूमिल हो रहे हैं। मेरा पुत्र शांतनु जानना चाहता है कि मुझे अपने कार्यालय का कार्य समाप्त करने में कितना समय और लगेगा। उस बेचारे को यह ज्ञात नहीं है कि मैं जो कार्य कर रहा हूँ वह उससे ही सम्बंधित है। यह लेख, 2001 में, जब वह मात्र साढ़े तीन वर्ष का था और उसे दौरे पड़ते थे और उसके पश्चात्, उसके स्वस्थ होने तक का आख्यान है। चिकित्सकों ने सोचा कि उसके रोग का कारण अँधेरे से भय है और उस पर उन्होंने कुछ और विचार करना समय का दुरुपयोग समझा।

किन्तु दिसंबर 2001 और जनवरी 2002 की अवधि में उसे दो और दौरे पड़े। स्नायु विशेषज्ञों ने अनेक परीक्षण करवाये और निर्णय लिया कि उसे किसी प्रकार का मिरगी रोग है। तुरन्त उसकी चिकित्सा आरम्भ हुई। किन्तु औषधियाँ लेते हुए वह सदा खोया और भयभीत लगता था।

फिर 7 जुलाई 2001 को, गुरुजी के जन्म दिवस पर, हमें उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हमें उनके चित्र प्राप्त हुए और अब जब भी लगता था कि उसे दौरा पड़ने वाला है हम वह चित्र उसके पास रख देते थे - ऐसा करते ही विपदा टल जाती थी।

फिर गुरुजी पंजाब चले गये। उनकी भौतिक अनुपस्थिति से हम अत्यंत दुखी और असहाय हो गये। जनवरी के मध्य में हमने जालंधर में उनके दर्शन करने का निश्चय किया। दर्शन के उपरान्त उन्होंने हमें एक गुरु भाई के घर पर गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। उस समय, मंदिर के द्वार पर मेरी पत्नी ने गुरुजी को शांतनु के रोग से अवगत कराया। सुन का वह केवल *''क्यों?''* बोले और उन्होंने कहा कि सब ठीक है। फिर उन्होंने हमें शेष संगत के साथ उस समारोह में आने का संकेत दिया। हमें लगा कि उन्होंने हमारी बात ठीक से नहीं सुनी है। समारोह के अंत में हमने पुनः गुरुजी के पास जाने का साहस किया। मेरी पत्नी ने उनसे कुछ ही शब्द कहे होंगे कि गुरुजी ने चेतावनी देते हुए बोले कि यदि इस समस्या के बारे में और कुछ भी कहा तो वह हमें वहां से भेज देंगे। हम भयभीत हो गये। संगत समाप्त होने पर गुरुजी ने घोषणा करी कि दिल्ली की संगत वहां रुक कर अगले दिन भी उनके दर्शन कर सकती है। हमें प्रतीत हुआ कि उन्होंने हमें क्षमा कर दिया है।

अगले दिन प्रातः दिल्ली लौटने पर हमने शांतनु की औषधियाँ बंद करने का निश्चय किया – मेरे भाई, जो उसके स्नायु विशेषज्ञ और मनोचिकित्सक और उनकी स्त्री रोग विशेषज्ञ पत्नी की राय के विरुद्ध। हमने सब कुछ गुरुजी के ऊपर छोड़ दिया था।

शांतनु ने भी अपनी भूमिका निभायी। उस समय तक वह चार वर्ष का हो गया था। वह गुरुजी के चित्र के सामने बैठ कर गुरुजी से विनती करता था, ''मुझे ठीक कर दो।'' गुरुजी ने उस अबोध की निष्कपट प्रार्थना सुनी और उसे स्वस्थ कर दिया। उनकी कृपा से शांतनु को फिर कभी मिरगी के दौरे नहीं पड़े और अपनी साढ़े आठ की आयु में उसे जितना नटखट होना चहिए, वह है। मेरी आँखों से फिर अश्रुधारा प्रवाहित हो रही है।

– नवीन और मीनू शर्मा, दिल्ली

गुरुजी ने मेरा जीवन संजोया

मेरे जीवन में इस संसार का कोई अर्थ नहीं रह गया था। सब कुछ अस्पष्ट था। जीवन अति निराशाजनक और असंतुलित हो गया था। मैं अपने आत्मविश्वास के साथ-साथ रुचि और उत्साह खो चुकी थी, संशय में थी कि पुनः पहले जैसे कैसे जी पाऊँगी। जीवन के अमूल्य वर्ष ऐसे ही व्यर्थ व्यतीत हो रहे थे।

मैं एक अति कटु अनुभव से गुजरी थी। एक भयंकर कार दुर्घटना ने मुझे असहाय कर दिया था। दो मास अर्ध चेतनावस्था में रहकर, अनेक स्टिरोइड और अन्य औषधियाँ खाते हुए, अनगिनत परीक्षण, रोज सुइयों और ग्लूकोज़ की बोतलों के साथ – सारांश में यह मेरा जीवन था।

दुर्घटना में मेरी गर्दन की धमनियां फट गयीं थीं, रक्त की कमी थी, मैं क्षीण थी और मुझे पक्षाघात हो गया था। चौदह वर्ष पूर्व ऐसे रोगी को समुचित उपचार मिलने में भी समस्या थी। एक वर्ष से अपने विद्यालय नहीं गयी थी। मेरी सहेलियाँ मेरी दुर्दशा देख कर रो पड़ती थीं और मैं स्वयं शीशे में भय के कारण अपना क्षतिग्रस्त चेहरा नहीं देख सकती थी।

जीवन के ऐसे कठोर समय से गुजरते हुए अचानक ही ईश्वर स्वरूप गुरुजी ने मेरे जीवन में प्रवेश कर उद्धार किया। उनकी कृपा प्राप्त कर मैं आनंद लोक में प्रवेश कर गयी। मेरे समक्ष खड़े होकर खुली बाहों में उन्होंने मुझे संरक्षण दिया, मानो मुझे विपदाओं से बचा रहे हों।

उस समय से अब तक वह मुझे सुमार्ग पर अग्रसर करते रहे हैं। गुरुजी ने पुनः मुझे इस संसार का आभास करवाया है और थोड़े ही समय में मुझे स्वस्थ कर दिया।

अपने परिवार में मेरी माँ और मैं गुरुजी से सबसे पहले मिले। उस एक दर्शन ने हमारा जीवन बदल दिया। जालंधर में गुरुजी के मंदिर में वह एक कदम स्वर्ग में प्रवेश करने के समान था। हमारे पहले दर्शन में गुरुजी ने आभास करा दिया कि वह स्वयं परमात्मा हैं। गुरुजी ने हमारे जीवन के भूत वर्तमान के सब पृष्ठ खोल कर हमारे सामने रख दिये, जिनका बोध केवल स्वयं को होता है। हमें आभास हुआ कि वह इस पृथ्वी पर हम सबको आशीर्वाद देने आये हैं। प्रभु के सम्मुख हम हतप्रभ थे।

जैसे-जैसे दिन व्यतीत होते गये, गुरुजी हम पर दया करते रहे। उनके आदेश पर मैंने अपनी औषधियों का पिटारा छिपा दिया, चिकित्सकों के पास जाना बंद कर दिया, कोई शल्य क्रिया नहीं करवायी और हाँ, मैं पहले जैसे ही शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो गयी। चिकित्सकों ने स्वस्थ होने के लिए चार-पांच वर्ष का समय बताया था, किन्तु गुरुजी की कृपा से यह दो मास में संपन्न हो गया।

गुरुजी से मिलने के दो मास के अंतराल में ही मेरे बालों का झड़ना बंद हो गया और पुनः सामान्य हो गये, मेरी क्षीणता और पक्षाघात लुप्त हो गये, श्रवण शक्ति और दृष्टि भी सामान्य हो गयीं और मेरा हिमोग्लोबिन छह से बढ़ कर 12 हो गया। चिकित्सकों के परामर्श के विरुद्ध मैंने फिर से खेलना आरम्भ आकर दिया और परीक्षाओं में अति उच्च अंकों से उत्तीर्ण हुई।

इसे क्या कह सकते हैं? केवल दिव्य हस्तक्षेप और मैंने गुरुजी को पूर्ण समर्पण कर दिया।

मेरे जीवन की योजना

जीवन की इस कठिन अवस्था से निकल कर मैंने अगले चरण में प्रवेश किया। गुरुजी के मन में मेरा अध्ययन और व्यवसाय थे।

दुर्घटना की वेदना और त्रासदी से निकल कर मैं भी अपने जीवन का मार्ग प्रशस्त करना चाहती थी। मैं ऐसा व्यवसाय करना चाहती थी जिसमें मैं लोगों के दुःख दर्द कम कर सकूँ और उनकी अनुभूति का अनुभव कर सकूँ। गुरुजी जैसा अपने अनुयायियों के लिए करते हैं, वैसी ही रूपरेखा मेरे लिए बनायी हुई थी। गुरुजी के आशीर्वाद और दिशा दर्शन से मुझे, बिना औपचारिक अध्ययन किये, बंगलौर के एक महाविद्यालय में भौतिक चिकित्सा के पाठ्यक्रम में प्रवेश मिल गया। मैंने अपनी पढ़ाई सरलता से पूरी करी और उसे समाप्त कर अपने प्रशिक्षण के लिए दिल्ली के सर गंगाराम चिकित्सालय में कार्यरत हुई। मेरे वरिष्ठ सलाहकार देश के सबसे अच्छे नेत्र विशेषज्ञ थे जो अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के निर्देशक भी रह चुके थे।

मेरे ऐसे सुनियोजित व्यवसायिक पथ पर गुरुजी ने सदा मेरा ध्यान रखा था। इससे पहले कि मैं कोई योजना बना पाती, गुरुजी ने मुझे भौतिक चिकित्सा में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम करने को कहा। मैंने यह पाठ्यक्रम क्रीड़ा और अस्थिरोग में किया।

गुरुजी के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम करने के आदेश के पश्चात् प्रवेश के लिए आवेदन देने के लिए केवल तीन दिन शेष थे। मैंने उनके दिशा निर्देशों का पालन किया और सही कार्यवाही करती रही। इस समय मेरे माता–पिता मेरे साथ नहीं थे और मैं घर पर अकेली थी। मेरे नितम्ब पर एक फोड़ा हो गया, जिसने सूज कर मुझे शय्या पर लेटने को बाध्य कर दिया। अकेले और अत्यंत पीड़ा सहते हुए मैं कुछ करने में असमर्थ थी। मुझे विश्वास था कि गुरुजी मेरे साथ हैं। गुरुजी की संगत के सदस्य उन

दिनों घर आते रहे। मैं गुरुजी के सत्संग करती थी और घाव भरता गया। चिकित्सक यह देख कर आश्चर्यचकित थे – उन्होंने उसे फोड़ने का परामर्श दिया था – किन्तु जिस भांति वह सूख रहा था, उसके कारण से वह अनभिज्ञ थे।

जीवन साथी की खोज

यह एक ऐसा विषय था जिसके बारे में सोचने से भी मैं कतराती थी। मुझे इतना कुछ करना शेष था, अपने आप को सिद्ध जो करना था।

किन्तु मेरे प्रभु, गुरुजी ने मेरी भलाई के लिए, मेरे जाने बिना ही, मेरे जीवन के बारे में सोचा हुआ था। तो २३ वर्ष की आयु में उन्होंने मुझे विवाह करने के लिए एक माह का समय दिया। यह अवधि, मेरे लिए, विवाह के बारे में न सोचने के कारण स्तब्ध करने वाली और अत्यंत कठिन थी।

तथापि गुरुजी की दया से सब कार्य सहजता से होते गये जैसे स्वयं ही हो रहे हों। मेरे परिवार के सदस्यों ने वर के लिए, जिसे मैं जानती थी, हाँ कर दी। गुरुजी ने उसे हमारे पास, मेरे विवाह से मात्र २० दिन पहले भेजा था। इस छोटे से समय में विवाह की सब तैयारियां, जो समान्यतः दो–तीन महीनों में होती है, हो गयीं। गुरुकृपा से विवाह भी बहुत वैभवशाली ढंग से संपन्न हुआ और उसके हर अंग में उनका प्रभाव स्पष्ट था। सब अतिथियों ने वातावरण, भोजन और सजावट आदि की अत्याधिक प्रशंसा करी। विवाह होते हुए गुरुजी ने संगत के एक सदस्य के माध्यम से सन्देश भेजा कि हम दोनों जीवन भर के लिए साथ रहेंगे। इससे बड़ी और कौन सी भेंट हो सकती है। जब गुरुजी ने जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय को अपना आशीष दे दिया है, तो चिंता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

विवाह स्थल का विशेष वर्णन करना अनिवार्य है। सामान्यतः दिल्ली में विवाह स्थल बहुत पहले आरक्षित करना पड़ता है क्योंकि अच्छे स्थानों की सदा कमी रहती है। यद्यपि मेरे विवाह में समय की

कमी थी, उचित स्थान मिलने में कोई अड़चन नहीं हुई। अशोक होटल के बारे में गुरुजी ने मुझे 12 वर्ष पूर्व बताया था किन्तु ग्यारह वर्ष की आयु में मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया था। गुरुजी के साधारण से कहे गये वचन भी अनुयायी के प्रति उनके मन की वास्तुस्थिति दर्शाते हैं। मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि उनके अनौपचारिक से कहे हुए शब्दों में भी अन्यंत गूढ़ ज्ञान छिपा रहता है और उनको कभी भी सुन कर अनसुना नहीं करना चाहिए।

मेरे जीवन का आधार गुरुजी हैं और सदा रहेंगे। मैं ऐसा परिवार चाहती थी जहाँ पर वह इसे समझ सकें और सदा मेरा साथ दें। मेरी नन्द, सास और मेरे पति – सब गुरुजी में विश्वास रखते हैं। मैं गुरुजी की आभारी हूँ कि उन्होंने यह संभव कर दिया।

गुरुजी अपनी कृपा वृष्टि हमारे परिवार पर करते रहते हैं। भले ही वह मेरे पति, उनका व्यवसाय, मेरी नन्द, अन्य ससुराल के सदस्य या पारिवारिक शांति की बात हो – वह जीवन के प्रत्येक पहलू को छूते हैं। दूतावास जाये बिना ही वीसा मिलना, संपत्ति के लेख, मेरे पति के व्यवसाय के मार्ग को सरल करना; गुरुजी सदैव हमारे साथ हैं और रहेंगे।

परिवार का ध्यान

दुर्घटना के पश्चात् मेरे माता-पिता अत्यंत विचलित हो गये थे। उनका जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था। उन्होंने अपनी बेटी को एक अति कटु मानसिक आघात से गुजरते हुए देखा था।

मेरी माँ का जीवन मानो थम सा गया था। उनकी प्रत्येक क्रिया मेरे इर्द-गिर्द घूमती थी। अति सौभ्य और हंसमुख स्वभाव वाली मेरी माँ मानसिक रूप से अत्यंत विचलित हो गयीं थीं। किन्तु गुरुजी ने मेरे माता-पिता को आश्रय दिया, जिसकी उन्हें अत्याधिक आवश्यकता थी, उन्हें उत्साह और प्रेरणा दी, और उनके जीवन को पुनः रसमय बनाया।

मेरी माँ की वेदना जिन्हें उन्होंने अपने जीवन का पर्याय मान लिया था, कुछ ही समय में समाप्त हो गयी। मेरे पिता, एक सेना अधिकारी होते हुए, पंजाब या कश्मीर में, अक्सर गंभीर समस्याओं में उलझे रहते थे। राष्ट्र की सेवा में लगे हुए, प्रायः वह देश के दुश्मनों का सामना करते रहते थे और उनके जीवन को सदा मृत्यु का भय रहता था। मेरी माँ को सदा चिंता रहती थी पर गुरुजी कहते थे कि चिंता की कोई आवश्यकता नहीं है। उनके दर्शन, स्वप्न अथवा सुगन्ध के माध्यम से उनके साथ होने की अनुभूति सदा रहती थी – माँ को आश्वासन देते हुए या पिता का संरक्षण करते हुए।

मेरे छोटे भाई की सेना में जाने की हार्दिक अभिलाषा थी। गुरुजी ने इस विचार का प्रेम और अभिमान से स्वागत किया। उसके लिए शारीरिक परीक्षण की सीढ़ी पार करना सरल नहीं था। वह दो बार असफल रहा था। चिकित्सकों के अनुसार वह वर्णन्ध था जिसका कोई उपचार नहीं है। गुरुजी ने आश्वासन दिया था कि इस बार वह सफल रहेगा और तीसरी बार, वास्तव में, उसमें इस रोग के कोई चिह्न नहीं मिले।

अचम्भा, अचम्भा और अचम्भा...

हम गुरुजी के दर्शन के लिए बीकानेर से दिल्ली आये थे। हमें रात्रि नौ बजे की गाड़ी से बीकानेर लौटना था जो वहां प्रातः आठ बजे पहुँचती है। किन्तु गुरुजी के मंदिर से उनके आदेश के बिना जाने का प्रश्न ही नहीं उठता है। हम गुरुजी के सम्मुख बैठे हुए थे; उन्हें पता था कि हमारे लिए क्या उचित है – समय गुजरता जा रहा था। अंत में उन्होंने हमें दस बजे जाने की आज्ञा देकर ग्यारह बजे की ट्रेन से जाने के लिए कहा, जिससे हम कुछ समय बचा सकें।

इतने प्रबन्ध के पश्चात् हमारी गाड़ी बीकानेर स्टेशन पर प्रातः आठ बजे ही पहुँच गयी। इतने समय की बचत के कारण हम अति प्रसन्न थे। अचम्भे की बात है कि आठ बजे वाली ट्रेन हमारे पहुँचने के

बाद नौ बजे वहाँ पहुंची। उसे धुंध के कारण देरी हो गयी थी। तब हमें पता लगा कि गुरुजी ने हमें क्यों रोका हुआ था।

गुरुजी ने मेरे पिता की वृत्ति का भी ध्यान रखा और सदा करते रहेंगे। जब भी मेरे पिता को आवश्यकता होती है, गुरुजी उनके साथ होते हैं। कार्यरत रहते हुए उतार चढ़ाव आते रहते हैं और इसमें अक्सर योग्य अधिकारी का नुक्सान होता है। मेरे पिता के सेना में रहने के कारण स्थानान्तरण और परिवार को स्थायी रखने की समस्याएँ सदा रहती थीं।

दुर्घटना के पश्चात्, मेरे पिता के पहले दर्शन पर, गुरुजी ने मेरे पिता के मन में दुर्घटना के अवसर पर गुजरती हुई प्रत्येक बात बता दी। उन्होंने बताया कि मेरे पिता ने उस समय दुर्घटना को रोकने का कितना अथक प्रयास किया था। यह केवल मेरे पिता को पता था। गुरुजी, हमारे प्रभु, को इसका ज्ञान होना ही था, यद्यपि वह उस समय वहां नहीं थे और हम उन्हें जानते तक नहीं थे।

मेरे पिता कई वर्षों से पीठ दर्द से पीड़ित थे – उन्हें बैठने या उठने में कठिनाई होती थी। क्योंकि हम गुरुजी के पास और गंभीर समस्या लेकर गये थे, यह छोटी-मोटी बातें हमने उनसे नहीं कहीं थीं। किन्तु ईश्वर को सबका ज्ञान होता है; अतः एक दिन उन्होंने मेरे पिता को बुलाया और कहा कि चलिए, आपके स्पोंदियोलोसिस का उपचार करते हैं। रसोई से एक चम्मच को उन्होंने मेरे पिता के मेरुदंड के दोनों ओर ऊपर से नीचे तक ले गये और उनकी पीठ थपथपा कर बोले कि उपचार हो गया। उस दिन से, मेरे पिता को वह समस्या फिर कभी नहीं हुई है।

जब मेरे पिता 1994-95 में कर्नल थे, पूरे प्रेम सहित, गुरुजी ने उनको कहा कि उन्होंने उन्हें मेजर जनरल बना दिया है। सेना में पदोन्नति के लिए हायर कमांड या लॉन्ग डिफेन्स मेनेजमेंट में से एक पाठ्यक्रम (कोर्स) करना आवश्यक है। अत्युत्तम अधिकारी होते हुए भी मेरे पिता का इन दोनों में से किसी में भी नामांकन नहीं हुआ। उस समय

वह लेह में एक ब्रिगेड के उप-कमांडर थे। उनकी ब्रिगेड को आतंकवादी समस्या से जूझने के लिए कश्मीर भेजा गया। गुरुजी की दया से वहाँ पर उनकी सेवा इतनी प्रशंसनीय रही कि मेजर जनरल तक की पदोन्नति के लिए उनका मार्ग प्रशस्त हो गया। वहाँ से उनको राष्ट्रीय रक्षा कॉलेज के लिए नामांकित किया गया (हायर कमांड या लॉन्ग डिफेन्स मेनेजमेंट कोर्स किये बिना वह अकेले ऐसे ब्रिगेडियर थे)। उनकी पदोन्नति भी चमत्कारिक है क्योंकि आर्टिलरी में केवल तीन ब्रिगेडियर ही मेजर जनरल पद के लिए चुने गये।

मेरे पिता जालंधर में थे और उनकी रेजिमेंट को नसीराबाद जाने के आदेश आये। गुरुजी बोले कि परिवार को अगले छह मास तक कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। मनुष्य होने के कारण हमने उनकी अवहेलना की और वहां जाकर स्कूलों में प्रवेश ले लिया - पता लगा कि उन विद्यालयों का वातावरण अत्यंत निराशाजनक था। हमें बिना कुछ प्राप्त किये खाली हाथ ही वापस आना पड़ा। उसके तुरन्त बाद पंजाब में अत्याधिक वर्षा हुई, जितनी संभवतः पहले कभी नहीं हुई थी। मेरे पिता की रेजिमेंट को वहीं पर छः मास और रुकना पड़ा। इसे क्या कहेंगे? अचम्भा ही अचम्भा।

एक रात हम अपनी नयी इंडिका गाड़ी में वापस घर आ रहे थे कि अचानक कार के गियर में समस्या आ गयी और वह तीसरे पर अटक गया। हममें से किसी को भी इस कार के बारे में कुछ नहीं पता था अतः मेरे पिता ने उसी गियर में गाड़ी चलायी - चलते रहने के लिए 40 किलोमीटर की गति रखना अनिवार्य था। गुरुजी का नाम लेकर हम चलते रहे। उस 13 किलोमीटर के मार्ग पर, अनेकों लाल बत्तियों के होते हुए भी हमें कोई रुकावट नहीं हुई। अंत में घर के पास गायों का एक झुण्ड बैठा हुआ था। मेरे पिता को लगा कि अब तो गाड़ी रुक जायेगी। अचानक वह सब गायें उठ कर एक किनारे हो गयीं और कार निकलने के पश्चात् वहीं सड़क पर आकर बैठ गयीं।

जहाँ सूर्य सदा प्रकाशमान रहता है

जिस दिन मेरी माँ ने गुरुजी के दर्शन किये वह उनके लिए सबसे बड़ा दिन रहा है और वह उसे कभी भी भूल नहीं सकतीं। कार दुर्घटना के पश्चात् हमारे हितैषी गुरुजी के पास जाने के लिए कहते थे। मेरी माँ में धार्मिक प्रवृत्ति का अभाव था, अतः वह नहीं जाती थीं। एक दिन, उनकी एक मित्र, जो गुरुजी की भक्त भी थीं, प्रातःकाल उनके पास जा रहीं थीं। मेरी माँ के मन में अनेक विचार उत्पन्न हुए, ''क्या इसे कुछ और करने को नहीं है? घर के सब काम छोड़ कर यह ऐसे कैसे जा सकती है? इस युग में भी यह बाबा और संतों के चक्कर काट रही है?''

मेरी माँ की वह मित्र मेरी माँ को बार-बार चलने का आग्रह करती रहीं थीं। अतः माँ ने सोचा कि आज उनके साथ जाकर यह काम भी निपटा लिया जाये। मेरी माँ उनके साथ दो बातों को मन में बिठा कर गयीं जो वह बार-बार कहती थीं - पहली, कि आस्था आवश्यक है और दूसरी, कि वह सर्वज्ञाता हैं।

जब वह गुरुजी के पास पहुँची तो अपने आसन पर बैठे हुए अद्वितीय स्नेह और प्रेम की उस जीवित मूर्ति के दर्शन किये जो नश्वर की श्रेणी में कदापि नहीं थे। कई मास की व्यथा के पश्चात् मेरी माँ ने शांति से सांस ली। उनके प्रथम दर्शन के लिए वही दिन निश्चित रहा होगा। उनके सम्मुख वह अपनी सब समस्याओं से मुक्त हो रहीं थीं। उस शुभ दिन के उपरान्त बीते दिनों को भूलने का सिलसिला शुरू हो गया।

भूत ट्रेन में यात्रा

हम गुरुजी के दर्शन हेतु जालंधर जाते थे और रविवार की रात्रि को चलकर सोमवार को सुबह कार्यालय में पहुँच जाते थे। क्योंकि उन दिनों पंजाब में रात को बसें नहीं चलती थीं हम रात को 2:30 बजे वाली ट्रेन पकड़ते थे।

एक दिन, जब हम गुरुजी के दर्शन कर रहे थे, मेरे पिता को प्रातः 8:30 बजे अपने कार्यालय पहुंचना था। परन्तु गुरुजी ने हमें अपने पास बिठाये रखा; ट्रेन का समय निकल चुका था। तीन बजे उन्होंने हमें जाने की आज्ञा दी, यह कह कर कि हम ट्रेन जालंधर छावनी स्टेशन से पकड़ें। अगली ट्रेन 4:15 बजे थी जो मेरे पिता के कार्यालय के पहुँचने के समय के बाद ही पहुंचाती। 3:15 बजे हम छावनी स्टेशन पहुंचे और मेरे पिता, टहलते हुए पूछताछ कार्यालय पहुंचे जो उस समय बंद होना चाहिए था, किन्तु वह खुला हुआ था। उन्होंने जब 4:15 से पहले अम्बाला की ओर जाने वाली किसी और ट्रेन के बारे में जानना चाहा तो खिड़की पर बैठे हुए लिपिक ने उत्तर दिया कि एक विशेष ट्रेन सिग्नल होने की प्रतीक्षा कर रही है और वह अम्बाला जायेगी। मेरे पिता ने हम सबको जल्दी से अन्दर बुलाया और उसी समय उस ट्रेन ने भी प्लेटफार्म पर प्रवेश किया। हम शीघ्रता से ट्रेन में सवार हुए तो देखा कि डिब्बा बिलकुल खाली था, और संभवतः पूरी ट्रेन भी खाली ही थी। सुरक्षा के लिए हमने डिब्बे को बंद कर लिया। जब ट्रेन चली तो उसमें कुछ भी सामान्य नहीं था।

जालंधर से अम्बाला तक की यात्रा उसने इतनी तीव्र गति से पूर्ण करी मानो वह पटरी पर नहीं अपितु हवा में उड़ रही है। जब कुछ ही घंटों में हम अम्बाला पहुंचे और मेरे पिता ने स्टेशन मास्टर से पूछा कि वह कहाँ जा रही है तो उसे उसके बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं था। कल्पना कीजिये कि एक स्टेशन मास्टर को अपने स्टेशन पर आयी हुई ट्रेन के गंतव्य के बारे में कुछ पता नहीं हो।

स्टेशन से बाहर निकलते ही हमें चंडीगढ़ की बस मिल गयी और उससे हम 40 मिनट में ही वहाँ पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर उसके चालक ने बस अड्डे न जाकर यात्रियों को एक गोल चक्कर पर उतार दिया पर किसी भी यात्री ने विरोध नहीं किया। बस के इस बदले हुए मार्ग से हमें पिता के कार्यालय के निकट ही उतरने का अवसर मिल गया। मेरे पिता ने चालक से विनती करी तो उसने 15 मिनट के बाद

हमें चंडीमंदिर के द्वार पर उतारा। जब मेरे पिता ने मुख्यालय के वाहन विभाग में फोन किया तो वह सोच रहे थे कि वह अति शीघ्र उनके चालक को ढूंढ कर उसे भेज देंगे जिससे उनके समय की बचत हो जायेगी। किन्तु दूसरी ओर से फोन उनके चालक ने ही उठाया।

जैसे-जैसे सब परिस्थितियां स्वतः ही ठीक होती गयीं और मेरे पिता अपने कार्यालय ठीक समय से पहुँच गये, हमने गुरुजी को धन्यवाद दिया। अगले सप्ताह जब हम जालंधर पहुंचे तो गुरुजी ने मेरे पिता से पूछा कि उन्हें वह भूत ट्रेन कैसी लगी थी। तब हमें पता लगा कि यात्रा का समय इतना कम कैसे हुआ था - दिव्य हस्तक्षेप। गुरुजी महान हैं।

संक्षेप में यह मेरे और मेरे परिवार के संस्मरण हैं। हमारी ओर से क्या आवश्यक था? केवल आस्था और समर्पण। क्या उसकी आशा करना बहुत अधिक है? गुरुजी हमारे सम्मुख हैं। वही परमात्मा हैं। समय रहते हम इस तथ्य से अवगत हो जायें तो अच्छा रहेगा।

हर मिनट, हर सेकण्ड चमत्कार से परिपूर्ण है। कहने को अभी भी बहुत कुछ शेष है। सबको आकर इस आनंदमय संसार और प्रभु प्रेम को प्राप्त करना चाहिए। वह हम सबको बुला रहे हैं। हम किसकी प्रतिक्षा कर रहे हैं?

- श्रीमती निक्की मल्होत्रा, दिल्ली

वास्तविक संपदा के स्वामी

यदि आप उनकी भौतिक काया के आर-पार उनको देख सकते हैं तो आपको उनका पूर्ण संरक्षण प्राप्त होगा। गुरुजी के साथ रहते हुए मेरे लिए यही सबसे मुख्य रहा है।

महत्त्वाकांक्षाओं के मोह माया जाल में फंसे रहने के कारण उनका वास्तविक रूप पहचानना कठिन हो जाता है। गुरुजी के साथ अपकी आशाएं पूर्ण होती हैं, यद्यपि जो आप चाहें वह सदा नहीं मिलता; क्योंकि वह आपके लिए उचित नहीं रहा होगा। परन्तु इनके पीछे, हम सबको अज्ञात, उनकी सच्चाई है। इस मोह माया की अजेय दीवार पर चढ़ कर ही आप उनकी उस सम्पदा का सौन्दर्य देख सकते हैं। किन्तु यह इतना सहज नहीं है जितना आप सोच रहे होंगे, निश्चित रूप से वह आपको परखेंगे। यदि मैं उनके शब्दों का भावार्थ करूँ तो वह आपको ''नींबू की भांति निचोड़ देंगे और वृक्ष की भांति जोर-जोर से हिला देंगे।''

मेरे पूर्व कर्मों और संस्कारों के कारण दिव्यात्मा ने मुझे अपने पास आने दिया। मेरे लिए गुरुजी का वर्णन करना अत्यंत कठिन है: मन भावविभोर हो जाता है। यदि गणेश उनका वर्णन नहीं कर पाये तो मैं कौन होता हूँ? हम गुरुजी के पास बिना किसी आशा या कष्ट के गये,

और उनकी आकर्षण शक्ति हमें उनके पास बार-बार खींच कर ले गयी।

तनावों से मुक्ति

मैं सेवकों के लिए नाश्ता लेकर मंदिर जाता था। गुरुजी उस समय प्रायः पाठ कर रहे होते थे। मेरे माता-पिता शुक्रवार का व्रत रखते थे। इसका अर्थ था कि खट्टा खाना तो दूर की बात थी, हमारे लिए उसको छूना भी निषेध था। उस दिन शुक्रवार था और मेरी माँ ने ऐसा कुछ भी करने से मना किया था।

उस दिन, मेरे वहाँ पहुँचने से पूर्व, गुरुजी पाठ कर शीघ्र ही बाहर आ गये थे। जैसे ही मैं वहाँ पहुंचा गुरुजी ने अपने एक सेवक, सुदामा, को शीतल पेय लाने के लिए कहा। मैं गुरुजी का दिया हुआ वह पेय उनका प्रसाद समझ कर पीकर अति प्रसन्न हुआ और घर लौट आया। परन्तु मुझे घर पर डांट पड़ी। मैं निराश अवश्य हुआ पर मैंने उससे सम्बंधित भावनाएं मन से निकाल दीं।

शाम को हम मंदिर गये। गुरुजी प्रसन्नचित थे और सत्संग के लिए बैठ गये। हम बहुत ध्यान से सुन रहे थे। अपने स्वभाव के अनुरूप उन्होंने स्पष्ट तो नहीं कहा किन्तु व्रतों के बारे में कहा कि इस व्यर्थ प्रथा का कोई तात्पर्य नहीं है। साथ ही उन्होंने कहा कि आप भगवान के घर में हैं; जैसा वह कहते हैं करिए और अन्य अर्थहीन माध्यमों के द्वारा उनके पास पहुँचने की चेष्टा मत करें।

दो क्रिकेट बॉल के आकार का लड्डू

कभी-कभी गुरुजी भक्तों को सच खंड देकर उन पर कृपा करते हैं। सच खंड उनका वह प्रसाद है जो चमत्कारिक रूप से उनके हाथ से प्रकट होता है। कई अवसरों पर मैंने उनके हाथ में चमत्कार होते देखें हैं - डॉलर नोट, स्वर्ण कर्णफूल, गरम हलुवा, मिश्री में लिपटी हुई

बर्फी, चॉकलेट और वनीला की बर्फी, मोतीचूर और बेसन के लड्डू, हिमाचल प्रदेश की विशिष्ट टोपी आदि।

एक दिन गुरुजी एक भक्त के यहाँ भोजन के लिए गये थे। लंगर परोसा गया और प्रथा के अनुसार संगत ने गुरुजी से पहले खाया। उनके पास कुछ अधिक देर तक बैठने की कामना से, मैंने शीघ्रता से लंगर समाप्त किया और उनके निकट आकर बैठ गया। वह सीधे बैठे हुए थे, उनकी कलाई उनके घुटने पर टिकी हुई थी। मुझे प्रतीत हुआ कि गुरुजी प्रसाद देंगे। दिव्य आकांक्षा के अनुकूल ही सब संभव है; मुझे संभवतः इसी बात का आभास दिलाना चाह रहे थे। मेरा ध्यान उन्हीं पर केन्द्रित था।

लंगर के पश्चात् जैसे संगत एकत्रित हुई, वार्तालाप आरम्भ हो गया। मैं गुरुजी की मुठ्ठी देख रहा था। जैसे ही उन्होंने उसे खोला उसमें से एक लड्डू प्रकट हुआ – जैसे कोई रबड़ के गोला हो जो उनके हाथ खुलने के साथ बड़ा होता गया। पहले तो कुछ भी असामान्य नहीं लगा – फिर सब कुछ समझ में आया – जैसे-जैसे मुठ्ठी खुल रही थी उसका आकार भी बढ़ रहा था।

मेरे पिता सेना में सेवारत थे और जालंधर से उनका स्थानान्तरण हो गया था। हम सामान बंद कर रहे थे – लकड़ी के बक्से, लोहे के बक्से, बोरियां आदि – उन पर नंबर लगाने का कार्य शेष था और वह सब चारों ओर बिखरे हुए थे। शाम को गुरुजी घर आये थे। उनके प्रवेश करते ही बिजली जाने से अंधेरा हो गया। वह बोले, *''इमरजेंसी लाईट 13 नंबर बक्से विच है।''* गुरुजी स्वभावतः ऐसे बोलते हैं कि लगता नहीं कि उसमें कुछ विशेष है, जब तक आप उस पर विचार नहीं करें। सामान पर नंबर भी नहीं लगे थे। कोई एक सप्ताह में जब पूरा सामान बंध गया और सहायक उन पर नंबर लगा रहा था तो मुझे गुरुजी वाली घटना याद आयी। ताजे लगे हुए १३ नंबर के बक्से को मैंने खोला और उसमें सामने ही इमरजेंसी लाईट रखी हुई दिखायी दे रही थी। गुरुजी को

हमारे भूत, वर्तमान और भविष्य, सबका ज्ञान है। उनसे कुछ भी छिपाने का प्रयत्न न करें।

परम पिता परमात्मा

मेरी माँ को ज्वर था। पूरे दिन मेरे पिता और मैं उनके मस्तक पर बर्फ लगाते रहे थे किन्तु लाभ नहीं हो रहा था। औषधियाँ भी असफल रहीं थीं और तापमान नीचे नहीं आ रहा था। अचानक गुरुजी का फोन आया कि शीघ्र ही वह संगत के साथ पहुँच रहे हैं। वह कुछ लोगों के साथ आये और सीधे माँ के कमरे में जाकर बोले, *''चल आंटी, कुछ नई होया ऐ''* और उनका हाथ पकड़ कर अतिथि कक्ष में ले आये। मैं उनके चरणों में बैठ कर उनके पैर दबाने लगा। पांच मिनट के पश्चात् माँ का तापमान सामान्य हो गया पर उनका बढ़ गया। स्पष्ट है कि वह हमारे कष्ट अपने पर अंतरित कर लेते हैं। क्या इस संसार में और कोई ऐसा कर सकता है? हमारे प्रारब्ध कर्म इस जीवन में हमारे सुख दुःख का निर्णय करते हैं, किन्तु कोई हमारे दुःख अपने ऊपर अंतरित कर ले वह ईश्वर ही हो सकता है।

– नितिन जोशी, गुड़गाँव

आशीर्वाद: जीवन के हर पल

1995 में स्वीडन में 13 वर्ष रहने के बाद स्वदेश वापस लौटने पर मेरी गुरुजी के यहाँ की यात्रा आरम्भ हुई। उस समय से गुरुजी के हर दर्शन का अवसर आशीष से परिपूर्ण है, एक यादगार घटना। जब मैंने गुरुजी के यहाँ जाना आरम्भ किया मैं शांति और स्थिरता खोज रही थी। मैंने सुना था कि गुरुजी ने केंसर, हृदय रोगियों और अन्य असाध्य रोगों से अपने भक्तों को मुक्त किया हुआ था। एक अवसर पर मेरे साथ एक अनोखी घटना हुई।

बचपन से मुझे विसर्प रोग रहा है। कोई औषधि सफल नहीं हुई थी। चिकित्सक, हर बार जब वह होता था, कार्टिजोन दे दिया करते थे। मेरे हाथ खुरदुरे हो गये थे। एक बार गुरुजी की संगत में बैठे हुए मैं सोच रही थी कि मेरे हाथ तो इतने कर्कश हैं, यदि गुरुजी ने कभी मुझे अपने कमल चरण दबाने को कहा तो मैं क्या करूंगी। कुछ सप्ताह में मुझे आभास हुआ कि मेरा शरीर और मेरे हाथ साफ हो गये हैं और शीघ्र ही मेरा उपचार हो चुका था। फिर एक दिन गुरुजी ने मेरे बड़े भाई, जो कश्मीर में सेना में सेवारत हैं, उनको आने को कहा। मेरे भाई गुरुजी को कभी नहीं मिले थे। अगली बार जब वह दिल्ली आये, गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। उसी महीने वह वापस कश्मीर चले गये और उनकी बाँह में एक आतंकवादी की गोली लगी। गुरु कृपा से वह बच गये थे।

एक बार गुरुजी ने मुझे अपना एक चित्र देकर उसे शयन कक्ष में रखने के लिए कहा। बचपन से मेरे कमरे में शिव का चित्र रहा है। आज भी मेरे जीवन में कोई समस्या, शंका या सुख के अवसर आते हैं, मैं सदा उन्हें गुरुजी के साथ बांटती हूँ और गुरुजी ने मुझे सदा उत्तर दिये हैं। जब मैं दिल्ली से बाहर होती हूँ उनकी कमी का आभास होता है। गुरुजी ने मुझे स्वप्न में भी दर्शन दिये हैं।

आज मुझे गुरुजी में इतनी आस्था है कि मेरे आसपास की सब वस्तुएँ उनकी याद दिलाती हैं। गुरुजी ने मुझे और मेरे परिवार को आशीष दिया है। मेरे दोनों बेटे, जिन्हें गुरुजी ने आशीर्वाद देकर अमरीका भेजा है, उनके भक्त हैं। उन पर केवल आस्था बनाये रखने से हमें सदा, हर पल उनकी कृपा प्राप्त होती रहती है। मेरे लिए गुरुजी परमेश्वर हैं जिन्होंने मुझे मेरी योग्यता और आवश्यकता से अधिक दिया है। गुरुजी, इस दया के लिए हम आपके अत्यंत आभारी हैं।

– श्रीमती नीरा ओबेरॉय, दिल्ली

सदा दानी पिता परमेश्वर

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरु साक्षात् पारब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

हम उस अदृष्ट और अज्ञात शक्ति में विश्वास रखते आये हैं जो हमारी आस्था और विचारों से अपनी उपस्थिति का ज्ञान देती रही है। विभिन्न युगों में वह अवतरित होती रही है और इस युग में वह गुरुजी के रूप में हमारे बीच आयी है। इस पृथ्वी के सभी वासी, भले ही उनसे अपरिचित हों, उनके उदात्त कल्याण की भावना से लाभान्वित हुए हैं। ऐसे अनेक अवसर आये हैं जब हमें हर क्षण उनके अविरत आशीर्वाद प्राप्त हुए हैं। इतने छोटे से प्रसंग में उनके बारे में सब कुछ कहना और लिख पाना असंभव है; फिर भी, मैं अपने कुछ संस्मरण आपके साथ बांटना चाहूंगी।

प्रारम्भ में हमें उनके मंदिर में आने में संशय था क्योंकि हमें सदा से संत और सन्यासियों में विश्वास नहीं रहा है। यह भी सत्य है कि उनकी दिव्य कृपा तभी प्राप्त होती है जब वह चाहें। इस प्रकार गुरुजी ने हमें, नवम्बर 1995 में, जालंधर में, अपने पास बुलाया। मेरे पति एक गंभीर त्वचा रोग की समस्या से पीड़ित थे, जिसे सोरायसिस के नाम से भी जाना जाता है। पिछले आठ वर्षों में हर प्रकार के उपचार करवा लिए थे किन्तु लाभ नहीं हुआ था। सिर से पांव तक उनके शरीर में लाल चकते हो रहे थे जिन पर श्वेत पपड़ी जमी हुई थी और सदा खुजली होती रहती थी। उनका सिर पाषाण की भांति सख्त था और उनके

जननांग भी इस रोग के प्रकोप से नहीं बचे थे। उनका मानसिक कष्ट और बढ़ जाता था जब उनके परिचित भी उनके पास खड़े नहीं होना चाहते थे।

कुछ और उपाय न होने के कारण हम हिचकिचाहट के साथ गुरुजी के दर्शन के लिए गयें। पुनरावलोकन करते हुए मैं सोचती हूँ कि हम कितने भाग्यवान थे। प्रारम्भिक दिनों में गुरु जी के हाथों से दिव्य प्रसाद की उत्पत्ति का दृश्य हमने एक दो बार नहीं अपितु छः या सात बार देखे हैं। हमारी संदिग्ध मानसिकता की समाप्ति 1 जनवरी 1996 को हुई जब गुरुजी ने मेरे पति को ताम्र लोटा लाने को कहा। उसे उन्होंने अभिमंत्रित किया और मेरे पति को उसमें से प्रतिदिन आधा जल पीकर शेष से स्नान करने को कहा। चमत्कारिक रूप से वह कुछ ही दिनों में पुनः स्वस्थ हो गये।

अन्तःस्त्राव समस्या की मुक्ति

उन्हीं दिनों मेरा हाय्पोथाय्रोइड का उपचार चल रहा था। मैं प्रतिदिन एल्त्रोक्सिन की दो गालियां लेती थी जो बहुत अधिक मानी जाती हैं। एक दिन मैं गुरुजी के चरणों में बैठी हुई थी कि उन्होंने कहा, *''नीरू आंटी, तेरा हार्मोनल प्रॉब्लम ठीक कर दित्ता ऐ''*। मैं स्तब्ध रह गयी क्योंकि मैंने कभी भी इनको इसके बारे में नहीं बताया था। मुझे पहली बार अनुभव हुआ कि उनको कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं है, वह सब कुछ जानते हैं। उसके बाद जब सब परिणाम सही निकले तो मैंने औषधियाँ बंद कर दीं।

फिर, पंचकूला में रहते हुए मुझे कुछ स्त्री रोग सम्बंधित समस्याएँ हो गयीं। औषधियों से उनका निवारण नहीं हो पा रहा था। मुझे रात को 10-12 बार लघुशंका निवारण के लिए उठना पड़ता था; कुछ अन्य समस्याएँ भी थीं। इनके कारण मैं ठीक से सो नहीं पाती थी और फिर दिन भर व्याकुल रहती थी।

गुरुजी उस समय दिल्ली में थे। संयोग से मेरे पति को दिल्ली

कार्यालय सम्बंधित एक भेंट के लिए जाना पड़ा। मैंने उनके साथ जाने की योजना बनायी जिससे हम शाम को गुरुजी के दर्शन कर सकें। हमने अपनी छोटी बेटी को यह सोच कर घर पर छोड़ दिया था कि अगले दिन सुबह तो लौट ही आयेंगे। परन्तु उस दिन शाम को गुरुजी ने दर्शन के पश्चात्, जब हम उनसे चलने की आज्ञा ले रहे थे, हमें चार दिन और रहने के लिए कहा। आनंदित होकर हमने तुरन्त हामी भर दी। हम वहां चार दिन रहे और चाय और लंगर प्रसाद का आनंद उठाया। चौथे दिन उन्होंने हमें जाने की अनुमति दी।

घर आकर मैं चैन से सो पायी – मुझे आभास हुआ कि उन्होंने मुझे मेरे रोग से मुक्त कर दिया था। एक सप्ताह के पश्चात् हम पुनः उनके दर्शन के लिए जा सके। मिलने पर पहली बात उन्होंने कही, *''नीरू आंटी, सू सू ठीक होया?''* सब हंस पड़े। जब मैंने उनके चरण स्पर्श किये तो उन्होंने बताया कि उन्होंने मेरे उदर के अर्बुद का उपचार कर दिया था। मैंने तो उनको कुछ भी नहीं बताया था!

बेटी का त्वचा रोग

जून मास में एक दिन, सिंगला अंकल ने मुझे गुरुजी का सन्देश दिया कि वह बुला रहे हैं। मैंने सोचा कि संभवतः वह सत्संग करने के लिए बुला रहे हैं। किन्तु गुरुजी ने अपने लिए, मुझे एक आयुर्वेदिक औषधि की दूकान से एक विशेष दवाई लेने को कहा जो केवल निर्यात करी जाती थी। गुरुजी की दया से हमें वह औषधि भी मिल गयी जो सामान्यतः बिना चिकित्सक के परामर्श के नहीं मिलती थी। गुरुजी ने एक गोली दूध के साथ शाम को ली। 15–20 दिनों के पश्चात् उन्होंने उसे वापस करने के लिए कहा क्योंकि वह अति तीक्ष्ण थी। हमने प्रयास किया किन्तु निर्यात की समस्या के कारण उसे लौटा नहीं सके। वह महँगी थी और गुरुजी ने उसकी काफी मात्रा मंगायी थी।

अगस्त के अंत में मेरी छोटी बेटी तान्या, जो उस समय आठवीं कक्षा में थी, के मुख पर चकते हो गये। चिकित्सकों के अनुसार वह

सोरायसिस था। हम स्तब्ध रह गये। एक मास तक इसी उलझन में रहे कि गुरुजी को बताया जाये या नहीं। हमने उन्हें अक्टूबर में बताया और उन्होंने पुनः ताम्र लोटा लाने के लिए कहा जिसे उन्होंने अभिमंत्रित कर उसका जल पीने और स्नान करने के लिए कहा। गुरुजी ने उसके पिता के इसी रोग का तीव्रता से उपचार किया था। इस बार भी वैसी ही आशा थी किन्तु ऐसा नहीं हुआ; आशा के विपरीत एक मास में ही उसका रोग पूरे शरीर में फैल गया। शारीरिक रूप से रोग ग्रस्त होते हुए वह मानसिक रूप से सशक्त थी। उनकी ऐसी दया से वह सदा उत्साहित और आशावादी रही। इस अवधि में गुरुजी कहीं चले गये थे और उनसे संपर्क करना संभव नहीं था। पड़ोसियों से लेकर तान्या की मुख्याध्यापिका तक, सबने उसकी भलाई के लिए शीघ्र कुछ करने के लिए कहा। परन्तु हमारे कुछ कहने से पूर्व ही वह कहती थी कि उसके गुरुजी ही उचित समय आने पर उसका उपचार कर देंगे। इस अवधि में उस बच्ची ने इतने सहा कि हमसे उसकी वेदना देखी नहीं जाती थी। उसके सिर पर भी कड़े चकते हो गये थे और वह अपने बाल तक नहीं कर पाती थी। ऐसी विपदा के समय उनकी दया का प्रभाव अधिक देख सकते हैं; उन्होंने एक छोटे से बच्चे को भी इतना साहस और सामर्थ्य प्रदान किया था।

गुरुजी जनवरी में लौट आये और सबसे पहले उन्होंने उसे वह आयुर्वेदिक औषधि देने को कहा। तब हमें आभास हुआ कि वह औषधि उसके लिए मंगायी गयी थी। औषधि 40 दिन तक देना अनिवार्य था। तान्या के दवाई लेने का चालीसवां दिन शिवरात्रि था और उस दिन उन्होंने औषधि बंद करने को कहा। दिव्य गणना! अगले दिन से उसके स्वास्थ्य में परिवर्तन होना आरम्भ हो गया और ग्रीष्मावकाश में जब वह अपने ननिहाल गयी तो पूरी तरह से रोगमुक्त हो चुकी थी। कभी-कभी उसके मुँह पर एकाध निशान आ जाते हैं। मुझे विश्वास है कि गुरुजी उसके पिछले जन्मों के कर्म नष्ट कर रहे हैं। उन्होंने मुझे बताया था कि उनके हस्तक्षेप के बिना वह जीवन पर्यन्त ऐसे ही रहती।

एक जीवन रक्षा के लिए 90 की जीवन रक्षा

अगस्त 2002 में एक शनिवार को मेरे पति ने फोन पर बताया कि वह घर आ रहे हैं। उन दिनों वह बेलगाँव में कार्यरत थे। वह शनिवार को गोवा एक्सप्रेस में चढ़े और सोमवार को प्रातः घर पहुँचने वाले थे। उसी दिन मैं और मेरी बेटी गुरुजी के दर्शन के लिए गये। वह दिन अति आनंददायक था क्योंकि गुरुजी ने मुझे अपने पास बिठाया और मेरे से लम्बा सत्संग कराया। मैंने लंगर भी अधिक किया क्योंकि किसी कारणवश मेरी थाली में दाल या सब्जी वाले स्थान पर लाल मिर्च की चटनी परोस दी गयी थी। यह कैसा संयोग था? चटनी समाप्त करने के लिए मुझे अधिक चपातियाँ और दाल खानी पड़ीं। गुरुजी से आज्ञा लेते समय वह बोले, *''आंटी, आज तेरा कल्याण कर दिया।''* मैं आनंदित थी।

प्रात:काल मेरे पति के फोन से मेरी नींद टूटी। वह बोले कि सब कुछ ठीक है और चिंता की कोई बात नहीं है। फिर उन्होंने बताया कि उनकी रेलगाड़ी के कुछ पहिये पटरी से उतर गये थे। इतना कह कर उन्होंने फोन बंद कर दिया। तब मैंने पिछले दिन गुरुजी के यहाँ की घटनाओं से सम्बन्ध स्थापित किया और मैं भावुक हो गयी। टी.वी. लगाने पर मैंने समाचारों में सुना कि उस गाड़ी के सात पहिये पटरी से उतरे थे किन्तु कोई घायल नहीं हुआ था। मैं अत्यंत बैचेन थी और तुरन्त बड़े मंदिर गयी। वहां पर सबसे पहले मुझे श्री सिंगला की बेटी आरती मिली। मेरी मन:स्थिति से अपरिचित उसने पिछली रात को इतनी चटनी खाने के लिए मेरा परिहास किया। जब मैंने उसे रेल दुर्घटना की बात बतायी तो वह स्तब्ध रह गयी। उसने तुरन्त अपनी माँ को बुलाया और उन दोनों ने मुझे गले से लगा लिया; हमारी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी। हमने वह दिन आपस में सत्संग करते हुए व्यतीत किया।

उस दिन संध्या को जब मैं गुरुजी के पास गयी तो उन्होंने पूछा कि क्या मैं उनको रेल दुर्घटना के बारे में बताने आयी हूँ, मैं केवल

अपना सिर हिला सकती थी। उन्होंने कहा कि एक भक्त को बचाने के लिए उन्होंने 90 अन्य यात्रियों की जीवन रक्षा करी थी। इस तथ्य की पुष्टि श्रीमती सब्बरवाल ने भी करी। क्या इस पुष्टि की आवश्यकता है? उन्होंने कहा कि उस रात को 1:30 बजे अचानक गुरुजी ने कहा कि उन्होंने 90 लोगों को जीवन दान दिया था। वही रेल दुर्घटना का समय था। दिल्ली में बैठे हुए उन्होंने पुणे के पास यह चमत्कार किया था। क्या परमेश्वर के अतिरिक्त कोई ऐसा कर सकता था?

प्रार्थना का बल

गुरुजी को बोलने की आवश्यकता नहीं है। हृदय से कही हुई प्रार्थना उनके पास पहुँच जाती है। एक दिन, प्रातःकाल मैं शिव पुराण पढ़ रही थी। उसमें एक सन्दर्भ आता है कि ईश्वर भौतिक रूप में किसी को स्पर्श नहीं करते, किन्तु यदि वह ऐसा करें तो कुल की आनेवाली पीढ़ियों को उनका आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है। मैंने सोचा कि गुरुजी कैसे दूर से ही आशीष दे देते हैं। शाम को हम गुरुजी के यहाँ पहुंचे तो वह अपने कक्ष में थे और हमें बुला रहे थे। हम उनके सामने भूमि पर ही बैठ गये और वह हमसे बात करने लगे। अचानक उन्होंने अपनी बाँह मेरी ओर करी और मुझे अपना कन्धा दबाने को कहा। फिर उन्होंने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर, शुद्ध हिंदी में, जो मैंने पढ़ा था वह बोल दिया।

एक अन्य अवसर पर हमें अम्बाला से हरिद्वार जाना था। एक द्रुत गति वाली ट्रेन अम्बाला से 10:30 बजे चलकर दो-तीन घंटों में वहाँ पहुंचा देती थी। जब हम स्टेशन पहुंचे तो 10:35 हो गये थे। मेरे पति बस से जाने को तत्पर थे। मैं नहीं मानी और उनको कहा कि उत्तर प्रदेश की सड़कों की दुर्दशा देखते हुए 5-6 घंटे लग जायेंगे। हमने एक कुली से पूछा तो उसने कहा कि वह कभी भी देरी से नहीं चलती परन्तु आज वह दस मिनट देरी से चल रही है; उसने यह भी बताया कि उसके जाने का सिग्नल हो चुका है और वह जाने वाली है। अनजाने

में मैंने गुरुजी से विनती करी कि हम ट्रेन पकड़ पायें। मेरे पति ने मुझे शीघ्रता से पुल के ऊपर से जाकर ट्रेन में बैठने को कहा। वह प्लेटफार्म टिकट लेने वाले थे क्योंकि दूसरी पंक्ति बहुत लम्बी थी। इस बीच में मैं भाग कर सीढ़ियों से उस स्थान पर उतरी जहाँ इंजन था और उसी समय ट्रेन चलने लगी। मूर्खों की भांति मैंने अपना हाथ इंजन चालक की ओर कर के हिलाना शुरू कर दिया जैसे बस को रोकने का संकेत देते हैं। अगले आठ दस मिनट तक, जब तक मेरे पति नहीं आये और हम ट्रेन में नहीं चढ़े, वह रुकी रही।

घर पर बिना मूल्य के पिज्जा

14 अगस्त को स्वाधीनता दिवस के अवसर पर डोमिनो कंपनी ने एक पिज्जा के साथ एक पिज्जा मुफ्त देने की घोषणा करी थी। यह योजना सुन कर मेरी छोटी बेटी पिज्जा खाने को अति उत्सुक थी। किन्तु मैंने उसे बताया कि इस महीने व्यय पहले ही अधिक हो गये हैं तो कोई पिज्जा नहीं मिलेगा। उपहास करते हुए उसने कहा, ''गुरुजी, यह अच्छा नहीं है आपको पता है कि मुझे पिज्जा पसंद हैं।''

शाम को संगत के कुछ मित्र घर पर रात्रि भोज के लिए आ रहे थे। मैंने भोजन बना लिया था। किन्तु जब वह आये तो उन्होंने कहा कि बच्चों को पिज्जा पसंद हैं इसीलिए उन्होंने पहले ही दो बड़े पिज्जा यहाँ पर आने का प्रबन्ध कर दिया है। उनको मुफ्त पिज्जा वाली योजना का पता नहीं था। जब पिज्जा आये तो मुफ्त पिज्जा नहीं आये थे। पिज्जा लाने वाला वह पिज्जा छोड़ कर शेष दो पिज्जा लाने के लिए गया। इस अवधि में जब हमने पिज्जा खोले तो उनमें से एक माँसाहारी था; आदेश में शाकाहारी पिज्जा भेजने के लिए कहा गया था। हमने डोमिनो में फोन किया तो उन्होंने क्षमा याचना करी और कहा कि वह गलती सुधार देंगे। इस बीच में पिज्जा पहुँचाने वाला घर आ गया – उनमें भी एक ही शाकाहारी था। अब तक हमारे यहाँ आये हुए मित्र को क्रोध आ गया और उन्होंने सीधे प्रबन्धक से फोन पर बात करी। कुछ देर में वह

प्रबन्धक हमारे घर अपने सहकर्मियों के साथ आये और बहुत लज्जित हुए। उन्होंने कहा कि हम जब चाहें चार पिज्जा मुफ्त में ले सकते हैं। क्योंकि बड़े पिज्जा एक साथ खाना कठिन है, हमने प्रातः नाश्ते में भी पिज्जा खाए। अगले कुछ माह तक हम मुफ्त पिज्जा खाते रहे।

मेरे पति को स्थिर नौकरी

मेरे पति औषधि उद्योग में मार्केटिंग में थे। उनके पास सदा से घूमने का काम रहा है, जिसमें न कोई कार्यालय है न ही कोई समय सीमा। तीन वर्ष पूर्व जब वह कर्नाटक में थे तो हमें उनकी कमी का आभास सदा रहता था। एक दिन बड़े मंदिर के हॉल में मैं आँखे बंद कर के बैठी हुई थी। मैं सोच रही थी कि कितना अच्छा हो यदि इन्हें किसी कार्यालय में स्थिर कार्य मिल जाये और मैं प्रतिदिन इनके लिए भोजन डिब्बे में दे सकूं। अचानक संगत की एक महिला मेरे पास आयीं और कहा कि मेरी कामना पूर्ण हो जाएगी। आश्चर्य चकित हो कर मैंने अपनी आँखें खोली और उनको भी उसी विस्मय की अवस्था में पाया। कुछ ही दिनों में मेरे पति को अपनी नौकरी से त्यागपत्र देना पड़ा। किन्तु गुरुजी की दया से उन्हें यहीं पर नौ से पांच वाली एक स्थायी नौकरी मिल गयी। अब जब भी वह शहर में होते हैं उन्हें कोई बाहर का काम नहीं होता है। प्रतिदिन मुझे उनका दोपहर का भोजन डिब्बे में देना पड़ता है (अब कभी-कभी मुझे यह आनंदित नहीं करता है)। उनके कार्यालय में कोई औपचारिकता नहीं है - वह बहुत आराम से यदा कदा चप्पलों में भी चले जाते हैं। मुझे सदा सेंडल पहनने पड़ते हैं।

ऐसे ही 14 अप्रैल को बैसाखी के अवसर पर मेरी सेंडल का तलवा बाहर आ गया। मैं कुछ नहीं कर सकती थी। मैंने सोचा कि बाहर जाते हुए उन्हें हाथ में लेकर नंगे पैर चली जाउंगी। जब मैं बाहर आयी मुझे अपनी टूटी हुई सेंडल कहीं दिखायी नहीं दीं। उन्हें खोजते हुए मुझे एक अन्य वैसी ही सेंडल दिखायी दीं। उठा कर जब उनके चिह्न देखे तो वह मेरे ही सेंडल के थे, किन्तु अचम्भे की बात है कि वह नये हो गये थे।

बेटी का कानून स्कूल में प्रवेश

यद्यपि मेरी बड़ी बेटी मेघा बारहवीं कक्षा विज्ञान विषयों से कर रही थी, गुरुजी नहीं चाहते थे कि वह आगे विज्ञान पढ़े। एक संगत में उन्होंने उसे कानून में विद्या अर्जित करने का संकेत दिया था। उसने उनके निर्देशानुसार प्रवेश पत्र भरा और प्रवेश परीक्षा में गयी। उसके आश्चर्य को ठिकाना नहीं रहा, जब उसे पता चला कि अन्य परीक्षार्थी तो उसके लिए विशेष प्रशिक्षण प्राप्त कर के आये हुए हैं। वह गुरुजी को याद कर के परीक्षा में बैठ गयी। हजारों में से केवल 900 अगले चरण के लिए चुने गये जिसमें वाद-विवाद और साक्षात्कार होना था। अंतिम चरण में विश्वविद्यालय में केवल 250 चुने जाने थे। गुरुकृपा से उसका नाम प्रवेश सूची में था।

शाम को जब हमने उसके प्रवेश का समाचार उन्हें दिया तो वह अत्यंत प्रसन्न होकर बोले कि यह तो पहली अवस्था है, आगे आगे देखो क्या होता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि उनकी अनन्य दया से वह बहुत अच्छा कर रही है।

गुरुजी की वास्तविकता से अनभिज्ञ रहते हुए भी उनके पुण्य प्रभावों के गुणगान करते जा सकते हैं। चूंकि वह मानव रूप में हैं, हम उनको अलौकिक प्रतिभाओं से परिपूर्ण महापुरुष के रूप में देखते हैं। पर वह इस पृथ्वी के समस्त वासियों से भिन्न हैं। वह तो शिव समान अनूठे हैं। शिव गुरुजी हैं और गुरुजी शिव हैं - वह तो परम हैं।

इसका यह तात्पर्य नहीं है कि उनके पास आकर सब शांतिपूर्वक और सहजता से हो जाएगा। वह कर्मों के अनुसार प्रत्येक अनुयायी को जीवन के उतार चढ़ाव भी दिखाते हैं। वह समस्त संबंधों की अनिवार्यता के दर्शन भी करा देते हैं। जब प्रतीत होता है कि आप अकेले हैं, संवेदित हो कर वह अपनी निकटता जता देते हैं। कोई बात कहे बिना भी वह अपनी सुगन्ध के माध्यम से आपके पास आ जाते हैं। यद्यपि यह अति कठिन है, इस मायावादी संसार से मुक्त होकर उनको समर्पण

करने में ही हित है। लेकिन–किन्तु–परन्तु छोड़ कर उनके बताये पथ पर चलना ही श्रेष्ठ है; जीवन कितना सरस और मधुर हो जाता है। जीवन के सकारात्मक रूप देखते हुए, आस्था सहित आनंद लेने में ही लाभ है। वह सर्वज्ञाता, सर्वशक्तिशाली और सर्व विद्यमान हैं, वह हमारे पता लगे बिना ही सुनते हैं, देखते हैं और जो हितकर हो वह करते हैं।

मेघा ने उनके लिए यह कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं:

गिर कर उठते हैं हम क्यों?
हंस कर सहते हैं र्दद हम क्यों?
मुस्कुराते हैं वर्षा में हम क्यों?
कारण है आपकी अमूल्य दया जो हमें मिली है
जीवन में है आपका प्रेम जो सदा हमारे साथ है

आप हमारे जीवन की परम शक्ति हैं
आप ही मानव रूप में सर्वोच्च शक्ति हैं
आप हर शंका का अंतिम समाधान हैं
आप ही दयालु जल दाता मेघ भांति सबके परम आनंद हैं

हम आपसे प्रेम करते हैं, आदर देते हैं,
नमन और प्रार्थना करते हैं
आप हमें अपने हृदय में स्थान दें
और सदा वहीं पर स्वीकार करें

धन्यवाद गुरुजी

– श्रीमती नीरू भारद्वाज

भक्त सदा भक्त रहेगा

गुरुजी की शरण प्राप्त होने से हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं। हमें उनके बारे में, नवम्बर 2005 में, मेरठ में अपने एक सम्बन्धी की बेटी के विवाह में उपस्थित एक अन्य सम्बन्धी से, पता लगा। पिंकी गुरुजी की अनुयायी थी और उसकी अभिलाषा थी कि हम गुरुजी के दर्शन करें। उस समय उसने हमें उनके कुछ संस्मरण भी सुनाये।

एक शुक्रवार को हम एम्पाएर एस्टेट से गुज़र रहे थे कि गुरुजी का ध्यान आया किन्तु उनके दर्शन किसी अन्य दिन करने के विचार से हम आगे निकल गये। आगे बढ़ते हुए हमने एम्पाएर एस्टेट के पूरे भवन को भी पार नहीं किया था कि हमारी कार रुक गयी। हम आश्चर्यचकित हो गये और गुरुजी के दर्शन कर उनके आशीर्वाद लेने का निश्चय कर लिया। इतना सोचते ही कार चल पड़ी। गुरुजी के स्थान पर हम सात बजे पहुंचे किन्तु हमें बताया गया कि वह आठ बजे खुलेगा। एक घंटे रुकने का सुन कर हमने किसी अन्य दिन आने का सोचा। उसी समय पिंकी आ गयी और उसने संगत पर आने का आग्रह किया। उस दिन से गुरुजी की संगत में लगातार आते रहे हैं। गुरुजी के दर्शन करने से पूर्व हम भटक रहे थे किन्तु उनकी दया से अब हम सही मार्ग पर अग्रसर हैं।

बेटी अमरीका गयी

हमारी पुत्री रक्षिता को अमरीका के एक विश्वविद्यालय में एम बी एस पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए 15 जनवरी 2006 तक पहुँचना था। किन्तु उसके दस्तावेजों में कुछ अड़चन थी जिसे न्यायालय से सत्यापित करवाना आवश्यक था किन्तु उस समय न्यायालय शीतावकाश के लिए बंद थे। फिर गुरुजी की दया से एक न्यायाधीश आकर बैठे और उसके पत्रों को सत्यापित कर दिया। वह अमरीका जा सकी और 18 जनवरी को विश्वविद्यालय पहुंचीं। गुरुकपा से, तीन दिन की देरी को अनदेखा करते हुए विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने उसे प्रविष्ट कर लिया।

दिल्ली विमानपतन पर उसका सामान अधिक था और उसे या तो कुछ सामान निकालने के लिए अथवा 180 डॉलर देने को कहा गया। हमने सामान निकाला, किन्तु अचानक रक्षिता को लगा कि गुरुजी ने पुनः सामान तोलने को कहा है। जब सामान दोबारा तोला गया तो वह अधिकतम वजन सीमा से कम निकला।

तीन मास के पश्चात् रक्षिता ने फोन पर बताया कि विश्वविद्यालय वाले उसे अगले सत्र में जाने की आज्ञा नहीं दे रहे हैं और संभवतः उसे भारत लौटना पड़ेगा। हमने उसे गुरुजी से विनती करने के लिए कहा। कुछ ही दिनों में उसने शुभ समाचार दिया कि उसे अगले सत्र में प्रवेश मिल गया है। गुरुजी का हार्दिक धन्यवाद।

पुत्र आस्तिक बना

हमारा पुत्र सुधांशु नास्तिक था हम उसे तीन बार आग्रह कर के गुरुजी के पास ले गये परन्तु हर बार वह संगत में जाये बिना वापस चला गया। अब गुरुजी की कृपा से ही उसमें मनस् परिवर्तन हुआ है। जब भी वह छात्रावास से वापस आता है वह गुरुजी के पास जाने के लिए उत्सुक रहता है। वह सन्दर्भ जिसने उसमें यह परिवर्तन किया वह वर्णनीय है। वह अपने तीन मित्रों के साथ एक टैक्सी में कालका जा

रहा था। वह कुछ ही दूर गये होंगे कि उनकी टैक्सी की सामने से आते हुए एक ट्रक से भीषण दुर्घटना हो गयी, जो लकड़ियों से लदा हुआ था। टैक्सी बुरी प्रकार से क्षतिग्रस्त हुई थी, ट्रक के समने के पहिये टूट गये और वह पलट गया था। चमत्कार था कि उसके पाँचों सवार सुरक्षित रहे। उनको मामूली चोटें ही आयीं थीं। सुधांशु के जीवन की रक्षा के लिए गुरुजी ने चार अन्य लोगों को और बचाया था।

सर्वविद्यमान स्वामी

गुरुजी छोटी से छोटी बातों का भी ध्यान रखते है। 2005 की शीत ऋतु में एक उपचार के लिए गुरुजी ने हमें प्रतिदिन यमुना पुल पर जाने का निर्देश दिया था। एक बार एक चढ़ाई पर हमारी कार रुक गयी। हमने उसको धक्का देकर चलाने का विफल प्रयास किया। उसके बाद गुरुजी से विनती करी। अचानक दो सिख युवक कहीं से आये और उन्होंने हमारी सहायता करी। उन्होंने कार को धक्का लगाया और उसके चलने के तुरन्त बाद, पता नहीं कहाँ, अदृश्य हो गये।

गुरुजी ने हमें स्वप्न में भी दर्शन दिये हैं। एक बार मेरे पति अनिल को प्रात:काल सोते हुए स्वप्न आया कि गुरुजी ने उसे प्रसाद में मिठाई दी; किन्तु जब उन्होंने अपना हाथ खोला तो उसमें धन था।

गुरुजी सर्वज्ञाता और सर्व शक्तिमान हैं। उन्होंने हमारे परिवार और हमारे अतीत के बारे में बताया था। उदाहरणार्थ उन्होंने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में हुई अनिल की गंभीर शल्य चिकित्सा के बारे में बताया जिसके कारण वह आज भी जीवित हैं। गुरुजी ने अनेकों असाध्य रोगों का उपचार किया है। उन्होंने केंसर और अन्य अनेक गंभीर रोगों की चिकित्सा करी है। वास्तव में गुरुजी का उपचार चिकित्सकों की विफलता के पश्चात् आरम्भ होता है।

गुरुजी की शरण में आने पर स्वाभिमान को नष्ट कर देना चाहिए। उनकी संगत में आये प्रत्येक व्यक्ति को उनके दर्शन के सम्पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए धैर्य के साथ स्वच्छ मन, स्वच्छ हृदय और पूर्ण

आस्था अनिवार्य हैं। गुरुजी का मुख्य उद्देश्य मानवता के कष्टों को दूर करना है। वह बिना किसी भेदभाव के सबका भला करते है और सर्व विद्यमान होते हुए भूत, वर्तमान और भविष्य जानते हैं। आनंद और मोक्ष की यह विभूति विद्वानों का अंतिम लक्ष्य हैं। सर्व विद्यमान प्रभु की कृपा से ही हमें लौकिक और अलौकिक अर्थ की प्राप्ति होती है। उन्हीं की दया से संगत के सदस्य अपनी समस्त आशाएं पूर्ण कर सकते हैं। गुरुजी की उपस्थिति से हम अत्यंत भाग्यशाली हैं। वह हमारे कष्ट और विपदाओं को दूर करते हैं। कहते हैं कि जिस भक्त पर आप कृपा करेंगे नष्ट नहीं हो सकता। ॐ नमः शिवाय, गुरुजी सदा सहाय।

– नूतन एवं अनिल बेरी, गुडगाँव

श्रद्धा से अनुग्रह

1999 में मेरे पति, कर्नल देवेन्द्र सिंह, जो दिल्ली में कार्यरत थे, को पंचकूला निवासी एक मित्र ने गुरुजी के बारे में बताया। हम उनके आशीर्वाद प्राप्त करने से अपने को रोक नहीं पाये और शीघ्र ही एम्पाएर एस्टेट पहुँच गये।

उस समय हमें अनेक समस्याएँ थीं। मेरे पति के दोनों गुर्दे प्रत्यारोपित हो चुके थे और वह अत्यंत बीमार चल रहे थे। उनके लिए सेना में कार्य करते रहना भी कठिन प्रतीत हो रहा था। हमारी पूरी जमा पूँजी दूसरे गुर्दे के प्रत्यारोपण में व्यय हो गयी थी जो एक सामान्य असैन्य चिकित्सालय में हुआ था और, उसके पश्चात् मेरे पति का ढाई लाख रूपये व्यय को रक्षा लेखा विभाग (CDA) द्वारा लौटा दिया गया था।

पहले ही दर्शन पर गुरुजी ने हमें सहर्ष प्रेम पूर्वक स्वीकार किया। हमें प्रतीत हुआ कि हमारी समस्त समस्याएँ समाप्त हो गयीं हैं। गुरुजी के रूप में हमें स्वयं प्रभु और उनके स्वर्ग की प्राप्ति हुई थी। गुरुजी ने अगली बार आते हुए एक ताम्र लोटा और एक चांदी का कढ़ा लाने को कहा। उन्होंने उन दोनों वस्तुओं को अभिमंत्रित किया और हमारे जीवन में उनकी दया का प्रवाह होने लगा।

सर्वप्रथम मेरे पति के स्वास्थ्य में सुधार आने लगा। उनके चिकित्सा परीक्षण सामान्य निकले और उन्होंने कार्यालय जाना आरम्भ कर दिया। फिर, रक्षा लेखा विभाग ने हमारा अटका हुआ व्यय स्वीकृत कर लिया। मुझे उस विभाग से इसकी सूचना तार से मिली। अगले दिन जब हम गुरुजी के पास गये तो उन्होंने पूछा कि क्या हमें पैसा मिल गया।

मेरे पति स्टिरोइड ले रहे थे जिसके फलस्वरूप उनके नितम्ब के जोड़ में एक स्नायु अवरुद्ध हो गयी। चिकित्सक ने शल्य क्रिया का सुझाव दिया। जब हम गुरुजी के पास गये तो उन्होंने इसके लिए मना कर दिया और कहा कि वह स्वतः ही ठीक हो जाएगी। उनके कथन के अनुसार थोड़े दिना में वह पुनः खुल गयी और आज तक शल्य क्रिया की आवश्यकता नहीं पड़ी है।

मेरे अनुभव के अनुसार गुरुजी को कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। अपनी सभा में आये हुए प्रत्येक भक्त की आकांक्षा को वह जानते हैं। उनके साथ, अच्छा या बुरा, जो भी होता है, उसका भी उन्हें ज्ञान है।

मेरे एक पुत्र और पुत्री थे परन्तु मैं एक और पुत्र चाहती थी। उनकी संगत में बैठे हुए मैंने इसकी कामना करी। सर्वज्ञाता गुरुजी को इस बारे में पता चल गया। घर जाने से पहले जब मैं आज्ञा लेने उनके पास पहुंची, तो उन्होंने कहा, *"ला झोली कर"*। वह मुझे अपना दुपट्टा अपने सामने फैलाने के लिए कह रहे थे ताकि वह अपनी कृपा मुझे दे सकें। बिना जाने हुए कि वह क्या दे रहे हैं मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया।

छः मास के बाद मुझे अपनी गर्भावस्था का आभास हुआ। इतने दिन तक मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं चला कि गुरुजी ने उस दिन मुझे पुत्राशीष दिया था। चिकित्सक भी अचंभित थे।

गुरुजी ने हमारी सहायता फिर करी जब कुछ अवांछित तत्त्वों ने

कुछ राजनीतिज्ञों के साथ मिल कर एक भूखंड पर हमारे आधे बने हुए मकान को हथिया लिया। उन्होंने हमें बहुत तंग किया और हम असहाय थे। जब गुरुजी को इस बारे में बताया तो वह बोले कि चिंता मत करो, वह अपने आप चले जायेंगे। उनके इस आशीर्वाद के साथ ही स्थिति में परिवर्तन होने लगा। शीघ्र ही घर की चाबियाँ हमें दे दी गयीं।

गुरुजी ईश्वर हैं। वह ही हमारे सुख और आनंद के स्त्रोत हैं। हम उन्हें हृदय से प्रेम और धन्यवाद करते हैं। गुरुजी के पास जो भी श्रद्धा भाव से आयेगा उनके अनुग्रह का पात्र बनेगा।

– श्रीमती परमिंदर कौर

प्रति पग रक्षा

'तेरे कवन कवन गुण कहे कहे गवां, तू साहिब गुनी निधाना'

मेरे माता पिता ने जून या जुलाई 2001 से गुरुजी के पास आना आरम्भ किया था और उसके पश्चात् जीवन में परिवर्तन होने लगा। मैं जर्मनी में रह कर प्रसन्न नहीं था। गुरुजी की दया से शीघ्र ही मुझे सात मास के लिए वापस भारत स्थानांतरित कर दिया गया। उस समय मेरी बहन के वैवाहिक जीवन में बहुत उथल पुथल हो रही थी। हमने उसकी जन्मपत्री अनेक ज्योतिषियों को दिखायी थी और सबने उसके वैवाहिक जीवन में सुख का अभाव बताया था। किन्तु गुरु कृपा से सब समस्याएँ हल हो गयीं।

2000 से मैं भी अत्यंत कठिन परिस्थितियों से गुजरा हूँ किन्तु उनकी दया से मैं उनका सामना भी कर पाया हूँ। एक बार यूरोप में मेरा बैग – जिसमें मेरा पारपत्र, क्रेडिट कार्ड और चाबियां थीं – खो गया। मैंने गुरुजी का ध्यान किया और थोड़ी ही देर में विमान कर्मचारियों ने बताया कि वह मिल गया है। उसमें से कुछ भी निकला नहीं गया था – सब सामान सुरक्षित था।

2006 में मैं पाकिस्तान जाकर वहां के सब गुरुद्वारों के दर्शन करना चाहता था, परन्तु मुझे वीसा नहीं मिल रहा था। अचानक ही अंतिम समय पर, जब मैंने सब आशाएं छोड़ दीं थीं, वीसा मिल गया। इससे मैं रावलपिंडी जिले में स्थित गुरुद्वारा पंजा साहिब भी जा सका, यद्यपि मेरा वीसा केवल लाहौर जिले के लिए था।

पिछले दो वर्ष सिंगापुर में रहते हुए अनेक कार्य सम्बंधित समस्याएँ उठी हैं। मैंने अपने सहकर्मियों के विरोध का भी सामना किया। परन्तु गुरुकृपा से वह सब सुलझ गयीं। गुरुजी की दया से मुझे एशिया के सबसे अच्छे विश्वविद्यालय से एम बी ए करने का संयोग प्राप्त हुआ – वहां पर मैंने कभी प्रवेश पाने की आशा भी नहीं करी थी।

एक दिन मेरी भयंकर दुर्घटना होते होते बची। मेरा एक पैर बस के पहिये के नीचे आने वाला था। घर पहुंचने पर मैंने देखा कि गुरुजी के चित्र का फ्रेम चटक गया था किन्तु उनका चित्र सुरक्षित था। तब मुझे आभास हुआ कि उन्होंने ही दुर्घटना से रक्षा करी थी।

मेरे पिता को एक प्राणघातक अर्बुद हो गया था। उनको कीमोथेरेपी और शल्य क्रिया करवानी पड़ी और उपचार की अवधि में अभूतपूर्व सुधार हुआ। गुरुजी ने उन्हें नव जीवन दिया है।

जीवन के हर पग पर उन्होंने हमारी रक्षा करी है। यदि मैं उनके सब चमत्कारों का वर्णन करने लगूँ तो शब्द और पृष्ट कम पड़ जायेंगे। उन्होंने मेरे माता पिता और बहन को ही नही, हमारे अन्य सम्बन्धियों का भी ध्यान रखा है। दो वर्ष पूर्व हमने उनसे, चंडीगढ़ स्थित एक सम्बन्धी के लिए विनती करी थी, जिसकी दुर्घटना हो गयी थी। गुरुजी को सब ज्ञात है और वह उचित समय पर कामना पूर्ण करते हैं – आशापूर्ति करने के उचित समय का ज्ञान उनको ही है। वह सदा हमारे लिए हमारे साथ हैं। मैं गुरुजी की असीमित कृपा और संरक्षण देने के लिए प्रभु का धन्यवाद करता हूँ।

–पुनीत सिंह, गुड़गाँव

प्रथम दर्शन में ही कामना पूर्ति

वर्ष 2001 में मैंने पहली बार कर्नल चटर्जी से गुरुजी के बारे में सुना था। उन्होंने मुझे गुरुजी का चित्र दिखाया और उनके कुछ चमत्कारों का वर्णन किया था।

उस समय एक नये शहर में, एक नयी नौकरी के साथ मेरे जीवन में अत्याधिक उथल पुथल थी। इसे नये कार्यालय में आने के पश्चात् एक माह में मुझे इंग्लैंड जाना था। किन्तु नौ मास बीत जाने के बाद भी इस योजना का कुछ अता-पता नहीं था और दिल्ली जैसे महंगे शहर में मुझे घर आदि ढूँढ कर जीवन को सुनियोजित करने में अत्याधिक व्यय करना पड़ा था। आर्थिक समस्याओं के होते हुए मेरी पत्नी का गर्भपात भी हो गया था। इसके कारण कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ आ गयीं थीं और स्त्री रोग विशेषज्ञ ने, यदि यह स्वयं ठीक नहीं हों तो, शल्य क्रिया करवाने का परामर्श दिया था।

जुलाई 2001 में हम एम्पाएर एस्टेट में गुरुजी के पास पहुँचे, परन्तु उनके जालंधर चले जाने का सुन कर अत्यंत निराश हो कर लौटे। बाद में, उसी मास में हमें गुरुजी के प्रथम दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने हमसे थोड़ा सा वार्तालाप किया और लंगर ग्रहण करने को कहा (उन दिनों गुरुजी के चयन अनुसार ही कुछ भक्तों को लंगर दिया जाता था)।

घर लौटने पर हमें अभूतपूर्व कृपा का आभास हुआ और एक लम्बे अंतराल के बाद हम शांति से सो पाये। उस दिन से हमारे जीवन

में परिवर्तन आने लगा। सर्वप्रथम मेरी पत्नी के स्वास्थ्य में सुधार होने लगा। कुछ मास में ही मुझे पहली बार विदेश भेजा गया और अपने कार्य में भव्य सफलता मिलने के थोड़े समय के बाद ही मुझे लम्बी अवधि के लिए पुनः विदेश में नियुक्ति मिली। यह अभी भी चल रही है। कुछ वर्षों में हमें पुत्र रत्न की भी प्राप्ति हुई।

रक्त चाप

मेरी पत्नी दीर्घकाल से उच्च रक्त चाप की रोगी रही थी। गर्भकाल एवं प्रसव और अन्य संभव दुष्परिणामों से बचने के लिए उसे औषधियाँ लेना आवश्यक था। क्योंकि जीवन भर ऐसी औषधियों का सेवन अनुचित लगता था, बीच बीच में वह इनको रोक देती थी किन्तु रक्त चाप पुनः बढ़ने के कारण उसे फिर औषधियाँ लेनी आरम्भ करनी पड़ती थीं।

वर्ष 2003 के आरम्भ में, एम्पाएर एस्टेट में एक संगत में, जब हम दोनों गुरुजी से प्रसाद ग्रहण करने पहुंचे, तो उन्होंने हमारे एक रंग के हरे परिधान देख कर व्यंग्य कसा। फिर उन्होंने मेरे से पूछा कि मुझे विवाह के लिए चंडीगढ़ की यह 'कुड़ी' कैसे मिल गयी। मुझे अत्यंत आश्चर्य और प्रसन्नता हुई कि मैं उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। इस वार्ता का प्रभाव अगले दिन प्रातः मेरी पत्नी के रक्त चाप में दृष्टिगोचर हुआ - उसके जीवन में पहली बार, बिना औषधि के, निम्न रक्त चाप का परिणाम मात्र 80 था। उस दिन से उसको जीवन में कभी रक्त चाप की समस्या नहीं हुई। केवल गर्भ काल के अंतिम दिनों में कुछ समय तक यह रहा, किन्तु न तो इससे भ्रूण वृद्धि में कोई रुकावट हुई और न ही निर्धारित समय से पूर्व प्रसव करवाना पड़ा। इस अंतराल में उसने इन औषधियों का सेवन किया और उसके उपरान्त बंद कर दीं।

विदेश नियुक्ति

सितम्बर 2000 में दिल्ली स्थित सीमेंस में नवीन कार्य पद

संभालने का प्रमुख आकर्षण विदेश में नियुक्ति प्राप्त होने का था, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। फिर भी, गुरुजी की दया से मुझे बीच बीच में अल्प काल के लिए इंग्लेंड जाने के कुछ अवसर प्राप्त हुए। वर्ष 2002 में, 9 सितम्बर 2001 को अमरीका में न्यू यॉर्क पर हुए हमलों के फलस्वरूप, विश्व भर में सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र में प्रसार के कार्यक्रम रुक गये थे। इससे लम्बी अवधि के लिए विदेश जाने की आशाएं भी चूर चूर हो गयीं। तद्यपि, मैं संगत में और घर पर गुरुजी से प्रार्थना करते रहता था और, अंततः अप्रैल 2003 में इंग्लेंड जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वहां का कार्यकाल केवल छः माह का था, किन्तु यह ऐसे समय पर आया था जब अन्य संस्थान अपने कर्मचारियों की छंटनी कर रहे थे। ऐसे प्रतिकूल वातावरण में इस प्रकार का कार्य प्राप्त कर मैं आनंदित था।

जब मैं अपने कार्य आज्ञा पत्र (work permit) की प्रतीक्षा और जाने के प्रबन्ध कर रहा था, मुझे गुरुजी के एक भक्त के यहाँ विवाह समारोह में जाने का निमंत्रण मिला। इस पर गुरुजी ने अपने हाथों से ''इंग्लेंड'' लिखा हुआ था। जब हम जाने से पूर्व गुरुजी की आज्ञा लेने पहुंचे, मेरी पत्नी ने उनसे अपने पिता और बहन (डाउन सिंड्रोम की रोगी) के लिए आशीर्वाद मांगने का विचार बनाया था। उसके कुछ बोलने से पूर्व ही गुरुजी बोल पड़े, *''साड्डे तो वड्डा पेरेंट कौन है?''* हमें तुरन्त आभास हो गया कि उनका आशीर्वाद सदा उनके साथ रहेगा।

कार्य स्थल (मेनचेस्टर ने निकट ब्लेकपूल) पहुँचने पर मुझे बताया गया कि अवधि घट कर चार मास भी हो सकती है। लेकिन गुरुजी की दया से मेरा कार्यकाल नहीं घटा और, उसकी समाप्ति पर, मुझे वहीं पर एक अन्य परियोजना का कार्य सौंपा गया। यह कार्य दस माह से अधिक चला और उसकी समाप्ति पर, अगस्त 2004 में, जब मैं स्वदेश लौटने को तत्पर था, मुझे बरमिंघम के निकट टेलफोर्ड, एक नवीन परियोजना पर भेज दिया गया, जहाँ मैं एक वर्ष से अधिक रहा। कार्य की मध्यावधि में मुझे नॉटिंघम स्थानांतरित कर दिया गया जहाँ

कार्यकाल समाप्त होने के साथ ही हमारे पुत्र का जन्म हुआ। सितम्बर 2005 में, जब हम वापस भारत आने के प्रबन्ध कर रहे थे, मुझे लन्दन स्थित प्रसिद्ध बी बी सी कंपनी में कार्य करने के लिए स्थानांतरित कर दिया गया। इंग्लैंड में प्रारम्भिक अवधि कुछ मास की होते हुए भी यहाँ पर मैं दो से अधिक वर्ष तक कार्यरत रहा हूँ।

नॉटिंघम स्थानातरण

जब मेरी पत्नी ने गर्भाधारण किया, मैं इंग्लेंड के श्रोप्शायर क्षेत्र में टेलफोर्ड नाम के एक छोटे शहर में नियुक्त था। रहने के लिए अच्छा, शांत स्थान होते हुए यहाँ पर चिकित्सा, विशेष कर गर्भ सम्बंधित सेवाओं का प्रायः अभाव था। स्थानीय चिकित्सालय में प्रासविक केंद्र दाईयाँ चलाती थीं और कोई विशेषज्ञ सेवाएं उपलब्ध नहीं थीं। गंभीर रोगियों को 16 मील दूर श्रीयुस्बरी स्थित बड़े चिकित्सालय में भेजा जाता था जहाँ पहुँचने में आधा घंटे का समय लगता था; टैक्सी का व्यय भी कोई कम नहीं था।

मेरी पत्नी के उच्च रक्त चाप के कारण यह निश्चित था कि अंततः उसे श्रीयुस्बरी चिकित्सालय भेजा जाएगा। यद्यपि इंग्लेंड की नेशनल हेल्थ सर्विस की सेवाएं उच्च स्तर की हैं, किसी आकस्मिक परिस्थिति में या गर्भावस्था या फिर, प्रसव काल की अवधि में इतनी यात्रा करने के विचार से हम चिंतित हो गये थे। चिकित्सालय के नियमों के अनुसार, पत्नी के प्रसव की अवधि में, पति रात भर चिकित्सालय में नहीं रह सकते थे। और उस अंतराल में मेरी चिकित्सालय के पास रहने की हार्दिक अभिलाषा थी जो यहाँ रहते हुए संभव नहीं लग रहा था – यदि उसे वहां पर छोड़ कर मुझे घर वापस आना पड़े तो....

सदा की भांति हमने इन प्रश्नों का समाधान गुरुजी पर छोड़ दिया। एक रात को मेरी पत्नी को गुरुजी ने स्वप्न में बताया कि सब ठीक हो जाएगा। कुछ ही दिनों में सूचना आयी कि टेलफोर्ड स्थित इकाई को बंद कर समस्त कर्मचारियों को नॉटिंघम स्थानांतरित किया जा रहा है।

नॉटिंघम एक बड़ा नगर है जहाँ उच्च स्तर की प्रायः सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। अंततः हमारे पुत्र का जन्म, प्रसव सेवाओं के लिए इंग्लेंड के एक सर्वोत्तम संस्थान, क्वीन मेडिकल चिकित्सालय में हुआ।

नॉटिंघम में घर

चिकित्सा सुविधाओं के दृष्टिकोण से नॉटिंघम आना शुभ समाचार होते हुए कार्य अधिक था और हम नॉटिंघम (रेल द्वारा 2-3 घंटे) घर ढूँढने नहीं जा सकते थे। अतः जिस संस्थान के लिए हम कार्यरत थे उसी को घर खोजने का कार्य सुपुर्द किया गया। मैंने अपने प्रबन्धक से अपनी पत्नी की स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्या और उसकी गर्भावस्था का उल्लेख किया था; उसके साथ उसे किसी दूरस्थ स्थान पर अकेले रहने की संभावना थी किन्तु इन सब को अपवाद नहीं माना गया। अगले कुछ दिनों में कुछ घर देखे गये और मुझे उनसे सम्बन्धित विवरण/ इंटरनेट के पते भेजे गये। किन्तु वह सब स्थान अनुचित होने के कारण मैंने उन सबको ठुकरा दिया।

यह सब आरम्भ होने से पूर्व मैंने इंटरनेट पर, क्वीन मेडिकल चिकित्सालय, जहाँ मेरी पत्नी को गर्भावस्था में भेजे जाने की संभावना थी, के निकट एक अच्छा सा लगता हुआ मकान देखा था। मुझे उस क्षेत्र की थोड़ी सी भी जानकारी नहीं थी; तथापि उसके चित्र और अन्य सूचनाएं अच्छी लग रहीं थीं। उनके आधार पर वहां पर जा कर रहना जुंआ खेलने के समान होगा। कोई अन्य विकल्प न होते हुए एकमात्र यही उचित उपाय लग रहा था। अतः मैंने इस संस्थान को बताये बिना और कोई आर्थिक मूल्यांकन करवाये बिना उस घर को लेने का निश्चय कर लिया। यह मेरे परियोजना प्रबन्धक के निर्णय की अवज्ञा करने के समान था किन्तु गुरुजी का आश्रय लेकर हम अपने अंतर्ज्ञान पर निर्भर रहे।

इंग्लेंड में रहते हुए यह घर सबसे अच्छा रहा है। उसमें सब संसाधन सुचारू और अत्यंत अच्छी अवस्था में थे। क्वीन मेडिकल चिकित्सालय से यह केवल 10 मिनट पैदल और कार से 3 मिनट की

दूरी पर था। 10 कर्मचारियों के हमारे दल में अन्य सब सदस्यों को, उन सब घरों में, जो उनके लिए देखे गये थे, गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ा।

भ्रूण हृदय गति

गर्भावस्था में नियमानुसार परीक्षण करवाने के एक अवसर पर, क्वीन मेडिकल चिकित्सालय के गर्भ आंकलन केंद्र में भ्रूण की हृदय गति नापने के यंत्र पर मेरी पत्नी को लिटाया गया था। सामान्यतः यह गति 140–170 रहती थी किन्तु उस दिन वह 200 निकली और फिर अचानक भ्रूण ने कुछ हरकत करी और वह 220 तक पहुंच गयी और उसी स्तर पर रही। उस समय तक उपस्थित परिचारिका 200 की गति देख कर कह रही थी कि उच्च होते हुए असामान्य नहीं है। इतनी अधिक गति देख कर वह तुरन्त अपनी वरिष्ठ चिकित्सक के पास भागी। इस भय से कि भ्रूण पर कोई दबाव पड़ रहा होगा मैंने गुरुजी द्वारा दिया हुआ उनका चित्र अपनी पत्नी के नितम्ब पर रख दिया और मन ही मन मृत्युंजय मन्त्र का पाठ किया। कुछ ही देर में हृदय गति नीचे चली गयी और फिर उसी स्तर पर रही। परिचारिका को अपने वरिष्ठ चिकित्सक के साथ आने तक स्थिति सामान्य हो चुकी थी।

प्रसव और अन्य गंभीर समस्याएँ

वर्ष 2005 में गुरुजी की कृपा से हमें पुत्र प्राप्ति हुई। मेरी पत्नी का प्रसव काल अत्यंत लम्बा और अथक वेदना से पूर्ण रहा था – औषधियाँ लेते हुए भी एक अवसर पर उसके रक्त चाप का निम्न स्तर 132 तक चला गया था और वह अर्ध चेतनावस्था में चली गयी थी। चिकित्सक उस पर आकस्मिक शल्य क्रिया करने का विचार कर रहे थे – फिर गुरुजी से प्रार्थना करने पर उसकी स्थिति और प्रसव सामान्य हुए और कोई अन्य बाधा नहीं आयी।

स्वस्थ शिशु के जन्म का आनंद अल्पकालीन रहा क्योंकि उसके

रक्त परीक्षण में कुछ अनियमितता पायी गयी और उसे मूत्र नहीं हो पा रहा था। चिकित्सक उसके रोग के स्त्रोत या स्वभाव से अपरिचित थे अतः वह उसका निदान नहीं कर पा रहे थे। परीक्षण करते हुए उन्होंने दो दिन के शिशु के मेरुदंड से तरल निकालने का भी प्रयास किया किन्तु असफल रहे। अतः उन्होंने उसे प्रतिजैविक औषधियाँ देनी आरम्भ कर दीं जिससे उसे इस रोग से छुटकारा मिल सके।

चिकित्सक उसे आवश्यकता से अधिक खाद्य पदार्थ देने के बाद (ड्रिप भी दिया गया) भी उसके प्रथम चार दिनों में मूत्र न कर पाने से अधिक चिंतित थे और उन्हें उसके शरीर में संभव जल की कमी का अधिक संशय था। कुछ चिकित्सकों ने उसके गुर्दों के निरीक्षण का सुझाव भी दिया। अन्य उसे अधिक से अधिक मात्रा में तरल पदार्थ देकर निर्जलन की संभव शंका को समाप्त करने के पश्चात् ही उसके गुर्दों के परीक्षण करने पर विचार कर रहे थे।

जैसे यह समस्या कम नहीं थी, मेरी पत्नी को भी गंभीर मूत्र रोग हो गया और उसका तापमान 105^0 तक पहुँच गया। माँ और शिशु की गंभीरता देखते हुए उन दोनों को गहन सेवा केंद्र में भेज दिया गया। विदेश में मैं बिलकुल अकेला था – परिवार, किसी सम्बन्धी या मित्र का साथ नहीं था। मेरे दल के सदस्य स्वदेश लौट चुके थे क्योंकि परियोजना की अवधि समाप्त हो चुकी थी। गुरुजी द्वारा दिए गये उनके चित्र हमने शिशु के शरीर पर और उसकी शय्या पर बार-बार रखे और उनसे सहायता की अत्याधिक विनती करी। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में हम और क्या कर सकते थे?

शीघ्र ही सब आशानुकूल होना आरम्भ हो गया – शिशु ने पहली बार मूत्र किया और उसके पश्चात् हमने कभी उसके संक्रमण के बारे में और नहीं सुना। चिकित्सकों के अनुसार शिशु के रक्त में वह संक्रमण संभवतः उसकी माँ का रहा होगा। मेरी पत्नी को तीव्र प्रतिजैविक औषधियां दी गयीं और उसके स्वास्थ्य में भी सुधार आया। दोनों को जन्म के कुछ दिनों पश्चात् घर भेज दिया गया।

लन्दन स्थानान्तरण

नॉटिंघम में परियोजना की सफल समाप्ति पर मेरे दल के सब सदस्य जा चुके थे। हमें रुकना पड़ा क्योंकि उस समय मेरी पत्नी के गर्भाकाल का नौवां मास चल रहा था और प्रसव कभी भी हो सकता था। शिशु के जन्म के पश्चात् हमने भारत लौटने से पूर्व एक माह और रुकने का निर्णय लिया। हमें शिशु के 3–4 मास होने के उपरान्त ही लौटने को कहा गया क्योंकि वायुयान में उसके कानों को अपरवर्तनीय क्षति पहुँच सकती थी। भारत में मेरे प्रबन्धक ने इंग्लेंड के प्रबन्धक से मेरे लायक किसी अन्य कार्य के बारे में बात करने का आश्वासन तो दिया किन्तु मेरी योग्यता के अनुसार, अच्छे स्थान पर, कोई और कार्य मिलने की संभावना बहुत कम थी। हम गुरुजी से उपाय के लिए निवेदन करते रहे और शिशु के जन्म के एक सप्ताह में ही मुझे यहाँ स्थित एक प्रबन्धक से फोन आया। उसने पूछा कि क्या मैं बी बी सी में कार्य करने को तत्पर होने के साथ दो सप्ताह में लन्दन पहुँच सकता हूँ।

प्रसव, उसके बाद की घटनाएं और मेरी पत्नी का क्षीण स्वास्थ्य होते हुए, गुरुजी के आशीर्वाद से हम अपना सामान बंद कर तीन सप्ताह के शिशु के साथ लन्दन जा सके। यद्यपि नॉटिंघम से लन्दन तक सामान्यतः तीन घंटे लगते हैं, किन्तु व्यस्त यातायात के कारण हमें छः लग गये। मार्ग में मेरी पत्नी को वेदना तो अवश्य हुई पर लन्दन पहुँच कर वह शीघ्र स्वस्थ हो गयी और अब हम यहीं पर हैं।

– पुष्पल दास, लन्दन

परमात्मा द्वारा चिकित्सकों का उपचार

मानव जाति के सर्वश्रेष्ठ प्राणी किसी की व्यथा में मात्र सहानुभूति प्रकट कर सकते हैं। ऐसे अवसरों पर गुरुजी जैसे महापुरुष उनकी व्यथा अपने पर अंतरित कर उनका उद्धार कर उनके विश्वास को और दृढ़ करते हैं। ब्रिगेडियर (डॉ.) सैनी के संस्मरण इसके प्रमाण हैं। वह चिकित्सा विशेषज्ञ (Medical Specialist) हैं और उन्होंने गुरुजी को अक्सर ऐसा करते हुए देखा है। यह डॉ. सैनी द्वारा गुरुजी के एक भक्त को दिया हुआ सत्संग है।

चम्मच द्वारा रोग निदान

यद्यपि जालंधर में डॉ. सैनी का घर गुरुजी के मंदिर के समीप ही था शुरू में वह महापुरुष के दर्शन नहीं कर सके। जब उन्होंने किये तो उसके पश्चात् उनके जीवन में गुरुजी की दया का प्रवाह स्पष्ट था।

डॉक्टर की पत्नी, गुरुजी की अनुयायी थीं और ग्रीवा शूल से

पीड़ित थीं। इसके कारण उन्हें गर्दन में अति वेदना होती थी। वह भौतिक चिकित्सा के कुछ शारीरिक व्यायाम करती थीं और दर्दनाशक औषधियों का सेवन करती थीं।

यह 1996 के अंत का प्रसंग है जब गुरुजी पंचकूला में थे। डॉ. सैनी गुरुजी के दर्शन के लिए आये हुए थे। प्रतिदिन संध्या के समय चिकित्सक को गंभीर रोगियों को देखने गहन सेवा केंद्र में जाना होता था। उन्होंने गुरुजी से इसके लिए अनुमति मांगी तो गुरुजी ने कहा कि सब रोगी ठीक हैं पर उनको जाने दिया।

जब डॉक्टर लौटे तो गुरुजी ने उनको बताया कि उन्होंने उनकी पत्नी का रोग समाप्त कर दिया है। उनको बताया गया कि गुरुजी ने रसोई से एक चम्मच मंगवा कर उनकी पत्नी की गर्दन पर लगाया था। चम्मच गुरुजी का एक दिव्य उपकरण है – उनकी एक्सरे मशीन, कैट स्केन, एकोकार्दियोग्राफ और पराध्वनि यंत्र! उसके बाद उनकी पत्नी को वह रोग कभी नहीं हुआ।

गुरुजी डॉक्टर सुहृदय बने

एक वर्ष उपरान्त डॉ. सैनी का उपचार हुआ। उस समय तक गुरुजी चंड़ीगढ़ आ गये थे और वह उनके दर्शन के लिए आये। गुरुजी ने उनको बताया कि उनकी एड़ी में दर्द है। डॉक्टर ने परीक्षण करने पर अनुभव किया कि एक स्थान कुछ मुलायम था और उन्होंने अगले दिन एक दर्दनाशक औषधि लाने की बात कही। गुरुजी ने मना कर दिया। डॉ. सैनी ने, जो अब वरिष्ठ सलाहकार हो गये थे, गुरुजी से सेना चिकित्सालय में स्थापित करी गयी एक नवीन लेसर मशीन पर चिकित्सा कराने का परामर्श दिया। कुछ समय उपरान्त गुरुजी चिकित्सालय में डॉक्टर के पास गये और उन्होंने उन्हें तीन दिन के लिए लेसर मशीन पर चिकित्सा देने की बात कही। डॉक्टर ने कहा कि दस दिन की चिकित्सा अधिक लाभकारी होगी। उनकी इस बात पर गुरुजी ने उन्हें बताया कि वास्तव में वह उनके कल्याण के लिए आये हैं।

गुरुजी का कथन दो सप्ताह उपरान्त सत्य सिद्ध हुआ जब डा. सैनी की छाती में दर्द हुआ। ई सी जी में हृदय के परिवर्तन स्पष्ट थे। चिकित्सालय के हृदय रोग विशेषज्ञ ने गहन सेवा केंद्र में रहने की सलाह दी क्योंकि उन्हें शांत दिल का दौरा पड़ा था। चिंतित डॉक्टर ने चिकित्सालय से गुरुजी को फोन किया। गुरुजी ने उनकी पत्नी को उपचार बताया।

वहाँ से निकलकर डॉ. सैनी गुरुजी के पास पहुँचे तो गुरुजी ने उनको अपने कक्ष में लिटा कर उनके पूरे शरीर पर चम्मच घुमा दिया। उसके बाद जब उनके हृदय रोग के परीक्षण सेना के रेफेरल और रिसर्च चिकित्सालय में हुए तो सब परिणाम सामान्य थे और उनको हृदय रोग हो चुके होने के भी कोई लक्षण नहीं थे। सेना के वार्षिक परीक्षणों में भी न तो उनके हृदय में रोग के कोई अवशेष निकले, न ही उन्हें फिर कभी यह रोग हुआ।

दिव्यात्मा ने इस प्रकार चिकित्सक और रोगी के संबंधों को पलट दिया। गुरुजी तीन दिन तक उनके रोगी बने और उन्होंने डॉक्टर के रोगों के लक्षणों को समाप्त कर दिया।

बंद धमनी खुली

सतगुरु उनका भी भला करते हैं जो उनके अनुयायी नहीं हैं। सबकी व्यथा उनकी अपनी है। कर्नल मदन डॉ. सैनी के विभाग में ही कार्यरत थे। कर्नल मदन लम्बे समय से हृदय रोगी थे। एक धमनी बंद होने के पश्चात् उनका बायपास हो चुका था। उन्हें हृदय में पीड़ा और सांस लेने में कठिनाई होती थी। इस कारण उन्हें अपना सामान्य कार्य करने में भी रुकावट होती थी। परीक्षणों से पता लगा कि उनकी बायपास वाहिनी अवरुद्ध हो गयी थी; यह अति गंभीर समाचार था।

ब्रिगेडियर सैनी और जनरल आहुजा, गुरुजी के एक अन्य अनुयायी, ने कर्नल मदन को गुरुजी का आश्रय लेने की सलाह दी।

अत: कर्नल मदन गुरुजी के पास आये। गुरुजी ने उन्हें ताम्र लोटे के माध्यम से आशीर्वाद दिया और गले में माला के साथ पहनने के लिए ॐ की आकृति में अभिमंत्रित लटकन दिया।

कर्नल मदन का स्वास्थ्य तुरन्त सुधरने लगा। कुछ मास के उपरान्त जब एंजियाग्राफी करी गयी तो परिणामों से चिकित्सक अचम्भे में पड़ गये। वह धमनी जो बंद थी और जिसे बायपास किया गया था, खुल गयी थी। डॉ. सैनी कर्नल मदन को पुन: 2003 में मिले जब वह गुरुजी के दर्शन के लिए एम्पाएर एस्टेट में आये। वहीं पर उन्होंने गुरुजी का हार्दिक धन्यवाद करते हुए संगत को यह प्रसंग सुना कर गदगद कर दिया।

पत्नी के हृदय का वाल्व ठीक हुआ

डॉ. सैनी की पत्नी को बचपन में वात ज्वर हुआ था। यद्यपि वह उसी समय समाप्त हो गया था, उस ज्वर में उनके हृदय का बायाँ वाल्व क्षतिग्रस्त हो गया था और उसमें से रिसाव होता था। सबसे पहले उनके पति को इसका संदेह हुआ तबसे हर दो वर्ष में उनका एकोकार्दियोग्राफ होता रहता था।

2003 में डॉ. सैनी दिल्ली में सेना के प्रमुख चिकित्सालय, रेफरेल और रिसर्च चिकित्सालय में सेवारत थे। इस समय उनकी पत्नी को चलते हुए सांस लेने में कठिनाई होने लगी। एकोकाद्रियोग्राफ परीक्षण से पता लगा कि क्षतिग्रस्त वाल्व में रक्त रिसाव बहुत अधिक होकर उलटी दिशा में बह रहा था। चिकित्सा शास्त्र में इसे 'मिट्रल रिगर्जिटेशन' का नाम दिया गया है। उन्हें हृदय का वाल्व बदलने का सुझाव दिया गया। इस अंतराल में उन्हें रेमिप्रिल नामक औषधि दी गयी; इससे कुछ रोगियों को खांसी होती है।

एक दिन जब सैनी दम्पति गुरुजी के पास बैठे थे, तो पत्नी ने कहा कि वह औषधि नहीं लेंगी क्योंकि उससे उन्हें बहुत खांसी हो रही

थी। गुरुजी ने केवल *''ठीक है''* कहा। जब दम्पति चलने को हुए तो सतगुरु ने उन्हें कहा कि उन्होंने उनके हृदय पर कृपा कर दी है। उन्होंने डॉ. सैनी को अपने सब संशय दूर करने के लिए अखिल भारतीय चिकित्सा संस्थान में हृदय रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. तलवार से परीक्षण करवाने को कहा।

जब डॉ. सैनी ने अपनी पत्नी के रोग की स्थिति डॉ. तलवार को बतायी तो वह उसे परीक्षण कक्ष में ले गये और वहां बहुत देर तक रहे। जब वह बाहर निकले तो वह अचंभित थे। उन्होंने कहा कि डॉ. सैनी द्वारा अपनी पत्नी के बारे में बताये हुए लक्षणों के अनुसार वह क्षतिग्रस्त वाल्व देख रहे थे पर उन्हें सब सामान्य लगा, हृदय में कोई क्षति नहीं मिली।

गुरुजी के दिव्य आशीष ने भक्त के हृदय पर चमत्कार कर दिया था। डॉ. सैनी के अनुसार गुरुजी के दो चार शब्दों ने वह किया जिसकी चिकित्सा क्षेत्र में कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

अटल केंसर सूखा

मई 2002 में डॉ. सैनी एक गंभीर प्रकार के केंसर से पीड़ित हुए जिसका उपचार प्राय: असंभव माना जाता है - नॉन-होज्किंस लिम्फोमा। यह केंसर अंत:स्त्रावी तंत्र पर हावी होता है। डॉक्टर ने नौ मास तक औषधियों का सेवन किया। पर उन्हें कभी कीमोथेरपी के लक्षण नहीं हुए और उनका सुधार देख कर उनके चिकित्सक भी अचम्भे में थे। प्रत्यक्ष था कि गुरुजी की कृपा उनके ऊपर थी। एक वर्ष में उनका रोग समाप्त हो गया।

2004 में उनके अंडाशय पर तीन ग्रंथियां फिर से सूज गयीं। परीक्षण से केंसर के कोशाणु होने का संकेत मिला और उनकी शल्य क्रिया हुई। उसके पश्चात् उनका अस्थि मज्जा परीक्षण होना था। गुरुजी से प्रार्थना करने पर दयावान ने उन्हें परीक्षण की तिथि दी। डॉक्टर अति

चिंतित थे कि यदि परिणाम सकारात्मक हुआ तो फिर से पांच मास तक कीमोथेरेपी होगी पर गुरुजी की दया से परिणाम में कुछ नहीं आया।

सतगुरु द्वारा उनकी माँ की आयु वृद्धि

डॉ. सैनी की माँ को स्तन केंसर के साथ साथ हृदय रोग और गठिया थे। 2000 के अंत तक उनकी स्थिति अत्याधिक खराब हो गयी थी। एक दिन वह अचानक बीमार हो गयीं और उन्हें तुरन्त ही घर के निकट एक चिकित्सालय में प्रविष्ट कराना पड़ा। उनके हृदय ने कार्य करना बंद कर दिया था और उनका रक्तचाप और नाड़ी अत्यंत धीमे थे।

जब यह घटनाएं घर पर हो रहीं थीं, डॉ. सैनी की भतीजी जालंधर में गुरुजी के मंदिर में बैठ कर अन्दर ही अन्दर चुपचाप रो रही थी क्योंकि उसे पता था कि उसकी दादी का अंत समय निकट है। अन्तर्यामी गुरुजी ने उसी समय उस प्रक्रिया को रोक कर उस बालिका को कहा कि उन्होंने उसकी दादी के जीवन के पाँच वर्ष अधिक कर दिये हैं।

गुरुजी के इस वक्तव्य के साथ उसकी दादी की अवस्था में तुरन्त सुधार हुआ और वह पाँच वर्ष और जीवित रहीं। वास्तव में अपने अनुयायियों के लिए गुरुकृपा अद्‌भुत होने के साथ विधाता के मातृभाव समान कोमल है। फिर भले ही वह अच्छे या बुरे हों, भले ही उनके भक्त हों अथवा भौतिकवाद में डूबे हों, गुरुजी उनकी सहायता करने को सदैव तत्पर हैं।

चिकित्सालय के तकनीशियन को आशीष

1998 में एक दिन गुरुजी ने डा. सैनी को कहा कि वह संध्या को चंडीमंदिर के सेना चिकित्सालय में रक्त परीक्षण और पराश्रव्य चित्रण के लिए आयेंगे। गुरुजी का रक्त परीक्षण करते हुए अनुभवी तकनीशियन

ने देखा कि उसमें मधु की मात्रा 8–15 के बीच में थी। उसे पता था कि इस मात्रा के साथ कोई भी मनुष्य जीवित नही रह सकता। अतः उसने यह परिणाम डॉ. सैनी को दिखाया और कहा कि यह मानव इस लोक से नहीं हो सकता। गुरुजी ने उस तकनीशियन को आशीर्वाद दिया और कहा कि उसकी पदोन्नति होगी – कुछ दिन बाद वैसा ही हुआ।

भटिंडा से मेजर सिन्हा, विकिरण विशेषज्ञ, उन दिनों चंडीमंदिर के सेना चिकित्सालय में सेवारत थे। गुरुजी के उदर का परीक्षण कर उन्होंने सब कुछ सामान्य पाया। गुरुजी ने उनको भी आशीर्वाद दिया और कहा कि उनके दो पुत्र होंगे और वह मेजर जनरल बनेंगे। गुरुजी से अनभिज्ञ सिन्हा ने कहा कि उनका एक पुत्र है और वह पर्याप्त है। परन्तु गुरुजी ने उनका भविष्य निश्चित कर दिया था।

2004 में डॉ. सैनी दिल्ली के रेफेरल और रिसर्च चिकित्सालय में डॉ. सिन्हा से पुनः मिले। सिन्हा अब लेफ्टिनेंट कर्नल हो गये थे और आणविक चिकित्सा में प्रशिक्षण ग्रहण कर रहे थे। डॉ. सैनी ने उनसे पूछा कि क्या उन्हें गुरुजी का कथन याद है। सिन्हा को याद था। उन्होंने डॉ. सैनी को बताया कि उस समय स्त्रीरोग विशेषज्ञ ने उनकी पत्नी को बताया था कि उन्हें दूसरी संतान नहीं हो सकती – पर गुरुकृपा से एक और पुत्र उत्पन्न हुआ।

रक्षा और सुरक्षा

सैनी परिवार दिल्ली में गुरुजी के दर्शन करने के उपरान्त वापस चंडीगढ़ जा रहा था। संगत समाप्त होने तक रात बहुत अधिक हो चुकी थी और कार में परिवार के सदस्य ऊँघ रहे थे। अचानक डॉ. सैनी को भी, जो कार चला रहे थे, नींद का झोंका आ गया। उन दिनों राष्ट्रीय राजमार्ग एक तरफा था। कार ने अचानक दाहिना रुख अपनाया और सामने से आते हुए एक ट्रक के सामने जाने लगी ...

उसी समय उनकी पत्नी का हाथ उनके कंधे पर लगा, डॉ. सैनी

झटके से जागे और एकदम उन्होंने कार को बायीं और मोड़ा। कार ट्रक से कुछ इंचों से बचती हुई किनारे से निकल गयी। जब वह ऐसे सो रहे थे कौन जाग रहा था? किसने उसी समय उनकी पत्नी का हाथ उनके ऊपर उन्हें जगाने के लिए डाला था?

उत्तर 2004 में स्पष्ट हुआ।

गुरुजी ने डॉ. सैनी के दन्त चिकित्सक पुत्र, सजल को, जो सोहना में सेवारत थे, अपने कार्य से लम्बी छुट्टी लेने को कहा। उस समय सजल स्कूटर से बस अड्डे जाकर वहां से सोहना की बस पकड़ते थे। उस अगस्त मास के दिन सड़क गीली थी। सजल ने स्कूटर से आते हुए एक गाड़ी से बचने के लिए अपना स्कूटर घुमाया पर एक और से टकरा कर मार्ग पर गिर पड़े। उसी समय गुरुजी ने डॉ. सैनी से, जो उनके दर्शन के लिए पहुंचे हुए थे, पूछा कि उनका बेटा कहाँ है। डॉ. ने उत्तर दिया कि वह सोहना से वापस आ रहा होगा। उसी समय फोन बजा और सजल की पत्नी ने उनको दुर्घटना के बारे में बताया। वह तुरन्त घर वापस आये। सजल को कुछ लोग दुर्घटना स्थल से घर ले गये थे – दिल्ली में एक अनोखी घटना! वह बच गये थे और केवल नाक पर चोट आने से कुछ टाँके लगे थे। चिकित्सालय से वह सीधा गुरुजी को धन्यवाद देने पहुंचे।

सजल अब कहते हैं कि उनका जन्मदिवस उस दिन मनाया जाये जिस दिन गुरुजी ने उनकी जीवन रक्षा करी थी। उन्हें नव जीवन मिला है।

– ब्रिगेडियर (डॉ.) पृथ्वी पाल सैनी, गुड़गाँव

गुरुजी के शब्द सुन कर शोकावस्था से छुटकारा

जैसा संगत के कई सदस्यों के साथ हुआ होगा, जब मैं गुरुजी के पास आया मुझे अनेक कष्ट थे और सहायता की कोई किरण शेष नहीं थी। मैं अत्यंत शोकसंतप्त था, जिसका औषधियों और अन्य सहायता से उपचार नहीं हो पा रहा था। अवस्था दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी। परावलोकन करता हूँ तो प्रतीत होता हैं कि मुझे बुलाया गया था अन्यथा रातों रात उपचार कैसे संभव है?

मेरी अवस्था अति गंभीर थी और मैं सदा अपने आप को असहाय प्रतीत करता रहता था। कई बार मैं रोया करता था और आत्महत्या करने के विचार मेरे मन में आते थे। साहस जुटा कर मैं अपने कार्यालय अवश्य चले जाया करता था और सामान्य दिखने का प्रयास किया करता था। वहां से निकल कर मैं मंदिर में जाकर शांति के लिए प्रार्थना करता था। यह चलता रहा पर मेरी अवस्था बिगड़ती ही चली गयी। एक दिन मुझे याद आया कि परिवार के एक घनिष्ठ मित्र ने मेरी माँ से गुरुजी का वर्णन किया था। मैंने तुरन्त अपनी माँ को फोन कर उनसे गुरुजी के दिशा निर्देश मांगे।

मैं गुरुजी के पास 2000 में पहुंचा। पहले दिन शीघ्र पहुंचने के कारण मुझे आगे बैठने का अवसर प्राप्त हुआ। कई सप्ताह के पश्चात्

मंदिर में पहुँच कर मुझे शांति का आभास हुआ। मुझे वहाँ पर बैठ कर लोगों के असाध्य रोगों के चमत्कारिक उपचार सुनना याद है। मैंने अपने आप से कहा, ''मुझे तभी विश्वास होगा जब मैं स्वयं स्वस्थ हो जाऊंगा।''

उस पहले दिन के पश्चात् मैं वहाँ पहले नियमित और फिर प्रतिदिन जाने लगा। मंदिर में पहुँच कर मुझे सुखद शांति का अनुभव होता था, किन्तु बाहर निकलते ही मेरी पहले जैसी अवस्था हो जाती थी। चौथे या पांचवें दर्शन के बाद जब मैं गुरुजी से जाने की आज्ञा ले रहा था तो उन्होंने मेरे से बात करी। उन्होंने पूछा, *''तेरी घरवाली सिटी बैंक विच काम करदी है?''* उस समय तक संगत में कोई मुझे जानता नहीं था, न ही मैंने किसी से बात करी थी। उसी क्षण मुझे अपने अन्दर उत्साह का आभास हुआ। शीघ्र ही मैं अपनी सामान्य स्थिति में आ गया। बाहर आते ही मैंने अपनी पत्नी को फोन पर गुरुजी से हुए वार्तालाप की बात बतायी। मैंने यह भी कहा कि अब मैं स्वस्थ अनुभव कर रहा हूँ। फिर मेरी वेसी अवस्था कभी नहीं हुई है।

मैंने मन ही मन गुरुजी से प्रार्थना कर उनसे एक संतान की कामना करी। एक माह के उपरान्त मेरी पत्नी ने घर पर जब अपना गर्भावस्था परीक्षण किया तो वह सकारात्मक था। उस संध्या को जब मैं गुरुजी के पास आया तो वह बोले, *''घरवाली एक्स्पेक्ट कर रही है – जा कल्याण हऊया; मुंडा होगा''*। हमारे यहाँ नौ पाउंड के बालक ने जन्म लिया। 2004 में गुरुजी ने मुझे एक और पुत्र दिया। हमें पता है कि हम जो भी कदम लेते हैं, गुरुजी हमारे साथ हैं और हमें सत्पथ पर चला रहे हैं।

– पृथ्वीराज सिंह, दिल्ली

''इक होर मुंडा लैना है?''

मुझे अभी भी याद है जब हमें गुरुजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ – वह जून 1998 की घटना है। अपने पति के मामाजी से उनके बारे में सुनने के पश्चात् हमने काफी प्रतीक्षा करी थी। परन्तु मेरे पति श्रीनगर में कार्यरत थे और हम उनके पास नहीं जा सके थे। इसका संयोग तब बना जब मेरे पति वहां से स्थानांतरित हुए।

मेरे पति के मामाजी के अनुभव स्मरणीय रहेंगे। गुरुजी से मिलने के पूर्व कई हृदय रोग विशेषज्ञों ने उनको बायपास करवाने की सलाह दी थी। गुरुजी से मिलने पर उन्होंने मामाजी को उनके पैर दबाने और अपनी समस्या बताने को कहा था। जब तक मामाजी ने अपनी समस्या उनको बतायी उन्होंने कहा कि उनके हृदय का बायपास हो गया है और उनको शल्य क्रिया करवाने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्हीं विशेषज्ञों द्वारा पुनः किये हुए परीक्षणों से पता लगा कि मामाजी के हृदय की अवस्था में आया हुआ सुधार शल्य क्रिया से भी संभव नहीं होता।

हम पिछले सात वर्षों से निःसंतान थे। यद्यपि इसकी चिंता हमें लगी रहती थी, समस्त प्रयासों के बाद भी हम विफल रहे थे और हमने इसकी आशा छोड़ दी थी। परन्तु जब हमने सत्संग और गुरुजी की दया से हुए चमत्कार सुने तो हम पुनः आशावान हुए कि कृपा हुई तो यह संभव हो जाएगा।

हम एम्पाएर एस्टेट स्थित गुरुजी के मंदिर में देर शाम को पहुंचे

थे। उनके दर्शन भी हुए और हमने लंगर भी ग्रहण किया। गुरुजी ने हमें अपना परिचय देने के लिए कहा और फिर अपने जन्म दिवस पर को एम्पाएर एस्टेट के निकट ही 'दी रेंच' नमक स्थान पर आने का निमंत्रण भी दिया। वहां जाकर उपस्थित अपार जन समूह को देख कर हम विस्मित रह गये। प्रत्येक को गुरुजी की कृपा के बारे में कुछ बताने के लिए था। इस आशा से कि हमें भी कभी गुरुजी के आशीर्वाद मिलेंगे हमने गुरुजी के पास जाने का नियम बना लिया। हम गुरुजी को अपनी समस्या के बारे में बताना चाहते थे किन्तु संगत के सदस्यों ने मना किया और कहा कि समय आने पर गुरुजी स्वयं ही उसका उल्लेख करेंगे।

एक दिन गुरुजी ने उनके पास आने का कारण पूछा तो मैंने उन्हें बताया कि मेरी कोई संतान नहीं है। उन्होंने कहा कि हमारी संतान होगी और हमारे आने के दिन निश्चित कर दिये। मैं गुरुजी के कथन से प्रसन्न थी किन्तु मुझे यह भी चिंता थी क्या गुरुजी को वास्तव में हमारी समस्या का ज्ञान है। क्या उन्हें पता है कि हमारे कितने उपचार हो चुके हैं और वह सब असफल रहे हैं? मैं सोच रही थी क्या उन्हें पता है कि मेरी गर्भाशय की नलियों में कुछ त्रुटि है और मेरे पति की शुक्राणुओं की संख्या कम है। अंततः चिकित्सकों ने बाह्य प्रत्यारोपण कर गर्भाशय में बिठाने का प्रयास करवाने का सुझाव दिया था, किन्तु अधिक मूल्यवान होने के साथ ही उसके सफल होने की आशा भी कम थी।

हम गुरुजी के दर्शन उनके निश्चित किये दिनों को करते रहे। अन्य क्षेत्रों में निरंतर प्रगति होती रही: मेरा कार्य स्थायी हो गया और मेरे पति को अधिशासी एम बी ए करने के लिए नामांकित किया गया।

परन्तु उपचार के क्षेत्र में सुधार नहीं था – चिकित्सकों को कोई आशा नहीं थी। उन्होंने कम मूल्यवान उपचार, गर्भाशय में वीर्यारोपण का सुझाव दिया था। इसके असफल होने पर वह बाह्य प्रत्यारोपण कर गर्भाशय में बिठाने के प्रयास करने का परामर्श दे रहे थे।

मई 2000 में मेरे पति का एम बी ए में चुने जाने का समाचार आ

गया था और उन्हें एक वर्ष के लिए जाना था। इसका अर्थ था कि एक वर्ष के लिए चिकित्सा रुक जायेगी। मैंने चिकित्सकों के कहे अनुसार गर्भाशय में वीर्यारोपण करवाया पर परिणाम प्रतिकूल ही रहे। हमने गुरुजी के दर्शन कर पति के एम बी ए के बारे में बताया तो वह बोले, *''फिर ते कल्याण हो गया''*। मैं अत्यंत दुखी थी। वह कैसा कल्याण है? मेरे पति एक वर्ष के लिए बाहर रहेंगे, कोई उपचार संभव नहीं था और अगले दो वर्ष तक मैं संतानहीन रहूंगी। परन्तु गुरुजी ने यह सब देख लिया था और वह किया जिसकी हमें कल्पना भी नहीं थी...

हाँ, कुछ दिन के उपरान्त हुए गर्भाशय परीक्षण में पता लगा कि मैं गर्भवती थी! हम दोनों को विश्वास नहीं हो रहा था। हम दोनों हर्ष से विह्वल और कृतज्ञ थे। आंखों में आंसू भरे हम दोनों बहुत देर तक गुरुजी के चित्र को चूमते रहे। उन्होंने हमारी नियति को परिवर्तित कर दिया था। उस संध्या को हम गुरुजी को यह शुभ समाचार देने उनके दर्शन हेतु गये तो उन्होंने संकेत दिया कि मैं कुछ न बोलूँ। *''मैनूं पता ए''* उन्होंने कहा। ''हाँ'', मेरे मन में विचार आया, ''केवल उन्हीं को पता होगा।''

पति की अनुपस्थिति होते हुए भी मेरा गर्भाकाल बिना किसी समस्या के पूरा हो गया। मैंने एक पुत्र को जन्म दिया। मैं उसे गुरुजी के पास, जिनके आशीर्वाद से वह उत्पन्न हुआ था, ले जाने को उत्सुक थी, किन्तु 40 दिन तक नवजात को बाहर न ले जाने की प्रथा ने मुझे रोक दिया।

40 दिन के पश्चात् हम उसे गुरुजी के पास ले गये। वह मुस्कुराये और बोले कि क्या मुझे एक और पुत्र चाहिए। मैं चुप रही। उसके बाद हर दर्शन पर वह यही प्रश्न दोहराते रहे। मैं उसे उनका परिहास समझती रही कि इतने छोटे शिशु के साथ उस पूरी प्रक्रिया को पुनः कैसे कर पायेंगे। एक दिन जब गुरुजी ने पुनः वह प्रश्न पूछा तो मेरे मुंह से निकल पड़ा, ''जैसे आपकी इच्छा।'' एक सप्ताह के पश्चात् मुझे पता लगा कि मैं फिर से गर्भवती हूँ - बिना किसी उपचार, औषधि या चिकित्सा

प्रक्रिया के और उन्हीं दूषित गर्भाशय नलियों के साथ। यह केवल गुरुजी के दिव्य आशीष थे। मैंने फिर एक पुत्र को जन्म दिया।

दोनों बड़े हो रहे हैं: चंचल और सदा कोई शैतानी करते हुए। इतने बड़े नहीं हुए जो समझ पायें कि गुरुजी की कृपा से वह इस संसार में आये हैं। चिकित्सा की दृष्टि से हम संतान के योग्य नहीं थे। परन्तु फिर कोई है, जो मनुष्यों की आकांक्षाओं को पूर्ण कर सकता है, विधान बदल सकता है और उनमें सदा आशा की ज्योति जला कर रख सकता है। गुरुजी, आप धन्य हैं। आपने अपनी संगत में हमें आश्रय दिया और हमारे जीवन को ऐसे परिवर्तित किया जो किसी और से संभव नहीं था।

– श्रीमती पूनम सेठी, दिल्ली

प्रेम प्रवाह की पीड़ा में...

गुरुजी से मिलना मेरे जीवन का सबसे सुन्दर अनुभव रहा है। मार्च 2005 में, जब मैं अत्यंत अस्वस्थ चल रही थी, मुझे उनके प्रथम दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अक्सर मैं चिकित्सालयों में रहा करती थी। मेरे पैर इतने सूजे हुए थे कि मेरी बेटियों को उन्हें उठा कर बिस्तरे या भूमि पर रखना पड़ता था। मैं चलने का सोच भी नहीं सकती थी, जमीन पर बैठना तो दूर की बात थी।

पहले दिन जब मैं गुरुजी के पास गयी – मुझे मेरी 96 वर्षीया आंटी, उनके पुत्र और पुत्रवधू लेकर गये थे – मैं चल भी नहीं पा रही थी और मेरी सांस फूल रही थी। लंगर के पश्चात् जब मैं घर गयी तो कई वर्षों बाद मुझे चैन से नींद आयी। गुरुजी के पास आने पर मेरे मधु, रक्तचाप और कॉलेस्ट्रोल के स्तर अति उच्च थे। मुझे गलग्रंथी और गुर्दों की समस्याएँ थीं। सोते हुए ऑक्सीजन की कमी के कारण मुझे नींद नहीं आती थी – रोग को निद्रा अश्वसन कहते हैं। मेरे में कोई ऊर्जा नहीं थी और मेरा शरीर इतना फूला हुआ था कि लेटे रहने के अलावा मैं कुछ नहीं कर सकती थी।

गुरुजी ने मुझमें ऊर्जा का संचार किया है और मेरा जीवन ऐसे परिवर्तित किया है जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी। यह पुनर्जन्म लेकर जीवन के नये रूप में रहने के समान है। मेरे शारीरिक उपचार के साथ साथ मेरा मानसिक उपचार भी हुआ है।

दूसरे या तीसरे लंगर के पश्चात्, गुरुजी ने हमें लंगर के बादे रोक लिया। उनका प्रेम प्रवाह इतना तीव्र है कि मैं सब कुछ भूल कर उसके आनंद में डूब गयी – सब समस्याएँ भूल कर जीवन इतना सरल हो जाता है कि हम सदा उनके संरक्षण में रहना चाहते हैं।

वह मेरे सर्वस्व हैं क्योंकि मैं उनके बिना कुछ नहीं कर सकती हूँ और कुछ करना भी नहीं चाहती हूँ। त्रिदेव एक ही हैं और वह हमें बचाने के लिए अवतरित हुए हैं। उनके पास पहुंचना ही अपने आप में एक चमत्कार है। हमारे जीवन में उनकी उपस्थिति अनिवार्य है और हम केवल उन्हें अपना अप्रतिबंधित प्रेम और आस्था समर्पित कर सकते हैं। उनके साथ होने का तात्पर्य है कि अपने किसी पिछले जन्म में उनके साथ थे और हम उनके अभिन्न अंग हैं। इसी कारण हम इस जन्म में भी उनके साथ हैं। हमें संगत को अपना वृहत परिवार मानना चाहिए।

मैं गुरुजी के साथ अत्यंत कम समय रह पायी हूँ किन्तु मुझे प्रतीत होता है कि इस अल्पकाल में भी उन्होंने मुझे मृत्यु का ग्रास बनने से बचाया है।

1994 में मेरे पति किसी और से प्रेम करने लगे। मुझे लगा मानो मेरा जीवन ध्वस्त हो गया है। उन्होंने मेरे साथ विश्वासघात किया था। फिर भी मुझे लगता रहा कि एक दिन सब पहले जैसे सामान्य हो जाएगा। हिन्दू परिवार से होते हुए मैंने एक मुसलमान से प्रेम विवाह किया था और धर्म परिवर्तन भी किया था। 2006 में मेरे पति ने अपनी इस प्रेमिका से विवाह कर लिया। यह होने के बाद भी मैं संतुष्ट हूँ। इस शांत भाव की प्राप्ति के लिए गुरुजी ने मुझे आत्म–नाश से रोका; मैं उस अवस्था में थी जब मैं आत्महत्या को छोड़कर कुछ भी करने को तत्पर थी। 1998 में मेरी एक बड़ी शल्य क्रिया हुई थी जो सात आठ

घंटे चली थी। उसके पश्चात् जब मेरी जीवन नैय्या डूब रही थी, गुरुजी ने ही मुझे बचाया था।

कुछ समय पूर्व ही, होली के अवसर पर, मेरे पैरों पर छाले हो गये और किसी कारणवश यह सड़ने लगे। घाव में से बदबू आने लगी। चिकित्सक ने मेरा पैर देख कर कहा कि अंगूठे को काटना पड़ेगा। उस दिन वृहस्पतिवार था और गुरुजी के दर्शन के लिए मेरा नियत दिन शुक्रवार था। कहने की आवश्यकता नहीं कि उनकी आज्ञा के बिना मैं कुछ भी करवाने को तैयार नहीं थी। गुरुजी ने कहा कि एक छोटा सा छेद करने से वह ठीक हो जाएगा। वैसा करने से एक माह में मैं ठीक हो गयी। अभी तक मैंने किसी अंग विच्छेदन रोगी को उससे बचते नहीं देखा है।

कभी कभी मैं दु:खी होती हूँ क्यों मैं अपनी शरीर के प्रति इतना असावधान रही हूँ और मैंने उसका ध्यान नहीं रखा हैं। यदि मुझे पता होता कि एक दिन मुझे अपने स्वामी के दर्शन करने पड़ेंगे, तो मैं अपनी शरीर को इतना रोगग्रस्त नहीं होने देती और उन पर इतना बोझ नहीं बनती। गुरुजी अपने अनुयायी की वेदना अपने पर अंतरित कर लेते हैं। जब वह हमारे कारण कष्ट उठाते हैं, मैं अपने आप को असहाय पाती हूँ। क्या हम कुछ कर सकते हैं?

मुझे ज्ञात नहीं है कि मैंने उनको पूर्ण समर्पण किया है या नहीं। क्या मुझे संशय है या प्रेम के कुछ तत्व को रोक कर यह उनसे अप्रतिबंधित प्रेम का नाटक है? मुझे पता नहीं है कि प्रेम क्या होता है। मुझे केवल इतना ज्ञान है कि जब से मैं उनसे मिली हूँ, मैं उनकी दिव्यता को प्रतीत करना चाहती हूँ। इससे अधिक और क्या माँगू? गुरुजी का प्रेम सदा हमारे हृदयों में खिलता रहे। कुछ भी हो जाये पर मैं उन तक पहुंचना चाहूंगी। मैं निवेदन करती हूँ कि मेरे कर्मों को इस प्रकार से परिवर्तित करें कि हमें सदा उनकी उपस्थिति का आभास होता रहे। मैं अपने स्वामी के साथ ऐसे ही रहना चाहती हूँ। जितना मैं उनको देखती हूँ, उतनी ही मेरी प्यास बढ़ती है और इस प्यास को बुझाने के

लिए एक जीवन पर्याप्त नहीं है। आत्मा की भूख और प्यास का ध्यान तो केवल उसके स्वामी ही रख सकते हैं।

मुझे सदा चिंता लगी रहती थी कि मेरे बाद मेरी अवयस्क बेटियों का क्या होगा? पर उसका भी निर्णय हो गया है। मेरी बेटियों को, अब गुरुजी के संरक्षण में, सुरक्षित होने का आभास होता है। उनको जो प्रेम अपने पिता या मेरे से नहीं मिला वह उनको गुरुजी और उनकी संगत से मिल रहा है। यह बात मुझे आनंदित करती है। मैं मोक्ष का अर्थ नहीं जानती। मेरे लिए उनके दिव्य दर्शन ही मोक्ष हैं।

यह तो मेरी यात्रा का आरम्भ है जिसकी राह का पता नहीं है, किन्तु वह अत्यंत रोचक होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है। लक्ष्य तो दिव्य परमात्मा से मिलने का है।

यदा कदा गुरुजी मेरी ओर देखते हैं, मानो कह रहे हों कि तुम्हारे अल्लाह वह नहीं कर पाये जो गुरु ने कर दिखाया है। ऐसे समय पर मैं मूक बन कर उनको देखती रहती हूँ; अपना सिर तक नहीं हिला पाती हूँ और कुछ भी कहने में असमर्थ रहती हूँ। आज मुझे लगता है केवल अल्लाह ही यह कह सकते हैं। शनैः शनैः मुझे विश्वास हो गया है कि वह उस सर्व शक्ति और ऊर्जा के स्त्रोत हैं जिसके हम अंग मात्र हैं। विभिन्न काल में विभिन्न अवतारों में वह मानवता को सही मार्ग और उनके कष्टों से बचाने के लिए आये हैं। आप उनको अल्लाह, राम या गुरु नानक, किसी भी नाम से संबोधित कर सकते हैं। मेरी कामना है कि मेरा मन उस स्तर पर पहुँच सके जहाँ पर मुझे केवल उनका आभास हो और मुझे सदा उनके कमल चरणों में स्थान मिले। मेरा गुरु प्रेम इतना सशक्त हो कि उनके और मेरे मध्य और कोई न आ सके। सच्चे भक्त की भांति मैं उनकी सराहना कर सकूं क्योंकि उन्होंने हमें वह सब दिया है जो हमारे लिए आवश्यक था। हम तुच्छ प्राणी उनके लिए कुछ भी करने में असमर्थ हैं; हम केवल उनके प्रति धन्यवाद और हार्दिक आभार प्रकट कर उन्हें जीवन पर्यंत याद रख सकते हैं। वह सदा हमारे दुष्कर्मों को क्षमा करें। हम मनुष्य हैं और भूल कर सकते हैं। तो,

गुरुजी कृपया हमें मोह से बचाएं और हमारी अंतिम सांस तक आपके प्रति श्रद्धा सदा विकसित होती रहे। उसके पश्चात् हमें आपकी सहायता की आवश्यकता और अधिक होगी। हम आपकी छत्रछाया में सौभाग्यशाली हैं; भावात्मक ढंग से हम सुरिक्षत हैं और इतने पूर्ण हैं कि अशांति का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

मैं अपने आप से पूर्णतया संतुष्ट हूँ। यह प्रशांत भाव है। कभी कभी मेरे हृदय में कृतज्ञता का प्रवाह इतना अधिक होता है कि मेरी अश्रुधारा बहने लगती है। यह अति सुन्दर अनुभव होता है जब केवल प्रेम के कारण आंसू बहें। गुरुजी के पास दो बार आने के पश्चात् मुझमें उनके समीप होने की चाहत बढ़ गयी है। मैं अपने आप को रोक नहीं पाती थी। मेरे पति को क्रोध आता था और हम झगड़ते थे पर मैं गुरुजी के पास पहुँच जाती थी। हर बार गुरुजी प्रश्न किया करते थे कि मैंने क्या बहाना बनाया है और मैं व्यथित होती थी कि उन्हें कैसे पता। किन्तु अब मुझे पता हे कि वह तो स्वयं परमात्मा हैं और उनको प्रत्येक कर्म का ज्ञान है। हम कठपुतलियों को उनकी उँगलियों पर नाचना है, उनके बिना हमारा अस्तित्व ही नहीं है।

गुरुजी के बारे में लिखना सरल नहीं है – उनके आकर्षण को शब्दों में प्रकट करना अत्यंत कठिन है। यदि सारे महासागर स्याही बन जाएँ और सारी पृथ्वी कागज़, तो भी यह संभव नहीं हो पायेगा। मैं अपने प्रभु और स्वामी की प्रशंसा प्रलय तक करती रहना चाहूंगी। कृपा करें कि मैं ऐसा कर सकूं। शब्द कम पड़ जायेंगे किन्तु मेरी भावना कम नहीं होगी। अंत में मैं अपनी पाँचों इन्द्रियां उनके चरणों में समर्पित करना चाहूंगी और वह मेरी इस भेंट को स्वीकार करें।

– श्रीमती पूर्णिमा अली, दिल्ली

एक आशीष से गुर्दे का आकार बड़ा

दिल्ली के एक प्रसिद्ध चिकित्सालय में शल्य क्रिया करवाने के बाद श्रीमती प्रोमिला मेहता अपने जीवन के लिए जूझ रहीं थीं। वह 1995 से उच्च रक्त चाप से पीड़ित थीं। जुलाई 2000 में उनकी गर्भयोच्छेदन, गर्भाशय निकालने, की क्रिया हुई। चिकित्सकों ने शल्य क्रिया करते हुए उनके उच्च रक्त चाप की उपेक्षा कर दी। शल्य क्रिया के पश्चात् उनका रक्त चाप बढ़ कर 180/120 हो गया और दो सप्ताह तक उसी स्तर पर रहा।

फलस्वरूप उनके गुर्दे क्षतिग्रस्त हो गये और उसका कोई उपचार नहीं था। उनका क्रितेनाइन का परिणाम 1.8 पहुँच गया जो सामान्य मनुष्य के लिए अति उच्च स्तर माना जाता है। प्रोमिला ने स्वस्थ होने के लिए शल्य क्रिया करवायी थी किन्तु उसके पश्चात् उनकी जान को बन आयी। शरीर के दूषित रक्त को स्वच्छ करने वाले दोनों गुर्दों ने कार्य करना बंद कर दिया।

प्रोमिला कई चिकित्सकों के पास घूमीं। उनका उपचार बंगलौर, दिल्ली के एम्स और नोएडा के कैलाश चिकित्सालयों में हुआ किन्तु कहीं भी लाभ नहीं हुआ। उन्होंने आयुर्वेदिक, होम्योपेथी और एकुपंक्चर पद्धतियों से भी उपचार करवाये पर सब असफल रहे। चिकित्सकों ने कहा कि गुर्दों का प्रत्यारोपण ही अंतिम समाधान है।

समस्या गंभीर होने के पांच वर्ष उपरान्त उनकी एक सहकर्मी ने गुरुजी के बारे में बताया। उन्हें अप्रैल 2004 में बताया गया था किन्तु उनको गुरुजी के दर्शन का अवसर 21 जुलाई 2004 को ही मिला। गुरुजी ने उनके आने के लिए संभवतः वही दिन निश्चित किया होगा – उस दिन गुरु पूर्णिमा थी।

गुरुजी ने उन्हें एक ताम्र लोटा लाने को कहा जिसे उन्होंने अभिमंत्रित किया। वह रोज उसका जल पीती थीं। जुलाई 2005 से दिसंबर 2005 तक वह गुरुजी के दर्शन के लिए चारों दिन (वृहस्पतिवार से रविवार तक) आती थीं। उस लोटे का जल ग्रहण करने के कुछ दिन उपरान्त ही उन्होंने देखा कि उनकी त्वचा, जो वृद्धों जैसी दिखने लगी थी, विशेषकर गर्दन के आसपास, में सुधार आने लगा। एक दिन जब वह गुरुजी के पास बैठी थीं, उन्होंने गुरुजी से कहा कि उनके शरीर में रक्त ही नहीं है और वह सदा दुःखी रहती हैं। गुरुजी यह सुनकर मुस्कुराये पर कुछ नहीं बोले।

13 दिसंबर को प्रातः पांच बजे वह अचानक उठीं तो उन्हें अपनी नाक कुछ चिपचिपी सी लगी। उन्होंने बत्ती जलाये बिना ही अपनी नाक अपने रात्रि वस्त्र से पौंछ ली। थोड़ी देर के बाद उन्हें लगा कि वह फिर भी बह रही है। उन्होंने बत्ती जलाई और अपने नाक से रक्त बहते हुए देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुईं। एक रूमाल शीघ्र ही रक्त से भर गया। उन्होंने अपने पुत्र को जगाया और वह दोनों कैलाश चिकित्सालय भागे। चिकित्सकों ने रक्त रोकने का भरसक प्रयत्न किया किन्तु उसके न रुकने के कारण उन्हें प्रविष्ट कर लिया।

प्रातः 6:30 बजे प्रोमिला ने अपने पति को फोन किया जो उस समय बंगलौर में थे और उनको तुरन्त आने के लिए कहा। चिकित्सालय में रहते हुए उनके पास गुरुजी का चित्र था। पता लगा कि रक्त बहने का कारण गुर्दों का सही रूप से कार्य न कर पाना था। समस्या के उपचार के लिए उनका चार दिन में तीन बार डायलिसिस किया गया। साथ ही तीन रक्त की बोतलें और दो प्लाज्मा की बोतलें भी चढ़ाई गयीं। उनकी त्वचा का रंग पीले से लाल हो गया – जिसके लिए उन्होंने कुछ दिन पहले गुरुजी से विनती करी थी। यदि आप गुरुजी से कुछ भी मांगेंगे और वह आपके भले के लिए होगा तो वह आपको मिल जायेगा।

एक सप्ताह में वह चिकित्सालय से बाहर निकल कर गुरुजी के पास आयीं। गुरुजी ने उनको बताया कि उनके दोनों गुर्दे सही हैं और उन्हें नव जीवन मिला है।

वह गुरुजी के दर्शन के लिए आती रहीं और उनके आशीष का अभिन्न अंग, लंगर भी करती रहीं। गुरुजी के लंगर में स्वादिष्ट सब्जियां, चटनी, अचार, मिठाई इत्यादि होते हैं जिनका चिकित्सक निषेध करते हैं। पर श्रीमती प्रोमिला उस भोजन को शीघ्रता से पचा पाती थीं और उनका पूरा सप्ताह सुखपूर्वक व्यतीत होता था।

फरवरी 2006 में वह फिर रुग्ण हो गयीं और उन्हें कैलाश चिकित्सालय में तीन बार डायलिसिस कराने पड़े। उन्हें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में वृक्क रोग विशेषज्ञ से मिलने का समय मिल गया तो उन्होंने पराध्वनिक चित्रण करवाने का परामर्श दिया। उनके अनुसार यदि उनके गुर्दे का आकार अगस्त 2003 के समान हुआ तो औषधियों का सेवन करती रहेंगी अन्यथा उसके घटे हुए होने पर प्रत्यारोपण कराना आवश्यक होगा। श्रीमती मेहता ने एक स्थानीय प्रयोगशाला से परीक्षण करवाया तो गुर्दों का आकार कम निकला।

उन्होंने गुरुजी के पास आकर उनके आशीष की कामना करी, यह जानते हुए भी कि चिकित्सकों ने अब प्रत्यारोपण ही अंतिम उपचार सुझाया है। गुरुजी ने उन्हें पुनः आशीर्वाद दिया।

अगले सोमवार को प्रोमिला ने उसी प्रयोगशाला से अपना परीक्षण करवाया जिसने अगस्त 2003 में किया था। चमत्कार से वह उसी आकार का पाया गया जो 2003 में था। अतः अब प्रत्योरापण का प्रश्न ही नहीं था। चिकित्सालय में रहते हुए उन्होंने गुरुजी के चित्र अन्य रोगियों को भी दिये; वह भी शीघ्र ही स्वस्थ होकर बाहर आ गये।

प्रोमिला के स्वस्थ होने पर गुरुजी ने उन्हें सप्ताह में एक बार दर्शन के लिए आने को कहा। गुरुजी के पास हर दर्शन अति निराला अनुभव होता है, किन्तु गुरुजी नये भक्तों को भी समय देना चाहते थे। सप्ताह में एक दर्शन भी उनको प्रफुल्लित कर देता हैं। वह कहती हैं कि उस एक दर्शन और लंगर से भी उनमें पूरे सप्ताह के लिए नवीन ऊर्जा आ जाती है।

– श्रीमती प्रोमिला मेहता, नोएडा द्वारा कथित

शोक संतप्त परिवार का उद्धार

मेरी पत्नी के एक सम्बन्धी, जो पंजाब के कपूरथला जनपद में स्थित सिधवान दोना ग्राम में रहते हैं, के घर पर दो पुत्रियों के पश्चात् जुड़वां पुत्र उत्पन्न हुए थे पर चार पांच दिनों के बाद ही दोनों की मृत्यु हो गयी। परिवार स्तब्ध रह गया। माँ शोकग्रस्त हो गयी और परिवार का व्यवसाय डूबने लगा।

एक दिन पिता ने मुझसे फोन पर बात करी तो मैंने उन्हें गुरुजी के दर्शन करने के लिए कहा। सत्संग सुन कर उनके मन में गुरुजी के आशीर्वाद की कामना जागृत हुई। पिता को बहुत अच्छे दर्शन हुए होंगे। एम्पाएर एस्टेट से निकलने के पश्चात् वह अति आशावान थे, उनकी आँखों में आंसू थे और उन्होंने कहा कि उन्होंने भगवान के दर्शन किये हैं। फिर वह अपने गाँव वापस चले गये।

आज उनके कहे बिना ही, वह एक स्वस्थ पुत्र के पिता हैं। जब वह अगली बार आये तो गुरुजी ने उनको यह कह कर जाने के लिए कहा कि उनकी मनोकामना पूर्ण हो गयी थी। गुरुजी की ऐसी कृपा है। उन्होंने परिवार को न केवल एक पुत्र दिया, उसे शोकावस्था से भी बाहर निकाल दिया। आशीष की कोई सीमा नहीं होती। एक शबद के अनुसार, कृपा वृष्टि सब पर होती है परन्तु केवल नम्र प्रकृति वाले उसे ग्रहण कर पाते हैं, जैसे ऊँचे पर्वतों से जल बह कर नीचे घाटियों में आ जाता है और वहीं वह ठहर जाता है।

– प्रदीप सूद, कपूरथला

कृपालु गुरुजी का आश्रय

20 वर्ष पूर्व जब मैं आगरा स्थित वायुसेना छावनी में विमान चालक था, मेरे वार्षिक चिकित्सा परीक्षणों में चिकित्सकों को मेरे ई सी जी में कुछ प्रतिकूल लक्षण मिले। मेरी बहन के पति, ब्रिगेडियर दत्ता उस समय जालंधर में कार्यरत थे। वह अपने परिवार सहित गुरुजी के पास जाया करते थे। मेरी बहन ने गुरुजी के दर्शन करने का आग्रह किया। दर्शन के पश्चात् गुरुजी मुझे एक कमरे में ले गये और मेरे हृदय पर एक चम्मच रख कर बोले, *''तेरा कल्याण हो गया।''*

जब मैं आगरा लौटा तो पुनः मेरा ई सी जी लिया गया। गुरुजी की कृपा से सब सामान्य आया। अगले दिन मेरी पत्नी जालंधर जा रही थी। मैंने उसे गुरुजी के दर्शन करने के लिए कहा तो उसने अनिच्छा व्यक्त की। जब वह गुरुजी से मिली तो उन्होंने उसे कहा कि आगरा में तो वह उनके पास नहीं आना चाह रही थी। वह आश्चर्यचकित थी। जब वह उनसे चलने की आज्ञा ले रही थी तो उन्होंने कहा कि जम्मू से वह फिर उनके दर्शन के लिए आयेगी। मेरी पत्नी ने कहा कि उसकी वहाँ से सीधे आगरा जाने की योजना है। गुरुजी ने फिर कहा कि आगरा लौटने से पूर्व वह जालंधर हो कर जायेगी।

जब मेरी पत्नी जम्मू पहुंची तो उसने अपनी माँ को हर्पीस (एक त्वचा रोग) से पीड़ित पाया जिसका कोई उपचार नहीं है। उसने अपने माता पिता को गुरुजी के बारे में बताया था। उसके पिता ने आग्रह किया कि वह अपनी माँ को लेकर गुरुजी के पास जालंधर जाये। अगले दिन

मेरी पत्नी पुनः गरूजी के चरणों में थी – जैसे उन्होंने कहा था। गुरुजी ने मेरी सास को अपना आशीष दिया और कुछ ही दिनों में वह पुनः स्वस्थ हो गयीं।

वायुसेना में होने के कारण मैं अनेक स्थानों पर रहा और अगले 20 वर्षो तक गुरुजी के दर्शन नहीं कर पाया। लेकिन हमारे हृदय में गुरुजी के प्रति सदा आस्था बनी रही।

अगस्त 2005 में चिकित्सकों ने बताया कि मेरी पत्नी के दोनों गुर्दे शीघ्र ही काम करना बंद कर देंगे। हमें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। किसी ने बताया कि गुरुजी अब दिल्ली में हैं। हम में आशा जागृत हुई कि उनकी कृपा से सब ठीक हो जाएगा। अतः 20 वर्षो के पश्चात् जब हम गुरुजी के पास पहुंचे तो उन्होंने मुझे मेरे नाम से संबोधित किया। मैं अचंभित था। उन्होंने कहा कि उनको मेरी पत्नी की स्थिति का ज्ञान है और ताम्र लोटा लाने के लिए कहा। अगले दिन जब हम लोटा लेकर पहुंचे तो उन्होंने मेरी पत्नी को आशीर्वाद देते हुए कहा, *''तेरा कल्याण हो गया।''*

उस दिन से वह स्वस्थ हो रही है। अगस्त 2004 में उसका क्रीतेनिन की मात्र 7.2 थी जो दस माह में घट कर 5.1 रह गयी है। हमें पता है कि यह गुरुजी की कृपा से संभव हो रहा है। मुझे विश्वास है कि हमें सदा उनका आशीर्वाद मिलता रहेगा।

–विंग कमांडर (सेवा निवृत) बी लखनपाल, आगरा

गुरुजी के शब्दों से 12 वर्षों के कष्टों से मुक्ति

1996 में डुगरी ग्राम (गुरुजी का पैतृक स्थान) के श्री बख्शीश सिंह गुरुजी की शरण में आये। उनकी पुत्री का एक कान का पर्दा पिछले 12 वर्ष से क्षतिग्रस्त था। उसे ज्वर के अतिरिक्त गले में खारिश रहती थी और कान से पस भी बहता था। चिकित्सकों, पंडितों, ज्योतिषियों, बाबा और संतों – सब मार्ग अपना कर देख लिए थे पर असफलता ही हाथ लगी थी।

अंततः बख्शीश ने गुरुजी से विनती करने का विचार बनाया। गुरुजी उन दिनों पंचकूला में थे। जब बख्शीश अपनी बेटी के साथ वहाँ पहुंचे तो गुरुजी ध्यान में बैठे थे। एक सेवक ने जब गुरुजी को उनके आगमन का समाचार दिया तो गुरुजी ने उनको अगले सप्ताह आने का निर्देश दिया। बख्शीश निराश अवश्य हुए क्योंकि उन्हें वहां तक पहुँचने

में चार घंटे लगे थे पर वह अगले सप्ताह छः बजे आने का विचार बना कर लौट गये।

अगले सप्ताह जब बख्शीश पहुंचे तो गुरुजी ने उनके आने का कारण पूछा। बख्शीश ने अपनी बेटी की समस्या बता कर गुरुजी से उनकी कृपा के लिए प्रार्थना करी। गुरुजी ने प्रश्न किया कि वह कौनसी कक्षा में पढ़ रही है। व्यथित पिता ने उत्तर दिया कि वह आठवीं कक्षा में है। गुरुजी मुस्कुरा कर बोले, *'कल्याण हो गया, जा ऐश कर।'* बख्शीश को यह साधारण पर अति शक्तिशाली वचन अस्पष्ट लगे तो वह खड़े रहे। गुरुजी ने पूछा कि क्या उनको कुछ और चाहिए। बख्शीश के यह पहले दर्शन थे। पिता ने हाथ जोड़कर गुरुजी से उनकी बेटी को लम्बे समय से चले आ रहे कष्टों से रोग निवृत करने की बात दोहराई। गुरुजी के निर्देशानुसार वह संगत में बैठे और उन्होंने प्रसाद और लंगर भी ग्रहण किया। फिर गुरुजी के आदेशानुसार उनको डुगरी जाने वाली अंतिम बस में बैठा दिया गया।

अगले दिन ही बख्शीश ने अपनी बेटी के रोग में सुधार देखा और, थाड़े ही दिन में वह समाप्त भी हो गया।

अब बख्शीश परिवार ने हर सप्ताह के अंत में गुरुजी के दर्शन के लिए आना आरम्भ कर दिया। उनका बस किराए का व्यय चिकित्सक से कहीं कम था।

आशीष के लिए घर से बुलाये गये

वर्ष बीतते गये; गुरुजी अब दिल्ली आ गये। बख्शीश और उनकी बेटी ने भी दिल्ली आना आरम्भ कर दिया। एक ऐसे ही दर्शन के अवसर पर गुरुजी ने अपने भक्त को अपनी पत्नी और पुत्र को साथ लाने को कहा, जिन्होंने अभी तक गुरुजी के दर्शन नहीं किये थे। यात्रा और घर सम्बंधित समस्याओं के कारण बख्शीश उनको लेकर नहीं आये और अगली बार भी अपनी बेटी के साथ ही आये। गुरुजी ने उनके बारे

में पूछा। जब ऐसा कुछ बार हुआ तो गुरुजी ने उन्हें अंतिम चेतावनी दी – पत्नी और पुत्र को लेकर आओ।

उनकी पत्नी और पुत्र संगत में आये तो गुरुजी ने उनकी पत्नी से उसके रोग के बारे में प्रश्न किया। उनकी पत्नी ने बताया कि उन्हें पीठ में दर्द रहता है जिसका कारण रीढ़ की हड्डी में समस्या है। चिकित्सकों की राय में उसका कोई उपचार नहीं है। गुरुजी ने हंस कर उत्तर दिया कि उनके दर्द का मूल कारण तो मानसिक हैं। अपनी बेटी का विवाह कराने से वेदना समाप्त हो जायेगी।

गुरुजी ने उनको दर्शन के लिए दो सप्ताह में एक बार आने को कहा। गुरुजी के इस गंभीरता रहित कथन से उनकी पीड़ा कुछ ही दर्शनों के बाद समाप्त हो गयी। गुरुजी की ऊर्जा ऐसी है। वह अपने सब अनुयायियों से अत्यंत प्रेम करते हैं और उन सबका भी ध्यान रखते हैं जो संगत के संपर्क में हैं, भले ही वह संगत में आकर उनके दर्शन कर पायें या नहीं। उल्लेखनीय है कि बख्शीश के अन्य परिवार के सदस्यों को उन्होंने विशेष रूप से बुलाया।

भक्त को मुक्ति

बख्शीश दिल्ली माह में एक बार आते थे। एक बार गुरुजी ने उनको अपने पास बुला कर दो सज्जनों से परिचय कराया। वार्ता के दौरान बख्शीश के पिता का उल्लेख आया जो 85 वर्ष के रहे होंगे। वह स्वस्थ थे, उनकी दृष्टि सामान्य थी और दन्त पीड़ा तक नहीं होती थी। बख्शीश ने कुछ निर्भीक होकर उनको अपने पिता के रोग के बारे में बताया जो घुटनों से टखनों तक था। चिकित्सक उनके रोग या पीड़ा को कम नहीं कर पाये थे। गुरुजी ने बख्शीश को आश्वासन दिया कि वह चिंता न करें, उनके पिता को रोग से निवृत्ति मिल जायेगी। प्रभु ने यह भी कहा कि यद्यपि चिकित्सक सहायता करते हैं उन्हें भी अपनी जीविका अर्जित करनी है।

बख्शीश के जाते समय गुरुजी ने एक फूलमाला, जो उनके किसी अन्य भक्त के उनके चरणों में चढ़ाई थी, उनको दी और कहा कि उसे जल में डाल कर उनके पिता उस पवित्र जल से स्नान कर लें। उसके बाद माला को पास के बहते जल में प्रवाहित कर दें। गुरुजी के निर्देश का अक्षरशः पालन हुआ और उनके पिता की वेदना तुरन्त समाप्त हो गयी।

इसके अतिरिक्त एक और महत्वपूर्ण घटना हुई। बख्शीश के पिता गुरुजी द्वारा मोहित हो गये। जब उनको भोजन करने को कहा जाता तो वह कहते कि उन्होंने गुरुजी का लंगर ग्रहण कर लिया है। परिवार के सदस्यों ने शीघ्र ही समझ लिया कि परिवार प्रमुख अब पूर्णतया, मानसिक रूप से, गुरुजी की शरण में पहुँच गये हैं; घर में उनकी उपस्थिति केवल भौतिक है। कुछ समय पश्चात् उनके पिता ने यह शरीर त्याग दिया। उनका अंत अपने पौत्र-पौत्रियों से बात करते हुए अत्यंत शांतिपूर्ण रहा। आज भी बख्शीश अपने स्वप्न में उनको गुरुजी के सम्मुख नतमस्तक होते हुए देखते हैं।

यह स्पष्ट है कि गुरुजी ने बख्शीश के पिता के अंतिम समय में उनके जीवन की बागडोर अपने हाथ में ले ली थी और उनको अति सुगमता से मृत्यु द्वार से होते हुए स्वर्गलोक तक पार करा दिया।

ट्रैक्टर पर गुरुकृपा

एक कृषक के लिए उसका ट्रैक्टर परिवार के सदस्य की भांति होता है, अंतर केवल उसकी भिन्न आकृति का है। बख्शीश ने नया ट्रैक्टर खरीदने से पूर्व गुरुजी से पूछा कि कौनसा खरीदा जाये। गुरुजी ने कोई भी नया (पुराना नहीं) ट्रैक्टर खरीदने का सुझाव दिया। बख्शीश ने नये कल-पुर्जों सहित स्वराज ट्रैक्टर खरीदा। उसकी ट्राली अत्यंत भारी धातु की बनी हुई थी और पूरे ग्राम में अपने प्रकार की पहली थी। क्योंकि वह बख्शीश की भूमि से तीन गुना अधिक भूमि पर एक समय में कार्य करने में समर्थ है, उस पर कभी भी अधिक भार नहीं पड़ता है।

बख्शीश के अनुसार उस ट्रेक्टर पर भी गुरुकृपा है। यह इस सन्दर्भ से स्पष्ट हो जाएगा। बख्शीश के पुत्र को स्वप्न आया कि जब वह उसे चला रहा था कुछ लोगों ने ट्रेक्टर को रोकने का प्रयास किया। ट्रेक्टर पर बैठे हुए एक व्यक्ति ने उसे ट्रेक्टर रोकने को कहा अन्यथा वह उससे ट्रेक्टर छीन लेंगे। उसने ट्रेक्टर रोक दिया पर उसी समय गुरुजी प्रकट हुए और उन्होंने उसे ट्रेक्टर चलाने का निर्देश दिया। उसने अपना वाहन आगे चलाया तो देखा कि उपस्थित जन समूह ने हट कर उसको जाने का मार्ग दे दिया। बख्शीश के पुत्र ने जब अपने परिवार को यह बात बतायी तो उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि गुरुजी ने किसी आने वाली विपदा से ट्रेक्टर की रक्षा करी है।

बख्शीश बड़े किसान बने

2004-2005 में गुरुजी ने संगत के कुछ सदस्यों को अपने ग्राम डुगरी जाने की स्वीकृति दी। संगत के 30-35 सदस्य जब डुगरी पहुंचे तो बख्शीश ने उन्हें लस्सी परोसी। रात्रि को बख्शीश की पत्नी को स्वप्न में गुरुजी ने पूछा कि क्या घर में घी की कमी है। जब उसने नहीं में उत्तर दिया तो गुरुजी ने प्रश्न किया कि केवल लस्सी देकर उसने मक्खन क्यों रख लिया था। वह शर्मिन्दा होकर उठ गयी। अगले दिन प्रातःकाल उसने यह घटना अपने परिवार के सदस्यों को सुनायी तो उन्होंने अनजाने में करी हुई गलती की पुनरावृत्ति न करने का निश्चय किया। अब मौका मिलने पर वह लस्सी मक्खन के साथ ही देते हैं। यद्यपि यह स्पष्ट नहीं है कि गुरुजी ने ऐसा क्यों किया। एक अन्य पक्ष से विचार किया जाये तो जितना अतिथि को दिया जाता है, परिवार उससे कहीं अधिक ईश्वर से प्राप्त करता है। उस परिपेक्ष में बख्शीश भी अब बड़े कृषक हो गये है।

पर बख्शीश परिवार पर गुरुजी की अभी और कृपा शेष थी। बख्शीश की अम्लता की समस्या के लिए गुरुजी ने उन्हें अभिमंत्रित ताम्र लोटे से जल पीने को कहा और वह रोग भी शीघ्र ही समाप्त हो गया।

जब बख्शीश ताम्र लोटा लेकर घर लौटे तो उनके पुत्र ने विनोद करते हुए कहा कि उसे छोड़कर घर के प्रत्येक सदस्य को गुरुजी ने कुछ न कुछ दिया है - बहन और पिता को ताम्र लोटा, माँ को चित्र और ताम्र लोटा - एक वही रह गया था। अगली बार जब वह गुरुजी के दर्शन के लिए पहुंचा तो गुरुजी ने उसे बुलाकर एक चित्र दिया। गुरुजी के इस आकस्मिक प्रतिदान से वह अति चकित और बेहद प्रसन्न हुआ।

बख्शीश परिवार पर गुरुजी की अनुकम्पा यही दर्शाती है कि उनकी अप्रतिबंधित कृपा और संरक्षण सदा भक्त के साथ रहते है।

- बख्शीश सिंह, डुगरी (गुरुजी का ग्राम)

मुझे नव जीवन दान दिया

मैंने भारत सरकार द्वारा आयोजित कैलाश मानसरोवर यात्रा पर जाने की योजना बनायी थी। जब मैंने गुरुजी से आज्ञा माँगी तो उन्होंने कहा कि मैं वहां क्यों जाना चाहता हूँ जब शिव तो मेरे समक्ष यहीं पर उपस्थित हैं। स्वाभाविक है, मैं, यात्रा पर नहीं गया।

उस वर्ष यात्रा मार्ग पर अनेक भूस्खलन हुए जिनमें 20 श्रद्धालुओं के दो दल उनके नीचे आ गये और उनमें से अनेकों की मृत्यु हो गयी। गुरुजी को इस बात का पहले ही आभास था और उन्होंने मुझे जाने से रोक दिया था। बाद में वह बोले कि देखो मैंने तुम्हारी जीवन रक्षा करी है।

उन्होंने एक बार पुनः मेरी रक्षा करी

मुझे गंभीर हृदय रोग था और एंजियोग्राफी की सलाह दी गयी थी। गुरुजी के निर्देश के अनुसार यह अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में हुई। इस पद्धति के बाद मुझे गहन सेवा केंद्र में ले जाया गया क्योंकि मुझे शांत दिल का दौरा पड़ चुका था। मेरी दो रक्त धमनियां करीब

करीब पूरी बंद थी और तीसरी 90 प्रतिशत बंद थी।

उसी दिन अपराह्न में मुझे फिर से दिल का दौरा पड़ा। गहन सेवा केंद्र में होने के कारण मेरा तुरन्त उपचार हो गया। यदि मैं घर पर होता तो मेरे पास चिकित्सालय तक पहुँचने का समय नहीं होता। रात्रि दस बजे बताया गया कि मेरे हृदय की बायपास शल्य क्रिया उसी समय होनी आवश्यक है, पर दो कारणों से यह विपत्ति जनक है। प्रथम मेरे हृदय के अवरोधों के कारण और दूसरा मेरे रूधिर पतला करने की औषधियों के लगातार सेवन के कारण। मेरे परिवार के सदस्यों ने जब गुरुजी से उनकी कृपा का अनुग्रह किया तो वह बोले कि चिकित्सकों को अपना कार्य करने दो, मेरे शरीर के अन्दर का वह संभाल लेंगे।

फिर उन्होंने ठीक वही किया। उसी रात को मेरे हृदय की शल्य चिकित्सा हुई। अन्दर अत्याधिक रक्त प्रवाह और अन्य बाधाएं थी, पर गुरुजी की कृपा से सब कुशलपूर्वक हो गया। अब वह समय बीत गया है और मैं बिलकुल सामान्य हूँ। इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि उन्होंने मुझे नव जीवन प्रदान किया है।

एक तीसरा अवसर 31 दिसंबर 2006 को आया। हर वर्ष की भांति बड़े मंदिर में आयोजन था। देर रात में, जैसे संगत ने जाने के लिए गुरुजी से आज्ञा लेनी आरम्भ की, उन्होंने मेरे परिवार के सदस्यों को तो जाने की अनुमति दे दी पर मुझे रुकने को कहा। एक घंटे के उपरान्त उन्होंने कहा कि उन्होंने मुझे नव जीवन दिया है और अब मैं जा सकता हूँ। उस समय मैं उनके शब्दों का तात्पर्य नही समझ पाया पर जब मैं घर पहुंचा तो पता लगा कि मार्ग में, जिस कार में मेरा परिवार जा रहा था, घने कोहरे के कारण दुर्घटना ग्रस्त हो गयी थी – ठीक उसी समय जब गुरुजी ने मुझे नया जीवन देने की बात करी थी। एक गति अवरोध पर सामने वाली कार ने अचानक ब्रेक लगा दिया और मेरे पुत्र के कार रोकने के सब प्रयास असफल रहे थे। वह अगली कार से जोर से टकरा गयी। सामने का बम्पर और जाली क्षतिग्रस्त हो गये, मेरी पत्नी का सिर

सामने शीशे से टकराया जो टूट गया। पर किसी भी यात्री को कोई चोट नहीं आयी। गुरुजी के पास अगले दर्शन पर वह बोले कि उन्होंने पूरे परिवार की रक्षा करी थी। आज भी हमारा परिवार उनकी इस कृपा के लिए कृतज्ञ है।

स्पष्टतया, गुरुजी सबका भविष्य जानते हैं और विनती किये बिना जो हित में होता है वह करते हैं। अनेक बार तो पता भी नहीं चलता कि उन्होंने क्या किया है। वह सब अनुयायियों की सहायता करते हैं। हमें केवल इतना ज्ञान हैं कि वह सदा हमारी समस्याओं, चिंताओं और कष्टों को दूर कर देंगे; हम अपने सब मानसिक तनाव उन पर छोड़ कर शांति पूर्वक रह सकते हैं।

गुरुजी को मिले बिना उपचार

मेरे ससुर की आयु नब्बे वर्ष से ऊपर ही होगी। वह मनोभ्रंश (डिमेंशिया) रोग से ग्रस्त थे जो बड़े लोगों को अक्सर हो जाता है। कभी कभी मेरे ससुर परिवार में किसी को पहचानते नहीं थे, आक्रामक हो जाते थे और मतिभ्रम होकर कल्पना करने लगते थे। उन्हें गुरुजी में विश्वास नहीं था और कभी उनसे मिले भी नहीं थे। गुरुजी ने मेरी पत्नी की प्रार्थना का उत्तर दिया और इस रोग से, जिसका आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में कोई उपचार नहीं है, उनको 90 प्रतिशत तक राहत मिल गयी।

छोटे पुत्र और मुझे नौकरी मिली

मेरा छोटा पुत्र एक यांत्रिक है और वह पूंजी बाज़ार में लगा हुआ था। एक बार गुरुजी ने उससे प्रश्न कर उसे नया कार्य करने की सलाह दी। मेरा पुत्र कई दिनों तक नौकरी ढूंढता रहा पर उसे सफलता नहीं मिली। एक दिन गुरुजी ने पुनः उससे प्रश्न किया और नकारात्मक उत्तर मिलने पर कहा कि उसे 15 दिन में नया कार्य मिल जाएगा। एक सप्ताह में उसको साक्षात्कार के लिए आमंत्रण आ गया और तेरहवें दिन उसे नया कार्य मिल गया।

छः वर्ष पूर्व मैं योजना आयोग से सेवा निवृत हुआ था। उसके बाद मैं कुछ कार्य करना चाहता था पर मुझे कोई अच्छा कार्य नहीं मिल रहा था। गुरुजी ने कुछ अवसरों पर सुझाव दिया था कि मैं किसी अच्छी संस्था में सलाहकार का काम कर लूं। मैं अच्छे कार्य की खोज में लगा रहा। एक दिन अचानक एक पुराने मित्र मिले जिन्होंने एकदम मुझे मेरी पसंद का कार्य दे दिया। संयोग से यह गुरुजी की महासमाधि के कुछ समय उपरान्त हुआ। इससे यही सिद्ध होता है कि गुरुजी अभी भी हमारे साथ हैं और हमारी सहायता कर रहे है।

संसाधन के अभाव में गृह निर्माण

सेवारत होते हुए मैं चाणक्यपुरी में सरकारी निवास में रहता था। सेवा निवृत होने के बाद मैंने द्वारका में एक छोटे घर में रहने का निर्णय ले लिया था। पर गुरुजी ने मुझे गुड़गाँव में एक 500 गज का भूखंड लेकर घर बनाने को कहा। उनसे बार बार निवदेन करने पर उन्होंने 360 गज का छोटा भूखंड लेने को कहा। आर्थिक अथवा शारीरिक रूप से मेरी इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि मैं ऐसा कर सकूं। पर जब निर्माण आरम्भ हुआ तो मुझे अपनी भूल का पता लगा। गुरुजी की दया निर्माण कार्य में विदित थी। जब भी धन की आवश्यकता पड़ती थी, वह मिल जाता था।

इस सन्दर्भ में दो दृष्टांत पर्याप्त होंगे। सामान्यतः बैंक सेवा निवृत लोगों को ऋण देना नहीं चाहते पर मुझे बैंक के अधिकारी ने स्वयं ऋण देने की बात कही और वह बिना किसी कठिनाई के मिल भी गया। यद्यपि हमारी पैतृक संपत्ति थी, मेरे भाई बहनों में मतभेद था और ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि यह कभी मिट पाएंगे। एक दिन जब मैं बड़े मंदिर में था मेरी बहन ने फोन किया और कहा कि सब मतभेद समाप्त हो गये हैं, एक खरीदार मिल गया है और मुझे पहली किश्त अगले दिन मिल जायेगी। इस प्रकार गुरुजी की कृपा से कभी भी धन की कमी नहीं हुई।

रोग से पहले उसका निदान

गुरुजी ने मेरी पत्नी को ताम्र लोटा लोने को कहा। हम चकित रह गये क्योंकि मेरी पत्नी को बढ़ती आयु की समस्याओं, कोलेस्ट्रोल और यूरिक अम्ल, के अन्यथा और कुछ नहीं था। पर हमने गुरुजी के निर्देशों का पालन किया। गुरुजी द्वारा अभिमंत्रित ताम्र लोटे से मेरी पत्नी ने प्रतिदिन जल पीना आरम्भ किया। कुछ दिन बाद ही वह रोग ग्रस्त हो गयी। परीक्षणों से ज्ञात हुआ कि यद्यपि उसके हिमोग्लोबिन में सुधार हुआ था पर कोलेस्ट्रोल और यूरिक अम्ल में गिरावट आ गयी थी। इतने अच्छे परिणाम तो पिछले 40 वर्ष में कभी नहीं आये थे। तत्पश्चात् वह शीघ्र स्वस्थ भी हो गयी। स्पष्ट था कि गुरुजी को उसके रोग का पूर्वाभास था और उन्होंने उसे पहले ही रोक दिया था।

मधुमेह का मीठा उपचार

मेरी माँ, जो सत्तर वर्ष से ऊपर थीं, मधुमेह रोग से पीड़ित थीं। उन्हें रोज इंसुलिन इंजेक्शन लेना पड़ता था। इसके अलावा हृदय और यकृत की समस्याएँ थीं, गठिया और अपचन भी थे।

वास्तव में वह गुरुजी ने पास आने की अभिलाषा रखते हुए भी आने का साहस नहीं जुटा पाती थीं क्योंकि संगत में पृथ्वी पर बैठना पड़ता था। परिवार के बार बार कहने पर उन्होंने आना आरम्भ किया।

पहले दिन ही गुरुजी ने उनकी मुठ्ठी भर कर बर्फी दी। मधुमेह का विचार कर उन्होंने थोड़ा सा खाकर शेष बच्चों के लिए रख ली। इतनी बड़ी सभा में गुरुजी के लिए यह देख पाना संभव नहीं था। पर गुरुजी तो अन्तर्यामी हैं और सब देख सुन सकते हैं। उन्होंने उन्हें बुला कर पहले से भी अधिक बर्फी देकर संगत में ही समाप्त करने का निर्देश दिया। उन्होंने वैसा ही किया और कुछ दिनों के उपरान्त चिकित्सकों ने उनके मधुमेह में आश्चर्यजनक सुधार देखे। उनके इंसुलिन इंजेक्शन बंद कर दिए – चिकित्सा विज्ञान में ऐसा संभवतः

कभी न हुआ हो। पर जैसा कहते हैं कि गुरुजी की दया वहां पर आरम्भ होती है जहाँ चिकित्सा विज्ञान असफल हो जाता है। उनके गठिये में भी सुधार आया और ऐसा ही हृदय रोग में हुआ। वह अब घंटों अपने पैर मोड़ कर बैठ सकती थीं। उनके हृदय की औषधियाँ भी कम कर दी गयीं।

यह सब गुरुजी को उनकी स्थिति बिना बताये हुआ। इसमें कोई संशय नहीं है कि गुरुजी हर स्थान पर हैं, उन्हें बताये बिना उन्हें सबका ज्ञान है और वह सब करने में सक्षम हैं। वह अपने अनुयायियों के हित में जो भी है वह स्वयं कर देते हैं।

– भगवान दास जेथरा, गुडगाँव

लेखापाल द्वारा गुरु आशीष की गणना

मैं गुरुजी के संपर्क में जनवरी 2000 में आया जब मेरा बाईस वर्षीय पुत्र एक बड़ी संस्था के साथ अधिकृत लेखापाल का अध्ययन कर रहा था। वह गत दो वर्ष से पीठ शूल से पीड़ित था, पिछले दस मास से बिस्तरे पर था और उसे हिलने डुलने और बैठने में अति वेदना होती थी। मैंने उसे दिल्ली, जालंधर, इंदौर, पलवल और सोहना के सब बड़े विशेषज्ञों और हकीमों को दिखा दिया था। इसके अतिरिक्त ज्योतिषियों को भी दिखा चुका था; सब यही कहते थे कि उसे कोई समस्या नहीं है और उसका भविष्य अति उज्ज्वल है। फिर दिसंबर 1999 में मेरे बड़े भ्राता, श्री शिव कुमार चौधरी, एक वरिष्ट पुलिस अधिकारी ने दिल्ली के पुलिस आयुक्त डा. कृष्ण कान्त पॉल के घर पर गुरुजी के दर्शन किये।

शीघ्र ही जनवरी 2000 के प्रथम सप्ताह में हमने एम्पाएर एस्टेट में गुरुजी के दर्शन किये। उस दिन पहली बार, दस मास के उपरान्त मेरा पुत्र शरद, गुरुजी के चरणों में, ढाई घंटे तक, बिना किसी वेदना के जमीन पर बैठा रहा। जब हम चलने को हुए तो गुरुजी ने अगले दिन

आने को कहा। हमने वही किया। गुरुजी के प्रश्न करने पर मैंने उन्हें अपने पुत्र के पीठ दर्द के बारे में बताया। गुरुजी ने कहा कि उन्होंने उसे पहले ही आशीर्वाद दे दिया है और ताम्र लोटा लाने को कहा। गुरुजी ने उसे अभिमंत्रित किया। उसमें से एक मास तक जल पीने के पश्चात् मेरा पुत्र बिलकुल स्वस्थ हो गया। अब वह अधिकृत लेखापाल बन कर एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था के साथ कार्यरत है। गुरु कृपा से उसे डेढ़ वर्ष के लिए अमरीका भेजा गया है।

गुरुजी ने मेरी बेटी को स्वस्थ किया

गुरुजी की असीम कृपा से मेरी बेटी को एम बी ए पाठ्यक्रम में प्रवेश मिल गया था। उसकी कक्षाएं 1 सितम्बर से प्रारम्भ होनी थी पर 1 अगस्त से उसे मियादी ज्वर ने घेर लिया। मेरी बहन के पुत्र, डॉ. गिरीश बजाज, ने उसकी चिकित्सा आरम्भ करी। वह उसे देखने के लिए प्रतिदिन प्रातः आठ बजे चिकित्सालय जाने से पूर्व घर आते थे। सब प्रयास करने पर भी ज्वर कम नहीं हो रहा था।

24 अगस्त को गुरुजी ने जब मेरी पत्नी के संगत में न आने के बारे में प्रश्न किया तो मैंने उन्हें बताया कि वह रोगसंतप्त बेटी की देखभाल में लगी हुई हैं। गुरुजी ने कहा कि यह उनको पहले क्यों नहीं बताया गया। उन्होंने अपने चरणों से एक फूलमाला उठा कर मुझे देकर कहा कि उसे एक बाल्टी जल में डाल कर उस जल से बेटी को स्नान करना है।

अगले दिन प्रातः मेरी बेटी ने वैसा ही किया और उसका तापमान एकदम गिर कर 98.5^0 हो गया – पिछली रात्रि को 101^0 था। जब आठ बजे डॉ. बजाज आये तो वह तापमान में गिरावट देख कर अचंभित रह गये। चार–पांच दिन में मेरी बेटी पूर्णतया स्वस्थ हो गयी और उसने विधिवत अपने विद्यालय जाना आरम्भ कर दिया। डॉ. बजाज इससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने भी गुरुजी के दर्शन की अभिलाषा करी और उनके भक्त हो गये।

वीसा – कोई कठिनाई नहीं

मेरा भांजा चिकित्सा विज्ञान के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए अमरीका जाना चाहता था। अमरीकी दूतावास भारतीय चिकित्सकों और चिकित्सक विद्यार्थियों को वीसा सरलता से नहीं देता था। मैंने गुरुजी से उस पर कृपा करने की विनती करी जिससे वह वहां जाकर अपना स्वप्न साकार कर सके। गुरुजी ने मुझे झिड़की लगाई कि आये दिन मैं उनसे अनुग्रह करता रहता हूँ।

मैंने उत्तर दिया कि तीन व्यक्ति मन की आशा पूर्ण कर सकते हैं – सर्वप्रथम, ईश्वर जिसे किसी ने नहीं देखा है; दूसरे, माता पिता जो अब इस संसार में नहीं हैं; और तीसरे, गुरुजी जो अपने आशीर्वाद से सब कुछ कर सकते हैं; केवल वह ही मेरी पहुँच में हैं। गुरुजी ने *''कल्याण हो गया''* कह कर उत्तर दिया और मुझे अपने भांजे को वीसा के लिए अमरीकी दूतावास भेजने को कहा। हम चकित रह गये जब अमरीकी दूतावास में वीसा अधिकारी ने उससे अधिक प्रश्न नहीं पूछे। यद्यपि दूसरे आवेदकों में 45–50 मिनट तक प्रश्न करने के उपरान्त भी वीसा मना कर दिया जाता था, उससे सहजता से वीसा मिल गया। आज मेरा भांजा अमरीका में सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत कर रहा है।

लंगर के उपरान्त दावत

एक वरिष्ट आयकर अधिकारी मेरे साथ गुरुजी के दर्शन के लिए आया करते थे। एक शुक्रवार को गुरुजी ने हमें अगले दिन आने को कहा। उस शनिवार की संध्या को हमने केवल पुरुषों के लिए मदिरा और भोज का आयोजन किया था। उस दिन दोपहर को मैं सोच रहा था कि गुरुजी ने हमें बुलाकर शाम का कार्यक्रम नष्ट कर दिया था। उस दिन रात्रि को दस बजे, लंगर समाप्त होने के पश्चात्, गुरुजी ने हमें कुछ अन्य अनुयायियों के साथ रुकने के लिए कहा।

आधा घंटे बाद गुरुजी ने अपने एक भक्त, एक वरिष्ट सीमा

शुल्क अधिकारी, के घर चलने के लिए कहा जो अपनी पदोन्नति होने पर दावत कर रहे थे। जब हम उनके घर पहुंचे तो हमें पेय प्रस्तुत किये गये। मैं और मेरे मित्र गुरुजी की उपस्थिति में यह लेने में हिचकिचा रहे थे तब गुरुजी ने मेरी आँखों में आँखे डाल कर कहा कि दोपहर को तो मैं शाम का कार्यक्रम नष्ट होने की बात कर रहा था; अब यहाँ पर मैं प्रसन्नचित होकर जितना चाहूं पी सकता हूँ। मेरी आँखों में आंसू आ गये। मैं गुरुजी के चरणों में गिर पड़ा और मात्र इतना ही कह पाया कि आप अन्तर्यामी हो।

मेरे चालक को गुरुजी के दर्शन हुए

मेरा वाहन चालक, सुरेश, धार्मिक प्रवृत्ति का है। एक दिन मैंने उसे संगत में अन्दर आकर गुरुजी के दर्शन करने को कहा। पर वह समस्त भद्रजनों की उपस्थिति के कारण झिझक रहा था। संगत के उपरान्त मैं किसी को विदा करने अंतर्राष्ट्रीय विमानपतन गया था। दो बजे के आस पास जब मेरी गाड़ी मुख्य मार्ग पर मुड़ रही थी तो मैंने गुरुजी को वहाँ पर कुछ अनुयायियों के साथ देखा। मैंने सुरेश को रुकने को कहा और हम दोनों ने उतर पर गुरुजी के चरण स्पर्श किये। गुरुजी मुस्कुरा कर बोले कि मेरी इच्छा अपने वाहन चालक को उनके दर्शन कराने की थी इसलिए वह आये थे। मेरे पास उनको धन्यवाद करने के लिए शब्द नहीं थे।

शिव अवतार

मेरे छोटे भाई की पत्नी के गले में कुछ असाधारण सूजन थी और हमें भय था कि वह केंसर न हो। गुरुजी को बताने पर उन्होंने कहा कि हम चिंता ना करें और उसकी चिकित्सा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में करवायें। मेरे एक सम्बन्धी, जो शल्य चिकित्सक हैं, ने वहाँ पर डॉ. शर्मा से संपर्क करने को कहा। डॉ. शर्मा गुरुजी के अनुयायी हैं और उनके कृपा पात्र हैं। उस दिन संध्या को जब हम गुरुजी के पास

गये तो उन्होंने कहा कि डॉ. शर्मा उसकी शल्य चिकित्सा करेंगे। गुरुजी के कथनानुसार डॉ. शर्मा ने ही उसकी शल्य क्रिया करी और अब वह बिलकुल स्वस्थ है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि गुरुजी शिव के अवतार हैं। वह सब कुछ जानते हैं और समय आने पर बिना पूछे ही अपना आशीर्वाद दे देते हैं। उनकी शरण में आये प्रत्येक अनुयायी को सब प्राप्त हो जाता है। गुरुजी के लिए जाति और धर्म अर्थहीन हैं। उनकी दृष्टि में इस संसार के सब प्राणी एक समान हैं। शिव ने गुरुजी को इस संसार में हम सबके जीवन की यातनाओं और कष्टों से मुक्त करने के लिए भेजा है।

गुरुजी ने सबको ॐ नमः शिवाय, शिवजी सदा सहाय का मन्त्र दिया है। मैं उसमें ॐ नमः शिवाय, गुरुजी सदा सहाय, ॐ शांति और जय गुरुदेव जोड़ कर उसका संशोधन करना चाहूंगा।

– भारत भूषण चौधरी, दिल्ली

आर्थिक चिंताओं से मुक्ति

हम गुरुजी के पास 4 जनवरी 2003 को आये। मेरी पत्नी ऊषा 1998 से चिरकालिक नजले से पीड़ित थी और उसके थक्के बन गये थे। उसे कई अन्य स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याएं भी थीं। उसमें से एक तो तुरन्त समाप्त हो गयी। उसकी खाने की नली में नासूर था जो गुरुजी के लंगर में मिर्चों की चटनी खा कर लुप्त हो गया। गुरुजी ने यह भी कहा कि उन्होंने उसे एक बार में ही रोग मुक्त कर दिया था।

मेरी पत्नी के गर्भाशय में गुलमा भी था पर हमें इसका ज्ञान नहीं था। एक दिन गुरुजी ने उसे बुलाया और कहा कि उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं है और उसे घर पर विश्राम करने की आवश्यकता है। गुरुजी ने उसे शल्य क्रिया के लिए भी भेजा। आज वह बिलकुल स्वस्थ है और उसके नजले की समस्या भी समाप्त हो गयी है।

इसी समय के आस पास हमें आर्थिक समस्याएँ भी आ रहीं थीं। हम एक अनर्थकारी निर्णय लेने वाले थे जिससे हमें अत्यंत हानि होती। गुरुजी ने मेरी पत्नी को अपने पास बुला कर उसे हमारे बैंक की राशि बता दी और हमें वह निर्णय लेने से रोक दिया।

गुरुजी को सब ज्ञान रहता है; इसमें जो बातें हम घर में करते हैं उसका भी उन्हें पता रहता है। वह अनेक बार सिद्ध कर चुके हैं कि वह अन्तर्यामी हैं। हम चकित रह जाते हैं, पर यह जानते हैं कि वह शिव के अवतार हैं। उन्होंने, बड़ी या छोटी, प्रतिदिन की समस्याओं में कई बार हमारा मार्ग दर्शन किया है। एक बार मेरी बेटी भावना को मियादी ज्वर हो गया और एक सप्ताह तक उच्च तापमान रहने पर भी चिकित्सक उसे ठीक नहीं कर पा रहे थे। गुरुजी ने उसे पपीते और गन्ने का रस पीने को कहा, जो चिकित्सक मना करते हैं पर इन्हें पी कर वह बिलकुल ठीक हो गयी।

कालान्तर में अनेक कठिनाईयाँ होते हुए भी, गुरुजी की दया से उसे दन्त चिकित्सा पाठ्यक्रम में प्रवेश मिल गया। गुरुजी हमारे जीवन में आये इसके लिए हम धन्य हैं।

– भारत भूषण भाटिया, गुड़गाँव

हमारे अस्तित्व का मूल

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँए।
गोविन्द से गुरु बड़े, जो गोविन्द दिए दिखाए।।

इस पद में कबीर में मन में संशय का भाव स्पष्ट है कि गुरु और गोविन्द, दोनों जब समक्ष खड़े हों तो किसके पाँव छूने चाहिए। फिर वह इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि गुरु के आशीष के बिना गोविन्द (ईश्वर) को पाना असंभव है। हमारे मन में ऐसा कोई संशय नहीं है क्योंकि गुरुजी स्वयं परमात्मा हैं।

मैंने गुरुजी के बारे में सर्वप्रथम अपने मामाजी, कर्नल जोशी, से सुना था। यह 1996 के आसपास की बात थी और मेरा युवा स्वाभिमान अपनी पूरी श्रद्धा एक गुरु को देने को तत्पर नहीं था। अप्रैल 1994 में मुझे, चंडीगढ़ में, पहली बार गुरुजी के दर्शन का सौभाग्य मिला। उनके इस प्रश्न पर कि मैं कहाँ से आया हूँ मैंने उत्तर दिया कि मैं कर्नल जोशी का भांजा हूँ और जयपुर से आया हूँ उन्होंने मेरे सिर पर अपने दोनों हाथ रख कर कहा, *'कल्याण हो'*। दो दिन बाद जब मैं दिल्ली वापस आया तो एक नौकरी, जिसकी मैं उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था, मिल गयी। तुरन्त कल्याण हो गया और यह भी, तब, जब मैंने चाय प्रसाद और लंगर मना कर दिये थे।

गुरुजी के दर्शन से मेरे दृष्टिकोण में कोई परिवर्तन नहीं आया। उनके लिए कोई विशेष भाव नहीं उभरे। इसमें कुछ और समय बीतने की आवश्यकता थी। यह भी गुरुजी की इच्छा पर निर्भर करता है। इस बीच में वह दिल्ली आ गये। मैं दिल्ली जाता अवश्य था पर उन ढ़ाई वर्षों में मैंने न ही उनके दर्शन किये, न ही इसका कोई प्रयास किया। इस समय तक मेरी माँ और बहन उनके परम भक्त हो गये थे, पर मैं वही पुराना लकीर का फकीर था।

मेरी माँ और मैं, दो वर्ष से, मेरी बहन के लिए अच्छा वर ढूंढ़ रहे थे। अप्रैल 2000 में मेरी बहन के होने वाले ससुर का फोन आया कि वह सम्बन्ध पक्का करने के इच्छुक हैं। मेरी बहन उस समय दिल्ली में थी और जब उसने गुरुजी को अपने होने वाले पति का चित्र दिखाया तो गुरुजी ने कहा, *''चंगा मुंडा है''*। हमारी सब चिंताएं उसी क्षण समाप्त हो गयीं। गुरुजी की कृपा से जनवरी 2001 में विवाह की तिथि निश्चित हुई। अब जैसे जैसे समय बीता, शनैः शनैः मेरी विचार धारा में भी परिवर्तन आने लगा।

मेरी बहन का विवाह स्थल उस विद्यालय के प्रांगण में था जहाँ मेरी माँ पढ़ाती थीं। भोज के प्रबन्धकर्ता से बात करने पर तंदूर और रसोई के स्थल का निश्चय कर लिया गया। विवाह से तीन दिन पूर्व उस विद्यालय की निर्देशिका, जो मेरी माँ से गुरुजी के बारे में सुन कर उनकी अनुयायी बनी थीं, आयीं और उन्होंने कहा कि गुरुजी ने उनके स्वप्न में आकर रसोई के स्थल परिवर्तन की बात कही है। यद्यपि मैंने इस बात को अधिक महत्त्व नहीं दिया पर मेरी माँ ने तुरन्त उनकी बात मान ली। विवाह बहुत भली भांति संपन्न हुआ और सब अतिथि आज भी उस स्वादिष्ट भोजन की सराहना करते नहीं थकते।

ऐसे दृष्टांत इस बात को स्पष्ट करते है कि गुरुजी वास्तव में अन्तर्यामी हैं। इतना होने के बाद भी मैं विश्वास और आस्था से कोसों दूर था।

मेरी बहन के विवाह के 15 दिन बाद मैं बदल गया। उस दिन मैं कार्यालय से अपनी मोटर साईकिल पर घर वापस आ रहा था। मैं राजमार्ग पर था और बहुत रात हो चुकी थी। उसी समय एक आवारा कुत्ता मेरे अगले पहिये से आ टकराया। मेरी गति इतनी तेज थी कि एक कंकड़ भी मेरी साईकिल के नीचे आता तो मैं पलटी खाकर गिर सकता था। ऊपर से एक बस मेरे पीछे चिपकी हुई आ रही थी और गिरने पर मेरा अंत निश्चित था। परन्तु गुरुजी की दया से, और कुछ दर्शकों के अचम्भे से, मैंने अपना संतुलन नहीं खोया। मेरी भगवान को धन्यवाद कहने की इच्छा हुई जो मैंने घर के रास्ते में अगले मंदिर के सामने अपना शीश झुका कर किया। उसी समय गुरुजी की सुगन्ध से वातावरण महक गया; मेरे तर्क और स्वाभिमान ने मुझे त्याग दिया और मैंने मन ही मन गुरुजी को धन्यवाद दिया। नास्तिक से श्रद्धा परिवर्तन तत्कालिक था।

दस मिनट में विवाह

मेरा स्थानान्तरण रेवाड़ी होने के बाद मैं अक्सर गुरुजी के दर्शन के लिए आ जाता था। अब मेरी माँ को मेरे विवाह की चिंता था। एक दिन मैं और मेरी माँ मामाजी के घर पर थे। उस समय रिश्ते में मेरी मामीजी की बहन भी वहीं पर थी। शाम को हम सब गुरुजी के दर्शन के लिए गये। लंगर के उपरान्त जब हम बैठे हुए थे, गुरुजी ने मुझे बुलाकर अपने पैर दबाने को कहा। थोड़ी देर के बाद उन्होंने मेरी मामीजी की बहन, जया को भी वही करने के कहा। दस मिनट के पश्चात् वह बोले, *''शादी कर लो''*। मुझे कोई शंका नहीं है कि विवाह सम्बन्ध स्वर्ग में निश्चित होते हैं। इस प्रकार मेरे मामाजी और मैं साढू बन गये - गुरु कृपा!

मैंने सत्संगों में अक्सर सुना है कि गुरुजी को हमारे मन में उत्पन्न समस्त भावनाओं का ज्ञान है, पर वास्तुस्थिति उससे भिन्न है। मन में उत्पन्न सब भावनाएं उनकी हैं। क्या आप विचारों के स्त्रोत से अधिक

सोच सकते हैं? क्या आप कर्मकर्ता के स्त्रोत से अधिक कार्य कर सकते हैं? क्या आप इस ब्रह्माण्ड की आत्मा से अलग रह सकते हैं? उत्तर सहज है: वह आपके अस्तित्व के मूल है।

यह तथ्य संभवत: हमें पता न हो या हम इसे न माने – पर हम हैं क्योंकि हम उनके अंश हैं। वह भाग्यशाली जो उनके दर्शन कर पाये हैं या जिन्हें उनकी सुगन्ध प्राप्त हुई है या जिनके जीवन में उन्होंने कुछ मिठास भरी है, वह सब उनके आशीष के धनी हैं। उनकी सुगन्ध लेने के बाद यदि मैं उसका स्त्रोत ढूँढता हूँ तो मुझे आभास होता है कि वह तो ईश्वरीय है।

वह चमत्कार जिनका श्रेय गुरुजी को देते हैं, चमत्कार मात्र इसीलिए हैं कि वह असंभव लगते हैं। गुरुजी में मैं अपनी श्रद्धा का निवेश यह सोच कर करता हूँ कि जो मैं हूँ और जो मेरे पास है (दोनों विचार कहने को निंदनीय हैं) उसका एकमात्र कारण केवल वही हैं।

मेरे ऊपर गुरुजी की कृपा की सूची अंतहीन है। क्योंकि जन्म से पूर्व की घटनाओं को हम याद नहीं कर सकते, मैं इस संसार में अपने जन्म के लिए, ऐसे माता पिता के लिए, ऐसे मित्रों के लिए, ऐसे पालन–पोषण के लिए, रोग से मुक्ति के लिए, दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद शीघ्र स्वस्थ करने के लिए, एक प्यारी सी बहन और जीजा के लिए, एक प्रशंसनीय पत्नी और प्यारी सी बेटी के लिए, और उनकी कृपा के लिए सदैव गुरुजी का आभारी रहूँगा। गुरुजी को अपने दर्शन करने देने के लिए मैं नतमस्तक हूँ। प्रार्थना है कि उनका स्नेह हम सब पर सदा बना रहे। प्रार्थना है कि वह हमारे परिवार को सदा अपने चरणों में स्थान दें। जय गुरुजी!

– भावेश पाण्डेय, जयपुर

बड़े मंदिर में उपचार

मैं किसी गुप्त रोग से पीड़ित थी। चिकित्सक किसी भी रोग का निदान करने में असफल रहे थे अतः उन्होंने कोई उपचार भी नहीं किया था। मेरा परिवार महाराजजी का अनुयायी था, जिनके पास, कहते हैं, अलौकिक शक्तियां हैं। मुझे उनके पास ले जाया गया। महाराजजी ने कहा कि मुझे कोई रोग नहीं था अपितु मेरे ऊपर कुछ दुष्ट आत्माओं का प्रकोप था। परन्तु बहुत प्रयत्न करने के बाद भी वह मुझे स्वस्थ नहीं कर पाये। अंत में, हार कर, उन्होंने मेरे परिवार वालों को बतलाया कि वह मुझे ठीक नहीं कर सकते हैं, केवल ठाकुरजी (विधाता) ही कर पायेंगे।

मेरे एक दूर का सम्बन्धी परिवार गुरुजी के प्रति निष्ठा रखता था। क्या यह चयन था या देवयोग? हम दिल्ली आये और बड़े मंदिर गये। मैं मंदिर में प्रवेश करने वाली थी कि मैं चिल्लाने लगी। मुझे बताया गया कि मैं बहुत देर तक रोती रही। मंदिर में प्रवेश करने के बाद मैं चुप हो गयी और तुरन्त ही सो गयी। शांति से मैं तीन घंटे तक सोती रही। मेरे परिवार को पता था कि इस प्रकार से मैं कई वर्षों के बाद सोयी थी।

शाम को हमने गुरुजी के दर्शन किये, चाय और लंगर प्रसाद ग्रहण किये। उस समय से मैं निरोग हूँ क्योंकि मुझे ठाकुरजी के दर्शन हो गये थे। सिद्ध पुरूषों की भी सीमाएं निर्धारित होती हैं। वह जीवन और मृत्यु नहीं दे सकते हैं। किन्तु गुरुजी तो महापुरुष हैं। वह साक्षात शिव हैं। वह परमेश्वर हैं।

– मंजु गुप्ता, अलवर (राजस्थान)

गुरुसेवा के मूल मन्त्र

मेरे छोटे पुत्र को दन्त चिकित्सा के पाठ्यक्रम में प्रवेश नहीं मिल रहा था। अंततः मैं गुरुजी के पास आया। मेरी मणिपाल स्थित महाविद्यालय में रुचि थीं। मेरे बेटे को उसमें प्रवेश मिला और उसने अपना पाठ्यक्रम प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होकर पास किया। मेरा बड़ा बेटा भी चिकित्सक है और चंडीगढ़ में रहता है। उसका विवाह हो चुका है और उसका कार्य भली भांति चल रहा है।

मैं स्वयं फरीदाबाद में दन्त चिकित्सक हूँ। गुरुजी की शरण में आने के उपरान्त मैंने अनेक कठिन शल्य क्रियाएं सफलतापूर्वक करी हैं। प्रायः रोगी के स्वास्थ्य के कारण उन्हें कठिन कहना उचित होगा। किन्तु गुरुजी की कृपा से रोगी चिकित्सा के पश्चात् संतुष्ट रहे हैं।

मेरी बेटी पर्ल फैशन और डिजाइन अकादमी से फैशन डिजाइन टेक्नोलोजी पाठ्यक्रम करना चाह रह थी। उसने लिखित परीक्षा उत्तीर्ण करके साक्षात्कार भी अच्छा किया था किन्तु उसका चयन नहीं हुआ था।

चूंकि मैं उसके भविष्य के बारे में चिंतित था, मैं गुरुजी के पास गया। यह जानते हुए भी कि उस दिन बुधवार था और संगत का दिन नहीं था। बदरपुर महरौली मार्ग पर मेरी दिल्ली परिवहन निगम की बस से दुर्घटना हो गयी। मुझे तो कोई चोट नहीं आयी पर कार बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हुई थी। कार का बोनेट मुड़ गया था; उसका रेडिएटर, ए सी, उनकी जालियां और सामने की बत्तियां, सब टूट गये थे।

इसके बाद भी वह टूटी फूटी कार चली और उसी से 15–20 किलोमीटर की यात्रा करके मैं गुरुजी के निवास पर पहुंचा। गुरुजी वहाँ पर नहीं थे। मुझे बताया गया कि उन्हें आने में देर हो जायेगी। जैसे ही मैं वापस आने के लिए तत्पर हुआ, गुरुजी की कार मेरे सामने आकर रुकी। गुरुजी ने मुझे देखा – मैं हाथ जोड़ कर खड़ा था और मेरे आँसू बह रहे थे। गुरुजी वहाँ कोई पांच मिनट तक खड़े रहे और फिर भीतर चले गये। मुझे प्रसाद और लंगर दिया गया। गुरुजी ने सन्देश दिया कि मेरी जीवन रक्षा हुई थी, नयी कार आ जायेगी और चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। मुझे घर लौटना है और सब ठीक हो जाएगा।

मैं कार वापस ले गया। अगले दिन सुबह जब हयुंदै के मिस्त्री मरम्मत के लिए कार लेने आये तो उनको उसे क्रेन से उठा कर ले जाना पड़ा और उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि इस प्रकार क्षतिग्रस्त होने के बाद भी वह ए सी के साथ 50 किलोमीटर चली थी। रेडिएटर में जल नहीं था, बैटरी काम नहीं कर रही थी और ए सी क्षतिग्रस्त था। फिर भी गुरुजी की कृपा से वह 50 किलोमीटर चली थी। इस दुर्घटना के पश्चात् मैं नयी गाड़ी ले कर आया।

मेरी बेटी को विशेष साक्षात्कार के लिए बुलाया गया और उसे गुरुजी के जन्म दिवस पर प्रातः 11:00 बजे प्रवेश मिल गया। उस समय मैं बड़े मंदिर में समारोह के आयोजन में कार्यरत था। उसने अपना पाठ्यक्रम बहुत अच्छा किया और उसे इस बीच दो छात्रवृत्तियां भी मिलीं। यह सब गुरुजी की दया थी।

पिछले दो तीन वर्षों से मेरा कार्य ठीक नहीं चल रहा था। मेरा

परिवार पूर्ण रूप से मेरे ऊपर निर्भर था और घर के व्यय के लिए भी समुचित आय नहीं हो रही थी। मैं अपना घर बेचना और व्यवसाय छोड़ना चाह रहा था।

आर्थिक समस्याओं से मैं कुंठित हो गया था। एक श्रद्धालु और मेरे पुत्र ने गुरुजी को मेरी समस्याओं के बारे में बताया। गुरुजी की कृपा हुई और उसी चिकित्सालय से घर का व्यय निकलने लगा। धीरे धीरे मैंने अपने सब ऋण भी उतार दिये। इस अंतराल में मैंने केवल गुरुजी से विनती करी। गुरुजी में मेरी आस्था ने सदा लाभान्वित किया है। मेरे घर और चिकित्सालय, दोनों स्थानों पर गुरुजी के मंदिर हैं। संगत में जो गुरबानी सुनी जाती है उन्हें मैं अपने चिकित्सालय में भी बजाता हूँ। मेरे अधिकतर रोगी मेरे से गुरुजी के बारे में प्रश्न करते हैं और गुरबानी सुनकर प्रसन्न होते हैं।

गुरुजी द्वारा शल्य चिकित्सा

चार-पांच वर्ष पूर्व, एक 73 वर्षीय महिला, जो अमरीका में रहती थी, अपने पुत्र के साथ, अपने जबड़े की हड्डी को ठीक कराने मेरे पास आयी। अमरीका में चिकित्सकों ने उच्च रक्त चाप के कारण उसकी शल्य क्रिया करने से मना कर दिया था। शल्य चिकित्सा की अवधि में उसका रक्त चाप 160-180 हो सकता था और 200 तक भी पहुँचने की संभावना थी। दिल्ली में भी कोई चिकित्सक इसके लिए तत्पर नहीं था। उनके हठ करने पर भी मैं मना करता रहा। फिर उनकी बेटी ने गुरुजी का चित्र देखा और शल्य चिकित्सा करने के लिए कहा। उसका विश्वास था कि गुरुजी के होते हुए कोई अशुभ घटना नहीं हो सकती। मैंने शल्य चिकित्सा की तैयारी कर ली।

शल्य क्रिया अविशेषक निश्चेतना में करी गयी और उसमें दो तीन घंटे लगे। शल्य क्रिया होते हुए दो बार निश्चेतन विशेषज्ञ ने कहा कि रोगी डूब रही है। पर शल्य क्रिया पूर्ण हो गयी। रोगी ने अपनी बेटी को बताया कि दो अवसरों पर उन्होंने गुरुजी को श्वेत वस्त्रों में देखा और

दोनों बार उन्होंने आश्वासन दिया कि सब ठीक हो जाएगा। शल्य क्रिया के उपरान्त भी कोई सूजन या दर्द नहीं हुआ। रोगी ने कहा कि वह साई बाबा की भक्त हैं पर गुरुजी ने उनको जीवन दान दिया है। उन्होंने मेरे से गुरुजी का एक चित्र भी लिया। यद्यपि वह 73 वर्षीय महिला पिछले दो वर्षों से दर्द नाशक औषधियों पर थीं, पर इस क्रिया के बाद उन्होंने ऐसी किसी औषधि का सेवन नहीं किया। यह केवल गुरुजी के कारण ही संभव हुआ। मुझे प्रतीत होता है कि वह शल्य क्रिया हम तीन चिकित्सकों ने न कर के गुरुजी ने स्वयं करी थी।

मेरे मित्र की सहायता

मेरे एक मित्र की आठ वर्षीया पुत्री के हृदय के वाल्व में समस्या थी और उसे दिल्ली में स्थित एस्कॉर्ट्स चिकित्सालय में शल्य क्रिया करवाने का परामर्श दिया गया था। शल्य क्रिया की तिथि निश्चित हो गयी थी। मैंने गुरुजी से उस बच्ची को आशीर्वाद देने की विनती करी तो उन्होंने मुझे प्रसाद और पुष्प दिये जो मैंने उसका माता पिता को दे दिये।

शल्य क्रिया के उपरान्त उसकी अवस्था चिंताजनक थी। गुरुजी ने कहा कि सब ठीक हो जाएगा। मैं रात्रि को एक बजे एस्कॉर्ट्स में जाकर माता पिता से मिला तो वह चिंतित थे। मैंने उनको प्रसाद दिया और गुरुजी का कहा हुआ दोहराया। गुरुजी द्वारा मुझे दिया हुआ उनका अपना चित्र भी मैंने उनको दिया और उसे बेटी के कक्ष में रखने को कहा। गुरुजी के कथनानुसार वह बच्ची शीघ्र ही स्वस्थ हो गयी।

परन्तु एक वर्ष के बाद उसकी अवस्था पुनः बिगड़ गयी। गुरुजी उस समय जालंधर में थे। जब मैंने उनको बताया तो वह बोले, *''तू लंगर कर, चिंता न कर, कुड़ी ठीक हो जाउगी।''* थोड़े ही दिनों में वह ठीक हो गयी और अब आनंद से रह रही है।

एक बार गुरुजी पंजाब में अपने गाँव चले गये। मुझे इस बारे में पता नहीं था और दस दिन तक उनके दर्शन न हो पाने के कारण मुझे

नींद नहीं आ रही थी। एक दिन पी वी आर, साकेत में देर रात्रि का प्रदर्शन देख कर मैं पत्नी के साथ गुरुजी के स्थान पर जा रहा था। अंधेरिया मोड़ पर कार का अगला टायर फट गया और कार एक ओर झुक गयी। मैंने कार को रोक कर पत्नी की सहायता से उसे धक्का दिया और एक ऐसे स्थान पर पहुंचे जहाँ दो ट्रक खड़े थे। एक चालक से मैंने टायर बदलने की विनती करी।

वह सहायता के लिए आये पर, विस्मय की बात है, कि टायर में फटने का कोई चिह्न नहीं था। उन्होंने सोचा कि अधिक मद्यपान के कारण मैं होश में नहीं हूँ। मेरी पत्नी और मैंने पिचका हुआ टायर देखा था। हम अचंभित थे। उस समय हम गुरुजी के पास नहीं जा सके। पत्नी के कहने पर मैंने उसे एक पेट्रोल पम्प पर दिखाया तो उन्होंने भी कहा कि टायर तो ठीक है। मेरी पत्नी ने उसे फरीदाबाद में दिखाने को कहा। सुबह जब मैंने उसे दिखाया तो टायर और उसकी ट्यूब सही थे। गुरुजी की कृपा से एक और चमत्कार हुआ था।

यह मेरे कुछ निजी अनुभव हैं। असीमित सागर के समान गुरुजी की भी कोई सीमाएं नहीं हैं। मैं सदा गुरुजी का अनुयायी बन कर जीना चाहूँगा।

गुरुजी के मूल मन्त्र

मेरे गुरुजी मानवता को ईश्वर का विशेष उपहार हैं। उनका जन्म अपनी दिव्य कृपा से मानव को जीने की सही राह दिखाने के लिए हुआ है। उनका आशीष प्राप्त करने वाले सबसे भाग्यशाली हैं और मैं उनमें से एक हूँ। भले ही मैं उन्हें ''मेरे गुरुजी'' कह कर संबोधित करूँ, वह केवल मेरे नहीं अपितु सबके हैं।

मेरे संपर्क में आये अनेक व्यक्ति, मुख्यतः मेरे चिकित्सालय में आये रोगी, उनका नाम पूछते हैं। मैं उनको यही उत्तर देता हूँ कि उनको गुरुजी के नाम से ही जाना जाता है। जैसे ईश्वर का कोई नाम नहीं है उनका भी कोई नाम नहीं है; आप उन्हें राम, कृष्ण, गुरु नानक या

अल्लाह कह सकते हैं और गुरुजी आपकी श्रद्धा उसी भाव में स्वीकार करेंगे जैसा आप चाहेंगे।

मेरे गुरु में शिव की सामर्थ्य और गुरु नानक की आध्यात्मिक शक्ति है। गुरुजी से मिलने के बाद स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है। मनुष्य के दोष कम हो जाते हैं और वह जीवन का आनंद उठाता है।

गुरुजी का अनुराग माता के प्रेम समान है। जब वह आपको देखते हैं, उनकी आँखों से दिव्य किरणें प्रसारित होती हैं। अपने आप को उन्हें पूर्ण रूपेण समर्पण करने के पश्चात् आप उन्हें अपने अन्तःकरण में भी अनुभव कर सकते हैं।

उनकी अनुकम्पा प्राप्त करने के लिए सत्य भाव से प्रार्थना करना आवश्यक है। स्तुति करने पर गुरुजी का सन्निध्य प्राप्त होता है और फिर ईश्वरीय भाव आपमें समावेश कर के आपके साथ रहता है। भगवद् गीता की उक्ति के अनुसार आप को बदले में कुछ मांगना नहीं है। मैं अक्सर सोचता हूँ कि हम गुरुजी को क्या दे सकते हैं। मेरा हृदय कहता है कि गुरुजी के निर्देशों का श्रद्धापूर्वक पालन करें। वह किसी को कुछ करने को नहीं कहते और यदि कभी ऐसा करें भी, तो निश्चित रूप से आप उससे लाभान्वित ही होंगे। हम उनके समक्ष अति तुच्छ प्राणी हैं और वह हमारी माँ सदृश देखभाल करते हैं। मैं संगत से निवेदन करता हूँ कि वह सदा गुरुजी के बारे में सोचें और उनके दिखाये हुए पथ पर अग्रसर हों। उनके प्रति हमारा समर्पण सम्पूर्ण होना चाहिए और उनके तीन मन्त्र सदा याद रखने चाहिए – किसी को गाली मत दो, किसी को दोष मत दो और किसी को नहीं कोसो। रोज आपके संपर्क में आने वाले का सदा भला सोचो।

– डॉ. मदन मोहन बजाज, फरीदाबाद

...गुरु बिन घोर अंध्यार

गुरुजी से मिलने से पूर्व मैं अत्यंत हठीली और अड़ियल थी। मैं किसी की बात नहीं सुनती थी। किन्तु कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं ने मेरा उत्साह प्रायः समाप्त कर दिया था। किसी ने मृत व्यक्ति की अस्थियों को चूर्ण कर मेरे भोजन में मिला कर मुझे खिला दिया था। यह अत्यंत शक्तिशाली काला जादू था जिससे मैं मौत की कगार पर पहुँच गयी थी। वह 1984 की घटना है और उस समय से मुझे शय्या पर रहना पड़ रहा था। मैं बैठ या चल-फिर नहीं सकती थी और कुछ भी पचा नहीं पाती थी।

मैं संतों, तांत्रिकों, फकीरों और पंडितों के पास गयी - लेकिन किसी ने भी मेरी सहायता नहीं करी। उन्होंने कहा कि मेरी मृत्यु निश्चित है। यदि कोई मेरी सहायता करेगा तो कर्मों के आदान प्रदान के कारण उसकी मृत्यु होने की संभावना है। एक दशक तक मैं कष्ट सहन करती रही।

यहाँ आती रहो

फिर एक कनाडा निवासी, लूना, जिसे मैं जानती थी ने गुरुजी के पास जाने की सलाह दी। लूना, प्रसिद्ध अभिनेता और निर्देशक स्वर्गीय हरपाल सिंह की पुत्री थी। उसने कहा कि यदि मुझ में आस्था हुई तो

वह सहायता कर सकते हैं। अक्टूबर 1996 में जब उसने मुझे यह बताया तो वह अपनी ससुराल में थी। मैं उसके माता पिता, जो गुरुजी के दर्शन हेतु पटियाला से पंचकूला आये थे, के साथ उनके मंदिर में पहुंची।

जब हम अपनी गाड़ी खड़ी कर रहे थे गुरुजी संगत हॉल से निकल कर बाहर आये। हम सबने उनके कमल चरणों को स्पर्श किया। लूना ने मेरा परिचय देना आरम्भ किया था कि उन्होंने मुझे मेरे नाम से संबोधित कर कहा कि मेरे साथ बहुत दुराचार हुए हैं। मुझे लगा कि वह सर्वज्ञाता हैं।

गुरुजी ने मुझे अपने आसन के दाहिनी ओर बिठाया और वह मेरा मस्तक देखते रहे - मानो मेरे भूत, वर्तमान और भविष्य के कर्मों को देख रहे हों। उन्होंने हमारी ओर घूरने वालों की अवहेलना करी। देखने में मैं वीभत्स लग रही थी, मेरा शरीर और मुख सूजे हुए थे और मेरी आँखें बंद सी थीं। एक घंटे उनके पास बैठ कर मुझे अपने चारों ओर दिव्य वातावरण का आभास हुआ। दस वर्ष के पश्चात् मुझे आंतरिक शांति का आभास हो रहा था।

फिर उन्होंने मुझे लंगर करने के लिए कहा। उस समय मैं उसकी गुणवत्ता से अपरिचित थी। मैंने लंगर स्थान से बाहर निकलने का प्रयास किया। मैंने सोचा कि मैं बिना मूल्य का भोजन कैसे कर सकती हूँ। परन्तु गुरुजी को मना करना संभव नहीं था। उन्होंने पुनः मुझे लंगर ग्रहण करने के लिए कहा, तो मैंने किया। उसके पश्चात् उन्होंने मुझे अपने बाएँ बिठा कर उस हाथ को दबाने और मालिश करने को कहा। आधा घंटे के उपरान्त उन्होंने मेरा अंगूठा अपने अंगूठे से दबाया और उसी क्षण मेरा 60 प्रतिशत रोग समाप्त हो गया। उनके चरणों में बैठे हुए उन्होंने अवर्णनीय मुस्कुराहट देते हुए वहाँ आते रहने के लिए कहा।

उस दिन मुझे आशा बँधी। किन्तु उसके बाद छह माह तक लूना के ससुराल वालों ने मुझे व्यस्त रखा। मैंने उन्हें चंडीगढ़ के निकट जीरकपुर में चार कनाल भूखंड बेचा था। पंजीकरण के समय मुझे लगा

कि मेरे साथ डेढ़ लाख रूपये का धोखा किया गया है। मैं गुरुजी के आदेश का पालन भी नहीं कर सकी थी।

छः माह के पश्चात् जब मैं पंचकूला गयी तो पता चला कि गुरुजी चंडीगढ़ चले गये हैं। मैं उसी समय उनके पास गयी। जैसे ही उन्होंने मुझे देखा, उन्होंने दूर से ही कहा कि मेरे साथ डेढ़ लाख रूपये का छल हुआ है। उनकी सर्वज्ञाता शक्ति पुनः सामने थी! उसके पश्चात् मुझे दो वर्ष तक शांत उपचार दिया। कालांतर में मैंने शिव पुराण में पढ़ा कि गुरु को दो वर्ष तक शिष्य की परीक्षा लेनी चाहिए। मैं उनके पास निरंतर जाती रही।

मेरी दीवार पर दो चक्षु

प्रसन्न मुद्रा में गुरुजी अपने भक्तों को अपने चित्र बांटते थे, पर यह करते हुए वह सदा मुझे टाल जाते थे। मुझे अत्यंत दुःख होता था। लेकिन, अड़ियल होते हुए भी मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया। पाँच बहनों में सबसे छोटी होने के कारण मुझे बहुत लाड़–प्यार मिला था। मैं प्रतिदिन सात बजे संगत में पहुँच जाती थी। दो वर्ष के बाद एक दिन मुझे देर हो गयी। भक्तों ने बताया कि उस दिन गुरुजी ने कम से कम दस बार मेरे पहुँचने के बारे में पूछा था। मैं स्तब्ध रह गयी।

उस दिन वह अति प्रसन्न चित लग रहे थे। उन्होंने भविष्य में विश्व में होने वाली घटनाओं और स्वरूप का उल्लेख किया और घंटों वार्तालाप करते रहे। भक्तों ने जो सुना वह आज कल समाचार पत्रों के मुख्य समाचार होते हैं। मैंने अपने हाथ जोड़ कर उनसे प्रश्न पूछने की आज्ञा लेकर उनको कहा, ‘‘गुरुजी, क्या मैं इतनी दुर्भाग्यशाली हूँ कि मुझे आपका चित्र नहीं मिल सकता?’’ गुरुजी ने उत्तर दिया कि मुझे चित्र की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वह मेरे हृदय में बसते हैं। इस कथन ने मुझे सोचने को प्रेरित दियाः वह तो स्वयं ईश्वर हैं और हृदय में तो केवल ईश्वर बसते हैं। पर उन्होंने मुझे एक छोटा चित्र दिया और कहा कि यह उनका परिचय है। मैं उसे सदा अपने पास रखती हूँ। उसे

मैं अपने तकिये के नीचे भी रखती हूँ या अपने परिधान पर लगा लेती हूँ। इससे मुझे सब बुराईयों से सुरक्षित होने का आभास होता है।

मैं अपने शयन कक्ष में गुरुजी का चित्र रखती थी और उसकी पूजा करती थी। कालांतर में उसमें दो चक्षु प्रकट हुए। आकार में वह बड़े-बड़े और अति सुन्दर थे। मैं उनसे कभी भयभीत नहीं हुई। मैं उनसे सदा पूछा करती थी वह बह्मा, विष्णु या महेश में से कौन हैं लेकिन वह केवल पलक झपकाते थे। कुछ समय बाद उनमें से किरणें भी निकलने लगीं। गुरुजी शिव का अवतार हैं -यह चक्षु उनका प्रत्यक्ष प्रमाण थे।

गुरुजी से मिलने से पूर्व

गुरुजी से मिलने से पूर्व मैं बाबा चरण दास, राधा स्वामी सत्संग के प्रमुख से मिली थी। मैं उनको अपने एक अमरीकी मित्र, फेरेल ब्रेनर के माध्यम से मिली थी। राधा स्वामी के अनुयायी, ब्रेनर परामनोविज्ञान में शोध करने भारत आये थे। वह मुझे बाबा चरण दास से मिलने को कह रहे थे। मैंने उन्हें पहले होशियारपुर में स्थित भृगु संहिता से प्रश्न करने के लिए हठ किया। यह उनको जानने की मेरी विधि थी। उस दिन जो पत्र हमारे समक्ष आया उसमें लिखा था कि वह हम दोनों के लिए भाग्यशाली दिन था। संहिता के अनुसार (यह मैं पहले देख चुकी थी) पहले मैं एक देवी थी जिसका इस पृथ्वी पर जन्म लेने का मूल कारण मोक्ष प्रप्ति था।

इस विश्वास के साथ कि मुझे मुर्ख नहीं बनाया जा रहा है, मैं बाबा चरण दास से मिली। वह लोगों को दीक्षा देते थे। उस समय मेरी माँ कंप वात रोग (पार्किन्सन रोग) से पीड़ित थीं। मैंने उनको कहा कि यदि वह मुझे दीक्षा देना चाहते हैं तो उन्हें मेरी माँ को स्वस्थ करना पड़ेगा। वह मान गये और मैंने दीक्षा ग्रहण करी। किन्तु मेरी माँ शीघ्र ही चल बसीं। मैं विस्मित थी। बचपन से मैं अतीन्द्रियदर्शी रही हूँ और आने वाली घटनाओं को अक्सर मैं स्वप्न में देख लेती हूँ। यदा कदा मैं दिव्य

वाणी (आकाशवाणी) भी सुन लेती हूँ। मैंने ईश्वर से प्रश्न किया कि क्या बाबा भगवान हैं। उत्तर मिला कि वह शीघ्र ही मिलेंगे। हम सब तो सदा उनसे मिलने के मार्ग पर हैं, मैंने सोचा, और बाबा पर से मेरा विश्वास समाप्त हो गया।

गगन चुम्बी वृक्ष

गुरुजी से मिलने के पश्चात् मैंने पुनः दिव्य वाणी से प्रश्न किया। मैंने पूछा कि वह कौन हैं। उत्तर मिला कि वह स्वयं परमात्मा हैं। इस आकाशवाणी के बाद, बिना किसी संशय के, मैंने उनको पूजना आरम्भ कर दिया। गुरुजी मुझे चमत्कार दिखाते रहे। उनके छोटे चित्र के साथ मैं समाधि करने लगती थी। चित्र की आँखें पलक झपकाने लगती थीं और मस्तक में से किरणें निकलती थीं।

मैं अपने अन्तरस्थ को मुड़ी और मैंने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए पूछा कि मेरे जीवन का ध्येय क्या है? प्रार्थना करने के पश्चात् जब मैं संगत में पहुँची तो गुरुजी अपने आसन पर बैठे हुए थे। उनके चरणों में से ज्योति फूटी, उनके चरणों में रखे हुए हरे कालीन के चारों ओर गयी और मुझे छूने की पश्चात् उनके चरणों में वापस चली गयी। मुझे प्रतीत हुआ कि मुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया है। वह मेरी तलाश के आदि, मध्य और अंत हैं। हमारा अस्तित्व उनसे प्रारम्भ होकर उन्हीं में विलीन हो जाता है। कल युग में ईश्वर अच्छी आत्माओं का उद्धार करने मानव रूप में प्रकट होते हैं। वह आगये हैं।

अब मुझे प्रतीत होता है कि मैं प्रभु में अपनी आस्था खो चुकी थी। इसकी पुनर्स्थापना और अपने जीवन के लक्ष्य को पाने के लिए मुझे गुरुजी के पास पहुँचाया गया था। सतगुरु ने मुझ पर अपनी अनुकम्पा करी। मौत के द्वार से वह मुझे वापस लाये। अपने मार्ग से भटकने के पश्चात् गुरुजी ने मेरा मार्गदर्शन किया है।

मोक्ष केवल मनुष्य रूप में पृथ्वी पर ही मिलता है। स्वर्ग में मनुष्य अपने सुकर्मों का फल भोगता है। मोक्ष केवल गुरु के आशीर्वाद से ही

संभव है। संस्कृत की एक सूक्ति ''मोक्षमूलं गुरुकृपा'' है जिसका अर्थ है कि गुरुकृपा के बिना मोक्ष संभव नहीं है। जप साहिब में भी गुरु नानक कहते हैं ''जा सौ चंद उगे, सूरज चढ़े हजार, एते चरण हुन्दे, गुरु बिन घोर अंध्यार'' अर्थात् सौ चंद्रमा और सहस्र सूर्यों का प्रकाश होते हुए भी गुरु कृपा बिना घुप्प अँधेरा रहता है।

मुझे अनेक जपों का ज्ञान हुआ है; उनमें अमर संजीवनी मन्त्र भी है जिससे मृत को पुनर्जीवित कर सकते हैं। उसमें शिव का आह्वान करते हुए कहते हैं: ''हे प्रभु! हे शिव! आपका नाम आशा पूर्ति करने वाले वृक्ष के समान है।'' यह मन्त्र करने के उपरान्त मैंने उसे वास्तव में देखा। प्रातः 3.30 बजे मेरे घर में गुरुजी प्रकट हुए और मुझे एक गगन चुम्बी वृक्ष दिखाया जिसके तने में किरणों का सर्प लिपटा हुआ था। गुरुजी ने एक सैद्धांतिक विचारधारा को प्रत्यक्ष रूप में दृष्टिगोचर करा दिया था।

उनकी छत्रछाया में सौंदर्य

जबसे मेरे ऊपर काला जादू हुआ था मेरी त्वचा का रंग काला हो गया था। गुरुजी के पास दो वर्ष तक जाने के उपरान्त एक दिन लूना के पिता ने मुझे गुरुजी के पास बुलाया और उनके सम्मुख बैठने को कहा। गुरुजी ने तुरन्त मेरे रंग पर टिप्पणी करी। मैंने उत्तर दिया कि यदि ईश्वर ने मुझे ऐसा बना दिया है तो मैं क्या कर सकती हूँ। वह बोले कि यदि ईश्वर ने मुझे ऐसा रंग दिया है तो वह मेरा रंग साफ कर देंगे। फिर उन्होंने मुझे चाय प्रसाद लेने के लिए कहा। शनैः शनैः उनके आशीर्वाद से मेरा रंग साफ होता गया।

एक दिन उन्होंने मुझे अपने पास बिठाया। कुछ समय पूर्व ही मैं इंग्लेंड से वापस आई थी और अपने साथ त्वचा साफ़ करने वाली अनेक महंगी क्रीमें लेकर आयी थी। गुरुजी ने उन्हें घर से लाने के लिए कहा। उस समय रात्रि के 12:30 बज रहे थे। मैंने उन्हें बताया कि इस समय जाने से मेरे पड़ोसी मुझे तंग करेंगे। उन्होंने कहा कि वह मेरे साथ

हैं और मुझे चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। मैं घर से सब क्रीमें लेकर आयी और उनके निर्देशानुसार उनके चरणों में लगाने लगी। मेरे ऐसा करते हुए उन्होंने एक अन्य महिला भक्त को कहा कि देखो इसका हृदय कितना विशाल है, यह पूरी क्रीमें लेकर आ गयी है। उनके पैरों में वह लगाने के पश्चात् मुझे आभास हुआ कि मेरे पैरों की पीड़ा, जिससे मैं कई वर्षों से प्रभावित थी, समाप्त हो गयी है।

मुझे अपने चंडीगढ़ निवास में अकेले रहने के कारण सदा चिंता सताती रहती थी। एक बार मैं गुरुजी के यहाँ से रात्रि डेढ़ बजे वापस जा रही थी। अपने यहाँ पहुँच कर, दूसरी मंजिल पर स्थित अपने घर में प्रवेश करने के लिए मैं सीढ़ियाँ चढ़ रही थी कि मुझे गुरुजी की सुगन्ध मिली। मुझे एकदम सुरक्षा का आभास हुआ। मैंने अपने पीछे दरवाज़ा बंद ही किया था कि मुझे किसी के खांसने की आवाज आयी। मैं अत्यंत भयभीत हो गयी। कौन हो सकता है? क्या कुछ चोर घर में घुस आये थे? उस पूरी रात मैं सो नहीं पायी।

अगले दिन जब मैं गुरुजी के पास गयी तो वह उसी प्रकार से खांसे। मुझे ज्ञात हो गया कि रात को वह ही घर पर आये थे।

यह जान कर कि गुरुजी घर बार बार आ रहे हैं, विशेष पर अमृत वेला के समय पर, मैंने घर के परदे बदलने का निश्चय किया। किन्तु यह करते हुए मैं गिर पड़ी। मेरी रीढ़ की अस्थि में पहले ही चोट थी और अब यह हो गया – जब उनके लिए परदे लगा रही थी। मुझे नींद आ गयी। स्वप्न में मैंने देखा कि गुरुजी दो भक्तों के साथ घर आये हैं। उन्होंने उनको वातानुकूल यंत्र को बंद करने के लिए कहा क्योंकि मैं गिर गयी थी। जब मैं जगी तो मेरे ए सी के साथ पंखे भी बंद थे। गुरुजी अपने भक्तों का इतना ध्यान रखते हैं। जब वह ध्यान रखते हैं वह वास्तव में ध्यान रखते हैं।

एक अन्य दिन जब मैं संगत से वापस आ रही थी तो अचानक एक गाय मेरी कार के सामने आ गयी। मैं केवल गुरुजी चिल्लायी और बच गयी। घर पहुँच कर मुझे पता लगा कि गुरुजी ने भक्तों को मुझे

निरंतर फोन करने के लिए कहा हुआ था। उन्होंने मुझसे फोन पर बात कर के मेरे हाल चाल पूछे।

एक बार पंचकूला के निकट सकेत्री में स्थित शिव मंदिर से मैं वापस आ रही थी तो रात अधिक हो गयी थी। अकस्मात् मेरी कार का दाहिना पहिया एक नाली में फंस गया। जितना भी मैं एक्सेलरेटर दबाऊँ वह टस से मस नहीं हो रहा था। इस प्रकार से मैं कोई आधा घंटे अटकी रही होऊँगी कि मैंने एक बस को तीव्र गति से अपनी ओर आते देखा। मैंने गुरुजी को आवाज लगायी और तुरन्त वह पहिया बाहर आ गया। सुरक्षित मैं पुनः सड़क पर आ गयी थी।

गुरुजी न केवल मेरी भौतिक अपितु भावनाओं का भी विशेष ध्यान रखते हैं। चंडीगढ़ में मैं एक शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय में पढ़ाती थी। वहाँ के शिक्षकों को कला विभाग से असंतोष था और उनका व्यवहार द्वेषपूर्ण रहता था। एक दिन मैं उनके कटाक्ष और सहन नहीं कर पायी और अपनी कार में बैठ कर रो रही थी। तुरन्त गुरुजी की सुगन्ध कार में भर गयी और मैं अपनी भावुकता से बाहर निकल आयी।

एक भूतपूर्व प्रशासनिक अधिकारी सरदार मनमोहन सिंह मेरी सहायता करते रहते थे। सेवा निवृत होने के बाद उनके मस्तिष्क के कोशाणु नष्ट होने लगे थे। अक्सर वह भाषण देने लगते थे और उनको घर पर बाँध कर रखना पड़ता था। क्योंकि उन्होंने मेरे पर अनेक उपकार किये थे मैं उनका यह ऋण चुकाना चाहती थी। मैंने यह गुरुजी को बताया तो उन्होंने उनकी पत्नी को ताम्र लोटा लाने के लिए कहा और उसे अभिमंत्रित किया। मैं उनको भी गुरुजी के पास लेकर आयी। गुरुजी ने उन्हें अच्छी नींद लेने के लिए कहा और उस रात उन्हें एक लम्बे अंतराल के बाद गहरी निद्रा आयी।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का सन्देश

एक दिन गुरुजी ने सरदार मनमोहन सिंह की पत्नी को चवन खरीद कर वृहस्पति और शुक्रवार को अपने घर रख कर सेक्टर 44 के

निहंग गुरद्वारे में दान करने के लिए कहा। यह करने के उपरान्त उन्हें गुरु ग्रन्थ साहिब का उस दिन का सन्देश पूछना था।

यह उन्होंने तो नहीं किया किन्तु मैंने किया। किशोर ने पवित्र ग्रन्थ से शब्द निकाल कर मुझे दिया। उसके अनुसार ईश्वर पहले भी पूर्ण थे, अब भी हैं और सदा रहेंगे। चन्द्र और सूर्य उनकी आज्ञा का पालन करते हैं और जो निर्मल हैं, वह उनको ही दिखायी देते हैं। मैं वह सन्देश लिख कर संगत में ले आयी। परन्तु मैं उसे गुरुजी को दिखाने का साहस नहीं कर सकी क्योंकि मुझे यह करने के लिए नहीं कहा गया था। प्रातः 3:30 बजे गुरुजी ने मुझे दर्शन दिये। उनके हाथ में गुरु ग्रन्थ साहिब का वही पृष्ट था जिस पर वह शब्द अंकित थे। इसका क्या अर्थ है? वह गुरु ग्रन्थ साहिब के रचयिता है।

भेंट में हार

गुरुजी ने मुझे चंडीगढ़ में अपना घर बेचने को कहा। मैंने उसे बेच तो दिया किन्तु मुझे चंडीगढ़ में रहने के लिए कोई और स्थान नहीं मिला। गुरुजी ने मुझे अपने दीर्घकालीन भक्त, खेरा परिवार के पास रहने के लिए भेज दिया। श्री खेरा विद्यालय में गुरुजी के अध्यापक रह चुके थे और उन्होंने उन्हें रक्त के केंसर से मुक्त किया था। गुरुजी ने उन्हें संतान का आशीष भी दिया था। खेरा परिवार ने अपने घर में मुझे एक कमरा दे दिया।

मैं इतनी रुग्ण थी कि यात्रा नहीं कर सकती थी और गुरुजी दिल्ली चले गये थे। गुरुजी द्वारा मेरे लिए भेजा हुआ प्रसाद मैं लिया करती थी। वह मेरे लिए औषधि था और उससे काले जादू के दुष्प्रभाव समाप्त हो रहे थे। उस प्रसाद में इतनी शक्ति थी कि मैं उसे खाने के पश्चात् खून की उल्टी कर देती थी। मैंने देखा कि उल्टी में विष भी निकलता था – मुझे खिलायी गयी अस्थियों की राख!

लेकिन गुरुजी से दूर रहना सरल नहीं था। जब भी खेरा परिवार दिल्ली जाते थे मैं गुरुजी के चित्र के सामने रो पड़ती थी। एक बार रोते

हुए मैंने कहा, ''जब कलियाँ मांगी, काँटों का हार मिला।'' जब खेरा परिवार अगले दिन वापस आये तो उन्होंने गुरुजी द्वारा भेजी हुई पुष्पमाला मुझे दी। गुरुजी भक्त के मन को टटोलते रहते हैं। वह हमारे प्रेम को जानते हैं।

घर की खोज

कुछ समय के पश्चात् मैंने एकांत प्राप्ति के लिए राजकीय महाविद्यालय के छात्रावास में रहने का निश्चय किया। मेरे पड़ोसी नवग्रह शांति यज्ञ करा रहे थे। उत्सुकतावश मैंने भी एक पंडितजी को वह करने के लिए कहा। हवन से पूर्व मैंने गुरुजी की पूजा करी। पंडितजी के जाने के पश्चात्, मैं बहुत थकान अनुभव कर रही थी। मैं सोने ही वाली थी कि मेरे सामने लाल परिधान में, मुझे एकटक देखती हुई एक आकृति प्रकट हुई। वह गुरुजी के चित्र के समान थी। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती, सर्वज्ञाता सतगुरु ने मुझे फोन किया और पूछा कि क्या मैं उनकी पूजा कर रही थी।

मेरे पास अपना कोई घर नहीं था और मैं पंचकूला में एक किराये के मकान में रह रही थी। परन्तु बाद में मैंने यह घर नहीं खरीदा। गुरुजी ने मुझे वह घर दिखा दिया था। 1998 में एक स्वप्न में मैंने देखा कि मेरे पास एक कोने का मकान है जिसकी दिवारें गुलाबी रंग की हैं। किन्तु मैं उस घर को नहीं ढूँढ पायी। कारण स्पष्ट था – ऐसे घरों का निर्माण 2001 में ही हुआ और हरियाणा नगर विकास निगम ने उनका आबंटन 2003 में ही किया। इसका अर्थ है कि गुरुजी को उस घर के बारे में उसके बनने से पहले ज्ञान था।

त्रिलोक स्वामी

एक बार मुझे स्वप्न आया कि मैं दिव्यलोक में एक झील के किनारे बैठी हुई हूँ। उसके अनुपम सौन्दर्य का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। उस लोक में भी मैंने अपना पर्स जोर से अपने हाथ में

पकड़ा हुआ था। जब मैं सोकर उठी तो मैं अत्यंत शर्मिंदा होकर सोच रही थी क्या मैं इतनी लोभी हूँ।

मैंने अपने सब बैंकों से जमा पूँजी निकल कर गुरुजी के चरणों में रख दी। उन्होंने कहा कि उन्हें इन निरर्थक कागजों की कोई आवश्यकता नहीं है और मुझे वह वापस ले जाने के लिए कहा। रात बहुत हो चुकी थी और मैं चिंतित थी। किन्तु गुरुजी ने आश्वासन दिया कि वह साथ हैं और कोई अनहोनी नहीं होगी। मार्ग में मैं एक भक्त के घर पर चाय के लिए रुकी किन्तु गुरुजी ने मना कर दिया। मुझे अपनी कार के आस पास कुछ अवांछित तत्त्व दिखायी दिये थे और मैं सीधा घर आ गयी।

एक रात मैं फिर उनके चित्र के सामने रो रही थी। उसी क्षण उनके चित्र में से एक दिव्य हाथ निकला। उस पर, कीड़ों के आकार के, अनेक स्त्री पुरूष चल फिर रहे थे। वास्वत में गुरुजी कहते हैं कि उनकी संगत कीट समान है। यह देख कर मुझे उसकी सार्थकता का आभास हुआ। ईश्वर की अपेक्षा और कौन अपने ग्रहों के निवासियों को अपने हाथ में संभाल सकता है। गुरुजी इस पृथ्वी के चक्रवर्ती सम्राट हैं। मैंने देखा है कि वह ब्रह्मा, विष्णु और महेश के दर्शन कहीं भी दे सकते हैं। एक स्वप्न में मैंने देखा कि मैं सात वर्ष की नन्ही लड़की हूँ और मेरे दाहिने कान के पीछे बालों में कुछ झाग लगा हुआ है। वह झाग चार स्वर्ण के पेचों में परिवर्तित हो गया। वह खुले और दो अन्य मूर्तियों के साथ शिव मूर्ति बाहर आयी। एक दिव्य ध्वनि ने इनको त्रिदेव होने की घोषणा करी और मुझे पता चल गया कि मेरे गुरु सब देवों के देव हैं। वह स्वयं परमात्मा हैं।

एक बार चंडीगढ़ में देर रात्रि में गुरुजी ने अपने एक भक्त नवराज को सोने के लिए डांटा। नवराज को अपनी आंखें खोल कर रखने में दिक्कत हो रही थी। अतः गुरुजी ने उसको बार बार डांटा और सोने से रोका।

घर पहुँच कर मैंने स्वप्न में देखा कि गुरुजी आसन पर बैठे हुए

थे और संगत के स्वर्गवासी सदस्य, मेरी माँ भी उनमें थीं, उनके सम्मुख बैठे हुए हैं। यह गुरुजी की परलोक में संगत थी। मैंने नवराज को संगत के लिए दूध की बाल्टी पकड़े हुए देखा। मैंने निष्कर्ष निकाला कि यदि नवराज उस रात सो जाता तो उसकी मौत निश्चित थी।

सतगुरु के डांटने में अर्थ छिपा हुआ होता है। अपने को समर्थ पाकर मैं एक बार शिवरात्रि के अवसर पर दिल्ली आयी तो उन्होंने मुझे डांटा। क्रोधित होकर उन्होंने जोर से मुझे वापस जाने के लिए कहा। बिना प्रसाद या लंगर ग्रहण किये मैं तुरन्त वापस चली गयी। मैं उनके चित्र के सामने दिल खोलकर रोयी। मैंने कहा कि मैं अपने शिष्यों के साथ भी इस प्रकार का व्यवहार नहीं करती हूँ। पर गुरुजी मेरे भीतर छिपी हुई, दुष्प्रवृत्ति, मेरे स्वाभिमान, को मिटा रहे थे।

संक्षेप में

मैं कवियित्री हूँ और एक बार मैंने उन पर 20 छंद लिखे। जब मैंने यह कागज़ उनको दिया तो उन्होंने वह अपनी जेब में रख लिया और बोले कि मैं उन पर और लिखूंगी। उसके बाद ही मैं, बिना किसी प्रयास के, धारा प्रवाह सौ छंद और लिख पायी।

फिर मैंने एक उपन्यास ''जब प्रेम कियो'' लिखा और उनको समर्पित किया। शीर्षक गुरुबानी की एक पंक्ति 'जब प्रेम कियो, जे परब पायो' से उद्घृत किया था। शीघ्र ही, यह पुस्तक, गुरुकृपा से, पंजाबी भाषा के एम फिल पाठ्यक्रम में लगा दी गयी।

– डॉ मनजीत तिवाना, पंचकूला

उपचार की तरंग

मैंने अपने भाई हरमिंदर सिंह को गुरुजी की अत्याधिक प्रशंसा करते हुए सुना था। 2003 में, जब मैं जयपुर में रहता था, मैं अपने भाई के साथ गुरुजी की संगत में गया। वहां पर सत्संग होते थे जिसमें प्रत्येक वक्ता गुरुजी के गुणगान गाते हुए उनके द्वारा असंभव को संभव हेने की बात करते थे।

मेरे भीतर भी आशा की किरणें उभरीं और मैंने गुरुजी से अपने दाहिने हाथ के उपचार के लिए विनती करी। वह एक दुर्घटना में क्षतिग्रस्त हो गया था। शीतकाल और कोई भी कार्य करते हुए उसमें पीड़ा बहुत बढ़ जाती थी। मुझे उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ और उन्होंने मुझे ताम्र लोटा लाने को कहा। जब मैं वह लोटा लेकर उनके सम्मुख बैठा हुआ था, मुझे अपने हाथ में तीव्र तरंगें बहने का आभास हुआ। इससे उसमें तुरन्त ही शक्ति आयी और मैं उसे बिना पीड़ा के हिला सका।

मुझे बहुत यात्राएं करनी पड़ती हैं, अक्सर मेरी दुर्घटनाएं हो जाती थीं। परन्तु गुरुजी के दर्शन होने के बाद मुझे सुरक्षा का अनुभव रहा है। एक बार रात को अजमेर से जयपुर आते हुए मैं कार की पिछली सीट पर विश्राम कर रहा था। अचानक मुझे किसी ने झिंझोड़ कर जगाया और मैंने चिल्ला कर वाहन चालक को कहा कि आगे मार्ग पर ट्रक खड़ा हुआ है। उसने तुरन्त ब्रेक लगायी और दुर्घटना होते होते बची। मुझे आभास हुआ कि उस समय गुरुजी ने ही मुझे अर्ध निद्रा की अवस्था से जगाया था।

मुझे प्रतीत होता है कि गुरुजी ने मुझे आशीर्वाद के साथ साथ प्रसन्नता और शांति भी दी है। मैं कृतज्ञ हूँ कि अब गुरुजी ने मुझे प्रतिदिन जालंधर में उनके मंदिर में आने की आज्ञा दी हुई है।

– मनमोहन कुकरेजा, जालंधर

नशे से मुक्ति

बचपन में जालंधर जाने पर मैं सदा अपने ननिहाल में रहता था। परिवार के सदस्य गुरुजी के दर्शन के लिए जाते थे और एक ऐसे ही अवसर पर मैंने भी उनके साथ गुरुजी के दर्शन किये।

उनके मंदिर में प्रवेश करते ही वहाँ पर तीव्र सुगन्ध थी जैसे किसी ने पूरे कक्ष में कोई इत्र बिखेरा हुआ हो। हम बैठ कर भक्तों को आते हुए और गुरुजी का आशीर्वाद लेते हुए देखते रहे। उसके पश्चात् उन्होंने एक जल को अपनी माला से अभिमंत्रित किया और हमने बारी बारी से उस जल को ग्रहण किया। उस जल में से एक विशेष महक आती थी। बच्चे होते हुए भी हम बिना दंगा या छेड़खानी किये हुए एक स्थान पर बैठ सकते थे।

मेरे पिता एक ईश्वर के अतिरिक्त किसी को नहीं मानते थे। उन्होंने मेरी माँ को भी गुरुजी के पास जाने के लिए मना किया था क्योंकि यह उन्हें पसंद नहीं था। अतः हमने गुरुजी के पास जाना बंद कर दिया। कोई आठ वर्ष के लिए हम गुरुजी के पास नहीं गये; हमारे अन्य सम्बन्धी उनके पास जाते रहे। गुरुजी उनको हमें उनके पास लाने के लिए कहते थे। फिर गुरुजी दिल्ली चले गये।

2003 में मैं अपने एम बी ए के लिए दिल्ली आ गया। मुझे नशे की लत पड़ गयी क्योंकि मैं अकेला रहता था और मद्यपान करना अच्छा लगता था। अपने अभिभावकों के कहने पर मैंने अपने यकृत का परीक्षण करवाया। यह परीक्षण पहले भी करवाया था और परिणाम अशुभ होते हुए भी मैंने उनकी अवहेलना की थी। स्वस्थ मनुष्य का परिणाम 40 आई यु प्रति लीटर होना चाहिए; मेरा 347 था। स्पष्ट था कि यदि मैंने मद्यपान नहीं छोड़ा तो मुझे यकृत का सूत्रण रोग होने की पूरी संभावना थी जो निश्चित रूप से घातक हो सकता था।

मेरी माँ मेरे साथ रह रहीं थीं। हम वसंत कुंज से द्वारका, दूसरे मकान में जाने को थे और वह मेरी सहायता करने आयीं थीं। मेरी माँ धार्मिक प्रवृत्ति की थीं और नियमित रूप से गुरुजी के पास जाकर उनकी कृपा और मेरे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करती थीं। एक दिन गुरुजी ने उन्हें बताया कि उनकी संतान को कष्ट है और मुझे लाने के लिए कहा। मैं गया। मेरे पिता को यह पता नहीं था। हर संध्या को मैं सीधा उनकी संगत में जाकर चाय और लंगर ग्रहण कर वापस आता था। कुछ भक्त सत्संग सुनाते थे कि कैसे गुरुजी ने उनके कष्ट दूर किये। वहाँ पर कई ऐसे अनुयायी थे जिनको हृदय रोग, कंसर और धन के अभाव से मुक्ति प्राप्त हुई थी और अब वह प्रसन्न थे। गुरुजी ने माँ को दस दिन तक लगातार आने के लिए कहा। मेरे लिए ताम्र लोटा भी मंगाया जिसे उन्होंने अभिमंत्रित किया और मैंने उसमें से जल पिया। उनके पास बैठे हुए मेरे मन में केवल उनके आशीर्वाद का विचार रहता था।

इन्हीं दिनों मैंने एक अन्य चिकित्सक से भी परामर्श लिया। मेरे एक मित्र ने उसके बारे में बताया था। मेरे मित्र को भी यही रोग था और वह मेरे जैसी ही औषधियाँ ले रहा था। चार मास के बाद भी उसका उपचार पूरा नहीं हुआ था।

एक दिन गुरुजी ने मेरी माँ को कहा कि मैं स्वस्थ हो गया हूँ और उन्हें चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मुझे पुनः सब परीक्षण

भी करवाने को कहा। जब मेरे परीक्षण हुए तो परिणाम 40 आई यु प्रति लीटर आया जो सामान्य था। मैं समझ नहीं पाया कि यह चमत्कार कैसे हुआ। मैंने गुरुजी को उनके आशीष के लिए धन्यवाद देना चाहा तो उन्होंने मेरे से प्रश्न किया कि क्या मैंने परीक्षण करवा लिए थे और मैंने हामी भरी। वह बोले, *''ठीक है न, जा ऐश कर''*। मेरी माँ और मैंने उनके चरण स्पर्श किये और हृदय से उनको धन्यवाद दिया।

नानी का हृदय रोग

उस रात मेरी नानी और माँ ने एक और चमत्कार सुनाया जो दस वर्ष पूर्व हुआ था। मेरी नानी को हृदय के तीन दौरे पड़ चुके थे और चिकित्सकों ने उनका उपचार यह कह कर मना कर दिया था कि वह जीवित नहीं रह पायेंगी। मेरी माँ और मेरे मामाजी गुरुजी के पास अर्ध रात्रि में पहुंचे। उन्होंने उन्हें पान के पत्ते लाने के लिए कहा, जिन्हें उन्होंने, नानी के साथ वाले कमरे में पूजा कर अभिमंत्रित किया। इन पान के पत्तों को मेरी नानी के हृदय स्थल पर रखा गया। दस मिनट के पश्चात् मेरी नानीजी का मूत्र हुआ जो एक सकारात्मक संकेत था। यह देख कर चिकित्सक उन्हें तुरन्त लुधियाना के एक चिकित्सालय में बायपास के लिए ले गये। गुरुजी के बिना मेरी नानी आज जीवित नहीं होतीं।

कुछ अनुभवों की व्याख्या करना कठिन है किन्तु वह होती हैं। उन्हें केवल स्वीकार किया जा सकता है। मेरे उपचार के उपरान्त गुरुजी के प्रति मेरी श्रद्धा में वृद्धि हुई है। उनका आशीष हमारे परिवार पर सदा बना रहे।

– मुनीत जाखड़, चंडीगढ़

दशक के बाद पुत्राशीष

मेरी छोटी बहन गीता का विवाह 1995 में संपन्न हुआ था पर वह दस वर्ष तक, गुरुजी के आशीर्वाद देने तक, संतानसुख से वंचित रही थी। हम गुरुजी के पास पहली बार वर्ष 2001 में गये थे और मेरे पुत्र शांतनु को मिरगी से स्वस्थ करने के पश्चात् हमने अपनी बढ़ती हुई सूची में एक विषय और जोड़ दिया था – गुरुजी से गीता को संतान का आशीष। गीता कनाडा में रहते हुए अपना उपचार करवाती रही थी और पिछले पांच वर्ष से भारत में भी करवा रही थी। गुरुजी ने मेरे द्वारा उसे कहलवाया कि वह प्रत्येक सोमवार को व्रत रखना आरम्भ करे और यदि कोई फल खाना छोड़ सकती है तो ऐसा करे। मैंने गीता को गुरुजी के निर्देश बताये तो उसने अमरूद खाने छोड़ दिये जो उसे पसंद नहीं थे।

कुछ ही महीनों में गीता ने गर्भ धारण कर लिया। पूरा परिवार अति उत्साहित था और आतुरता से उसकी संतान होने की प्रतीक्षा कर रहा

था। परन्तु एक समारोह में उसने, ध्यान न रहने पर, अमरूद खा लिया – गुरुजी की माया ही कहिये। उसने मुझे तुरन्त फोन किया। कुछ ही सप्ताह में उसे गर्भपात हो गया और उसने वह बच्चा खो दिया। जब मैंने गुरुजी से इस बात का उल्लेख किया तो उन्होंने उसे शिवरात्रि को उनके पास आने के लिए कहा। शिवरात्रि में एक सप्ताह से कम का समय शेष था किन्तु गुरुकृपा से वह दिल्ली आ सकी। गुरुजी के दर्शन के बाद उन्होंने उसे आशीर्वाद देकर उसे वापस कनाडा लौटने को कहा।

कनाडा लौट कर उसने अपने व्रत फिर आरम्भ कर दिये। एक वर्ष बीत गया। 2005, में एक दिन, जब हम बड़े मंदिर में थे, उन्होंने मुझसे पुछा कि क्या मेरे पास गीता का चित्र है। चूंकि उस समय मेरे पास नहीं था उन्होंने मुझे उसका एक चित्र मंदिर आते हुए सदा साथ रखने का निर्देश दिया।

गुरुजी के साथ उस वार्तालाप के एक माह पश्चात् गीता ने मुझे फोन पर बताया कि उसे फिर गर्भवती होने का आभास है पर निश्चित रूप से चिकित्सक के परीक्षण के बाद ही बता पायेगी। चिकित्सक ने उसके गर्भ धारण करने की बात स्पष्ट कर दी और उसने 22 मई को एक स्वस्थ बालक को जन्म दिया। यह गुरु कृपा से ही संभव था क्योंकि चिकित्सा शास्त्र में कोई उपाय शेष नहीं था। यह गुरुजी की जीवन और मृत्यु को नियंत्रित करने की अद्भुत प्रतिभा को दर्शाता है।

– श्रीमती मीनू शर्मा, दिल्ली

मीरा के गुरुजी

जब श्रीमती मीरा कपूर गुरुजी से मिलीं तो उनके मेरूदंड में अत्याधिक समस्या थी। उसके रीढ़ की अस्थि आपस में जुड़ गयीं थीं, इससे अन्य स्थान रिक्त हो गये थे। उसे प्रतीत होता था कि वहां से पैर की ओर जाती हुई किसी नस पर दबाव पड़ रहा था जिससे उसके पैर में बहुत पीड़ा रहती थी। चिकित्सकों ने भी देखा कि उसका दाहिना पैर शिथिल हो रहा है और उसका वजन घट रहा था। वह कमरबंद बांधे रहती थी किन्तु उसके साथ भी एक स्थान पर 15 मिनट से अधिक बैठना उसके लिए संभव नहीं था।

गुरुजी के पास प्रारम्भिक दर्शनों में वह अपने साथ तकिये ले जाती थी ताकि लगातार संगत में बैठने में कठिनाई न हो। परन्तु गुरुजी ने उसे यह करते हुए देख कर तकिये लाने को मना किया। जब उसने उन्हें चुपके से लाने का प्रयास किया तो उसे बहुत डांट पड़ी। अंततः वह भूमि पर बैठी – और घंटों तक बैठ सकी!

मीरा ने गुरुजी के दर्शन पहली बार 3 अप्रैल 1995 को ग्रेटर कैलाश में किये। गुरुजी ने उससे पूछा कि वह किस रोग से निवृत होना चाहती है। पूरा वृत्तांत सुनने के बाद उन्होंने तुरन्त कहा कि चलो शल्य क्रिया करते हैं। वह भयभीत हो गयी। गुरुजी उसे एक कक्ष में ले गये और वहां पर एक चम्मच उसके शरीर के रुग्ण भागों पर रखा और फिर

उसकी गर्दन दायें और बायें, दोनों ओर बहुत जोर से मोड़ी। मीरा को अत्याधिक पीड़ा हुई। उसके संभलने पर गुरुजी बोले कि उसके पैर का उपचार वह जालंधर में करेंगे।

इस क्रिया के पश्चात् मीरा की पीठ का दर्द समाप्त हो गया पर उसके जोड़ों में वेदना फिर भी बनी हई थी। उसके हाथ की उँगलियाँ सूजी हुई थी और उसके जोड़ों पर बड़ी-बड़ी गांठें बनी हुई थी। एक दिन मीरा ने सतगुरु को अपनी समस्या से अवगत कराया। गुरुजी ने उससे बात करते हुए उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और वह धीरे धीरे उसकी मालिश करने लगे। बातों में मीरा को इसका आभास ही नहीं हुआ। वह उनको बताती रही कि उसके हाथ में कितनी समस्या है। अंत में गुरुजी ने उसको टोका और अपने हाथ देखने को कहा। इस अंतराल में वह हो गया था जिसकी वह मात्र आशा ही कर सकती थी। उसकी उँगलियाँ पुनः पतली और सुन्दर हो गयी थी, जोड़ो में कोई पीड़ा नहीं थी - और यह सब होते हुए उसे पता भी नहीं लगा था।

गुरुजी ने एक बार मीरा को बताया था कि वह उसे मरने नहीं देंगे, उन्होंने उसे जीवन के दस अतिरिक्त वर्ष दे दिये हैं। वह उसे बचाते रहेंगे और उसके रोग अंतरित करते रहेंगे। उनके यह शब्द अनेक बार सत्य सिद्ध हुए है।

पथरी भरा पित्ताशय

मीरा को अत्याधिक उदर शूल हो रहा था। चिकित्सा परीक्षणों से पता लगा कि उसके पित्ताशय में पथरियां भरी हुई है। सबसे बड़ी आधा इंच तक मोटी थी। चिकित्सकों ने औषधियाँ देना आरम्भ कर दिया पर यह भी बताया कि शल्य क्रिया ही अंतिम उपाय है।

गुरुजी उस समय जालंधर में थे और उन्होंने उनके दिल्ली लोटने पर शल्य क्रिया करवाने को कहा। उसने कहा कि वह पीड़ा नहीं सह पा रही है। गुरुजी ने अपना हाथ वहां पर रखा और उसकी वेदना समाप्त

हो गयी। मीरा ने गुरुजी के लौटने की प्रतीक्षा करी और आने पर शल्य क्रिया करवायी। उसका पित्ताशय सफलता पूर्वक निकाला गया।

मीरा को स्वास्थ्य संबंधी अनेक समस्याएँ थीं। उसके मधु का स्तर लगातार ऊपर नीचे होता रहता था। इसके कुप्रभाव से उसकी बांयीं आँख की दृष्टि कम होती जा रही थी। मीरा ने सर गंगाराम चिकित्सालय में जा कर उस आँख का परीक्षण करवाया तो पता लगा कि वहां पर स्त्राव था। चिकित्सकों ने उसे एक सप्ताह में शल्य क्रिया करवाने का परामर्श दिया।

उस दिन मंगलवार था और मीरा गुरुजी की आज्ञा के बिना कोई कदम नहीं उठाना चाह रही थी। उसने उन्हें बताया कि वह अपने पति से तिथि के बारे में बात करेगी। चिकित्सक ने उसे कहा कि आँख उसकी है न कि उसके पति की। पर अपनी बात पर अटल मीरा नहीं मानी और गुरुजी के पास गयी। सतगुरु ने अपने पैरों के पास पड़ी हुई अनेक मालाओं में से एक उठाकर उसे दी। उसकी आँख का निरीक्षण करने पर चिकित्सक स्तब्ध रह गये। उसकी आँख सामान्य थी। किसी क्रिया या अन्य परीक्षण की आवश्यकता नहीं थी।

एक्स-रे पर से केंसर के चिह्न लुप्त हुए

गुरुकृपा मीरा के पति पर भी हुई है। उनके मुख के अन्दर एक श्वेत निशान था। चिकित्सक शंका कर रहे थे कि वह केंसर है पर उनको बाओप्सी के परिणाम की प्रतीक्षा थी। इस बीच दम्पति ने सफदरजंग चिकित्सालय में जाकर चिकित्सकों को दिखाया तो उनका भी वही निर्णय था। मीरा जल्दी से गुरुजी के पास गयी तो वह बोले, *'मौज कर।''* मीरा आश्चर्यचकित थी पर गुरुजी के वह शब्द तो उसको आशीष थे। बाओप्सी में कोई धब्बे नहीं थे किन्तु पिछला एक्स-रे जो रात को दो बजे लिया था, उसमें स्पष्ट चिह्न थे। चिकित्सक फिर से स्तब्ध थे, रात भर में वह निशान कैसे लुप्त हो गये। मीरा के आनंद की तो कोई सीमा नहीं थी। गुरुजी उसके लिए सब कुछ तुरन्त कर देते है, ऐसा मीरा ने कहा।

चेतना की ओर

मीरा के पति, जो वस्त्रों के थोक व्यापारी है, को पंजाब कुछ भुगतान लेने जाना था। उन्होंने दोनों ओर शताब्दी से यात्रा करने का निर्णय ले कर आरक्षण करवा लिया। पर जब वह संचित किया हुआ धन ले कर जालंधर स्टेशन पर पहुंचे तो धुंध बहुत अधिक थी। उन्होंने रेल से यात्रा न कर बस से दिल्ली जाने का निर्णय लिया और घर पर फोन कर दिया कि वह रात को 10.30 बजे तक पहुंच जायेंगे।

मीरा को अगला फोन रात को एक बजे कश्मीरी गेट पुलिस स्टेशन से आया। उसे बताया गया कि उसके पति खाली बस में अचेतनावस्था में मिले थे। मीरा ने अपने देवर को, जो उसके साथ थे, पहचान स्थापित करने को कहा। पुलिस वाले ने उत्तर दिया कि श्री कपूर बोलने की अवस्था में नहीं है आर वह उन्हें उपचार के लिए हिन्दू राव चिकित्सालय ले जा रहे हैं।

संतप्त परिवार जब चिकित्सालय पहुंचा तो वहाँ का वातावरण देख कर निराश हो गया और वह उन्हें वहाँ से निकाल कर एक निजी चिकित्सालय में ले गये। उनकी चेतना फिर भी नहीं लौटी। मीरा गुरुजी के पास पहुंची तो उन्होंने कहा कि उसके पति को कुछ नहीं हुआ है और वह चिंता न करें। सतगुरु के कथन के पश्चात्, उसके पति ने कुछ शब्द बोले तो चिकित्सकों ने उन्हें उठाने का प्रयास किया। जब उन्हें होश आया तो चिकित्सकों ने मीरा को अगले तीन माह तक उनकी शय्या के पास रहने को कहा क्योंकि उनको अस्थायी चेतना शून्यता होने की संभावना थी। मीरा जानती थी कि यह संभव नहीं था क्योंकि उसे उनके द्वारा चलाई जा रही दूकान पर रहना पड़ता था। गुरुजी से उल्लेख करने पर उन्होंने बताया कि वह बिल्कुल स्वस्थ हैं और ऐसा कुछ नहीं होगा और ऐसा ही हुआ – उसके पति को पुनः कभी कोई बेहोशी नहीं आयी।

श्री कपूर के अनुसार बस में किसी ने उन्हें खाने के लिए कुछ

बिस्कुट दिये और उसने स्वयं भी खाये। उसके बाद जब श्री कपूर को होश आया तो वह चिकित्सालय की शय्या पर थे। परिवार धन खो जाने पर निराश था। किन्तु गुरुजी ने कहा कि वह चिंता नहीं करे, उनकी समस्या समाप्त हो गयी थी, धन तो वह और दे देंगे। मीरा कहती है कि गुरुजी ने उनकी आशा और आवश्यकता से अधिक धन दिया।

गुरु दर्शन पर चमत्कार

कपूर, मीरा और उसकी सास गुरुजी के दर्शन के लिए चंड़ीगढ़ गये थे। वह रात को पहुंचे थे और गुरुजी ने उन्हें उसी समय लौटने के लिए कहा। वह वहां से रात्रि को दो बजे निकले, उन दिनों पंजाब में आतंकवादी घटनाओं की चिंताओं के साथ। थोड़ी दूर चल कर जब उन्होंने देखा कि चंड़ीगढ़ – अम्बाला राजमार्ग बंद किया हुआ है तो उनकी चिंता और अधिक बढ़ गयी। उन्हें पंचकूला होकर जाना पड़ा। उस अंधेरी रात को, अँधेरे मार्गो से गुजरते हुए, जिन पर रोशनी भी नहीं थी, कोई अन्य व्यक्ति या गाड़ी दिखाई नहीं दे रहे थे। परिवार अत्यंत भयभीत था। उन्हें कच्चे ग्रामीण मार्गों से गुजरना पड़ रहा था।

मीरा ने दिशा निर्देश के लिए गुरुजी से प्रार्थना करी। उसकी सास सोच रही थीं कि गुरुजी इस समय अचानक कहाँ से आकर सहायता करेंगे। उसी समय खेतों में से बड़ी दाढ़ी वाले दो बड़े युवक निकल कर आये। वह मोटर साईकल पर सवार थे। मीरा ने अपने पति से कार रोक कर उनसे राजमार्ग की दूरी पता करने को कहा। उन्होंने उत्तर दिया कि वह केवल 13 किलोमीटर दूर है। मीरा ने कहा कि न कोई मार्ग दर्शक चिह्न है और रास्ता इतना सुनसान है – वह केवल इतनी दूर कैसे हो सकता है? उत्तर न मिलने पर उसने फिर से प्रश्न किया। मीरा और उसकी सास अति भयभीत थे – उसकी सास तो इनको आतंकवादी समझ रही थी। यह सुनकर एक युवक अपना मुँह मीरा के समीप लाया और बोला कि राजमार्ग वास्तव में 13 किलोमीटर है।

वहां से मात्र 200 मीटर दूर आने पर उन्हें मार्गर्शक चिह्न दिखायी

दिया जिस पर 13 किलोमीटर लिखा हुआ था और ठीक उतनी दूरी के बाद यह सड़क प्रिंस होटल के पास जा कर राजमार्ग से मिल गयी। इतनी सुनसान, अँधेरी और भयावह रात में, खेतों से निकल कर, उनको दिशा और दूरी बताने कौन आया था?

गुरुजी चाट खाने गये

यद्यपि गुरुजी की सहायता कभी कभी विदित होती है, अनेक बार उनके ढंग रहस्यपूर्ण और निराले होते हैं। उनकी क्रिया शैली और शब्दों को समझने के लिए अपने मस्तिष्क पर दबाब डालना व्यर्थ है। निम्न प्रसंग से स्पष्ट है कि उनकी दृष्टिगोचर क्रियाएं भक्त के कर्मों से संबंधित है – कम से कम यही समझ में आता है। क्या किसी को पता है कि वास्तव में वह क्या करते हैं?

गुरुजी ने मीरा और श्रीमती सब्बरवाल को प्रतिदिन बड़ा मंदिर जाने को कहा था। दोनो गुड़गाँव में रहते थे और बड़ा मंदिर उनके घर से 20 किलोमीटर की दूरी पर था। वह दोनों यह प्रतिदिन कर रहे थे। एक शाम को जब दोनो बड़े मन्दिर जा रहे थे, उन्होंने ब्रिस्टल होटल के सामने गुरुजी की कॉन्टेसा गाड़ी खड़ी देखी। फिर क्या था, वह दोनों गुरुजी के पास चले गये। गुरुजी उस दिन बहुत सरस एवं मिलनसार भाव में थे और उन्होंने इसका लाभ उठा कर उनसे वहीं पर आधा घंटे से अधिक देर तक बातें करी। फिर गुरुजी ने चाट खाने की इच्छा व्यक्त करी और पूरी संगत मानेसर स्थित हल्दीराम पहुँच गयी।

गुरुजी ने बाहर उद्यान में विश्राम करने का विचार किया और वह वहीं पर लेट गये। फिर क्या था – पूरी संगत उनको आराम देने में लग गयी। किसी ने रूमाल से हवा करी, किसी की चुन्नी उनका तकिया बन गयी और सबने उनके चारों ओर घेरा बना लिया, हर भक्त उनकी सेवा करना चाह रहा था। गुरुजी के मनोरंजन करने का एक अनुभव भी संगत को हुआ। निकट ही खड़े हुए एक चिकित्सक उस समूह के पास आये और अपना परिचय देते हुए उन्होंने पूछा कि क्या वह कोई सहायता कर

सकते है क्योंकि भूमि पर लेते हुए सज्जन की अवस्था ठीक नहीं लग रही थी। जब उनको आश्वासन दिया गया कि सब ठीक है, वह मुड़ कर चले गये।

इस बीच चाट आ गयी। जब सब चाट खा रहे थे, गुरुजी ने मीरा को बुलाया और विस्तार में उसके परिवार के बारे में पूछा – उसकी बेटी और दामाद कहाँ है? वह कब वापस आयेंगे? आदि, आदि। मीरा ने बताया कि दोनो मनाली में है और उनकी शीघ्र ही वापस आने की संभावना है। शीघ्र ही वह पर्यटन समाप्त हो गया और सब आनंद पूर्वक अपने घरों को लौट गये। एक मास के पश्चात् गुरुजी का हल्दीराम जाने का कारण समझ आया।

एक लाल बत्ती पर मीरा की बेटी और दामाद की नयी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गयी – पीछे से एक ट्रक ने आकर मारा था। कार बुरी प्रकार से क्षतिग्रस्त हुई थी। मीरा की बेटी ने उसको फोन किया और गुरुजी को इस घटना के बारे में बताने को कहा। मीरा रात को ही एम्पाएर एस्टेट भागी। गुरुजी हॉल में थे जैसे उसी की प्रतीक्षा कर रहे हों। उसने कहा कि एक दुर्घटना हुई है। गुरुजी ने दुर्घटना का स्थान बता दिया – ग्रेटर कैलाश के गोल चक्कर पर। उसने कहा कि उसके दामाद को एम्स ले जा रहे हैं, किन्तु गुरुजी ने उसे भद्रता से बताया कि उसे वसंत कुंज में स्थित इंडियन स्पाइनल इंजरीज सेंटर (भारतीय मेरूदंड क्षति केंद्र) में ले जाया जा रहा है – जैसा कि उसकी बेटी ने अंतिम क्षण में बताया था। व्यग्र मीरा काफी देर तक यह समझ ही नहीं पायी कि गुरुजी स्वयं दुर्घटना का विवरण कर रहे हैं।

सर्वशक्तिशाली सतगुरु ने उसके किसी बच्चे को चोट नहीं आने दी थी। यद्यपि उसके दामाद का मुख सूज गया था उसे कोई चोट नहीं आयी थी।

बाद में मीरा को बताया गया कि दुर्घटना के समय गुरुजी अपने कक्ष में टहल कदमी कर रहे थे। वह कहती है कि गुरुजी ने उसके दामाद की पीड़ा अपने ऊपर अंतरित कर ली थी। उन्होंने उसको कहा

कि वह उसके साथ हैं और वह थोड़ी सी भी चिंता न करे। मीरा कहती है कि एक माह पूर्व चाट के समय गुरुजी को इस दुर्घटना का पूर्वाभास हो गया था और परिवार के बारे में पूछकर उन्होंने दुर्घटना को और गंभीर होने से बचाया था।

दूकान पर विचित्र घटनाएं

गुरुजी ने छद्मवेश में, करोल बाग में स्थित, मीरा की दूकान पहुंच कर उसे व्याकुल कर दिया। वह या तो उनके कष्ट दूर करने पहुंचे थे या फिर उनको कुछ देने के लिए, पर वह कभी भी उस वेश में नहीं पहुंचे जिसमें सब भक्त उनको देखते रहते है। वह उन पर समृद्धि की वृष्टि करने के लिए उनसे धन भी ले गये। मीरा को सदा केवल इसका विस्मय मिश्रित दु:ख रहा है कि वह उन्हें कभी पहचान नहीं पायी।

कपूर अपना व्यवसाय करोल बाग में पहली मंजिल पर स्थित एक दूकान से चलाते थे। एक दिन सुबह एक अपरिचित उनकी दूकान पर आया। उसने अपना परिचय पत्र दिखाया और कहा कि उसे कुछ चिल्लर चाहिए। उस समय मीरा दूकान पर बैठी थी और उसने कहा कि वह थोक व्यापारी हैं और उनके पास छुट्टा नहीं है। परन्तु कपूर ने उसकी सहायता करने के लिए दूकान के एक कर्मचारी को 6500 रुपये का भुनाने वाला चैक देकर उस अपरिचित के साथ बैंक भेज दिया। वह व्यक्ति बैंक में गया और कर्मचारी बाहर खड़ा रहा। वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक बैंक कें सुरक्षा कर्मी ने उसे बताया कि उसके बताये हुलिए का कोई व्यक्ति बैंक में गया ही नहीं था। वह कर्मचारी दूकान पर लौट आया। उसने जब पूरा वृत्तांत सुनाया तो मीरा को अत्यंत दु:ख हुआ कि उनके जैसे अनुभवी व्यापारियों को एक अपरिचित ने इतनी सरलता से ठग लिया था। उसने गुरुजी से इसका उल्लेख किया तो उन्होंने कहा कि उनकी समस्याएँ दूर हो गयी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वह पैसा ले गये थे।

एक अन्य अवसर पर एक बहुत लम्बा व्यक्ति जिसका सिर छत

को छू रहा था दूकान पर आया और अन्दर झाँकने लगा। उसने कमर पर एक पुराना कमरबंद बाँधा हुआ था। आवारा समझ कर मीरा ने उसके जाने के लिए कहा। एक कर्मचारी ने कहा कि वह भोलेनाथ लगते हैं। मीरा ने उसे दो रुपए दिए और जोर देकर जाने के लिए कहा। वह चला गया। दूकान के सुरक्षा कर्मी ने उसे अन्दर आते हुए या बाहर जाते हुए देखा ही नहीं था। शाम को मीरा जब गुरुजी के पास गयी तो वह बहुत लज्जित हुई। सतगुरु ने उसे कहा कि जब वह दूकान पर आये थे तो उसने उन्हें केवल दो रुपये ही दिये थे।

गुरुजी का आदेश था कि वह दूकान पर बैठे। यद्यपि उसे दूकान के बारे में कुछ पता नहीं था, उसने आज्ञा का पालन किया। उसके बाद जब गुरुजी जालंधर गये तो वह उनके चित्र के सामने बहुत रोती थी। वह शिवपुराण भी पढ़ती थी और माला लेकर "ॐ नः शिवाय, शिवजी सदा सहाय, ॐ नमः शिवाय, गुरुजी सदा सहाय" का पाठ करती थी। जब भी उनको गुरुजी की सुगन्ध आती थी वह निकट ही अपने घर से कपड़े बदल कर जालंधर चले जाया करते थे।

एक ऐसे ही दर्शन पर गुरुजी ने उसे कहा कि वह उन्हें इतना याद न करे और इतना न रोये। साथ ही 'ॐ नमः शिवाय, शिवजी सदा सहाय' मन्त्र का अधिक पाठ करे।

उसके इतना याद करने के कारण गुरुजी उसकी दूकान पर आते रहे। एक बार एक संत दूकान पर आये और उन्होनें कहा कि वह उसे एक माला देना चाहते है। जब उसने अपना हाथ बढ़ाया तो संत ने उसे झुकने के लिए कहा और माला उसके गले में पहना दी। उन्होंने यह भी कहा कि वह यह माला सदा अपने गले में डाले रहे।

इसके पश्चात् गुरुजी ने उनके यहां एक बार फिर पहुंचे – मीरा के नाती को कड़ा देने। उन्होंने मीरा को भी वैसा ही कड़ा दिया।

जब मीरा ने दूकान पर बैठना आरम्भ किया तो उसने वहां पर गुरुजी का चित्र लगा दिया था। गुरुजी ने मना किया तो वह वापस घर ले गयी। दूकान पर पांच माह तक जाने के बाद गुरुजी ने उसे अपना

चित्र लगाने की आज्ञा दी। मीरा कहती है कि उसके उपरान्त व्यापार में वृद्धि हुई और उनके सब पिछले सब घाटे पूरे हो गये। गुरुजी ने श्री कपूर के वचन की भी लाज रखी।

एक बार कपूर ने किसी व्यक्ति को उसी दिन तीन लाख रूपये देने का वायदा किया। मीरा ने कहा कि उनके पास छठा भाग भी नहीं है वह उसे पैसा कैसे देंगे। कपूर ने कहा कि उस दिन दो व्यापारियों से पैसे आने है और उससे वह पूरा हो जाएगा। कपूर पैसा लेने गये। एक ने उन्हें अगले सप्ताह आने को कहा दूसरे ने अगले दिन। पैसा न मिलने पर कपूर ने करोल बाग के गुरुद्वारे के सामने गुजरते हुए गुरुजी से विनती करी। यदि वह पैसा नहीं दे पाये तो यह गुरुजी का अपमान होगा, उनका नहीं। इस प्रकार दृढ़तापूर्वक समस्या गुरुजी पर छोड़ कर वह दूकान पहुँच गये। कुछ समय के बाद उनके ऊपर वाले दूकानदार ने उनके पास एक ग्राहक भेजा। जालंधर से आये हुए इस व्यक्ति को कुछ विशेष वस्तुएं चाहिए थी। कपूर की दूकान पर वह सब सामग्री मिल गयी और उसने बिना परखे ही प्रसन्न होकर पैसे दे दिये। उस मुद्रा से कपूर अपना वायदा निभा पाये।

उस दिन जब कपूर गुरुजी के दर्शन के लिए पहुँचे तो गुरुजी ने मीरा को कहा कि क्या बात है, तुम्हारे पति मेरे लिए सड़क पर चलते हुए प्रार्थना करते हैं।

गुलाब की माला से दूकान अग्निरोधक हुई

एक बार मीरा अपनी देवरानी के साथ गुरुजी के दर्शन के लिए गयी। चलते हुए गुरुजी ने उसकी देवरानी को उनके चरणों के पास पड़ी पुष्पों में से एक गुलाब की माला उठाने को कहा। उन्होंने निर्देश दिया कि उस माला से कुछ जल शुद्ध करने के बाद उसे पूरी दूकान में छिड़कना है।

अगला दिन सोमवार था। मीरा को देवरानी को कुछ जल छिड़कने के लिए दूकान खोलने में आलस आ रहा था। मीरा ने उसे समझाया कि

अपना तर्क लगाने की अपेक्षा गुरुजी के निर्देश का पालन उचित है।

एक माह के पश्चात् करोल बाग के उस बाजार में भंयकर आग लगी। सब दूकानें जलकर राख हो गयी। उनके नीचे वाली दूकान भी जल गयी थी, यहाँ तक कि उसकी छत के पंखे भी पिघल गये। किन्तु ऊपर उनके वस्त्रों की दूकान पर पहुँचने से पहले अग्नि ने अपना रुख बदल लिया – अचानक वायु की दिशा में परिवर्तन हो गया। उस गुलाब की माला जिसे गुरुजी ने अभिमंत्रित किया था उनकी रक्षा करी थी।

कपूर का व्यवसाय परिवर्तन

कपूर का व्यवसाय अच्छा नहीं चल रहा था। श्री कपूर की चीन से सामान मंगाने की योजना थी, उनकी लागत में भी कमी आने का अनुमान था। गुरुजी को जब यह बताया गया तो उन्होंने उस योजना को स्थगित करने को कहा। उन्होंने कहा कि उचित समय आने पर वह बतायेंगे।

तीन माह के पश्चात् गुरुजी ने मीरा को इलायची और मिश्री का प्रसाद दूकान पर बैठ कर खाने के लिए दिया। उनको चीन में उस व्यक्ति का नाम, जिसके साथ वह व्यपार करेंगे, बताने के बाद गुरुजी ने व्यवसाय बढ़ाने की आज्ञा दे दी। गुरुजी ने यह भी बताया कि चीन में उनके संपर्क की नियत में कोई खोट नहीं है। पिछले वर्षों में उन्होंने उस व्यक्ति के साथ करोड़ो का व्यापार कर लिया है और वह अभी तक कभी मिले भी नहीं हैं, न ही उन्हें कभी कोई हानि हुई है।

एक बार श्री कपूर दिल्ली के एक अति व्यस्त क्षेत्र, चांदनी चौक, में थे। उनके पास एक ब्रीफकेस था जिसमें बहुत अधिक पैसे थे। उन्होंने अपनी कार को सरलता से खोलने के लिए उस ब्रीफकेस को साथ वाली कार के ऊपर रख दिया। कार निकाल कर वह घर आ गये। घर आकर उन्हें आभास हुआ कि वह अपना ब्रीफकेस तो उस कार के ऊपर ही छोड़ आये थे। वह अति व्याकुल हो गये और पुनः वहां गये।

उन्हें विश्वास था कि कोई ब्रीफकेस उठा कर ले गया होगा। उनके आश्चर्य और आनंद की सीमा नहीं रही जब उन्हें वह ब्रीफकेस उसी कार पर रखा हुआ मिला। उस शाम को वह गुरुजी से मिले तो उन्होंने इतना ही पूछा कि क्या उन्हें अपना बैग मिल गया था।

ईश्वर की दया से

केवल मीरा गुरुजी की दया से लाभान्वित नहीं हुई। उसके परिवार के अन्य सदस्य, पड़ोस की दूकान का एक कर्मचारी और चिकित्सा विभाग की अध्यक्षा – सबको गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है।

कपूर दम्पति पड़ोस की एक दूकान में गये और वहां पर गुरुजी का सत्संग करने लगे। गुरुजी के संस्मरण सुन कर वहां का एक कर्मचारी, जो माँ का अनुयायी था, इतना प्रभावित हुआ कि उसने कपूर से जालधंर में गुरुजी का पता और मार्गदर्शन ले लिए। दूकान बंद होने के बाद वह जालंधर के लिए निकल पड़ा और गुरुजी के पास पहुँच गया। गुरुजी ने उससे पूछा कि उसे किसने भेजा है। उससे उत्तर मिलने पर गुरुजी ने उसको आलिंगन में ले लिया – कारण गुरुजी को ही ज्ञात होंगे। उसके बाद उन्होंने उसे वापस दिल्ली भेज दिया।

अब इस व्यक्ति के परिवार में बहुत कलह चलती रही थी। उसके सब भाई आपस में लड़ रहे थे। वापस घर पहुँचने पर उसने अपनी पत्नी से कहा कि उसे लग रहा है सब समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी और ऐसा ही हुआ। भाइयों ने, जो संपत्ति के लिए अब तक लड़ते आये थे, उसी के कहे अनुसार बंटवारा कर लिया। एक बैंक के लॉकर में परिवार के गहने थे, वह भी आपस में बाँट लिये। एक मोती की माला पर एक कागज लगा हुआ था, जिस पर लिखा था कि यह उसको दिया जाये जो इसका अधिकारी है। उसे तुरन्त गुरुजी की याद आयी और वह उसे लेकर जालंधर गया। वहां पर संगत में बैठे हुए वह दुविधा में था कि माला गुरुजी को दे या नहीं। उसे आश्चर्य हुआ जब गुरुजी उसके पास आये और उसके अस्थिर मन का कारण पूछा। गुरुजी ने फिर वह माला उन्हें देने को कहा।

सबको मीरा के जोड़ो के दर्द से छुटकारा होते हुए देख कर अचम्भा हुआ था। मीरा की चिकित्सिका, जो सफदरजंग चिकित्सालय में अस्थि रोग विभाग की अध्यक्षा भी थी, इसी रोग से पीड़ित थीं। उन्हें रोगियों के कक्ष में घूमने में भी पीड़ा होती थी। मीरा ने उन्हें गुरुजी के दर्शन करने का परामर्श दिया। वह गयीं और गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त कर वापस लौटीं।

शीघ्र ही मीरा को उनका फोन आया। उन्होंने उसे बताया कि वह उसी समय अपने रोगियों को देख कर आयी थी और कोई वेदना नहीं हुई थी। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि वास्तव में वह अपना चक्कर लगा कर वापस आयीं हैं।

मीरा द्वारा गुरुजी के लगातार दर्शन के पश्चात् उसके परिवार वाले भी लाभान्वित होने लगे। उसकी देवरानी की सबसे पहले उनकी कृपा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसको सदा नजला रहता था जिसके कारण कई बार अधासीसी दर्द भी होता था। उसके कानों से भी तरल बहता था और श्रवण शक्ति क्षीण हो गयी थी। वह और मीरा दोनों गुरुजी के पास गये। जुकाम और अधसीसी दर्द लुप्त हो गये और उसकी श्रवण शक्ति भी अच्छी हो गयी। उसी समय उसके चार वर्षीय पुत्र अंकुर की दृष्टि क्षीण होती जा रही थी। गुरुजी से उल्लेख करने पर उन्होंने अपना आशीर्वाद दिया और उसकी आँख में मधु डालने को कहा। माँ को पता था कि आँख में शहद डालने से बहुत वेदना होती है। अतः वह हिचकिचा रही थी। पर मीरा के उस पर अभिभावी होने पर उसने अंकुर की आँख में मधु डाला। इस क्रिया से अंकुर को कोई दर्द नहीं हुआ। गुरुजी ने उसकी आँखों का परीक्षण करवाने को कहा जिससे पता लगा कि उसकी आँख पहले से बहुत अच्छी हो गयी थी।

प्रभु दर्शन

मीरा के भाई सेना से सेवानिवृत हुए थे। रामकृष्ण परमहंस के अनुयायी संतों के पास केवल प्रभु के साक्षात् दर्शन की कामना लेकर

आते थे। मीरा ने उनको सतगुरु के विषय में बताया। अति उत्साह के साथ वह गुरुजी की संगत में आये। गुरुजी ने उनको ''मामाजी'' से संबोधित किया और अपनी आकांक्षा प्रकट करने को कहा। अध्यात्म प्रेमी ने केवल उनके आशीष के लिए विनती करी। गुरुजी के प्रश्न दोहराने पर उन्होंने अपनी महत्त्वाकांक्षा के बारे में बताया। गुरुजी ने कहा कि ठीक है। तीन दिन बाद मीरा के भाई को घर में अलौकिक सौंदर्य दृष्टिगोचर हुआ। उनके जीवन की मनोकामना पूर्ण हूई थी। उन्होंने प्रभु के दर्शन किये थे।

केवल एक भक्त के स्वप्न को साकार करने के लिए गुरुजी ने विधााता के दर्शन कराये थे। फिर वह स्वयं कौन है?

एक उत्तर मीरा के पिता से आता है। मीरा के पिता कहते थे कि गुरुजी साधारण संत नहीं है जो कुछ सिद्धियां प्राप्त करने के उपरान्त उनका पूरे संसार में प्रदर्शन करते रहते हैं और अपने भक्तों की संख्या बढ़ाते रहते हैं। गुरुजी दिव्य ज्योति का रूप है।

श्री कपूर को भी उनके दर्शन हुए है। कपूर, शिव की नगरी, काशी में पढ़े थे। एक रात उन्होनें स्वप्न देखा कि वह वाराणसी के विश्वेश्वर मंदिर के द्वार पर खड़े हैं। मंदिर के द्वार खुलने पर उन्हें गुरुजी के दर्शन होते हैं। उनकी दृष्टि गुरुजी के पैरों पर जाती है जहां बह्मा, विष्णु और महेश दिखायी देते हैं। गुरुजी से इस बात का उल्लेख करने पर वह बोले कि कपूर ने उनके दर्शन किए हैं।

गृह में घटी घटनाओं के दर्शक

मीरा सदा करोल बाग वाले मकान में संयुक्त परिवार में रहती आयी थी। गुरुजी ने उनको गुड़गाँव में मकान लेकर रहने के लिए कहा। 25 मार्च 2003 को वह गुड़गाँव रहने के लिए आ गये। मीरा नये घर में आने पर उसे पवित्र करने के लिए गृह प्रवेश आदि कोई धार्मिक समारोह का आयोजन करना चाह रही थी किन्तु गुरुजी ने उसे सब के

लिए मना कर दिया। सतगुरु ने उसको केवल पहले उनके चित्र के साथ प्रवेश करने को कहा। तबसे उस घर में उनकी उपस्थिति होने का अनेक बार आभास हुआ हैं। पहली बार तब हुआ जब मीरा मन ही मन उस घर में अकेले होने का दुखड़ा रो रही थी। यद्यपि उसके घर में काम करने वाली उसे बता चुकी थी कि उसकी पड़ोसन उससे बात करना चाहती है, मीरा ने पहला कदम नहीं उठाया। एक दिन वह पड़ोसन घर में आकर मीरा से वार्तालाप करने लगी। शीध्र ही गुरुजी के बारे में बातें होने लगी। मीरा को एक सहेली मिल गयी थी। गुरूजी को सदा की भांति इसका ज्ञान था। अगली बार जब मीरा उनके दर्शन के लिए आयी तो उन्होंने पूछा कि उसे सहेली मिली या नहीं। मीरा चकित थी कि गुरुजी को पता है कि उनके घर में क्या हो रहा है। परन्तु गुरुजी की दृष्टि केवल उसके अतिथि कक्ष तक ही सीमित नहीं थी।

एक बार मीरा और उसके पति में वाद-विवाद होने लगा। गुरुजी ने उन्हें शाम को फोन किया और कपूर को पूछा कि उन्होंने सुबह मीरा से झगड़ा क्यों किया। इससे पहले कि अचंभित कपूर उत्तर दे पाते, उन्होंने मीरा से भी वह प्रश्न कर दिया। यद्यपि घटना छोटी सी थी गुरुजी ने उन्हें घेर लिया था। उनको पता लग गया कि गुरुजी से कोई भी बात छिपती नहीं है।

मीरा को सदा लगता था कि गुरुजी नये घर में उसका साथ दे रहें हैं। एक बार जब वह सो रही थी, उसे लगा कि किसी ने बलपूर्वक उसके कंधे दबाए हैं। उसने अपना सिर मोड़ कर देखा तो कोई नहीं था। एक अन्य बार जब वह पूजा कर रही थी तो उसे लगा कि किसी ने पहले उसका एक फिर दूसरा कन्धा छुआ है। वह उसे भ्रम सोच कर टालने वाली थी कि उसने पूजा स्थल का पर्दा हिलते हुए देखा - जैसे वायु का झोंका आया हो। मन ही मन उसके गुरुजी से पूछा कि क्या वह थे। संगत में गुरुजी ने उसे बताया कि वही थे और उसे चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

घर में सर्प

मीरा गुरुजी के घर आने से अत्यंत प्रसन्न होती थी पर जब उसने घर में सांप देखे तो वह भयभीत हो गयी। यह एक अत्यंत विचित्र घटना थी क्योंकि कपूर का घर एक सुनियोजित, आधुनिक क्षेत्र में था। तीनों स्नान घरों में टाइलें लगी हुई थीं और किसी ने, कभी भी सर्प देखने की शिकायत नहीं करी थी। फिर भी, जब भी, मीरा स्नान करने जाती थी वहां पर सर्प होते थे - अत्यंत छोटे-छोटे और गिनती में चार। वह डरी रहती थी। स्नान के लिए जाने से पहले गुरुजी से प्रार्थना करती थी पर सांप फिर भी आ जाते थे। वह उन्हें पैर से दबा देती थी। उसने अपने पति से स्नानागार हटाने को कहा और वहां पर निर्णय लेने पर बात अटक गयी। अतः गुरुजी से कहा तो वह बोले कि वह अति भाग्यशाली है। उसने उत्तर दिया कि वह तो भयभीत रहती है। गुरुजी ने उससे पूछा कि उसे क्या चाहिए। उसने कहा कि वह स्नानागार हटाना चाहती है और सांप कभी नहीं आयें।

गुरुजी की आज्ञा से स्नानागार हटाया गया। जो कर्मी उसे हटाने आये थे उनको चेतावनी दी गयी थी उसके नीचे सर्प हैं। उन्होंने हंस कर बात टाल दी। जब हटा तो नीचे कोई सर्प नहीं थे - सब लुप्त हो गये थे। एक आधुनिक निवास समुदाय में सर्प कहां से आये? वह केवल मीरा को ही क्यों दिखायी दिये? उनकी उपस्थिति क्या दर्शाती है? वह कहां चले गये? केवल शिव को ज्ञान है।

-श्रीमती मीरा कपूर, गुड़गाँव द्वारा कथित

अमरीका से वापस लौटी दम्पति को गुरुजी का आधार

जौहर परिवार न्यूयॉर्क में पाँच वर्ष रहने के बाद भारत लौटा था। उनकी वापसी के बाद अनेक बाधाएँ आयीं – घर लौटना इतना रोमांचक नहीं था जितनी उन्होंने आशा करी थी। मीरा जौहर को ऐसे समय पर किसी सलाहकार के न होने का अत्यंत दुःख था। किन्तु यह सब अगस्त 2006 में परिवर्तित हो गया। कुछ समय से उनके पड़ोस में रहने वाले भाटिया परिवार के सदस्य – जो उन्हीं की भांति भूमि – भवन के व्यवसाय में थे – उनको मात्र गुरुजी से संबोधित होने वाले व्यक्ति से मिलने को बार–बार कह रहे थे। अनिल जौहर असमंजस में थे कि क्या करें।

फिर एक शाम को उन्होंने गुरुजी के पास जाने का निश्चय कर लिया। भाटिया परिवार के साथ घर से निकलते हुए मीरा को अपने आठ वर्षीय जुड़वाँ बच्चों की चिंता थी क्योंकि वह उनको अकेले छोड़ कर जा रहे थे। भाटिया परिवार के कहने पर कि उन्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, मीरा ने अपने पति को विश्वास बनाये रखने के लिए कहा।

मीरा के मधुमेह रोग से भाटिया परिवार अनभिज्ञ था। उन्होंने कहा था कि वहां पर चाय या लंगर ग्रहण न करना मूर्खता होगी।

इस प्रकार मन में अनिश्चितता लेकर, जौहर दम्पति एम्पाएर एस्टेट में गुरुजी की संगत में पहुंचे। मीरा ने चाय प्रसाद और फिर लंगर, जिसमें लड्डू भी थे, ग्रहण किया। पवित्र भोजन के पश्चात्, उसके पेट में पीड़ा होने लगी। उसने यह अगले एक घंटे तक सहा। जब उनकी आज्ञा लेने का समय आया तो गुरुजी बोले, *"आया करो, ऐश करो"*। एम्पाएर एस्टेट के बाहर आकर भाटिया परिवार ने उनको बताया कि वह अत्यंत भाग्यशाली है, गुरुजी ने उनके पहले दर्शन पर ही उनसे बात करी। श्रीमती जौहर को यह बात रास नहीं आयी, वह अपने पेट में हो रही पीड़ा के बारे में सोच रही थी कि उससे कब मुक्ति मिलेगी। वह रात भर सो नहीं सकी और उसके मन में यही विचार घूमते रहे कि क्या वास्तव में वह किसी अति विशिष्ट स्थान पर गये थे। प्रातः उठ कर जब उसने अपने मधु की मात्रा का परीक्षण किया तो वह केवल 100 था। वह आश्चर्यचकित होकर यही सोच रही थी कि ऐसा नहीं हो सकता, घर पर तो एक रोटी भी खाने के बाद उसका मधु स्तर ऊपर चला जाता था।

मीरा हर दर्शन के पश्चात् अपने मधु की मात्रा का परीक्षण करती रही – हर बार उसका स्तर नीचे ही रहता। उसके त्रायग्लिसरायीड का स्तर भी 700 से घट कर 120 की सामान्य मात्रा पर आ गया था। अंततः उसने अपने और गुरुजी के परीक्षण बंद कर दिये। उसे विश्वास हो गया कि गुरुजी के आशीर्वाद ही उसको रोगमुक्त कर रहे है। उसे लगा कि उसका रक्त भी स्वच्छ और शुद्ध हो रहा है। किन्तु वह आभास ही नहीं तथ्य भी था। प्रायः उसके रक्त परीक्षण करने में कठिनाईयाँ आती थीं – एक तो सही नस का पता नहीं चलता था और फिर उसमें से निकला हुआ रक्त प्रदूषित और गाढ़ा होता था। किन्तु अब, गुरुजी के पास जाने के पश्चात्, सुई पहले ही प्रयास में नस में जाने लगी और रक्त एकदम बाहर आने लगा था।

दिलचस्पी की बात यह है कि भाटिया परिवार को जौहर परिवार के अस्वस्थ होने का पता नहीं था। अनिल जौहर को भी सदा नजला लगा रहता था – वह वातानुकूल कमरे में नहीं बैठ पाते थे। गुरुजी के पास दो तीन मास जाने के बाद उन्हें अचानक आभास हुआ कि उनका यह रोग तो समाप्त हो चुका है। वह अपनी पत्नी के रोग के बारे में इतने चिंतित रहते थे कि अन्य बातें वह भूल से गये थे।

सफारी का चपटा टायर

जनवरी 2007 में जौहर और कुछ अन्य परिवार जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय वन उद्यान में घूमने के लिए गये। सब दो जीपों में चढ़ कर वन के चक्कर काटते रहे किन्तु कोई जंगली पशु दिखायी नहीं दिये। बच्चे कह रहे थे कि उन्होंने गुड़गाँव के शहरी वातावरण में कहीं अधिक पशु देखे हैं।

थक कर वह अपने आवास स्थान पर आगये और सुरक्षा कर्मचारी के पास रुके। उसने बताया कि वह अत्यंत भाग्यशाली है कि उन्होंने कुछ नहीं देखा – उनकी गाड़ी के टायर में एक लम्बी कील घुसने के कारण वह बिलकुल चपटा हो गया था। तीन घंटे तक वन के उबड़ – खाबड़ मार्गो पर न तो उन्हें इसका पता चला न ही उससे उनकी यात्रा में कोई रुकावट हुई। गुरुजी ने जौहर परिवार की अनदेखी विपदा से रक्षा करी थी।

मीरा को प्रेम पत्र

जौहर युगल को गुरुजी के पास जाते हुए कुछ समय बीत गया था जब मीरा को एहसास हुआ कि गुरुजी उसे मिसेज मीरा कहकर संबोंधित करते हैं जब कि अन्य महिलाओं को वह आंटी कहकर पुकारते है। यह भेदभाव देख कर मीरा ने एक दिन दर्शन हॉल के बाहर पति को कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि गुरुजी उससे प्रेम नहीं करते हैं और वह उनके प्रियों की सूची में नहीं है। कुछ ही देर पश्चात् गुरुजी

से आज्ञा लेते हुए, गुरुजी ने उसके हाथ में एक लिफाफा दिया और बोले, *''मीरा आंटी, लव लेटर''*। सर्वज्ञाता गुरुजी ने अपने भक्त के मन की बात जान ली थी। एक संध्या को आयोजित संगीत समारोह के निमंत्रण को प्रेम पत्र कह कर उन्होंने उसको उत्तर दे दिया था और उसके मन की समस्त शंकाएं दूर कर दी थीं।

उसे स्पष्ट हुआ कि गुरुजी के सम्बन्ध शब्दों पर निर्भर नहीं होते। वह तो अप्रकट प्रेम से बंधे रहते हैं। गुरुजी की भौतिक उपस्थिति की भी आवश्यकता नहीं है – वह तो सर्वत्र है। वह दाता हैं और कोई अपेक्षा नहीं रखते हैं। ईश्वर होते हुए उनका क्षितिज असीमित है। वह केवल प्रेम और आस्था की आशा करते हैं। उनके आशीर्वाद सबके लिए हैं।

जौहर के निवास पर सत्संग

उनकी सर्व विद्यमानता का प्रत्यक्ष प्रमाण तब मिला जब जौहर परिवार को अपने गुड़गाँव निवास पर उनका सत्संग आयोजित करने का गौरव प्राप्त हुआ। मीरा के अपने शब्दों में:–

''हमने इस बड़े समारोह का आयोजन अपने घर के नीचे तहखाने में किया था। एक दिन पहले अति उत्साह से उसका प्रबन्ध करते हुए मैंने अपने पति से कहा कि कितना अच्छा हो यदि उस समय हमें गुरुजी की उपस्थिति का आभास हो। गुरुजी ने मेरे मन की बात सुन ली और मेरी आकांक्षा पूर्ण करी।

यद्यपि समारोह का समय साँय पाँच से सात बजे का था कुछ अनुयायी 4.25 पर ही पहुंच गये। संगत के आते ही गुरुजी की सुगन्ध पूरे घर में फैल गयी। हम अति आनंदित हुए पर यह तो शुरुआत थी। गुरुजी ने उस समारोह को यादगार बनाने के लिए कुछ और भी सोचा हुआ था।

तहखाने के हॉल में उनका एक बहुत बड़ा चित्र लगाया गया था।

जैसे ही हम उसके दर्शन के लिए उसके पास गये उनके मस्तक पर एक त्रिशूल दिखाई दिया। त्रिशूल त्रिआयामी था और चमक रहा था। हम स्तब्ध रह गये। परमात्मा की उपस्थिति से हमें उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ था।

संगत के सदस्य आने लगे। गुरुजी की आरती हुई। सबने सत्संग में प्रेम से भाग लिया। लंगर के उपरान्त भक्त जाने लगे। देर शाम को, जब कुछ ही लोग बचे थे, हमने एक और अचम्भा देखा। निवास के भूमि तल पर गुरुजी के एक अन्य चित्र पर एक अति मनोरम शिवलिंग उभरा। यह एक अन्य अविस्मरणीय पल था।''

हे भगवन्! हे गुरुजी! हम पर सदा अपनी कृपा बनाये रखिये और सदा सुमार्ग दिखाइये।

–मीरा एवं अनिल जौहर, गुड़गाँव द्वारा कथित

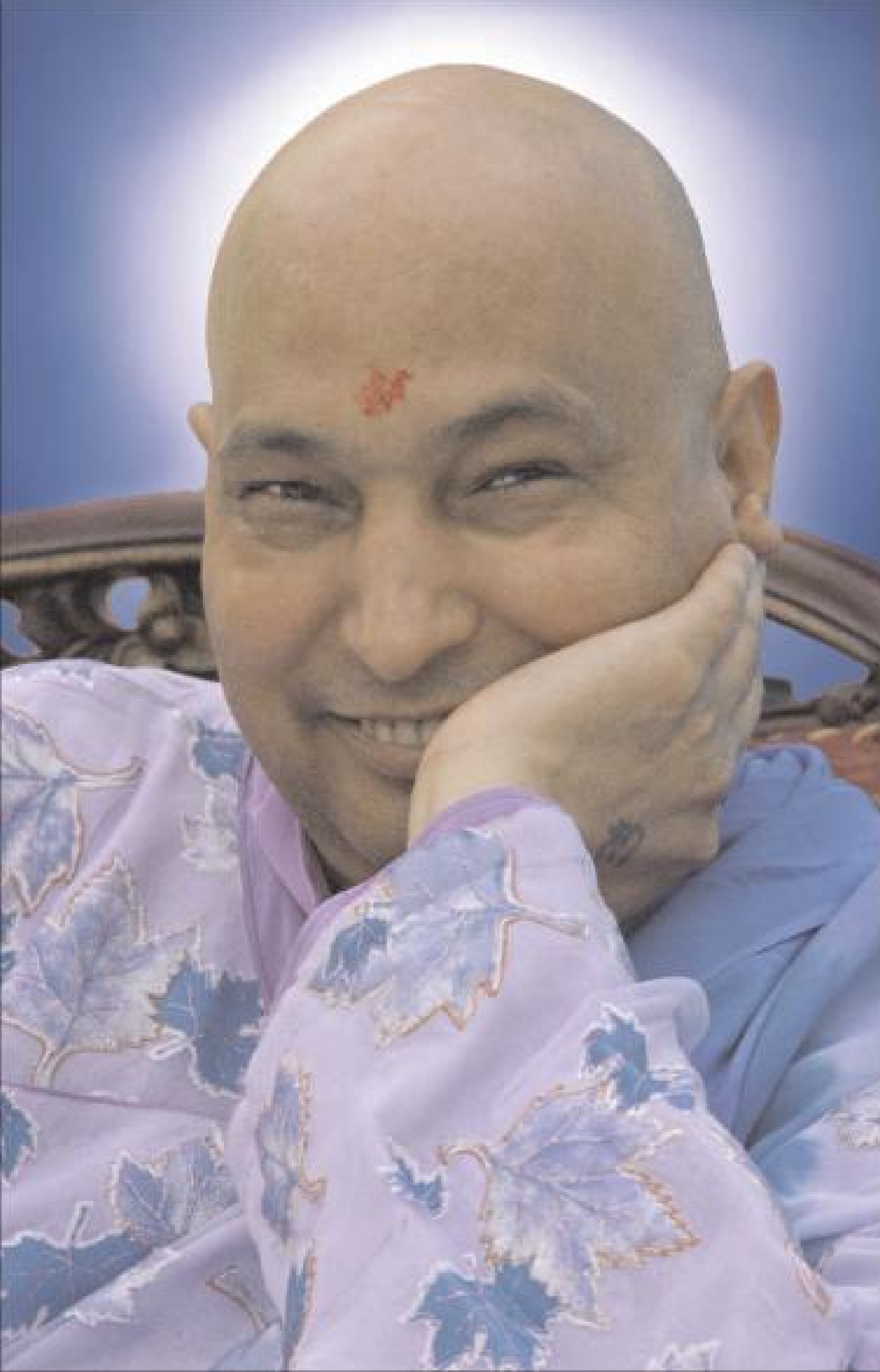

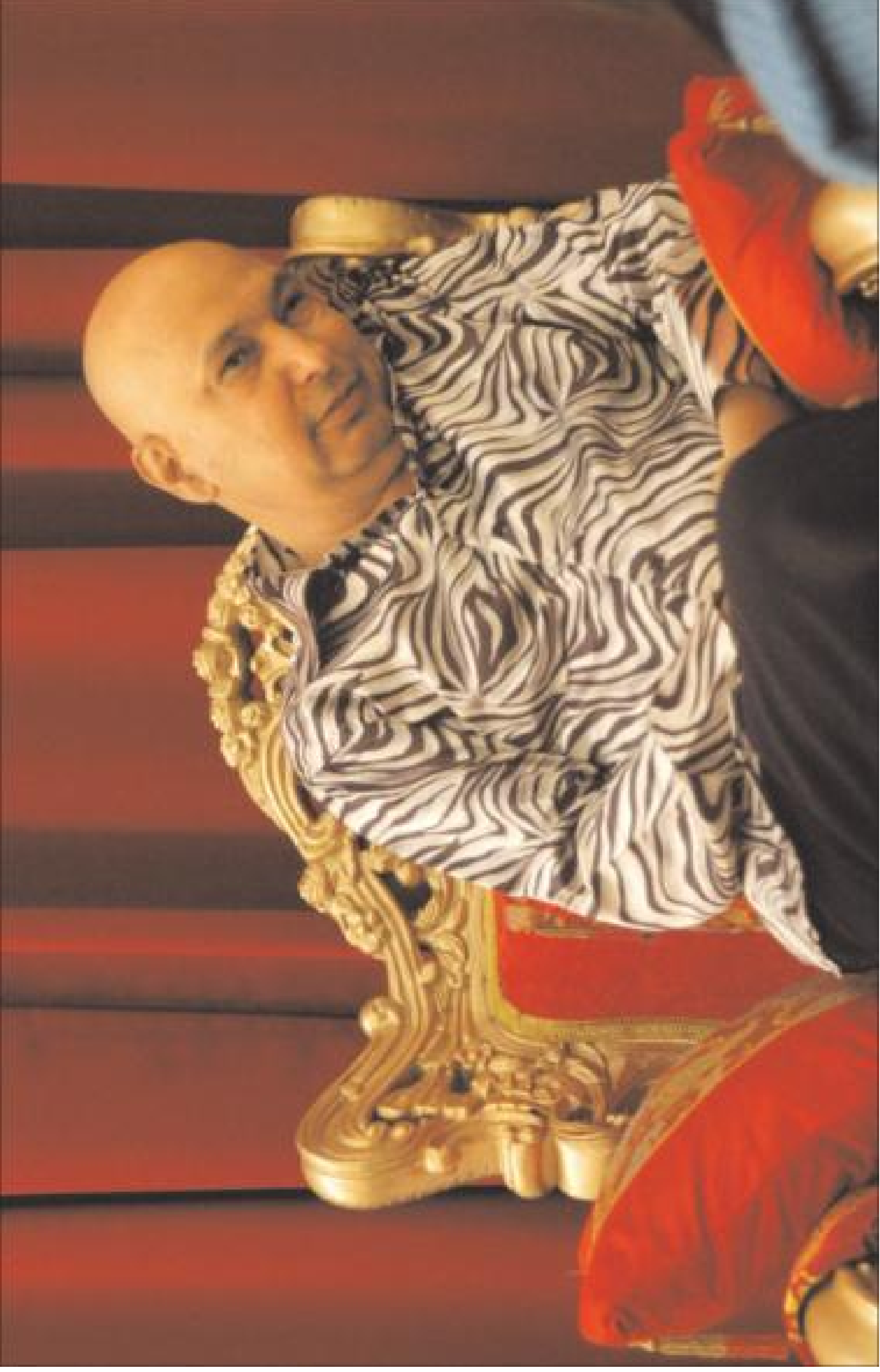

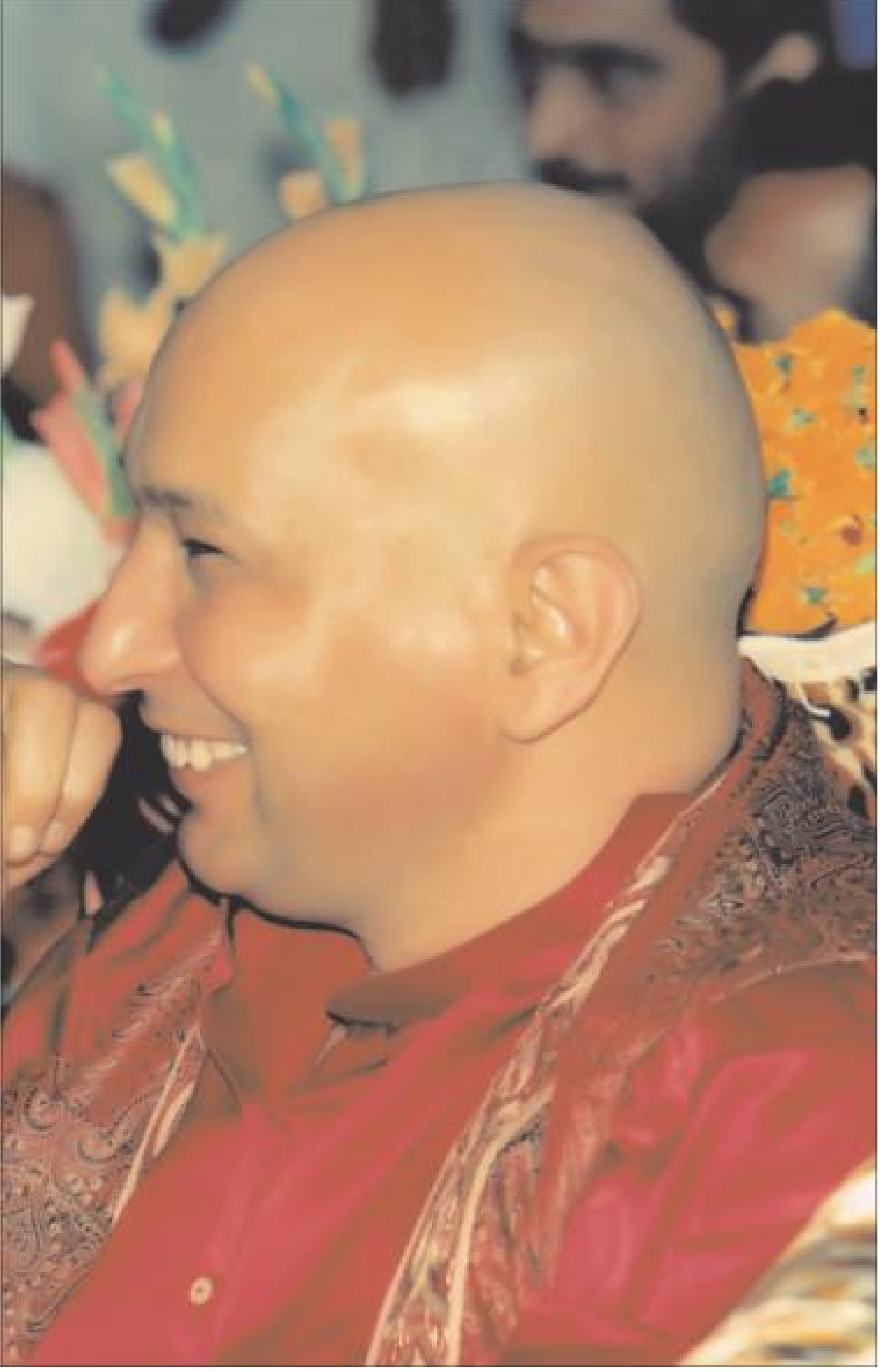

दिव्य आलिंगन

मैं सोचती हूँ यदि बूँद को सागर का वर्णन करने को कहा जाये तो वह क्या कह सकती है – भक्त वह बूँद है, और गुरुजी अपार सागर। फिर भी मेरा प्रयास रहेगा कि मैं गुरुजी की सेवा में कुछ अर्पण कर सकूँ।

गुरु मिलन से परमात्मा को मिलने की राह सहज हो जाती है। आत्मा की परम मिलन की यात्रा में गुरु भक्त के ऊपर वात्सल्य और प्रेम की वृष्टि करते हैं – इनका अनुभव केवल निष्ठावान शिष्यों को ही हुआ है। गुरु वह साकार ब्रह्म हैं जिनमें सभी संबंधों का प्रेम समाया हुआ है। माँ की ममता, पिता का मार्ग दर्शन और माता का संरक्षण – यह सब सतगुरु में पूर्ण अवलोकित होते है।

गुरुजी साक्षात् परमात्मा हैं और वह अपने तक पहुंचने का मार्ग ज्ञान की ज्योति से प्रज्ज्वलित कर रहे हैं। अपने अनुयायियों का मार्गदर्शन करते हुए कभी कभी उनको कठोर व्यवहार करना पड़ता है।

वह उस कुम्हार की भांति हैं जो अपने बर्तन बनाते हुए उसे स्थिरता प्रदान करने के लिए उसे बाहर दृढ़ता से संभाले रहता है और अन्दर से उसे अत्यंत कोमल हाथ से आधार देता है। सतगुरु अपने शिष्य से उच्च से भी उच्चतम व्यवहार की भावना रखते हैं। फिर भी उनका मन अपने शिष्यों के लिए करुणा, दया और कृपा से परिपूर्ण रहता है।

हृदय में स्थित परमेशवर की प्राप्ति के लिए, उसके उस संगीत को, जिसे अनहद भी कहते हैं, श्रवण करने के लिए और अपने अन्दर छिपी हुई ज्वाला को ज्वलित करने के लिए ऐसे महापुरुषों का सान्निध्य प्राप्त करना चाहिए जो परम प्रीति से तृप्त हो चुके हैं। केवल वही शिष्य, जो ऐसे महापुरुषों की वाणी और दिव्य गुणों से प्रभावित होकर उनके सदगुणों में स्वयं को आत्मसात कर लेता हैं, वही इस भवसागर में गोते लगाकर जन्म एवं मृत्यु के चक्र से मुक्त हो पाता है। यही सतगुरु और शिष्य के पावन पुनीत सम्बन्ध हैं।

गुरुजी साक्षात् परमेश्वर हैं। उनके प्रेम की कोई सीमा नहीं है। जितना आप उनसे प्रेम करेंगे उतना ही आनंदमय आपका जीवन होगा। समय-समय पर वह हमें सचेत कर कहते हैं कि उठ कर अपनी दिव्यता का अनुभव करो, संसार की माया में डूबकर गहरी नींद में समय नष्ट न करो।

स्वप्न में समर्पण

मैंने गुरुजी के प्रथम दर्शन कोई दस वर्ष पूर्व किये थे और फिर उनसे कभी अलग नहीं हो पायी। गुरुजी के दर्शन करने से पूर्व मैं शिर्डी के साईं बाबा की भक्त थी। मेरी उनमें बहुत श्रद्धा थी। मैंने स्वप्न में देखा कि साईं बाबा की प्रतिमा जो मेरे अतिथि कक्ष में रखी हुई थी अचानक लोप हो गयी और उसके स्थान पर गुरुजी बैठे हुए थे। मैं इतनी प्रसन्न हुई कि मैंने उन्हें आलिंगन में भर लिया।

अगले दिन जब मैं गुरुजी के पास गयी तो उन्होंने कहा कि पिछली रात मैंने उन्हें जोर से अंगीकार किया था। में अचम्भे में थी –

उन्हें मेरे स्वप्न के बारे में कैसे पता चला? किन्तु अगले ही क्षण मुझे आभास हो गया कि गुरुजी तो परमात्मा हैं। उनसे कुछ भी छिपा हुआ नहीं है – वह तो हमारे भूत, वर्तमान और भविष्य के बारे में सब जानते हैं परन्तु वह किसी को यह बताते नहीं है। एक बार मैं जब उनके चरण दबा रही थी। उन्हेंाने कहा कि तीन वर्ष के बाद मुझे उनके पास आने के कारण का ज्ञान होगा। मैं व्याकुल हो गयी थी और उस कारण को ढूंढती रही। धीरे-धीरे मेरे मन से यह बात उतर गयी।

फिर तीन वर्ष के उपरान्त मेरे पति को हृदय और गुर्दे की समस्याएँ हो गयीं। हम उन्हें बंबई ले गये जहाँ पर 15 दिन तक गहन चिकित्सा केंद्र में रहे। उन दिनों मैं अपने हाथ में गुरुजी का चित्र लिए हुए उनसे विनती करती रहती थी। चिंता बहुत हो रही थी। मैंने दिल्ली में अपने बेटी को गुरुजी के पास जा कर मेरी समस्याओं के बारे में बताने के लिए कहा। परन्तु गुरुजी ने उसको टोक दिया और बोले कि आंटी (मैं) उनके साथ जुड़ी हुई हैं। मुझे एक बार पुनः यह आभास हुआ कि उन्हें सब का ज्ञान है और उनको कुछ भी बताने की आवश्यकता नहीं है।

गुरुजी की दया से मेरे पति के स्वास्थ्य में प्रगति हुई और हम दिल्ली वापस आ गये। मैं तुरन्त गुरुजी के पास गयी और उनको बार-बार धन्यवाद दिया तो वह बोले कि मेरे पति को नव जीवन दान देने के लिए ही उन्होंने अपने पास बुलाया था।

हम जानते हैं कि जन्म और मृत्यु तो सृष्टिकर्ता के हाथ में है, यदि वह ऐसा करें तो स्पष्ट है कि वह स्वयं वही हैं।

पान के पत्तों से दर्द निवारण

एक बार मैं गिर पड़ी थी जिससे मेरी टांग की शल्य क्रिया हुई थी। उसके उपरान्त मेरे पैर में निरन्तर वेदना बनी रहती थी। औषधियाँ लाभ नहीं कर रहीं थी।

जब मैंने यह समस्या गुरुजी के सम्मुख रखी तो उन्होंने मुझे पान के पत्ते अभिमंत्रित कर के दिये। मुझे उन्हें पीस कर दर्द वाले स्थान पर लगाना था। किन्तु ऐसा करने से मेरा दर्द बहुत बढ़ गया। मैं रोते रोते गुरुजी के पास गयी तो उन्होंने कहा कि इस प्रकार मेरा सारा दर्द निकल रहा है। कुछ ही दिनों में पूरी वेदना समाप्त हो गयी और फिर तीन वर्ष तक कुछ नहीं हुआ। अचानक एक दिन वह पीड़ा फिर होने लगी। गुरुजी उस समय जालंधर में थे और मैं दुविधा में थी कि क्या करूं। मेरे बहन ने एक चिकित्सक से समय ले लिया। मैंने गुरुजी से निवेदन किया कि यदि वह होते तो मुझे इसकी आवश्यकता नहीं होती। मैंने उनसे चिकित्सक से नियुक्त समय पर साथ रहने के लिए विनती करी।

घबराते हुए मैं चिकित्सक के पास गयी। मैंने उनको पूरा हाल बताया और यह भी कहा कि तीन वर्ष से मैं कोई औषधि नहीं ले रही हूँ। उन्होंने जब पूछा कि मैं किसका उपचार कर रही हूँ तो मैंने उन्हें गुरुजी के बारे में बताया। यह सुन कर उन्होंने अपने ब्रीफकेस में से गुरुजी का चित्र निकाला और पूछा कि क्या वह यही हैं। मेरे सामने, मेरी समस्या के उत्तर में गुरुजी थे। मैं भावविभोर हो गयी और मेरी आँखों से अश्रु बहने लगे। चिकित्सक ने मुझे आश्वासन दिया और कहा कि गुरुजी के होते हुए मुझे कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। उनके रहते हुए वह स्वयं और कुछ नहीं कर सकते। मैं घर लौट आयी और शनैः शनैः मेरी पीड़ा समाप्त हो गयी। कोई सोचेगा कि यह कैसे संभव है? यह तो गुरुकृपा का एक छोटा सा विवरण है। उनकी सभा में हमारा सीमित विज्ञान हार जाता है। गुरुजी तो वेदना स्वप्न में भी समाप्त कर देते है।

मेरे एक घुटने में दर्द हो रहा था। मैं अपने पारिवारिक चिकित्सक के पास गयी तो उन्होंने एक्स-रे और कुछ दर्द नाशक औषधियां लेने के लिए कहा। उसी रात गुरुजी मेरे स्वप्न में आये और उन्होंने मेरा हाल पूछा। मैंने उन्हें अपने घुटने की पीड़ा के बारे में बताया तो उन्होंने वहां पर अपना हाथ रखा। प्रातः उठने पर वहां पर कोई दर्द नहीं था।

गुरुजी अपने अनुयायियों से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध रखते है कि वह उनके मन की बातें भी पढ़ लेते हैं। एक संगत में गुरुजी अपने चित्र बाँट रहे थे। पहले उन्होंने मुझे एक चित्र दिया। उसे लेकर जब मैं जा रही थी तो उन्होंने मुझे बुलाकर मेरी बहनों के लिए छः चित्र और दिये। मेरे मन में विचार आया कि मेरी एक बहन की तो मृत्यु हो चुकी है। मेरे यह सोचते ही उन्होंने मुझे वापस बुलाया और एक चित्र मेरे से वापस लेकर साथ में बैठी एक अन्य महिला को दे दिया।

आस्था की बेल

गुरुजी को पूर्ण समर्पण के लिए, उनसे दृढ़ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए पहले श्रद्धा का बीज बोना पड़ेगा। बीज के पनपने पर विश्वास का अंकुर फूटेगा – फिर उस बेल के सहारे गरुजी के चरणों में समर्पण करें। उसके बाद दिव्यता का वास्तविक आभास होगा और सतगुरु की कृपा से असंभव भी संभव हो जाएगा।

गणेश आरती में एक दोहा है :

अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।।

गुरुजी की सभा में यह चारों बाते यथार्थ होती हुई देख जा सकती है। केंसर का निवारण हुआ है और जनन शक्ति–हीन को पुत्रोत्पत्ति हुई है, उनके पास से कोई भी खाली हाथ नहीं गया है।

भक्त को केवल अपना विश्वास बनाये रखना है।

गुरुजी शिवावतार हैं। वह इसे लोक में केवल हमें आशीर्वाद देने आये हैं। परन्तु गुरुजी ने चेतावनी दी है कि उन्होंने कोई दूकान नहीं खोली हुई है जिसमें कोई भी आकर उनके चरण स्पर्श कर कुछ भी ले जा सकता है। उनकी कृपा के लिए उसका अधिकारी होना नितांत आवश्यक है।

कभी–कभी गुरुजी अपने दुःख का भी आभास करते हैं। वह कहते है कि जो भी आता है वह भौतिक वस्तुओं के लिए निवेदन करता है, वास्तविक आशीष कोई नहीं मांगता – गुरु प्रेम, श्रद्धा, गुरु में दृढ़ निष्ठा, उनमें पूर्ण समर्पण और विश्वास। मैं आपसे नम्र निवेदन करती हूँ कि यदि आपको गुरुजी से कुछ आकांक्षा है तो उनकी चरण धूलि मांगिये, उनके दर्शन के लिए विनती कीजिए और प्रत्येक सांस में उनको स्मरण कीजिए।

प्रेम पुष्प

कभी कभी प्रेम से वह मुझे मीरा कह कर संबोंधित करते हैं। मेरा विश्वास है कि उनको देख कर प्रत्येक व्यक्ति पहली भेंट में ही उनका प्रशंसक हो जाता है। उनके दर्शन कर प्रायः मेरे चक्षुओं से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है। यह देख कर एक बार मेरी बेटी ने मुझे डांटा और कहा कि लोग सोचेंगे कि आप पर न जाने कितनी आपदाओं का बोझ है। मैंने उसको समझाने का प्रयास किया कि मैं रोती नहीं हूँ, मेरा मन उनको देख कर प्रेम विह्वल हो जाता है और आंसू अपने आप ही बहते हैं। मेरी बेटी को कोई भी तर्क स्वीकार नहीं था और उसने मुझे अपने आप पर संयम रखने के लिए कहा।

थोड़ी देर में जब मैंने अपनी बेटी को रोते हुए देखा तो मैंने उससे कारण पूछा। उसने उत्तर दिया कि उसे पता नहीं था कि वह क्यों रो रही है। मैंने उसे बताया कि गुरुजी ने उसको अपनी प्रीति भाव का अनुभव कराया है।

वेलन्ताईन दिवस पर मैंने पूजा स्थल पर दिया जलाया। मैंने गुरुजी से कहा कि उनसे मिलने के बाद मैंने किसी से इतना प्रेम नहीं किया है। मैंने उनको बताया कि वह ही मेरे वेलन्ताईन हैं और इस दिन उपहारों का आदान प्रदान होता है। मैंने कहा कि मेरे पास अपना तो कुछ भी नहीं है जो उनको समर्पित कर सकूँ, सब कुछ तो उन्हीं का दिया हुआ है। क्या वह मेरे प्रेम के अश्रु स्वीकार करेंगे? किन्तु बदले में मैं

उनसे कोई उपहार की आशा करूंगी। उस रात को गुरुजी मेरे स्वप्न में आये। उन्होंने अपने गले से एक गुलाब के फूलों की माला निकाल कर मेरे गले में डाल दी। वह सबसे उचित उपहार था। वास्तव में उनकी लीलाओं का कोई अंत नहीं है।

गुरुजी के साथ

कुछ दिन पहले गुरुजी मेरठ गये थे और हमें उनके साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। गुरुजी को उसी रात्रि को लौटना था। जब वह कुछ भक्तों के साथ कार में बैठे तो मेरे मन में विचार आया कि क्या मुझे भी कभी ऐसा संयोग प्राप्त होगा। उनके साथ बैठने वाले वास्तव में अत्यंत भाग्यशाली थे।

समय के साथ यह विचार मेरे मन से निकल गया। एक बार दिल्ली में एक विवाह के उपलक्ष्य में मेरी दोनो बेटियाँ मेरे साथ थी। गुरुजी आये और उन्होंने मुझे बुलाकर पूछा कि क्या मैं उनके साथ लंगर करूंगी। मेरे द्वारा स्थान पूछने का साहस करने पर उन्होंने एम्पाएर एस्टेट का नाम लिया। मैं अति प्रसन्न हुई और उनको कहा कि मैं अपने बच्चों के साथ वहां पहुंच जाऊँगी। इस पर गुरुजी ने कहा कि मैं उनके साथ कार में यात्रा करूँगी। मैं कह नहीं सकती कि मैं यह सुनकर कितना भावविभोर हो गयी।

गुरुजी की कृपा और दया की कोई सीमा नहीं है। वह सदा अपना प्रेम बरसाते रहते है। यह सब प्रसंग उनके अस्तित्व की एक बूँद के समान है। मैं उनसे यही विनती करती हूँ कि वह अपने चरणों में मुझे स्थान देते रहें और अंतिम क्षण तक उनको स्मरण करती रहूँ।

गुरुजी में सम्पूर्ण विश्वास रखिये और उसमें ही हमारी भलाई है। उनमें आस्था के पश्चात् हमारे मस्तिष्क में कोई चिंता नहीं आ सकती। उन्हें हमारे बारे में पूरा ज्ञान है। वह दयावान और कृपावान है, फिर हम क्यों चिंता करें। केवल वही चितिंत रहते है जिनमें

आस्था का अभाव होता है और जिनका मन इधर–उधर विचरण करता रहता है।

मैंने गुरुजी की संगत में अमृत टपकता हुआ देखा है। उनकी सुगन्ध मदहोश कर देती है। इन्हीं कुछ शब्दों और प्रणाम के साथ मैं अपनी लेखनी को विश्राम देती हूँ।

–श्रीमती (मीरा) मल्ही, दिल्ली

गुरुजी महान हैं

जून 2004 में, जब गुरुजी ने अपने चरणों में स्थान दिया, तबसे हम अत्यंत सौभाग्यशाली रहे हैं। उस समय से हमारे जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है, वह हमें अधिक आश्वस्त और आनंदमय लग रहा है। गुरुजी के मंदिर के शांत वातावरण में अत्याधिक ऊर्जा का आभास होता है। उनकी दया से हम अध्यात्म पथ पर अग्रसर होते रहे हैं। हमारा स्वभाव अब शांत, नम्र और सुखमय है। वास्तव में अब दुःख का कोई स्थान नहीं है। यदि कभी कोई कष्ट आता भी है तो हमें पता है कि गुरुजी की छत्रछाया हमारे ऊपर बनी हुई है और उन्होंने हमारे किसी बुरे कर्म के फल को दूर किया है। एक ऐसा अनुभव जो उनके न होते हुए कहीं अधिक दुखदायी होता।

गुरुजी की संगत के साथ एक अनूठा बंधन है जिसमें हम अपने आपको एक बड़े परिवार का सदस्य समझते हैं। हमारे स्वाभिमान का स्थान अब नम्रता ने ग्रहण कर लिया है। हमें संगत से वार्तालाप करना

अच्छा लगता है क्योंकि इस प्रकार हम गुरुजी के बारे में और बहुत कुछ जान रहे हैं। सीख के इन अनुभव के साथ इस बड़े परिवार में और सदस्यों के साथ पारस्परिक प्रेम भी बढ़ता है।

सत्संगों को सुन कर हमें पता लगा कि गुरुजी को अपने कष्ट बताने की भी आवश्यकता नहीं है। एक हार्दिक प्रार्थना से ही महापुरुष की कृपा हो जाती है। हमें यह भी आभास हो गया है कि गुरुजी से कुछ विनती करने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार वह आशा भले ही पूर्ण कर दें, संभव है कि वह सबसे अच्छी न हो। सर्वोत्तम संतुष्टि और आनंद तब मिलते हैं जब गुरुजी स्वंय कुछ प्रदान करें। इस ज्ञान के प्रतिकूल, जब भी हम दुविधा में होते हैं हम गुरुजी से कुछ मांग बैठते है (क्योंकि हम मनुष्य ही हैं)। गुरुजी वह अकांक्षा पूर्ण भी कर देते हैं। मेरी पत्नी, हमारे पुत्र और मैंने गुरुजी के पास जाना एक साथ आरम्भ किया था। मेरी पत्नी और पुत्र को शीघ्र ही गुरुजी में विश्वास हो गया था, मेरा संशय बना रहा।

सशर्त विश्वास का प्रयास

जब हम गुरुजी के पास दूसरी या तीसरी बार ही गये होंगे, मैंने मन ही मन गुरुजी को कहा, ''मैं आपकों तब गुरु मानूंगा जब आप चंडीगढ़ में एक व्यापारी के पास अटके हुए मेरे पांच लाख रुपये वापस दिला देंगे।''

परन्तु कुछ और दिन संगत में आने के बाद मुझे लगा कि गुरुजी के सामने केवल कुछ धन के लिए ऐसी शर्त रख कर मैंने बहुत बड़ी भूल कर दी थी। मैं फिर उनसे विनती कर क्षमा याचना करने लगा और कहने लगा कि इस धन के लिए मुझे आपकी सहायता नहीं चाहिए। एक सप्ताह के पश्चात् जब मैं बंगलौर में था, मुझे उस व्यापारी का फोन आया। उसने कहा कि वह पैसा वापस दे देगा और साथ में 3000 रूपये ब्याज भी देगा। गुरुजी महान है।

गुरुजी की सुगन्ध

प्रारम्भिक दिनों में जब भी हम मंदिर जाते थे, मेरी पत्नी और मेरे पुत्र को उनकी तीव्र सुगन्ध आती थी पर मुझे नहीं। संभवतः मैं गुरुजी में इतना विश्वास नहीं करता था। एक महीने के पश्चात् रात को शय्या पर लेटे हुए मैं सामने गुरुजी का चित्र देख रहा था। उनके बारे में सब अति सुन्दर सत्संग सुनने के पश्चात् भी उनमें संशय के भाव रखने के लिए मैं क्षमा याचना कर रहा था और मन ही मन उनका सच्चा भक्त बनने का वचन ले रहा था। इससे पहले मैंने कभी इतनी निष्कपट प्रार्थना नहीं करी होगी। अचानक मेरे तकिये से उनकी तीव्र सुगन्ध आयी, जिसकी पुष्टि मेरी पत्नी ने भी की। अति उदार गुरुजी ने मेरी प्रार्थना सुन ली थी और मैं उनका सच्चा सेवक बन गया था। उसके बाद मैंने कभी भी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। मेरे गुरुजी महान हैं।

अनुपस्थित पुत्र के लिए लड्डू

मेरा बेटा, समर, नाविक है। वह अपने जहाज पर चला गया था। गुरुजी अक्सर मेरी पत्नी, बब्बू, से उसकी कुशलता पूछते रहते थे। एक शाम को हम गुरुजी के मंदिर में थे। गुरुजी कहीं बाहर गये हुए थे और हम उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह रात्रि को एक बजे लौटे और संगत में लड्डू बांटने लगे। यद्यपि उन्होंने प्रत्येक भक्त को एक लड्डू दिया, मेरी पत्नी को दो दिये। मेरी पत्नी खुशी–खुशी मेरे पास आयी और बोली कि गुरुजी ने हमारे बेटे के लिए भी एक लड्डू दिया है।

वह यह कह रही थी कि कर्नल जोशी, गुरुजी के एक अनुयायी मेरे पास आये और अपना फोन मुझे थमा कर बोले कि हमारा बेटा बात करना चाह रहा है। मैंने उससे पुछा कि वह इस समय कैसे फोन कर रहा है। उसने उत्तर दिया कि उसकी बात करने की इच्छा हो रही थी और उसने सोचा कि हम लोग इस समय गुरुजी के मंदिर में ही होगें। गुरुजी महान हैं।

पत्नी के रोग हरण

मेरी पत्नी तीन बार गुरुजी की दया से स्वस्थ हुई है। 1981 में वह मेनियर रोग से पीड़ित थी। इसमें कान से अन्दर के प्राकृतिक तरल का असंतुलन हो जाता है। इससे उसको सिर में चक्कर और अधासीसी के दर्द होते रहते थे। भारत और अमरीका में करवायी हुई चिकित्साएं असफल रहीं थी। 1992 में एक होम्योपैथी औषधि की सहायता से उसे दबाया जा सका। जब तक वह औषधि लेती रहती थी, लक्षण कम हो जाते थे। गुरुजी की संगत में एक माह जाने के पश्चात्, उसने गुरुजी से मन ही मन निवेदन किया कि वह अब यह होम्योपैथी औषधि कभी नहीं लेगी। उसे स्वस्थ करना अब उनके हाथ में है। औषधि छोड़ने पर उसकी वेदना अति तीव्र हो गयी परन्तु उसने वह दवाई नहीं ली। यह 15 दिन तक रहा। उसके पश्चात् वह जिस प्रकार से शरु हुए थे उसी प्रकार से एकदम समाप्त हो गये। उसके बाद आज तक वह फिर कभी नहीं हुए। गुरुजी महान हैं।

अप्रैल 2005 में बब्बू की आंख में काले धब्बे होने लगे। नेत्र विशेषज्ञ ने उसका परीक्षण करने के पश्चात् बताया कि उसका दृष्टिपटल सूजा हुआ है और यदि उसने तुरन्त स्टिरोइड की गोलियां खानी आरम्भ नहीं करीं तो वह अपनी दृष्टि भी खो सकती है। किन्तु इन्हें खाने से उसका अप्रकट तपेदिक रोग उभर सकता था। अतः उसे उसकी भी चिकित्सा करानी पड़ेगी। यह सुनकर वह चितिंत हो गयी। चूंकि हम गुरुजी से सीधे इसका उल्लेख करने में झिझक रहे थे एक अन्य महिला, गुरुजी की दीर्घकालीन भक्त, ने गुरुजी को इसके बारे में बताया। फिर भी, जब बब्बू उनसे आज्ञा ले रही थी, गुरुजी कुछ नहीं बोले। रोग के भय से बब्बू ने गुरुजी को कहा कि वह स्टिरोइड नहीं लेना चाहती है। गुरुजी ने मुस्कुरा कर हमारे फिरोजपुर वाले घर में रखा हुआ शुद्ध मधु लाने को कहा। बब्बू जब वह शहद लेकर आयी तो गुरुजी ने उसे अभिमंत्रित किया और उसे अपनी आँखों में डालने के लिए कहा।

कुछ दिन पश्चात् बब्बू का परीक्षण चंडीगढ़ स्थित हमारे पारिवारिक नेत्र विशेषज्ञ ने किया। उसने कुछ औषधियाँ खाने को कहा और आँखों में डालने वाली बूँदे भी दी। उसने आँखों में मधु डालने को मना करा क्योंकि उससे आँखों में डालने वाली बूदों का प्रभाव नहीं रहेगा। हमने चिकित्सक का कहा माना, किन्तु आँखों में शहद भी डालते रहे। दो सप्ताह के उपरान्त उसकी आँखे बिल्कुल ठीक हो गयीं थी और तपेदिक के परीक्षण का परिणाम भी नकारात्मक निकला। चिकित्सक ने बताया कि उनके पास एक अन्य महिला रोगी इसी प्रकार की समस्या के साथ आ रही है – उसका रोग इतना अधिक नहीं है – किन्तु उसे लाभ नहीं हुआ है। बब्बू का उदाहरण तो वास्तव में चमत्कार है। उसने बब्बू से पुछा कि क्या वह भगवान में विश्वास करती है। क्या इसमें कोई शंका थी? गुरुजी महान है।

पिछले नौ वर्षो से बब्बू के मुख पर विषाणुजनित मस्से हो रहे थे। त्वचा विशेषज्ञ की अनेक औषधियाँ और उनको जलाने की क्रियाएं असफल रही थीं। अंततः उसकी चिकित्सा गुरुजी के ही एक अन्य भक्त, डॉ. डी आर चौहान, ने मार्च 2006 में करी। एक सप्ताह में ही, कभी फिर वापस न होने के लिए, वह सब लुप्त हो गये। गुरुजी महान हैं।

दुर्घटना से रक्षा

दिसंबर 2006 में चंडीगढ़ में एक चौराहे पर अस्सी किलोमीटर के वेग से आती हुई एक एम्बेसेडर गाड़ी ने हमारी ज़ेन गाड़ी पर किनारे से आकर टक्कर मारी। हमारी गाड़ी चार फुट दूर चली गयी। उसके दरवाजे, खिड़कियाँ, मडगार्ड, सामने का शीशा, यहाँ तक कि गाड़ी का यंत्रों वाला हिस्सा भी टूट गया। इतनी जोर से दुर्घटना होने के बाद भी हम चारों सुरक्षित बाहर निकल आये। गाड़ी को ठीक कराने के लिए मुझे कुछ धन व्यय नहीं करना पड़ा क्योंकि एम्बेसेडर गाड़ी के स्वामी ने पूरा पैसा दिया। यह सब केवल गुरुजी की दया से ही संभव हो पाया। गुरुजी महान हैं।

हम गुरुकृपा के लिए उनके अत्यंत आभारी है। गुरुजी अक्सर कहते थे कि आने वाले समय में इस संसार में अनेक कठिनाईयाँ आने वाली है – कोई किसी की सहायता नहीं करेगा, चाहे वह उसका अति घनिष्ठ संबंधी, भाई, बहन या कोई अन्य ही क्यों न हो। केवल गुरुजी की संगत के इस परिवार में ही सुख, शंति और चैन मिल पायेगा। कहने की आवश्यकता नहीं है कि हम उनकी संगत के सदस्य होकर और उनकी दया के पात्र बन कर सौभाग्यशाली है। ॐ नमःशिवाय, गुरुजी सदा सहाय।

–मेजर जनरल मोहिंदर पाल सिंह संधू, चंडीगढ़

गुरुजी के चित्र से अनुकम्पा

दिसंबर 2005 के एक शनिवार को, दिल्ली में प्रातः आठ बजे, मैं घर पर बैठे हुए समाचार पत्र पढ़ रहा था कि मेरे एक घनिष्ठ संबंधी का फोन आया। रिश्ते में मेरे भाई पी एन राजू ने बताया कि उनके भाई पी एन नरसिम्हन और उनके दो अन्य सहकर्मी की प्रातः चार बजे पोंडिचेरी से घर आते हुए भंयकर दुर्घटना हो गयी थी। बात करते करते राजू रो पड़े।

मैंने राजू को तुरन्त पोंडिचेरी जा कर गुरुजी का चित्र उन आहतों के पास रखने को कहा। मैंने उसे गुरुजी का एक चित्र कुछ माह पूर्व ही दिया था।

जिस मारुति कार में वह यात्रा कर रहे थे वह एक खड़ी हुई बैलगाड़ी से टकरा गयी थी। कार आगे से नष्ट हो गयी थी। आगे बैठे हुए दोनो लोगों को सिर में चोटें आयीं थी, उनकी बाहें टूट गयी थी। पर पीछे बैठे हुए श्री अरुण की अवस्था चिंतनीय थी। उनका सिर कार की छत से जा लगा था और उन्हें भयंकर अंदरूनी चोट लगी थी।

जब राजू चिकित्सालय पहुंचे तो चिकित्सकों के अनुसार तीनों की अवस्था गंभीर थी। अरुण की अवस्था तो अत्यंत शोचनीय थी और उनके अनुसार वह सात घंटे से अधिक जीवित नहीं रह सकता था। एक्स–रे में उसकी सिर की चोट बहुत गहरी थी, मस्तिष्क के भीतर रक्त प्रवाह नहीं हो रहा था और उस बारे में कुछ नहीं किया जा सकता था। अतः उन्होंने अरुण का उपचार बंद कर दिया था और उसके रिश्तेदारों को उसके अंतिम समय के लिए तत्पर रहने को कह दिया था।

राजू ने आस्था नहीं छोड़ी। उसके गुरुजी का चित्र तीनों के सिर पर रखा। यह उसने किसी भी रिश्तेदारों को बताये बिना किया क्योंकि किसी को भी गुरुजी के बारे में ज्ञान नहीं था।

मैं राजू से हर तीन घंटे में बात कर रहा था। वह जब भी रोगियों के समीप होता तो गुरुजी का चित्र उनके पास रख कर गुरुजी से प्रार्थना करता था।

परिणाम तुरन्त विदित होने लगे। चिकित्सकों ने जब रोगियों का परीक्षण किया तो दो को तो उन्होंने संकट से बाहर घोषित कर दिया परन्तु उन्हें गहन चिकित्सा केन्द्र में देखरेख के लिए रखने पर बल दिया। अरुण का परीक्षण करने पर वह चकित रह गये। न केवल उसने वह सात घंटे की सीमा पार कर ली थी, उसकी अवस्था में सुधाार भी हो रहा था। चिकित्सकों से प्रश्न करने पर वह कुछ उत्तर नहीं दे पा रहे थे।

अगले दिन चिकित्सक स्तब्ध रह गये। अरुण का परीक्षण करने पर उन्होंने उसका तीव्रता से सुधार होता देखा। तब उन्होंने कहा कि वह ठीक तो हो जाएगा पर सामान्य जीवन व्यतीत नहीं कर पायेगा। दुर्घटना के दो सप्ताह बाद तक राजू गुरुजी का चित्र रोगियों पर रखता रहा। एक माह के उपरान्त अरुण पुरानी बातें याद करने लगा और उसने शय्या से उठने की आकांक्षा व्यक्त करी।

गुरुकृपा से वह स्वस्थ होता गया और तीन मास के बाद उसने

कार्यालय भी जाना आरम्भ कर दिया। अरुण का उपचार करने वाले चिकित्सक केवल आश्चर्य कर सकते थे। उनको पता नहीं था कि गुरुजी ने अपने अनुयायी की पुकार सुन कर उनकी रक्षा करी है जिन्होंने गुरुजी के बारे में सुना भी नहीं था।

सत्संग से उपचार

गुरुजी के आशीर्वाद का एक अवसर नौ मास पूर्व भी आया था, जब मैंने गुरुजी के दर्शन भी नहीं किये थे। मैं अपने दो अतिथियों से वार्तालाप कर रहा था – मेरी मामी, श्रीमती विजया और भाभी, श्रीमती राजलक्ष्मी।

मेरी मामी स्पोंडियोलोसिस की रोगी थीं और भाभी पिछले 15 वर्ष से अधसीसी दर्द से पीड़ित थी। वार्ता करते हुए विजया ने बताया कि न तो वह शय्या पर सो पाती थी, न ही किसी भी वाहन, जैसे रिक्शा, कार, बस या ऑटो में यात्रा कर पाती थी। वह अपने मन की शांति खो चुकी थी। तमिलनाडु के एक विशिष्ट स्पोंडियोलोसिस विशेषज्ञ, डॉ. मईल वाहनं ने कह दिया था कि उनको इस वेदना के साथ ही शेष जीवन व्यतीत करना पड़ेगा।

श्रीमती राजलक्ष्मी को इतनी अधिक पीड़ा होती थी कि वह आत्महत्या करने का सोचने लगती थी। कुछेक बार उसने सोने की अधिक गोलियां ले भी ली थीं पर असफल रही थी।

मुझे पता नहीं कि मेरे मन में यह विचार कैसे उत्पन्न हुआ किन्तु मैंने उनको कह दिया कि गुरुजी के समक्ष यह समस्याएँ रखने से उनको मुक्ति मिल जाएगी। उस समय मेरे पास गुरुजी का एक ही चित्र था। पर मैं उनको गुरुजी के बारे में बताता गया। मैंने उनको बताया कि कैसे उनसे भी अधिक गंभीर रोगी गुरुजी की कृपा से स्वस्थ हुए है। मैं उनको गुरुजी के भक्तों के संम्मरण कोई दस मिनट तक सुनाता रहा।

अविश्वसनीयता से यह सब सुनने के बाद विजया और राजलक्ष्मी

दोनों ने अपने रोग में सुधार होने की बात कही। विजया ने कहा कि उसका स्पोंडियोलोसिस का दर्द शीघ्रता से कम हो रहा था। राजलक्ष्मी ने भी कहा कि उसकी वेदना जो वार्ता प्रारम्भ होने के समय बनी हुई थी, घट रहा थी। उसको लग रहा था जैसे उसके सिर से एक बहुत बड़ा बोझ हट गया है।

उनके स्वास्थ्य में प्रगति बनी रही। उस रात विजया दस वर्ष के पश्चात् पहली बार शय्या पर सोयी। राजलक्ष्मी ने उस रात कोई औषधि नहीं ली। यह चमत्कार देखने के तुरन्त बाद मैंने कर्नल चटर्जी को फोन किया और उनसे गुरुजी के पास जाने के मार्गदर्शन लिए। एक सप्ताह के बाद हमने सतगुरु के दर्शन किये और उनसे आशीर्वाद लिया।

उस वार्ता को हुए तीन वर्ष हो गये है और चेन्नई में रह रही वह महिलाएं रोज गुरुजी के चित्र के सामने उनसे प्रार्थना करती है। अब उनमें उन रोगों के कोई आसार शेष नहीं है।

–आर कृष्णास्वामी, दिल्ली

नाविक का मार्ग दर्शन

1995 में श्री राय, जो अब एक जहाज के कप्तान हैं, जालंधर में अपने घर पर थे जब उनकी बायीं आँख की दृष्टि धुंधली हो गयी। परीक्षण से पता लगा कि उनकी आँख के पीछे के परदे में आ रही एक स्नायु में समस्या थी। सौभाग्यवश उस समय उनकी माँ और पत्नी डिफेन्स कॉलोनी में गुरुजी के मंदिर में किसी का कोई संदेश लेकर गयीं थीं। उसके पश्चात् उनकी माँ चाहती थी कि उनका पुत्र गुरुजी के दर्शन के लिए जाये। राय ने पहले मना कर दिया पर वह अपनी माँ को वहाँ तक छोड़ने के लिए मान गये। वहाँ पहुंचने पर वह उत्सुकतावश अन्दर भी आ गये।

मातृभाव से प्रेरित राय की माँ चाहती थी कि उनका बेटा पुनः ठीक हो जाये। उन्होंने गुरुजी को अपने पुत्र की समस्या के बारे में बताया तो गुरुजी ने उनको एक अन्य कमरे में जाकर प्रतीक्षा करने को कहा। राय उस कमरे में अधीर हो चले थे और उनके मन में विचार आया कि वह वहां पर क्या कर रहे हैं। ठीक उसी समय गुरुजी ने उस कमरे में प्रवेश किया और पूछा कि वह उनके लिए क्या कर सकते हैं।

उन्होंने राय को कुछ पान के पत्ते लाने को कहा। उन्हें अभिमंत्रित कर वह उन्होंने राय को इस निर्देश के साथ दिये कि वह उसे अपनी आँखों के ऊपर रख कर एक घंटे के लिए हल्की पट्टी बांध लें। उसके बाद उन पत्तों को बहते जल में प्रवाह कर दें। राय ने वैसा ही किया और एक घंटे के पश्चात् उनकी आँख की दृष्टि ठीक हो गयी थी।

राय ने गुरुजी के दर्शन के लिए जाना आरम्भ कर दिया। तीसरी या चौथी बार जाने पर उन्हें एक स्वप्न दिखायी दिया। स्वप्न में उन्हें उठाया गया और उन्होंने देखा कि उनके कमरे की दीवार पर नीली आभा है। उसमें उन्हें शिव दिखायी दिये और उनके पीछे पीले कपड़े धाारण किये गुरुजी, पर गुरुजी के सिर के स्थान पर शिवलिंग था। उन्होंने अपनी पत्नी, अनु को जगाया पर तब तक वह आभा अदृश्य हो गयी। उस समय तक राय शिव को मात्र कल्पना मानते थे।

गुरुजी ने राय परिवार पर अपनी कृपा करनी आरम्भ कर दी थी। अनु की पीठ के निचले हिस्से में मेरुदंड का एक चक्र हिला हुआ था। वह सदा चौड़ी पेटी बांधे रहती थी। चिकित्सकों के अनुसार उसका एकमात्र निवारण शल्य क्रिया था। परन्तु उसमें सबसे बड़ी विपदा थी कि अनजाने में किसी अन्य नस को चोट पहुँचने से लकवा हो सकता था।

गुरुजी को इस समस्या का पता लगने पर उन्होंने चम्मच अनु की पीठ पर लगा कर निरीक्षण किया। उसकी वेदना तुरन्त समाप्त हो गयी और पुनः कभी नहीं हुई। उसके थोड़े दिन पश्चात् जब वह दम्पति हेमकुंड साहिब गये, जहाँ पर 22 किलोमीटर का पैदल का मार्ग है, अनु सबसे आगे चल रही थी।

राय को अपने जहाज पर जाने में एकाध मास का समय और बचा था। उन्होंने अपनी मौसी, जिनके हृदय का वाल्ब बदला जा चुका था, जालंधर बुलाने का निश्चय किया, जिससे गुरुजी के आशीष का फल प्राप्त कर सके। इस अंतराल में गुरुजी उससे सदा पूछा करते थे कि वह जहाज पर कब जा रहे हैं तो उनका उत्तर एक मास ही रहता था। वह

राय को एक शबद भी सुनने को कहते थे जिसके शब्द कुछ इस प्रकार थे – नया भक्त पहली सीढ़ी पर ही है, पर उसने सबको आस्था के मार्ग पर बुलाना आरम्भ कर दिया है। तथापि इन संकेतों को अनदेखा कर, राय अपनी योजना के अनुसार पुणे गये और मौसी को लेकर वापस आये। जब वह गुरुजी के दर्शन के लिए गये तो दर्शन सहज नहीं हुए। भक्त बताते थे कि गुरुजी पाठ कर रहे है या मुख्य द्वार बंद होता था। स्पष्टतया कुछ विशेष बात अवश्य थी।

फिर एक दिन दर्शन हो ही गये। गुरुजी ने मौसी को आशीष दिया और पुणे वापस जाने को कहा। गुरुजी के इस कथन की अवहेलना हुई। पुनः गुरुजी के दर्शन पर जाने पर उन्होंने फिर उनको वापस घर जाने को कहा। राय के पूछने पर कि क्या वह रह सकती है गुरुजी चुप रहे। स्पष्ट था कि वह उन्हें वापस पुणे भेजना चाह रहे थे।

शीघ्र ही राय अपने जहाज पर जाने के लिए जालंधर से चलने वाले थे कि उनकी मौसी के हृदय में समस्या हो गयी। उन्हें वहीं के सेना चिकित्सालय में प्रविष्ट कराना पड़ा। जब तक राय अपने जहाज पर पहुंचे उनकी मौसी की अवस्था बहुत बिगड़ चुकी थी।

तथापि गुरुजी के कारण उनके अंतिम दिन बहुत प्रसन्नतापूर्वक बीते। उनके परिवार के सदस्य भी उनसे मिल सके। मौसी ने अपने परिवार के सदस्यों को बताया कि गुरुजी के कारण वह उन्हें देख पाये और उनसे बात कर पा रहे हैं। उनकी मृत्यु भी बहुत शांतिपूर्वक हुई।

पर राय को संदेश मिल गया था। यदि वह उन्हें वापस पुणे ले जाते तो उनका अंत संभवतः इस भांति नहीं होता।

गुरुजी के कथन पर पदोन्नति

राय एक बार अपनी कंपनी बदलना चाह रहे थे क्योंकि अपने कार्य में दक्ष होते हुए भी पिछले चार वर्ष से जहाज के कप्तान के पद पर उनकी उन्नति रुकी हुई थी।

वह चंडीगढ़ में अपनी पत्नी का जन्मदिवस मना रहे थे जब उनको मुबंई में एक अन्य कंपनी से फोन आया। उन्होंने उन्हें कप्तान का पद पर लेने की बात कही। राय गुरुजी की आज्ञा लेने दिल्ली आये तो गुरुजी ने केवल *''घुम आ''* कह कर दे दी।

मुंबई पहुँच कर राय ने नियमानुसार अपने स्वास्थ्य परीक्षण करवाये और फिर उस कंपनी के अधिकारियों से मिले। वार्तालाप करते हुए उन्होंने उनके व्यवहार में परिवर्तन देखा। वह उनको कप्तान बनाने से पूर्व दो मास तक जहाज पर कार्य करने को कह रहे थे। राय ने मना कर दिया।

वापस आ कर उन्हें पता लगा कि उनकी पुरानी कंपनी उन्हें वापस बुला रही थी। गुरुजी ने उनके साथ कार्य करने का परामर्श दिया। फलस्वरूप राय स्कॉटलैंड गये जहां पर उनका जहाज बंदरगाह पर आने वाला था। जहाज दो तीन दिन देरी से आया और वह वहीं पर रहे। जिस दिन जहाज आने वाला था राय को एक स्वप्न आया। उन्होंने गुरुजी को उन्हें एक तिथि बताते हुए देखा: *15 जुलाई*। उनकी नींद टूट गयी और बहुत सोचने पर भी उन्हें इस तिथि का अर्थ समझ नहीं आया।

जब जहाज आया तो उन्हें जहाज के प्रमुख को निवृत नहीं करना था परन्तु जहाज प्रमुख को निर्देश था कि वह राय को केरेबियन तक अपने साथ कार्य करवाते हुए ले जाएँ और वहां पहुंच कर राय को जहाज को उत्तरदायित्व सौंप दें। राय को इस बारे में कुछ नहीं पता था। गंतव्य पर पहुंच कर राय ने अपना कप्तान का कार्यभार संभाला और वह तिथि थी – 15 जुलाई।

उनका स्वप्न साकार हुआ था क्योंकि उन्होंने गुरुजी के कथन का अक्षरशः पालन किया था। अगले नौ माह तक, जब तक वह जहाज पर रहे, उन पर गुरुजी की कृपा बनी रही। कृपा अतनी अधिक थी कि वह जो भी चाहते थे हो जाता था। वह इस विचार से भयभीत हुए कि वह कोई अनैतिक इच्छा न कर बैंठे।

गुरुजी क्या नहीं कर सकते? 1997 में राय अपना नया पारपत्र बनावाने मुंबई गये। यह अत्यावश्यक था। जब वह अपना नया पारपत्र बनवा रहे थे तो उन्हें पता लगा कि वह अपना पुराना पारपत्र जिसमें अमरीकी वीसा था खो चुके है। वह अति व्याकुल थे जब उन्हें पारपत्र चुराने वाले गिरोह का एक सदस्य मिला। उसने उनके पारपत्र के विवरण लिए और ढूंढ़ कर लौटा दिया।

पुणे के चमत्कार

राय का पुत्र भी गुरुकृपा से वंचित नहीं रहा। यद्यपि उसने गणित और विज्ञान विषय लिए थे गुरुजी ने उसे पुणे से कानून का पाठ्यक्रम करने को कहा। पुणे में राय के मामा रहते थे।

पिता पुत्र जब पुणे पहुंचे तो उन्हें पता लगा कि कोई खाली स्थान नहीं है क्योंकि वह परीक्षा में नहीं बैठा था, उसे कहीं स्थान मिलने की संभावना भी नहीं थी। पुणे विश्वविद्यालय ने और विद्यार्थियों को प्रविष्ट करने का निर्णय लिया। वह परीक्षा में बैठा और उसे प्रवेश मिल गया। गुरुजी ने उसके प्रवेश मिलने पर कहा कि केवल उसको प्रवेश दिलवाने के लिए उन्हें 60 अन्य छात्रों को प्रवेश दिलाना पड़ा। फिर गुरुजी को उसे हर वर्ष उत्तीर्ण भी करना पड़ा। उस पर दिव्य कृपा बनी हुई थी जब गुरुजी ने कहा कि उसके मित्र तो अनुत्तीर्ण होते रहे हैं, वह प्रत्येक वर्ष उत्तीर्ण रहा है।

राय के मामाजी भी लाभान्वित हुए। एक बार गुरुजी ने राय को अपने मामाजी को देने के लिए अपना एक चित्र दिया। यह अचम्भे की बात थी क्योंकि राय ने कभी गुरुजी से अपने मामाजी के बारे में बात नहीं करी थी। जब पुणे में राय ने चित्र अपने मामाजी को दिया तो उनके मामा बोल उठे कि गुरुजी को कैसे पता है। राय को कौतुहल हुआ और वह सही बात जानना चाहते थे। यह दुःख की बात थी कि राय के मामाजी को विवाह को 30 पर्ष होने को आये थे किन्तु उनके यहाँ संतान नहीं हुई थी। वह धात्रेय माँ से संतान करवाना चाह रहे थे पर वह प्रयास

भी असफल रहा था। गुरुजी का चित्र आने के पश्चात् उनके मामाजी के यहाँ पुत्र उत्पन्न हुआ। उस समय तक वह गुरुजी से मिले भी नहीं थे। पुत्र होने के उपरान्त वह पुणे से गुरुजी के दर्शन करने आने लगे।

मध्यरात्रि 3:30 टोकियो - राय जागे

राय और उनके परिवार के सदस्य गुरुजी के अनुयायी थे, उनके पिता दर्शन के लिए नहीं आना चाहते थे। उनके मतानुसार मनुष्य को अच्छा रह कर केवल ईश्वर से सम्बन्ध बना कर रखना चाहिए। कोई उनके न आने की बात से असहमत भी नहीं था।

एक दिन राय परिवार गुरुजी के दर्शन के लिए अपने पिता को यह बोल कर आये कि वह शहर जा रहे हैं। जब वह गुरुजी के पास आये तो उन्होंने यह जानते हुए कि वह अपने पिता से क्या कह कर आये हैं, उनको शहर जाने को कहा। राय परिवार घर लौटा और प्रेरित होकर अपने पिता को गुरुजी के बारे में बताया।

गुरुजी ने पिता की भी रक्षा करी। गुरुजी की आज्ञा पर राय परिवार अपना घर जालंधर से चंडीगढ़ बदल रहा था। परिवार पहले गया और राय के पिता सामान ला रहे थे - उसमें गुरुजी का चित्र भी था। जिस दिन राय के पिता चंडीगढ़ में नये घर में पहुंचे, उनको दिल का दौरा पड़ा। उन्हें सेना चिकित्सालय में ले गये। गुरुजी उस समय दिल्ली में थे और राय अपने जहाज पर टोकियों में।

राय अपने कक्ष में सो रहे थे जो अन्दर से बंद था और उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई पैर हिलाकर उनको जगा रहा है। उसी समय उनकी पत्नी का फोन आया कि उनके पिता की स्थिति ठीक नहीं है। राय ने उत्तर दिया कि उन्हें अभी अभी गुरुजी ने जगाया है और वह पिता की भी रक्षा करेंगे।

इतने में पता लगा कि उनके पिता की धमनियां बद हो गयी है पर वह चिकित्सालय से वापस घर आ गये। दस दिन बाद वह पुनः

चेतना खो बैठे। इस बार गुरुजी को समस्या से अवगत कराया गया। उन्होंने दम्पति को बुलाकर उपचार दिया। शीघ्र ही राय के पिता की स्थिति में सुधार आया। पर उनका एक परीक्षण शेष था। गुरुजी ने राय को उससे एक दिन पहले अपने पिता को व्हिस्की का पैग पिलाने को कहा। जब परिणाम आया तो चिकित्सक कुछ नहीं बोले। वह परिणाम लेकर अन्य चिकित्सकों के पास गये। वापस आकर विस्मित चिकित्सक ने बताया कि हृदय तो बिल्कुल ठीक है।

यदि पिता का रोग निदान हुआ था तो माँ को भी गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। जालंधर में एक बार नहाते हुए उन्हें प्रतीत हुआ कि गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ खुलते जा रहे है और उसमें गुरुजी की मुखाकृति दृष्टिगोचर है। उनकी माँ ने कहा कि दिव्यात्मा ने स्वतः पाठ करवा दिया।

–रवि राय, हयूस्टन, अमरीकी संयुक्त राज्य

जीवन के कर्ता

मैं जलवायु टॉवर, सेक्टर 56 गुड़गाँव में रहता हूँ। यह मेरा और मेरे परिवार के सदस्यों का गुरुजी की शरण में आने के पश्चात्, उनके साथ अपने अनुभवों का वर्णन करने का एक लघु प्रयास है। इस अंतराल में मात्र गुरुजी के हाँ कहने भर से हमने अपना जीवन परिवर्तित होते हुए देखा है। मैं अब यह समझ गया हूँ कि गुरुजी स्वयं शिव है, और उनकी क्षमता सर्वोपरि है। वह दया और प्रेम से भरपूर हैं, और अपनी शरण में आये हुए प्रत्येक व्यक्ति को आशीर्वाद देते हैं। वह ही हमारे अस्तित्व का कारण हैं और अपने गुरुजी, प्रभु और इस ब्रह्मांड के स्वामी की छत्रछाया में ही हम जीवन का आनंद ले रहे हैं।

प्रस्तावना

मेरी बेटी शुभा दो वर्ष की आयु से दमा और विसर्प की रोगी थी। उसको यह व्यथा झेलते हुए 17 वर्ष हो गये थे जब 2000 के आरम्भ

में मेरे एक मित्र ने गुरुजी का आशीर्वाद लेने की बात करी। परन्तु वह हमें गुरुजी के पास नहीं ले गये। उस समय हम कालकाजी में रहते थे। अगस्त 2000 में एक दिन जब हम सुल्तानपुर में एम्पाएर एस्टेट से गुजर रहे थे मुझे अपने मित्र की बात याद आयी और मैंने अपनी पत्नी को यह बात बतायी। उसी समय मैंने निश्चय किया कि गुड़गाँव आने के बाद मैं गुरुजी के दर्शन के लिए अवश्य आऊँगा।

उस समय गुड़गाँव में एक मकान की किश्त देने में आ रही कठिनाईयों के कारण हम उसे बेचना चाह रहे थे। मेरे पिता उस समय हमारे गाजियाबाद वाले घर में रह रहे थे और उनसे धन की आशा नहीं थी।

अचानक, गुरुजी के दर्शन करने के निश्चय के 15 दिन उपरान्त ही मेरे पिता ने मेरे बड़े भाई को मेरे से गाजियाबाद वाला घर खरीदने को कहा। इससे मेरे पिता उस घर में रह सके और मुझे सितम्बर 2000 तक गुड़गाँव वाले घर के लिए धन प्राप्त हो गया। गुड़गाँव आकर रहने की सब समस्याएँ अब समाप्त हो गयीं।

16 सितम्बर 2000 को अचानक मेरी बेटी के त्वचा रोग में वृद्धि हो गयी और उसकी यह अवस्था चार मास तक बनी रही। फलस्वरूप वह अपनी अर्धवार्षिक परीक्षाएं नहीं दे पायी। होम्योपैथी औषधियों का सेवन करने से जनवरी 2001 तक उसकी त्वचा साफ हो गयी थी पर कुछ निशान शेष रह गये थे।

26 जनवरी 2001 को हम अपने गुड़गाँव वाले निवास में रहने के लिए आ गये। पता नहीं क्यों, मुझे लग रहा था कि हमारे गुड़गाँव आने और मेरी बेटी के स्वास्थ्य में सुधार का कारण गुरुजी ही हैं। अतः मैंने एम्पायर एस्टेट में गुरुजी के दर्शन करने का मन बना लिया।

बिना किसी कारण विशेष के इस कार्य के लिए मैंने 17 फरवरी 2001 की तिथि निश्चित करी। संयोग से वह शिवरात्रि का दिन था। एम्पाएर एस्टेट पहुंचने पर कुछ लोगों से दिशा निर्देश लेकर मैं भाटी

खान क्षेत्र में स्थित बड़े मंदिर पहुँच गया। मुझे गुरुजी के दर्शन हुए। किसी कारणवश मुझे लगा कि मैं जीवन भर इन्हीं गुरुजी को ढूंढ़ता रहा था।

यद्यपि शुभा पढ़ाई में निपुण थी, रोग के कारण उसे उसी कक्षा में रोक लिया गया था। मेरी बेटी को लज्जित न होना पड़े, इस कारण मैंने उसका विद्यालय बदलने का निश्चय किया। मैंने गुरुजी से उसकी सहायता करने के लिए भी प्रार्थना करी। वह विज्ञान की छात्रा थी पर उसे गुड़गाँव के ही एक विद्यालय में कक्षा 11 में वाणिज्य विषयों के साथ प्रवेश मिला।

अकस्मात् उसकी प्रधानाध्यापिका ने कहा कि यदि वह प्रवेश परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक लाये तो वह उसके कक्षा 12 में प्रवेश दे देंगी। उसे ग्रीष्मकाल के अवकाश में पढ़ कर उसके अंत में यह परीक्षा देनी थी। हमने गुरुजी से प्रार्थन करी और शुभा ने तैयारी करी। गुरुजी की दया से जब परिणाम आये तो उसे कक्षा 12 में प्रवेश मिल गया।

प्रधानाध्यापिका पर ऐसा करने का कोई बंधन नहीं था। हम उन्हें जानते तक नहीं थे और इसके लिए कोई मांग नहीं रखी। यह गुरुजी के बताने की प्रणाली थी कि वह सदा हमारे साथ है और यदि उनको समस्या से अवगत न भी कराया जाये तो भी उनकी कृपा सदा सब के ऊपर बनी हुई है।

नवम्बर 2001 में गुरुजी पंजाब चले गये। मैं हर सप्ताह लगातार एम्पाएर एस्टेट जाता रहा। मार्च 2002 में मुझे स्वप्न में गुरुजी दिखायी दिये और उन्होंने मुझे 14 अप्रैल 2002 को आने को कहा। मैंने यह बात अपनी पत्नी को बतायी और फिर एम्पाएर एस्टेट नहीं गया। 14 अप्रैल को एम्पाएर एस्टेट जाने पर गुरुजी के दर्शन हुए। पता लगा कि गुरुजी 13 अप्रैल की शाम को ही पंजाब से वापस आये थे और आने के बाद यह पहली संगत है। संगत में उपस्थित अन्य अनुयायियों ने मुझे बताया

कि गुरुजी के स्वप्न वास्तविक घटनाएँ होती है। गुरुजी में मेरा विश्वास और दृढ़ हो गया और अब हम स्वप्न में उनके पुनः आने की प्रतीक्षा करने लगे।

मुझे अगस्त 2003 से नई नौकरी ढूँढने में असफलता ही मिलती रही थी। साक्षात्कार के पश्चात् किसी न किसी कारणवश सफलता मेरे से दूर हो जाती थी। मेरी कंपनी भी मुझे पदोन्नति नहीं देना चाहती थी। अंततः सितम्बर 2005 में साहस बटोर कर मैंने गुरुजी को आने वाले साक्षात्कार के बारे में बताया और उनके अनुग्रह के लिए विनती करी। गुरुजी ने कहा, *'तू पैसे दा कि करेगा तू मेरे कोल आजा'*। जब एक अन्य भक्त, श्री सिंगला ने उन्हें बताया कि मुझे दो बेटियों का विवाह और करना है तो मुस्करा कर बोले, *'जा, ते फिर पैसे कमा ले'*। इसके एक सप्ताह उपरान्त ही मुझे एक अंतराष्ट्रीय कंपनी से बुलावा आ गया और उन्होंने मुझे नौकरी दे दी। स्पष्ट है कि गुरुजी को बताये बिना ही उनको नयी नौकरी और मेरी अर्थ व्यवस्था का ज्ञान था।

पिता के रोग का निदान

मेरे पिता 79 वर्ष के हैं। जुलाई 2005 में पता लगा कि उन्हें प्रोस्टेट ग्रंथि का केंसर है। उनकी शल्य क्रिया हुई और वह चिकित्सा करवाते रहे। इसी अवद्यि में उन्हें दिल का दौरा पड़ा और उनकी एंज्योप्लास्ती हुई। इन दोनों रोगों के कारण ऐसी आपात स्थिति उत्पन्न हो गयी जिस पर नियंत्रण नहीं हो पा रहा था। तीन मास के उपरान्त उनके पुरस्थ ग्रंथि रोग की पुनरावृत्ति हो गयी। मैंने उनसे गुरुजी के आशीर्वाद लेने का आग्रह किया। उस समय तक उन्हें गुरुजी में विश्वास नहीं था और उनके दर्शन के लिए कभी नहीं आये थे। वह मान गये और 2005 के अंत में गुरुजी के दर्शन के लिए एम्पाएर एस्टेट आये।

हमने उनकी समस्याओं के बारे में कभी गुरुजी को नहीं बताया तत्पश्चात् वह घर पर गुरुजी के चित्र के समक्ष ॐ नमः शिवाय का जप करने लगे। शनैः शनैः उनकी सब औषधियाँ बंद हो गयीं और

उनके सब परीक्षणों के परिणाम भी सामान्य आये। उनके स्वास्थ्य में आशा से कहीं अधिक सुधाार आया है। अब वह बड़े मंदिर के सब आयोजनों में जाते हैं।

– कमांडर (सेवानिवृत) राज कुमार शर्मा, गुड़गाँव

प्रभु चरणों में कृपा

"चरण कमल की मौज को, कहो कैसे अनुमान,
कहिबे को सोभा नहीं, देखा ही परमान"

संत कबीर ने सतगुरु के चरणों में मिलने वाले सुख का वर्णन करने से मना कर दिया था क्योंकि उसे शब्दों में पिरोना असम्भव है, वह तो केवल अनुभव ही किया जा सकता है। मुझे भी ऐसी ही अनुभूतियाँ हुई हैं। गुरुजी के आशीर्वाद ने एक नवीन बोध और उद्देश्य देकर मेरे पूरे जीवन को परिवर्तित कर दिया है।

सर्वज्ञाता होने के आभास

अगस्त 1996 में, एक दिन संध्या को मेरे मित्र, विंग कमांडर चोपड़ा ने फोन कर मुझे गुरुजी के यहाँ आने का आमंत्रण दिया। क्योंकि मैं संतों में विश्वास नहीं करता था, बहुत मना करने के पश्चात्, उन पर आभार प्रकट करने के लिए, मैंने आना स्वीकार कर लिया।

उस दिन हम नोएडा से छः बजे चल कर 45 मिनट में गुरुजी के स्थान पर पहुँच गये। पहला अवसर होने के कारण, संगत में, चोपड़ा के अलावा मैं किसी को नहीं जानता था। हम 15–20 लोग समूह में बैठ कर गुरुजी की प्रतीक्षा करते रहे। जब गुरुजी अपने कक्ष से निकले हम सबने जाकर उनके चरण स्पर्श किये। सामान्यतः ऐसे धार्मिक अवसरों पर, उपस्थित भक्त, ईश्वर के लिए आदर भाव से या किसी धर्मार्थ कार्यों के लिए धन दान करते हैं पर विंग कमांडर चौपड़ा ने मुझे चेतावनी दी थी कि यहां पर धन कदापि अर्पण नहीं करना है। गुरुजी भेंट में केवल पुष्प या मिठाई स्वीकार करते हैं। फूल सजाने के काम आते थे और मिठाई को गुरुजी प्रसाद के रूप में संगत में बाँट देते थे।

चोपड़ा द्वारा मेरा संक्षिप्त परिचय कराने के पश्चात् गुरुजी ने मेरी ओर मुड़ कर देखा और पूछा कि मैं चंड़ीगढ़ कब जा रहा हूँ। मैं अचंभित हो गया क्योंकि चोपड़ा को इस बारे में कुछ नहीं पता था और पता होने पर भी बताने का समय नहीं मिला था। किन्तु गुरुजी को मेरे बारे में चोपड़ा द्वारा दिए गए परिचय से अधिक ज्ञान था। अपने अचम्भे को वश में करते हुए मैंने गुरुजी को उत्तर दे दिया। गुरुजी ने जानना चाहा कि मैं वहां पर कहाँ रहता हूँ। मैंने उनकों बताया कि मैं एक पुलिस अधिकारी, श्री पी पी सिंह, के घर पर ठहरता हूँ। गुरुजी ने कहा कि वह उनके पुराने अनुयायी हैं – मैं उन्हें दिल्ली आकर गुरुजी से मिलने के लिए कहूँ। गुरुजी के रहस्य और उनकी प्रतिभाओं के बारे में जानने के लिए मेरी जिज्ञासा और बढ़ गयी।

यथा स्थान बैठने पर प्रसाद में चाय परोसी गयी। गुरबानी के मधुर शब्दों की ध्वनि से वातावरण में दिव्यता छा रही थी। कुछ देर पश्चात् गुरुजी ने मिठाई बांटनी आरम्भ करी और उसकी मात्रा ने मुझे आश्चर्य चकित कर दिया। उठाने और देने के लिए गुरुजी केवल अपने दाहिने हाथ का प्रयोग कर रहे थे पर प्राप्तकर्ता को दोनों हाथों सें भी उसे संभालने में कठिनाई हो रही थी। यद्यपि गुरुजी का हाथ उपस्थित लोगों

में से कुछ से छोटा होगा किन्तु बड़े हाथ वाले भक्त भी दोनों हाथ से प्रसाद को संभाल नहीं पा रहे थे।

गुरुजी के दो तीन बार प्रसाद देने के पश्चात्, जिसकी प्रति भक्त कुल मात्रा आधा किलो से अधिक रही होगी, उनके निर्देश पर लंगर परोसने का प्रबन्ध होने लगा। उस समय ऐसा लग रहा था कि पेट में और कुछ खाने का स्थान नहीं है परन्तु जब तक लंगर लगा तब तक पुनः भूख लगने लगी थी। कालांतर में मुझे बोध हुआ कि प्रसाद और लंगर के यह अनुभव एक बार के चमत्कार न होकर सामान्य है।

पिछले पांच वर्षों से मैं कुछ आहार और रहन – सहन संबंधित नियमों का पालन करता आया था। प्रातः शीघ्र उठने के लिए मैं 9:30 बजे सो जाया करता था। किन्तु गुरुजी संगत को अपने द्वारा सोचे हुए समय पर ही जाने की आज्ञा देते थे। उस दिन वहां अर्ध रात्रि के बाद तक रहे और कोई एक बजे नोएडा के लिए चले। यह समय मेरे शरीर की जैविक घड़ी के प्रतिकूल था किन्तु मुझे आभास हुआ कि इतनी देर तक जगे रहने के बाद भी, घर पहुंचने तक निद्रा मेरे से कोसों दूर थी और मुझमें अद्‌भुत स्फूर्ति बनी हुई थी।

घर पहुंचने के तुरन्त बाद मैंने अपने मित्र पी पी सिंह को फोन कर यह जानना चाहा कि क्या गुरुजी का कहा हुआ सत्य था। मेरे मित्र को यह जान कर अति प्रसन्नता हुई कि मैं गुरुजी से मिलने एम्पाएर एस्टेट गया था। वह उनका पता जान कर और भी आनंदित हुए क्योंकि चंड़ीगढ़ से गुरुजी के जाने के पश्चात् गुरुजी से उनका संपर्क टूट गया था। हमने खुश होकर वार्ता का अंत किया। फिर मैंने अपने पहले दर्शन के बारे में अपनी पत्नी के कुछ प्रश्नों के उत्तर दिये और इस प्रकार एक अति महत्त्वूपर्ण दिन का अंत हुआ।

अगले दिन जब चोपड़ा ने मेरे आने के बारे में प्रश्न किया तो मैं तुरन्त मान गया। गुरुजी की शरण में हमने शबद, प्रसाद और लंगर का आनंद उठाया और फिर गुरुजी ने मुझे ''गुप्ता'' से संबोधित किया। घर पर जब मैंने यह बताया तो मेरे बच्चों ने सोचा कि संभवतः गुरुजी को

गलती लगी होगी और वह मेरा नाम भूल गये होंगे। फिर मैंने बच्चों को अपने कॉलेज के दिनों का एक रक्त दान कार्ड दिखाया। उन्हें पहली बार पता लगा कि मैं गुप्ता लिखा करता था और व्यापार आरम्भ करने के पश्चात् ही मैंने सिंगला का प्रयोग आरम्भ किया।

गुरुजी ने सिद्ध कर दिया कि उनसे कोई भी बात छिपी हुई नहीं है। मेरी पत्नी और बच्चों ने अगली बार साथ चलने की आकांक्षा व्यक्त करी और हम सब एक साथ गये।

चंडीगढ़ तक सुगन्धित यात्रा

उनके दर्शन करते हुए एक सप्ताह से भी कम समय के पश्चात् गुरुजी ने मुझे पत्नी सहित चंड़ीगढ़ जाकर पी पी सिंह और उनके परिवार से मिलने को कहा। गुरुजी के आशीष से यह यात्रा विशेष रही। गुरुजी के शरीर से विशिष्ट किन्तु प्राकृतिक सुगन्ध आती है। चंडीगढ़ तक की पूरी यात्रा में यह सुगन्ध निरन्तर साथ बनी रही। चंडीगढ़ में हमारा अधिकतर समय गुरुजी की चर्चा में व्यतीत हुआ। जब हम चलने को हुए तो हम सब गुरुजी की गुलाब पुष्पों वाली सुगन्ध में डूब गये। गुरुजी स्वयं 250 किलोमीटर दूर दिल्ली में थे!

यद्यपि गुरुजी को समझ पाना संभव नहीं है, उनकी कृपा से ही हम उनके एक अत्यंत ही सरल भाव को समझने का आधाार बना सकते है। गुरुजी ने जो भी मुझे दृष्टिगोचर और अनुभव करवाया है, उससे स्पष्ट है कि यह सुगन्ध उनकी उपस्थिति का प्रतीक है। कभी भी, कहीं भी, जो भी गुरुजी को याद करता है या उनसे सहायता की पुकार लगाता है, वह तुरन्त उसको आश्रय देते है। किन्तु यह आह्वान हृदय से होना चाहिए। संगत के कुछ सदस्यों को उन्होंने स्वप्न में भी दर्शन दिये हैं। उनकी इच्छा के विपरीत आप उन्हें कभी स्वप्न में नहीं देखेंगे। गुरुजी का स्वप्न कभी भी कारणात्मक घटना न होकर उनकी वास्तविक लौकिक उपस्थिति है। अन्यथा कौन कुछ वर्ष पूर्व घटी इस घटना का विश्लेषण कर सकता है?

गुरुजी मेरी आटा मिल का उद्‌घाटन करने नीमराना आये थे। उनके साथ संगत के कुछ सदस्य भी थे। उनमें गुड़गाँव के एक व्यावसायिक, श्री मदन अपने परिवार सहित आये थे। उनकी बेटी स्थान देख कर चिल्ला पड़ी और कहने लगी कि गुरुजी ने यह पूरा संदर्भ उसे कई माह पूर्व स्वप्न में दिखलाया था।

छोटी सी सेवा से रोग मुक्ति

किसी भी भक्त के लिए गुरु की सेवा अत्यंत प्रसन्नता, गौरव और संतोष की घटना होती है। किन्तु गुरुजी के सन्दर्भ में उसका एक और आयाम भी है। एक बार गुरुजी ने मुझे अपने घुटनों से टखनों तक मालिश करने को कहा। उसे करते हुए मैं कितना भावविह्वल और आनंदित हुआ, इसका वर्णन करना असंभव है। आधा घंटा ऐसा करने के पश्चात् मेरे हाथ उनकी सुगन्ध से भर गये थे। वह सुगन्ध हाथों में 24 घंटे से भी अधिक समय तक रही। और कुछ चमत्कारिक भी हुआ... मेरे पैरों के नीचे का भाग अकड़ा रहता था। मेरा पुत्र उन अंगों पर अपने शरीर का भार डालने के लिए खड़ा हुआ करता था और इससे कुछ आराम मिलता था। कुछ दिनों में मुझे आभास हुआ कि गुरुजी ने अपने उन्हीं भागों की मालिश करवा कर मुझे, सात आठ वर्षों से चली आ रही, उस तीव्र वेदना से मुक्त कर दिया था। उसके बाद मुझे वहां कभी दर्द नहीं हुआ है।

गुरुजी जैसे दाता कृपा के अतिरिक्त जब भी सेवा करवाते हैं वह भक्त की भलाई के लिए होती है।

मारुति के चमत्कार

हमारी मारुति 800 कार 12 से 12.5 किलोमीटर प्रति लीटर पेट्रोल का औसत देती थी। हर बार जब मैं ईंधन भरवाता था तो उसकी औसत की गणना करता था। कार की आरंभिक सेवाओं के अवसर पर मैं सेवा केन्द्र के कर्मचारियों को उसकी औसत बढ़ाने की बात करता था तो

उनका उत्तर यही होता था कि नगरों में चलने के कारण उसमें किसी वृद्धि की संभावना नहीं है। जब हमने गुरुजी के पास आना आरम्भ किया तो उसकी औसत 19 किलामीटर प्रति लीटर हो गयी। यह आश्चर्यजनक था और मैंने सोचा कि मुझ से कोई गलती हुई है। अतः यह मैंने किसी को नहीं बताया। अगली बार भी यही गणना आयी। मैं आश्चर्यचकित था और जब मैंने अगली बार टैंक भरवाया तो भी वही परिणाम आया।

अगले दर्शन पर गुरुजी ने इसका रहस्योद्‌घाटन करते हुए कहा कि सिंगला क्या हुआ? 19 की संख्या में घूम गये? अब तुम्हें आभास होगा कि संतों की कृपा मनुष्यों पर ही नहीं, कारों पर भी हो सकती है।

गुरुजी का यह कथन बार बार सिद्ध हुआ है। एक बार कार चलाते हुए मैंने देखा कि ईंधन समाप्त होने वाला है तो मैं एक पेट्रोल पम्प पर मुड़ गया। पंक्ति में खड़े हुए जब मैंने देखा कि उसकी सुई स्वतः ही आधे चिह्न पर पहुँच गयी है तो मैं अत्यंत चकित हुआ। मैं बिना पेट्रोल भरवाये आगे निकल गया। कुछ दिन के पश्चात्, आशानुकूल किलोमीटर चलने पर सुई फिर खाली टैंक दिखा रही थी। पेट्रोल पम्प पर मुड़ने के बाद मैं पुनः अचंभित हुआ जब सुई फिर आधे चिह्न पर पहुँच गयी। कोई दो सप्ताह तक ऐसा प्रतीत होता रहा कि पेट्रोल पम्प देख कर कार में आधी टंकी अपने आप भर जाती है।

एक बार पंजाब जाते हुए यह लगा कि कार में शेष पेट्रोल के साथ हम अपने गंतव्य तक पहुँच जायेंगे। पर इसके विपरीत हम पेट्रोल भरे बिना वापस दिल्ली पहुँच गये।

न केवल ईंधन क्षमता में वृद्धि हुई, गुरुजी की दया से हमारी कार की सामान ले जाने की क्षमता भी बढ़ती रही। प्रारम्भ में हमें गुरुजी ने लंगर बनाने के स्थल से हर संगत के दिन भोजन लाने के लिए कहा। उन्हीं की कृपा से लंगर के सब बर्तन कार में समा जाते थे। किन्तु जैसे जैसे संगत की गिनती बढ़ती गयी उसी प्रकार लंगर के बर्तनों का

आकार भी बढ़ा और फिर भी वह सब कार में समाते रहे। एक दिन गुरुजी का साधारण सा लगने वाला कथन कि क्या लंगर के सब बर्तन उसमें आगये के पश्चात् ऐसा लगने लगा कि कार का सामान रखने वाला स्थान लचीला होकर आवश्यकतानुसार बढ़ जाता है।

एक दिन संगत समाप्त होने के पश्चात् हम लंगर के खाली ड्रम लेकर वापस नोएडा जा रहे थे। उसी समय गुरुजी ने मंदिर के सब परदों को ड्राई क्लीन करवाने को कहा (कुल 35-40 परदे, प्रत्येक 15-20 फुट लम्बे)। क्योंकि उन्हें साफ करने का कार्य नोएडा में ही होना था, हमें कुछ परदे ले जाने को कहा गया। हम चार यात्रियों और लंगर के खाली बर्तन के साथ, अधिक परदे आने की संभावना कम थी। किन्तु सबको अचम्भा हुआ जब इतनी लदी हुई गाड़ी में सब परदे सरलता से आ गये। केवल गुरुजी ही इसके कर्ता रहे होंगे।

मधुमेह रोगी पिता के लिए मीठा प्रसाद

अस्सी के दशक से मेरे पिता मधुमेह रोग से पीड़ित रहे हैं और प्रतिदिन दो इंसुलिन के इंजेक्शन लेते रहे हैं। हम गुरुजी के पास आये और गुरुजी ने उन्हें बर्फी दी। सामान्यतः प्रसाद लेकर भक्त बाहर आते हैं और प्रसाद खाकर वापस अन्दर जाकर अपने स्थान पर पुनः बैठ जाते हैं। मेरे पिता भी बाहर आये और उन्होंने मेरे से पूछा कि इन पाँच छः बर्फियों का वह क्या करें। मैंने उन्हें बताया कि गुरुजी के स्थान में जो भी प्रसाद मिलता है उसको वहीं पर खाने से औषधि जैसा प्रभाव होता है। घर या बाहर ले जाने से उसका प्रभाव मिट जाता है। उन्होंने कहा कि मिठाई तो उसके लिए विष हैं। मैंने उनको समझाया कि यह गुरुजी का प्रसाद है और उसका विपरीत प्रभाव कभी नहीं हो सकता। मेरे हठ करने पर उन्होंने वह खा लीं और अन्दर चले गये। गुरुजी ने उन्हें पुनः बुला कर और बर्फियाँ दीं। अब मेरे पिता को लग रहा था कि निश्चित रूप से उन पर दुष्प्रभाव होगा इसलिए वह उसे नहीं खाना चाह रहे थे। पुनः मेरे कहने पर उन्होंने मेरी बात मान ली और वह प्रसाद खाकर

अन्दर गये। किन्तु गुरुजी ने उनके लिए और प्रसाद रखा हुआ था, एक बार फिर बुला कर उन्हें बर्फियाँ दीं। तीसरी बार बर्फियाँ खाने तक मेरे पिता लगभग आधा किलो बर्फियाँ खा चुके होंगे। उन्हें विश्वास था कि वह गंभीर रूप से बिमार पड़ेंगे और उनके मधु का स्तर पिछले 15 वर्ष के बराबर की मिठाई केवल चार घंटे में खा लेने से निश्चित अति उच्च हो जाएगा।

हम घर गये और उन्होंने मुझे प्रातः 5:30 बजे फोन कर के कहा कि उनके मधु का स्तर जो गत दिन 130 था इतनी बर्फियाँ खाने के पश्चात् 120 था। इससे बोध होता है कि गुरुजी के स्थान पर दी हुई कोई भी वस्तु अपने भौतिक गुण खो कर प्रसाद के गुण अपना लेती है।

शल्य क्रियाओं में गुरुकृपा

मेरे पिता मधुमेह के साथ साथ हृदय रोग से भी पीड़ित थे। एक बार रात को उनके वक्ष स्थल में पीड़ा हुई। उन्होंने उसके बारे में अधिक न सोचते हुए मालिश और गरम जल की बोतलों से दर्द को शांत करने का प्रयत्न किया। किसी प्रकार से उन्होंने रात तो बिता दी किन्तु स्थिति की गंभीरता को देखते हुए उन्होंने प्रातः मुझे फोन किया।

जब मैं उनके पास पहुंचा तो उनकी स्थिति देख कर हम उन्हें यथा शीघ्र अपोलो चिकित्सालय ले गये। प्रारम्भिक परीक्षणों से पता लगा कि रात को उन्हें दिल का दौरा पड़ा था और चिकित्सक उन्हें चिकित्सालय लाने में देरी करने के लिए अचंभित थे। तथापि, पूर्ण परीक्षणों के पश्चात्, चिकित्सकों ने बायपास का परामर्श दिया। पिता के मधुमेह रोगी होने के कारण यह क्रिया जटिल होने की संभावना थी क्योंकि ऐसे रोगी को स्वस्थ होने में सामान्य रोगी से अधिक समय लगता है। कोई अन्य उपाय न होने के कारण चिकित्सकों ने हमारी अनुमति लेकर शल्य क्रिया आरम्भ करी। थोड़ी सी अवधि में शल्य क्रिया के सब प्रबन्ध करना कोई सरल बात नहीं थी।

उसके पश्चात् जिस प्रकार से चिकित्सालय के कर्मचारियों ने

हमारी सहायता करी, उसमें गुरुकृपा स्पष्ट थी। सर्वप्रथम, रक्त कोष में उनके समूह के रक्त की कमी होने के कारण शल्य क्रिया करने वाले एक चिकित्सक ने अपना रक्त देने की स्वीकृति दी। फिर, शल्य क्रिया, हृदय रोग विभाग के अध्यक्ष, जो भारत में केवल 10-12 दिन प्रति माह ही रहते हैं, के निरीक्षण में हुई। सामान्यतः उनके लिए 10-12 दिन पूर्व समय नियुक्ति की आवश्यकता पड़ती है, किन्तु वह बिना हिचक के कुछ समय में आ गये।

मेरे पिता की शल्य क्रिया बिना किसी विघ्न के पूर्ण हो गयी। चेतना लौटने पर उन्होंने शल्य क्रिया से पहले के परिणाम देखने चाहे क्योंकि उन्हें बायपास क्रिया होने का ज्ञान नहीं था। उस दिन जो भी घटनाएँ मेरे पिता के साथ हुईं विस्मित करने वाली थी। आश्चर्यजनक रूप से शल्य क्रिया सरलता से पूर्ण हो गयी। यह सब गुरुजी की दिव्य कृपा के बिना संभव ही नहीं था। उसके उपरान्त मेरे पिता के स्वास्थ्य लाभ की प्रक्रिया साधारण रोगी (जो मधुमेह के रोगी नहीं है) से भी तीव्र गति से हुई - इस तथ्य का आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में कोई उत्तर नहीं है।

चिकित्सा के क्षेत्र में गुरुजी के हस्तक्षेप के और भी अनेक उदाहरण हैं। मेरे चचेरे भाई, अशोक सिंगला एक दशक से हृदय रोग से पीड़ित थे। अपनी तीसरी शल्य क्रिया के लिए वह चंडीगढ़ से दिल्ली एक सप्ताह पूर्व आ गये थे। इस बीच, मेरे अनुरोध पर, उन्होंने तीन चार बार गुरुजी के दर्शन किये। गुरुजी की शरण में बिताये हुए कुछ घंटे, बिना किसी विघ्न की शल्य क्रिया, उनकी रोग निवृत्ति और स्वास्थ्य लाभ के लिए पर्याप्त थे। शल्य क्रिया सरलता से पूर्ण हो गयी और पिछले दो अवसरों के प्रतिकूल वह शीघ्र स्वस्थ भी हो गये।

वर्णन या अनुभव

मैं पुनः कहूँगा कि गुरुजी की प्रतिभाओं का ज्ञान संभव नहीं है। इसी प्रकार अपने अनुभवों को शब्दों में व्यक्त करना भी असम्भव है

क्योंकि उनकी कृपा को पूर्ण रूपेण दर्शाने वाले शब्द उपलब्ध नहीं है। जबसे मुझे गुरुजी ने अपने पास बुलाया है, अपनी अनुभूति को जिस एक वाक्य में व्यक्त करता रहा हूँ, वह इस प्रकार है, ''गुरुजी से मिलने के पश्चात् जो भावना उत्पन्न होती है, उसका वर्णन करना कठिन है, उसका अनुभव करने में ही उसका रस है।''

गुरुजी अपना वास्तविक रूप छिपाने के लिए विभिन्न उपक्रम करते है, हम केवल उनके लौकिक रूप से ही परिचित हैं और इस कारण उनसे वह प्राप्त नहीं कर पाते हैं जो वह देने की क्षमता रखते हैं। गुरुजी सब अपेक्षाएं पूर्ण कर देते हैं। वास्तव में गुरुजी वह प्रदान कर सकते हैं जो ईश्वर भी देने से पहले सोचेंगें। इस जीवन में वही प्राप्त हो सकता है जिसके बीज बोये गये हैं। गुरुजी, जिसके आप अधिकारी है वह तो दे ही सकते है और वह भी जिसकी कामना आपके मन में है। किन्तु यह आकाँक्षा हितकारी होनी चाहिए। यहाँ पर भक्त को इस तर्क से सहमत होना पड़ेगा कि उसकी दृष्टि वर्तमान तक ही सीमित है, गुरुजी तो त्रिकाल द्रष्टा हैं।

गुरुजी के हाथ में अपनी जीवन नैय्या के डोर देकर आप सुरक्षित तट तक पहुँच जायेगे। यहाँ पर यह भी समझना आवश्यक है कि सम्पूर्ण समर्पण से ही सम्पूर्ण समर्थन संभव है।

मनुष्य योनि होने के कारण गुरुजी से आशाओं की पूर्ति की कामना स्वाभाविक है। एक बार गुरुजी की शरण में आने पर उनकी कृपा अवश्य होगी। यदि आप उनसे कुछ मांगेगे तो वह मिलेगा और बस केवल वही मिलेगा। किन्तु यदि कुछ कामना नहीं करेंगे तो वह मिलेगा जिसकी आपने कल्पना भी नहीं की होगी।

हृदय रोग के लिए चना

गुरुजी के निर्देशों के पालन करने में ही सुख है। यह सर्वविदित है कि जब वह कुछ कहते है तो उसके लिए आवश्यक प्रावधान भी कर देते हैं। ऐसा अनेक अवसरों पर देखा गया है। मेरे एक घनिष्ठ मित्र

गोयल को दिल का दौरा पड़ा था और उन्हें चिकित्सालय में प्रविष्ट कराना पड़ा था। जब मैं संगत सामप्त होने पर घर के लिए चल रहा था तो मैंने इसका उल्लेख गुरुजी से किया। उन्होंने तुरन्त एक उपाय बताया जिसके लिए सवा पांच किलो चने की आवश्यकता थी।

जब तक हम बाहर निकल कर घर के लिए चले तो शीत काल की चरम सीमा में रात्रि का एक बज रहा था। क्योंकि वह उपाय तुरन्त करना आवश्यक था, मैं खुली हुई पंसारी की दूकान ढूंढ़ते हुए गाड़ी चला रहा था। दस किलोमीटर जाने के बाद सौभाग्यवश एक खुली हुई दूकान मिली। हमने उससे सवा पाँच किलो चने मांगे तो उसने अपना भण्डार देख कर बताया कि उसके पास केवल साढ़े चार किलो चने हैं। कुछ न होने से कुछ भला सोच कर हमने वही मात्रा ले ली। चलते हुए दूकानदार से जब पूछा कि वह दूकान कब बंद करता है तो उसने उत्तर दिया कि सामान्यतः वह 10:30 बजे बंद कर देता है, किन्तु उस दिन वह तीन चार महीने में एक बार करने वाली क्रिया, स्टॉक की जांच कर रहा था, इसलिए अभी तक दूकान खुली हुई थी। इसे संयोग कह कर टाल भी सकते हैं, किन्तु यदि बार बार आपके हित में संयोग होते रहें तो उनका स्त्रोत समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

हमारे पास चने अभी भी कम थे, अतः हम ढूंढते हुए घर की ओर चले, परन्तु मार्ग में और कोई दूकान खुली हुई नहीं मिली। हम निराश हो चले थे कि घर पर एक डिब्बे में कुछ चने मिल गये। तौलने पर वह पूरे 750 ग्राम निकले और इस प्रकार सवा पांच किलो चने की पूर्ति हुई।

मैंने गुरुजी के निर्देशों का पालन किया। गोयल की स्थिति में तुरन्त सुधार हुआ और अगले 48 घंटों के पश्चात् वह चिकित्सालय से वापस घर भी पहुँच गये।

गुरुजी के साधारण से कहे गये वक्तव्य का भी गूढ़ अर्थ होता है। गुरुजी के मुख से उच्चारित प्रत्येक शब्द भक्त के भविष्य को स्वर्णिम बनाने के लिए है। उनके कृत्य, जो अक्सर दिखायी नहीं देते, हमें यह

पता तक नहीं लगने देते कि नियति में क्या लिखा हुआ था। बहुत कम अवसरों पर गुरुजी पूरे भेद खोलते हैं। मुझे एक बार उनके साथ पंजाब जाने का अवसर प्राप्त हुआ था जहां उन्हें एक चिकित्सालय का उद्घाटन करना था।

उद्घाटन के पश्चात् गुरुजी ने कुछ और दिन वहां रहने का कार्यक्रम बना लिया। एसे अवसरों पर गुरुजी स्वयं अपने भक्तों के सुख पूर्वक रहने का ध्यान रखते हैं अतः मेरे साथ संगत के तीन और भक्तों को चिकित्सालय में ही ठहराया गया और उसके मालिक ने हमारी अत्यंत आवभगत करी। इस अवधि में हमने अत्यंत आनंद उठाया और सबसे उत्तम, गरिष्ट और स्वादिष्ट पंजाबी भोजन का स्वाद लिया। कर्मचारियों की अच्छी देखरेख के कारण वह समय अति स्मरणीय रहेगा। चार दिन वहाँ पर सब सुख साधनों का अनुभव लेने के पश्चात् हम वापस दिल्ली आ गये। गुरुजी ने एक भक्त को बताया कि हम सबको वहां पर रखने का कारण हम चारों के आने वाले बुरे समय, जिसमें हम चारों ही चार माह के लिए चिकित्सालय में रहते, की क्षतिपूर्ति करना था।

गुरुजी अपनी संगत का असीमित घ्यान रखते हैं और जब कभी, जहाँ भी उनकी सहायता की आवश्यकता होगी वह देंगे। गुरुजी के साथ बिताये हुए वर्षों में उन्होंने अपनी सर्वज्ञाता और सर्वशक्तिशाली प्रतिभाओं का परिचय अनेक अवसरों पर दिया है। हम केवल उनका आभार प्रकट कर सकते हैं।

एक बार दिसंबर या जनवरी मास में हम संगत से घर वापस जा रहे थे। मैं गाड़ी चला रहा था और अत्याधिक धुंध के कारण कुछ मीटर से अधिक दिखाई नहीं दे रहा था। धुंध में मोड़ों, अन्य रास्तों और यातायात का भी पता नहीं चल रहा था। 28 केलोमीटर की दूरी में से कुल 7 – 8 किलोमीटर चलकर अत्यंत निराश हो चला था। कार बड़ी कठिनाई से आगे बढ़ रही थी। उस असहाय अवस्था में ही मैंने गुरुजी से विनती करी और उसी समय एक कार तेजी से आगे गयी। यह जाने

बिना कि वह गाड़ी कहाँ जा रही है, तत्परता से मैं उसके पीछे हो लिया। 40–45 मिनट तक उसके पीछे ही चलते रहने के बाद अचानक धुंध कम हुई और पता लगा कि हम नोएडा पहुँच गये हैं। घर से कोई आधा किलोमीटर पहले वह बाएँ मुड़ गयी।

इसी प्रकार से ग्रीष्म ऋतु की एक तपती दोपहर को कार बीच सड़क पर रुक गयी। अत्यंत प्रयत्न करने पर भी जब मुझे उसके दोष का पता नहीं लगा तो मैंने गुरुजी को याद किया। कछ देर में एक स्कूटर सवार आया और समस्या के बारे में प्रश्न किया। संयोग के वह एक मिस्त्री था। थोड़ी देर में समस्या का पता लगने पर उसका समाधान तो कर दिया किन्तु अभी भी उसे चलाने के लिए दो और पुर्जों की आवश्यकता थी। उन्हें लेकर भी वह दस मिनट में वापस आया और उसने कार सही कर दी।

गुरुजी के साथ अनेक अनुभव हुए हैं। प्रतिदिन हमें अनेक छोटी बड़ी परिस्थितियों की अनुभूति होती है जहाँ पर गुरुजी की दया स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। उन कष्टों का क्या कहें जिन्हें गुरुजी समाप्त कर देते हैं और पता भी नहीं लगने देते। अंत में मैं गुरुजी से निवेदन करूँगा कि वह संगत के समस्त सदस्यों को अपनी शरण में रखें और भूलों को अनदेखा कर क्षमा करें।

–राजेन्द्र प्रसाद सिंगला, गुड़गाँव

भक्त की हत्या अभियोग से मुक्ति

राजेन्द्र रंधावा जालंधर के एक होनहार राजनीतिज्ञ थे जब अचानक उनके जीवन में तूफान आ गया। वह जालंधर जनपद युवा कांग्रेस के अध्यक्ष थे। उस समय वह अकाली दल (बादल) से समझौता करने पुलिस थाने जा रहे थे। राज्य सरकार ने उनकी सुरक्षा के लिए एक बंदूकधारी दिया हुआ था।

जैसे ही दोनों दल पुलिस थाने पहुँच रहे थे, रंधावा पर आक्रमण हुआ। उनका बंदूकधारी रक्षक अकाली दल के राजनीतिज्ञ और रंधावा के बीच में आ गया। विरोधी दल के उस राजनीतिज्ञ ने अपनी पिस्तौल निकालने का प्रयत्न किया पर उस हंगामे में बंदूकधारी की गोली चलने के कारण उस राजनीतिज्ञ की मृत्यु हो गयी। रंधावा पर दफा 302 के

माध्यम से अभियोग लगाया गया जिसमें दस वर्ष तक कारावास की संभावना थी।

उनके परिवार वालों ने साधुओं और संतों के चक्कर लगाये पर कोई लाभ नहीं हुआ। फिर रंधावा की पत्नी गुरुजी के द्वार पर आयी। गुरुजी ने उसको कहा कि उनका प्रेम विवाह हुआ है और उसकी प्रेम शक्ति उसके पति को बचा लेगी। उन्होंने भविष्यवाणी करी कि दोनो दलों में समझौता हो जाएगा। फिर गुरुजी दिल्ली चले गये। रंधावा सुनवाई आरम्भ होने की प्रतीक्षा में कारावास में ही रहे। उनके पास गुरुजी का चित्र था जिसे वह अपना जीवनरक्षक समझ कर सदा अपने पास रखते थे।

शीघ्र ही रंधावा को दो सप्ताह की जमानत मिली। निकलते ही वह गुरुजी के पास भागे हुए आये और चरणों में अपने को रोने से नहीं रोक पाये। गुरुजी ने कहा कि वह विधान सभा के सदस्य और मंत्री भी बनेंगे। रंधावा तो उस समय अपने कारावास में रहने के अन्यथा कुछ सोच ही नहीं पा रहे थे। गुरुजी से परामर्श लेने के पश्चात् उन्होंने छः मास की जमानत के लिए आवेदन किया जो उन्हें मिल गयी।

इस अंतराल में ही मृत अकाली नेता के परिवार के साथ समझौता हो गया। रंधावा ने उस घटनाक्रम का वर्णन करते हुए बताया कि क्या हुआ था और कैसे उन जैसे निर्दोष पर अभियोग लग गया था।

जहाँ तक मुकदमें का प्रश्न था, प्रमाण रंधावा के पक्ष में थे किन्तु मुकदमा लम्बा होता जा रहा था और न्यायाधीश तिथि बढ़ाते जा रहे थे। अंतिम सुनवाई से एक दिन पहले गुरुजी जालंधर पहुंचे। रंधावा कहते हैं कि गुरुजी अपने आशीर्वाद देने ही आये होंगे। उनकी पत्नी सतगुरु के पास पहुँची तो उन्होंने कहा कि न्यायाधीश अगले दिन अपना निर्णय सुना देंगे।

सब कुछ गुरुजी के कहे अनुसार ही हुआ। न्यायाधीश ने रंधावा को निर्दोष घोषित कर उन्हें मुक्त किया और पूर्ण निर्णय भी उसी दिन

दे दिया। न्यायालय से मुक्त होने के पश्चात् रंधावा सीधे गुरुजी के कमल चरणों में गये। मुक्त नेता राजनीति छोड़ना चाह रहे थे किन्तु गुरुजी ने उनका कर्त्तव्य बता कर उन्हें राजनीति में बने रहने के लिए कहा। गुरुजी की कृपा से ही रंधावा मुक्त हुए।

पालतू पशु पर दया

गुरुजी दया के स्वरूप हैं। उनके लिए कोई भी उच्च या निम्न नहीं है। शांत प्रकृति की पुकार भी उन तक पहुंच जाती है। आश्चर्य नहीं है कि रंधावा के पालतू पशुओं को भी उनका आश्रय प्राप्त हुआ। रंधावा को कुत्तों से प्रेम था और वह उनके बचपन से उन्हें पालते रहे थे किन्तु कोई भी जीवित नहीं रह पाता था।

ऐसा लग रहा था कि उनके रोत्वीलर का भी पहले पशुओं जैसा अंत हो जाएगा। रंधावा उसको पशु चिकित्सक के पास लेकर गये तो उसके उपचार का अथाह प्रयत्न किया गया किन्तु वह उल्टियाँ किये जा रहा था। रंधावा उस नन्हें पशु को वापस ले आये। फिर अचानक उनके मन में विचार आया और वह उसे गुरुजी के पास ले कर चले। मार्ग में ही उन्हें गुरुजी कुछ भक्तों के साथ मिल गये। दोपहर का समय था और उन्होंने रंधावा से पूछा कि क्या उन्हें पशुओं का भी ध्यान रखना पड़ेगा। रंधावा ने उत्तर दिया कि वह तो संयोग से मिले थे। गुरुजी के आशीष से उसका स्वास्थ्य ठीक हो गया और वह छः - सात वर्ष और जीवित रहा।

–राजेन्द्र पाल सिंह रंधावा, जालंधर

मिर्चीला उपचार

एक मित्र से गुरुजी के बारे में सुन कर हम उनके पास पहुँचे थे। उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया और सप्ताह में दो बार आने के लिये कहा। इस समय मैं बवासीर और मधुमेह से पीड़ित था। संगत में हमें लंगर परोसा गया जिनमें बहुत मिर्ची थी। इतनी मिर्ची देखकर मुझे भय था कि वह मेरे बवासीर रोग को और गंभीर कर देगी। किन्तु गुरुजी का लंगर होने के कारण हम उसे खा गये।

मैं आकर लंगर ग्रहण करता रहा और विस्मय से मेरी अवस्था में सुधार होने लगा। फिर एक दिन वह रोग - जिसका दस वर्षों से कोई उपचार नहीं हो पा रहा था - लोप हो गया। अब मैं घर पर भी अपने भोजन के साथ मिर्चे ले लेता हूँ।

जहां तक मेरे मधुमेह का प्रश्न है उसका भोजन से पहले और बाद का स्तर 125/ 175 था जबकि उसका आदर्श स्तर 100/ 140 होना चाहिए। गुरुजी के यहाँ जब भी मैं जाता था आधा किलो मिठाई का प्रसाद खाता था। सामान्यतः मेरे मधु का स्तर बढ़ाना चाहिए था किन्तु वह घट कर 91/ 141 हो गया।

वास्तव में आजकल मुझे घर पर भी मिठाई खानी पड़ती है जिससे मधु का स्तर अधिक नहीं गिरे। मैंने रात को इस रोग की औषधियाँ लेनी बंद कर दीं हैं और प्रातः कालीन की मात्रा कम हो गयी है। गुरुजी की कृपा ऐसी होती है।

मेरी एक और समस्या थी – मूत्र मार्ग में अवरोध। गुरुजी के पास आने से पूर्व दिल्ली के सर गंगा राम चिकित्सालय में मेरी एक साधारण शल्य क्रिया हुई थी पर उसके दो माह के बाद उसमें फिर अवरोध आ गया था। उसी चिकित्सक ने कहा कि इस उपचार के पश्चात् मूत्र मार्ग सिकुड़ जाता है और फिर से शल्य क्रिया की सलाह दी। दूसरी शल्य क्रिया भी हुई किन्तु चार–पाँच माह के बाद वह फिर से अवरुद्ध हो गया।

मैंने संगत के एक सदस्य को गुरुजी को इससे अवगत करवाने की विनती करी। गुरुजी ने उपाय बताया जिसको करने के उपरान्त मैं स्वस्थ हो गया। यदि अब कभी वह रोग होता है तो मैं औषधि खा कर स्वस्थ हो जाता हूँ।

हम राजौरी गार्डन के मुख्य बाजार में एक किराये के मकान में रहते थे। 1999 में मकान मालिक ने उसे एक भवन निर्माता को बेच दिया जो वहाँ दूकानें बनाना चाहता था। हमें वह मकान खाली करने के लिये कहा गया किन्तु तुरन्त ऐसा करना संभव नहीं था।

एक दिन गुरुजी से उसका उल्लेख किया तो वह मेरी ओर देख कर चुप रहे। मैंने पुनः उनसे विनती करी तो भी चुप रहे। मैंने निश्चय किया कि गुरुजी उत्तर नहीं दे रहें हैं, अतः उनसे प्रार्थना करने में भलाई है।

परन्तु उनके चुप रहने का कारण अगले दिन पता लगा। अगले दिन संगत में आते हुए हम धौला कुआँ पर एक यातायात अवरोध में फंस गये और अचानक कार के ब्रेक ने काम करना बंद कर दिया। एक मिस्त्री ने आकर सहायता करी और वह सही भी हो गये। किन्तु जब

वह हुआ और जहाँ वह हुआ, उसके लिये हम गुरुजी के आभारी हैं, अन्यथा दुर्घटना हो सकती थी। मुझे स्पष्ट हो गया कि पिछले दिन जब मैं गुरुजी से विनती कर रहा था वह इस दुर्घटना से हमारा बचाव कर रहे थे। मैं उनसे एक छोटी सी बात के लिये उनकी कृपा की आशा कर रहा था जब वह हमें सम्भव मृत्यु से बचा रहे थे।

उनकी दया वहीं पर समाप्त नहीं हुई। एक माह में हम एक नया घर खरीद कर उसमें जा सके।

प्रत्येक को आशीर्वाद

गुरुजी के प्रत्येक भक्त को आशीर्वाद मिलता है। उनसे कोई अछूता नहीं रहता है। वह भी, जिनके पास उनका चित्र है या जो उनके बारे में सुनते है और जो उनसे विनती करते हैं – सबको उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है।

नाभा निवासी, मेरी पत्नी के भाई, गुरचरण सिंह मान के साथ ऐसा ही हुआ। हम उन्हें गुरुजी के सत्संग सुनाया करते थे। एक दिन वह दिल्ली आये और गुरुजी ने उन्हें यह कह कर आशीर्वाद दिया कि वह प्रसन्नचित और आंनदित रहें। उनकी पुत्रवधू ने गुरुजी का चित्र मांगा जो उसे दिया गया। कुछ दिन के पश्चात् गुरुजी ने उसे स्वप्न में दर्शन दिये। उस समय वह गर्भवती थी और गुरुकृपा से उसने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया।

गुरुजी के आशीर्वाद से उत्पन्न सब बच्चे अपनी आयु से अधिक कुशाग्र बुद्धि और चंचल होते है। जब सौभाग्यशाली दम्पति ने गुरुजी से उसका नामकरण करने की विनती करी तो गुरुजी ने उसका नाम गुरभजनीत सिंह रखा। जब गुरुजी किसी परिवार को अपने संरक्षण में लेते हैं तो वह सदा सुखी रहता है।

जब गुरुचरण को गुर्दों में अत्यन्त कष्ट हुआ तो उसने गुरुजी से उसकी दया के लिये प्रार्थना करी। वह शीघ्र ही स्वस्थ हो गये। फिर

उसको मूत्रमार्ग में पथरी के अवरोध के कारण बहुत वेदना हुई। दर्दनाशक औषधियाँ लेते हुए भी उसका शूल बना रहा। उन्होंने मुझे गुरुजी से निवेदन करने के लिए कहा। जब मैंने ऐसा किया तो गुरुजी ने केवल अपना सिर हिलाया। शीघ्र ही गुरुचरण की पथरी और वेदना लुप्त हो गये।

गुरचरण के सामने एक और समस्या आयी। वह नाभा में एक निजी विद्यालय चलाते थे। 2005 में पंजाब सरकार ने ऐसे सब विद्यालयों को निषेध कर दिया जिनको मान्यता प्राप्त नहीं थी। उन्होंने मुझे फोन पर गुरुजी से विनती करने के लिए कहा। हमने मंदिर में प्रार्थना करी और उन्हें मान्यता के लिये आवेदन देने का परामर्श देने के साथ गुरुजी के चित्र के सामने प्रार्थना करने को कहा। शीघ्र ही गुरुजी की दया से उनके विद्यालय को सबसे पहले मान्यता प्राप्त हुई और उसमें छात्रों की संख्या में वृद्धि भी हुई।

गुरुजी सबको अपना आशीर्वाद देते है। उसके लिये केवल समर्पण और आस्था आवश्यक है, उनको अपनी समस्याऐं बताने की भी आवश्यकता नहीं है। हमारे लिये जो भी आवश्यक हैं वे देते हैं। साथ ही समस्याओं का निवारण भी करते हैं और अंत में वह जो भी अहितकारी होता है, उसे नष्ट कर देते हैं। इन कारणों से गुरुजी ईश्वर है। हम उनके दर्शन कर उनसे कुछ कह पाने के लिये अत्यंत भाग्यशाली हैं।

–राजेन्द्र सिंह कैंथ, दिल्ली

शांति स्त्रोत का अनुयायी बना

जया से विवाह के उपरान्त मैं गुरुजी के संपर्क में आया। उनके प्रथम दर्शन मुझे 2003 में उनके जन्मदिवस पर हुए। मेरी पत्नी के परिवार के सदस्य उनके प्रति भक्तिभाव रखते थे। मैं उनके साथ गुरुजी का आशीर्वाद लेने गया था। उनको देखकर मेरे मन में ऐसा आकर्षण हुआ कि कुछ समय बाद मै उनके दर्शन के लिये संगत में गया।

संगत शांति का उद्गम स्थल था। गुरुजी के आने से पूर्व भी हृदय में शांति थी। सब उपस्थितगण शांतिपूर्वक बैठे थे, अधिकतर हाथ जोड़कर, कुछ चक्षु बन्द कर और कुछ पार्श्व में बज रहे भजनों में अपने सुर मिलाते हुए। वहाँ पर 100 के आसपास श्रद्धालु थे पर चारों ओर पूर्ण सद्भावना का वातावरण बना हुआ था।

गुरुजी के प्रवेश करते ही हम सब आदरपूर्वक खड़े हो गये और उनके स्थान ग्रहण करने पर खुद भी बैठ गये। हलचल समाप्त होने पर सब कुछ वैसा ही हो गया जैसा उनके आने से पूर्व था। मैं उनको देखना चाह रहा था पर उनसे निकलती ऊर्जा इतनी तीव्र थी कि उन पर दृष्टि

बनाये रखना असंभव था। अपनी हार मानकर मैंने अपनी आँखें मूंद ली। मुझे असीम निश्चिंतता और शांति का अनुभव हो रहा था। कभी-कभी वह संगत से बातें और हास्य विनोद भी कर रहे थे। तब से मैं शांति स्त्रोत का अनुयायी हो गया हूँ।

एक वर्ष बीत गया था और मन में दो चिंताएँ लगातार बनी हुई थीं। अपने लिये एक अच्छा कार्य और अपनी बहन के लिये सुयोग्य वर। उन्हीं दिनों मुझे एक स्वप्न आया जिसमें मैं अपनी ससुराल वालों के साथ एक आश्रम में गुरुजी के निकट बैठा हूँ और उन्होंने मुझे शिवलिंग दिया। जब मैंने यह स्वप्न अपनी पत्नी जया को बताया तो उसने कहा कि गुरुजी ने हमें आशीर्वाद दिया है। गुरुकृपा से कुछ दिनों में मुझे अच्छा काम मिल गया। मैं अपना नियुक्ति पत्र लेकर गुरुजी के पास गया और उनको अपनी बहन के लिये एक अच्छे वर की चिंता के बारे में बताया तो वह बोले, *''मौज कर''*। यह शब्द मुझे सांत्वना देने के लिये पर्याप्त थे कि गुरुजी सब ठीक कर देंगे। इस अवधि में मुझे पुत्र प्राप्ति भी हुई। कुछ समय पश्चात् मेरी बहन के लिये एक अच्छा रिश्ता आया और अब वह सुख पूर्वक अपना दापंत्य जीवन व्यतीत कर रही है।

अब मैं भी अपने परिवार सहित आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। मुझे जर्मनी में कार्य मिल गया है जिसके बारे में गुरुजी ने मेरी पत्नी को दो वर्ष पूर्व स्वप्न में बताया था और उस समय हमने विदेश जाने का कभी सोचा भी नहीं था।

-राजेश कौशिक, म्यूनिख (जर्मनी)

सरकारी अधिकारी को न्याय

जब विपत्तियों का सामना करता हुआ मनुष्य समुद्र में पतवार विहीन नाव भांति घूमने लगता है, गुरुजी की कृपा उसकी रक्षा करती है। यद्यपि मैं गुरुजी को बहुत पहले से जानता था, मैंने 2000 से नियमित रूप से उनके पास जाना आरम्भ किया था। इस अवधि में मुझे उनके अनेक चमत्कारों से परिचय हुआ है, और संगत के सदस्यों से उनके अनुभव सुनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। गुरुजी जी के चमत्कारों का वृत्तांत सुनने के पश्चात् हम सब इसी निर्णय पर पहुंचते हैं कि गुरुजी सर्व विद्यमान, सर्वज्ञाता और सर्वशक्तिशाली है।

गुरुजी दिव्य आश्रय के वह असीम स्त्रोत है जहाँ पर सबका स्वागत है। गुरुजी उस दया के भंडार है जो बिना कहे और बिना बताये आपके पास आती है।

मैंने गुरुजी को बिना किसी के बताये, पहली बार आये नये अनुयायियों को उनके नाम से संबोंधित करते सुना है और आगन्तुक की

आँखें खुली की खुली रह जाती है। यह मेरी पत्नी के साथ हुआ था जब वह पहली बार गुरुजी के पास आयी थी। गुरुजी ने मेरी पत्नी का पंजाबी में *"आवो प्रेमा आंटी आवो"* कह कर स्वागत किया तो मैं विस्मित रह गया था। मेरे एक वरिष्ठ अधिकारी गुरुजी के पास पहली बार आये तो उनकी पत्नी, सुनंदा, को भी गुरुजी ने उसके पहले नाम से संबोधित किया था। जब उन्होंने उसके रोग के बारे में बताया तो वह और चकित हो गयीं। सबसे बड़ा अचम्भा उन्हें तब हुआ जब उनके सम्मुख वही दिव्य पुरुष बैठे थे, जिन्हें उन्होंने पिछली रात स्वप्न में देखा था। एक अन्य अवसर पर मेरे एक घनिष्ठ संबंधी और उनकी पत्नी ने जब गुरुजी के पहले दर्शन किये तो उन्होंने मुस्कुरा कर प्रश्न किया, *"लव मैरिज?"* दम्पति थोड़े शरमा गये थे पर उन्होंने हाँ में उत्तर दिया। गुरुजी को इन सबके बारे में कैसे पता चलता है? अपनी सर्वज्ञाता प्रतिभा से।

गुरुजी की उपचार करने की क्षमता तो सर्वविदित है। उन्होंने कैंसर सोरायसिस आदि अनेक असाध्य रोगों को ठीक किया है। निःसंतान और बाँझ महिलाओं को संतान हुई है। युवकों के अनेक उदाहरण है जहाँ पर उन्होंने किसी परीक्षा में उतीर्ण होने की आशा ही छोड़ दी थी किन्तु गुरुजी की दया से वह अति उत्तम अंकों से सफल हुए हैं। अनेक अनुयायियों को उनके आशीर्वाद से नौकरियाँ मिली है।

एक दिन मेरे एक मित्र, जो न्यूयॉर्क निवासी थे, गुरुजी के दर्शन के लिये आये। मेरा छोटा पुत्र शशि उनके निकट बैठा हुआ था, जब उन्होंने बातों बातों में कहा कि वह भी न्यूयॉर्क जायेगा। उस समय शशि दिल्ली में ही एक जापानी बैंक में कार्यरत था और उसके मन में विदेश जाने का कोई विचार नहीं था। कालांतर में शशि के मन में अमरीका में कुछ समय कार्यरत रहने के बाद एम बी ए करने का विचार उत्पन्न हुआ। वह आवश्यक परीक्षाओं में बैठा और उसने गुरुजी के आशीष के लिये विनती करी। सब परीक्षाओं में उसके अच्छे अंक आये पर न्यूयॉर्क के एम बी ए विद्यालय से समाचार आने शेष थे। अंत में उस सूचना के आने पर गुरुजी का कथन सत्य सिद्ध हुआ। शशि न्यूयॉर्क गया और

उसने अपना पाठ्यक्रम अति उत्तम अंकों से पूर्ण किया और अब वहीं पर जे पी मोरगन चेस बैंक में कार्यरत है।

मेरे संदर्भ में गुरुजी ने मुझे मेरे साथ हुए अन्याय की क्षतिपूर्ति के लिये पुरस्कृत किया। शासकीय अभिलेखों में मेरी जन्म तिथि गलत थी प्रमाण सहित उनको सही करवाने के सब प्रयत्न विफल रहे थे। फलस्वरूप मुझे अपनी सेवा अवधि का लाभ नहीं मिल रहा था और मेरी पदोन्नति भी रुकी हुई थी। गुरुजी की दया से मेरे सेवानिवृत होने से पूर्व मुझे एक राष्ट्रीय आयोग का सदस्य नियुक्त किया गया जहाँ मेरी अवधि पाँच वर्ष की थी। उसे बाद में बढ़ा कर 65 वर्ष की आयु तक कर दिया गया। इस कारण मैं उसका अध्यक्ष भी बन सका। सरकार में मेरे कोई संबंध नहीं थे। यह केवल गुरुकृपा थी।

गुरुजी की सुगन्ध उनका एक अति महत्त्वपूर्ण गुण है। गुलाब के पुष्प के समान वह सुगन्ध गुरुजी की अपनी है। सिर से पाँव तक वह उस सुगन्ध से परिपूर्ण है। उनके शरीर का कोई भी अंग छूने से वह सुगन्ध हाथ में आ जाती है। इसका एक अन्य विशेष लक्षण है कि यह कहीं भी, कभी भी, जहाँ पर चाहें, आपको मिल सकती है। यह उनकी सर्वविद्यमानता का संकेत है। एक बार मुझे अपने घर के उद्यान में यह मिली।

एक बार मेरे एक संबंधी को उनके घर में, एक दीवार पर टंगे हुए, सतगुरु के चित्र से वह सुगन्ध आती हुई प्राप्त हुई। गुरुजी ने अपनी एक जूती देकर हम पर अत्यंत दया करी है। हमने उन्हें आदरपूर्वक घर में बने हुए लकड़ी के मंदिर में रखा हुआ है। हम उनका विशेष ध्यान रखते हैं और प्रतिदिन उसकी पूजा करते हैं। यथार्थ में हम गुरुजी की अनुपस्थिति में उन्हें गुरुजी का ही स्तर प्रदान करते हैं। यह चमत्कार ही है, कि उसे घर में आये चार वर्ष हो गये हैं, किन्तु उसमें गुरुजी की सुगन्ध अभी तक बनी हुई है। यदि आपकी गुरुजी में निष्ठा है तो उनकी वह सुगन्ध कहीं भी आ जायेगी।

एक बार मेरा बड़ा पुत्र संजय एक वर्ष के पाठ्यक्रम के लिये ऑक्सफोर्ड गया था । उसे वहाँ विद्यालय के प्रांगण में एक स्थान पर उनकी यही सुगन्ध मिली। इसकी पुनरावृत्ति मेरे छोटे पुत्र के साथ हुई जब उसे मैन्हेटन में यही सुगन्ध मिली।

गुरुजी की छत्र छाया प्राप्त होने से हमारा परिवार अत्यंत भाग्यशाली है। परिणाम स्वरूप अच्छे फल स्वतः ही मिलते रहते हैं। भले ही हम उसकी आशा न करें। इसके लिये हम गुरुजी के अत्यंत आभारी है।

–राम लखन सुधीर, दिल्ली

आस्था की दृष्टि से

गुरुजी के कमल चरणों में मेरा सदर नमन। अपने जीवन में हूए समस्त चमत्कारों के लिए भरे मन से मैं गुरुजी को सम्मान एवं आभार प्रकट करती हूँ। हम उनके अत्यंत कृतज्ञ हैं क्योंकि उन्होंने हमें अपनी छत्रछाया में स्वीकार किया है। वह ईश्वर के अवतार हैं, शिव के मूर्त स्वरूप और साथ ही अत्यंत मानवीय, मिलनसार, उदार दिव्य ऊर्जा हैं जो हमारा सही मार्गदर्शन कर झूठे रीति-रिवाजों और रूढ़ीवाद से उठने को प्रेरित करते हैं। उन्होंने हमें जीवन, धर्म और आस्था को समझने का एक विभिन्न अर्थ प्रदान किया है। सब कुछ अति सहज हो गया है।

बहुत सौभाग्यशाली है वह दिन जब हम पहली बार गुरुजी की शरण में पहुंचे थे। जब पहली बार मेरे पिता उनके पास गये थे, उन्होंने हमारे बारे में प्रश्न किया था। उन्हें पता था कि मेरे पति कहाँ पर कार्यरत हैं और मेरी बेटी को क्या रोग है - रूबेला के लक्षण (Rubella Syndrome)। यह अप्रैल 1995 की घटना है। मैं प्रसन्न हो गयी।

मेरी गर्भावस्था के पहले तिमाही में मुझे जर्मन खसरा हो गया था। अतः अदिति को जन्म से ही अनेक समस्याएँ थीं जिसके कारण उसमें दृष्टि दोष था – जन्मजात मोतियाबिंद के कारण उसे लघु ओप्थेल्मिया, लघु शुक्ल, निस्तेग्मस और अधिमंथ जैसी जटिल समस्याएँ उत्पन्न हो गयीं थीं। अपने छोटे से जीवन के प्रथम दो वर्षों में उसकी आँखों की पाँच शल्य क्रियाएं हो चुकी थीं – तीन मोतियाबिंद के लिए और शेष दो अधिमंथ के लिए। इतना सब कुछ होने के बाद भी उसकी दृष्टि में कोई विशेष अंतर नहीं आया थी। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के चिकित्सकों को भी कोई विशेष आशा नहीं थी। उनके अनुसार, क्योंकि उसका दृष्टिपटल क्षतिग्रस्त था, वह कभी भी पूरी तरह से स्पष्ट देख पायेगी, इसकी संभावना बहुत कम थी।

इस दृष्टि दोष के अलावा उसके हृदय की एक धमनी, जो जन्म के बाद बंद होनी चाहिए थी, बंद नहीं हुई थी; अतः उसे पी डी ए नामक रोग भी था। यह उसके तीसरे वर्ष में शल्य क्रिया द्वारा ठीक किया गया। इन सब समस्याओं के कारण उसका विकास बहुत धीमी गति से हो रहा था। शारीरिक व्यायाम प्रक्रियाओं की सहायता से उसने तीन वर्ष की आयु में चलना प्रारम्भ किया तो हमने उसे स्कूल भेजना आरम्भ कर दिया। मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से पता लगा कि उसका बौद्धिक स्तर केवल 70 से 79 की श्रेणी में है। मनोवैज्ञानिक ने उसे मंदबुद्धि छात्रों को पढ़ाने वाले विशेष अध्यापकों की देख रेख में रखने का प्रस्ताव दिया।

गुरुजी के पास आने के पश्चात् यह सब नाटकीय ढंग से परिवर्तित हो गया। उस समय अदिति बारह वर्ष की थी और साधू वासवानी स्कूल के विशेष विभाग में पढ़ती थी। अपने पिता के माध्यम से गुरुजी का आदेश प्राप्त करने के उपरान्त हम ग्रेटर कैलाश में गुरुजी के मंदिर पहुंचे। यह एक अनोखा अनुभव था। हमने कभी ऐसे मनमोहक और स्वयं की ओर आकर्षित करने वाले गुरु नहीं देखे थे। गुरुजी हमें कुछ विशेष दिनों को ही आने को कहते रहे। उनके पांचवें

दर्शन के अवसर पर उन्होंने अदिति को प्रतिदिन प्रातः सूर्य नमस्कार करने और दूध में मूंगफली और उनके द्वारा अभिमंत्रित मिश्री डाल कर पीने को कहा। यह 51 दिन तक करना था। इक्कीसवें दिन उसने कहा कि उसकी दृष्टि में सुधार है। हम अति आनंदित थे। शीघ्र ही गुरुजी चंडीगढ़ चले गये जहाँ वह तीन वर्ष रहे। हमने दो बार उनके पास जाकर अदिति के लिए कुछ करने का निवेदन किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि वह दिल्ली वापस आकर उसे स्वस्थ करेंगे।

1998 को बैसाखी के दिन, जब गुरुजी का फोन आया और उन्होंने उस दिन शाम को सुल्तानपुर में स्थित एम्पाएर एस्टेट में आने के लिए कहा, तो मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। उसके बाद मैं बार बार उनसे अदिति का उपचार करने का आग्रह करती रही।

उन्होंने किया – पर अपने ढंग से। जून 1998 में एक दिन वह हमारे घर आये। अगले दिन ही हम पुनः आनंदित हुए जब अदिति समाचार पत्र और अपनी दसवीं कक्षा की पुस्तक के छोटे अक्षर भी पढ़ पायी, जो पहले नहीं कर पाती थी। यह दिव्य हस्तक्षेप नहीं तो और क्या है? ऐसा चमत्कार तो केवल ईश्वर से ही संभव है। उसके बाद अदिति के सब भौतिक परिमाणों में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई। उसने दसवीं, बारहवीं और स्नातक के प्रथम वर्ष की परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करी हैं और अब वह समाज विज्ञान में स्नातक कर रही है। जीवन के वह काले बादल अब छंट गए हैं।

तेरह वर्ष पूर्व हमें विश्वास नहीं था कि वह यह सब करने में सक्षम हो पायेगी। गुरुजी के आशीर्वाद से अदिति में अत्याधिक सुधार हुआ है। न केवल उसकी दृष्टि, दोनों दूर और निकट की, बहुत अच्छी हो गयी हैं, उसकी स्मरण शक्ति भी बहुत उन्नत हुई है। पिछले वर्ष (2007) जब उसका दृष्टि परीक्षण हुआ तो वह एक और पंक्ति पढ़ पायी थी।

अदिति अब एक आत्मविश्वासी किशोरी है। मेरे लिए इसका क्या

अर्थ है? उसके भविष्य की चिंता छोड़ कर मुझे विश्वास हो गया है कि गुरुजी उसका ध्यान रखेंगे। मुझे अब शांति प्राप्त हो गयी है और मैंने संसार से प्रश्न करना छोड़ दिया है, "मैं क्यों? मेरी प्रथम संतान के साथ ही ऐसा क्यों हुआ?" गुरुजी ने न केवल हमारे जीवन परिवर्तित कर दिये हैं उन्होंने हमें साहस और शक्ति से जीवन की समस्याओं का सामना करना सिखाया है। उनमें आस्था होने के कारण हमें विश्वास है कि उनकी छत्रछाया हमारे ऊपर बनी हुई है और कुछ प्रतिकूल नहीं हो सकता है।

मृत्यु को धोखा - तीन बार

गुरुजी की कृपा के पात्र मेरे परिवार के अन्य सदस्य भी रहे हैं। उन्होंने मेरे पति को तीन बार मृत्यु का ग्रास बनने से रोका है। पहली बार वह जिस टैक्सी में यात्रा कर रहे थे वह सीधे जाकर एक अशोक लेलेंड ट्रक से टकरा गयी। उसकी अवस्था इतनी विकृत हो गयी थी कि देखने वालों ने सोचा कि कोई भी यात्री जीवित नहीं बचा होगा। दुर्घटना से कुछ ही पल पूर्व उन्हें झपकी आ गयी थी; फिर भी उनको केवल भौंह, ठोड़ी और एक दांत पर थोड़ी सी चोटें आयीं और वह बच गये। उनकी भौंह और ठोड़ी पर कुछ टाँके अवश्य लगे। आश्चर्यजनक रूप से उन्होंने वारंगल से अपनी यात्रा आरम्भ करने से पूर्व शिव मंदिर में जल अर्पित किया था और विशेष पूजा करी थी, जो साधारणतः वह ऐसे अवसरों पर नहीं करते। फिर क्या हम कहते नहीं हैं कि गुरुजी ही शिव हैं?

13 दिसंबर 2001 को जब आतंकवादियों ने संसद भवन पर आक्रमण किया था, तो मेरे पति उससे कुछ क्षण पूर्व प्रवेश करने वाले अंतिम व्यक्ति थे। उनके घुसने के तुरन्त बाद गोलियों की ध्वनि से वातावरण गूँज उठा और जिस सुरक्षा कर्मचारी ने उनको प्रवेश करवाया था उसकी भी मृत्यु हो गयी। निश्चित रूप से गुरुजी मेरे पति की रक्षा कर रहे थे।

तीसरा अवसर श्रीनगर के गोल्फ मैदान में आया। अँधेरा होने के बाद मेरे पति के मन में वहाँ टहलने का मूर्खतापूर्ण विचार आया और वह घूमने निकल पड़े। एक मोड़ पर उन्हें लगा कि उन्होंने एक कुत्ते को थोड़ी दूरी पर देखा है। वह आश्चर्यचकित थे कि इतनी सुरक्षा होते हुए कोई आवारा कुत्ता कैसे प्रवेश कर सकता है कि उसी समय उस प्राणी ने उनमें रुचि दिखाकर उनकी ओर बढ़ना शुरु कर दिया। तब उन्हें आभास हुआ कि पूँछ हिलाता हुआ वह प्राणी पूर्ण विकसित तेंदुआ है। वह अपने स्थान पर जड़ हो गये। उन्होंने उसे जाने का संकेत दिया और अविश्वसनीय रूप से उस तेंदुए ने उनकी आज्ञा का पालन किया! जब वह वहां से चले तो उसे तेंदुए ने मेरे पति का पीछा भी नहीं किया। गुरुजी द्वारा रक्षा का एक और स्पष्ट प्रमाण।

गुरुजी ने न केवल मेरे पति की जीवन रक्षा करी है, उनकी वृत्ति पर भी दया करी है। उन्हीं के आशीर्वाद से मेरे पति को पदोन्नति और स्थानान्तरण मिले। त्रुटिहीन रिपोर्ट होते हुए भी मेरे पति की उन्नति में बाधाएँ थीं। केवल गुरुजी के आशीर्वाद से उनको सचिव श्रेणी में स्थान मिला और दिल्ली आने से पूर्व वह श्रीनगर जैसे प्रमुख स्थान में रहे।

1997 में मेरा पुत्र एक मोटर साईकल के पीछे बिना हेलमेट के यात्रा कर रहा था कि एक तेजी से जाती हुई कार से दुर्घटना हो गयी। उस समय कुछ भी हो सकता था, जैसे गंभीर चोटों के कारण गर्दन की मोच या पक्षाघात। चमत्कार से वह थोड़ी सी चोटों के साथ बच गया। जब स्वस्थ हो कर मेरा बेटा गुरुजी के पास गया तो उन्होंने उसे बताया कि उन्होंने उसकी जीवन रक्षा करी थी।

पान के पत्तों से श्वसनी ऐंठन का उपचार

मुझे भी गुरुजी ने अपने स्नेह से वंचित नहीं रखा है। बीस वर्ष से मुझे अस्थमा के दौरे पड़ते रहे थे और मैं अक्सर स्टिरोइड की गोलियाँ खाती थी। मैंने सदा गुरुजी से अपने बच्चों के लिए आशीष माँगा था पर अपनी समस्या उनके सम्मुख कभी प्रकट नहीं करी थी। तीन वर्ष पूर्व

मुझे अचानक आभास हुआ कि मेरा श्वास रोग समाप्त हो गया है। गुरुजी ने बताया कि उन्होंने मुझे स्टिरोइड से मुक्त कर दिया है, जो सत्य है क्योंकि उसके बाद मुझे कभी उनकी आवश्यकता ही नहीं पड़ी है।

तीन ग्रीष्म ऋतुओं से मुझे हल्का ज्वर रहने लगा था जो छः मास तक रहता था और मुझे शक्तिहीन कर देता था। रक्त परीक्षण केंसर या तपेदिक की ओर संकेत दे रहे थे। चिकित्सकों ने अन्य अनेक परीक्षण करवाने को कहा था। मेरे पति ने मेरी समस्या का उल्लेख गुरुजी से किया तो उन्होंने प्रतिदिन अभिमंत्रित पान के पत्ते सिर के नीचे रख कर सोने को कहा। कुछ ही दिन में मेरा ज्वर कभी वापस नहीं आने के लिए विलीन हो गया।

स्वप्न दर्शन

अपने परिवार पर गुरुजी की दयावृष्टि का मैं लगातार वर्णन कर सकती हूँ। उन्होंने मेरे माता और पिता को केंसर से मुक्त किया है। मेरे पिता उनके पास 1995 में अपनी केंसर की शल्यक्रिया के पश्चात् गये थे। उसके बाद उन्हें कभी यह रोग नहीं हुआ, यद्यपि परिवार में उसकी अनेक दुखद घटनाएं हुई हैं। मेरी माँ को उनकी शल्यक्रिया के पश्चात् कभी कीमोथेरेपी की आवश्यकता नहीं पड़ी। शल्यक्रिया की पूरी अवधि में उन्हें लगा कि गुरुजी ने उनका हाथ पकड़ा हुआ है। गुरुजी के दर्शन के समय उन्होंने उन्हें एक गुलाबी और स्वर्ण रंग की साड़ी भी दी।

गुरुजी ने अक्सर हमें स्वप्न में दर्शन दिये हैं। एक बार मेरे पुत्र आशुतोष को स्वप्न आया कि गुरुजी के दर्शन करते हुए उन्होंने अपने साथ बड़े मंदिर में चलने के लिए कहा। जब किसी कारणवश गुरुजी वहां नहीं गये तो हम वापस घर आ गये। गुरुजी ने आशुतोष से उसके फोन पर बात कर के प्रश्न किया कि हम बड़े मंदिर क्यों नहीं गये। फिर उन्होंने कहा कि वह उसे कुछ दिखायेंगे। उसके बाद जो हुआ वह

दिव्य दर्शन हैं। उसने हमारे प्रांगण में अपने से दूर जाती एक भव्य आकृति देखी। जानने को उत्सुक कि वह कौन है उसे शिव की जटाएँ और त्रिशूल दिखायी दिये। फिर वह आकृति उसकी ओर मुड़ी। फिर शिवजी ने पहले हनुमान और उसके बाद गणेश के रूप धारण कर लिए। हमारे पुत्र को वास्तव में आशीष प्राप्त हुआ है।

गुरुजी ने जो कुछ भी हमारे लिए किया है उसके लिए मैं उनका आभार और कृतज्ञता प्रकट करने में असमर्थ हूँ। जब उन्होंने हमें संरक्षण दिया तब चिकित्सकों ने अदिति को पूर्ण स्वस्थ करने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी थी। उसका रोग निवारण उनकी दिव्य शक्तियों का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

शब्द गुरुजी की महानता व्यक्त नहीं कर सकते। उन्होंने हमारा जीवन परिवर्तित कर दिया है – आस्था से ऊर्जा और स्फूर्ति प्रदान करी है; हमें वातावरण के प्रति अधिक सहनशील बनाया है; स्थितियों को स्वीकार करना सिखाया है और हममें साहस और शक्ति का समावेश किया है। वह छप्पर फाड़ कर देते हैं और बदले में मात्र पूर्ण, निर्विवाद आस्था की आशा करते हैं। हमें अपने जीवन का नवीन अर्थ मिला है। उन्होंने हमें प्रचुर मात्रा में आगे बढ़ने की आशा, दृढ़ता और सामर्थ्य भी दिया है। उन्होंने हमें सुयोग्य मानव बना दिया है।

मेरा विश्वास है कि वह परमात्मा के अवतर हैं – उन्हें चाहे किसी भी नाम, जैसे शिव, कृष्ण या गुरु नानक से पुकार लें – वह तो एक रूप में ही सब हैं। हमारे जीवन के सब चमत्कार दिव्य शक्ति से ही संभव थे। मैं सदा उनकी शरण में रहने की विनती करती हूँ। वह अनुयायी धन्य हैं जो बिना किसी इच्छा से उनकी सेवा करते हैं। उनके परिवार में, उनकी छत्रछाया में सब एक समान हैं। वह सबको अनुभव, सुख और दु:ख बंटवा कर, जैसा एक परिवार में सदा होता रहा है, सच्ची नम्रता और दीनता का पाठ देते हैं – वास्तव में हम उन्हें इस विशाल ब्रह्माण्ड में मानव ब्रह्म के रूप में देखते हैं।

गुरुजी के बारे में इतना कुछ कहना अभी भी शेष है – मुझे अपना यथास्थान दिखाने की उनकी अनोखी शैली, *''मंगा न कर''* या *''यूँही तुरदी फिरदी है पंडिता दे कोल''* से लेकर उनकी रहस्यमय, मधुर दिव्य मुस्कान या फिर घर में अचानक वह सुगन्ध जो उनकी प्रत्यक्ष उपस्थिति की ओर संकेत देती है। फिर वह ॐ जो अचानक ही पहले घर में उनके सब कैलेंडरों पर प्रकट हुए और उसके पश्चात् घर के पूरे फर्श पर सैंकड़ों की संख्या में छपे हुए दिखायी दिये कि समझ नहीं आ रहा था कि चलते हुए कहाँ पर पाँव रखें। जब मैंने उनसे इसका उल्लेख किया तो वह बोले, *''देखदी चल''*। फिर एक बार उनके द्वारा अभिमंत्रित ताम्र लोटे के जल का स्वाद उसी अमृत सा हो गया था, जो उन्होंने उससे पूर्व चखाया था।

गुरुजी की सबसे प्रमुख बात है कि उनसे सहजता से, बिना झिझक बात करी जा सकती है। ऐसी चिंता कभी नही हुई या ऐसा प्रतीत हुआ हो कि उन्होंने हमारी बात नहीं सुनी और हमारी किसी समस्या का समाधान नहीं किया हो। विश्वासपूर्वक मैं यह निष्कर्ष निकाल सकती हूँ कि किसी को अपने कष्ट बताने की भी आवश्यकता नहीं है। विनती है कि वह हमें सदा अपने संरक्षण में बनाये रखें।

– श्रीमती ललित माथुर, दिल्ली

नानक चिंता मत कर ...

मैं गुड़गाँव के सेक्टर 56, में 2003 में रहने के लिए आया। मुझे पता लगा कि यहां पर कोई भी मंदिर नहीं है। प्रभु कृपा से मेरी पहल पर, मंदिर निर्माण के लिए, स्थानीय नागरिकों का एक संगठन बनाया गया। थोड़े समय पश्चात्, फरवरी 2004 में, हरियाणा नगर विकास निगम ने धार्मिक स्थान बनाने के लिए 1000 वर्ग गज भूमि खंड देने का निर्णय लिया। हमारे संगठन ने सेक्टर 56 में ऐसे एक भूमिखंड के लिए आवेदन दिया।

हमारे क्षेत्र में हो रहे योग और प्राणायाम सत्रों के माध्यम से मैं कमांडर शर्मा के संपर्क में आया। उन्होंने मुझे गुरुजी महाराज के बारे में बताया और कैसे उनके परिवार को उनका आशीर्वाद मिला था। कमांडर ने यह सुझाव भी दिया कि यदि संगठन के सदस्य गुरुजी के पास जाकर उनसे अनुग्रह करें तो मंदिर निश्चित बन जाएगा।

उसके पश्चात्, 25 जुलाई 2004 को, कमांडर शर्मा के साथ, मैं पहली बार बड़े मंदिर गया। उसी दिन शाम को मैं, अपनी पत्नी प्रीति के साथ, गुड़गाँव में, श्री मदन के घर पर आयोजित एक सत्संग में गया।

वहां पर कई अनुयायियों ने गुरुजी से सम्बंधित अपने संस्मरण सुनाये। संगत के सदस्य गुरुजी के चित्र के समक्ष अत्यंत प्रेम और श्रद्धा से नतमस्तक हो रहे थे। मुझे लग रहा था कि क्या यह गुरुजी का प्रचार करने का अपना ढंग है? परन्तु मैंने अपने विचार अपने तक ही सीमित रखे।

चार दिन पश्चात् संगठन के प्रमुख कार्यकर्ता, कमांडर शर्मा के साथ, गुरुजी के दर्शन हेतु एम्पाएर एस्टेट गये। मुझे वहाँ का वातावरण अत्यंत सौम्य लगा। लंगर करने के पश्चात्, चलने से पूर्व, हमने गुरुजी को अपना उद्देश्य बताया तो उन्होंने अपना आशीर्वाद दिया और कहा कि मंदिर बन जाएगा। कमांडर शर्मा अति प्रसन्न हुए। उन्हें पता था कि गुरुजी के आशीर्वाद के पश्चात् हरियाणा नगर विकास निगम से भूमि मिल जायेगी और मंदिर का निर्माण भी पूरा हो जाएगा।

भूमि आबंटन में अत्याधिक प्रतिस्पर्धा थी किन्तु गुरुकृपा से हमारे संगठन – सनातन धर्म और समाज कल्याण संगठन – को दिसंबर 2004 में भूमि मिली। फलस्वरूप संगठन में 60 आजीवन सदस्य सम्मिलित हो गये। 14 फरवरी 2006 को गुरुजी की कृपा और सेक्टर 56 के निवासियों के सहयोग से मंदिर का निर्माण पूर्ण हुआ।

चूँकि मुझे गुरुजी के यहाँ अच्छा लगा था, मैंने प्रीति से पूछा कि वह वहाँ पर चलना चाहेगी तो उसने मान लिया। हम एम्पाएर एस्टेट, रविवार, 01 अगस्त 2004 को गये। वहाँ से लौटते हुए एक भक्त ने गुरुजी का एक चित्र दिया।

मेरी पत्नी की शल्य क्रिया टली

दर्शन के पश्चात् प्रीति अति प्रसन्न थी और उसने कहा कि वह बहुत समय से गुरुजी जैसे स्थान, जहाँ शांति प्राप्त हो, की कल्पना करती रही थी। 1998 से प्रीति को अनेक स्वास्थ्य समस्याएँ थीं। उसे गर्भकला अस्थानता थी, अंडाशय के पुटक और गर्भाशय के गुलमा थे। हम होम्योपैथी, आयुर्वेद और एलोपैथी के चिकित्सकों के चक्कर काटते

रहे थे किन्तु उपचार नहीं हो सका था। अगस्त 2003 में हुई उसकी शल्य क्रिया में उसके अंडाशय और गर्भाशय निकाल दिये गये थे। यद्यपि उसे दो माह कोई समस्या नहीं हुई थी लेकिन उसके बाद उसकी वेदना फिर आरम्भ हो गयी थी। चिकित्सक उसका निदान नहीं कर पा रहे थे। कुछ ने कहा कि उसे स्नायु शूल था, अन्य कह रहे थे कि उसके गुर्दे में पथरी या उदर शूल था। सारांश में चिकित्सक अपने निर्णय में एकमत नहीं थे।

गुरुजी के दर्शनों के तीन दिन बाद, 4 अगस्त 2005, को रात्रि में प्रीति को गुर्दे के क्षेत्र में अत्याधिक पीड़ा हुई। दर्द निवारक औषधियों से लाभ नहीं हुआ। प्रातः उसकी पीड़ा कम थी पर रात को फिर वही स्थिति हो गयी। प्रीति ने प्रश्न किया कि गुरुजी का चित्र घर में होने के बाद भी उसकी स्थिति में सुधार क्यों नहीं हुआ। 6 अगस्त को हम अपने चिकित्सक के पास गये। उन्होंने दस परीक्षण करवाने के लिए कहा। उसी दिन संध्या को उसने बताया कि पहले हुई शल्य क्रिया में केवल एक अंडाशय निकाला गया था, दूसरा अभी भी अन्दर ही था और गर्भकला अस्थानता के कारण उस अंडाशय पर एक विशाल पुटक बन गया था। यह पुटक गुर्दे पर दबाव डालता रहा था। जिससे वह अपने सामान्य आकार से दुगना हो गया था। इस प्रकार, गुरुजी महाराज के प्रथम दर्शन के पाँच दिन बाद ही, प्रीति की स्वास्थ्य समस्या का निदान हो गया था। चिकित्सकों ने तुरन्त शल्य क्रिया का परामर्श दिया।

अगले दिन रात्रि को 11:30 बजे हम प्रीति को गंभीर अवस्था में चिकित्सालय ले जा रहे थे। हम मार्ग में थोड़ी देर के लिए एम्पाएर एस्टेट में गुरुजी का आशीर्वाद लेने के लिए रुके। गुरुजी ने प्रीति को आशीष देकर आश्वस्त किया कि सब ठीक हो जाएगा। हम चिकित्सालय पहुँचे। मैंने अपनी जेब में गुरुजी का चित्र रख लिया थ। 7 अगस्त को प्रीति के अनेक परीक्षण हुए और औषधियाँ दी गयीं। तीन दिन के उपरान्त उसे वहाँ से निवृत करते हुए अपोलो चिकित्सालय में एक महत्त्वपूर्ण शल्य क्रिया करवाने के लिए कहा गया।

12 अगस्त को वृहस्पतिवार था और उस दिन गुरुजी के पास जा सकते थे। जब मैंने प्रीति से पूछा कि वह चल पायेगी तो उसने हाँ कहा और हम गुरुजी के पास गये। वहां से निकलने पर प्रीति ने मुझे बताया कि उसने मन ही मन गुरुजी से इस प्रकार प्रार्थना करी थी, "पिछले वर्ष मेरी शल्य क्रिया हो चुकी है और वह अत्यंत पीड़ादायक होती है। अगले सप्ताह मुझे फिर ऐसी ही बड़ी शल्य क्रिया करवानी है। मैं विनती करती हूँ कि शल्य क्रिया से बचा कर मुझे औषधियों से स्वस्थ कर दें।" मैंने भी गुरुजी से निवेदन किया था किन्तु माध्यम उन पर छोड़ दिये थे।

अगले दिन हम अपोलो चिकित्सालय गये। हमारे चिकित्सक ने कहा कि शल्य क्रिया अति आवश्यक है और उससे सम्बंधित तैयारियां आरम्भ कर दीं। प्रीति व्यथित थी। वह बोली कि उसने गुरुजी से प्रार्थना करी थी पर उसके भाग्य में यह नहीं था कि वह उसकी सहायता करें।

15 अगस्त को गुरुजी के सत्संग का आयोजन श्री भाटिया के घर में था। जब मैंने प्रीति से पूछा कि क्या वह चलेगी तो उसने मना कर दिया। उसने कहा कि उसे गुरुजी में विश्वास था परन्तु उसका भाग्य इतना अच्छा नहीं था। उसने कहा कि वहाँ पर भक्त जब गुरुजी की कृपा प्राप्त करने की बात करेंगे तो उसे बुरा लगेगा। अतः मैं अकेला गया। पहले सत्संग का वर्णन प्रीति के रोग के समान था। अंडाशय के पुटकों से पीड़ित एक महिला जिसकी शल्य क्रिया होनी थी, गुरुकृपा से उन कष्टों से बच गयी थी। मुझे विश्वास हो गया कि गुरुजी मुझे भविष्य का पूर्वाभास करा रहे थे।

उसके बाद क्रम से चमत्कार होने लगे। चिकित्सक, जो प्रीति की शल्यक्रिया करने को तत्पर थे, प्रीति का सुधार देख कर दंग थे। कुछ ही दिनों में चिकित्सकों ने कहा कि उसके पुटक का आकार घट कर 30 प्रतिशत शेष रह गया था, जिसका उपचार औषधियों से संभव था। तबसे प्रीति के स्वास्थ्य में लगातार प्रगति होती रही है; वह कम से कम औषधियाँ ले रही है और उसे शल्यक्रिया की आवश्यकता ही नहीं

पड़ी। प्रीति को वही मिला जिसके लिए उसने विनती करी थी – शल्य क्रिया करवाये बिना औषधियों से उपचार – गुरुकृपा के लिए हम उनके अत्यंत आभारी हैं।

गुरुजी के पास जाकर उनको कुछ कहना नहीं पड़ता है। उनके चरणों में जो भी आता है वह उसका ध्यान रखते हैं।

आर्थिक विपदा से मुक्ति

गुरुजी महाराज के पास आने के पश्चात् हमारे जीवन में नाटकीय परिवर्तन आया है। पहले मुझे जीवन के सब पहलुओं की चिंता लगी रहती थी। यह प्रवृत्ति अब समाप्त हो चकी है। अब मुझे ज्ञात है कि गुरुजी हर समस्या का ध्यान रखते हैं। कोई भी स्थिति गुरुजी द्वारा रचित है। गुरुजी अपने भक्तों से बहुत कम बात करते हैं किन्तु ध्यान सबका करते हैं। उन्होंने 8 अक्टूबर को मुझे कहा, *''जा, तेरा कल्याण कर दित्ता''*।

उस दिन से मेरे जीवन में परिवर्तन आने लगा। मेरा व्यवसायिक जीवन बदल गया। मैं एक व्यवसाय कर रहा था किन्तु उसमें मुझे संतोष नहीं था और उसे बदलना चाह रहा था; किन्तु जीवन के पाँचवे दशक के मध्य में ऐसा सरल नहीं होता और मेरे में ऐसा करने का साहस नहीं था। लेकिन गुरुजी मुझे अनेक नाजुक परिस्थितियों से बाहर निकाल कर लाये – ''बाहँ पकड़ गुरु काड्या, सो ही उतरैया पार''।

मैंने अपना पिछला व्यवसाय 16 अगस्त 2005 को बंद कर दिया। गुरुकृपा से अब मुझे अपने नए व्यवसाय में अधिक पारितोषिक मिलता है। अब मैं एक राष्ट्रीय उपक्रम की योजनाएं बना रहा हूँ जिससे मुझे व्यवसायिक संतोष भी मिलता है। इस परिवर्तन की अवधि में गुरुजी की दया से मैं संभला रहा। एक शबद के शब्द हैं:

'नानक चिंता मत कर; चिंता तिसकी है
जल में जनत उपाय, तिन वी रोज़ी दे।'

इस समय मेरा मकान भी बन रहा था। जब भी किश्त देने का समय आता तो मेरे सामने आर्थिक कठिनाईयाँ आती थीं। मैंने गुरुजी को कुछ नहीं बताया लेकिन उनको पता था। अब जब भी धन की आवश्यकता होती थी, वह आ जाता था। जिन्होंने मेरी सहायता करी उन्होंने उसकी वापसी के लिए कभी शीघ्रता नहीं करी।

एक वर्ष के उपरान्त, 16 मई 2006 को मुझे अपने घर की चाबियां मिल गयीं और 19 मई को मैंने उन्हें गुरुजी के कमल चरणों में रख दिया। आर्थिक संकट की अवधि में उन्होंने ही मेरी सहायता करी थी।

मेरे लिए गुरुजी ईश्वर हैं। प्रतिदिन मैं एक मंदिर में जाया करता था। मैं अनेक देवी देवताओं की पूजा करता था। अब मुझे गुरुजी में प्रत्येक देवी देवता दिख जाते हैं – ''एको नाम धिये मन मेरे''। मुझे अब मात्र एक मन्त्र पता है: ॐ नमः शिवाय, गुरुजी सदा सहाय। मैंने अपने सम्मुख ईश्वर को देखा है। मुझे अब कहीं अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है। मेरी खोज गुरुजी के कमल चरणों में आकर समाप्त है।

सुरक्षा कर्मी को जीवन दान

फरवरी 2005 में एक दिन मैं अपने कार्यालय जा रहा था कि मैंने एक 20 वर्षीय सुरक्षा कर्मी को सड़क पर पड़े हुए देखा। कुछ लोग उसे घेर कर खड़े हुए देख रहे थे। मैंने उसका मुँह खोला तो वह सांस ले रहा था किन्तु उसके साथ उसके मुख से रक्त और झाग निकल रहे थे। उसकी यह अवस्था देख कर स्पष्ट था कि उसके जीवन का कुछ ही समय शेष है। मैंने अपनी आँखें बंद कर गुरुजी से उसे बचाने के लिए प्रार्थना करी। आँखें खोलने पर मैं चकित रह गया। आधे मिनट में वह उठ कर खड़ा हो गया था। मैंने गुरुजी को धन्यवाद दिया और उससे उसका नाम और पता पूछा। उसके सही उत्तर से प्रतीत हुआ कि वह ठीक था। मैं अपने कार्यालय आ गया। मुझे आभास हो गया था कि

गुरुजी सदा हमारे साथ हैं; जब भी उनको याद करते हैं, वह उत्तर देते हैं।

जब मुझे गुरुजी के मंदिर में आते रहने से पूर्ण शांति मिल गयी थी मैंने सतगुरु को अपने परिवार के सब सदस्यों को अपने कमल चरणों में स्थान देने का अनुरोध किया। गुरुकृपा से मेरे माता पिता, मेरे दोनों भाई और उनके परिवार, मेरी सास, मेरी पत्नी के भाई और उनका परिवार, सबको उनकी शरण मिली है और उनको भी अनेक अनुभव हुए हैं। गुरुजी ने हरेक को शांति, स्वास्थ्य और समृद्धि प्रदान किये हैं। सबकी प्रवृत्ति में परिवर्तन हुआ है। अब परिवार में अत्यंत प्रेम और सुख शांति है।

शिव नृत्य

मेरा छोटा भाई रमेश अपने परिवार के साथ मई 2005 में गुरुजी के दर्शन के लिए आया। लुधियाना लौटने के पश्चात् उसकी पत्नी सोनल गंभीर रूप से बीमार हो गयी। चार पाँच दिन से उसका तापमान 104° रहा था और उसे मियादी ज्वर हो गया था। पाँचवें दिन स्वप्न में गुरुजी उसके स्वप्न में आये और विशु (उसके पुत्र) के बारे में प्रश्न करके बोले कि वह उसे आशीर्वाद देने आये हैं। सोनल ने उत्तर दिया कि वह बाहर गया हुआ है किन्तु वह स्वयं बहुत रुग्ण है और मरना नहीं चाहती। गुरुजी ने उसे चिंता करने के लिए मना किया और अपना हाथ आशीर्वाद के लिए उठाया। उनके हाथ से कुछ किरणें निकल कर सोनल के शरीर में प्रवेश कर गयीं।

उस रात उसे बहुत पसीना आया – ज्वर घटने के निश्चित चिह्न। अगले दिन सुबह उठ कर उसने फोन पर मुझे स्वप्न के बारे में बताया। उस दिन से उसका ज्वर कम होना आरम्भ हो गया और कुछ ही दिनों में वह पुनः स्वस्थ हो गयी। एक ही दर्शन से गुरुजी ने उस पर अपनी दया वृष्टि कर दी थी। वह सब दर्शनार्थियों को देखते और परखते हैं और उनका ध्यान रखते हैं। गुरुजी महाराज की जय हो।

नवम्बर 2005 में एक दिन रमेश रामायण का पाठ करते हुए उस अंश पर पहुंचा जहाँ पर गुरु महिमा का वर्णन आता है। उसने गुरुजी के बारे में सोचा और एकदम अपने विचारों में उनके पास एम्पाएर एस्टेट पहुँच गया। उसने गुरुजी को अपने कक्ष से बाहर निकलते हुए देखा। उसने गुरुजी को आलिंगन में लिया तो वह दो आकृतियों में विभाजित हो गये। एक अपने आसन पर जाकर बैठ गयी और दूसरी शिव स्वरूप धारण कर 15 मिनट तक रमेश के साथ नृत्य करती रही। नृत्य करते हुए उसने गुरुजी से प्रश्न किया कि क्या अन्य लोग उन्हें देख सकते हैं तो उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया और बोले कि उसे केवल आनंदित होना चाहिए।

नृत्य के उपरान्त शिव गुरुजी के शरीर में प्रवेश कर गये। इसी अवस्था में रमेश ने लंगर ग्रहण किया और वापस अपने घर आ गया। कुछ दिन बाद जब रमेश गुरुजी के दर्शन के लिए दिल्ली आया तो उसने यह अनुभव मुझे बताया। गुरुजी ने रमेश को अपने घर बनाने के लिए आशीष दिया। यद्यपि रमेश अत्यंत परिश्रमी था, पिछले दस वर्षों में वह अपना घर नहीं बना पाया था। 29 मई 2006 को वह अपने घर में प्रवेश कर सका।

उसकी बेटी देवयानी अत्यंत बुद्धिमती थी। परिश्रमी होते हुए भी वह सदा अपनी कक्षा में द्वितीय स्थान पर ही आती थी – कुछ ही अंकों से प्रथम स्थान पाने में असफल रह जाती थी। गुरुजी के दर्शन के बाद देवयानी, वर्ष 2006 में, न केवल अपने अनुभाग में, अपितु पूरी छठी कक्षा के चारों अनुभागों में प्रथम आयी। गुरुजी की कृपा इस प्रकार भक्तों पर प्रवाहित होती है। उसका भाई विशु, भी इसी प्रकार के अंक लेकर आठवीं कक्षा में उत्तीर्ण हुआ, यद्यपि उसकी ऐसा करने की आशा नहीं थी।

गुरुजी शिव दुर्गा हैं

मेरे बड़े भ्राता, शिव कुमार पुष्कर्ण ने, अक्टूबर 2004 में मात्र

औपचारिकता के कारण मेरे घर में आयोजित गुरुजी के सत्संग में भाग लिया। अंततः वह वर्ष 2004 के मध्य में गुरुजी की शरण में पहुँच पाये। उन्हें वहाँ पर अदभुत शांति मिली। उसके बाद उनका स्वभाव अत्यंत शांत और सौम्य हो गया है।

एक दिन मेरी भाभी अपनी प्रतिदिन की दिनचर्या के अंतर्गत दुर्गा स्तुति नहीं कर पायीं थीं। वह व्यथित थीं। अचानक गुरुजी उनके सामने प्रकट हुए और उन्होंने कहा कि उन्हें इन बातों को लेकर चिंतित नहीं होना चाहिए। वह बोले कि वह सर्वत्र हैं और वह केवल उनको याद कर लें तो पर्याप्त होगा। फिर भाभीजी को दिखाने के लिए कि वह दुर्गा भी हैं, उस रूप में परिवर्तित हो कर उनको गले लगाया और अंतर्ध्यान हो गये।

भाभीजी को घुटने में शूल रहता था। चिकित्सकों ने अनेक परीक्षण और औषधियों का दीर्घकालीन उपचार बताया था। शिवरात्रि 2006 को वह बड़े मंदिर गयीं और गुरुकृपा से उनकी वह वेदना उसी दिन से समाप्त हो गयी है।

15 मई 2006 को हम शिव मंदिर गये। हॉल में शिव की प्रतिमा और गुरुजी का आसन है। मेरे बड़े भाई ने पहले शिव प्रतिमा को और फिर गुरुजी के आसन को नतमस्तक होकर आदर दिया। उन्होंने देखा कि संगत पहले गुरुजी को और फिर शिव प्रतिमा को आदर दे रही है। वह सोचने लगे कि क्या उचित है। हम मंदिर में कोई डेढ़ घन्टा रहे और सत्संग का आनंद लेते रहे। जाते हुए मेरे बड़े भाई ने जब शिव प्रतिमा के सामने नतमस्तक होकर अपना सिर उठाया तो उन्होंने शिव के स्थान पर गुरुजी का मुख देखा। उन्हें अपना उत्तर मिल गया था – इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि पहले गुरुजी या शिव को प्रणाम करें, वह तो एक ही हैं।

इस प्रसंग से पूर्व श्रीमती सब्बरवाल संगत को बताती थीं कि उन्होंने गुरुजी को शिव स्वरूप में देखा है। परन्तु मेरे मन में संशय बना हुआ था। मेरे भाई के इस अनुभव के पश्चात् वह दूर हो गया। शिव

की शरण में, यहाँ पर गुरुजी के रूप में उपस्थिति, मैं अपने आप को अत्यंत भाग्यशाली मानता हूँ।

मेरे मित्रों को भी आशीष

मैंने अपने अनुभव अपने मित्रों को बताये तो उनमें से अनेक गुरुजी के पास आये और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। श्री विनोद गुप्ता की बेटी का जीवन परिवर्तित हुआ जब उसे एक अति सुन्दर स्वभाव के पति और ससुराल वाले मिले। मेरे एक अन्य मित्र, श्री योगेश गुप्ता का स्थानान्तरण लुधियाना से गोरखपुर हो गया था। वह जीवन के एक कठिन दौर से गुजर रहे थे। गोरखपुर जाने से पूर्व उन्होंने गुरुजी के दर्शन किये। यद्यपि उन्होंने गुरुजी को अपनी समस्या से अवगत नहीं किया था, 11 माह में उनका स्थानान्तरण ग़ाज़ियाबाद हो गया। पटपड़गंज में उनका मकान है और गुरुकृपा से वह घर वापस आ गये।

इसी प्रकार श्री राजेश शर्मा की कंपनी उन पर झुठे अभियोग लगा रही थी। वह गुरुजी की शरण में आये और उन्हें शांति का आभास हुआ। उनकी कंपनी ने उन्हें मुकदमे के लिए अंतर्राष्ट्रीय वकील करने को कहा। उन्होंने मुझे बताया कि अब उनके पास 'ब्रह्माण्ड के वकील' हैं तो उन्हें कोई चिंता नहीं है। गुरुजी के पास आने के पश्चात् कंपनी उन अभियोगों को भूल गयी और वह अपने उसी पद पर सुख पूर्वक कार्यरत हैं। राजेश जालंधर में रहते हैं और वहाँ पर गुरुजी के मंदिर जाते रहते हैं।

वैवाहिक समस्या का अंत

मेरी सास अपने परिवार सहित 1 जनवरी 2005 को गुरुजी के दर्शन के लिए आयीं। पिछले दस वर्ष से मेरी पत्नी के भाई, आशीष, का दाम्पत्य जीवन अत्यंत व्यथित रहा था। जून 2005 में स्थिति अति गंभीर हो गयी और ऐसा लगा कि शीघ्र ही तलाक ही जाएगा। मेरी सास गुड़गाँव आयीं और उन्होंने गुरुजी के पास जाकर दम्पति के सुखी जीवन

के लिए प्रार्थना करी। एक सप्ताह में ही दम्पति के मध्य आयी समस्या स्वतः ही समाप्त हो गयी। उसके बाद वह दोनों गुरुजी के दर्शन के लिए आये। उनकी कृपा से आशीष और उसकी पत्नी अब सुखपूर्वक रहते हैं और अपने पुत्र की एक साथ देख भाल करते हैं।

– विजय कुमार पुष्कर्ण, गुड़गाँव

चित्र से उपचार

मेरे ससुर सेवा निवृत होने के पश्चात् हरिद्वार में रहने लगे थे। वह मधुमेह से पीड़ित थे – और उनके मधु की मात्रा कभी सीमा में नहीं रहती थी। यद्यपि उनके हृदय की चिकित्सा हो चुकी थी, फिर भी रोग बना हुआ था। उनका एक गुर्दा भी काम नहीं कर रहा था।

एक दिन फोन आया कि वह गंभीर अवस्था में चिकित्सालय में हैं। मेरी पत्नी ने रोना शुरू कर दिया। अगले फोन के पश्चात् आशा टूटने लगी। उनकी अवस्था और बिगड़ गयी थी। मंगलवार का दिन था और हम गुरुजी के पास नहीं जा सकते थे। हमारा विश्वास समाप्त होने लगा। मैंने एक पुराने भक्त को फोन किया तो वह बोले कि गुरुजी को सबका ज्ञान है। इससे हमें आश्वासन मिला और हम सो पाये।

गुरुकृपा से वृहस्पतिवार को गुरुजी का एक चित्र मिला और अगले दिन ही हम हरिद्वार चले गये। चिकित्सालय में हमने स्थिति का अनुमान लगाया और मेरी पत्नी ने गुरुजी का चित्र अपने पिता को दिया। उन्होंने

उसे अपने मस्तक से लगाया और अपनी कमीज की जेब में रख लिया। वह कभी भी गुरुजी के पास नहीं गये थे।

तुरन्त ही गुरुजी की सुगन्ध उस कक्ष में फैल गयी और हम सबको आभास हुआ कि भौतिक दूरियाँ होते हुए भी वह अपने भक्तों के समीप होते हैं।

हम लौट आये और एक सप्ताह बीतने वाला था। चिकित्सक अब पक्षाघात का अनुमान लगा रहे थे। चमत्कारिक रूप से सी टी स्केन भी स्पष्ट था। चिकित्सक अचम्भे में थे और वृहस्पतिवार को उन्होंने निर्णय लिया कि उनको निकट देख रेख के लिए एक सप्ताह और वहां रखा जाएगा – उस समय तक कुछ भी हो सकता था।

अगले दिन प्रातः मैं अपने कार्यालय में था। मेरी पत्नी ने फोन किया तो मेरे मन में पहला विचार अया कि 'बुजुर्गवार लुढ़क गये'। मेरे हाथ कांप रहे थे और अपनी पत्नी की बात नहीं सुन पा रहा था। मेरी पत्नी को दुबारा कहना पड़ा कि वह चिकित्सालय से घर आगए हैं। वह रो रही थी और गुरुजी को बार बार अपना धन्यवाद प्रकट कर रही थी। शाम को जब हम गुरुजी के पास गये तो उन्होंने कहा कि उसके पिता की स्थिति पहले से बहुत अच्छी है।

जब मेरे ससुर गुरुजी के दर्शन के लिए आये तो उन्हें गुरुजी ने एक और भेंट दी। उनकी पत्नी, मेरी सास, गठिये की रोगी थीं। वह अपने पति के साथ गुरुजी के पास आयीं थीं। जब वह वापस हरिद्वार गयीं तो उन्हें आभास हुआ कि बिना हाथ में दर्द हुए वह अपने पोते के लिए स्वेटर बुन सकती थीं।

यह महिला जिन्होंने अपनी समस्या के लिए गुरुजी से विनती भी नहीं करी थी, रोग से मुक्त हो गयीं थीं। गुरुजी की ऐसी दया होती है।

– वीरेन्द्र बौरी

मन और दृष्टि से सुदृढ़

गुरुजी परमात्मा हैं। वह ईश्वर हैं। उनके पास आने से पूर्व मैं अत्यंत निराशावादी प्रकृति की थी पर उनका आश्रय प्राप्त होने के बाद मैं बदल गयी हूँ। मुझे प्रतीत होता है कि मुझे सुरक्षा और शरण, दोनों मिले हुए हैं।

मेरे पति, बीमा जगत के एक प्रमुख व्यक्ति के पुत्र, को अत्यंत आश्चर्य हुआ जब गुरुजी ने उनके पिता के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि उनके पिता, खेरा, बीमा समाज के एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। गुरुजी के पास जाते रहने से मेरे पति की व्यापार सम्बन्धित समस्याओं का निवारण होने लगा।

दो वर्ष पूर्व मुझे भी गुरुजी ने अपना आशीर्वाद दिया। मेरी समस्या अति विशिष्ट थी: मुझे अपनी आँखों के कोनों से दिखायी नहीं देता था। मैंने अनेक नेत्र चिकित्सकों के चक्कर काटे थे। मेरे दृष्टिपटल और

अन्य परीक्षणों के सब परिणाम सामान्य आते थे। चिकित्सक उसका निदान नहीं कर पा रहे थे। जब मैंने गुरुजी को यह समस्या बतायी तो उन्होंने ताम्र लोटा लाने के लिए कहा। जिस दिन से मैंने उसका जल पीना आरम्भ किया, मेरी दृष्टि सामान्य हो गयी।

नव जीवन दान

अकस्मात् मुझे मूर्छा के दौरे पड़ने लगे। मैं स्नायु रोग, अस्थि रोग और मेरूदंड रोग के विशेषज्ञों के पास गयी परन्तु कोई मेरी सहायता नहीं कर सका। चार मास तक निरर्थक विभिन्न विशेषज्ञों के पास जाने के पश्चात् मैं तंग आ गयी। सब स्केन और एम आर आई तक हो गये किन्तु समस्या बनी रही। मुझे उदासी ने घेर लिया और मैं अपनी शय्या की होकर रह गयी; मैं कुछ भी कर पाने में असमर्थ थी।

मैंने गुरुजी के पास जाकर कहा कि मैं रात को सो नहीं पाती हूँ और पूरे शरीर में कम्पन बना रहता है। उन्होंने मुझे अपना आशीष देते हुए कहा कि मैं लंगर धीरे धीरे ग्रहण करूँ। उनकी दया से मैं शीघ्र ही स्वस्थ हो गयी। उसके उपरान्त जब मैं उनके पास गयी तो वह बोले कि उन्होंने मुझे नव जीवन प्रदान किया था।

मेरे पति को भी पीठ की गंभीर समस्या थी। वह कई महीनों से औषधियाँ ले रहे थे किन्तु उनका शूल बढ़ता ही जा रहा था। वह कई चिकित्सालयों में दिखला चुके थे – विमहंस, इंडियन स्पाय्नल इंजरीज सेंटर (मेरूदंड आघात केंद्र), रॉकलेंड आदि – किन्तु कोई चिकित्सक उनके रोग का निदान नहीं कर पाया था। वेदना इतनी अधिक थी कि कई माह से मेरे पति सो नहीं पाये थे।

मैंने गुरुजी को उनकी स्थिति से अवगत कराया। अगली बार उनके दर्शन पर जब मैं गयी तो उन्होंने उनके बारे में पूछा। मैंने उत्तर दिया कि पीड़ा अभी भी बनी हुई है। गुरुजी ने सब औषधियाँ बंद कर के उनको हल्दी वाला दूध रात को देने के लिए कहा। जिस दिन से

मेरे पति ने वह दूध लेना आरम्भ किया, उनके दर्द लुप्त हो गये। 31 जनवरी को जब हमने उनके दर्शन किये तो वह बोले कि उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया है और अब यह समस्या कभी नहीं होगी।

उस दिन से मेरे पति को कोई पीड़ा नहीं हुई है। उन्हें लगता है कि गुरुजी ने उन्हें अदभुत शक्ति प्रदान करी है। जनवरी 2006 में जब वह अमरीका गये तो मुझे चिंता लगी हुई थी कि फिर से उनके दर्द शुरू हो जायेंगे। किन्तु गुरुजी की कृपा से ऐसा कुछ नहीं हुआ। गुरुजी ने उनका उपचार कर दिया था।

जबसे मैं गुरुजी के पास आयी हूँ मेरा जीवन परिवर्तित हो गया है। गुरुजी हर कदम पर मार्गदर्शन करते हैं। आपको उन्हें हृदय से याद करना है और वह आपके पास आ जाते हैं। हम भाग्यशाली हैं कि गुरुजी हमें मिले हैं।

– श्रीमती शालिनी खेरा, दिल्ली

एक ताकिया भरोसा तेरे चरना दा

केवल आपके चरणों में मेरा आश्रय है, हे प्रभु!

मुझे कुछ विशेष किन्तु असाधारण कारणों से अपनी अच्छी नौकरी छोड़नी पड़ी थी। मुझे विश्वास था कि अपने अत्युत्तम अनुभव के कारण मुझे कहीं भी नयी नौकरी मिल जायेगी। मैं आवेदन भेजता रहा – परन्तु विफल रहा।

पांच छः माह तक मुझे असफलताओं का सामना करना पड़ा। शनैः शनैः पहले मेरा आत्मविश्वास, फिर ईश्वर पर से आस्था उठ गयी और मुझे सामाजिक अपमान भी सहना पड़ा। निराशा और असंतोष के साथ साथ संचित धन राशि भी कम होने लगी। अंत में मैं अपनी पत्नी को कहने लगा कि कहीं से कीटनाशक लाकर अपने जीवन समाप्त कर लेते हैं। मुझे पता था कि यह अनुचित निर्णय है पर मेरे पास और कोई विकल्प भी नहीं था।

इसी समय एक दिन मेरे एक मित्र ने मुझे फोन किया। उसके सुझाव पर मैं गुरुजी के पास पहुंचा। मैंने एक संत को अपने आस पास

के लोगों से वार्तालाप करते हुए देखा, गुरबानी के शबदों की ध्वनि गूँज रही थी, चाय प्रसाद और उसके पश्चात् लंगर बंट रहा था। लंगर के पश्चात् मैंने गुरुजी से आशीर्वाद लिया और घर लौट आया। मैंने गुरुजी से अपने मित्र के परामर्श पर कुछ नहीं बताया। उसने कहा था कि गुरुजी को कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है, वह सब जानते हैं।

मेरे मन में विचार आया कि मैं गुरुजी के पास कष्ट में पहुंचा था और कष्ट के साथ ही वापस लौटा हूँ – बिना किसी उपचार के। यदि मैं उनको कुछ कह नहीं सकता तो उन्हें मेरी आवश्यकता का पता कैसे लगेगा और यदि मैं अपनी इच्छा व्यक्त नहीं कर सकता तो उनके पास जाने का क्या लाभ? मेरे मित्र ने पुनः उनके पास जाने के लिए बोला, किन्तु मैंने मना कर दिया और उसको कहा, ''गुरुजी कुछ नहीं कर सकते क्योंकि उन्होंने मेरी समस्या सुनी नहीं है। एक पढ़ा लिखा और समझदार होने के कारण मैं विश्वास नहीं कर सकता कि वह भगवान और सर्वज्ञाता हैं।''

अगले दिन ही मुझे एक अच्छी नौकरी के लिए साक्षात्कार की सूचना आयी। मैंने अपने मित्र को फोन किया तो उसने कहा कि यह गुरुकृपा है। मैंने असहमति व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने इसके लिए 15 दिन पहले आवेदन भेजा था। साक्षात्कार अच्छा हुआ; मैं परिणाम की प्रतीक्षा कर रहा था। चुने न जाने पर मुझे आश्चर्य हुआ। अन्दर ही अन्दर मैं ध्वस्त हो गया और मैंने कहीं भी आवदेन भेजने बंद कर दिये। अगले दो मास इसी प्रकार निकल गये। मेरी स्थिति अत्यंत निराशाजनक हो गयी थी। एक दिन मेरे मित्र ने पुनः फोन किया और गुरुजी के पास जाने का आदेश दिया। मैं यह सोचकर गया कि प्रयत्न करने में कोई हानि नहीं है; स्थिति इससे और अधिक कितनी बुरी हो सकती है।

मैं संगत को गुरुजी से आज्ञा लेते हुए देख रहा था। मैं गुरुजी से विनती कर रहा था कि मैंने सब प्रयत्न कर लिए हैं और अब कोई मार्ग शेष नहीं है। बार बार उस दिन सुने हुए एक शबद के शब्द – एक तकिया भरोसा तेरे चरना दा और सब बैधेन्य दे दिया – मेरे कानों में

गूँज रहे थे। कोई एक दर्ज़न लोग बचे होंगे जब गुरुजी मेरे पास आये। वह बोले, *''होर वाई तुं किदां आयां हैं?''* स्पष्ट रूप से गुरुजी को पता था कि मैंने उनके अस्तित्व पर संशय किया था, मैं अशक्त और अवाक् रह गया।

बहुत प्रयत्न के साथ मैं धीमे से गुरुजी ही कह पाया था। इतने में उन्होंने पूछ लिया कि मैं किसके साथ आया हूँ। कठिनाई के साथ मैंने उत्तर दिया कि मैं अपनी पत्नी के साथ आया हूँ तो उन्होंने उसे बुलाने के लिए कहा। मैं भाग कर बाहर गया और उसे बुलाकर अन्दर लाया। गुरुजी ने उसका नाम पूछा और बोले: *''चल, जा तेरा कल्याण कर दित्ता''*। अगले दो तीन मिनट तक मैं अपने स्थान से उठ नहीं पाया। गुरुजी का आशीर्वाद मिलने के पश्चात् मैंने पुनः आवेदन भेजने आरम्भ कर दिये। मुझे इंटरनेट पर एक रिक्त स्थान दिखायी दिया, मैंने आवेदन भेजा और अगले दिन मुझे साक्षात्कार के लिए बुलावा आगया। मैं कंपनी के प्रबन्ध निर्देशक और वी पी से मिला और ऐसा लगा जैसे वह मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। दस मिनट के पश्चात् मुझे नियुक्ति पत्र मिल गया था।

उसी शाम मैं गुरुजी के पास अपने कुकर्मों की क्षमा याचना करने गया। मुझे अपनी भूल का आभास था परन्तु उससे अधिक आवश्यक मैं उनका धन्यवाद करना चाहता था। जब चलने का समय हुआ तो मैं पंक्ति से आगे निकल कर उनके पास गया। उन्होंने मुझे देख कर अपने कान मेरी ओर कर दिया। मैंने उनको बताया कि मैं नौ मास से बेकार था और उनकी दया से ही मुझे नौकरी मिली है। गुरुजी पहले तो चुप रहे फिर बोले, *''जा फिर, ऐश कर''*।

उनके शब्द सत्य सिद्ध हुए हैं। न केवल मुझे कार्य करने में आनंद आता है, मेरे सब कार्य भी सुचारू रूप से पूरे हो जाते हैं। मेरे सहकर्मी प्रभावित हैं परन्तु मुझे पता है कि यह गुरुजी ही कर रहे हैं। मैं अपने साथियों को कहता हूँ कि पहले मैं केवल जीवित था अब मैंने जीना सीख लिया है।

क्षणिक उपचार

जिसने पीड़ा दी है वही उसकी औषधि भी देगा। पहली बार जब मैं गुरुजी के पास गया था मेरे घुटनों में बहुत दर्द हो रहा था। मैं एक चिकित्सक के पास गया जिसने कहा कि घुटनों के अस्थिबंध क्षतिग्रस्त हो गये हैं। मुझे विश्राम करने का और घुटनों को न हिलाने का परामर्श दिया गया; साथ ही औषधियाँ भी दी गयीं। पीड़ा असह्य थी।

जब मेरे मित्र ने मुझे फोन कर गुरुजी के पास जाने के लिए कहा तो मैंने उसको बताया कि मैं तो गुरुजी के पास नौकरी के लिए विनती करने गया था और वहीं पर मेरे अस्थिबंध क्षतिग्रस्त हो गये थे। मेरा मित्र चुप रहा। दो माह के पश्चात् घुटनों का शूल समाप्त हो गया। जब मैं अपने मित्र के दोबारा कहने पर पुनः गुरुजी के पास गया तो मेरे घुटनों में फिर से वेदना आरम्भ हो गयी। इस बार मैं चिकित्सक के पास गया तो उसने एक महंगे उपचार की सलाह दी।

मेरे पास अधिक धन नहीं था और घुटनों के दर्द के साथ उनके पास जाना भी कठिन हो गया। मेरे से चला भी नहीं जाता था। एक दिन मैंने गुरुजी से इस पीड़ा को सह पाने की शक्ति के लिए उनका आह्वान किया। मैं अत्यंत कठिनाई के साथ अपने आप को कार में घुसा पाया और उसे चला कर एम्पाएर एस्टेट पहुँच पाया। उस दिन चलते हुए मैंने गुरुजी से विनती करी, ''तुम्हीं ने दर्द दिया है, तुम्हीं दवा देना।'' और अगले क्षण वह पीड़ा समाप्त हो गयी। निश्चित करने के लिए कि मेरा घुटना अब बिलकुल ठीक है, मैं चिकित्सक के पास गया। मुझ से कहीं अधिक मेरे स्वस्थ घुटनों को देख कर उसे आश्चर्य हुआ। उस दिन के पश्चात् मैं किसी चिकित्सक के पास नहीं गया हूँ। गुरुजी को उपचार करने के लिए भक्तों से बात करने की आवश्यकता नहीं है। आप को अनुभूति होता है कि वह कुछ करने के लिए कह रहे हैं और उस क्रिया को करते ही कष्ट से आपका निवारण हो जाता है।

मैंने धूम्रपान छोड़ा

मैं प्रति दिन 30–35 सिगरेट पीता था और तीव्र अम्लता और उदर समस्या से पीड़ित रहता था। एक दिन सिगरेट पीते हुए मुझे लगा कि गुरुजी सिगरेट बंद करने का आदेश दे रहे हैं। मैंने सिगरेट का वह डिब्बा फेंक दिया। अब मुझे पता है कि गुरुजी ने ऐसा क्यों करवाया। मेरे चिकित्सकों ने बताया कि ऐसा न करने से मुझे उदर व्रण हो सकता था जो कालांतर में असाध्य केंसर का रूप ले सकता था। रोग का उपचार उसके लक्षण आने से पहले ही हो गया!

गुरुजी मेरे मित्र, दार्शनिक, पथ प्रदर्शक, चिकित्सक और अध्यापक हैं। मैं प्रतिदिन उनकी उपस्थिति का आभास कर सकता हूँ। वह भक्तों में उनके प्रिय रूप में प्रकट होते हैं। वह सब भूमिकाएं अत्यंत मनोहर ढंग से निभाते हैं – वह शिव हैं। प्रारंभ में यह अविश्वसनीय प्रतीत होता है। बचपन से हमें सिखाया गया है कि देवी देवता मनुष्य रूप में दिखते हैं, उनके चार या आठ हाथ होते हैं और उनके वाहन कोई पशु या पक्षी होते हैं। परन्तु यह केवल सांकेतिक चित्रण है। अतः हमें विश्वास करना अत्यंत कठिन हो जाता है कि हमने इस युग में जन्म लिया है जब शिव इस पृथ्वी पर अवतरित होकर मानव जाति का भला करने स्वयं आये हैं। परन्तु तथ्य सत्य हैं।

– संजीव कश्यप, गुड़गाँव

महापुरुष के चरणों में

मुझे गुरुजी के प्रथम दर्शन दिसंबर 1995 में हुए जब मैं अपने एक घनिष्ठ मित्र, श्री राजपूत के पुत्र के विवाह पर आयोजित स्वागत समारोह भोज पर गया था। मुझे और मेरे परिवार को जालंधर, पंचकूला, चंडीगढ़ और दिल्ली में गुरुजी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। 2006 में दिल्ली में उनके दर्शन हमें दो साल के बाद हुए। इस अवधि में हम उनके आदेश के अनुसार उनके पास नहीं गये थे। गुरुजी के साथ हमारे वर्षों के अनुभव से मैं कह सकता हूँ कि वह हमारे युग के सच्चे महापुरूष हैं।

अमृत के स्त्रोत

घटना 1994 की है, जब गुरुजी चंडीगढ़ में थे। मेरी पत्नी, मेरी पुत्रवधू और मैं उनके दर्शनोपरांत घर के लिए निकल ही रहे थे कि हमें वापस बुलाकर उनके कक्ष में ले जाया गया। गुरुजी ने कहा कि वह हमें

आशीर्वाद देंगे। उन्होंने हमें अपना मस्तक, वक्षस्थल और कन्धों के पीछे सूंघने के लिए कहा। हमें ऐसी सुगन्ध प्राप्त हुई जो पहले कभी नहीं मिली थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह स्थल दिव्य अमृत के अनंत स्त्रोत हैं।

औषधि बिना उपचार

उसी वर्ष मेरे दोनों टखनों में अत्यंत पीड़ा होने लगी। दर्दनाशक औषधियाँ लेकर मैं पंचकूला में अपने पारिवारिक चिकित्सक के पास गया। परीक्षण से पता लगा कि मेरे हिमोग्लोबिन का स्तर 13-14.1 से गिरकर मात्र 7.2 रह गया था। टखनों की वेदना को भूल कर उन्होंने इस पर ध्यान देने का परामर्श दिया। चिंतित, सेक्टर 34 में स्थित सिटी चिकित्सालय और पी जी आई में दिखाया किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ तो मैं दिल्ली के साउथ एक्सटेंशन क्षेत्र में स्थित एक हिमोग्लोबिन विशेषज्ञ के पास गया। उन्होंने अनेक परीक्षण करवाये और पता लगा कि मेरा ई एस आर 105 था, जो अत्याधिक उच्च माना जाता है। उनके विचार से मेरा निम्न हिमोग्लोबिन का सम्बंध अस्थियों से था। कोई अन्य विपरीत लक्षणों के अभाव में वह मुझे एक चिकित्सालय ले कर गये जहाँ पर अस्थि मज्जा का परीक्षण होना था। जब हमें पता लगा कि यह रक्त केंसर के लिए है, हम भौंचक्के रह गये। उस शनिवार के दिन मेरे शरीर से 20 से अधिक नमूने एकत्रित किये गये। परिणाम सोमवार की संध्या को पता लगने थे। मैं भयभीत था और मैंने चंडीगढ़ में अपने पुत्र को गुरुजी से मिलकर उनको स्थिति से अवगत कराने और मेरे जीवन के लिए प्रार्थना करने को कहा। आदरणीय गुरुजी ने मेरी पुकार सुनी और कहलवाया कि सब परिणाम अनुकूल आयेंगे। उन दो दिनों में हम अत्यंत चिंतित रहे। परिणाम आने पर हमारे और चिकित्सक, सबके लिए अचम्भे की बात थी। विशेषज्ञ ने नौ विटामिन निर्धारित किये और इस प्रकार मुझे प्रतिदिन दो दर्ज़न से अधिक गोलियां और केप्स्युल खाने थे। अगले दिन मैंने चंडीगढ़ में गुरुजी की संगत में उनको विस्तार में

बताया। गुरुजी महाराज ने मुझे सब औषधियाँ छोड़कर प्रतिदिन एक ग्लास अनार का रस और भ्रमण करने के लिए कहा। मैंने उनके निर्देशों का अक्षरशः पालन किया किन्तु दिल्ली में विशेषज्ञ को कुछ नहीं बताया।

एक माह के बाद जब मैं उस विशेषज्ञ के पास दिल्ली गया तो मेरी स्थिति मे अत्यंत सुधार था। उन्होंने औषधियों की मात्रा आधी कर दी। अगले मास जब और सुधार दिखलायी दिया तो औषधियाँ कम से कम कर दी गयीं।

गुरुजी को जब इतने सुधार के बारे में बतलाया गया तो उन्होंने अनार का रस बंद करने को, जीवन में आनंदित रहने और जब इच्छा हो व्हिसकी पीने को कहा। उनकी दया से मैं उनके निर्देशों का पालन कर रहा हूँ और सामान्य जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।

मुख्य अभियंता के पद पर

मैं पंजाब सिंचाई विभाग से प्रबन्ध अभियंता के पद से 1992 में सेवानिवृत हुआ था। अपने सेवाकाल में मैं 1964–1968 तक फजिल्का में एस डी ओ रहा था। फाजिल्का पाकिस्तान सीमा से केवल 4 किलोमीटर सीधी दूरी पर स्थित है। सितम्बर 1965 में, जब पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया था, नागरिकों में हलचल मच गयी थी। प्रशासक होने के कारण मेरे कन्धों पर बहुत उत्तरदायित्व था। महिलाओं और बच्चों को मल्हौत के निकट भेजना था। कार्य शीघ्रता से किया गया था।

उस अवधि में मैंने सेना के साथ भी कार्य किया और उनके साथ भूमि में खुदे हुए उनके बंकरों में भी रहा क्योंकि शहर पर सीमा पार से बमबारी हो रही थी। असैन्य अधिकारी होते हुए यह मेरे कार्यक्षेत्र में नहीं आता था किन्तु मैंने ऐसे संकट भरे वातावरण में कार्य किया था। ऐसी सेवाओं के लिए पंजाब सरकार और रक्षा विभाग से मुझे प्रशंसा पत्र और समय पूर्व पदोन्नति मिलनी चाहिए थी। क्योंकि पंजाब सरकार ने

ऐसा नहीं किया था इस भेदभाव के लिए मैंने न्यायालय में आवेदन कर दिया था।

जब से मैं गुरुजी से मिला था वह मुझे सदा मुख्य अभियंता कह कर संबोधित करते थे। मैंने उनको बताया कि मैं प्रबन्ध अभियंता के पद से सेवानिवृत हुआ हूँ पर उन्होंने कहा कि मुझे शीघ्र ही मुख्य अभियंता की पदोन्नति प्राप्त होगी। कालांतर में न्यायालय ने मुझे समस्त सेवा सम्बन्धी सुविधाएं दी और गुरुजी के कथन के अनुसार पंजाब सरकार ने 2004 में विशेष अधिसूचना निकाल कर मुझे मुख्य अभियंता का पद प्रदान किया।

गुरुजी की दया मेरे समस्त परिवार पर बनी रही है। 2002–2003 की शीत ऋतु में एक दिन मेरी पत्नी और मैं, एम्पाएर एस्टेट में गुरुजी के पास रात्रि दो बजे तक थे। सर्दी बहुत हो रही थी। बाहर निकलने के बाद मेरी पत्नी ने कहा कि पिछले डेढ़ घंटे से उसकी बायीं हथेली में बहुत पसीना आ रहा है। उस समय कोई चिकित्सक मिलने का प्रश्न नहीं था और कुछ गड़बड़ अवश्य थी। अतः हम वापस गुरुजी महाराज के पास गये और उन्हें समस्या से अवगत किया। उन्होंने मेरी पत्नी का हाथ अपने हाथ में लिया और बोले कि कहाँ दर्द है, कोई दर्द नहीं है, जाओ आनंदमय रहो। उनके यह कहते ही वेदना समाप्त हो गयी। अगले दिन जब हम उनके पास पहुंचे तो उन्होंने पीड़ा के बारे में प्रश्न किया। वह इतने दयालु हैं।

इस भौतिक और माया मोह के संसार में एक सच्चे महापुरूष का दिव्य आश्रय प्राप्त करना अत्यंत कठिन है। संतों के विस्तृत परिवार में एक को दूसरे से भिन्न करने वाले नियम तभी पता लग सकते हैं जब हम एक ऐसे संत के पास पहुंचें जिसके सदृश कोई और न हो और वह ईश्वर के वास्तविक सन्देश मानवता में फैला रहा हो। दूसरों के जैसे उसे धन और अन्य भौतिक वस्तुओं में कोई रुचि न हो। वह अपनी असीमित शक्तियों का प्रयोग मानवता के कष्ट और चिंताओं को नष्ट करने में लगाये। श्री गुरुजी महाराज ब्रह्मज्ञानी हैं जो इस नश्वर संसार में

भटके मनुष्यों को सही राह दिखाने और मोक्ष प्राप्ति के सही मार्ग बताने आये हैं।

हम भाग्यवान हैं कि हमने उनके बारे में सुना, उनसे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ और, उनकी कृपा से ही, उनमें आस्था है। यद्यपि वह मनुष्य रूप में आये हैं, वह मनुष्य नहीं हैं। वह तो गुरु नानक और शंकर का अवतार हैं।

– संतोख सिंह, चंडीगढ़

मेरे रक्षक

चंडीगढ़ में, 1991 में, अपने एक सहकर्मी के कक्ष में गुरुजी से मिलने के पश्चात् मैं सदा उनका उत्साही अनुयायी रहा हूँ। उस समय मैं आयकर पुनर्विचार अधिकरण का अध्यक्ष था। उस समय से, भले ही, मैं संगत में आऊं या नहीं, वह सदा मेरे मन में बसते हैं। मेरे लिए यही उनका आशीर्वाद रहा है।

कुछ वर्ष पूर्व मैंने अपने आप को गुरुजी पर एक कविता लिखते हुए पाया। यद्यपि मैं लिख लेता हूँ, मैं अंग्रेजी भाषा का कवि नहीं हूँ। किन्तु उस दिन एक अज्ञात शक्ति मुझ से लिखवा रही थी। उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य पर उसकी सैंकड़ो प्रतिलिपियाँ बनी और उसे गुरुजी के भक्तों में बांटा गया।

जनवरी 2006 में मैं अकस्मात् रुग्ण हो गया। मुझे ज्वर था और अपने कमरे में अचेतनावस्था में पाये जाने से पूर्व दो बार उल्टी कर चुका था। स्ट्रेचर पर मुझे सीधे अपोलो चिकित्सालय के गहन सेवा केंद्र

में ले जाया गया था। चिकित्सकों के एक दल ने परीक्षण करने के पश्चात् पाया कि गुर्दे के संक्रमण ने मेरे पूरे शरीर को ग्रस्त कर लिया था – मेरे गुर्दे और यकृत ने काम करना बंद कर दिया था। मेरे हृदय का आकार बढ़ गया था और मेरी आँतों से रक्त स्त्राव हो रहा था। मस्तिष्क प्रभावित हो गया था और मुझे श्वस्नक ज्वर था। इस आधार पर चिकित्सकों ने मेरे जीवन की आशा छोड़ दी थी और यह मेरे परिवार को भी बतला दिया था। तथापि उन्होंने कहा था कि यदि मैं अगले 48 घंटे जीवित रह पाया तो कुछ आशा करी जा सकती थी।

गहन सेवा केंद्र में चिकित्सक मेरे साथ लगे रहे। एक दिन प्रातः 4 बजे, जब मैं अर्ध चेतना में था और नर्स कोई विशेष शिरा ढूंढ रही थी, तो मैंने एक चिकित्सक को कहते हुए सुना, ‘‘मैंने सब संभव कर लिया है, पर कुछ नहीं हो रहा है।’’ मैं भयभीत हो गया।

वहाँ लेटे हुए, अपने अस्थिर मन से, मैं गुरुजी से संपर्क स्थापित करने का प्रयत्न करता रहा था। उस दिन मैंने उनके उस चित्र पर ध्यान केन्द्रित किया जिसमें वह अपने दोनों हाथ अपने मुख पर रखे हुए हैं, जैसे गूढ़ सोच में हैं – दिव्यता और शांति का प्रतीक। यह चित्र मेरे घर में है। जैसे ही यह चित्र मेरे मन में आया, मैंने तुरन्त अपने शरीर और मन में अदभुत राहत का अनुभव किया और मेरा स्वास्थ्य लाभ आरम्भ हो गया। मेरा वजन 25 किलो घट गया था और मेरे शरीर का ढांचा बिलकुल ढीला हो गया था। कई महीनों तक मैं चल या बात नहीं कर पाया। मेरा उपचार कर रहे चिकित्सक ने पूछा, ‘‘आप कैसे बच गये? आपसे आधी आयु के व्यक्ति का भी ऐसे लक्षणों के साथ बचना कठिन था।’’ चिकित्सक को पता नहीं था कि मेरे रक्षक, गुरुजी महाराज, एम्पाएर एस्टेट से सब नियंत्रित कर रहे थे। जय गुरुजी!

– एस के चंदर

स्वप्न में शल्य क्रियाः हृदय रोग लुप्त

1997-98 में मुझे परिवार सहित गुरुजी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह मेरे एक मित्र के कहने पर संभव हुआ जो गुरुजी के आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात् अत्यंत प्रभावित हुए थे।

इस अवधि में मेरी पत्नी, नीता, हृदय रोग से पीड़ित रही थी। मैं उसे पारिवारिक चिकित्सक के पास ले जा चुका था। उन्होंने ई सी जी और टी एम टी के साथ कुछ अन्य परीक्षण भी करवाने को कहा था। ई सी जी के परिणाम सही नहीं थे। टी एम टी में एक गतिशील पट्टे पर उसे चलना था किन्तु वह उस पर एक मिनट भी नहीं चल पाई थी; उसका रक्त चाप 200 से ऊपर पहुँच गया था और चिकित्सक ने परीक्षण रोक दिया था। पारिवारिक चिकित्सक को बताने पर उन्होंने स्ट्रेस थेलियम परीक्षण करवाने को कहा। मैंने सीताराम भारतीय चिकित्सालय में परीक्षण के लिए नियुक्ति ले ली थी।

स्ट्रेस थेलियम परीक्षण से पूर्व हम गुरुजी से मिले और उनको पत्नी के स्वास्थ्य से अवगत किया। गुरुजी ने बड़े ध्यान से पूरा वृत्तांत सुना और फिर मेरी पत्नी का हाथ पकड़ कर उसे बड़ी जोर से झटका दिया। यह करने के पश्चात् उन्होंने उसे तीन दिन तक निरंतर वक्ष के बाएं भाग में 14 पान के पत्ते लगाने का परामर्श दिया। मेरी पत्नी को लगा जैसे उसका हाथ अपने जोड़ से निकल आया है। परन्तु, उसी दिन, वह तीव्र पीड़ा जो उसे सदा लगी रहती थी, एम्पाएर एस्टेट में बैठे हुए ही कम होती लगने लगी।

मेरी पत्नी ने गुरुजी के परामर्श के अनुसार पान के पत्ते लगाये। उसी रात्रि को उसे स्वप्न आया कि गुरुजी ने उसके हृदय की शल्य क्रिया कर के उसका उपचार कर दिया है। उसने बताया कि उस अवधि में उसे बहुत पसीना आया था और उसके बाद जग गयी थी। यह एक अदभुत अनुभव था। उस शाम को गुरुजी से मिलने पर उन्होंने स्वप्न की ओर संकेत करते हुए कहा, *''कल्याण हो गया''*।

परन्तु हमने गुरुजी को थेलियम परीक्षण के बारे में नहीं बताया था जिसके लिए सीताराम भारतीय चिकित्सालय से समय भी ले लिया गया था। जब मेरी पत्नी परीक्षण के लिए गयी तो सबसे पहले ई सी जी लिया गया जो संतोषजनक था। उसके बाद उसने टी एम टी परीक्षण किया। चिकित्सक आश्चर्यचकित थे कि नौ मिनट तक पट्टे पर चलने के पश्चात् भी उसका रक्त चाप सामान्य रहा। उत्सुकतावश उन्होंने मेरे से उसके लक्षणों के बारे में पूछा। जब मैंने उनको बताया कि हृदय की समस्या के कारण निरंतर पीड़ा रहती है तो उन्होंने आपस में एक दूसरे को विस्मित होकर देखा। उसके बाद हम घर वापस आ गये।

तीसरे दिन जब हमें उसके परिणाम मिले तो वह सामान्य सीमाओं में थे और कोई अवरोध नहीं था। उसी समय मुझे गुरुजी से फोन आया कि परिणाम सही हैं और क्या अब हम संतुष्ट थे। हम बहुत लज्जित हुए। उस समय से मेरी पत्नी को हृदय की कोई समस्या नहीं हुई है।

इसी प्रकार के अनेक संस्मरण हैं जिनसे सिद्ध होता है कि गुरुजी महाराज अदभुत शक्तियों सहित ईश्वर के अवतार हैं। उनमें अपने अनुयायियों के लिए अपार प्रेम और दया है, जिनकी मानसिक और शारीरिक कष्टों से मुक्ति होती रहती है।

गुरुजी की शरण प्राप्त कर और प्रतिदिन उनकी कृपा के पात्र बन कर हम अत्यंत भाग्यशाली हैं।

– एस के बहल, दिल्ली

विश्वास का घर

नये भक्त नये तैराक की भांति हो सकते हैं। इससे पहले कि वह स्वयं प्रयास करें वह किसी और को समुद्र पार करते हुए देखना चाहते हैं। इसके विपरीत गुरुजी, भक्तों के लेकिन - किन्तु - परन्तु करते हुए भी, उनमें आस्था और विश्वास की जागृति करने में सहायता करते हैं।

श्री सचिन पाहवा के मन में गुरुजी के सत्संग सुनने के पश्चात् भी संशय बना हुआ था। उन्होंने गुरुजी की परीक्षा के लिए अपना नियम बनाया: वह दिल्ली के सैनिक फार्म क्षेत्र में अपना घर बनाना चाह रहे थे। वहां पर वर्षों से सब निर्माण कार्य बंद थे और मुख्य प्रवेश द्वार पर पुलिस का पहरा रहता था। जब वह यह सब करना चाह रहे थे उनके पास आवश्यक धनराशि भी नहीं थी। अपार बाधाओं के होते हुए उनके घर का निर्माण पूरा हो गया। कर्जदार जो अब तक धन के बारे में बात नहीं करना चाहते थे, ने उनके घर पर आकर उनको पैसा लौटाया। थोड़े ही समय में सचिन गुरुजी के चरणों में थे।

सचिन की सगाई हुए दो वर्ष हो चले थे। विवाह किसी न किसी कारण से स्थगित हो रहा था - धन का अभाव या पारिवारिक परिस्थितियां आदि आदि। उन्होंने गुरुजी से विनती करी। दो माह में ही विवाह अत्यंत धूम धाम से संपन्न हुआ। सचिन की कामनाएं गुरुजी से एक शब्द कहे बिना ही पूर्ण हो गयी। यही उनकी मेहर, उनकी कृपा है।

- सचिन पाहवा, दिल्ली

अपने हाथों से गुरुजी करते हैं स्वच्छ

श्री गुरुजी महाराज भगवान के अवतार हैं। राम और कृष्ण के समान उन्होंने भी इस पृथ्वी पर लोगों को उनके कष्टों से मुक्त करने के लिए जन्म लिया है। वह हार्दिक कामनाओं की पूर्ति कर देते हैं। एक रुपया भी व्यय किये बिना लाखों लाभान्वित हुए हैं। जहाँ पर चिकित्सक द्वारा लाखों, पंडित और तांत्रिक द्वारा सहस्रों व्यय करवा देने के पश्चात् भी सफलता संदेहास्पद रहती है, वहां गुरुजी को केवल आस्था, विश्वास और समर्पण चाहिए। दर्शन कीजिये और उनके आशीष पाइये। गुरुजी की दया के बिना परम की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

गुरुजी ने हमारा जीवन परिवर्तित कर दिया है। मेरा पूरा परिवार अब हर समस्या के लिए गुरुजी से प्रार्थना करता है। गुरुजी महाराज की कृपा से, हमारी समस्याएँ, जो अत्यंत जटिल थीं, बुरे स्वप्न समान समाप्त हो गयी हैं। हमें सदा गुरुजी का अपने आस पास होने का आभास होता है। वह सदा हमारी सहायता करने के लिए तत्पर हैं।

अपने एक मित्र के माध्यम से हम, दिल्ली के ग्रेटर कैलाश क्षेत्र

में, गुरुजी के पास 1995 में पहुंचे। उनके इस दर्शन के पश्चात् मेरे स्थानान्तरण और व्यवसाय जनित परिस्थितियों के कारण उनके पास नहीं जा सके। उस भयंकर भूल को हम उस समय समझ नहीं पाये। कुछ वर्षों के पश्चात् हमें बहुत दुःख सहने पड़े।

2003 में हमारी बेटी को कुछ अवांछित तत्त्व घर से बहला फुसला कर ले गये। कुछ माह तक उसका अता पता नहीं चला। अंत में जब उसका पता चला तो वह उनको छोड़ कर घर आने को तत्पर नहीं हुई। हम कई पंडितों और तांत्रिकों के पास गये, पूजाएँ करी और मंदिरों में गये परन्तु सब व्यर्थ रहा।

2005 के आरम्भ में हमने एक पड़ोसी से गुरुजी के बारे में पुनः सुना। हमें तुरन्त याद आया कि उन्होंने पिछली बार हमारी कितनी सहायता करी थी और हम भागे हुए उनके चरणों में पहुँचे। अब हमें प्रतीत होता है कि गुरुजी ने स्वयं हमें बुलाया था। उन्होंने आश्वस्त किया कि बेटी उन लोगों को छोड़ कर सदा के लिए घर वापस आ जायेगी। उनका आशीर्वाद मिलने के बाद वह घर वापस आ गयी और गुरुजी की अनुयायी बन गयी है।

उसे वापस लाने के लिए हमें केवल गुरुजी का आश्रय लेना पड़ा। अन्य स्थानों पर हमने बहुत धन और समय व्यय किया था किन्तु यहाँ पर ऐसा कुछ भी नहीं करना पड़ा।

गुरुजी महाराज अत्यंत दयालु हैं और सब भक्तों की समस्याएँ जानते हैं। मेरी पत्नी मेरुदंड की अंतिम अस्थि की वेदना और बवासीर से बारह वर्ष से पीड़ित थी। पीड़ा इतनी अधिक थी कि वह सख्त भूमि पर दस मिनट से अधिक बैठ नहीं पाती थी। वह तीव्र औषधियाँ नियमित ले रही थी और चिकित्सकों ने तुरन्त शल्य क्रिया का परामर्श भी दिया था। हम इसके लिए तैयार भी हो गये थे।

जब हमने गुरुजी के पास जाना आरम्भ किया तो मेरी पत्नी को चिंता थी कि वह इतने लम्बे समय तक कैसे बैठ पायेगी। कुछ ही दिनों में मेरी पत्नी का उपचार हो गया और वह सब पीड़ाएँ भूल गयी। उसके

पश्चात् उसे यह समस्याएँ कभी नहीं हुई हैं। उसने गुरुजी को इनके बारे में बताया भी नहीं था पर उन्हें इसका ज्ञान था। केवल उनका प्रसाद, लंगर और उनकी कृपा से यह संभव हुआ है।

पक्षाघात पीड़ित मित्र ने गोल्फ खेला

मेरे एक मित्र, जो हमारे घर से कोई एक फर्लांग दूर रहते हैं, को भी गुरुजी की कृपा प्राप्त हुई है। अजित सिंह, अब उत्तर प्रदेश पुलिस के एक सेवानिवृत अधिकारी, आगरा से हमारे पड़ोसी थे। वहां मैं तीन वर्ष तक कार्यरत रहा था। सौभाग्यवश हम फिर मेरठ और मुरादाबाद में भी साथ रहे। इस अवधि में हमारी पारिवारिक मित्रता हो गयी थी। आगरा में हमें पता चला कि श्रीमती अजित सिंह 1972-73 से हृदय रोग से पीड़ित रह रहीं हैं। शनैः शनैः उनके हृदय की धमनियां सिकुड़ रही हैं। 2004 तक उनकी दो धमनियां पूर्ण रूप से और एक अन्य 30-40% बंद हो चुकी थीं। उन्हें अपने घर के द्वार तक आने में भी कठिनाई होती थी। हृदय रोग चिकित्सक ने बायपास कराने की सलाह दी थी। उनको चेतावनी भी दी गयी थी कि यदि इसमें देरी करी तो स्थिति प्राणाघातक हो सकती थी। दो माह के बाद की तिथि भी निश्चित कर दी गयी थी।

कुछ माह पूर्व अजित सिंह को पक्षाघात का एक गंभीर आघात हुआ था किन्तु सौभाग्यवश वह उस रोग से मुक्त हो गये थे। परन्तु अब वह दोनों चिंतित थे। संयोग से हमने उन्हें गुरुजी का आशीर्वाद लेने की बात कही। शुरु में उनके पास आने के लिए वह अनिच्छुक थे किन्तु हमारे आग्रह करने पर वह सहमत हो गये। गुरुजी ने उन्हें ताम्र लोटा लाने को कहा जिसे उन्होंने अभिमंत्रित किया। श्रीमती अजित सिंह ने गुरुजी के निर्देशानुसार उसका जल पीना आरम्भ किया। उनकी शल्य क्रिया की तिथि निकट आ रही थी।

चिकित्सक ने उन्हें दो दिन पूर्व परीक्षणों को पूरा करने के लिए आने को कहा। चिकित्सक ने उनको सम्बंधित आपदाओं से भी आगाह करा दिया था। जब मेरी पत्नी को इस बारे में पता लगा तो उन्होंने पहले

गुरुजी का आशीर्वाद लेने का सुझाव दिया। श्रीमती अजित सिंह ने कहा कि यदि चिकित्सालय में सब कुछ सही हो गया तभी वह गुरुजी के पास जायेंगी। उनके पति यह सुन कर इतने चिंतित हुए कि वह चिकित्सालय नहीं गये और उन्होंने अपने बड़े पुत्र को उनके साथ भेज दिया। उनके जाने के पश्चात् अजित सिंह ने गुरुजी के चित्र के सामने प्रार्थना करी।

चिकित्सालय में श्रीमती अजित सिंह के परीक्षण हुए। जैसे ही परिणाम आये, वही चिकित्सक, जो पिछले कुछ वर्षों से उनका उपचार कर रहे थे, अचम्भित रह गये। परिणामों के अनुसार दो धमनियां बिलकुल साफ़ थीं। और तीसरी में केवल 40% अवरोध था। चिकित्सकों ने कहा कि केवल चमत्कार से ही ऐसा संभव है। उनके पति को विश्वास है कि यह गुरुजी महाराज के आशीर्वाद से ही हुआ है। अब अजित सिंह, जिन्होंने पक्षाघात के कारण गोल्फ खेलना छोड़ दिया था, को नोएडा के गोल्फ कोर्स में देखा जा सकता है।

क्षण में कृपा

ऐसा नहीं है कि गुरुजी की कृपा के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती है। गुरुकृपा तुरन्त विदित होती है। 2006 के आरम्भ में स्पोंदोलियोसिस के कारण मेरी गर्दन में वेदना हो रही थी। पीड़ा बायीं बांह में फ़ैल कर उसको सुन्न कर रही थी। तीव्र शूल के कारण मैं उसे हिला नहीं पा रहा था। मुझे यह रोग पिछले आठ वर्षों से था। इस दर्द को सहते हुए चार दिन हो गये थे। अचानक मेरी बेटी की सास ने मेरी पत्नी को गुरुजी से प्रार्थना करने को कहा। मैंने अपने आप को धिक्कारा। कैसे मैं इन तीन दिनों की वेदना में, गुरुजी को भूल गया? मैंने गुरुजी के चित्र के सम्मुख खड़े होकर उनसे विनती करी। उसके बाद मैं अपनी दिनचर्या में लग गया। एक दिन के पश्चात् जब मेरी पत्नी ने मेरे दर्द के बारे में पूछा, तब मुझे याद आया कि उसके बारे में तो मैं भूल ही गया था। पिछले 30 घंटों में मुझे कोई दर्द नहीं हुआ था। मैंने तुरन्त

गुरुजी को उस वेदना को समाप्त करने के लिए धन्यवाद दिया। उस दिन से मैं उस रोग को भी भूल गया हूँ।

क्षणिक मुक्ति का एक और प्रसंग मार्च 2006 में हुआ। मैं अपने परिवार और मित्रों के साथ घर पर था और हम कुछ अल्पाहार कर रहे थे। अकस्मात् मेरे वायुमार्ग में कुछ भोजन चला गया और मुझे श्वास लेने में कठिनाई होने लगी। मेरी आँखों से जल प्रवाह होने लगा, मेरे गले में अड़चन होने लगी और मेरी सांस मानो रुकने लगी। गला साफ़ करने के लिए मैंने पानी, डबलरोटी और केला खाया पर कुछ लाभ नहीं हुआ। मैं अपने कमरे में आ गया। 15 मिनट बीत गए पर चैन नहीं आया। उसी समय मैं गुरुजी के चित्र के सामने से निकला। मैं बिना कुछ कहे या सोचे, नतमस्तक होकर उसके सम्मुख खड़ा हो गया। मैंने ऐसा किया ही था कि डकार आयी और मेरा वायुमार्ग खुल गया। मुझे गुरुजी पर विश्वास हो गया। वह महान हैं।

परिवार की दुर्घटना में रक्षा

मई 2006 में एक दिन मुझे फोन आया कि मेरे परिवार की कार दुर्घटना हो गयी है। मैं तुरन्त दुर्घटना स्थल के लिए निकल पड़ा जो पाँच किलोमीटर दूर था। मुझे अपनी पत्नी का फोन आया था कि पीछे से एक कार ने मारा था, कार की सीटें गिर गयी थीं और दरवाज़े बंद थे, वह बाहर नहीं निकल पा रहे थे। उस समय रात्रि के 9:15 बज रहे थे।

मेरी पत्नी और तीनों बेटियां दिल्ली के साउथ एक्सटेंशन क्षेत्र में खरीदारी करने के पश्चात् नोएडा घर वापस आ रहे थे। जसोला गाँव के समीप लाल बत्ती थी और वह सब एक ट्रैफिक जाम में फंसे हुए थे। अचानक उनकी कार को पीछे वाली कार ने टक्कर मारी क्योंकि उसको पीछे सामान से लदे आ रहे एक ट्रक ने मारा था। धक्के से कार कुछ आगे चली गयी थी। मेरी विवाहित और छोटी बेटियां, जो पिछली सीटों पर बैठी थीं, के सिर और पीठ पर चोटें आयीं थीं। मेरी पत्नी के पास गुरुजी का एक चित्र था और उसने गुरुजी का चित्र निकाल कर उनसे

विनती करी। शीघ्र ही चिकित्सकों ने कहा कि सब सही है और चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। उसे सूजन कम करने के लिए औषधि दी गयी। पीछे वाली कार को अधिक क्षति पहुंची थी। उसके कुछ यात्रियों को गंभीर चोटें भी आयीं थी। टक्कर इतनी भयानक थी कि ट्रक का अगला भाग तक क्षतिग्रस्त हो गया था।

एक बार फिर गुरुकृपा से मेरा परिवार सुरक्षित था। मैंने अपने परिवार की इतनी भयंकर दुर्घटना में रक्षा करने के लिए उनका हार्दिक धन्यवाद दिया। गुरुजी सदा निष्कपट और सच्चाई से प्रार्थना करने वालों की सहायता करते हैं।

एम बी ए में प्रवेश

लुधियाना, से मेरा भतीजा एक एम बी ए संस्था में प्रवेश परीक्षा और साक्षात्कार के लिए आया था। वह गुरुजी के पास उनके आशीर्वाद के लिए गया और उसने सफलता के लिए उनसे प्रार्थना करी। गुरुजी ने उसे आशीर्वाद देकर कहा, *''जा, हो जाएगा एडमिशन''*। परीक्षा के बाद वह आशावादी था। जब संस्था ने परिणाम घोषित किये तो उसका नाम पहली, दूसरी, तीसरी और अंतिम प्रतीक्षा सूची में नहीं था। वह शिवरात्रि से प्रतीक्षा कर रहा था और परिणामों से वह अत्यंत निराश हुआ था। किन्तु गुरुजी महाराज ने उसे आशीष दिया था। अतः अंतिम सूची में उसका नाम न होते हुए भी तीन दिन के बाद उसको प्रवेश सूचना प्राप्त हुई। उसने आनंदित होकर गुरुजी महाराज का धन्यवाद किया। इतने कम समय में वह उनके शब्द और कृपा से अत्यंत प्रभावित हुआ है।

गुरुजी महाराज - सतगुरु

गुरुजी महाराज मन को भी शुद्ध करते हैं। उन्होंने दिव्य संत का अवतार लिया क्योंकि मानव समाज को उनकी अति आवश्यकता थी। गुरुजी अपने आप को अपनी पूर्ण महिमा, असीमित शक्ति, ज्ञान और आनंद सहित प्रकट करते हैं।

गुरुजी महाराज सतगुरु हैं जो सब मनुष्यों को उनके आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर करते हैं। उनके लिए जाति, धर्म, लिंग या नागरिकता का कोई अर्थ नहीं है। अदृश्य शक्ति से पृथ्वी के प्रत्येक कोने से लोग आकर्षित होकर उनके पास चले आते हैं। गुरुजी महाराज निपुण शिक्षक हैं जो उचित समय आने पर भक्तों को उनके सही मार्ग पर बढ़ाने के लिए उन्हें अपनी ओर खींच लेते हैं। उनकी आकर्षण शक्ति का वेग इतनी तीव्र होता है कि किसी में उसका प्रतिरोध करने की क्षमता नहीं है।

गुरुजी महाराज जगत गुरु हैं। वह प्रत्येक से उसकी चेतना के विकास के स्तर पर ही व्यवहार करते हैं। वह मनुष्य को अध्यात्म के कठिन मार्ग पर अग्रसर करने के लिए, अपनी शक्ति से उसके अभिमान को नष्ट कर देते हैं। आत्मा के विकास के लिए वह समस्त मानसिक और शारीरिक बाधाओं को मिटा देते हैं। इसके लिए मनस्, सूक्ष्म और विराट स्तर पर उनकी विधि सबके लिए एक समान नहीं होती, अतः उसकी भविष्यवाणी करना असम्भव है।

गुरुजी की आँखें प्रेम में लिप्त हैं और उनके हस्त ईश्वर सदृश हैं। परमात्मा स्वयं उनके कंठ से बात करते हैं। गुरु महाराज शांति, सत्य और भातृभाव फैलाते हैं। उच्च - निम्न, जाति, रंग-भेद आदि को मिटा कर वह कष्ट पीड़ित समाज पर कृपा वृष्टि कर रहे हैं। सत्य, भाईचारे और समानता के जल से वह भौतिकता के विष में डूबे हुए मनुष्यों के हृदयों में भरी हुई ईर्ष्या और दुष्प्रभावों को अपने हाथों से साफ़ कर स्वच्छ कर देते हैं।

गुरुजी महाराज ईश्वर का प्रतिरूप और उसकी महानता का प्रतीक हैं। पलक झपकते ही वह स्वर्ग तक पहुँच कर वापस आ सकते हैं। सूर्य और चन्द्र, स्वर्ग और नर्क, पृथ्वी और आकाश उनके क्रीड़ास्थल हैं। सत्य वचन हैं - संक्षेप में आप ही परमात्मा के अवतार हो।

- सतीश कुमार लाम्बा, नोएडा

तथास्तु

मैं सर्व विद्यमान और निराकार सृष्टिकर्ता में विश्वास करती थी। मुझे लगता था कि वह मुझे सदा देख और सुन रहे हैं। एक दिन मैंने उनको मनुष्य रूप में देखने की कामना करी और वह मेरे सम्मुख उपस्थित हो गये।

मुझे कमर से नीचे अत्यंत पीड़ा रहती थी। कोई औषधि काम नहीं कर रही थी। फिर मुझे गुरुजी के बारे में पता चला जो सबके कष्ट दूर कर देते थे। मुझे संशय अवश्य था किन्तु उपचार की आशा लिए मैं उनके पास पहुँच गयी।

मेरे सात वर्षीय पुत्र के गलतुन्दिका में पस भरा रहता था और प्रति पंद्रह दिन में उसे ज्वर आ जाता था। कभी कभी ज्वर 103° तक पहुंच जाता था और रात्रि में कोई चिकित्सक भी नहीं मिलता था।

मेरे पुत्र को एक प्रतिजैविक औषधि छोड़कर कोई भी अन्य औषधि नहीं दे सकते थे क्योंकि उसके शरीर पर उनके दुष्प्रभाव हो जाते थे। एरिथ्रोमाय्सीन, जो ऐसे अवसरों पर राम बाण मानी जाती है, के

भी दुष्परिणाम होते थे। यह हर माह घटित होता था और हमारे लिए अति भयावह अनुभव होता था।

उन दिनों, 1996 में, भक्त अपने कष्ट गुरुजी को व्यक्त कर सकते थे। मैंने उनको अपना कष्ट "मेरा बेटा..." कह कर बताना आरम्भ ही किया था कि वह मुझे पहले अपना रोग बताने के लिए बोले। साहस बटौर कर मैंने उन्हें अपने पैरों में हो रही पीड़ा के बारे में बताया और गुरुजी ने मात्र *"हुन नहीं होउगा"* कहा। उनके कथन के अनुसार उनमें पुनः कभी वेदना नहीं हुई है। उनके बोलते हुए ही वह पीड़ा समाप्त हो गयी थी। फिर उन्होंने मेरे पुत्र के बारे में पूछा। मैंने उसे विस्तार में न बता कर केवल इतना कहा कि उसके गले में सूजन है। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया और उसके गले में ॐ का चिह्न लटकाने और परिवार में चावल नहीं खाने के लिए कहा। मेरे मन में तुरन्त विचार आया कि सात वर्ष का बच्चा गले में स्वर्ण की ज़ंजीर कैसे संभाल पायेगा। यद्यपि यह मुझे सोचना भी नहीं चाहिए था। किन्तु मेरे यह सोचते ही वह बोले कि उसके गले में पीले धागे में ॐ डाल कर पहनाया जाये।

गुरुजी भविष्य देख सकते हैं। अपनी इच्छानुसार दुर्घटनाएं रोक सकते हैं। पहले दर्शन के समय ही, मेरे कहे बिना, उन्होंने मुझे अपना एक विद्यालय चलाने का आशीष दिया। विवाह से पूर्व मैं भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में जाना चाहती थी किन्तु विवाह ने उस पर रोक लगा दी। जब उन्होंने मुझसे पूछा कि उन सेवाओं में जाना चाहने पर क्यों नहीं गयी तो मैंने उत्तर दिया कि प्रेम होने के पश्चात् विवाह मेरी प्राथमिकता हो गयी थी। मुझे प्रतीत हुआ कि वह जो दर्शाते हैं, उन्हें उससे कहीं अधिक पता है और साधारण मनुष्य नहीं हैं। यह घटनाएं दिल्ली में हुईं। गुरुजी शीघ्र ही जालंधर चले गये। मेरे कष्ट फिर कभी लौट कर वापस नहीं आये। मेरा पुत्र भी स्वस्थ सानंद हो गया था। फिर मुझे आभास हुआ कि वह रचयिता के मानव अवतार हैं जिनको मैं ढूंढ़ रही थी।

मेरे पुत्र और मुझे स्वस्थ करने के लिए धन्यवाद प्रकट करने मैं जालंधर गयी। मेरी चार वर्षीया बेटी गत शीत ऋतु में अस्वस्थ रही थी और उसे श्वास का कष्ट रहा था। यह जानते हुए कि अस्थमा या श्वसन–शोथ कितना बुरा हो सकता है, मैं उसके बारे में चिंतित थी। मैं गुरुजी के साथ बरामदे में बैठी हुई थी और थोड़ी देर में वह उनके चरणों के निकट ही सो गयी। क्योंकि मैं उनसे उसके कष्ट बोलने का साहस नहीं जुटा पा रही थी, मैंने उनसे मन ही मन में विनती करी। मेरे मन में यह विचार आते ही उन्होंने अपना एक पैर उसकी नन्हीं पीठ पर रख दिया। उनका उत्तर समझते हुए मेरे मन में आया कि अब कभी भी उसे तीव्र औषधियों की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। उस दिन से मेरी बेटी को कोई श्वास सम्बंधित रोग नहीं हुआ है।

प्रसाद की उत्पत्ति

पुराने अनुयायियों ने मुझे बताया था कि गुरुजी अपने हाथ में सच खंड (दिव्य प्रसाद) प्रकट करते हैं। मुझे क्या पता था कि एक दिन वह मुझे भी प्रसाद देंगे। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और अपना हाथ बढ़ा कर बोले, *"लै"* – उनके हाथ में कप के आकार का एक अति सुन्दर मिश्री से भरा हुआ प्रसाद था जिसके मध्य में एक और प्रसाद था।

मेरे पिता हृदय रोगी थे जिन्हें, गुरुजी से मिलने से पूर्व, दो दिल के दौरे पड़ चुके थे। जब मैंने गुरुजी को उनके रोग से अवगत कराया तो वह बोले कि चिंता न करूँ। मेरा आश्चर्य बना रहा; मुझे यह नहीं पता था कि उन्हें एक और दौरा पड़ेगा। हम उन्हें निकटतम चिकित्सालय में ले गये जहाँ चिकित्सकों ने उनके बचने की आशा कम बतलायी। मैंने अपने पति को घर से गुरुजी का सच खंड प्रसाद लाने के लिए कहा। गहन चिकित्सा केंद्र में जाकर मैंने अपने पिता, जो जीवन रक्षा उपकरणों पर थे, की जिह्वा के नीचे थोड़ा सा प्रसाद, घुलने की आशा के साथ, रख दिया। उसके आधे घंटे के पश्चात् लिए गये ई सी जी के अनुसार उन्हें केवल अपच की समस्या थी। वह उनके वहाँ प्रविष्ट होने पर लिए

गये परीक्षण जैसा गंभीर नहीं था। मेरे पिता के चिकित्सालय से निकलते ही हम जालंधर गये। मेरे प्रवेश करते ही गुरुजी ने मुझे अपने पास बुलाया और अपने अनुभव सुनाने के लिए कहा – यह पिता वाली घटना भी।

मेरा विश्वास है कि जब गुरुजी सत्संग सुनाने को कहते हैं तो सुनाने वाले, सुनने वाले और, अब, पढ़ने वाले, सबको उनका आशीर्वाद मिलता है। मेरे पिता को लिम्फोमा (लसिका ग्रंथियों/ गांठों का केंसर) हो रहा था। मैं गुरुजी को बताने गयी परन्तु कह नहीं पायी। मैंने सुना था कि भक्तों के कष्टों को दूर करने के लिए वह कष्ट अपने ऊपर अंतरित कर लेते हैं और उस दिन वह कष्ट में लग रहे थे। मैं कुछ कहे बिना ही लौट आयी। एक सप्ताह के पश्चात् गुरुजी ने कहा कि उन्होंने मेरे पिता को केंसर से मुक्त कर दिया था। यद्यपि मुझे पता था कि वह मन के विचारों को जान जाते हैं, मैं स्तब्ध थी। पुनः किये गये परीक्षण इसका प्रमाण थे और उन्होंने चिकित्सकों को उलझा दिया था।

माँ उनकी अनुयायी बनी

मेरी माँ मधुमेह से पीड़ित थीं। उनकी काया स्थूल थी और न वह अपने भोजन का, न ही अपनी औषधियों का ध्यान रखती थीं। एक दिन उनका रक्तचाप 200 तक पहुँच गया और उन्हें शय्या पर पूर्ण विश्राम करने के लिए कहा गया। जब मैंने इसका उल्लेख गुरुजी से किया तो वह बोले कि मैं चिंता न करूँ और एक दिन वह दिखा देंगे कि वह कौन हैं। वर्ष बीत गये और वह स्वस्थ सानंद रहीं – अपने नित्य के इंसुलिन लिए बिना ही। एक दिन गुरुजी ने कहा कि उन्होंने मेरी माँ की रक्षा करी है। उनके कहने के कुछ समय उपरान्त ही मेरी माँ अपने हाथ में एक परीक्षण का परिणाम लेकर खड़ी थीं जिसमें लिखा था कि उन्हें छोटी आँतों का क्षयरोग और मलाशय के केंसर का संशय था। उनके पाँव तले मानो जमीन खिसक गयी और वह भागी हुई गुरुजी के आशीर्वाद के लिए आयीं। उस समय गुरुजी को अपनी व्यथा बताना निषेध था। अतः वह लंगर और प्रसाद लेकर वापस चली गयीं।

अगले दिन सब परीक्षण एक सप्ताह पहले किये हुए परीक्षणों के बिलकुल विपरीत आये। चिकित्सक विस्मित होने के साथ प्रसन्न भी थे कि रोग के कोई लक्षण नहीं हैं। उन्होंने उनकी अवस्था को 'मधुमेह - अतिसार' का नाम दिया। अगले दर्शन के समय गुरुजी ने उनको अपना मधु परीक्षण करवाने को कहा। फिर उन्होंने मेरी ओर देखकर कर पूछा कि यह कैसे हुआ। मैं उनके इस कथन का गूढ़ अर्थ समझ नहीं पायी।

कुछ दिन के पश्चात् मेरी माँ ने मुझे फोन पर बताया कि उनके मधु का परिणाम 160/ 130 आया था, जबकि वह कई वर्षों से 280/ 260 रहा करता था। फिर उन्होंने मुझसे पुछा, "यह कैसे हुआ?" तब मुझे समझ आया कि गुरुजी मुझे माँ की प्रतिक्रिया कैसी होगी, इस बारे में बता रहे थे।

अपने परीक्षण से मेरी माँ को संतोष नहीं हुआ और उनके विचार में अवश्य कोई गलती हुई थी। जब उन्होंने पुनः अपने मधु का परीक्षण करवाया तो परिणाम 113/ 99 आया। गुरुजी ने मेरी माँ को *"एक दिन"* सिद्ध कर दिया था कि वह कौन हैं।

पांच वर्ष की अनुपस्थिति

वर्षों पूर्व मेरा हिमोग्लोबिन का स्तर निरंतर गिर रहा था। एक दिन गुरुजी ने कहा कि यदि मुझे उस रोग का ज्ञान हो गया जो मुझे है तो मैं अपने स्थान पर खड़ी नहीं रह पाऊँगी। मुझमें उनसे पूछने का साहस नहीं था। क्योंकि मुझे ज्ञात था कि वह हर रोग का हरण कर सकते हैं मैंने उनसे मुझे रोग मुक्त करने की विनती करी। मेरे पति और मुझे पाँच वर्ष के लिए उनसे मिलने या उनका चित्र देखने को भी मना कर दिया गया। हमें यह बात किसी को बतानी भी नहीं थी। पाँच वर्ष व्यतीत हो गये - जीवन में हम उत्तरोत्तर प्रगति करते रहे - किन्तु उनकी अनुपस्थिति का सदा अभाव बना रहा।

एक दिन मैंने उनसे उनके चित्र के लिए प्रार्थना करी, जो स्वयं हीं

मेरे पास पहुंच जाये, क्योकि मैं उसके लिए किसी को बोलना नहीं चाहती थी। उनका चित्र, उस अकेली पत्रिका में, जो मेरे पति मंगाते थे, आया। बाद में मुझे बताया गया कि वह संयोग नहीं था।

कुछ दिन के पश्चात् मुझे अपना दम घुटते हुए लगा – हर सांस लेने में अत्यंत कठिनाई हो रही थी। मैं अपने पति और माता पिता को फोन कर केवल इतना कह पायी कि मुझसे सांस नहीं लिया जा रहा है। मेरा बेटा ऑक्सिजन का सिलिंडर लेने चिकित्सालय भागा और मेरी बेटी ने पड़ोसियों को बुलाया। सबको चिंता थी।

अकेले में मैंने उनके चित्र के समक्ष उनको कहा कि मुझे श्वास लेने में कठिनाई हो रही है। तुरन्त ही मुझे अपनी गर्दन के पीछे, सिर और मेरूदंड में अनूठी संवेदना हुई और सांस आने लगा। परन्तु मेरे पैरों में कोई जान नहीं थी। गुरुजी ने एक बार मुझे बताया था कि यदि उनके चित्र के समक्ष कुछ भी कहें तो वह सुनते हैं। मुझे एक निकट के चिकित्सालय में ले जाया गया। गहन सेवा केंद्र में अकेले लेटे हुए, जब मेरे मुंह पर ऑक्सिजन लगी हुई थी और मुझे प्रतीत हुआ कि मेरा अंत निकट ही है, मेरे मन में विचार आया कि मेरे पति, सगे सम्बन्धियों में से कोई भी मेरी सहायता नही कर पाया था लेकिन गुरुजी ने तुरन्त मेरी पुकार सुनी थी। कोई भी मुझे पुनः जीवन दान नहीं दे पाया था, केवल गुरुजी ही थे जिन्होंने मुझ पर कृपा करी थी। निश्चित रूप से वह ईश्वर के दूत हैं और मेरे लिए उसके अवतार हैं – अविश्वसनीय किन्तु सत्य है, जब असंभव भी आपके सामने संभव हो जाये!

इससे और भी अधिक आश्चर्यचकित करने वाली घटना तब हुई जब वर्षों पश्चात् मैं उनके सम्मुख खड़ी हुई थी और उन्होंने वही शब्द, जो मेरे मन में उस समय आये थे, दोहराते हुए कहा कि उन्होंने मुझे नव जीवन प्रदान दिया है और मैं सदा सुखी प्रसन्न रहूँ। क्या यह चमत्कार नहीं है कि हम पाँच वर्ष तक मिले नहीं थे किन्तु उनको ज्ञात था कि उस दिन चिकित्सालय में अकेले लेटे हुए मेरे मन में क्या विचार आ रहे थे?

एक बार उन्होंने कहा कि चिकित्सक अपना कार्य करते रहेंगे। गर्भाशयोच्छेदन के पश्चात् मेरा अस्थि घनत्व कम हो गया था। मेरे नितम्ब और जांघ की अस्थियाँ यदा कदा मुझे कष्ट देती थीं। मैंने कभी गुरुजी से इस विषय में चर्चा नहीं करी। इस बीच में परीक्षणों से पता लगा कि मेरी अस्थियों में केल्शियम की कमी है।

अचानक एक दिन गुरुजी ने मेरे पति और मुझे, बच्चों सहित सिंगापुर यात्रा पर जाने के लिए कहा। वह मेरे से जाने का समय पूछते रहते थे। वहां पर पहुँच कर हमें उनकी एक अनुयायी से मिलना था और मुझे उसको अपने अनुभव सुनाने थे। यह करते ही मेरी वेदना समाप्त हो गयी। दिल्ली पहुँचने पर गुरुजी ने घोषणा करी कि मेरे केल्शियम और हिमोग्लोबिन के स्तर बिलकुल सही है। फिर उन्होंने मुझे अपना वजन घटाने के लिए कहा अन्यथा मुझे हृदय रोग होने की संभावना थी। उन्हीं की दया से मेरा वजन घट पाया और अब मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ।

मेरी बेटी को उदरशूल रहता था और दिन प्रति दिन वह बढ़ता जा रहा था। उसने गुरुजी से प्रार्थना करी। उन्होंने उसका नाम बदल दिया और अब उसे कोई वेदना नहीं है। जब मैंने एक अन्य भक्त से इसका उल्लेख किया तो उसने बताया कि उसका नाम भी गुरुजी ने बदल दिया था, अन्यथा यह पीड़ा जीवन भर साथ रहती। यह कोई संयोग नहीं था।

हमने कभी ऐसे गुरु नही देखे जो मानवता के लिए इतना करें और कभी उपदेश नहीं दे।

– श्रीमती सबीना कोचर, दिल्ली

पूर्ण गुरु की खोज

जबसे मैंने होश सम्भाला मेरे अंतःकरण में अपने एक गुरु के लिए चाहत रही है। यद्यपि मुझे गुरु की उपस्थिति का आभास था मैं उन्हें देख नहीं पाती थी। कोई विपदा आने पर मैं उनको याद करती थी और मेरे बचपन से कोई दिव्य शक्ति सदा मेरी सहायता करती आयी थी।

गुरुजी के प्रथम दर्शन

मेरे पति और मैं चंडीमंदिर में रहते थे। संयोग से ऐसा हुआ कि एक सैन्य अधिकारी की बेटी अस्वस्थ थी। मैंने उसे घर भेजने को कहा जिससे मैं उसको देख सकूं। परीक्षण करने पर मैंने पाया कि उसे विषाणु जनित यकृत शोथ था। मैंने उसे औषधियाँ देकर घर भेज दिया। उसी दिन जब उसके पिता मुझे मिले और मैंने उनकी बेटी की अवस्था के बारे में प्रश्न किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि घर पर गुरुजी के आने के पश्चात् से वह बिलकुल स्वस्थ है। मैंने उनसे शिकायती लहजे में कहा

कि उन्होंने कभी गुरुजी के बारे में नही बताया और उनसे विनती करी कि अगले बार जब भी गुरुजी घर आयें तो मुझे अवश्य सूचना दें।

उन्होंने ऐसा ही किया। मैं जल्दी से उनके घर गयी तो गुरुजी उनके कक्ष में बैठे हुए थे। उन्होंने मुझे तुरन्त पहचान लिया और *'डॉक्टर साहिबा, डॉ. भगवान दास और लीलावती दी कुड़ी'* कहकर संबोधित किया। उन्होंने मेरे माता पिता के नाम बता दिये थे; मुझे ज्ञात हो गया कि वह ही मेरे गुरु हैं। मुझे अत्याधिक प्रसन्नता थी। अगले दिन उनके मंदिर में मुझे दीक्षा प्राप्त हुई। उसके बाद उनकी कृपा प्रवाहित होने लगी।

मुक्तिदाता

हम कई बार मृत्यु का ग्रास बनते बनते बचें हैं। गुरुजी से मिलने से पूर्व, जैसा मैं कह चुकी हूँ, मुझे गुरु की उपस्थिति का आभास था। एक बार श्रीनगर में जब मैं कार चला रही थी, सेना के एक अधिकारी की कार बिलकुल सामने आ गयी। मेरी गाड़ी जब रुकी तो उसका एक चौथाई भाग सड़क पर था किन्तु शेष तीन चौथाई सड़क से बाहर हवा में लटक रहा था। वह अधिकारी, जिनको मैं जानती थीं, अपनी कार से बाहर निकले और उन्होंने कहा कि मेरी कार के ब्रेक काम नहीं कर रहे थे। मैं केवल ईश्वर का धन्यवाद कर सकती थी।

बाद में, जब वह बार बार बचाने वाली दिव्य शक्ति गुरुजी के रूप में सामने आयी तो भी सदा हमारी रक्षा होती रही। एक बार जालंधर में, गुरुजी के मंदिर के निकट, एक छोटी बस ने मेरी कार क्षतिग्रस्त कर दी। मंदिर पहुँचने पर गुरुजी द्वार पर खड़े हुए मिले और बोले कि बच गयी।

दिसंबर 2005 में, मैं अपने पुत्र की कार लेकर एक उद्यान में टहलने गयी थी। एक चौराहे पर एक ट्रक सामने आया पर अंतिम क्षण पर चालक ने उसे मोड़ लिया – एक अनहोनी घटना क्योंकि ट्रक के

सामने छोटी गाड़ी को ही स्वयं को बचाना पड़ता है। ट्रक चालक ने मुझे क्रोध भरी निगाह से देखा तो मैंने उससे कहा कि मेरे भगवान ने ही मेरी रक्षा करी है। यह सुनकर वह मुस्कुराया और चला गया।

सेना में पदोन्नति की अनूठी घटना

गुरुजी की मेरे मेजर जनरल पति की पदोन्नति में भी कृपा रही है। मेरे पति को पदोन्नति समिति ने स्वीकृति दे दी थी – किन्तु उस समय केवल पाँच रिक्त स्थान थे और वह आठवें स्थान पर थे। उनकी पदोन्नति असंभव लग रही थी। गुरुजी जालंधर में थे। मेरे पति के वहाँ पर लंगर ग्रहण करने के पश्चात् गुरुजी बोले कि चलिए लेफ्टिनेंट जनरल साहब आपको ''डाइन आउट'' करते हैं। कुछ मिठाई बांटने के पश्चात् गुरुजी ने उनको पहनने के लिए एक पोशाक और दूध पीने के लिए एक चांदी का ग्लास दिया। मैंने वह कपड़े और ग्लास – गुरुजी की दया के प्रमाण – अलमारी में रख दिये। पर गुरुजी ने उनका उपयोग करने को कहा। मेरे पति ने उनका उपयोग किया और गुरुजी की कृपा प्रवाहित होती रही। पदोन्नति से पूर्व तीन बार उनकी अवधि बढ़ायी गयी – सेना में संभवतः ऐसा पहली बार ही हुआ हो। उनकी संचिका (फाइल) अटकने के कारण विलम्ब हो रहा था। गुरुजी ने विलम्ब के कारणों को दूर करने मुझे दिल्ली भेजा। वहाँ पर मुझे एक जनरल साहब मिले जो स्वयं गुरुजी के अनुयायी थे। उनको स्थिति से अवगत करने के उपरान्त, उनके कहने पर उस संचिका पर कार्यवाही हुई। कुछ ही दिनों में मेरे पति का लखनऊ स्थित सेना चिकित्सा कोर केंद्र में, स्वयं में एक उत्तम स्थान, स्थानान्तरण हो गया।

विद्युत ऊर्जा के अभाव में स्टीरियो चला

लखनऊ में गुरुजी कुछ दिन हमारे साथ रहे थे। एक बार प्रातः तीन बजे फ्यूज जल गया। किसी कारणवश जेनरेटर भी शुरु नहीं हुआ। सत्संग का समय हो रहा था और गुरुजी – हमारे जीवन की दिव्य ज्योति

– हमारे बीच में बैठे थे। उन्होंने मेरी बेटी को स्टीरियो चलाने को कहा। उसने उनके कथन की अवहेलना करी क्योंकि विद्युत नहीं थी। गुरुजी के पुनारोक्ति करने पर उसने चलाया और वह अगले साढ़े चार घंटे बिना विद्युत के चलता रहा!

भक्त का घर बनवाया

गुरुजी ने पंचकूला में हमारा घर भी बनवाया। जब उन्होंने मुझे ऐसा करने को कहा तो धन का अभाव था। मेरे पति ने भी इसमें अरुचि प्रकट करी। उन्होंने शंका प्रकट करी कि इसके लिए पैसे कहाँ से आयेंगे और क्या गुरुजी धन की वर्षा करेंगे? किन्तु ऐसा ही हुआ। बीज राशि के रूप में मेरे पति ने पुत्र के विवाह के उपरान्त बचे हुए चालीस हज़ार रूपये दिये। फिर गुरुजी के संकेत पर मैंने सावधि योजना में डाले हुए धन का उपयोग किया। पुनः गुरुजी के तीसरी बार कहने पर मैंने अपने पास रखे हुए शेयर बहुत अच्छे दामों पर बेचे। अचानक पैसे का अभाव दूर हो गया था। गुरुजी ने पंचकूला में एक दूकानदार को सस्ते में सामान भी देने को कहा। शीघ्र ही घर बन कर तैयार हो गया था। मेरे पति को अपने प्रश्नों का उत्तर भी मिल गया था। गुरुजी ने हमारे लिए घर बना दिया था। यह तो उनका मंदिर है; हम तो केवल उसके रखवाले हैं।

भेंट में रेशमी कमीज

गुरुजी की कृपा से मेरे बच्चों के विवाह हुए। 1991 में, चंडीमंदिर में, मेरे ज्येष्ठ पुत्र मनोज के विवाह में गुरुजी पधारे थे। उनके कथन के अनुसार उसके दो पुत्र हुए। जब चिकित्सकों ने गर्भ में पल रहे भ्रूण का लिंग बताने से मना कर दिया तो गुरुजी का कहा याद कर मैंने उनको वह बता दिया। इसी प्रकार गुरुजी ने अगले पुत्र अरविन्द को एक पुत्र और एक पुत्री का आशीर्वाद दिया। उनके विवाह पर भी 1995 में गुरुजी ने नव दम्पति को आशीर्वाद दिया। उनकी कृपा से ही मेरी बहू की गर्भवती होने की रुकावटें समाप्त हो गयीं।

मेरे सबसे छोटे बेटे राहुल के विवाह में भी गुरुजी की अहम् भूमिका रही है। वह छात्रवृत्ति लेकर अमरीका में पढ़ रहा था। एक दिन उसने फोन किया कि उसे एक अमरीकी लड़की पसंद है। यह मुझे अप्रिय लगा पर हमने निर्णय गुरुजी पर छोड़ दिया। निश्चय हुआ कि यदि गुरुजी ने हामी भर दी तो विवाह होगा अन्यथा नहीं। राहुल भी इस बात से सहमत था। गुरुजी से चर्चा करने पर वह मान गये। उन्होंने विवाह की तिथि भी दी।

विवाह दिसंबर मास में दिन में होना तय हुआ। मेरे पति को पहनने के लिए गुरुजी ने एक सूती पेंट और एक रेशमी कमीज दिये थे। शीत ऋतु होने के कारण मेरे पति वह न पहन कर सूट पहनना चाह रहे थे। अचम्भे की बात है कि उस दिन बहुत गर्मी रही और सूट में आये हुए अतिथियों के लिए वह सहन करना कठिन हो रहा था। मेरे पति ने सिलवा कर गुरुजी वाले कपड़े पहने और उन्हें कोई बेचैनी नहीं हुई।

गुरुजी समय निर्धारित करते हैं

हमें जालंधर से लखनऊ शताब्दी से जाना था। हम गुरुजी के दर्शन के लिए गये थे। वहां उन्होंने हमें ट्रेन चलने के समय से आधा घंटा अधिक बिठा कर रखा। जब हम स्टेशन पहुंचे तो पता चला कि ट्रेन भी आधा घंटा देरी से चल रही है।

इसी प्रकार एक बार हमें नोएडा से पंचकूला जाना था। हमें देर हो गयी थी और घर से निकलते निकलते स्टेशन से शताब्दी के चलने का समय हो चला था। मेरे पति मार्ग में कहते रहे कि शताब्दी निकल गयी होगी पर कोई शक्ति खींचती हुई हमें स्टेशन तक ले गयी। वहां पहुँचने पर, हमारे शंतिपूर्वक ट्रेन में चढ़ने के बाद, ही वह चली। मैंने इतनी तुच्छ बात के लिए गुरुजी को याद नहीं किया था, किन्तु वह स्वयं सबका ध्यान रखते हैं।

चंडीमंदिर में एक बार अचानक मैं गुरुजी के पास प्रातःकाल चली गयी। मैंने सोचा था कि उनके दर्शन करने के बाद मैं सीधे अपने कार्य

पर चली जाऊँगी। यद्यपि मुझे चिकित्सालय में 10:30 बजे तक होना चाहिए था, गुरुजी ने मुझे 11:00 बजे तक बिठा कर रखा। मैं भी संयम से प्रतीक्षा करती रही। जब मैं चिकित्सालय पहुंची तो मुझे बताया गया कि कोई रोगी नहीं आया था क्योंकि सेना की सब महिलाएँ चंडीमंदिर गयी हुई थीं, जहाँ एक जनरल निरीक्षण हेतु आये हुए थे।

दिव्य हस्तक्षेप

मेरे पति को गोल्फ खेलने में अत्याधिक रुचि है। उनके दाहिने घुटने में दर्द बना हुआ था। एक सहकर्मी ने एक्सरे करने के बाद देखा कि वहां की हड्डी पर एक अति बारीक दरार है। अतः उस पर प्लस्तर लगाने का सुझाव दिया। गुरुजी को बताये बिना मैंने उस प्रक्रिया के लिए मना कर दिया। गुरुजी ने अपना हाथ उनके घुटने पर फेरा और उनकी वेदना समाप्त हो गयी।

हम उनकी उपस्थिति से अति सौभाग्यशाली हैं। समस्त कठिनाइयों को समाप्त करने के लिए उस पूर्ण गुरु की एक निगाह पर्याप्त है।

एक बार गुरुजी ने मुझे अपनी नाड़ी देखने को कहा तो उसका स्पंदन 40 प्रति मिनट आया। मैंने कहा कि यदि उनकी नाड़ी शून्य भी हुई तो मुझे कोई चिंता नहीं है क्योंकि मुझे ज्ञान है कि वह दिव्यरूप हैं और इस पृथ्वी की भौतिक परिभाषाएं उनके लिए अर्थ विहीन हैं।

– मेजर (डॉ.) सावित्री आहूजा, पंचकूला

गुरुजी ने मेरा भाग्य पुनः लिखा

हो जाये यदि पृथ्वी कागज़,

और सब वृक्ष मेरी लेखनी।

सात सागर हों स्याही,

लिख नहीं पाऊं, फिर भी,

गुरुजी, स्तुति आपकी।।

मैं गुरुजी से 1995 में जालंधर में मिली। संगरूर निवासी, सरदार सुदर्शन सिंह, ने मुझे अपना आदर प्रकट करने के लिए गुरुजी के पास भेजा था। उन्होंने कहा था कि गुरुजी इस पृथ्वी पर एकमात्र गुरु हैं जो नियति को बदल कर उसे पुनः लिख सकते हैं। मुझे उनका अर्थ समझ नहीं आया था।

जिस दिन मैं गुरुजी से मिली उन्होंने मुझे छावनी तक कार में ले

जाने के लिए कहा क्योंकि वह दिल्ली में बड़े मंदिर भवन निर्माण के बारे में किसी को फोन करना चाहते थे। उस समय अँधेरा होने लगा था और वह पीछे की सीट से मुझे निर्देश दिए जा रहे थे। वह मुझे एक लेन में चलने के लिए कहते थे और थोड़ी देर बाद बदलने को। ऐसा कुछ बार होने के पश्चात् मैं सोच रही था कि वह ऐसा क्यों करवा रहे हैं। मुझे शीघ्र पता लगने वाला था।

उसी समय गुरुजी ने कहा कि कोने से एक काली गाड़ी आयेगी और मैं उसे हाथ देकर रोक लूं। गुरुजी के कहने की देर थी कि एक काली फिएट गाड़ी दिखायी दी। उनके दो अनुयायी, कर्नल जोशी और उनका बेटा नितिन कार में थे। वह हमें अपने घर ले गये। मार्ग में नितिन ने बताया कि कुछ देर पूर्व ही उन्हें गुरुजी की उपस्थिति का आभास हुआ था, जब उनके घर में गुरुजी की तीव्र सुगन्ध आयी थी। उसी क्षण उन्होंने गुरुजी के जालंधर वाले मंदिर में जाने का मन बनाया था। वास्तव में वह एक अन्य मार्ग लेते थे, किन्तु उस दिन इस मार्ग से जा रहे थे। मुझे तुरन्त आभास हुआ कि यह प्रसंग गुरुजी ने अपना परिचय देने के लिए किया था – महापुरुष कितने सर्वज्ञाता और सर्वविद्यमान हैं।

लुधियाना जाते हुए नगर ओझल

जालंधर में गुरुजी से आज्ञा लेकर हम रात को 2:30 बजे लुधियाना के लिए निकले। कार में मेरे साथ मेरे पिता और मेरी दो बेटियाँ थीं। लुधियाना का मार्ग बिलकुल सीधा है और उसमें कोई मोड़ आदि नहीं हैं। सड़क पर और कोई गाड़ी नहीं थी और हम 90 किलोमीटर की गति से जा रहे थ। पर इस बार कुछ विशेष हुआ। रास्तें में मैंने फगवाड़ा, जो दोनों शहरों के मध्य का प्रमुख नगर है, पार नहीं किया। घर पहुँचने पर मैं सोच रही थी कि क्या हुआ होगा किन्तु समझने में असफल रही।

रहस्योद्घाटन अगले दिन हुआ जब मैं जालंधर में गुरुजी से मिली और उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या गाड़ी 90 किलोमीटर की रफ़्तार से जा

रही थी। मैं स्तब्ध थी – उनको कैसे पता? गुरुजी ने बताया कि किसी ने मेरे ऊपर काला जादू किया हुआ था और उन्होंने उसके दुष्फल अपने ऊपर अंतरित कर लिये थे। गुरुजी ने रक्त की उल्टी भी करी थी। उन्होंने अपने टखने पर एक काला चिह्न भी दिखाया जो कई मास तक बना रहा। उस समय मुझे भाग्य पुनः लिखने का अर्थ समझ में आया। गुरुजी ने बताया कि मैं अपने कष्टों के शिखर पर थी और यदि वह काला जादू हो जाता तो मैं 45 वर्ष की आयु से अधिक जीवित नहीं रहती। गुरुजी से उस भेंट के पश्चात्, मेरा मुख, जो काला हो गया था – काले जादू का मुख्य चिह्न – अपने स्वाभाविक रंग में आने लगा। मैंने कोई 14 किलो वजन खोया। आज मेरी आयु 50 वर्ष से ऊपर है और आनंदमय जीवन व्यतीत कर रही हूँ।

100 वर्ष पश्चात् मीठा जल

इन 12 वर्षों से अधिक समय में हमने अनेक दिव्य कृपा होती हुई देखी हैं। एक बार चंडीगढ़ के निकट दब्कौरी ग्राम में हमने एक भूखंड लिया था। गुरुजी ने वहां ट्यूबवेल लगा कर सब्जियां उगाने के लिए कहा। पृथ्वी में जल की खोज आरम्भ हुई। खुदाई 420 फुट की गहराई तक हो गयी किन्तु जल नहीं मिला। सर्वेक्षण से पता लगा कि उस भूखंड में जल ही नहीं है। हमने दिल्ली जाकर गुरुजी को इस सर्वेक्षण से अवगत किया। गुरुजी ने उसी भूखंड पर एक अन्य स्थान पर खोदने के लिए कहा। वहां से इतना जल फूट कर बाहर आया कि पाइप टूटने को हो गये। आश्चर्यचनक रूप से वह मीठा था और उसमें से नीले कंकड़ निकल रहे थे। गुरुजी को धन्यवाद करने हम दिल्ली गये।

उन्होंने कहा कि गुरु नानक देव ने, जहाँ वह बैठे थे, उसके निकट से जल निकाला था; उन्होंने यहाँ 250 किलोमीटर दूर दिल्ली में बैठ कर जल निकाला है और यह जल 100 वर्ष के बाद आया है। दब्कौरी गाँव में सब अचंभित थे। गुरुजी ने चेतावनी दी कि यदि उसका जल बेचा तो वह कूप सूख जाएगा।

गुरुजी ने दिव्य विभूतियों के दर्शन करवाये

शेखों साहब, अध्यात्म ज्ञान में दक्ष, अपने बड़े भाई के साथ गुरुजी के दर्शन करने जालंधर आये। गुरुजी उन्हें अन्दर एक कमरे में ले गये। गुरुजी ने एक बिस्तरे को हीरों के जेवरों से भर दिया और उनमें से कोई भी उठाने के लिए कहा। गुरुजी से उन्होंने इन भौतिक वस्तुओं से दूर रखने के लिए निवेदन किया। फिर गुरुजी ने उनसे पूछा कि उन्हें क्या चाहिए। शेखों साहब ने उत्तर दिया कि वह गुरु नानक के दर्शन करना चाहते हैं। गुरुजी मुस्कुरा कर बाहर चले गये। डेढ़ मास के पश्चात्, एक दिन शेखों साहब अपनी पहली मंजिल के कक्ष में समाधि में थे जिसके दोनों द्वार अन्दर से बंद थे। गुरुजी उनके समक्ष उपस्थित हुए, उनको समाधि से चेतनावास्था में लाये और गुरु नानक देव के दर्शन दिये। पूरे 45 मिनट तक वह एक शय्या पर बैठे हुए उनके दर्शन करते रहे। वह उन्हें दसों सिख गुरुओं, मीरा और कबीर के दर्शन करवा चुके हैं। मंदिरों और गुरुद्वारों में लगे हुए उनके चित्र उनके वास्तविक रूप से भिन्न हैं, ऐसा शेखों साहब कहते हैं।

गुरुजी जीवन और मृत्यु नियंत्रित करते हैं। वह देवी देवताओं के दर्शन करवाते हैं और स्वयं को शिवरूप में दिखाते हैं। फिर वह कौन हैं? साक्षात परमात्मा! उन्होंने हमारे दुष्कर्मों की कर्माग्नि को नष्ट करने के लिए जन्म लिया है। फिर ऐसे एक गुरु की सेवा क्यों न करी जाये, जिनके बिना मन के द्वार नहीं खुल सकते हैं क्योंकि किसी और के पास उसकी चाबी नहीं है।

– श्रीमती सुक्खी, चंडीगढ़

जब मैंने ईश्वर का द्वार जोर से खटखटाया

आदरणीय गुरुजी महाराज, आपके कमल चरणों में नतमस्तक होकर, हार्दिक प्रेम और आभार से, मैं अपने अनुभव लिखने का साहस कर रही हूँ। कृपया मेरा मार्गदर्शन कीजिये। मैं जानती हूँ कि प्रति दिन, प्रति सेकण्ड, प्रति श्वास, जो मैं लेती हूँ आपकी दया के कारण हैं। फिर मैं आपके दिव्य उपकार के अनुभव कहाँ से लिखना आरम्भ करूँ? आपके प्रेम पर मैं सहस्रों ग्रन्थ लिख सकती हूँ। नम्रतापूर्वक मैं अपने अनुभव उनके साथ बाँट रही हूँ, जिन्हें आपके द्वार पर पहुँच कर आपकी दिव्य आभा देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

गुरुजी महाराज पूरी सृष्टि में हैं और पूरी सृष्टि उनमें समायी हुई है। इस जगत में उनकी दिव्यता के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वह सर्वविद्यमान हैं। यह फैलती हुई सृष्टि एक फूलते बुलबुले के समान हे, जो फूटने को तत्पर है, किन्तु, जब तक वह हमारे जीवन में हैं, नहीं फूटेगा।

‘‘हे प्रभु, आप मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकते थे?’’

विवाह के कई वर्ष तक डेविड और मेरी संतान नहीं हुई थी। हम अत्यंत निराश थे और स्त्री रोग विशेषज्ञ से उपचार भी करवा चुके थे। फरवरी 1991 में, मैं भारत से एक शिशु गोद लेने का विचार कर रही थी। मैंने डब्लिन में, 48, सर्पेंटाइन मार्ग पर स्थित, गुरुद्वारा साहिब श्री गुरु नानक दरबार में जाकर प्रभु से बात करने का निश्चय किया। गुरुद्वारे पहुँच कर मैं उनसे वार्ता करने लगी। मैंने उनको कहा कि वह मेरे पिता हैं और मैं उनकी पुत्री – मेरी एक ही समस्या है। मैंने उनसे निवेदन किया कि मेरे लिए न सही, मेरे पति के लिए एक संतान दे दें। उन्हें भी गोद लिया गया था और उन्हें किसी को अपनी संतान कहने में अति सुख मिलेगा। प्रार्थना स्वर्ग की ओर भेजकर, आत्मविश्वास के साथ मैं वापस घर आ गयी।

एक माह के पश्चात् मुझे अपने गर्भवती होने का बोध हुआ। मैंने अपने परामर्शदाता चिकित्सक, डा. लेनेहन, और अपने पारिवारिक चिकित्सक को फोन पर अपने गर्भवती होने की सूचना दी। उन्होंने मुझे गर्भ परीक्षण करवाने की सलाह दी क्योंकि मेरे जैसे रोगियों में छाया गर्भ होने के आसार भी पाये जाते हैं। मैंने उत्तर दिया कि मुझे 100 प्रतिशत विश्वास है और मैंने बाबाजी गुरु नानक को उनके आशीर्वाद के लिए धन्यवाद दिया। नौ माह उपरान्त मैंने एक सुन्दर सी बेटी को जन्म दिया। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण छा गया।

समय व्यतीत होने के साथ मुझे लगने लगा कि मेरी बच्ची के साथ कुछ अनहोनी हो रही है। मैं पराचिकित्सिका का प्रशिक्षण ले चुकी हूँ और मुझे प्रतीत हुआ कि वह आँखों से संपर्क स्थापित नहीं कर रही थी। वह सुन नहीं सकती थी, मुस्कुराती या हँसती नहीं थी, ध्वनि नहीं करती थी; और, अन्य हरकतें, जो उसकी आयु के शिशु कर सकते हैं नहीं कर रही थी। मैं अपने आप को डांटती थी कि मैं कार्य पर नहीं हूँ और अपनी ही संतान में शिशुओं के बढ़ने के चिह्न ढूंढ रही हूँ। मैंने

अपने आप को कहते हुए सुना, ''तुम माँ हो, यह तुम्हारी संतान है, रोग ढूंढना बंद करो – घर पर तुम चिकित्सालय या गहन सेवा केंद्र में कार्यरत नहीं हो।'' परन्तु मेरी आत्मा इतनी व्याकुल थी कि मैं उसको परीक्षण के लिए ले गयी। विशेषज्ञ ने, आकस्मिक मार्ग अपनाते हुए, उसे तुरन्त देश के सर्व प्रसिद्ध स्नायु रोग विशेषज्ञ के पास भेजा, और हमारी कठिनाईयाँ आरम्भ हो गयीं।

सी टी स्केन, मस्तिष्क स्केन, ई सी जी इत्यादि अनेक परीक्षण हुए और अंततः चिकित्सक ने निष्कर्ष सुनाया कि उसे प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात है। हमें बताया गया कि शीना कभी बैठ या चल नहीं पायेगी और समय के साथ उसकी मुखाकृति विकृत हो जायेगी। शारीरिक और मानसिक रूप से वह विकलांग रहेगी। मेरे पति डेविड अत्यंत व्यथित थे। मैं अन्दर से ध्वस्त हो गयी थी, और आवेश में आकर मैं चिल्लायी, ''हे प्रभु, आप मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकते थे? कैसे? प्रभु, आप मेरे पिता नहीं है।'' डेविड ने मेरे मुँह पर हाथ रख कर कहा कि ईश्वर के बारे में इस प्रकार से बात नहीं करी जाती है। जितना आश्वस्त होकर वह कह सकते थे, उन्होंने कहा कि शीना स्वस्थ हो जायेगी।

मैं शीना को उठा कर घर वापस आ गयी। मैं उस बावली स्त्री की भांति थी जिसे स्नायु विकार हो गया हो। मेरे मुख पर अश्रुधारा बहे जा रही थी। मैं भगवान पर क्रोधित हो रही थी और अंत में मैंने डेविड को पूजा कक्ष में जाकर ग्रन्थ साहिब को बाहर फेंकने के लिए कहा। मैं चिल्ला रही थी, ''इस संसार में कोई ईश्वर नहीं है।'' डेविड ने उत्तर दिया, ''सुक्खी, यदि तुम ईश्वर को अपने जीवन से निकालना चाहती हो, वह तुम्हारी इच्छा है। मुझे यह पाप करने को मत कहो – मुझे अभी भी उसमें आस्था है।'' ''तो मैं गुरुद्वारे जा रही हूँ और बाद में लौटूंगी,'' इतना कह कर मैंने शीना को उठाया और चल पड़ी। मेरी बहन एमी हमें कार में गुरुद्वारे ले गयी। मैंने शीना को गुरु ग्रन्थ साहिब महाराज के निकट लिटाया और पागल बच्चे की भांति हरकतें करने लगी। मैंने सतगुरु से असंतोष प्रकट किया, ''आपने कहा था कि आप मेरे पिता

हैं। आप मुझसे प्रेम करेंगे, मेरी रक्षा करेंगे और मेरा ध्यान रखेंगे – क्या इसे ध्यान रखना कहते हैं? आपने मुझे एक सुन्दर सी संतान देकर कृतार्थ किया और आपने उसकी शरीर का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग ले लिया, उसका मस्तिष्क। आप ऐसा कैसे कर सकते थे?'' मैं रोये जा रही थी। ज्ञानीजी ने सोचा कि मैं पागल हो रही हूँ। फिर मैंने कहा, ''हे भगवान! हे अकाल पुरुष! मैंने अपने पूरे जीवन आपको प्रेम किया है। यदि आप वास्तव में हैं, आप मुझे अपने अस्तित्व का प्रमाण देंगे कि आप मुझे सुन रहे हैं; यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो मैं आप से फिर कभी प्रेम नहीं करूँगी। मेरे लिए आप का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। मैं इस बच्ची से प्रेम करूँगी।, इसका ध्यान रखूंगी, और इसके लिए जो उचित होगा करूंगी, किन्तु आप से कभी प्रेम नहीं करूँगी।''

मेरा इतना कहना था कि शीना ने अपना नन्हा हाथ उठा कर मेरे गाल पर मारा। इस समय तक शीना के हाथ इतने कमजोर थे कि वह उसके वक्ष पर ही रहते थे। मुझे उन्हें उठा कर उनका व्यायाम कराना पड़ता था क्योंकि वह स्वयं उनको हिला नहीं पाती थी।

मैं उत्तेजित थी, मुझे पता था कि प्रभु ने उत्तर दिया है।

मैं उनके चरणों में गिर पड़ी, उनसे क्षमायाचना करी और ज्ञानीजी को गुरु ग्रन्थ साहिब से एक बाख (वाक्य) निकालने को कहा। दिव्य सन्देश था कि समय के साथ सब ठीक हो जाएगा। अतः मैंने शीना को उठाया और घर आ गयी। मैं गुरु नानक देव (अकाल पुरूष) से शीना को स्वस्थ करने के लिए प्रार्थना करने लगी। ताकि वह अपने कमरे से हमारे कमरे तक आ सके, भूख लगने पर अपने मुंह और पेट की ओर ऊँगली कर सके, या फिर, यदि उसके शरीर के किसी भी अंग में पीड़ा है तो उस ओर ऊँगली कर सके। मैं इतनी ही कामनाएँ कर रही थी, क्योंकि मुझे लगता था कि वह मानसिक रूप से अविकसित थी, और संभवतः प्रभु हमारी इतनी ही आकांक्षा पूर्ण कर सकेंगे। डेविड प्रभु से उसको स्वस्थ करने के लिए प्रार्थना करते थे। उनके मन में मेरे से अधिक विश्वास था।

अविश्वसनीय, शीना चल रही थी

मेरी बहन, एक बाल रोग विशेषज्ञ, इंगलेंड से डेविड को शीना के रोग की गंभीरता समझाने आयी। उसने कहा कि शीना शारीरिक रूप से विकलांग रहेगी और समय के साथ उसकी मुखाकृति विकृत हो जायेगी। उसने डेविड को स्थिति से समझौता करने के लिए कहा। वह विचलित अवश्य हुए, फिर भी उनको विश्वास रहा कि प्रभु की दया से सब ठीक हो जाएगा। जो उनको बताया गया उसे सुनकर वह व्याकुल भी हुए। इस समय प्रभु के साथ मेरी यात्रा, मेरी आध्यात्मिक यात्रा, आरम्भ हुई।

मैंने ईश्वर के शब्द को स्वीकार किया और निश्चय किया कि मुझे अमृत वेला में प्रार्थना करनी चाहिए। अर्ध रात्रि दो बजे, बिना शोर किये उठ कर, मैं अपने हाथ और पैरों पर स्नानागार तक जाती थी और हाथ मुंह धोकर प्रार्थना करती थी। मैं उनको कहती थी कि मैं उनके पास स्वच्छ होकर आयी हूँ, स्नान करने से मेरे पति उठ जाते और क्रोधित होते और फिर मेरी प्रार्थना असफल रहती। फिर मैं चुपचाप बिस्तरे में, डेविड के उठने से पहले आकर सो जाती। यह सत्रह माह तक चलता रहा। इस अवधि में शीना के विभिन्न उपचार एवं चिकित्साएँ चलती रहीं – शारीरिक, मानसिक, वाच इत्यादि। घर में हम पहिये वाली कुर्सी और लिफ्ट लगाने का विचार करने लगे थे।

एक शाम को मैं 'रहरास साहिब पाठ' बाबाजी को अर्पण कर रही थी और मेरी बहन अमरजीत नीचे शीना को देख रही थी। अचानक मैंने उसे चिल्लाते हुए सुना, ''सुक्खी, शीना चल रही है।'' मुझे उसका कहा समझ नहीं आया और मैं उससे पाठ में अड़चन डालने के लिए नाराज हुई। पाठ पूरा कर मैं नीचे गयी – मेरी आँखों के सामने शीना एक कुर्सी से दूसरी कुर्सी तक दौड़ रही थी।

एक चमत्कार हुआ था जो वैज्ञानिक रूप से असंभव था। वह खुल कर मुस्कुरा रही थी। डेविड जब काम से लौटे तो हम तीनों प्रभु को

धन्यवाद देने भूमि पर नतमस्तक हो गये। जो कुछ हो रहा था वह अविश्वसनीय था। वह चल रही थी। हमने उसे बार बार वही करने के लिए कहा। प्रसन्नता से हम रो पड़े, ईश्वर ने हमारी प्रार्थनाएँ स्वीकार कर ली थीं। हमने गुरुद्वारे जाकर प्रभु को धन्यवाद दिया। अपनी बच्ची की सहायता के लिए, चिर काल से चली आ रही तप कर वरदान मांगने की प्रथा को मैंने पा लिया था।

उस दिन से मैंने बाबाजी के कक्ष में ज्योत जलाना आरम्भ कर दिया और उसके द्वारा उनके दर्शन की अभिलाषा प्रकट करी। यह मेरे प्रेम की ज्योत थी।

आयरलैंड में मेरी बेटी ने मुझे बुलाया है

जीवन बीत रहा था। अचानक 1995 में मेरी माँ रूग्ण हो गयीं। उनका रक्त प्रवाह अत्यंत वेग से हो रहा था और चिकित्सक ने कहा कि गर्भयोच्छेदन द्वारा उनका गर्भाशय निकालना पड़ेगा। प्रशिक्षित पराचिकित्सिका होने के कारण मेरी माँ ने मुझे घर आकर उनकी सहायता करने के लिए कहा। मैंने उन्हें शीना के रोग की गंभीरता के बारे में नहीं बताया था। कुछ समय पूर्व ही डेविड भी अपनी नौकरी से हाथ धो बैठे थे। फिर भी हमने निश्चय किया कि शीना और मैं भारत जायेंगे।

यद्यपि शीना प्रगति कर रही थी, उसके विकास में दो क्रियाएं शेष थीं। एक, वह बोल नहीं पा रही थी और दूसरे, वह सामान्य भोजन नहीं कर रही थी। फलस्वरूप उसे विशेष खाद्य पदार्थ देने पड़ते थे। भारत में रहते हुए उसके लिए यह विशेष वस्तुएं आवश्यक थी। इसका अर्थ था – यात्रा में अधिक सामान।

हम विमानपतन पर अपने अधिकार से अधिक सामाने ले कर पहुंचे। विमान कर्मचारी अधिक वजन के लिए पैसे की मांग कर रहे थे। हमारे लिए यह संभव नहीं था, मैं चिंतित हो गयी। मैं अन्दर ही अन्दर रो रही थी, ‘‘हे प्रभु, कुछ कीजिये। वहां पर मेरी माँ रोगग्रस्त हैं और

यहाँ पर मेरी बेटी। मेरे पास देने के लिए पैसे नहीं है, मैं क्या करूँ?'' स्पष्टतया उसी समय गुरुजी, जिन्हें मैं इस समय तक जानती नहीं थी, ने चंडीगढ़ में संगत को कहा कि बेटी ने उन्हें आयरलेंड में बुलाया है और उन्हें वहां जाना है। इसी समय कर्मचारी ने मेरी ओर मुड़ कर कहा कि मैं आगे जा सकती हूँ। उसने यह भी कहा कि अधिक सामान के लिए कोई अतिरिक्त व्यय नहीं करना है। मैंने अकाल पुरुष को उनकी सहायता के लिए धन्यवाद दिया और इस बारे में और अधिक नहीं सोचा।

मेरी छोटी बहन ने मुझे गुरुजी महाराज के दर्शन करने के लिए विनती की थी। मेरी माँ की शल्य क्रिया से पूर्व उनके कमरे में तीव्र सुगन्ध मिली। शल्य क्रिया में माँ के शरीर से निकला हुआ गर्भाशय श्वेत रंग का हो गया और यह ठीक थीं। केंसर के कोई चिह्न नहीं थे। उस समय हमने इन घटनाओं के बारे में कुछ नहीं सोचा। किन्तु अब, पुनरावलोकन करते हुए, लगता है कि उस समय हमने उन्हें नहीं पहचाना और उनको अपने हृदय में स्थान नहीं दिया।

शीना के पहले शब्दः वाहे गुरु

एक दिन माँ की, शल्य क्रिया के बाद मैं, चंडीगढ़ के सेक्टर 35 में अपने भाई के घर बैठी हुई थी जब मैंने कुछ लोगों को गुरुजी के बारे में बातें करते हुए सुना। उनमें मेरी भाभी के भाई गिक्की भी थे, जो गुरुजी के भक्त हैं। मुझे प्रतीत हुआ कि कोई मुझे बुला रहा है। मैंने पूछा कि क्या मैं गुरुजी से मिल सकती हूँ। मेरे परिवार वाले चकित रह गये क्योंकि मैं कभी किसी पंडित, पुजारी, संत और धार्मिक लोगों के पास नहीं जाती थी। मैं गुरु नानक के उपदेशों का अनुसरण करती थी और उन्होंने ऐसे लोगों के पास जाने को मना किया था। उन्होंने कहा, ''सुक्खी, हमने कभी तुमसे इस बारे में पूछा नहीं था क्योंकि तुम इनमें विश्वास नहीं करती हो।''

उस शाम जब मैं गुरुजी के पास गयी और कार से उतर रही थी

तो गुरुजी ने संगत को बताया, *''बेटी आयी है।''* उनके मंदिर में प्रवेश कर के मैंने उनके कमल चरणों को स्पर्श किया। उन्होंने मुझे दिव्य प्रसाद दिया और बैठने के लिए कहा। वह उठ कर मेरे पास आकर बैठ गये और उन्होंने मेरे रोगों, मेरी शल्य क्रियाओं, आयरलेंड में मेरे घर, उसकी सजावट, प्रत्येक कमरे की वस्तुएं, खिलोने, भोजन करने के बर्तन आदि अनेक वस्तुओं के बारे में विस्तार से बताना आरम्भ कर दिया। मैं स्तब्ध थी। फिर गुरुजी ने कहा कि वह वहीं हैं, अपने रंग रूप में, एक जमा एक दो ही होते हैं, तीन नहीं; उन्हें बहुत कुछ दिखाना और सिद्ध करना शेष है। मेरे साथ बैठी एक महिला ने मुझे कहा – गुरुजी ने उन्हें बताया था कि मैंने ईश्वर के द्वार पर इतनी जोर से दस्तक दी कि मेरी बेठी स्वस्थ हो गयी; इसीलिए मुझे गुरुजी का आभारी होना चाहिए।

स्तब्ध होने के साथ मैं विस्मित भी थी – यह तो ईश्वर और मेरी आपस की बात थी, गुरुजी को इस बारे में कैसे पता?

मैंने उनकी ओर देखा। पहले मैंने प्रश्न किया कि क्या यह वास्तव में हो रहा है और फूट फूट कर रोने लगी। किसी भी व्यक्ति या दिव्य पुरुष के लिए मेरे और परमात्मा के साथ आपस में हुई बातों का पता नहीं लग सकता था – यानी मैं अमृत वेला में उठ कर अपनी बेटी के स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करती थी – मैंने मन ही मन गुरुजी से प्रश्न किया, ''आप कौन हैं? क्या आप वही हैं जो मैं सोच रही हूँ?'' एक अत्याधिक चौंधियाने वाली आभा ने मुझे और पूरे कमरे को घेर लिया। मैं उनके चरणों में गिर पड़ी और बार बार कहने लगी, ''क्या आप वही हैं जो मेरे मन में है?'' और फिर मैंने कहा, ''हे सर्व विद्यमान प्रभु, मेरी बेटी को ठीक करने के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद।''

उसकी मुस्कुराहट कितनी सुन्दर थी। उस मुस्कराहट से ईश्वर से सम्बन्ध स्थापित हो गया था। उनकी आँखें वाह्य संसार से नाम मात्र के सम्बन्ध का संकेत देती हुई आधी खुली हुई थीं और अपने अंतर्ज्ञान से

सम्बन्ध स्थापित करती हुई आधी बंद थीं। फिर मैंने क्षमा मांगी और पूरी संगत को देखने के लिए पीछे जाकर बैठ गयी।

मैंने अपने आस पास बैठे हुए लोगों से गुरुजी के बारे में अपने निजी अनुभव कहने के लिए विनती करी। जो कुछ मैंने सुना, यह बिलकुल मेरे नानाजी और पवित्र पुस्तकों, और गुरु ग्रन्थ साहिब की सीख के अनुरूप था। मेरी राय में गुरुजी गुरु नानक समान हैं। जैसे ही मैंने यह सोचा गुरुजी ने मुझे आगे बुलाया और कहा कि सुक्खी, तुम्हें आने वाली बैसाखी सदा याद रहेगी। मेरे लिए बैसाखी का अर्थ केवल फसल कटने का समय था।

गुरुजी के चारों ओर मुझे गुलाब और लेवेंडर पुष्पों की सुगन्ध आ रही थी। लोगों ने मुझे गुरुजी के पैर और हाथ सूंघने के लिए कहा – वह उसी सुगन्ध से भरे हुए हैं। उनके चरणों को छूते ही मेरे हाथ उस सुगन्ध से भर गये। मैं अचंभित रह गयी। गुरुजी ने मेरी ओर मुड़ कर कहा, *''बेटी, ऐ अमरत है''*। उसी समय वह मेरे आस पास उपस्थित लोगों का उपचार कर रहे थे और जैसे ही कोई रोग निवृत होता था, वह मुस्कुराते थे। रात्रि के अंत में मैंने अपना सिर उनके कमल चरणों में रख दिया। जब सिर उठाकर मैंने उनकी आँखों में देखा तो उनके चक्षुओं से दो किरणें निकल कर मेरी ओर आयीं; उनमें सितारे भरे हुए थे। मुझे आभास हुआ कि वह कौन हैं। बचपन से मुझे सदा लगता था कि प्रभु मेरे पास किरणों के मार्ग से आयेंगे और वह सितारों से भरी होंगी।

घर चलते हुए गुरुजी ने मुझे अगले दिन शीना को लाने के लिए कहा। मैंने उत्तर दिया कि यह कठिन होगा क्योंकि वह कुछ नहीं खायेगी, लोग उसको घूरेंगे पर अंत में यह भी कह दिया कि मैं उनके निर्देशों का पालन करूँगी। अगले दिन मैं शीना को लेकर गुरुजी के पास आयी। जब हम सेक्टर 33 में गुरुजी के मंदिर की ओर जा रहे थे, शीना मेरा हाथ छोड़ कर गुरुजी की ओर भागी। वह उनके कमल चरणों में नतमस्तक हुई और बोली, ''वाहे गुरु।'' मेरी बच्ची पहली बार बोली थी। मेरी आँखों में आँसू आ गये। गुरुजी ने शीना को ले जाकर लंगर

करवाने को कहा। मैं उसको लंगर हॉल में ले गयी और उसके मुंह में चपाती का एक छोटा सा कौर डाला, जो वह खा नहीं सकी। जब हम गुरुजी के पास वापस आये तो उन्होंने पूछा कि क्या उसने कुछ खाया है। मैंने मना किया। वह बोले कि मैंने उसके मुँह में एक छोटा सा टुकड़ा ही डाला था। उस दिन से मेरी बेटी को कोई समस्या नहीं है – प्रभु के द्वार पर सब मिल गया था।

अकल्पनीय बैसाखी

प्रातः काल गुरुजी सुखना झील के किनारे भ्रमण करने जाते थे। कार में से उनके पैर निकलते ही दूर दूर तक, जहाँ तक दृष्टि जाती थी, मोर जोर जोर से गाने लगते थे। गुरुजी झील के किनारे चलते थे किन्तु उनके आगे बढ़ते हुए पैर भूमि को नहीं छूते थे।

बैसाखी के दिन गुरुजी संगत के कुछ सदस्यों के साथ मुझे भी गुरु सवारी बना कर ले गये। अचानक वातावरण परिवर्तित हो गया। गुरुजी ने मुझे कहा, *''सुक्खी, देख कौन आये हैं, सुक्खी, देख कौन आये हैं''*। कार के शीशे से मैंने गुरु नानक देवजी और शिवजी को देखा। मैंने फिर देखा और अपने आप को चुटकी मारी, यह देखने के लिए कि गुरुजी ने मेरे ऊपर कोई जादू तो नहीं किया था। मुझे पता है कि मैंने उस दिन गुरुजी के साथ क्या देखा।

मैं गुरु नानक को दर्शन देने के लिए धन्यवाद करती हूँ, और, उससे भी अधिक, मेरी बच्ची को नव जीवन देने के लिए। मैंने यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि मेरी प्रेम ज्योत से इस जन्म में मुझे बाबाजी के दर्शन हो जायेंगे। प्रसन्नता और प्रेम से पागल होकर मैं सबको गुरुजी के बारे में बताना चाहती थी और अभी भी वही कर रही हूँ। मुझे आशा है कि यह पढ़ने वाले भी सोच रहे होंगे, ''यह कौन हैं? गुरुजी कौन हैं?'' वह ईश्वर हैं और हमारी रक्षा करने आये हैं।

उस दिन शाम को बैसाखी का समारोह था। कुछ अनुयायियों से गुरुजी ने मेरे बारे में पूछा। मैं घर पर थी। उनका अस्तित्व जानने के

पश्चात् मैं उनका सामना करने का साहस नहीं जुटा पा रही थी। अंततः मुझे बुलाया गया और मेरे पहुँचने पर मेरे पर प्रेम की वर्षा करी गयी। मैं प्रिय प्रभु की आत्मा को देखना चाहती थी।

बैसाखी के एक दिन उपरान्त गुरुजी ने मुझे कुछ मांगने के लिए कहा। मैंने उत्तर दिया कि आपने मुझे सब कुछ दे दिया हैं, मैं ही आपको पहचान नहीं पा रही थी। उनके पुनः कहने पर मैंने उनसे अपनी बहन अमरजीत को स्वस्थ करने के लिए कहा जो गठिये से पीड़ित थी। एमी को अपनी पीड़ा के कारण काम करने में कष्ट होता था। औषधियों के साथ वह अपनी कलाई पर स्वर्ण के इंजेक्शन भी लेती थी। गुरुजी ने उसका चित्र लाने के लिए कहा। उन्होंने भविष्यवाणी करी कि वह मुझे फोन करेगी और मैं उसको सब औषधियाँ फेंकने के लिए और अब वह स्वस्थ है, ऐसा कहूँ। समय के साथ पता लगा कि गुरुजी ने, यहाँ भारत में बैठे हुए, उसे आयरलेंड में ठीक कर दिया था। अगले वर्ष अपना आभार प्रकट करने वह गुरुजी के पास आयी थी।

एक और घटना हुई। एक दिन गुरुजी ने कहा कि डेविड मुझे फोन करेंगे और मैं उनको कहूँ कि फ्रिज काम नहीं कर रहा है और उसमें भोजन सड़ रहा है। वास्तव में उनका फोन आया और मैंने गुरुजी की कही हुई बात बतायी। किन्तु उन्होंने कहा कि वह घर पर ही हैं और फ्रिज ठीक काम कर रहा है। जब मैंने वापस जाकर देखा तो उसका फ्रीज़र ख़राब हो गया था और उसमें भोजन सड़ चुका था।

मयूर गान

समय आया जब मुझे आयरलेंड लौटना था – मुझे अपने गुरु से अलग होना था। उन्होंने कहा कि वह मेरे से दूरबोध द्वारा बात करेंगे। मै उदास थी क्योंकि मुझे इसका अर्थ समझ नहीं आया था। कालांतर में मुझे अभास हुआ कि वह वास्तव में दूरबोध से बात करते हैं। मैं उनसे बोलकर बात नहीं कर सकती थी। यदि कोई प्रश्न पूछती तो वह उसका उत्तर देते थे।

जिस दिन मुझे चंड़ीगढ से चलना था, हम रात को 2 बजे झील के किनारे घूमने गए। कोई मोर नहीं गा रहा था और हम उस शांति में झील के किनारे चल रहें थे। चलते हुए झील के किनारे सड़क का अंत आ गया तो मैंने गुरुजी से अपने हृदय में प्रश्न किया, 'मेरे उत्तर का क्या हुआ?' अकस्मात् एक मयूर गाते हुए सुनाई दिया। गुरुजी मुझे देखकर मुस्कुराये। मैं फिर भी नहीं समझी और डब्लिन के लिए चल पड़ी – गुरुजी की अत्यंत याद और कमी के साथ। अगले दिन प्रातः मैं प्रार्थना करने लगी तो उत्तर मेरे सम्मुख था – खिड़की पर बैठा एक मोर गा रहा था। मैं रो पड़ी, और, अब जब भी गुरुजी आसपास होते हैं तो अक्सर मोर के गाने की ध्वनि आती है। अन्य अवसरों पर उसके पंख मिल जाते हैं।

गुरुजी डब्लिन मेंः जींस और नीली टी-शर्ट में

मेरे आयरलैंड लौटने पर एक और अदभूत अनुभव हुआ। यह मेरे पति से संबंधित है जो प्रारम्भ मे गुरुजी पर विश्वास नहीं करते थे। किन्तु अंत में उनसे मिलने भारत आये थे। उन्हीं के शब्दों मेंः

1995, हेमन्त ऋतुः मैंने एक कपंनी के सूचना प्रौद्योगिक विभाग में एक नया उपकरण बेचने के लिये काम करना आरम्भ किया था। क्योंकि तकनीक नई और मंहगी थी मुझे पता था कि इसको बिकने में समय लग सकता है, किन्तु सफलता की आशा अवश्य थी। एक दिन मैंने डब्लिन के एक संस्थान में जा कर उसका प्रर्दशन किया। ग्राहक खरीदने को तत्पर था किन्तु अपनी मात्रा नहीं बता रहा था।

उसके बाद जब मैं एक पुल के उपर से जा रहा था तो मैंने गुरुजी को पैदल यात्रियों के पथ पर नीली डेनिम की जीन्स और नीले रंग के टी-शर्ट में देखकर आश्र्चयचकित रह गया। मैं इतना चकित हुआ कि मैंने कार को मोड़कर उनको फिर से देखने का प्रयास किया जिससे मैं उनको आदर दे संकू, परन्तु वह अन्तर्ध्यान हो चुके थे। मैंने घर जा कर सुक्खी को घटना के बारे में बताया – गुरुजी डब्लिन आये थे। इस

घटना से मुझे विश्वास हो गया कि मैं वह उपकरण बेच पाऊँगा। कुछ ही सप्ताह में उस ग्राहक ने वह वस्तु खरीद ली – यह कंपनी की पहली बिक्री थी।

कई मास के बाद डेविड को वक्ष में पीड़ा और हृदय रोग के संदेह में चिकित्सालय ले जाया गया, ई सी जी से स्पष्ट था कि उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। मैं गहन सेवा केन्द्र में काम कर चुकी थी, मुझे उनकी इस अवस्था से चिंता थी। मैंने सहायता के लिए गुरुजी को पुकार लगायी और डेविड को गुरुजी द्वारा अभिमंत्रित एक पेंडेण्ट दिया। डेविड की गंभीर अवस्था देखते हुए सब परीक्षण करने के लिये उन्हें गहन सेवा केन्द्र में रखा था। वहां पर लेटे हुए पहले उन्हें गुरुजी की सुगन्ध आयी और उसके पश्चात् नींद आने पर वह सो गये।

इस अवधि में मैंने गुरुजी को फोन किया। गुरुजी ने स्वयं फोन उठाया और बोले कि वह पहले ही डेविड के पास हो आये हैं और सब ठीक हो जायेगा; मैं चिंता नहीं करूँ। मैं डेविड की शय्या के किनारे आ गयी। जब वह उठे तो उन्होंने कहा कि उन्हें अच्छा लग रहा है और कोई दर्द नहीं है। सुगन्ध का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें गुरुजी के आने का आभास हुआ था। अब सब परीक्षण सही आये, उनमें हृदय रोग के कोई चिह्न नहीं थे। ई सी जी भी सामान्य था और उन्हें घर भेज दिया। उन्हें स्ट्रेस ई सी जी के लिये कहा गया; वह भी सामान्य आया। चिकित्सकों ने कहा कि उनका हृदय उनसे बहुत कम आयु के व्यक्ति सा था। मैं भावविभोर हो गई। अभी भी मैं प्रभु के बारे में जान रही थी। हम मनुष्य इतने अस्थिर और निर्बल हैं कि हम शीघ्र ही हार मान लेते है। प्रभु के मुख से निकला हुआ प्रत्येक शब्द स्वर्ण समान है और उसे गंभीरता से लेना चाहिए।

मेरे प्रभु की उपस्थिति

एक बार गुरुजी की संगत में प्रत्येक भक्त को एक चांदी का सिक्का मिला, जिसके एक ओर बाबा नानक का चित्र था और दूसरी

ओर गुरुजी के चरण। जब यह भारत में हुआ मुझे भी वह सिक्का आयरलैंड में मिला। यदा–कदा जब मैं प्रार्थना करती थी, मुझे उनके चित्र से मिश्री या लाल गुलाब मिलते थे। एक अवसर पर मेरी बहन अमरजीत ने उनके चित्र के सामने खड़े होकर कहा, "सुक्खी ही क्यों, मैं क्यों नहीं?' उसी समय गुरुजी के चित्र में उसने उनको अपनी पलक झपकाते हुए देखा। वह रोती बिलखती मेरे पास भागी हुई आयी कि उसने गुरुजी को ललकारा था और वह अत्यंत क्षमा प्रार्थी है।

फिर एक बार हम कार में देर रात घर वापस आ रहे थे। हमें लम्बी यात्रा करनी थी और कार में पेट्रोल बहुत कम था। हमें लग रहा था कि अगले आधे घंटे में ईंधन समाप्त हो जायेगा। एक घंटे की यात्रा के पश्चात् जब हम पेट्रोल पंप पहुंचे तो वह बन्द था। अब हमारे पास बिना पेट्रोल भरे चलने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं था और हम चल पड़े। दो घन्टे की यात्रा के बाद गुरुजी की कृपा से खाली पेट्रोल टैंक के साथ ही हम घर पहुंच गये।

गुरुजी ने मुझे गुरु नानक और शिव के संबंधों के बारे में भी बताया। कैसे गुरु नानक शिवरात्रि को शिव मंदिर में जा कर एक शिला पर बैठकर शिव को सुना करते थे।

प्रभु प्रेम की खोज में मेरा जीवन परिवर्तित हो गया है। उन्होंने सबसे कठिन अवसरों पर मेरी सहायता करी है। उन्होंने मुझे दिव्य जीवन, शक्ति, सुरक्षा, प्रेरणा, जीने की इच्छा और उनके दिव्य रूप को खोजने की लालसा दी है। मैं अच्छा बनने का प्रयास करती हूँ जिससे मैं उनके चरणों में रह सकूँ। मैं हृदय और आत्मा से उनसे प्रार्थना करती हूँ कि वह मुझे अपने कमल चरणों में आश्रय देते रहें, और उनकी लम्बी आयु की भी विनती करती हूँ जिससे वह सबकी आत्माओं को शुद्ध करते रहें। वह हमारे रक्षक हैं, हमारे कर्मों में वह हमारी सहायता करते है। मेरे जीवन का प्रत्येक क्षण उनके अनुभव से लिप्त रहता है। मैं उनके बारे में और लिख कर अपने अनुभव बांटती रह सकती हूँ। मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप स्वावलोकन करें और अपने जीवन

में गुरुजी का महत्त्व जानें। हम सब उनकी छत्रछाया में उनकी कृपा से ही है। अपने अनुभव लिखने में किसी भी त्रुटि के लिये मैं उनसे क्षमा मांगती हूँ। उनकी दया की अभिलाषा करते हुए मैं उनके संदेश सब में प्रसारित करती रहूंगी। हे प्रभु, मुझे अपनी संगत में और अपने कमल चरणों में स्थान दें।

–श्रीमती सुक्खी हैरिसन, डब्लिन (आयरलैंड)

जय गुरुजी

मैं पूर्ण रूप से निराश हो गया था। जीवन निरर्थक व्यतीत हो रहा था। प्रभु पर मेरी आस्था नहीं रही थी। मुझे लगता था कि ईश्वर नहीं है। मैंने मंदिरों में जाना और प्रार्थना करना बंद कर दिया था। जीवन बोझ लगता था, कई बार मैं सोचता था कि भगवान ने मुझे क्यों पैदा किया है: मुझे कष्ट में देखकर प्रसन्न होने के लिये? यदि कहीं ईश्वर थे भी, तो केवल पीड़ा पहुँचाने के लिये थे।

मेरी ऐसी अशुभ सोच होते हुए भी, गुरुजी ने मुझे अपनी शरण प्रदान करी। उन्होंने दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया, बच्चे की तरह मुझे पाला। मुझे इतना दिया कि मैं उनका धन्यवाद भी नहीं कर सकता। संभवतः मुझे कभी पता भी नहीं चलेगा कि उन्होंने मेरे लिये कितना किया है। उनके विदित आशीर्वाद तो सागर में बहते हुए हिमशिला के समान हैं – उनका एक भाग समुद्र तल के ऊपर और नौ भाग नीचे जल में छिपे रहते हैं। और यह सब तब किया जब मैं उसके योग्य भी

नहीं था – कभी भी मेरे कहे बिना, कभी भी मुझे यह आभास न देते हुए कि वह इतना कुछ कर रहें हैं।

केंसर के प्रकोप से मुक्ति

गुरुजी के प्रथम दर्शन का सौभाग्य हमें मार्च 1998 में पाप्त हुआ। मैं 24 वर्ष का था और मेरी न्यूरोब्लास्टोमा (एक प्रकार का कर्कट रोग) की शल्य क्रिया हो चुकी थी। मेरा जीवन प्रायः समाप्त था। मेरी माँ की एक सहकर्मी, व्यवसाय से दोनों चिकित्सक, ने गुरुजी के चमत्कारिक उपचार के बारे में बताया था। स्वभाविक था कि बिना किसी पूर्व अनुभव के मैं संशय में था। उनके निर्देश के अनुसार गुरुजी को मेरी स्थिति से अवगत कराया गया। गुरुजी का उत्तर मात्र, *'कल्याण कित्ता'* था। उस समय हमें इन शक्तिशाली शब्दों के अर्थ का ज्ञान नहीं था। गुरुजी का कहा शाश्वत् सत्य होता है। यह जानने के लिए कि मुझे दिव्य वरदान मिला था, समय लगा। मुझे लंगर और प्रसाद मिल रहे थे; यह गुरुजी के उपचार के यंत्र थे। परिणाम सबके देखने योग्य थे। अविश्वसनीय रूप से स्वास्थ्य लाभ हो रहा था। कुछ माह के पश्चात् दिव्य उपचार सर्वविदित हो गया। शल्य क्रिया के छः माह पश्चात् रोग की स्थिति के परीक्षण के लिये मैं सी टी स्केन के लिये गया था। स्केन में पता लगा कि शल्य क्रिया के तुरन्त बाद किये गये स्केन में देखे गये तीनों संदिग्ध चिह्नों के गुर्दे, यकृत और उदर पर, कोई भी आसार शेष नहीं थे। चमत्कार हो चुका था। मेरा शरीर कर्कट रोग के प्रकोप से मुक्त हो गया था। कालांतर में मैं बिल्कुल रोग मुक्त हो गया था। आज उसे हुए एक दशक बीत चुका है। न केवल वह रोग समाप्त हो गया, गुरुजी की दया से मेरा स्वास्थ्य भी ठीक है। मेरी औषधियाँ केवल लंगर और चाय प्रसाद हैं। वही चिकित्सक जो मेरे केंसर समाप्त होने के बारे में सदेंह का भाव रखते थे, कहने लगे कि कभी केंसर था, भूल जाऊँ। उनको यह कहने की आवश्यकता नहीं है। मुझे पता है कि गुरुजी ने मुझे नवजीवन प्रदान किया है।

फगवाड़ा से दिल्ली तक खुली आँखों से सोते हुए

फरवरी 2002 में गुरुजी ने हमें फगवाड़ा में एक विवाह में जाने का निमंत्रण दिया। फगवाड़ा दिल्ली से कई सौ किलोमीटर दूर है। मैं अपने माता पिता के साथ विवाह में गया था। विवाह के दिन हम प्रातः दिल्ली से चले और संध्या तक वहाँ पहुँचे थे। गुरुजी भी वहाँ पर नव दम्पति और संगत को आशीर्वाद देने आये थे। समारोह के पश्चात् गुरुजी ने जनरल मल्होत्रा, एक अन्य परिवार जो दिल्ली से आया था, और हमें रात भर वहाँ रुकने को मना किया और तुरन्त वापस दिल्ली जाने के लिए कहा। हमने उनके आदेश का पालन किया।

हम रात्रि को 12.30 दिल्ली बजे के लिए निकले । हम जनरल मल्होत्रा की जिप्सी गाड़ी के पीछे थे और मैं कार चला रहा था। चलने के तुरन्त बाद मेरे माता पिता सो गये। पंद्रह मिनट के पश्चात् मुझे भी नींद के झौंके आने लगे। रात का समय था और राजमार्ग पर बहुत कम अन्य गाड़ियां थी। हम 100 किलोमीटर से ऊपर की गति से जा रहे थे। जैसे जैसे समय व्यतीत होता गया मुझे और जोर से नींद आने लगी। मैं अपने पिता को नहीं जगा सकता था क्योंकि वह दिन भर गाड़ी चला कर थके हुए थे और हमें गुरुजी के निर्देशों का पालन करना था। अतः यात्रा तो करनी ही थी।

तीन बार मेरी नींद झटके से टूटी जब हमारी गाड़ी पक्की सड़क से कच्चे पर जाने लगी थी। हर बार मैं आराम से वापस मुख्य मार्ग पर आ गया। एक बार कार रोक कर मैंने मुँह भी धोया पर उससे अधिक सहायता नहीं मिली। मैं पूरी रात गाड़ी चलाता रहा। बड़ी कठिनाई से मैं अपना सिर सीधा रख पा रहा था। स्टीयरिंग पर दोनो हाथ रखे हुए मेरी आँखे आगे जा रही जिप्सी के पीछे की बत्तियों पर टिकी हुई थीं। यद्यपि मैं उससे दूरी बनाये हुए था, मुझे पता था यदि उसने ब्रेक लगायी तो संभवतः मैं समय से पहले रोक नहीं पाऊंगा। मुझे यह भी आभास है कि उस रात हमने कोई शहर पार नहीं किया, न ही सामने से किसी

गाड़ी को आते हुए देखा। प्रातः दिल्ली पहुँच कर मैंने अपने पिता को कार चलाने के लिए कहा क्योंकि यह अब मेरे लिये संभव नहीं था।

उस रात क्या मैं गाड़ी चला रहा था? या कोई अदृश्य शक्ति ने इतने सौ किलोमीटर तक गाड़ी को सही मार्ग पर रखा था? आज भी जब मैं यह प्रसंग अन्य लोगों को सुनाता हूँ तो वह सोच में पड़ जाते हैं। उस रात कुछ भी हो सकता था पर मुझे पता था कि गुरुजी सदा हमारी रक्षा कर रहे हैं, चाहे हम जग, सो या वाहन चला रहे हो। किन्तु–परन्तु सोचे बिना हमें उनके कथन का पालन करना है। उनकी कृपा होते हुए हमें सफलता अवश्य मिलेगी। यद्यपि यह प्रतीत होता है कि हम कुछ कार्य कर रहे है, वास्तव में कार्य गुरुजी कर रहे होते हैं। मैं केवल कह सकता हूँ – धन्यवाद गुरुजी।

विवाह की योजना

मेरे केंसर के उपचार के पश्चात् गुरुजी अक्सर मेरे माता पिता से कहते थे, *"मुंडे दा ब्याह करा दो"*। खोज करी गयी पर निष्फल रही। कहीं भी बात नहीं बन रही थी। उन्होंने गुरुजी को बताया तो वह बोले *''तैनू पंजाबी कुड़ी दिलाऊँगा''*। क्योंकि हम किसी पंजाबी परिवार को नहीं जानते थे, हमने गुरुजी से पूछा कि क्या विज्ञापन दे दें। मना करते हुए वह बोले, *''चिंता न कर, हो जाऊगा''*। हमें गुरुजी का तात्पर्य समझ नहीं आया। क्योंकि मैं किसी सामाजिक समारोह में नहीं जाता था और कार्यालय में मेरे अधिकतर मित्र अन्यत्र चले गये थे, हम सोचते रहते थे कि यह कैसे संभव होगा।

मैं कार्यालय के भोजन कक्ष में बहुत कम जाता था। एक दिन जब मैं अपने कुछ सहकर्मियों के साथ वहाँ गया था, एक लड़की ने आकर मुझसे, मेरे एक मित्र, दीपक का पता पूछा। मैंने उसे बताया कि दीपक कुछ समय पहले यह नौकरी छोड़ चुका था। उस लड़की, छवि, ने अपना एम सी ए का प्रशिक्षण दीपक के निर्देशन में पूरा किया था। अब एक वर्ष पश्चात् उसे यहीं पर स्थायी पद मिल गया था। शीघ्र ही हम

दोनों एक दिशा में चल पड़े। गुरुजी से इस सम्बन्ध के बारे में पूछने पर उन्होंने अपना आशीर्वाद दे दिया। क्या यह कहने की आवश्यकता है कि छवि, जैसे गुरुजी ने तीन वर्ष पूर्व कहा था, एक पंजाबी परिवार से है?

हमारे बुरे ग्रहों के प्रभाव का अंत

विवाह के उपरान्त हमारी समस्याएँ शुरू हो गयीं। सब गलत होता लग रहा था। छोटी मोटी बातों पर हम लड़ने झगड़ने लगते थे। इनका स्त्रोत कुछ भी हो सकता था; या तो हम एक साथ नहीं होते थे, और जब होते थे, झगड़ा कर रहे होते थे। समय व्यतीत होने के साथ हमारे झगड़ों के प्रकार में भी वृद्धि होती रही। यहां तक हुआ कि हमने इस बारे में गुरुजी को बताना आरम्भ कर दिया। हम उनको कहते थे कि यदि इस प्रकार से जीवन व्यतीत होना है तो हमें विवाह नहीं करने देना चाहिए था। यह कोई दो वर्ष तक चलता रहा।

ऐसे समय में गुरुजी में विश्वास और आस्था बनाये रखने की अपेक्षा हमने एक और भूल करी। हम एक प्रसिद्ध ज्योतिषी के पास चले गये। जब हमने उन्हें अपनी जन्मपत्रियाँ दिखाईं तो वह बोले, ''तुम दोनो को इतने दिन जीवित रहने पर प्रसन्न होना चाहिए। तुम्हारी जन्मपत्रियाँ ऐसी है कि या तो दोनों में से एक ने दूसरे की हत्या कर दी होती या दूसरा विवाह करने की सोच रहा होता''। जैसे दुरुत्साहित करने के लिए इतना कम था, उसने एक और बुरी बात कही। वैवाहिक सामंजस्य के लिए 36 गुणों में से हमारे 10 गुण ही मेल खाते थे। सामान्यतः दम्पतियों के 30 गुण मेल करते हैं, हमारी संख्या का चिह्न तो शून्य से भी कम था। हम स्तब्ध रह गये।

यहाँ हम अदूरदर्शी बन रहे थे, और वहाँ गुरुजी हमारे लिए दूर द्रष्टा बने हुए थे। सब समस्याएँ जो हम पूर्ण जीवन सहते, अल्प काल में समाप्त हो गयीं। इस अंतराल में गुरुजी ने अपनी शक्तियों से हमारे विवाह को बचा कर रखा। उसके पश्चात् सब स्थितियां सुव्यवस्थित होने

लगी। समस्याएँ जिस प्रकार से आयीं थीं, उसी प्रकार से ओझल हो गयी। हमने अपने जीवन को व्यवस्थित करने के लिए कुछ भी नहीं किया था। गुरुकृपा से हमारी नियति पुनः लिख दी गयी थी। कालरात्रि बीत चुकी थी, यद्यपि इसके लिये प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। छवि के पिता, जो स्वयं जन्मपत्री देख लेते हैं और उनकी भविष्यवाणी सही सिद्ध होती थी, अब छवि के विवाह के उपरान्त, उसके लिये कुछ भी सही नहीं कह पाते। जन्मपत्री और वास्तविक जीवन में अंतर निश्चित होता है।

कार्य रोग से मुक्ति

एक बार अपने कार्य में मुझे अनेक समस्याएँ आ रही थीं, फलस्वरूप पूरी रात जागे रहते थे। मुझे अत्याधिक अम्लता और अनिद्रा रोग हो गये। मैं छुट्टी भी नहीं ले सकता था। यह पूरे एक सप्ताह तक चलता रहा। अगले सप्ताह जब मैं सोमवार को प्रातः जगा तो मेरे दायें पैर में एक विचित्र समस्या उत्पन्न हो गई थी। मैं उसे 100° से अधिक की मुद्रा में नहीं संभाल पा रहा था। जब भी मैं उसे उठाता था वह बेजान सा गिर जाता था और उसके स्नायु खींच नहीं पा रहे थे। पहले तो प्रतीत हुआ कि यह अस्थायी शिथिलता है पर जब पूरे दिन ऐसा ही रहा तो कोई बड़ी समस्या होने के आसार लगने लगे। मुझे अपने कार्यालय से छुट्टी लेनी पड़ी क्योंकि मैं ठीक से चल भी नहीं पा रहा था। चलने के लिये मुझे उस टाँग को खींचना पड़ रहा था। मैंने छुट्टी के लिये निवेदन किया तो वह तुरन्त स्वीकृत हो गयी। पिछले सप्ताह की व्यस्तता को देखते हुए यह असंभव लग रहा था।

अगले कुछ दिनों में मैंने चिकित्सालयों के चक्कर काटे, जहाँ अनेक स्नायु विशेषज्ञों के अनेक परीक्षण हुए। यद्यपि सब परिणाम सामान्य आये, समस्या फिर भी शेष थी। आश्चर्यजनक रूप से ऐसे समय मैं स्कूटर और कार चला सकता था। अपनी पत्नी को कुछ किलोमीटर दूर उसके कार्यालय तक छोड़ने के लिये यह मैंने किया भी।

क्योंकि जब मेरे पैर का कोण 100° से कम होता था मैं अपने रुग्ण पैर से काम ले सकता था – वह ब्रेक और गति नियंत्रित करने के लिये काम में लाया जाता है।

समस्या की गंभीरता और चिकित्सालयों में परीक्षण आदि करवाने के कारण मेरा मन कार्य संबंधी तनाव से हट गया। तीन सप्ताह के उपरान्त मैंने फिर से कार्यालय जाना आरम्भ किया। अब मैं मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ था। वह समस्या कैसे आई और कहाँ चली गयी, इसका कुछ पता नहीं चला। समस्या का कभी निदान नहीं हो पाया और उसका कोई उपचार भी नहीं हुआ था। इस शारीरिक समस्या से वास्तविक समस्या का अंत हो गया। गुरुजी को ही ज्ञात है कि हमारी समस्याओं को कब और कैसे अंत करना है। उनके कार्य करते हुए, पहेली के सब अंश सही स्थानों पर बैठ जाते हैं।

ईश्वर की गोद में

एक दिन मैं अपनी पत्नी को लेने उसके कार्यालय जा रहा था। देरी होने के कारण मैं 70 किलोमीटर की गति से वाहन चला रहा था। अकस्मात् एक व्यस्त चौराहे पर मेरे स्कूटर के पहिये के नीचे कुछ आ गया। टक्कर इतनी जोर से हुई कि मैं स्कूटर से उछल कर सिर के बल भूमि पर आ गिरा। तीव्र गति के कारण मेरे कंधे और सिर पर पूरा वजन आया और मैं स्कूटर सहित काफी दूर तक घिसटता चला गया।

उठने की स्थिति में आने पर मैं टैक्सी लेकर घर वापस आ गया। केवल मेरे पैर पर कुछ खरोंचे आईं थी और मेरे कंधे की हड्डी टूट गई थी; सिवाय इसके मैं ठीक था। इन चोटों को ठीक होने में मात्र एक सप्ताह का समय लगा।

गुरुजी की कृपा और सुरक्षा स्पष्टतः दृष्टिगोचर थी। यद्यपि दुर्घटना कार्यालय से लोगों के लौटने के समय एक अति व्यस्त चौराहे पर हुई थी, उस समय वहाँ पर कोई अन्य गाड़ी नहीं थी। जिस प्रकार से मै

भूमि पर गिरा था उससे सिर पर भयंकर चोटें आनी चाहिए थी या मेरी गर्दन टूटनी चाहिए थी जिससे मौत हो सकती थी। किन्तु मेरे मुँह पर एक खरोंच तक नहीं थी। जितनी दूर तक स्कूटर मेरे साथ घिसटता गया, उस बीच में तेजी से आती हुई कोई अन्य गाड़ी स्कूटर से टकराती या फिर सड़क पर बने हुए मार्ग विभाजक से मेरा सिर या शरीर टकराता पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। अंत में कंधे की टूटी हड्डी का एक सप्ताह में ठीक हो जाना चमत्कारिक ही कहेंगे।

इस घटना के एक सप्ताह के पश्चात् ही हमें अपना घर बदलना पड़ा था। जब मेरे माता पिता बाहर थे, मेरी पत्नी और मुझे घर का पूरा भारी सामान हिलाना और उठाना पड़ा था। मेरे कंधे ने उसका बोझ सरलता से उठा लिया। गुरुजी की सुरक्षा सब को अचंभित कर देती है। इससे पहले कि हमें विपत्ति का आभास हो, गुरुजी उससे सूरक्षा का प्रबन्ध कर देते हैं; या तो समस्या की गंभीरता कम हो जाती है अथवा उस समस्या का हमें कभी आभास ही नहीं होता।

असीमित सुरक्षा – पुनः बचाव

एक दिन मेरी पत्नी और मैं घर से कार्यालय के लिये निकले। हर बार की भांति मैं जल्दी में था और बहुत तेजी से गाड़ी चला रहा था। मार्ग सीधा होते हुए उस पर यातायात न के बराबर था। अचानक मेरे आगे स्कूटर सवार ने किसी से बात करने के लिये अपना स्कूटर रोक लिया। उसको पता नहीं था कि उसके पीछे गाड़ी आ रही है। यद्यपि मैंने ब्रेक लगाया, कार फिसली और स्कूटर पर जा लगी। वह व्यक्ति स्कूटर से उछलकर हमारी कार के सामने वाले शीशे पर आ गिरा। किनारे पर लाकर उसे घास पर लिटाया गया। उसे कमर में बहुत चोट आयी थी और वह ठीक से बैठ भी नहीं पा रहा था। बाह्य रूप से केवल उसके सिर पर एक छोटा घाव लगा था।

हम उसे निकट के एक चिकित्सालय में ले गये जहाँ उसके एक्स-रे व अन्य परीक्षण किये गये। मैं गुरुजी से उसको स्वस्थ रखने

की विनती कर रहा था, क्योंकि उसे गंभीर चोट आने पर जटिल परिणाम हो सकते थे। मेरी प्रार्थना का उत्तर परिणामों के साथ आया। चिकित्सकों ने कहा कि उसे कोई भी गंभीर चोट नहीं आयी थी परन्तु इस दुघर्टना के सदमे से बाहर निकलने के लिये उसे कुछ विश्राम की आवश्यकता थी। उसी दिन उसे चिकित्सालय से छोड़ दिया गया। एक बार पुनः मुझे बचाने के लिये गुरुजी को हार्दिक धन्यवाद देते हुए मैं भी वहाँ से निकल गया।

अब मेरी पत्नी, छवि, के नौकरी बदलने के अनुभव और हमारे बच्चों अर्जुन और गौरी के जन्म के संस्मरण, उसी के शब्दों में:

48 घंटों में मुझे नौकरी मिली

मार्च 2005: मैं अपनी नौकरी से प्रसन्न नहीं थी। पिछले दो वर्षो से मैं अन्य नौकरी ढूंढ़ती रही थी। बिना कारण देर तक कार्य, बुरा वातावरण और प्रशंसा का अभाव वहाँ की परम्परा बन गये थे। एक बृहस्पतिवार को तंग आ कर मैंने छुट्टी कर ली। मैंने गुरुजी से नयी नौकरी के लिये विनती करी। अचानक शाम को मैंने इंटरनेट पर नौकरियां ढूंढ़ने का मन बनाया और हम सुमीत के कार्यालय चले गये। उसी समय मुझे गुरुजी के समीप होने का आभास हुआ। कार्यालय जाते हुए मार्ग में मेरी एक सहेली का फोन आया कि नोएडा मेंउसके कार्यालय में कुछ रिक्त स्थान है। मैंने कार में लगे हुए गुरुजी के चित्र की ओर देखा तो ऐसा लगा मानो वह मुस्कुरा रहे हैं। सुमीत के कार्यालय पहुँच कर मैंने अपना विवरण उसको भेज दिया। अगले दिन ही वहाँ से शनिवार को होने वाली लिखित परीक्षा और साक्षात्कार के लिए बुलावा आ गया।

क्योंकि वहाँ जाने के लिये केवल आधा दिन शेष था और पढ़ने के लिए बहुत कुछ था मैंने सुमीत को मेरी परीक्षा लेने के लिये कहा। सुमीत ने एक घंटे से कम समय में मेरी परीक्षा ली और 1000 प्रश्नों में से मात्र 10-15 प्रश्न पूछे। उसके बाद जब मैंने उससे पूछा कि क्या

मैं उत्तीर्ण हो गयी थी, उसने हाँ में उत्तर दिया। मुझे लगा जैसे यह उसकी वाणी न होकर गुरुजी की हो जिन्होंने हाँ कहा।

वहाँ पर लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी ही साक्षात्कार के लिये बुलाये जाने थे। लिखित परीक्षा के समय मेरे कम्प्यूटर के स्क्रीन पर शिव का चित्र था। मैंने उसे गुरुजी का आशीर्वाद माना और सरलता से उसमें सफलता प्राप्त कर ली। साक्षात्कार में मेरे विषय से संबंधित प्रश्न पूछे जाने थे। आश्चर्य की बात थी कि मेरे से वही 10-15 प्रश्न पूछे गये जो सुमीत ने पिछली रात पूछे थे। जबकि अन्य अभ्यार्थियों का साक्षात्कार एक-एक घंटे तक चला, मुझे 15 मिनट में नौकरी मिल गयी। न केवल यह, मेरा वेतन भी दुगना कर दिया गया। यहाँ का वातावरण भी अधिक आरामदायक था।

इस अवधि में सुमीत बाहर मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे आते ही उन्होंने पूछा, 'तुम्हें नियुक्ति पत्र अभी मिल गया है या सोमवार को देंगे'? उसे अनसुना कर मैंने सुमीत को पूरी बात बतायी।

नास्तिक के लिये यह भले ही संयोग की घटना हो, किन्तु मुझे पता है कि गुरुजी की मेहर के कारण ही मुझे 48 घंटों में नयी नौकरी मिल गयी। न केवल मैं पिछली नौकरी की घुटन से निकल पायी, मुझे ऐसी नौकरी मिली जो हर दृष्टि से पिछली नौकरी से कहीं अधिक अच्छी थी।

जीवन में जुड़वें आशीर्वाद

विवाह के दो वर्ष बीतने पर हमने परिवार को बढ़ाने की बात सोची। जब हमें सफलता नहीं मिली तो हमने चिकित्सकों की सहायता ली। पहला बुरा समाचार था कि कुछ समस्या अवश्य है। कई चिकित्सकों के दर्शन और उपचार, आयुर्वेद ओषधि सेवन और अनेक परीक्षणों के पश्चात् दुखद परिणाम सामने आये। मेरी समस्या के कारण मेरे गर्भधारण करने की संभावना 25 प्रतिशत थी। मेरे पति के परिणाम

और भी प्रतिकूल थे – परीक्षणों के अनुसार उनके वीर्य में शुक्राणु नहीं थे। हमें बताया गया कि न केवल सामान्य अथवा किसी भी कृत्रिम ढ़ंग, भले ही सबसे अच्छी क्यों न हो, हमें संतान नहीं हो सकती है। सफलता की संभावना के आभाव में हम और उपचार बंद कर किसी शिशु का गोद लेने की बात करने लगे थे।

परन्तु सब कुछ अभी समाप्त नहीं हुआ था। गुरुजी ने हमें उपचार कराते रहने के लिये कहा। 2006 में नव वर्ष की पूर्व संध्या को गुरुजी ने मुझे कहा, *'जा तेनू दवाई दित्ती'* और हमने उसी दिन से उपचार आरम्भ कर दिया।

यह सरल नहीं था किन्तु गुरुजी ने हर कदम पर हमारी सहायता करी। शारीरिक या आर्थिक कष्ट हों, गुरुजी ने सदा अपनी दया हम पर बनाये रखी। 13 फरवरी, मेरे जन्म दिवस के अवसर पर, परीक्षण के परिणाम के रूप में शुभ समाचार आया। 26 फरवरी 2006 शिवरात्रि के दिन मुझे रक्तस्त्राव हो गया। सुमीत ने गुरुजी का चित्र मेरे किनारे रखा। जिससे मुझे कुछ शांति मिली और मैं एक घंटे के लिये सो गयी। शाम को मेरे देवर, हितेष, ने बड़े मंदिर से फोन पर कहा कि मेरा नाम आरती में है और हमें वहाँ पर समय पर पहुँचना आवश्यक है। यह सुनकर मेरी आँखों में आँसू आ गये। गुरुजी अपनी संगत के प्रत्येक भक्त का कितना ध्यान रखते हैं। यद्यपि मेरी चिकित्सिका ने पूर्ण विश्राम करने के लिये कहा था, यहाँ तक कि शौचालय तक जाने की भी मनाही थी, और मैं पूरे दिन वेदना में रही थी, इस एक फोन से मेरे शरीर में अभूतपूर्व स्फूर्ति आ गयी और हम तैयार होकर ठीक आरती शुरू होने से पूर्व बड़े मंदिर पहुँच गये। चिकित्सिका ने पूर्ण विश्राम की अवधि में अपने पास आने के लिये भी मना किया था। क्योंकि यह हानिकारक हो सकता था, हम कुछ दिन के पश्चात् उसके पास गये। मेरा परीक्षण करने के बाद चिकित्सिका का रंग उड़ गया। उसने कहा कि रक्तस्त्राव अत्यंत भयंकर हुआ था, गर्भनाल अलग हो गई थी किन्तु दोनों शिशु सही थे। यह गुरुजी का एक चमत्कार था। हमने उसे यह नहीं बताया कि उस दिन

बड़ा मंदिर जाने और आने के लिये 80 किलोमीटर की यात्रा भी की थी। इस घटना के पश्चात् मुझे अति तीव्र औषधियाँ दी गयीं जिन्हें खा कर मेरा जी मितलाता था। मैं ऐसी औषधि नहीं ले पाती थी और हर बार उसे खाते हुए गुरुजी से विनती करती थी। शीघ्र ही अधिक औषधि यों के कारण मुझमें पीलिया रोग का निदान किया गया। चिकित्सिका को अब औषधियाँ बंद करनी पड़ीं। गुरुजी, एक बार फिर आपका हार्दिक धन्यवाद।

चिकित्सकों ने गणना कर 22 अक्टूबर की जन्म तिथि बतायी थी। किन्तु गुरुजी के कहे अनुसार उनके वह सुनहरे उपहार, जुड़वाँ 21 सितम्बर को ही पैदा हो गये। चिकित्सालय से निकल कर हम उन्हें गुरुजी के आशीर्वाद के लिये एम्पाएर एस्टेट ले गये। उन्होंने प्रेम से मुस्कुरा कर उनको अर्जुन और गौरी नाम देकर गौरवान्वित किया।

गुरुजी हमें पता है कि जो कुछ आपने हमारे लिये किया है उसके लिये हम कभी पूर्ण रूप से आपका धन्यवाद भी नहीं कर सकते हैं। आपके आशीर्वाद के इतने अवसर हुए हैं कि उन सबको लिखना संभव नहीं है। यहां पर केवल कुछ विशेष संस्मरण लिखे है। गुरुजी के हम हार्दिक आभारी है कि वह अपना आशीर्वाद, सुरक्षा और मार्ग दर्शन देने के लिये सदा हमारे साथ है।

–सुमीत और छवि जेथरा, दिल्ली

मोरे प्रभु तुम गुरु, पिता, माता

मई 2002 की उस ऊष्ण संध्या को पूरे वातावरण में काफी उत्साह था। हम सब गुरुजी के साथ पर्वतों में स्थित, नैनीताल से 21 किलोमीटर दूर, रामगढ़ जा रहे थे, जहाँ पर एक भक्त का विश्राम भवन था। सब तैयार थे, सामान लद गया था, दो बसें और कुछ कारें एम्पाएर एस्टेट के बाहर खड़ी प्रस्थान करने को तैयार थी। गुरुजी के संकेत पर संगत ने बसों में प्रवेश किया। गुरुजी स्वयं एक बस में चढ़ गये। थोड़ी सी हलचल हुई क्योंकि सब गुरुजी वाली बस में चढ़ने के लिए उतावले थे। फिर बसें चल पड़ी।

अगले दिन दोपहर दो बजे हम रामगढ़ पहुँच गये। स्नान और भोजन से निवृत होकर हम उद्यान में प्रतीक्षा कर रहे थे। हमारे साथ आसपास के निवासी भी थे, जिनको गुरुजी के आने की सूचना मिल गयी थी।

नैनीताल में दम्पति को संतानाशीष

नैनताल से आये हुए एक भक्त जब गुरुजी को प्रणाम करने वाले थे तो गुरुजी ने कहा कि उनकी तीन पत्नियाँ है और वह संतान सुख चाहते है। भक्त नासर अचम्भित हो गये कि गुरुजी को उनके निजी जीवन के बारे में पहले से ही ज्ञान है। विवाह के 15 वर्ष बीत जाने पर भी उनको किसी भी पत्नी से संतान प्राप्ति नहीं हुई थी। नासर अपनी पत्नी के साथ रोज गुरुजी के दर्शन के लिए आते थे। एक दिन गुरुजी द्वारा उनसे अकेले आने का कारण पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया कि उनकी पत्नी सिर और पेट दर्द के कारण नहीं आ पायी। गुरुजी ने व्यर्थ का बहाना बताया और कहा कि उनकी पत्नी गर्भवती हो गयी है।

उनके वचनों की सत्यता दो मास बाद सिद्ध हुई जब परीक्षण में उनकी पत्नी के गर्भवती होने के परिणाम आये। वह समाचार नासर ने गुरुजी के जन्म दिवस (7 जुलाई) के आसपास भेजा। पंद्रह वर्ष तक गर्भ नहीं होने के सब कारण महापुरुष ने प्रथम दर्शन में ही समाप्त कर दिये थे। फरवरी 2003 में नासर के यहाँ पुत्र उत्पन्न हुआ। शिवरात्रि के दिन वह गुरुजी का आशीष और अपने पुत्र के लिए एक नाम लेने गुरुजी के पास आये। गुरुजी ने संतान का नाम मुराद रखा जिसका अर्थ कामना की पूर्ति है।

रेल यात्रा से रोग निदान

मैं राष्ट्रीय सुरक्षा अंगरक्षकों (NSG) की एक विशिष्ट इकाई को कमान कर रहा था। दिसम्बर 1995 में गुरुजी चंडीगढ़ में थे और मुझे 2/3 दिन के लिए वहां आने का संदेश प्राप्त हुआ। आकस्मिक अवकाश लेकर मैं चला गया। उन दिनों मुझे शरीर के दाहिने भाग में स्पोंडोलियोसिस की वेदना रहती थी। इससे अक्सर मेरी दायीं बांह में दर्द रहता था और उस हाथ का अंगूठा सुन्न हो जाता था।

चंडीगढ़ पहुँच कर मैंने दो दिन गुरुजी के साथ बिताये। मेरी

योजना थी कि गुरुजी की अनुमति लेकर रविवार को शाम को मैं बस से वापस आ जाऊंगा। गुरुजी से पूछने पर उन्होंने आज्ञा अवश्य दी पर मुझे रेल से यात्रा करने को कहा। रेल से यात्रा करने से मैं कतराता था – बिना आरक्षण के दिसंबर की शीत ऋतु में मेरा कष्ट बढ़ सकता था।

एक अधिकारी ने मुझे चंडीगढ़ स्टेशन पर छोड़ दिया। संयोग से मुझे स्लीपर क्लास में एक मध्य की बर्थ भी मिल गई। रात 2.30 बजे ट्रेन के चलते ही मुझे नींद आ गयी और प्रातः 7.30 बजे दिल्ली पहुँचने पर टूटी। मैं सोच रहा था कि मुझे बहुत दर्द होगा पर उसका तो नामोनिशान भी नहीं था। उस दिन से आज तक, दस वर्ष से अधिक बीतने पर भी, मुझे पुनः वह वेदना कभी नहीं हुई है।

उल्लेखनीय है कि मैंने कभी गुरुजी से इसकी चर्चा नहीं की थी न ही उन्होंने कभी मेरे से पूछा था। मैंने मात्र उनकी आज्ञा मानी थी – यही देव की इच्छा थी और समस्या स्वतः समाप्त हो गयी।

सतगुरु की कामना, सदा आधुनिक युग के वैज्ञानिक एवं चिकित्सा क्षेत्रों की उन्नतियों को मात दे देती है। 1995 में मुझे मधुमेह का रोगी घोषित किया गया। मधु और रक्तचाप के परिणाम उच्च स्तर पर थे। यह मेरे लिए चिंता का विषय था। सेना में उच्च श्रेणी की शारीरिक योग्यता की आवश्यकता होती है।

मैंने गुरुजी से इस विषय में चर्चा करी तो उन्होंने मुझे प्रतिदिन प्रातः ताम्र लोटे का जल पीने का निर्देश दिया। एक सप्ताह के बाद परीक्षण करवाने के लिए भी कहा। इस अंतराल में मैंने बहुत मिठाईयाँ खाईं – मधुमेह रोगियों के लिए निषेध। तथापि, एक सप्ताह के बाद मेरे रक्त परीक्षण के सब परिणाम सीमा में थे और मेरा रक्तचाप एक युवा सा था। इस प्रकार ढेरों मीठा प्रसाद खाने के पश्चात् भी मेरा रक्त मध ु सामान्य रहा।

इसका कारण है। गुरुजी के यहां मिलने वाला प्रसाद और लंगर अमृत युक्त होता है, जिसमें हर रोग का निदान करने की क्षमता होती

है। भक्त को वह केवल श्रद्धा भाव से स्वीकार करने की आवश्यकता है। अनुयायी द्वारा अपने आप को पूर्ण समर्पण करने से ही उसे उनकी दिव्य कृपा की अनुभूति होती है। गुरुजी अपने आशीष अनेक प्रकार से देते है। अक्सर, गुरुजी के निर्देश अनोखे लगते हैं पर उनसे लाभान्वित होने के लिए उनको मान कर उनका पालन करने में ही उनका रहस्य है। यही समर्पण है।

मेरी सैन्य यूनिट पर दया वृष्टि

1995 – 1998 की अवधि में, जब मैं राष्ट्रीय सुरक्षा अंगरक्षक में एक ग्रुप का कमांडर था, मेरी यूनिट के निरीक्षण के लिए समूह के उच्चतम वरिष्ठ निर्देशक आने वाले थे। जवानों ने इस निरीक्षण के लिए अत्याधिक परिश्रम किया था। यूनिट के मार्ग साफ कर दिये गये थे और वृक्षों की सब सूखी, पीली पत्तियां भी हटायी गयीं थी। मार्ग के दोनों और ईंटों और वृक्षों के निचले भाग पर सफेद और गेरु रंग लगाया गया था। पूरी यूनिट निरीक्षण के लिए तैयार थी और वरिष्ट निर्देशक से 'शाबाश' की आशा कर रही थी।

निर्दिष्ट दिन को प्रातः मैं दिल्ली से मानेसर जा रहा था। अचानक वर्षा होने लगी और थोड़ी ही देर में वह मूसलाधाार हो गयी। मानेसर के पास पहुँचने पर मेरा मन उदास हो गया। यूनिट के जवानों का परिश्रम पानी मे बहता हुआ दिख रहा था। मैंने गुरुजी से प्रार्थना करी कि ऐसा न हो। यूनिट के मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही मैं अचंभित रह गया। यूनिट में वर्षा नहीं हो रही थी। मेरे कर्मचारियों ने बताया कि चारों ओर वर्षा हो रही है पर यूनिट बची हुई है। निरीक्षण अप्रत्याशित रहा – वरिष्ट निर्देशक ने कहा कि यह यूनिट अन्य यूनिटों के लिए आदर्श है। परन्तु उनके जाते ही मेरी यूनिट पर भी भारी वर्षा होने लगी। दिव्यात्मा का सहयोग स्पष्ट था।

एक भक्त की हार्दिक प्रार्थना गुरुकृपा के लिए पर्याप्त थी। मुझे आभास हुआ कि निरीक्षण की अवधि में, यद्यपि चारों ओर मूसलाधार

वर्षा हो रही है, यूनिट के ऊपर दिव्य छत्रछाया बनी हुई है। उसी संध्या को जब मैं एम्पाएर एस्टेट गया तो गुरुजी ने संकेत दिया कि उनके कारण ही कार्यक्रम विधिवत संपन्न हो पाया था।

गुरुजी मेरी और मेरे परिवार की हर प्रकार से सहायता करते रहे हैं जैसे अगले संदर्भ से दृष्टिगोचर है। मेरे पास इस सर्वोच्च दाता को धन्यवाद देने के लिए शब्द नहीं है।

आस्था से वजन में वृद्धि

मेरी पत्नी बहुत दुबली थी और अधिक खाने से भी उस पर कोई प्रभाव नहीं होता था। गर्भवती होने पर भी उसके वजन में कोई अंतर नहीं आया था। तथापि, गुरुजी कहा करते थे कि उन्होंने वजन 5–10 किलो बढ़ा दिया है। शुरु में परिवार को कोई अंतर प्रतीत नहीं हुआ पर कुछ समय बाद उसके शरीर में परिवर्तन दिखायी देने लगा और मेरा छोटा पुत्र उसे मोटी कह कर संबोधित करने लगा।

इस सारांश से स्पष्ट है कि गुरुजी अपने श्रदालु पर कृपा करने के लिए विधि और काल का निर्णय अपने माप दण्डों के अनुसार करते हैं। मानव की दृष्टि सुदूर तक देखने में असमर्थ है। हम निकट भविष्य को देखते और व्यर्थ की चिंताओं में डूबे रहते हैं। गुरुजी हमारे भूत की छाया, संकीर्ण वर्तमान और अकल्पनीय भविष्य देखने में समर्थ है। जब वह कुछ देते है तो उसकी सीमाएं भौतिक न होकर वृहत् ब्रह्माण्ड की परिधि में होती है। इसीलिए अति आवश्यक है कि अनुयायी निस्वार्थ, निर्विवाद समर्पण करे। वह उन्हें अपने पिता, माता, मित्र और सर्वश्रेष्ठ की श्रेणी में रखे और असीमित पवित्र पावन प्रेम की भावना से उनके चरणों में अपना स्थान ग्रहण करे।

यह भी अति आवश्यक है कि भक्त गुरुजी के समस्त निर्देशों का पालन करे किन्तु उसके फल की अपेक्षा न कर गुरुजी पर आस्था बनाये रखे। सतगुरु को ही ज्ञान है कि उसके शिष्य के लिए क्या श्रेष्ठ है।

उनकी करुणा की कोई सीमा नहीं है – वह तो उसके निकट और दूर सब संबंधियों पर होती है – गुरुजी नीलकंठ शिव समान है जिन्होंने सुरों और असुरों, दोनों को बचाने के लिए समुद्र मंथन से निकले हुए विष का पान कर लिया था। गुरुजी अपने भक्तों के विष को समाप्त कर देते हैं ।

आपके अति प्रिय संबंधी चाह कर भी, आपकी वेदना समाप्त करने के लिए, आपके समस्त कष्टों को समाप्त करने में असमर्थ है। किन्तु सतगुरु आपको जीवन देकर आपके रक्षक बनते है। रामचरित्र मानस का एक दोहा उल्लेखनीय है।

''मोरे प्रभु तुम गुरु, पिता, माता।
जाऊँ कहा तजि पद जल जाता।।''

मेरी भांजी का उपचार

जयपुर में मेरी भांजी, भावना, अति शोचनीय अवस्था में थी। वह एक स्थानीय चिकित्सालय में प्रविष्ट थी और चिकित्सकों के अनुसार उसकी अवस्था अति नाजुक थी। एम्पाएर एस्टेट जाते हुए मेरी बहन ने मुझे फोन किया था। वह रो रही थी परन्तु वहाँ पर पहुंच कर मुझे गुरुजी को कुछ कहने का अवसर ही नहीं मिला।

सब भक्तों के जाने के पश्चात् गुरुजी हॉल में बैठे थे और उन्होंने कहा कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है। अतः मैंने उसका उल्लेख करना अनुचित समझा। पर जब गुरुजी ने भावना के लक्षणों का विवरण आरम्भ किया तो मैं अचंभे में पड़ गया। उन्होंने मुझे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान से एक औषधि लाने को कहा। एक घंटे के बाद रात्रि एक बजे जब मैं वह औषधि लेकर पहुँचा तो उन्होंने उसे कूड़ेदान में फेंकनें और मुझे पत्नी सहित जयपुर जाने को कहा।

प्रातः जब मैंने अपनी बहन को फोन किया तो पता लगा कि भावना के स्वास्थ्य में सुधार है और शाम तक घर वापस आ जायेगी।

उसके लक्षण तो समाप्त हो गये थे पर वह उदास थी। अगले दिन मेरी पत्नी जयपुर चली गयी। मामी से मिलते ही भावना की उदासी समाप्त हो गयी। वह प्रसन्नचित हो गयी। सबने उसमें बहुत परिवर्तन देखा। तत्पश्चात् मेरे परिवार के सब घनिष्ठ संबंधियों पर गुरुजी की अनुकम्पा हुई।

गुरुजी अलौकिक महापुरुष हैं। जब भी मैं गुरुजी के साथ चला हूँ, उनके दिव्य शरीर और चरणों से गुलाबों की सुगन्ध आती है। अगर आप उनकी संगत में बैठकर अपने आपको उनको समर्पित कर दें तो आपके शरीर से भी वही सुगन्ध आयेगी। उनकी आभा का ऐसा प्रभाव है: हम नश्वर और उन अमर के मध्य इतना अंतर है। जैसे प्रसंगों से स्पष्ट है सतगुरु सर्वज्ञाता है। वह एक ही समय पर अनेक स्थानों पर अपनी उपस्थिति का आभास दे सकते हैं। मीलों दूर पति पत्नी के वार्तालाप को अक्षरश: बता सकते हैं। इस देश के सब धार्मिक ग्रंथ उनके सागर जैसे विशाल अस्तित्व की थोड़ी सी व्याख्या मात्र है। रामचरित्र मानस का एक दोहा है:

"बिनु पग चलहिं, सुनी बिनु काना,
कर बिनु करम करे विधि नाना।"

-कर्नल (सेवानिवृत) सुवर्ण कुमार जोशी, गुडगाँव

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा

गुरु ग्रंथ साहिब का यह तुख मैं अपने गुरुजी को समर्पित करता हूँ जिन्होंने हमें अपनी शरण में लिया और हमारे जीवन को परिवर्तित कर दिया। गुरुजी से मिलने से पूर्व हमारे जीवन की कोई दिशा नहीं थी – जीवन में जैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती थीं वैसे ही उसका सामना करते रहते थे। हम ईश्वर की सत्यता को समझने में असमर्थ थे। 25 वर्ष पूर्व मेरा बेटा अपनी श्रवण शक्ति खो चुका था। कोई औषधि, संत या तांत्रिक हमारी सहायता नहीं कर पा रहे थे। फिर, जैसे कहा जाता है, जब शिष्य अधिकारी बन जाता है, गुरु प्रकट होता है – और ऐसा ही हुआ। अचानक एक संबंधी के कहने पर हम गुरुजी के पास पहुँचे।

श्रवण शक्ति लौट आयी

जब पहली बार हमने गुरुजी के दर्शन किये उन्होंने मेरी पत्नी को

हमारे सावधि बचत खाते की संख्या, मेरी पत्नी की साड़ियों की संख्या (मेरी पत्नी को अच्छी दक्षिण भारतीय साड़ियां पसंद है), उसके पास सब स्वर्ण जेवरों का वजन और मेरे बिके हुए घर की सही राशि भी बता दी। अंतिम बात मैंने पत्नी को नहीं बतायी थी क्योंकि मैं महिलाओं की हीरे में रुचि के बारे में जानता था। प्रसंग छोटा था पर मेरा सोचना स्वाभाविक ही था।

फिर सत्संगों को सुनने के बाद मेरी उनसे मिलने की जिज्ञासा जागृत हो गयी। मैंने उनको अपने पुत्र की श्रवण शक्ति के बारे में बताया तो उन्होंने तुरन्त उसके कान में प्रतिदिन बादाम रोगन की एक बूँद डालने को कहा।

दस दिन के उपरान्त मेरे बेटे के कान में अत्यंत पीड़ा हुई। जब मैंने गुरुजी से उसका उल्लेख किया तो वह बोले कि कल्याण हो गया, 20 प्रतिशत ठीक हो गया और अब धीरे–धीरे पूर्णतः ठीक हो जायेगा। उन्होंने मेरे पुत्र की श्रवण शक्ति का परीक्षण भी करवाने को कहा। मेरी प्रसन्नता की सीमा नहीं रही जब मेरे पुत्र ने अपने कानों से उपकरण निकालते हुए कहा कि शोर बहुत अधिक है। गुरु कृपा से वह पच्चीस वर्ष के बाद सुन पा रहा था। मुझे आभास हुआ कि मेरी खोज कितनी अधूरी थी। इधर गुरुजी के चरणों में उनकी दया, मेहर, कृपा और अपने सतगुरु, रब, स्वामी, सब मिल गये थे।

चाय की पत्तियों में संदेश

गुरुजी के पास आने पर हमें अनेक सत्संग सुनने को मिले। भक्त अपने निजी अनुभव सुनाते थे और बताते थे कि उन्होंने गुरुजी को विभिन्न परिस्थितियों और विभिन्न रूपों में देखा है। मेरी पत्नी में उसी प्रकार से गुरुजी के आशीष प्राप्त करने की इच्छा हुई – यह नहीं पता था कि वह इतनी शीघ्र पूर्ण हो जायेगी।

नव वर्ष आ रहा था और उसकी पूर्व संध्या पर हमारा बड़े मंदिर जाने का कार्यक्रम था। किन्तु मित्रों के बार बार कहने पर हमने उनके

साथ वह समय व्यतीत करने का कार्यक्रम बना लिया। गुरुजी के मन में कुछ और ही विचार था।

प्रतिदिन की भांति मेरी पत्नी चाय बना रही थी जब उसने पानी में चाय की पत्ती डाली तो उसने सर्प के फन का आकार ले लिया। यह सोच कर कि यह संयोग था उन्होंने चाय की पत्तियों को बार बार पानी में डुबोया, तो हर बार वही आकृति बन जाती। यह देखकर वह भयभीत हो गयी और उसने मुझे बुलाया। देख कर मैंने बताया कि गुरुजी बड़े मंदिर आने का संदेश दे रहे हैं पर मात्र इतना ही नहीं था; वास्तव में यह परोक्ष रूप से गुरुजी की कृपा थी। गुरुजी ने मेरी पत्नी को वहाँ पर नृत्य कार्यक्रम में भाग लेने को कहा और उसका पच्चीस वर्ष से चला आ रहा पीठ दर्द समाप्त हो गया।

नास्तिक को पाठ मिला

कुछ वर्ष पूर्व मैं अपने एक मित्र के साथ अपने खेत पर जा रहा था। मेरे मित्र नास्तिक थे जिन्हें शबद, कीर्तन, गुरु चर्चा इत्यादि धार्मिक कर्म व्यर्थ लगते थे। उन्होंने कहा कि चमत्कार होने के बाद ही वह गुरुजी पर विश्वास करेंगे।

इतना कहने की देर थी कि पीछे से एक ट्रक ने कार पर जोर से टक्कर मारी। कार तो पूरी क्षतिग्रस्त हो गयी। दुर्घटना इतनी भयंकर थी कि हम दोनों उछल कर बाहर धरती पर आ गिरे और अर्धचेतन हो गये। होश आने पर हमने देखा कि दोनों में से किसी को चोट नहीं आयी थी। उठने पर मेरे मित्र स्तब्ध थे। मैंने उनको कहा कि आप इसी चमत्कार की प्रतीक्षा में थे। यदि हम गुरुजी के बारे में बात नहीं कर रहे होते तो किसी भी प्रकार से राष्ट्रीय राजमार्ग पर ऐसी दुर्घटना में चोट लगे बिना बच नहीं पाते। उनकी आँखों में आंसू आ गये और उन्होंने हाथ उठा कर गुरुजी को धन्यवाद किया। जब मैंने गुरुजी से इस बात का उल्लेख किया तो वह बोले कि हमें कोई हानि नहीं हो सकती थी क्योंकि वह हम पर दृष्टि बनाये हुए थे।

मुझे एक प्रसंग याद आ रहा है। मनुष्य को ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार संतान है। यही मेरी भांजी के साथ हुआ। चिकित्सकों के सब प्रयास निष्फल हो गये थे। उसे सात वर्ष से संतान नहीं हुई थी और इसकी अब आशा भी नहीं थी। जब वह भारत आयी और उसने गुरुजी के दर्शन किये तो उसके या किसी और के कुछ कहने से पूर्व ही उन्होंने उसे बेटी से संबोधित कर के कहा कि उसका काम अक्टूबर में हो जायेगा। हममें से किसी को भी गुरुजी के कथन का तात्पर्य समझ नहीं आया। वह मई का महीना था। कुछ दिनों बाद वह अमरीका वापस चली गयी। गुरुकृपा से वह अक्टूबर में गर्भवती हुई और चिकित्सक दंग रह गये। उसने एक पुत्र को जन्म दिया। गुरुजी द्वारा दिया गया हर बालक होनहार होने के साथ अपने माता पिता के लिये एक अनमोल रत्न होता है।

हृदय रोग के लिये समोसा

एक बार मेरी नाड़ी की गति 180 हो गयी। चिकित्सक ने तुरन्त शल्य क्रिया का परामर्श दिया। मैंने यह करवाने से पूर्व गुरुजी को बताना उचित समझा। मैंने चिकित्सक से मिल कर शल्य क्रिया का समय भी नियुक्त कर लिया। संध्या को मैं गुरुजी के पास गया। उन्हें मेरी समस्या का पहले से ही ज्ञान था। उन्होंने संदेश भेज कर कहा कि सब ठीक हो जायेगा। उस दिन गुरुजी ने प्रसाद बाँटा। एक अनुयायी समोसे लाये थे। उन्होंने 5 समोसे अपनी मुट्ठी में मसल कर दिये और मुझे खाने को कहा। चूंकि तला हुआ खाना मेरे लिये विष समान था मैं चकित था। गुरुजी में आस्था होने के कारण मैंने उन्हें खाया और अपने स्थान पर आकर बैठ गया। उन्होंने मुझे फिर बुलाया और दो समोसे और दिये। मेरा पेट भरा हुआ था किन्तु मैंने किसी प्रकार से वह भी खा लिये। उनके चमत्कार से मेरी नाड़ी घट कर 70 हो गयी। अगले दिन चिकित्सकों ने अपना निर्णय दे दिया कि मुझे शल्य क्रिया की कोई आवश्यकता नहीं है। मेरे लिये गुरुजी की महानता और प्रेम ऐसा है।

रोग परिवर्तन

गुरुजी ने मेरे भांजे के रोग को परिवर्तित कर एक और अदभुत और निराला चमत्कार किया। मेरी बहन का पुत्र छुट्टी पर दिल्ली आया था और पिछले कुछ दिनों से वह खांसी और ज्वर से पीड़ित था। मेरी बहन रूबी, जो स्वंय चिकित्सिका है, ने उसे कुछ औषधियाँ दीं थी। जब उसका रोग समाप्त होने को नहीं आया तो मेरी बहन ने उसके कुछ परीक्षण करवाये। परिणामों से पता लगा कि वह अधिश्वेत रक्तता (रक्त केंसर) से पीड़ित है। केवल एक चिकित्सक ने अंतिम परिणामों तक प्रतीक्षा करने को कहा। मेरी बहन तो अत्यंत चिंतित हो गयी और उसने गुरुजी से अपने पुत्र को बचाने की विनती करी।

इस बीच मैं दिल्ली आया और जब मैंने गुरुजी के दर्शन किये तो उन्होंने मुझ से रूबी के बारे में पूछा। मुझे इसका संदर्भ समझ नहीं आया तो मैंने उत्तर दिया वह ठीक होगी। बाद में मैंने उसको फोन किया तो उसने कहा कि अगले दिन वह गुरुजी के यहां चलेगी। गुरुजी के यहाँ जाते हुए उसने पूरी बात बतायी और कैसे उसने गुरुजी से प्रार्थना करी थी। केवल अंतिम परिणाम से पता चला कि उसे रक्त रोग नहीं अपितु शरीर के ग्रंथी की समस्या थी। जब हम गुरुजी के चरण स्पर्श कर रहे थे तो उन्होंने रूबी को बताया कि उन्होंने उसके पुत्र का रोग परिवर्तित कर दिया है। क्योंकि किसी को इस बारे में ज्ञान नहीं था हम चकित रह गये। ऐसे हैं हमारे अपने गुरु जो सदा हमारी समस्याएँ, कष्ट समाप्त कर देते हैं। उनके बारे में सोचते ही वह प्रकट हो जाते है।

सब्जी बेचने वाले को दृष्टि दान

मेरे एक घनिष्ठ मित्र ने चंडीगढ़ में एक भूखंड खरीदा था पर उसके बाद उन्होंने पाया कि उसके नीचे जल नहीं है। जब उन्होंने इस समस्या का उल्लेख गुरुजी से किया तो उन्होंने भूखंड के एक कोने पर 120 फीट तक खोदने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि यदि जल बेचा

गया तो वह सूख जायेगा। उन्होंने गुरुजी के निर्देशों का पालन किया और वहां से जल प्रवाहित होने लगा। भूजल के प्रवाह का मार्ग 100 वर्ष बाद बदल गया था। गुरुजी स्वयं ईश्वर है क्या इसके लिये किसी और प्रमाण की आवश्यकता है?

गुरुजी श्रद्धा, विश्वास और समर्पण से आये हुए प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करने को सदा तत्पर है। चंडीगढ़ के सैक्टर 22 में एक गरीब सब्जी वाला था जिसे दो आकृतियां दिखायी देती थीं। चिकित्सकों के अनुसार उसके मस्तिष्क में गुलमा था जिससे उसको दृष्टि दोष हो गया था। उसकी शल्य क्रिया हुई पर छः माह बाद उसी रोग की पुनरावृत्ति हो गयी। उसकी दुबारा शल्य क्रिया हुई। गुलमा असाध्य था और वह तीन माह के लिये अचेतन अवस्था में चला गया। होश आने पर चिकित्सकों ने कहा कि वह और कुछ करने में असमर्थ हैं। उसकी माँ उसे घर ले आयी। उसने गुरुजी के बारे में सुना तो उनसे अपने पुत्र को ठीक करने के लिये विनती करी। गुरुजी ने उसे 10 मूंगफली सूर्यास्त से पहले जल में भिगो कर सूर्योदय से पूर्व उसकी गिरी खाकर उसके छिलके आँखों पर कुछ देर रखने को कहा। यह दस दिन तक करना था। उसकी दृष्टि ठीक हो गयी, असाध्यता समाप्त हो गयी और वह अब भी स्वस्थ सानंद है। यह गुरुकृपा है।

मैं गुरुजी के चमत्कारों के बारे में घंटों तक लिख सकता हूँ और घंटों तक उनके गुणगान कर सकता हूँ क्योंकि सदा मुस्कुराते हुए प्रभु ने मेरे, मेरे परिवार और पूरी संगत को एक अभेद्य रक्षा कवच का आश्रय दिया हुआ है। यदि किसी पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो वह केवल यहां है, यहां है और यहीं है।

–कर्नल (सेवानिवृत) हरशरण सिंह तूर, पंचकूला

दिशा दर्शन

संगत भक्ति में लीन हृदयों का समूह है। इस समूह में विभिन्न विचारधाराओं से प्रभावित व्यक्ति संगठित होकर एक ही लक्ष्य, एक ही आदर्श - भक्ति की ओर बढ़ते है। इसकी समानता एक वृक्ष से की जा सकती है। संगठित वह सुरक्षित है; किन्तु विभाजित होकर उसे प्रत्येक आँधी का सामना अपने विभिन्न भागों से करना पड़ता है। एकांगी हृदय की एकांगी भक्ति में अपने भीतर उसे एक अनुपम देवत्व की प्राप्ति होती है - स्वयं श्री गुरुजी। देवत्व से एकांगी होने के लिये उसे औपचारिक रूप से अपनी हर बुराई को त्यागना होगा।

संगत पर गुरुजी अपनी कृपा वृष्टि करते हैं। संगत अतुल्य प्रेम का स्त्रोत है, अनंत प्रेम से बंधा हुआ परिवार - यदि इसमें प्रेम का अभाव है तो यह संगत नहीं है। इसका सर्वोच्च उद्देश्य एक साथ मिल जुल कर, बंध कर रहना है। शेष कर्म अपने आप ही होते रहेंगे।

परिवार विभाजित होते देखकर उन्हें कैसा लगेगा?

यह परिवार, जिसको उन्होंने भोजन कराया था, यदा कदा अपने हाथ से बनाकर भी; इस परिवार ने उनके सम्मुख बैठकर खाया, रोये और हँसे और प्रेम के बंधन में बंध कर रहे। वह परिवार जिसके सदस्यों पर वह, ईश्वर के समान, अनंत माध्यमों से कृपा वृष्टि करते आये है। पिता को अपने पुत्र और पुत्री में कोई अंतर नहीं दिखता है। हमारे दिव्य पितामह की भावनाओं में फिर अंतर होने का प्रश्न ही नहीं उठता है – वह हम सबसे समान स्नेह करते आये है। हमारी दृष्टि में गुरुजी की मानव आकृति थी क्योंकि वही हमारी दृष्टि की सीमा है। वह तो वास्तव में तत्त्वहीन थे। जैसा अनेक सत्संगों से विदित है, वह समय, आकाश, वजन की सीमाओं और भौतिक अथवा लौकिक नियमों, कर्मों के बंधनों और आकांक्षाओं के मोह से सर्वोपरि थे। वह माया के जाल से मुक्त थे – वह शिव हैं। असंख्य संसार प्रकट होकर प्रलय को प्राप्त हो जाएँ किन्तु वह सदा विद्यमान रहेंगे।

गुरु की अवहेलना करना संभव नहीं है, गुरु की परिभाषा देना भी संभव नहीं है। यह भी कहना कठिन है कि गुरु कौन है और क्या है। परन्तु एक तथ्य स्पष्ट है – वह मनुष्यों, देवी और देवताओं की सीमा से नहीं बंधे हैं। वह तो सर्वोच्च हैं। यह समझने की भूल नहीं करनी चाहिए कि वह मनुष्य रूप में हैं। वह तो उनके अस्तित्व का माध्यम मात्र है। कल वह मनुष्य शरीर में थे आज पूरा ब्रह्माण्ड उनमें विलीन है। कल वह लाल परिधान में थे, आज आकाश उनका परिधान है। कल वह आपको नाम से संबोधित कर रहे थे, आज आप शांति पूर्वक उनकी आराधना कर रहें है। कौन कहता है कि वह नहीं है?

उनकी संगतों को स्मरण कीजिए। भव्य, प्रभावशाली और सौम्यता से वह प्रवेश करते थे और जब तक आप तत्परता से उनके अभिवादन के लिये खड़े हो पाये; वह अपने आसन पर बैठ जाते थे। एक पैर के ऊपर दूसरा, उस पर उनका लम्बा परिधान हल्का सा उठा हुआ, जिससे आप उनके कमल चरणों के दर्शन कर सकें और उन पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकें।

गुरुबाणी के शबदों की मधुर ध्वनि से वातावरण रमणीय होता रहता था और आपको उनके चरणों की ओर खींचता रहता था। आपको अपने जीवन के कष्टों से दूर करता हुआ, आपको मनुष्य के अंतिम लक्ष्य की ओर प्रेरित करता हुआ अप्रतिबंधित स्नेह – बस यही था। उनके ओज से भरी हुई चाय आती थी। फिर, कभी–कभार शबदों के बजते हुए या उसके पश्चात् कोई अपने सत्संग सुनाता था। वह इतना प्रासंगिक लगता था – जैसे वह आपके ही व्यवसायिक, निजी अथवा रोगों और अन्य कष्टों की आपबीती का वर्णन कर रहा हो। उसको सुनते हुए ही आपको अपने कष्टों से मुक्त होने का आभास होने लगता था।

यह हर क्षण का चमत्कार था। हमारे हृदय में उग रहे आस्था के वृक्ष को उनके ओज को स्वीकार करने योग्य पनपना होता था। इसीलिये निरंतर चाय प्रसाद और लंगर ग्रहण करना पड़ता था। वह हमारी आत्मा को अपने स्नेह और ओज से भरते रहते थे ताकि वह हम सबको प्रेम और आस्था से परिपूर्ण समर्थ बना सकें। वह निरंतर हमें इस संसार के सबसे बुरे अंग – स्वयं इस संसार – से निकलने का उपचार देते रहते थे। जीवन के उतार–चढ़ाव की कठिनाईयों में वह सदा हमारे साथ रहते थे। संभवतः किसी को भी उनके वास्तविक रूप का ज्ञान नहीं है। यह कहना पर्याप्त होगा कि उनमें प्रेम का पारावार था और सबसे प्रेम की ही आशा रखते थे।

गुरु वंदना

बंदऊँ गुरु पद कंज कृपा सिन्धु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।।
बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा, सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
अमीअ मूरिमय चूरन चारू समन सकल भव रुज परिवारु।।
सुकृति संभु तन बिमल बिभूती मंजुल मंगल मोद प्रसूती।
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी किएँ तिलक गुन गन बस करनी।।
श्रीगुर पद मनी गन जोती सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती।
दलन मोह तम को सुप्रकासू बड़े भाग उर आवई जासू।।
उधरहिं बिमल बिलोचन ही को मिटहिं दोष दुःख भव रजनी को।
सूझहिं राम चरित मनी मानिका गुपुत प्रगट जहँ जो जहीं खानिका।।
–राम चरित मानस (तुलसीदास कृत)

मैं उन गुरु महाराज के कमल चरणें की वंदना करता हूँ जो कृपा के समुद्र और नर रूप में श्री हरि ही हैं और जिनके वचन महामोह रूप के घने अंधकार का नाश करने के लिये सूर्य किरणों का समूह हैं।

मैं गुरु महाराज के कमल चरणों की धूल (रज) की वंदना करता हूँ जो सुरुचि (सुन्दर स्वाद), सुगन्ध तथा अनुराग रूपी रस से परिपूर्ण है। वह अमर मूल (संजीवनी) का सुन्दर चूर्ण हैं जो समस्त भव रोगों के परिवार को नाश करने वाला है।

वह रज सुकृति (पुण्यवान पुरुष) रूपी शिव के शरीर पर सुशोभित निर्मल विभूति है और सुन्दर कल्याण और आनंद की जननी है, भक्त के मन रूपी सुन्दर दर्पण के मैल को दूर करने वाली और तिलक करने से गुणों के समूह को वश में करने वाली है।

श्री गुरुमहाराज के चरण नखों की ज्योति मणियों के प्रकाश के समान है जिसका स्मरण करते ही हृदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है; वह प्रकाश अज्ञान रूपी अंधकार को नाश करने वाला है। वह जिसके हृदय में आ जाता है वह अत्यंत भाग्यशाली है।

उनके हृदय में आते ही हृदय के निर्मल नेत्र खुल जाते हैं और संसार रूपी रात्रि के दोष दु:ख मिट जाते हैं एवं श्री रामचरित्र रूपी मणि और मणिक्य, गुप्त और प्रकट, जहाँ और जिस खान में है, दिखाई दे जाते हैं।

शब्दावली

हिंदी	**English**
अंग विच्छेद, अंगच्छेद	amputation
अंडाशय	ovary
अंतः स्त्रावी	endocrine
अंत्र वृद्धि	hernia
अग्नाशयकोप	pancreasitis
अचेतनावस्था	coma
अतिसार	diarrhoea
अतीन्द्रियदर्शी	clairvoyant
अधसीसी	migraine
अधिकृत लेखापाल	chartered accountant
अधिमंथ	glaucoma
अधिशासी	executive
अधिशासी एम बी ए	executive MBA
अधिश्वेत रक्तता	leukaemia
अनुभाग	section
अभिघात	trauma
अभियंता	engineer
अभिलेख	record
अभिलेखन कक्ष	recording studio
अर्बुद	carcinoma
अविशेषक निश्चेतना	general anaesthesia
असाध्य	malignant
अस्थि	bone

अस्थि घनत्व	bone density
अस्थि मज्जा	bone marrow
अस्थिरज्जू, अस्थिबंध	ligament
आंत्रशूल	amoebiasis
आंत्रिक ज्वर	typhoid
आणविक चिकित्सा	nuclear medicine
आयकर	income tax
आयकर पुनर्विचार अधिकरण	Income Tax Applellate Tribunal
उदर	abdomen, stomach
उदरपातन	caesarian
उपक्रम	project
ऋण नियंत्रण	credit control
कंप वात रोग	Parkinson's disease
कक्ष	studio, room
कर्कट रोग	cancer
कर्ण, नसिका और कंठ	ENT
कुष्ठ	leprosy
कृषि भवन	farm house
कोशाणु	cells
क्रमशः	gradually
क्षयरोग	TB
खसरा	measles

गर्भकला अस्थानता	endometriosis
गर्भयोच्छेदन	hysterectomy (removal of uterus)
गर्भाशय बाह्य पत्यारोपण	In vitro Fertilization (IVF)
गर्भाशय में वीर्यारोपण	IUI
गलग्रंथी	thyroid
गलतुन्दिका	tonsils
गहन सेवा केन्द्र	ICU
गुलमा	tumour
ग्रीवा शूल	cervical spondylitis
चक्र	disc (spinal)
चिकित्सक, चिकित्सिका	doctor
चिकित्सालय	hospital, clinic
चिरकालिक	chronic
चेतना शून्य	black out, unconscious
जैविक	biological
तपेदिक	TB
तिल्ली	spleen
दमा	asthma
दूरसंचार	telecommunication
दृष्टिपटल	retina
धनुर्वात	tetanus
नाभि रज्जु	umbilical cord

नासूर	cancer
निद्रा अश्वसन	sleep apnea
निश्चेतन विशेषज्ञ	anesthesist
पक्षाघात	Paralysis
पदोन्नति समिति	promotion board
पराचिकित्सिका	paramedic
पराध्वनिक चित्रण	ultrasound
परामनोविज्ञान	parapsychology
पराश्रव्य चित्रण	ultrasonography
पर्यवेक्षक	supervisor
पार-पत्र	passport
पाली चक्र	shift
पित्ताशय	gall bladder
पीलिया	jaundice
पुटक	cyst
पुरस्थ	Prostrate
पूँजी	stock
पेय	drinks
प्रतिजैविक	antibiotic
प्रपत्र	form
प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात	cerebral palsy
प्रयोगशाला	laboratory
प्लीहा	spleen
फुफ्फुस ज्वर	pneumonia
बाल्यग्रंथी	thymus gland

बाह्य प्रत्यारोपण	IVF
बिंबाणु	platelet
भारतीय प्रशासनिक सेवा	IAS
भारतीय मेरूदंड क्षति केन्द्र	Indian Spinal Injuries Centre
भूखंड	plot
भौतिक चिकित्सा	physiotherapy
मतिभ्रम	hallucination
मधु	sugar
मधुमेह	diabetes
मनोभ्रंश	dementia
माटी प्रवर्तक	earth mover
मियादी ज्वर, मंथर ज्वर	typhoid
मेरुदंड	spine
मोतियाबिंद	cataract
यंत्रविद	technician
यकृत	liver
यकृत सूत्र रोग	liver cirrhosis
यांत्रिक	engineer
योनि - भ्रंश	prolapse of uterus and cervix
रक्त मधु	blood sugar
रक्तस्त्राव	haemmorage
रोग लक्षण	pathology
रोगविज्ञानी	pathologist

लघु	micro, small, diminutive
लघु शुक्ल	micro cornea
लावण्य प्रतिष्ठान	beauty saloon
वक्ष	chest
वरीयता	seniority
वर्णन्ध	colour blind
वातरोग	rheumatism
विकिरण चिकित्सा	radiotherapy, radiation
विकिरण विशेषज्ञ	radiologist
विभाजक	divider
विमानपतन	airport
विषम ज्वर	malaria
विषाणु जनित मस्से	viral warts
विषाणु जनित यकृत शोथ	viral hepatitis
विसर्प	eczema
वीर्यारोपण	Intra-Uterine Insemination (IUI)
वृक्क रोग	renal disease
वृत्ति	career
व्रण	ulcer
शल्य कक्ष	operation theatre
शल्य क्रिया, शल्य चिकित्सा	operation
शारीरिक शिक्षा	Physical Education
शिरा	vein
शोकसंतप्त	depression
श्वसन शोथ	bronchitis
श्वसनी ऐंठन	bronchial spasm

श्वस्नक ज्वर	pneumonia
श्वासयंत्र	inhaler
संचिका	file
संज्ञानात्मक	cognitive
संज्ञानात्मक मनोविज्ञान	cognitive psychology
संज्ञानात्मक स्नायुविज्ञान	cognitive neuroscience
सम्बन्ध विच्छेद	divorce
साक्षात्कार	interview
सावधि योजना	fixed deposit
सीमाशुल्क	custom
सूचना प्रौद्योगिकी	Information Technology (IT)
सेना चिकित्सा कोर केन्द्र	Army Medical Corps Centre
स्नातक	graduate
स्नातकोत्तर	post-graduation
स्नायु	muscle
स्नायु विकार	nervous breakdown
स्लेश्मिक ज्वर	Influenza
हृदशूल	angina

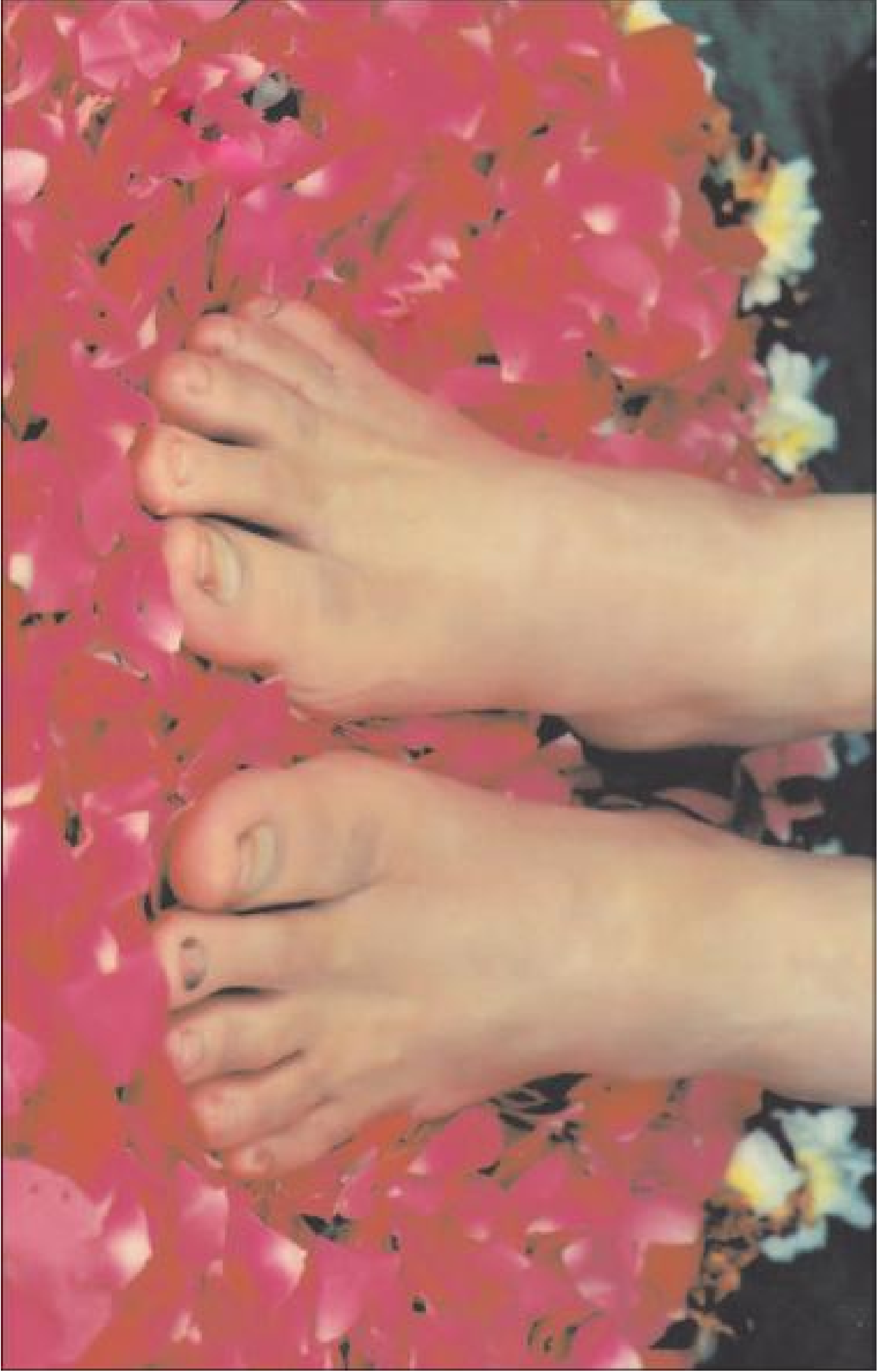

गुरु वचन है
वे वचन है उनके
वचन सत्संग को प्रदान करते हैं शक्ति
सत्संग भक्त को देते हैं ऊर्जा
गुरु सत्य है
प्रत्यक्ष है इस वचन में
आशीष और प्रेम प्रतिस्थापित है
इस ग्रन्थ में
गुरुजी की सप्रेम भेंट
अपने प्रिय भक्तों के लिये
उनके वचनों का अनुसरण कर
आदर करें पितामह का
देखते हैं, प्रेम करते हैं वह
अभी भी हमारे